श्रीयुतगोस्वामीतुलसीदासकृत

रामायण.

सुमेपुरनिवासी पं. रघुवंशशर्माने

अनेकप्रतियोंकेआधारसेशुद्धकर क्षेपकादि परमोपयोगी विषयोंसे भूषित किया.

रामचरणरति जो चहै, अथवा पद निर्वान ॥
भावसहित सो यह कथा, करै श्रवणपुट पान ॥

प्रथमावृत्ति.

बम्बईमें

हरिप्रसाद भगीरथजीने.

"गुजराती" प्रेसमें छपवायकर प्रसिद्ध किया.

संवत् १९५७—शके १८२२.

॥ श्री ॥

प्रस्तावना.

अद्यकालमें इस आर्यावर्तदेशमें श्रीमद्भगवद्भक्त परमदयालु पूज्यपाद श्रीगोस्वामी तुलसीदासकृतरामायणकी सदृश भाषामें और कोई मनोहरणशीला काव्यरचना नहीं है, कि जिसके बाँचनेवाले लोग छोटेसे बडेतक जिसके जैसी सामर्थ्य है तैसे आनन्दको प्राप्त होते हैं; और एक इसका प्रत्यक्ष प्रामाणिक प्रभाव यह है कि—इस रामायणको जैसे जैसे लोग बाँचते हैं, अभ्यास करते हैं तैसे तैसे सुंदर बुद्धिप्रकाश और तदनंतर नूतन अलौकिक संपूर्ण ज्ञान निश्चित होता है और तत्वंसे इस रामायणमें श्रीगोस्वामी तुलसीदासजीने चार ४ वेद, छः ६ शास्त्र, अठारह १८ पुराण और अन्य भक्तिपक्षके ग्रंथोंका मत यथार्थ खुलासा कहा हैं; सो सुविचारवान् सज्जनजन समझ सकते हैं. इसमें कहीं कहीं ऐसे गुप्त भाव हैं कि जिनका यथावत् ज्ञान अतिसूक्ष्म दृष्टिसे होसक्ता है. अनेक महाशयोंनें इसकी अनेक टीकायें बनायीं तथा क्षेपक कथायेंभी मिश्रित कीं परंतु क्षेपक कथावोंके कमती ज्यादा होनेसे पाठकोंको भ्रम होताथा अतएव प्रसंगोचित क्षेपकादि समस्त विषय यथायोग्य क्रमसे संदर्भित करदिये. जिनसे पाठक गण परम सुगमतासे निर्भ्रांत होकर रामायणके मार्मिक सिद्धान्त जानसकैंगे

किन्तु सज्जन महाशय इसको बांचके आनंदित होंगे तभी मेरा परिश्रम सफल होगा. और मैंने इस पुस्तकको बडे परिश्रमसे शुद्ध किया है परंतु दृष्टिदोषसे कहीं भूल रही होगी तो आशा है कि-विद्वज्जन क्षमा करेंगे.

आपका--

शास्त्री रघुवंशशर्मा.

निवासस्थान सुमेरुपुर अवध.

विषय. पृष्ठ.

विषय. पृष्ठ.

२ अयोध्याकाण्डे

विषय. पृष्ठ.

विषय. पृष्ठ.

३ अरण्यकाण्डे

४ किष्किंधाकाण्डे

विषय. पृष्ठ.

५ सुन्दरकाण्डे.

६ लंकाकाण्डे.

विषय. पृष्ठ.

विषय. पृष्ठ.

७ उत्तरकाण्डे

दो०वर्षाऋतु रघुपतिभगति,तुलसी शालिसुदास
रामनामवरवर्णयुग, श्रावण भादों मास ॥ २५ ॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ * वर्ण बिलोचन जनजिय जोऊ
सुमिरत सुलभ सुखद सबकाहू * लोक लाहु परलोकनिबाहू ॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके * रामलषणसम प्रिय तुलसीके॥
बर्णत वर्ण प्रीति बिलगाती * ब्रह्मजीवसम सहजसँघाती ॥
नरनारायणसरिस सुभ्राता * जगपालक विशेष जनत्राता ॥
भक्तिसुतिय-कलकर्णविभूषण * जगहितहेतु बिमलबिधुपूषण ॥
स्वादु तोषसम सुगति सुधाके * कमठशेषसम धर बसुधाके ॥
जनमनमंजु- कंज- मधुकरसे * जीहयशोमति हरिहलधरसे ॥

दो०एक छत्र इक मुकुटमणि,सब वर्णनपर जोउ॥
तुलसी रघुबरनामके, वर्ण विराजत दोउ ॥ २६ ॥

समुझत सरस नाम अरु नामी * प्रीति परस्पर प्रभुअनुगामी ॥
नाम रूप दोउ ईशउपाधी * अकथ अनादि सुसामुझसाधी
को बड़ छोट कहत अपराधू * सुनि गुण भेद समुझिहैं साधू॥
देखिय रूप नामआधीना * रूपज्ञान नहिं नामबिहीना ॥
रूपविशेष नाम बिनु जाने * करतलगत न परहिं पहिंचाने।
सुमिरिय नाम रूप बिनु देखे * आवत हृदय सनेह विशेखे ॥
नाम-रूप-गति अकथ-कहानी * समुझत सुखद न जात बखानी

रजीने रामनामका उच्चारण करके, उस कालकूट जहरका पान किया तिससे कंठ काला होनेसे उनका नीलकण्ठ यह नाम पड़ा और उस विषने अमृतसमान फल दिया.

---

१ रामनामके श्रेष्ठ अक्षरोंका जोड़ा. २ हस्तगत.

अगुणसगुणबिच नाम सुसाखी * उभयप्रबोधक चतुर दुभाखी ॥

दो०रामनाममणिदीप धरु, जीहँ देहरी द्वार ॥
तुलसी भीतर बाहिरौ, जो चाहसि उजियार२७

नाम जीह जपि जागहिं योगी * बिरति बिरंचिप्रपंचबियोगी ॥
ब्रह्मसुखहिं अनुभवहिं अनूपा * अकथ अनामय नाम न रूपा
जाना चहहिं गूढगति जेऊ * नाम जीह जपि जानहिं तेऊ॥
साधक नाम जपहिं लय लाये * होहिं सिद्ध अणिमादिक पाये॥
जपहिं नाम जन आरत भारी * मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी
रामभक्त जग चारि प्रकारा * सुकृती चारिउ अनघ उदारा॥
चहुँ चतुरनकहँ नाम अधारा * ज्ञानी प्रभुहिं विशेष पियारा ॥
चहुँयुग चहुँश्रुति नामप्रभाऊ * कलिविशेष नाहिं आन उपाऊ।

दो०सकलकामनाहीन जे, रामभक्तिरसलीन ॥
नामसुप्रेमपियूषह्रद, तिनहुँ किये मन मीन २८

अगुण सगुण दोउ ब्रह्मस्वरूपा * अकथ अगाध अनादि अनूपा
मोरे मत बड़ नाम दुहूंते * किय जेहि युग निजबश निजबूते
प्रौढ सुजनजन जानहिं जनकी * कहहुँप्रतीतिप्रीतिरुचिमनकी॥
एक दारुगत देखिय एकू * पावकयुगसम ब्रह्मबिबेकू ॥
उभय अगम युग सुगम नामते * कहउँ नाम बड़ ब्रह्म रामते ॥
व्यापक एक ब्रह्म अविनाशी * जड़ चेतन घनआनँदराशी ॥
अस प्रभु हृदय अछत अविकारी * सकल जीव जग दीन दुखारी॥
नामनिरूपण नाम यतनते * सोउ प्रगट जिमि मोलरतनते ।

---

१ जिह्वा. २ संसारसे मुक्त. ३ रोगरहित. ४ नामप्रेमरूप अमृतकुण्डमें.

दो० निर्गुणते इहिभांति, बड़. नामप्रभाव अपार ॥
कहउँ नाम बड़ रामते, निजबिचारअनुसार ॥२९॥

राम भक्तहित नरतनुधारी * सहि संकट किय साधु सुखारी ॥
नाम सप्रेम जपत अनयासा * भक्त होहिं मुदमंगलबासा ॥
राम एक तापसतिय[1] तारी * नाम कोटिखलकुमति उधारी ॥
ऋषिहित राम सुकेतुसुता[2]की * सहितसेन सुत[3] कीन्ह बिबा[4]की ॥
सहितदोष दुख दास दुराशा * दलै[5] नाम जिमि रबिनिशिनाशा ॥
भंजेउ राम आपु भवचापू * भवभयभंजन नामप्रतापू ॥
दंडकवन प्रभु कीन्ह सुहावन * जनमन अमित नाम किय पावन
निशिचरनि[6]कर दलेउ रघुनंदन * नाम सकलकलिकलुषनिकंदन

दो० शबरी गीध सुसेवकनि, सुगति दीन्ह रघुनाथ
नाम उधारे अमित खल, वेदविदित गुणगाथ ३०॥

राम सुकंठ[7] बिभीषण दोऊ * राखे शरण जान सब कोऊ ॥
नाम अनेक गरीब निवाजे * लोक वेद बर बिरद बिराजे ॥
राम भालुकपिकटक[8] बटोरा * सेतुहेतु श्रम कीन्ह न थोरा ॥
नाम लेत भवसिंधु सुखाहीं * करहु बिचार सुजन मनमाहीं ॥
राम सकुल रण रावण मारा * सीयसहित निजपुर पगु धारा
राजा राम अवध रजधानी * गावत गुण सुर मुनिबर बानी ॥
सेवक सुमिरत नाम सप्रीती * बिनश्रम प्रबल मोहदल जीती ॥

---

१ गौतमकी स्त्री अहल्या. २ यक्षकन्या ताटकाकी. ३ ताटकाके पुत्रकी. ४ पराजय करी. ५ नाशै. ६ राक्षससमूह. ७ सुग्रीव. ८ रींछ व बन्दरोंकी फौज.

फिरत सनेहमग्न सुख अपने * नामप्रसाद शोच नहिं सपने ॥
दो०ब्रह्म रामते नाम बड़, वरदायक वरदानि ॥ *
रामचरित शतकोटिमहँ, लियमहेश जिय जानि ३१
नामप्रसाद शंभु अविनाशी * साजे अमंगल मंगलराशी *।
शुक सनकादि सिद्ध मुनि योगी * नामप्रसाद ब्रह्मसुखभोगी *॥
नारद जानेउ नाम-प्रतापू * जगप्रिय हरिहर अरु प्रिय आपू
नाम जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू * भक्तशिरोमणि भे प्रहलादू ।
ध्रुव* सगलानि जपेउ हरिनामू * पायउ अचल अनूपम ठामू ॥
सुमिरि पवनसुत पावन नामू * अपने वश करि राखेउ रामू॥
अपर†अजामिल गज गणिकाऊ * भये मुक्त हरिनामप्रभाऊ ॥
कहउँ कहाँलगि नामबड़ाई * राम न सकहिं नामगुण गाई॥

* स्वायंभुव मनुके पुत्र उत्तानपाद राजाकी सुनीति और सुरुचि नाम दो रानी थीं तिनमें बड़ी रानी ध्रुवजीकी माता थी परंतु छोटी रानी राजाके बहुत प्यारी थी, सो कोईदिन ध्रुवजी अपने पिता उत्तान-पादकी गोदमें चढ़ने लगे तब छोटी रानीनें कहा कि-हे पुत्र ! मेरे पेटसे पैदा होते तो राजाकी गोदमें बैठते. ऐसे कहकर उसने ध्रुवजीको गोदसे खींचकर जमीनमे बैठाया. तब ध्रुवजी रोते रोते अपनी माके पास आये और उसीसे सदुपदेश पाय, बनमें तप करने गये. वहां नारद-जीके उपदेशसे नामको जप कर, छः महीनेमें उन्होंने ध्रुवस्थान (विष्णुपद) पाया. ऐसा नामप्रभाव है.

† अजामीलने मरतेसमय अपने अपने लघुपुत्र नारायणको पुकारा बस इसीसे" मुक्ति पाई. इसीभांति गजेन्द्र व गणिकाकी कथा " श्री-मद्भागवतमें सविस्तर वर्णित है. "

दो०रामनामको कलपतरु, कलि कल्याणनिवास॥
जो सुमिरत भये भाँगते, तुलसी तुलसीदास॥३२।

चहुँयुग तीनिकाल तिहुँलोका * भए नाम जपि जीव विशोका।
वेद—पुराण—संत-मत एहू * सकलसुकृतफल[1] रामसनेहू ॥
ध्यान प्रथमयुग[2] मख[3] युग दूजे * द्वापर परितोषक प्रभु पूजे ॥
कालि केवल मलमूल मलीना * पापपयोनिधि जनमन मीना ॥
नाम कामतरु काल कराला * सुमिरत शमन सकलजगजाला
रामनाम कलि अभिमतदाता * हित परलोक लोकपितुमाता॥
नाहिं कलिकर्म न भक्ति बिबेकू * राम—नाम अवलंबन एकू ॥
कालनेमि कलि कपटनिधानू * नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥

दो०रामनाम नरकेसरी[4],कनककशिपु[5] कलिकाल॥
जापकजन प्रल्हाद जिमि, पालहिँ दलि सुरसाल३३

भाव कुभाव अनख[6] आलसहूँ * नाम जपत मंगल दिशि दशहूं॥
सुमिरि सो नाम रामगुणगाथा * करौं नाइ रघुनाथहिं माथा ॥
मोरि सुधारहिं सो सबभाँती * जासु कृपा नहिं कृपा अघाती॥
राम सुस्वामि कुसेवक[7] मोसे * निजदिशि देखि दयानिधि पोसे
लोकहु बेद सुसाहिबरीती * बिनय सुनत पहिंचानत प्रीती॥
धनी गरीब ग्रामनर नागर * पंडित मूढ मलीन उजागर ॥
सुकवि[8]कुकवि[9]निजमति अनुसारी * नृपहिं सराहत सब नर नारी ॥
साधु सुजान सुशील नृपाला * ईशअंश[10]—भव परम—कृपाला॥

---

१ सब अच्छे कर्मोंका फल. २ कृतयुगमें. ३ यज्ञ ४ नृसिंह. ५ हिरण्यकशिपु. ६ ईर्षा. ७ खराब सेवक. ८ अच्छे कवि. ९ खराब कवि. १० परमेश्वरके अंशसे उत्पन्न.

सुनि सन्मानहिं सबहिं सुबानी * भणितभक्तिमतिगतिपहिंचानी
यह प्राकृत- महिपाल - सुभाऊ * जानि शिरोमणि कोसलराऊ ॥
रीझत राम सनेहनिसोते * को जग मंद मलिनमति मोते॥

दो०शठसेवककी प्रीतिरुचि, रखिहहिंरामकृपालु ॥
उपलंकिएजलयानजेहिं, सचिवसुमतिकपिभालु ३४
गौहुं कहावत सब कहत, राम सहत उपहास ॥
साहेब सीतानाथसे, सेवक तुलसीदास ॥३५॥

अतिबड़ि मोरि ढिठाई खोरी * सुनि अघ नरकहु नाक सिकोरी
समुझिसहमि मोहिंअपडरअपने * सो सुधि राम कीन्ह नहिं सपने
सुनिअवलोकि सुचितचखचाही * भक्ति मोरि मति स्वामि सराही
कहत नशाइ होइ अतिनीकी * रीझत राम जानि जनजीकी॥
कहत न प्रभु चित चूककियेकी * करत सुरत सबबार हियेकी ॥
जोहिं अघबधेउब्याधजिमिवाली * फिरि सुकंठ सोइ कीन्ह कुचाली
सोइ करतूति बिभीषणकेरी * सपनेहु सो न राम हिय हेरी॥
ते भरतहिं भेटत सन्माने * राजसभा रघुवीर बखाने ॥

दो०प्रभु तरुतर कापि डारपर, ते किय आपसमान॥
तुलसी कहूँ न रामसे, साहिब शीलनिधान ॥३६॥
राम निकाई रावरी, है सबहीको नीक ॥
जो यह साँची है सदा, तौ नीके तुलसीक॥३७॥
इहिविधिनिजगुणदोषकहि, सबहिं बहुरि शिर नाइ
बर्णौ रघुबरबिशदयश, सुनि कलिकलुष नशाइ ३८

१ पत्थर. २ जहाज. ३ रीछ. ४ स्वामी. ५ पापसे. ६ सुग्रीव.
७ रामचन्द्रजीका निर्मल यश. ८ कलियुगके पाप.

याज्ञवल्क्य जो कथा सुहाई * भरद्वाज—मुनिबरहिं सुनाई ॥
कहिहौं सोइ संवाद बखानी * सुनहु सकल सज्जन सुख मानी
शंभु कीन्ह यह चरित सुहावा * बहुरि कृपा करि उमहिं सुनावा
सो शिव काकभुशुंडिहिं दीन्हा * रामभक्तिअधिकारी चीन्हा।
तेहिसन याज्ञबल्क्य पुनि पावा * तिन्ह पुनि भरद्वाजप्रति गावा॥
ते श्रोता वक्ता समशीला * समदर्शी जानहिं हरिलीला ॥
जानहिं तीनिकाल निजज्ञाना * करतलगत आमलकसमाना ॥
औरो जे हरिभक्त सुजाना *कहहिं सुनहिं समुझहिं बिधिनाना॥

दो०मैं पुनि निजगुरुसन सुनी, कथा सु शूकरखेत॥
समुझ नहीं तस बालपन, तब अतिरहेउँ अचेत३९
श्रोता बक्ता ज्ञाननिधि, कथा रामकी गूढ़ ॥
किमि समुझै यह जीव जड़,कलिमलग्रसित बिमूढ॥

तदपि कही गुरु बारहिं बारा * समुझि परी कछु मतिअनुसारा
भाषाबंध करब मैं सोई * मोरे मन प्रबोध जेहि होई ॥
जस कछु बुधिबिबेकबल मोरे * तस कहिहौं हिय हरिके प्रेरे॥
निज–संदेह–मोह– भ्रमहरणी * करौं कथा भवसरितातरणी ॥
बुधबिश्राम सकलजन-रंजनि * रामकथा कलिकलुषविभंजनि
रामकथा कलिपन्नगभरणी * पुनि बिबेकपावककहँ अरणी॥
रामकथा कलि कामद गाई * सुजन सजीवनमूर सुहाई

हाथमें प्राप्त. २ आँवलेकी तुल्य. ३ बुद्धि ३ ... ॥
जोर. ४ संसाररूप नदीकी नावरूप. ५ पण्डितज...
देनेवाली ६ कलिरूप सर्पके लिये गरुडका मंत्र अ...

सोइ बसुधातल सुधातरंगिनि * भवभंजिनि भ्रमभेकभुअंगिनि
असुरसेनसम नरकनिकंदिनि * साधुबिबुधकुलाहित गिरिनंदिनि
संतसमाजपयोधि रमासी * विश्वभारधर अचल क्षमासी ॥
यमगणमुहमासि जग यमुनासी * जीवन्मुक्तिहेतु जनु काशी ॥
रामहिं प्रिय पावनि तुलसीसी * तुलसिदासहित हिय हुलसीसी॥
शिवप्रिय मेकलशैलसुतासी * सकलसिद्धिप्रद संपतिराशी ॥
सद्गुणसुरगण-अंब अदितिसी * रघुबरभक्तिप्रेमपरिमितिसी ॥

दो० रामकथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु ॥
तुलसी सुभग सनेह बन, सियरघुबीरबिहारु ४१

रामचरित चिन्तामणि चारू * सन्तसुमतितियसुभगसिंगारू॥
जग-मंगल गुणग्राम रामके * दानि मुक्तिधनधर्मधामके ॥
सद्गुरु ज्ञात-बिराग-योगके * बिबुधबैद्य भवभीमरोगके ॥
जननि जनक सियरामप्रेमके * बीज सकल व्रत धर्म नेमके॥
शमन पाप सन्ताप शोकके * प्रियपालक परलोकलोकके ॥
सचिव सुभट भूपति बिचारके * कुंभज लोभउदधि अपारके ॥
कामक्रोहकालिमल करिगणके * केहरिशावक जनमनवनके ॥
अतिथि पूज्य प्रीतम पुरारिके * कामदघन दारिददवारिके ॥
मंत्र महामणि[3] विषयव्यालके * मेटत कठिन कुअंक भालके॥
[illegible]ण मोहतम दिनकरकरसे[4] * सेवकशालिपाल जलधरसे ॥
[illegible]नि देवतरुवरसे * सेवत सुलभ सुखद हरिहरसे॥

१ पत्थर.

[illegible] रामचंद्रजीका [illegible] नदीरूप. २ संसाररूप भयंकर रोगके. ३ मणिसे [illegible] जाना है. ४ सूर्यकिरणसम.

सुकवि शरद नभ मन उडुगणसे * रामभक्तजनजीवन धनसे ॥
सकलसुकृतफल भूरि भोगसे * जगहित निरुपधि साधुलोगसे
सेवक– मन--मानस– मरालसे * पावन गंग–तरंग–मालसे ॥

दो०कुपथ कुतर्क कुचालिकलि, कपटदम्भ पाखण्ड
दहन रामगुणग्रामइमि, ईंधन अनल प्रचण्ड ॥४२॥
रामचरित राकेशकर, सरिस सुखद सबकाहु ॥
सज्जनकुमुदचकोरचित, हित बिशेष बड़ लाहु४३

कीन्ह प्रश्न जेहिभांति भवानी * जिहिबिधि शंकर कहा बखानी
सो सब हेतु कहत मैं गाई * कथाप्रबन्ध बिचित्र बनाई ॥
जिन यह कथा सुनी नहिं होई * जनि आश्चर्य करैं सुनि सोई॥
कथा अलौकिक सुनहिं जे ज्ञानी * नाहिं आश्चर्य करहिं अस जानी
रामकथाकी मिति जग नाहीं * अस प्रतीति तिनके मनमाहीं
नानाभांति रामअवतारा * रामायण शतकोटि अपारा ॥
कल्पभेद हरिचरित सुहाये * भांति अनेक मुनीशन गाये ॥
करिय न संशय अस उर आनी * सुनिय कथा सादर रति मानी

दो० राम अनन्त अनन्तगुण, अमित कथाबिस्तार॥
सुनि आश्चर्य न मानिहहिं, जिनकेबिमल बिचार४४

इहिबिधि सब संशय करि दूरी * शिर धरि गुरुपदपंकजधूरी ॥
पुनि सबही बिनवौं कर जोरी * करत कथा जेहिं लाग न खोरी
सादर शिवहिं नाय अब माथा * बरणौं बिशद रामगुणगाथा ॥
सम्वत सोरहसै यकतीसा * करौं कथा हरिपद धरि शीसा
नौमी भौमवारे[2] मधुमासा[3] * अवधपुरी यह चरित प्रकाशा

---

१ चंद्रकिरणसम. २ मंगलवार. ३ चैत्रमहीना. ॥

जेहिदिन रामजन्म श्रुति गावहिं * तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं
असुर नाग खग[2] नर मुनि देवा * आय करहिं रघुनायकसेवा ॥
जन्ममहोत्सव रचहिं सुजाना * करहिं राम कल[3] कीरतिगाना ॥

दो०मज्जहिं सज्जनवृन्द[4] बहु, पावन सरयूनीर ॥
जपहिं राम धरि ध्यान उर, सुन्दरश्याम शरीर ४५

दरश परश मज्जन अरु पाना * हरै पाप कह बेद पुराना ॥
नदी पुनीत अमित महिमा अति * कहि न सकै शारदा बिमलमति
रामधामदा[5] पुरी सुहावनि * लोक समस्त बिदित जगपावनि।
चारिखानि जग जीव अपारा * अवध तजे तनु[6] नाहिं संसारा ॥
सबबिधि पुरी मनोहर जानी * सकलसिद्धिप्रद मंगलखानी ॥
बिमलकथाकर कीन्ह अरम्भा * सुनत नशाहिं काम मद दम्भा ॥
रामचरितमानस यह नामा * सुनत श्रवण पाइय विश्रामा ॥
मनकर विषय अनल[8] बर जरई * होइ सुखी जो यहि सर परई ॥
रामचरितमानस मुनिभावन * बिरचेउ शम्भु सुहावन पावन ॥
त्रिबिधदोषदुखदारिददावन * कलिकुचालिकुलकलुषनशावन
रचि महेश निजमानस राषा * पाइ सुसमय शिवासन भाषा ॥
तातें रामचरित- मानस बर * धरेउँ नाम हिय हेरि हर्षि हर
कहौं कथा सोइ सुखद सुहाई * सादर सुनहु सुजन मन लाई।

दो०जस मानस जेहिविधिभयो, जगप्रचार जेहिहेतु
अब सोइ कहौं प्रसंग सब, सुमिरि उमावृषकेतु ४६

[शम्]भुप्रसाद सुमति हिय हुलसी * रामचरितमानसकवि तुलसी।

---

[1] वेद. [2] पक्षी. [3] सुन्दर. [4] सज्जनोंके समूह. [5] वैकुंठलोक. [6] देह [7] पाखंड. [8] अग्निमें. [9] पार्वतीसे. [10] महादेवजीको.

मंत्र ... चण मोह ... बणा ... ानि ... १ पत्थर. ... ७ रामचन्द्रजीका ... ी न

करउँ मनोहर मतिअनुहारी * सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी
सुमति भूमिथल हृदय अगाधू * वेद पुराण उदधि घन साधू ॥
बर्षाहिं रामसुयश बर बारी * मधुर मनोहर मंगलकारी ॥
लीला सगुण जो कहहिं बखानी * सोइ स्वच्छता करै मलहानी॥
प्रेम भक्ति जो बर्णि न जाई * सोइ मधुरता शीतलताई ॥
सो जल सुकृतशालिहित[२] होई * रामभक्तजनजीवन सोई ॥
मेधामाहिगत सो जल पावन *सिमिटि श्रवणमगु[३] चलेउ सुहावन
भरेउ सुमानस सुथल थिराना * सुखद शीत रुचि चारु चिराना

दो०सुठि सुन्दर संवाद बर,बिरचेउ बुद्धि बिचारि[४]
तेयहि पावन सुभग सर, घाट मनोहर चारि ४७

सप्तप्रबन्ध सुभग सोपानो[५] * ज्ञाननयन निरखत मन माना॥
रघुपतिमाहिमा अगुण अबाधा * बर्णब सोइ बर बारि अगाधा ॥
रामसीययशसलिल[६] सुधासम * उपमा बीचिबिलास मनोरम॥
पुरइनि सघन चारु चौपाई * युक्ति मंजुमणि सीप सुहाई ॥
छन्द सोरठा सुन्दर दोहा * सोइ बहुरंग कमलकुल सोहा
अर्थ अनूप सुभाव सुभासा * सोइ पराग मकरन्द सुबासा।
सुकृतपुंज मंजुल अलिमाला * ज्ञानबिरागविचार मराला ॥
ध्वनि अवरेव कवित गुणजाती * मीन मनोहर ते बहुभांती ॥
अर्थ- धर्म- कामादिक चारी * कहब ज्ञान विज्ञान[८] बिचारी॥
नवरस जप तप योग बिरागा * ते सब जलचर चारु तड़ागा॥

१ जल. २ सुकृतरूप धानोंको हितकारक. ३ कानरूप रा[स्ते] ४ चारि संवाद. ५ सीढी. ६ सीतारामयशरूप जल. ७ कू[र्म] ... धरी. ८ अनुभवयुक्त ज्ञान.

सुकृती साधु- नाम गुणगाना * ते बिचित्र जलबिहगसमाना॥
सन्तसभा चहुँदिशि अमराई * श्रद्धा ऋतु-वसंतसम गाई ॥
भक्तिनिरूपण बिबिधविधाना * क्षमा दया द्रुमलतावितना॥
संयम नियम फूल फल ज्ञाना * हरिपदरति रस बेद बखाना॥
औरो कथा अनेक प्रसंगा * तेइ शुक[1] पिक[2] बहुबर्ण बिहंगा[3]

दो०पुहुपबाटिका बाग बन, सुखसुविहंगविहारु ॥
माली सुमन सनेहजल, सींचत लोचन चारु ४८

जे गावहिं यह चरित सँभारे * ते यहि ताल चतुर रखवारे॥
सदा सुनहिं सादर नर नारी * ते सरवर-मानसअधिकारी॥
अतिखल जे विषयी बक कागा * इहिसरनिकट न जाहिं अभागा
शंबुक[4]- भेक- सियार- समाना * इहां न विषयकथा रस नाना
तेहिकारण आवत हिय हारे * कामी काक बलाक[5] बिचारे॥
आवत इहिसर अतिकठिनाई * रामकृपाबिनु आइ न जाई ॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला * तिनके बचन व्याघ्र[6] हरि ब्याला[7]
गृहकारज नाना जंजाला * तेइ अतिदुर्गम शैल बिशाला॥
बन बहुविषय मोह मद माना * नदी कुतर्क भयंकर नाना ॥

दो०जे श्रद्धाशम्बलरहित, नहिं संतनकर साथ ॥
तिनकहँमानसअगमअति, जिनहिंनप्रियरघुनाथ४९

जो करि कष्ट जाइ पुनि कोई * जातहिं नींदजुड़ाई होई ॥
जड़ता जाड़ विषम उर लागा * गयहु न मज्जन पाव अभागा

१ तोता. २ कोयल ३ पक्षी. ४ घोंघा, मेंडुक तथा सियारके १ पत्थर. ५ बगुले. ६ सिंह. ७ सर्प. ८ श्रद्धारूप खर्चहीन.

करि न जाइ सर मज्जन पाना * फिरि आवै समेत अभिमाना
जो बहोरि कोउ पूछन आवा * सरनिंदा करि ताहि सुनावा॥
सकलविघ्न व्यापहिं नहिं तेहीं * राम कृपा करि चितवहिं जेहीं
सोइ सादर सरमज्जन करहीं * महाघोर त्रयतापन जरहीं ॥
ते नर यह सर तजहिं न काऊ * जिनके रामचरित भल भाऊ॥
जो नहाइ चह इहि सर भाई * सो सत्संग करै मन लाई ॥
अस मानस मानस चख चाही * भइ कबिबुद्धि बिमल अवगाही
भयो हृदय आनंद उछाहू * उमगेउ प्रेम-प्रमोद-प्रवाहू ॥
चली सुभग कविता सरितासों * रामबिमलयश जल भरितासो
सरयू-नाम सुमंगल-मूला * लोकबेदमत मंजुल कूला ॥
नदी पुनीत सुमानस-नंदिनि * कलिमलतृणतरुमूलनिकंदिनि

दो०श्रोता त्रिविध समाज पुर, ग्राम नगर दुहुँकूल॥
संतसभा अनुपम अवध, सकल सुमंगलमूल ५०॥

रामभक्ति-सुरसेरि तहँ जाई * मिली सुकीरति सरयु सुहाई॥
सानुज रामसमरयश पावन * मिलेउ महानद शोंण सुहावन
गुगंबिच भक्ति देवधुनिधारा * सोहति सहित सुबिरतिबिचारा
त्रिबिधतापत्रासक त्रिमुहानी * रामसरूप सिंधुसमुहानी ॥
मानसमूल मिली सुरसरिहीं * सुनत सुजन मन पावन करिहीं
बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा * जनु सरितीरतीर बन बागा ॥
उमामहेश- विवाह- बराती * ते जलचर अगणित बहुभांती
रघुबरजन्म अनन्द बधाई * भँवर तरंगमनोहरताई ॥

दो०:बालचरित चहुँबंधुके, बनज बिपुल बहुरंग
नृपरानी परिजन सुकृत, मधुकर बारि बिहंग॥५१

१ गंगाजी. २ शोणभद्र. ३ गंगाकी धारा. ४ त्रिमुखी. स्फूट ३ ॥

सीय- स्वयम्बर- कथा सुहाई * सरित सुहावनि सो छबि छाई
नदी नाव *पटुप्रश्न अनेका * केवट कुशल उतर सबिबेका॥
पुनि अनुकथन परस्पर होई * पथिकसमाज सोह सर सोई॥
घोरधार भृगुनाथरिसानी * घाट सुबन्ध रामबरबानी॥
सानुज राम- बिबाह- उछाहू * सो शुभ उमग सुखद सबकाहू
कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं * ते सुकृतीजन मुदित नहाहीं॥
रामतिलकहित मंगल साजा * पर्वयोग जनु जुरेउ समाजा॥
काई कुमति केकयीकेरी * परी जासु फल बिपति घनेरी

दो०शमनअमित उतपातसब, भरतचरितजपयाग
कलिअघ खलअवगुणकथन, ते जलमलबककाग५२

कीरितसरित छहूँ ऋतु रूरी * समय सुहावनि पावनि भूरी
हिम हिमशैलसुता- शिवब्याहू * शिशिर सुखदप्रभुजन्मउछाहू
बर्णब राम- विवाह- समाजू * सो मुदमंगलमय ऋतुराजू
ग्रीषम दुसह रामवनगवनू * पंथकथा खर आतप पवनू
वर्षा घोर निशाचररारी * सुरकुलशालिसुमंगलकरी॥
रामराज सुख-बिनय बड़ाई *विशद सुखद सोइ शरद सुहाई
सतीशिरोमणि- सियगुणगाथा * सोइ गुणअमल अनूपम पाथा
भरत- सुभाव- सुशीतलताई * सदा एकरस बर्णि न जाई॥

दो० अवलोकनि बोलनि मिलनि,प्रीति परस्परहास
भायप भलि चहुँबंधुकी,जलमाधुरी सुबास॥५३॥

आरति विनय दीनता मोरी * लघुता ललित सुवारिनथोरी
अद्भुत सलिल सुनत गुणकारी * आशपियास मनोमलहारी॥

१ पत्थे बटुरोंके प्रश्न. * यहां "बटु" यहभी पाठ है.

दो० रामायणसम नाहिं कोउ, सब उपमा उपमेय ॥
उपमा भाषा औरकी, कैसे कोउ कवि देय ॥ ३ ॥

त्रेता महँ भये बाल्मीकि मुनि * ते कलियुग भये तुलसिदास पुनि
शत करोरि रामायण भाषी * इन मथि सार सुसूक्षम राखी ॥
प्रथम कांड है बालसीला * जन्म विवाह रामकी लीला ॥
द्वितीय अयोध्याकांड प्रकासा * पितुआज्ञा रघुबर बनवासा ॥
पुनि अरण्य किष्किंधा भाष्यो * तहँ सुग्रीव शरणमहँ राख्यो ॥
सुन्दर सुन्दरकांड सुहावन * युद्धकांड महँ मारेउ रावन ॥
सप्तम उत्तर परम अनूपा * उत्सव प्रभु कोशलपुरभूपा ॥
तुलसीकृत रामायण येती * बिबिधप्रकार कथा है केती ॥

दो० जगवारिधिको पार नहीं, ऐसो है फैलाव ॥
तुलसीदास कृपा करी, रचि रामायण नाव ॥ ४ ॥

श्रीरामायण स्वर्गनिसेवनी * भक्तजननकहँ आनँद देनी ॥
श्रीरामायण सद्गुणमाता * अज्ञ जाहि पढ़ि होहिं सुज्ञाता ॥
पापसमूह तूलकी राशी * रामायण धनंज्यकन कासी ॥
मोहपुंजतमाकिरण समारी * काम अग्निकहँ शीतल बारी ॥
रामायण शशिकिरण सोहाई * संतचकोरन कहँ सुखदाई ॥
धन्य धन्य श्रीतुलसिदास धनि * जगहित रामायण राखी भनि॥
नीच ऊंच जे ते नरनारी * श्रीरामायण सबकहँ प्यारी ॥
रामायण सो नेह लगावैं * अधन अपुत्र सो वित सुत पावैं॥

दो० रामायण सों नेह किय, सिद्ध होत सब काम ॥
है सब को कल्याणदा, पठिसुनिलहुविश्राम ॥ ५ ॥

नेगमादिक ते ब्रह्मकमंडल * रामायण अस्थित गंगाजल ॥

भागिरथसम तुलसिदास पुनि * भाषाप्रचुर कीन जनु सुर धुनि॥
होत रैहयकठांव रामायण * तेहिमग आवत पापपरायण ॥
कछुक कानमहँ परिगइ बाता * चलत पंथ कहुं भयो पपाता॥
गिरतहि तुरत छूटि तनु गयऊ * तहँ अद्भुत इक अचरज भयऊ॥
ताहि लेन आये यमदूता * निज पाशन बांध्यो मजबूता॥
अति आतुर हरिजन तहँ आए * छीनि लीन्ह बहु त्रास दिखाए॥
रामायणपैं सुनि यह काना * लैजैहैं बैठारि विमाना ॥

दो० रामायणपरतापसों, गयो पार्षदनसाथ ॥
दूत चले यमके सदन, खीझत मींजत हाथ ॥ ६ ॥

निज दूतन देखेउ बिलखाता * पूंछी भानुतनय कुशलाता ॥
किन तुमकहँ दीन्हौं दुखभाई * चार चतुर तुम देहु बताई ॥
कहा कहैं तुमसो मह राजा * पूंछत तुमाहिं न आवत लाजा॥
कोउ यक मृत्युलोक बड़भागी * तुलसीदास भयो बैरागी ॥
रामकथा रामायण भाषी * सो लोगन घर घर धरि राषी ॥
जे जे विविध भांतिके पापी * मांसाहारी और सुरापी ॥
ते सब मालि रामायण सुनि हैं * कहि हैं लिखि हैं पढ़ि हैं गुणी हैं
ते नहिं ऐहैं सदन तुम्हारे * सत्य सत्य नृप वचन हमारे ॥

दो० लेहु पाश ए आपने, राखहु अपने पास ॥
अमल तुम्हारो उठो अब, सुनि यम भये उदास

अपनी व्यथा कहै नहिं पाँए * तब लगि दूत और तहँ आ
कहन लगे रविसुत सो रोई * तब चाकरी न हमसों हो
जगमें कहूं न हुकुम तिहारो *यह सुनि यम जाकि रहेउ बि
अहो दूत मोहि कहौ बुझाई * किन दीन्हो मम हुकुम र

कहा कहै कछु कहि नहि जाई* तुलसिदास यक भयो गुसांई ॥
तिनकी रामायण जगव्यापी * तेहिं कीन्हे पवित्र सब पापी॥
गए हम एक अधम गृहमाहीं * अति दुख भयो जात कहि नाहीं
तहँ देखेउँ येक कपि बलवाना * उग्ररूप सदृश हनुमाना ॥

दो० पापनको गहँकी भयो, तब हम भये अतिदीन॥
शरण शरण तब शरण है, अस्तुति बहुविधि कीन८

तब तो व्है प्रसन्न कपिराई * हमसन पुनि परतीति कराई ॥
धरी होय रामायण जहँवा * कबहूं भूलि न जायहु तहँवा ॥
जे श्रोता बक्ता रामायण * कबहूँ मति जायहु तेहि आयन॥
अस हमसों कपि शपथ कराई * तब छूटन पायो सुनु राई ॥
सुनि यमराज बहुत घबराये * निकट बोलाय दूत समुझाये॥
नाम रूप गुण कथा रामकी * कियेउ न फेरी तौ तधामकी॥
अजामीलकी सुगति करौजू * और न कछु चितमांझ वरौजू
थकिसे रहे दूत सुनि बानी * धनि श्रीरामायण महरानी ॥

दो० रामायण तेजश्वरी, सद्भाषा शिरमौर ॥
यमपुर जाको सो रहै, सम ताको नहिं और ॥ ९ ॥

पातक महा लग्यो कि न होई * रामायण सुनि रहै न कोई ॥
चाहै चारौ फलको साधन * करु रामायणको आराधन ॥
रामायण सुनि पाप पराने * जिमि हिमऋतुमहँ मशक नशाने
कलियुगतरण उपाय न कोई * रामभजन रामायण दोई ॥
कथा रामायणकी जहँ होई * सो गृह घरमति जानै कोई ॥
सो घर तीर्थरूप सम भासै * तहां गये सब पातक नासै ॥
पाप वास देहीमहँ तबलग * श्रीरामायण सुनै न जबलग ॥

उदय पुरानी पुण्य होय जब * रामायणमहँ मन लागे तब ॥

दो०रामायणके सुनतहीं, छूटि जात प्रेतत्व ॥
जाके पढे सुनेते, सूझत हैं परतत्व ॥ १० ॥

को जानै रामायणको रस * यह तो है संतनकी सर्वस ॥
बनज सनेही अलिगण जैसे * भक्तन प्रिय रामायण तैसे ॥
त्यागि भक्तजन ग्रंथ अनेकू * धारण किय रामयाण येकू ॥
भक्तनकहँ है भक्ति अनूपा * रसिक जनन कहँ है रसरूपा ॥
ज्ञानमई तिनकहँ जे ज्ञानी * तुलसी तारण तरण बखानी ॥
काम क्रोध रुजबश संसारा * ओषध रामायण अनुसारा ॥
रामायणमहँ नेह न जाको * जीवत शवसम जानिय ताको॥
रामायण जाकहँ प्रिय नाहीं * वृथा जन्म ताको जगमाहीं ॥

दो०रामायण अमृत कथा, लेत न ताको स्वाद ॥
तिनको निश्चय जानिए, हैं पुरे दनुजाद ॥ ११ ॥

रामायणबिधि कहौं विशारद * सनत्कुमारसों भाषी नारद ॥
सहित विधान सुनै जो कोई * सहज मुक्ति पावै नर सोई॥
कार्तिक माघ चैत्र चितलाई * नवदिन सुभ कथा सुखदाई ॥
ब्राह्ममुहूर्त समय हुव जबहीं * कर्म करै शौचादिक तबहीं ॥
करैं दंतधावन लटजीरा * मज्जन करै धरै मनधीरा ॥
पुनि रामायण पुस्तक अर्चैं * प्रेमसहित गंधादिक चर्चैं ॥
ॐनमोनारायण मंत्र भणीजै * तीन आहुती होम करीजै ॥
मन वच कर्म पाप तनु केरे * छूटि जात नहिं आवत नेरे ॥

दो०याविधिरामायणविधिहिं, जेकरिहहिंचितलाय
रामधामते जाइ हैं, संसृतिदुखहि मिटाय ॥ १२ ॥

जो कछु कारजकहँ कोउ जाई * सुमिरि चलैं सो यह चौपाई ॥
'प्रविशि नगर कीजै सब काजा * हृदय राखि कोशलपुरराजा' ॥
जो विदेश चाहै कुशलाई * तो यह सुमिरि चलैं चौपाई ॥
'रथ चढि सियासहित दोउ भाई * चले बनहिं अवधहि शिरनाई' ॥
भूत पिशाच जाहि जब लागैं * यह सोरठा पढै सो भागैं ॥

सो०बंदौं पवनकुमार, खलवनपावक ज्ञानघन ॥
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शरचापधर ॥ १ ॥

शत्रुनिवारण चहै जो भाई * भावसहित जपु यह चौपाई ॥
'जाके सुमिरणते रिपुनाशा * नाम शत्रुहन वेद प्रकाशा' ॥
यह चौपाई जपै जो कोई * अन्न आदि दुख ताहि न होई ॥
'विश्वभरण पोषण कर जोई * ताकर नाम भरत असहोई' ॥
जोउत्सवचहविविधप्रकारा * करु यह चौपाई अनुसारा ॥
'जबते राम ब्याहि घर आए * नित नव मंगल मोद बधाए' ॥
जो चाहै जगमहँ जय भाई * अस्थिर ह्वै जपु यह चौपाई ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके * जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके
हैं बहुभांति कार्य जगमाहीं * रामायणसों सब ह्वै जाहीं ॥

दो०सकलभांति मनकामना, यह दोहा दातार ॥
रामायणमहँ खोजि करि, करु याको अनुसार ॥१३॥
बहु शोभाजु समाजमुख, कहत न बने खगेश ॥
बर्णै शारद शेषपुनि, सो रस जान महेश ॥ १४ ॥

वर्णौं एक रुचिर इतिहासा * तुलसीदास जो कीन तमासा ॥
द्रावड अरु काशीमहिपाला * कहुँ एकत्र रहें कछुकाला ॥
अतिशय प्रीति बढी दुहुमाहीं * मनमैं कपटलेश कछु नाहीं ॥

गर्भवती दोऊ नृपनारी * चली बात दुहहुन कहिडारी॥
द्रावड कही बात सुखरासी * सुनहु नृपति काशीके वासी ॥
जन्मे तव सुत सुता हमारे * अथवा मम सुत सुता तिहारे ॥
अस संयोग होइ जो नाहू * हम तुम करहिं विवाह उछाहू॥
सौं हैं करि यह बात दृढाई * संतत प्रीति रही अब भाई ॥
सुखद समय आयो जब कोऊ * निजनिज भवन गये नृप दोऊ

सो०कन्या भई दुहुँ ओर, जानी जात न दैवगति ॥
कहि पठयो सुतमो, द्रविडदूत काशी गये ॥ २ ॥

यह छल होत भयो जिहिं लाई * सो वह हेतु कहौं मैं गाई ॥
द्रावडपति निज गृह आयो जब* रानीसों अस कहत भयो तब॥
जो होई कन्या दुहुँओरा * तौं मैं प्राण तजब बरजोरा ॥
सुनि रानी राजामुखबानी * मनमहँ बहुभांति भय मानी ॥
उपुरोहितकहँ लिहिसि बुलाई * नृप दुराय यह बात बुझाई ॥
मम अहिवात तुम्हारे हाथा * नहिं तौ प्रभु मैं होब अनाथा॥
रानी द्रव्य दीन्ह नहिं थोरी * भइ मायावश द्विजमति भोरी ॥
सेवक सेवकायन बश कीन्हेसि * आदर मान दान बहु दीन्हेसि ॥

दो०-सेवक एक दीन्ह तेहिं, वाराणसी बसाय ॥
तेहि ते पाइसि खबरि सब, तब यहु किहिसि उपाय॥

पुत्रनाम धरि गुप्त रखायो * द्वादश वर्ष न द्वार दिखायो ॥
विदुषन कहेउ न कोऊ पेखै * व्याह समय सब कोऊ देखै॥
मित्रमिलन हित चित अनुराग्यो* नेगी पठय व्याह पुनि मांग्यो ॥
अति आनंद चल्यो मग वेगी * काशीनृपपहँ आये नेगी ॥
नृप मन मुदित पत्रिका बाची * लै आवो बरात रँगराची ॥

आयो ब्याहन द्रावडराजा * खुली बात उपजी अतिलाजा॥
क्रोधातुर काशी अवनीशा * कह कटिहौं द्रावडकरशीशा ॥
यह सुनि द्रावड अधिक डरानेउ *निजछलसमुझिसमुझिपछितानेउ

दो०अतिसभीत अति दीन ह्वै,गयोजहँतुलसीदास
पाहि पाहि कह पाँय परि, कहेउ करो दुखनास ॥१६

तब काशी नृप कहँ बोलवायो * तुलसिदास हित कर समुझायो
सुत कहि सुता जो ब्याह नआयो* होय पुत्र तौ होय बधायो ॥
जो यह पुत्र होय महराजा * करहिं विवाह साजि सब साजा
तुलसिदास वेदी विरचाई * तहँ गणेश गौरी पधराई ॥
सिंहासनपै धरि रामायण * नवदिनभर कीन्ही पारायण ॥
जो कन्या वरवेश बनायो * ताहीको सन्मुख बैठायो ॥
वक्ता आप सो श्रोता भई * दुनियां तहँ देखन सब गई ॥
कथा समस्त जब बांचि सुनाई * तासु सीसकर धरेउ गुसांई ॥

दो०अरु यह चौपाई पढी, रामहिं सुमिरि प्रसन्न ॥
तिहिं अवसर वर ह्वै गयो, श्रीरामायण धन्य १७

पढिमंत्रमहामणिविषयव्यालके * मेटत कठिन कुअंक भालके ॥
रामायण जब कही गुसांई * प्रगट न हित काशी फिर आई ॥
आदर कीन्ह न पंडित काऊ * कहैं जो हमसो करौं उपाऊ ॥
जेहि अस्थान कहैं तहँ जाहू * पोथी अब न देखावहु काहू ॥
श्रीआँनद कान्ह ब्रह्मचारी * हैं शिर मोर सुमहिमा भारी ॥
जो याको वे आदर करिहैं * तौ हम सब लै शीर्षहिं धरि हैं
गए आनंद काननपह तत्पर * करत प्रशंस प्रसन्न परस्पर ॥
पोथीकी चर्चा पुनि कीन्ही * देखन हेत सो लै धरि लीन्ही॥

कछुदिन पढ़ी सहित अनुरागन * गये गोसांई पोथी माँगन ॥
दो०पोथी दइ अरु अस कहेउ, होई आदरलोक ॥
निज प्रमाण करि लिखि दियो, यक अद्भुत अश्लोक ॥
श्लोक०आनंदकानने ह्यस्मिञ्जंगमस्तुलसीतरुः ॥
कविता मञ्जरी यस्य रामभ्रमरभूषिता ॥ १॥
छंद०धनिधन्यतुलसीदासजिनजगहेत रामायणभनी
माहात्म्यअमितनकहिसकौंरसविषयमहँ मोमतिसनी
निज बुद्धि के अनुसार कही गोपाल सद्गुरुकी दया ॥
रघुवीर यशकी अधिकता श्रीसंतजन करिहहिं मया
दो०ः श्रीमत्तुलसीदासजी, व्है प्रसन्न वर देहु ॥
रामायणमाहात्म्यसों, हरिजन करहिं सनेहु ॥ १९ ॥
संबत बसुनभनंदकू १९०८, मार्गशुक्ल गुरुवार ॥
एकादशिकहँ कीन्ह है, अपनी मतिअनुसार ॥ २० ॥
रामकोट श्रीअवधपुर, स्वामी रामप्रसाद ॥
तिनकी महिमा को कहैं, विश्वबिदित मर्याद ॥२१॥
तिनते गादी पांचई, सो स्वामी मैं दास ॥
लषणपुरी मम जन्मक्षिति, रामनगरके पास ॥ २२ ॥
भोजनगर सुप्रसिद्ध द्विज, उत्तम पूरणदास ॥
तस्यात्मज गोपाल कृत, यह माहात्म्य इतिहास ॥

इतिश्रीद्विज गोपालदासकृत रामायणमाहात्म्यं संपूर्णम् ॥

समाप्तं रामायणमाहात्म्यम् ॥

श्रीः।

श्रीयुतगोस्वामी

तुलसीदासजीकाजीवनचरितामृत

वार्तिक--श्रीगोसाईंजी सरजूपारी ब्राह्मण अनन्यरामोपासक षट्शास्त्री थे. इन्होंकी जन्मभूमि मुकाम राजापुर, जिला बाँदा है; सम्वत् १५८३ में उत्पन्न हुवे.

किन्तु जन्मसमय मूल नक्षत्र होनेके कारण मातापिताने त्याग दिया. यह विषय गोसाईंजीकी "विनयपत्रिका" के "जननि जनक तज्यो जनमि करमविन विधिहू अवंडेरे" अर्थात् माता पिता मुझे तजा तथा देवनेभी मुझे भाग्यहीन उत्पन्न किया इस प्रमाणसे प्रमाणित होता है.

माता पिताकेत्यागदेनेपर गुसांईजीको नृसिंहदासनामक साधु शूकर क्षेत्रले जाके उनका पालन किया. छोटेपनमेंही रामकथा नुरागी-करके बड़े होनेपर अपना शिष्य बनाया. बालकाण्डका नम्न लिखि दोहा तथा सोरठेका पूर्वार्ध इस विषयका समर्थक है. तद्यथा–

दो०मैंपुनि निज गुरुसन सुनो,कथा सुशूकरखेत॥
समझ नहीं तसबालपन, तब अति रहेउ अचेत॥
सोवंदौ गुरुपदकंज, कृपासिंधु नर रूपहरि ॥ ११ ॥

जब साधुसमागमसे गोसाईंजी सुयोग्य रामभक्त होगये. तब श्रीमान् दीनबन्धु पाठकने अपनी कन्याका विवाह उनके साथ कर दिया. गोसाईंजी उसे अपने घर लाकर उसपर

अतिप्रेम रखतेथे; कि-एक दिन वोह स्त्री अपने मातापिताके घर गई तो गोसाईंजीभी वहां पहुँचे. तब उसने कहा कि–ऐसा प्रेम श्रीरामजीमें होता तो अच्छा था, उसी वख्त श्रीगोसाईंजीको विराग उत्पन्न हुवा और जब प्रभातमें उठकर काशीमें चले गये और रामभजन करने लगे और वहां यह नियम था, कि–जब प्रभातमें उठकर दिशा जंगलसे लौटतेथे तब शौचका जल, जो लोटेमें बचता था, उसको एक बबूलके वृक्षमें नित्य ड़ालतेथे; ऐसे एकदिन उस वृक्षसे एक प्रेत-निकल आया और बोला कि नित्य जलदानसे हम अति-प्रसन्न हैं, तुम बरदान मांगो. तब गोसाईंजीने रामदर्शन मांगा. तब प्रेतने कहा यह सामर्थ्य मेरेमें नहीं है. परंतु तुमको उपाय बतलाता हूं कि काशीजीमें करण घाटपर रामकथा होती है वहांपर एक कोढीका रूप धर, श्रीहनुमान्जी नित्य कथा श्रवणको आते हैं, उनको मिलो तुम्हारा काम होजायगा. यह सुन, गोसाईंजी वहां गये और चलतेबखत रस्तेमें हनुमानजीके पांव पड़े और कहा कि आप हनुमान्जी हैं; मुझ दीनपर दया कीजिये. तब हनुमान्जीने दर्शन दे कहा बरदान मांगो. इन्होंने रामदर्शन मांगा. हनुमानजीने कहा कि-चित्रकूटमें मिलेगा.

इसके बाद एकदिन श्रीगोसाईंजीके स्थानपर नाभाजी गये सो मुलाकात न भई, इसवास्ते गोसाईंजी नाभाजीके आश्रममें गये. उन्होंने बड़े आदरसे लिया और संतमंडलीमें अच्छे ऊंचे आसनपर बैठाया और विधिपूर्वक पूजन किया और स्तुति किया.

छंद॥ त्रेता काव्य निबन्ध सहस्र चोबिस रामायण॥ एक अक्षर उद्धरे ब्रह्महत्या पारायण ॥

अब भक्तनसुखहेत बहुरि लीला विस्तारी ॥
रामचरितरसमत्त अनत निशिदिन व्रतधारी ॥
दो०संसारपारके पारकहँ, सुगमरूप नौका लयो॥
कलिकुलजीवनिस्तारहित, वाल्मीकि तुलसी भयो

वार्तिक–इसको सुनकर गोसांईजीने कहा कि–यह पदवी गुप्त राखिये. और पीछे एक श्रीकृष्णमन्दिरमें दर्शनको गये. तब सब संतोंने तो प्रणाम किया और गोसांईजीने यह काव्य पढ़ा.

दो०काह कहौं छवि आपकी, भले बने व्रजनाथ ॥
तुलसी मस्तक जब नवै, धनुषबाण लेव हाथ ॥

वार्तिक–यह सुन, श्रीकृष्ण भगवान्‌ने मुरली मुकुट छिपाकर, धनुषबाण हाथमें ले, रामरूपके दर्शन दिया; तब गोसांईजीने दंडवत् किया. यह अमृत लीला देखकर, सब संतोंने गोसांईजीको धन्यवाद और संतोंके शिरताज कह्या. इसके बाद एकदिन दक्षिणदेशके राजासे यहांसे रामजीकी एक प्रतिमा अयोध्याजीमें स्थापनके लिये श्रीवृन्दावनमें आई और एक रामानन्य ब्राह्मणके वश्य हो, रामजीने वहीं रहनेको हुकुम दिया; तो रामघाटपर मन्दिर बनने लगा; तब सब सन्तोंने गोसांईजीसे पूछा कि यह भगवानको क्या नाम होयगा ? तब गोसांईजीसे कहा यहीं अयोध्याजीके रामलाल हैं. यह सुन, उन संतोंने पुजारीलोगोंसे पूंछा तो यथार्थ वही नाम निकला. वह मन्दिर आजभी रामघाटपर है. ऐसे धनुषलीला होनेके बाद कोई कोई कृष्णोपासक गोसांईजीसे ईर्षाभाव मानने लगे, तब गोसांईजीने उनको समझाया और यह चौपाई, कवित्त तथा दोहा पढ़ा–

राम सदा सेवकरुचि राखी * वेद पुराण सन्त सुर साखी ॥
कबित्त–प्रभु सत्य करी प्रल्हादगिरा प्रगटे नरकेहरिखम्भमहां॥
झषराज ग्रस्यो गजराज कृपाततकाल विलम्ब न कीन तहां ॥
श्रुतिशाखी है राखी है पाण्डुवधू पट लूटत कोटिन भूप जहां ॥
तुलसी प्रभु शोचविमोचनको जनको प्रण राम न राख्यो कहां॥
दोहा०ऐसे साहिब रामको, क्योंकर दीजे पीठि ॥
तुलसी जाके आपुते, सेवककी रुचि मीठि ॥

बार्तिक–ऐसे उपदेश सुन, सब सन्तोंने श्रीगोसाईंजीको अनेकानेक धन्यवाद दे, नमस्कार किया और एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण नन्ददास नामके गोसाईंजीके गुरुभाई कनौजके पास रहतेथे और यह महात्मा बड़े कृष्णोपासक थे. संसारके प्रपंचसे भिन्न थे, इसपर उनके कुटुंबवालोंनें बहुत रोका परंतु उन्होंने भजन भाव नहीं छोडा; तब वोह लोग अधर्म किये कि–एक मरी गाय रातके वखत उनके दरवाजेपर रख गये और प्रातःकाल हुवा तब सब लोगोंने यह पुकारा किया कि–नन्ददासने गऊ मारी है, यह देख, नन्ददास अतिघबराये. पीछे द्विभुज मुरलीधर श्रीकृष्णके शरण गये बारंबार प्रार्थना किया कि–महाराज आपके शिवाय दूसरा कौन रक्षण करैगा ! मर्यादा आपहीकी है. यह सुन, कृष्ण भगवान्‌ने उसी वखत उस मरी गायको जिला दिया, तब वोह लोगभी नन्ददासको महात्मा समझके, बैर भाव छोड दिय. उसीही नन्ददासने सुना कि–श्रीगोसाईंजी वृन्दावनमें आये हैं, तो इनको दर्शन अवश्य करना चाहिये. यह विचार कर, श्रीगोसाईंजीके पास आये और बड़े प्रेमसे कुछ कृष्णभगवान्‌सम्बंधी कबिता

सुनाया तौ तुलसीदासजीने अतिप्रसन्न हो, कहा कि—कुछ रामलीला सुनावो, तब इन्होंने उत्तर दिया कि-महाराज मैं तौ जिसके नामपर बिक गयाहूं उसीका यश गाऊं यही आपभी आशीर्वाद दीजिये, क्यों कि मेरा नाम नन्ददास रक्खा है दशरथदास क्यों नहीं रक्खा? यह सुन, गोसांईजी नन्ददासका दृढ प्रेम देख, बहुत खुश भये, प्रशंसा करनेलगे कि—वाह इसीतरहँ अपनी उपासनामें दृढ़ प्रेम रखकर, खब भजन किया करो. ऐसे एक दिन वृन्दावनके महन्तने गोसांईजीसे श्रीअयोध्यापुरीका माहात्म्य पूँछा. तब गोसांईजीने कहा—

यद्यपि सब वैकुण्ठ बखाना * बेदपुराणविदित जग जाना ॥
अवधसरिस प्रिय मोहिं न सोऊ* यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ ॥

वार्तिक.—और कहा कि—तमाम सभाको आनन्दमें मग्न करदिया इसी तरहँ बहुतदिन वृन्दावनमें महात्मावोंसे सत्संग करके, श्रीअयोध्यापुरीमें आये और रातदिन रामभजनमें तत्पर हो, बहुधा यही दोहा कहते थे—

दो०सम्पति सारे जगतकी, श्वासासन नहिं होय॥
सो श्वासा रघुनाथ विन, तुलसी वृथा न खोय ॥

वार्तिक—ऐसे भगवतकी नित्य लीला करते बड़े प्रेममें मग्न रहते थे. एक दिन कलिकालका अनुभव जीवहिंसा, छल कपट पाखंड इत्यादि पुरीमें देखनेमें आये तौ गोसांईजीने मुक्तिपुरी अयोध्याजीमें यह अनर्थ देख. बडा रंज मान रामजीकी विनय की कि—महाराज! यह अनर्थ मेरेसे देखा नहीं जाता, तब श्रीरामजीने काशीजी जानेकी आज्ञा दिया और कहा कि—उस

पुरीके रक्षक शिवजी हैं, वहां कालकर्मकृत गुण दोष नहीं लगता. यह सुन, गोसांईजी काशीपुरीमें आये और भाषारामायणकी चर्चा चलाई, कि--जहां देखो वहां रामायण हो रही है, यह देख, वहांके शास्त्रीलोग गोसाईजीसे शास्त्रार्थ करनेको आये और बोले कि--भाषाका क्या प्रमाण है? तब गोसांईजीने कहा कि--हमारा दोहा सुनो--

दो०हरिहरयशसुरनरगिरा, बर्णहिं सन्तसुजान ॥
हांडी हाटक चारु चिर, रांधे स्वाद समान ॥

बार्तिक--यह सुन, उन्होंने कहा शास्त्रका प्रमाण दीजिये; तब गोसांईजीने कहा, मैं विवाद नहीं करता किंतु--मतलब कह देता हूं यह सुन उन्होंने दण्डिराज स्वामी मधुसूदनाचार्यसे हकीकत कही उन्होंने गोसांईजीको धन्यवाद है,यह श्लोक पढ़ा--

श्लोक-परमानन्दपत्रोऽयं जंगमस्तुलसीतरुः ॥
कवितामंजरी यस्य रामभ्रमरभूषितः ॥

बार्तिक-जिसका अर्थ यह है कि-परमआनन्दरूप पत्ते हैं जिस्के, कबिता रूप हैं मंजरी जिस्की और रामरूप भ्रमसे भूषित ऐसा जगम अर्थात् चलनेवाला श्रीगोसांईजीरूप एक यह तुलसीका वृक्ष है. ऐसे कह स्वामीजीने कहा कि-उनके पास जाकर माफ मांगो; तब यह सुन वोह शास्त्रीलोग गोसां-ईजीके पास आये और बोले कि-महाराज ! हम लोग बड़े अज्ञानी हैं हमारा अपराध माफ करो. यह सुन गोसांईजीने सबको समझा दिया.

ऐसे एकदिन गोसांईजी रामजीके ध्यानमें थे कि--इतनेमें

भैरवजी महाभयंकर रूप धर, आतेभये कि, जिससे ये डरके काशी छोंडके, चले जांय. तो इतनेमें भैरवजी क्या देखते हैं? कि–तुलसीदासके पीछे हनुमान्‌जी खडे हैं ऐसे देख भैरवजी पीछे लौट गये, इतनेमें गोसाईंजी ध्यानसे जागे तो आगे एक ब्राह्मण देखा तो उससे पूंछा, तुम कौन हो ? तब उन्होने कहा कि–हम तुम्हारे पुराने व्यवहारी हैं, तब गोसाईंजीने हनुमान्‌जीको जान, साष्टांग दण्डवत् की और विनय की कि--महाराज ! आज किधर दया की ? तब हनुमान्‌जी बोले आज तुमको त्रास दिखानेके लिये भैरवजी आये थे, इसवास्ते मैं आया था. सो मुझको देखकर चले गये, अब नहीं आवैंगे. यह सुन, गोसांईजीके प्रेमके आंशू बहने लगे और हनुमान्‌जी अन्तर्धान हो गये.

ऐसे श्रीगोसांईजी परमानन्दपूर्वक काशीमें रहते भये एक-रोज गोसांईजीके राममन्दिरमें चोरी करनेके लिये चोर आवते भये, तो जिधरकी बाजू जाते हैं उधर श्रीराम लक्ष्मण नजर आते हैं ऐसे रात व्यतीत होगई प्रातःकाल हुवा और सन्तलोग उठे देखे तो उनसे पूँछे तुम कौन हो ? उन्होंने अपना आनेका प्रयोजन यथार्थ कह दिया, इसपर गोसांईजीने बहुत खुश हो, यह कवित्त पढा.

कबित्त ॥ अतिसुन्दररूप अनूप महाछबि कोटिमनोज लजावनहारे ॥ उपमा न कहूं सुषमाके मन्दिर मन्दरहूँके बचावन हारे ॥ दिननायकहूं निशिनायकहूं मदनायकके मद नावनिहारे ॥ साँवर गौर किशोर बसैं चित चोरनहूं चोरावनिहारे ॥

वार्तिक-ऐसे कह, गोसांईजीने उन चोरोंको बहुतसाधन दे, उत्तम रीतिसे उपदेश दिया कि-जिस्से वोहलोग कृतार्थ भये.

और एकदिन माघके महीनेमें प्रातःकाल श्रीगोसांईजी गंगाजीमें कटिपर्यन्त जलमें खडे जप करते थे; उसीबखत एक वेश्या आई और बोली कि, इसके आत्मा जराभी प्यारा नहीं है, कारण मारे शीतके दंत किडकिडाता है. यह बात सुन गोसांईजी जलके बाहर हो जरासा जल कपडोंमें छिनक धोती पहरने लगे इतनेमें कोई एक जलका छांटा उस वेश्याके अंगपर पडा; तब बस उसके उत्तम ज्ञान, भक्ति, वैराग्य और दिव्य-दृष्टि होगई जिस्से संपूर्ण यमयातना और नरक देखने लगी, तब तो वह बहुत घबडाई और गोसांईजीके शरण हुई, तब उन्होंने ऐसा उपदेश दिया कि जिससे वह वेश्या सब प्रपंच छोड और सर्वस्व दानकर, रामभजनमें मग्न हो मुक्तरूप होगई.

और एक पण्डित ब्राह्मण काशीजीके उसपार रहते थे उनकी जमीन गंगाजीके प्रवाहमें डूब गई तो जीविका हत भई ऐसा समझ, गोसांईजीके शरण आये तब गोसांईजीने गंगाजीकी स्तुति करके, उस ब्राह्मणकी जमीन छुटवा दिया कि पहलेसे तिगुनी जमीन निकली; तबतो उस ब्राह्मणने अतिप्रसन्न हो, गोसांईजीको भगवद्रूपमान, कोटिशः धन्यवाद दिया.

और काशीजीमें एक बडे प्रतिष्ठित पण्डित रहते थे सो उन्होंने गोसांईजीकी प्रतिष्ठा देख, बडा संताप किया और गोसांईजीके पास आय, विनय कर, कहा कि आप काशी-जीसे निकल जांय, यह वरदान हमको दीजिये; तब गोसांई-

जीने कहा बहुत अच्छा और विश्वनाथजीके मन्दिरमें गये और यह कबित्त पढ़ा–

कबित्त ॥ सुरसरि सेय त्रिपुरारि हौं तिहारे गांव रामहींको नाम लैलै उदर भरत हौं ॥ तुलसी न देवैं भोग लेत काहूसों न कछु लिख्यो न भलाई भलभालसों करत हौं॥इतने पर जो करै राउर जोर कर वाको रद देव दरबार गुदरत हौं ॥ पायकै उराहनो उराहन न दीजै मोहिं कालिकेश काशीनाथ कहे निबरत हौं॥

बार्तिक--ऐसे कह चित्रकूटको चल दिये,यह बात जान कर विश्वनाथजीका मन्दिर बन्द होगया और बडे क्रोधसे वाणी हुई कि, तुलसीदास निकल गये इसीसे मन्दिर बन्द है उनके लाये बिना नहीं खुलैगा और नहीं लावोगे तो तुमको सबको नाश कर देऊंगा ऐसी शिववाणी सुन वोह लोगोंने गोसांईजीको पांव पडके बुलाय लाये और मन्दिर खुल गया, तब सब लोग गोसांई जीको बहुशः धन्यवाद देते भये.

और एक काशीजीमें महानिंदकाधिराज नास्तिक शाहूकार रहता था, सो कोई दिन मर गया और श्मशानको गया और पीछेसे उसकी औरत रोतीहुई आती थी कि–इतनेमें रास्तेमें गोसांईजी मिले तो इन्होंके पांव पड़ी तब इन्होंने आशीर्वाद दिया कि सौभाग्यवती हो. यह सुन, उसने कहा महाराज ! मेरा पति श्मशान पहुँच गया मेरे तो सौभाग्यरूप वृक्षको मूल उखड गया. तब गोसांईजीने उसकी लहास मँगवाय कानमें कहा कि सीताराम कहो. इतना सुनतेही वह शाहूकार उठ बैठा और

गोसांईजीके चरणोंमें पड गया क्षमा मांगी तब गोसांईजीने प्रसन्न हो मंत्रोपदेश दे कृतार्थ किया.

और जबसे गोसांईजीने उस शाहूकारको जिलाया तबसे हजारों आदमी दर्शनको आने लगे कि—यहांतक कि कोई बखत अवकाश न रहा, इसवास्ते गोसांईजी एक गुफामें जा बैठे और जब बहुत आदमी इकट्टे होते थे तब दर्शन देतेथे उनदिनोमें गोसांईजीके परम भक्त तीन लडके कोई गृहस्थके थे उन्होंने तीनदिनतक दर्शन न पानेसे प्राण छोंड दिया, पीछे गोसांईजीको हाल मालूम हुवा तब गोसांईजीन रामजीका चरणोदक उनके मुखमें डाल दिया, कि—बस डालतेके साथही वे तीनों लडके उठके खडे हो गये और गोसांईजीके चरणोंपर पडे, इन्होंने आशीर्वाद दे कृतार्थ किया.

और एकबखत श्रीकाशीपुरीमें वैष्णवोंका और योगियोंका बडा शास्त्रार्थ हुवा, निदान योगीलोगोंकी पराजय हुई, उस्पर उनके गुरूने अपने योगबलसे दिल्लीके बादशाहको मयतख्त उठा मँगाया और बादशाहसे कहा कि—वैष्णवोंके कंठी माला सब छीन लिये जांय इस्पर उसने कंठी माला छीननेके लिये अपने सूबेदारको हुकुम दिया कि—वोह लगे छीनने. इतनेमें सूबेदारको साथ ले, वह योगी गोसांई तुलसीदासके पास चला कि—बस सब लोगोंके पांव बँध गये, आगे देखते क्या हैं ? कि—एक महाभयंकर पर्वताकार पुरुष मारनेको आता है, इसको देखतेही भगदर मचगई और वह योगी अचेत होगया और पीछे होंश हुवा तो रामजीकी स्तुति किया, तब आकाशबाणी हुई कि—

तू तुलसीदासकी शरणमें जा; ऐसे सुन, वह योगी दौड़के इनके पांव पडा और माफ मांगी, तब गोसांईजीने दयादृष्टिसे देखा तो वह योगी आनन्द होगया और अपने घर आया, और कंठी माला फेर दिया और एक दफे श्रीगोसांईजीने यह दोहा पढ़ा--

दो०-शरदरैनबिनु चन्द्रमा, श्रवै न अमृतनीर ॥
तुलसी जनककुमारिबिनु, जे सुमिरत रघुबीर ॥

वार्तिक-और जनकपुरको चल दिये, चलते चलते रास्तेमें एक मैथिल ब्राह्मणोंकी सभामें गये, वोह लोग बड़े आदरसे लिये और बिनयकर अपनी विपत्ति कहने लगे कि -महाराज ! श्रीरामचन्द्रके विवाहमें हालापुरआदि बारह ग्राम, हम लोगोंको दान मिले थे, जिसका (दानपत्र) ताम्रपत्रमें लिखा है और जिस्में हनुमानजीकी साक्षी है; सो इसवखतमें कलिराजके प्रभावसे पटनाके सुबेदार यवन राजने छीन लिये, हमारी जीविका जाती रही. ऐसे महादीन होय वोह मैथिल ब्राह्मणोंने वह दानपत्र गोसांईजीके हाथमें दिया; इन्होंने वह पत्र अपनी छातीमें लगाया और आनन्दमें मग्न होगये और कहे इसपत्रका हमको दर्शन दुर्लभ है ऐसे कह, गोसांईजी पारायणकी विधिसे रामायण कहने लगे और यह नियम किया कि--जबतक श्रीहनुमान्जी प्रसन्न हो, इन ब्राह्मणोंके ग्राम न दिलावेंगे तबतक आसनसे नहीं उठूंगा, ऐसे निर्जल गोसाईंजी छेरोज बैठे रहे, तब हनुमान्जीने एक ब्राह्मणका बेष कर, हाथमें कन्द, मूल, फलोंसे भरी हुई थाली ले, गोसाईंजीके पास आय कहा कि--इस्को प्रसाद पाइये; ऐसा व्रत न करना चाहिये, कलियुगमें अन्नगत प्राण है; ऐसे सुन गोसाईं-

जीने कहा कि--हमतो तब उठैंगे कि जब हनुमान्‌जी उन ब्राह्मणोंके ग्राम दिलावैंगे, यह सुन हनुमान्‌जीने दो अपने लोम दिये और कहा कि--एक छोडनेसे अंगार लगेंगा, दूसरेसें शांति होगी और अन्तर्धान होगये, तब गोसांईजीने उन मैथिल ब्राह्मणोंको दोनों लोम दे हकीकत कह दिया, तब वोह लोग पटना शहरमें गये, उस यवनराजसे बोले हमारे ग्राम माफीके हैं देदो, उसने न दिया, तब इन्होंने अंगारवाला लोम छोंडा कि लगा पटना मयसूबेदारके मकानके जलने, जिस्से चारों तरफ हाय ! हाय ! होगया, निदान वह सूबेदार शरणमें आया और सब ग्राम माफ कर दिये, तब इन्होंने शान्तिकारक लोम छोंड दिया तब सब अग्नि शांत होगई और तुलसीदासजीके चरणोंमें पडे जो आजभी वे माफी खाते हैं. पीछे गोसाईंजी काशीजीमें आते भये.

और एक दिन काशीजीमें एक आदमी आकाशमार्गमें देखनेमें आया, तब हजारों आदमी इकठे होगये, इतनेमें गोसाईंजीभी आये, इनके देखतेही उधरसे दण्डप्रणाम और इधरसे जै सीतारामकी धुनि भई और इतनेमें एकबिमांन आया उसीमें एक पुरुष चतुर्भुजरूप हो, वैकुण्ठ गया और वह पुरुष उतर पडा और गोसाईंजीके साथ हो, आश्रममें आया, इन्होंने बडा आदर सन्मान किया, तब सब लोग पूंछने लगे तुम कौन हो ?-उसनें कहा कि—मैं ब्राह्मण हूं बनखण्डी मेरा नाम है और यह प्रेत है, मेरा और इस्का यह कौल भया. कि—तुम मेरेको गोसांईजीके दर्शन करा देव, मैं तुमको धन बताता हूं. यह सुन मैंने कहा कि बहुत अच्छा है; ऐसे कह, मैंने इस्को यहां ला, गोसाईंजीके

दर्शन करादिया, अब वह वैकुंठ गया और मैं चाहता हूं कि–चित्रकूटके गुप्त तीर्थोंको गोसाईंजीको साथ ले उद्धार करूं. यह सुन, गोसाईंजी अतिप्रसन्न हो, बनखण्डीके साथ चित्रकूटमें सब तीर्थोंको शोध शोध प्रकट कर, फिर काशीजीमें आये, जिन तिर्थोंको आजदिनभी लोग दर्शन स्पर्श करते हैं.

इमदफे गोसांईजी बहुत काल काशीजीमें रहे और नित्य रामदर्शनके लिये उत्कण्ठित रहते थे, कि--इतनेमें हनुमान्‌जीने इनका दृढ़ विश्वास देख चित्रकूट जानेकी आज्ञा दिया और कहा उधर तुमको रामदर्शन होगा, ऐसे सुन गोसाईंजी चित्रकूट-को चले और रास्तेमें श्रीशिवजीने एक दंडीका वेष रख,तुलसी दाससे कहा तुम किधर जाते हो ? उन्होंने कहा रामदर्शनके लिये, तब शिवजीने कहा तुम्हारा मनोरथ पुरा नहीं होगा ऐसे कह अपना स्वरूप दिखाया, तब गोसांईजीने कहा अब मेरेको रामदर्शनभी होगा और यह चौपाई पढ़ी.

जापर कृपा न करैं त्रिपुरारी * सो न पाव नर भक्ति हमारी ॥

वार्तिक–इस्पर शिवजी अतिआनन्दित हो (एवमस्तु) कह, अंतर्धान हो गये और गोसांईजी चर्नारगढ़के किलेमें पहुँचे तौं वहांका राजा बहुत खुश हो मिलने चला इतनेमें दिल्लीके बादशाहके यहां कैद होगया, यह सुन गोसांईजीके दया लगी तब ऐंक हनुमान्‌जीका मंत्र लिखा कि--जिस्के लिखने मात्रसे बादशाहको ऐसा मालूम हुवा कि--उलट पलट हुवा जाता है, तो उसीवख्त राजाको कैदखानेसे छुड़वाय, दरबारमें बुलवाय, बड़े प्रेमसे बैठाय, बहुतसा धन दे, बिदा कर दिया.

और एकबखत विंध्याचलकी तराईमें दो राजावोंसे यह करार हुया कि हमारे तुम्हारे लडकी लडका होगा तो बिबाह करैंगे ऐसे ईश्वरकी इच्छासे दोनोंके लडकीही भई तब एक कुछ जातमें कमती था उसने अपनी छोकरीको छोकरा बताया, कि-निदान उनको विवाह हो गौना आया. जब मालुम हुवा कि-दोनों छोकरीही हैं, तब उस लडकीने अपने पिताको पत्र लिखा, कि-जैसी मैं हूं ऐसेही यहभी है, यह जान उस राजाने अतिक्रोध कर, उसका सब राज छीन लिया और शिर काटनेका विचार किया, तब वह राजा अपनी लडकी ले गोसांईजीके शरण आया तब गोसांईजीने श्रीरामजीका तीर्थ प्रसाद दे और दोनों राजावोंको बुलाय कहा कि-यह लडका है, तब उस राजाने परीक्षा किया और लडकाही ठहरा तब तो बडा आनन्द हुवा, तब गोसांईजीने यह दोहा कहा.

दो० तुलसी रघुवर सेवतहिं, मिटिगे कालो काल॥
नारि पलटि सो नर भयो, ऐसे दीनदयाल॥

और इसके बाद श्रीगोसांईजी चित्रकूट पहुँच, रामघाटपर बास करते थे और नित्य यही इच्छा थी कि--रामजीका दर्शन होगा, ऐसे एकदिन श्रीरामजीने दर्शन दोदिया, तब गोसांईजीने परमप्रेममें मग्न हो चरणोंमें गिर यह, दोहा पढ़ा--

दो०यह शोभासमाजसुख, को कहि सके खगेश॥
वर्णै शारद शेष श्रुति, सो सुख जान महेश॥

वार्तिक-इसके पीछे हनुमान्‌जीने स्तुति करी और फूलोंकी बरसात किया इसके पीछे श्रीरामचन्द्रजीने श्रीमुखसे कहा, कि-गोसांईजी तुम हमको ध्यानमें देखा करो और यह कह अंतर्धान होगये, तब गोसांईजीने यह दोहा पढा-

दो०रामघाट मन्दाकिनी, भई विमाननभीर ॥
तुलसिदास चन्दन घिसैं, तिलक देत रघुवीर ॥

और इस स्थानपर बहुत दिन रहकर इसी आनंदमें बहुत कुछ भक्तिभाव कहा है. और एक चित्रकूटके पास दरिद्री ब्राह्मण रहता था सो एक दिन बहुत कायल हो, चिता लगाय, जलना चाहा, तब सब लोगोंने बहुत समझाया परंतु न माना, तब गोसाईंजी समझाने लगे और द्रव्यकी निंदा किया तब ब्राह्मणने यह कबित्त पढ़ा --

कबित्त ॥ द्रव्यहीते देवपूजा धर्म द्रव्यहीते द्रव्यहीते काम कर्म दाम बिन पुरुष निकाम है ॥ बिना द्रव्य दारा सुत भ्राता पितु माता सब अरिसे लगत विधिहूकी गति वाम है ॥ बिना द्रव्य दुर्जन न जीतो जाइ आदर न कादर कहावै सुधि बुधि सब खाम है ॥ बिना द्रव्य कहौ बुध कौनकी दशा है नीकी मेरे सब-बिधि जान द्रव्यहीमें राम है ॥

वार्तिक-ऐसे गोसांईजीने उस ब्राह्मणको हठ देख, दरिद्र-मोचिनी शिलाको दर्शन कराय बड़ा धनी बना दिया, जिस्के बंशमें आजदिनभी सब धनी होते हैं.

ऐसे जब गोसांईजीकी अद्भुत लीला जाहिर होने लगी तब दिल्लीके बादशाहने बुलवाया और गोसांईजीभी गये, तब बादशाहने हुकुम दिया कि-दरबारमें लावो, यह सुन, गोसांईजी दरबारमें गये, तब बादशाहने कहा करामात दिखावो. तब तुलसीदासने कहा मेरेपास करामात काहेकी ? मैं तो राम राम कहकर

पेट भरता हूं तब उसने हुकुम दिया के कैद करो, जब गोसांईजी कैद होगये तब रामजी तथा हनुमान्जीकी स्तुति शुरू की--

श्रीरामजीकी स्तुति ॥ कबित्त ॥ कानन भूधर वारि बयारि दवादुख व्याधि महाअरि घेरे ॥ संकट कोटि तहां तुलसी जहँ मात पिता सुत बन्धु न मेरे ॥ राखि हैं तहँ राम कृपा करिकै हनुमानसे सेवक हैं जेहिकेरे ॥ नाक रसातल भूतलमें रघुनायक एक सहायक मेरे ॥ १ ॥ जबहीं यमराज रजायसुते मोहिं लै चलि हैं भट बांधि नटैया ॥ सांसति घोर पुकारत आरत कौन सुनै बहुबार डटैया ॥ एक कृपालु तहां तुलसी दशरत्थके नंदन बंदि कटैया ॥ तात न मात न स्वामी सखा सुत बन्धु विशाल विपत्ति बँटैया ॥ २ ॥ जहां यम यातन घोर नदी भट कोटि जलच्चर दन्त कटैया ॥ धार भयंकर वार न पार न बोहित नाव न मीत खेवैया ॥ तुलसी जहँ मात पिता न सखा नहिं कोऊ कहूं अवलंब देवैया ॥ तहां बिन कारण राम कृपालु विशाल भुजा गहि काढि लेवैया ॥ ३ ॥

श्रीहनुमानजीकी स्तुति ॥ तोहिं न ऐसी बूझिये हनुमान् हठीले ॥ साहिब कहूं न रामसे न उसीले ॥ तेरे देखत सिंहके शिशु मेंढुक लीले ॥ जानतहौं कलि तेरे मनों गुणगण कीले ॥ हांक सुनत दशकण्ठके भये बंधन ढीले ॥ सो बल गयो किधौं भये अब गर्वकहीले ॥ सेवकको पडदा फटै तुम समरथशीले ॥ अधिक आपुते आपुनो सनमान सहीले ॥ सांसति तुलसीदासकी लखि सुयश तुहीं ले ॥ तिहूंकाल तिनको भलो जे रामरंगीले ॥ १ ॥

वार्तिक–ऐसे गोसांईजी जब पद बना चुके, तब एका-एकी महातेजप्रतापसहित श्रीहनुमान्‌जी प्रकट भये और असंख्य वानरी सेनाभी उत्पन्न भई, और पहले सब कैदी छोड़ दिये, पीछे चौकी पहारावाले सिपाहोंको तमाचा दांत नखोंसे घायल करके निकाल दिया और बादशाही मकानोंके दरवाजे, खंभे कंगूरे, शीशा, कपड़े, बिछौने, मच्छरदानी आदि सब तोड़ फोड़ डाले और बूढा, जवान, लड़का, लड़की, औरत, मरद और बेगमोंको जहां जिधर पाया तिधर मार पीट कूट काट करदी, कि जिस्से चारों तरफ हाय! हाय!! त्राहि! त्राहि!! मच गया, तब बादशाह बेगमोंके साथ हाथ जोडके गोसांईजीके शरण आवा और बोला मेरा अपराध माफ कीजिये, मैंने जो किया, तिस्का फल यथार्थ पाया,अब रामजीके खैरातमें हमारा जान बक्स कीजिये, मेरे बालबच्चे सब मरते हैं, सो यह आफत मिटाइये. यह सुन गोसांईजीनें बादशाही महलोंपर निगाह कि-तो देखते क्या हैं, कि प्रलयके समान उपद्रव हो रहा है, तब दयालु गोसांईजीने हनुमान्‌जीकी विनय की परंतु उपद्रव शांत न हुवा, तब गोसांईजीने यह विष्णुपद बनाया.

विष्णुपद.

मंगलमूरतिमारुतिनंदन,सकल अमंगलमूलनिकंदन
पवनतनयसन्तनहितकारी,हृदयविराजतअवधबिहारी
मातापित गुरुगणपति,शिवासमेत शंभु शुक नारद
चरणबंदिविनवों सबकाहू,देहु रामपद भक्तिनिबाहू
वंदों राम लषण वैदेही, जे तुलसीके परमसनेही॥

वार्तिक–इसपर हनुमान्‌जी अन्तर्धान हो गये और बादशाहने श्रीगोसांईजीकी बड़ी धूमधामसे सेवा पूजा कर चरणोदक ले सब महलोंपर छिनकाया और रुपया, अशर्फी, जवाहिरात, नावोंमें भर सामने लाया कि आप इस्को ग्रहण करो, तब गोसांईजीने कहा कि हम क्या करेंगे ? और यह दोहा पढ़ा.

दो०तीन टूक कौपीनमें, अरु भाजीबिन लौन ॥
तुलसी रघुबर उर बसें, इंद्र बापुरो कौन ॥

वार्तिक–परंतु गोसांईजीने यह आज्ञा दी कि यह स्थान श्रीहनुमान्‌जीके चरणकमलोंसे पवित्र हुवा तुम्हारे रहने लायक नहीं है; यह सुनकर उत्तरतरफ यमुनाके किनारे अपने लड़केके नामसे शाहजहांबाद बसाया, और उसीमें रहने लगे और गोसांईजीसे यह मांगन मांगा, कि कभी कभी दया करके, दर्शन दिया करो, तब गोसांईजीने कहा, इस्की कुछ चिन्ता नहीं; और चल दिया

इस्के बाद रास्तेमें आते थे; कि--एक अहीर मिला और दूध, दही ला आगे रख, दंडवत कर, बोला, कि- हे महाराज ! रामजीने बनमें कोलभिल्लोंके फल, मूल, दल ग्रहण किये, तैसे आपभी ग्रहण करो, इसपर गोसांईजीने खुश हो कहा, के वही रामजीका भजन किया करो और दूध,दही, ले लिया, और वह अहीर अनन्य रामोपासक हुवा; के जिस्ने भक्तिमार्ग चलाया.

और गोसांईजी वृंदावन पहुँचे, व रामघाटपर जाय, दंडवत कर ठहरे, इतनेमें ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र, वैरागी इत्यादि सबलोग आने लगे

और गोसाईंजीने सबसे जयराम, सीताराम, किया; परंतु वोह लोग कृष्णोपासक थे इस्से आदर पूर्वक उन्होंनें यथार्थ उत्तर न दिया और न राम राम किया, इस्पर गोसाईंजीने यह दोहा पढ़ा.

दो०आंक डांक सब कहत हैं, आंब घास अरु कैर ॥
तुलसी व्रजके लोकते, कहा रामसे वैर ॥

वार्तिक–यह सुन वृन्दावनके महन्तने कहा, के रामजी तौ चौदह कलासे हैं. और इस्पर प्रमाण भागवतमें कहा है **"अन्ये चांशकलाः प्रोक्ताः कृष्णस्तु भगवान् स्वयमिति"** अर्थ–अन्य अवतार अंश कलावोंसे हैं और कृष्णजी तौ स्वयं भगवान् हैं यह सुन गोसाईंजीने यह दोहा पढ़ा.

दो०जो जगदीश तो अतिभलो, जो महीश बडभाग
तुलसी चाहत जन्मप्रति, रामचरणअनुराग ॥

वार्तिक–यह सुन सबलोग गोसाईंजीको अनन्य रामोपासक जान बहुत खुश भये और बोले, के महाराज! आप कृष्णके नित्य लीला विहारोंके स्थान कुंजलताभवनोंमें चलिये, तब गोसांईजीने कहा के–यह रामघाटभी कृष्णभूमिही है इससे यहांसे जाना न होगा, तब सबोंने कहा के–यहांसे ए नहीं जांयगे और अपने अपने स्थानोंसे गोसांईजीके वास्ते घी, शक्कर, मैदा, दूध, दही इत्यादि भोगके लिये भेज दिये, तब गोसांईजीने सब सामान लौटा दिया और कहा के हम जूंठे पदार्थ नहीं खाते, तब उन्होंने बाजारसे नवी सब चीजें मोल लेके भेजदीं तब फेर गोसांईजीने वही कहकर फेर दिया. तब वोह लोग आये और बोले के-आपने हमारी चीजें लौटा दिया, जूंठी और अशुद्ध बना-

दिया, इसका कारण क्या है ? तब गोसांईजीने कहा चलो, तब सब वृन्दावनवासी लोग जहांसे जो सामान लायाथा, उसने वोह जगह बताया, तब गोसांईजीने कहा, के देखो ! तब सबलोग देखते क्या हैं कि दरएक दुकानपर बालकृष्णरूप भगवान् हाथोंसे काढ़ काढ़के सब पदार्थ खा रहे हैं, ऐसे देख, सबलोग प्रेममें मग्न हो, गोसांईजीके चरणोंपर पड़गये और गोसांईजीने रामघाटपर आकर, यह दोहा पढ़ा—

दो०—तुलसी मथुरा राम है, जो जाने करि होय॥
युगअक्षरके मध्यमों, ताके मुखमें सोय ॥

वार्तिक--ऐसे कुछरोज वहां ठहर कर, सबको सुख दे, फेर चित्रकूटमें आये और श्रीरामजीकी नित्य लीला करने लगे.

और एक स्वामी नंदलाल श्रीरामजीके उपासक संदीलामें रहते थे, सो कोई बख्त अयोध्याजी जाते थे, सो रास्तेमें 'खोटी पठानोंकी बस्ती मलिहाबाद पहुँचे, कि—बस आतेके साथही कोई पठानने बुलाया, ए न गये. तब उसे पकडनेको हुकुम दे दिया. उसी बख्त पठानोंने स्वामी नंदलालजीको घेर लिया. धड पकड शुरू हुई और उस पठानके खूनकी कै जारी होगई और स्वामीके पास आय, अपना कशूर माफ कराया, तब स्वामीजीने कहा रामजी भला करें कि उसी बख्त वह पठान अच्छा होगया और स्वामीजीनेभी जरा आगे चलके मुकाम किया. वहां भगवान्की आरती होनेके बख्त घंटा शंख बजाया, इसपर बहुत पठानोंके लडके मारनेको आये. तब उनमेंसे एक छोकरा स्वामीजीकी तरफ हो, बोला के

कोई उनसे बोलो मत, तब स्वामीजीने उसको आशीर्वाद दिया. के जिस्का नाम संजरखां हुवा और जिस्की गद्दी आज दिनभी मौजूद है; इसके पीछे स्वामीजी रामायण बांचने लगे के एक भाट ठठोलियेने दोठौ आटेकी भौंरिया कपडेमें लपेट पुस्तकपर चढा दिया. उसी बख्तसे वह भाट दिवाना हो गया. और उसी जवारमें स्वामीजीके एक शिष्यने ब्रह्मभोज किया, ईश्वरीच्छासे ब्राह्मण जास्ती होगये और सामान कमती पड़ी तो दौडके स्वामीजीसे सब हाल कहा तब स्वामीजीने एक अँगोछा दिया और कह्या के तू डर मत, इस कपडेको पक्वान्नके ऊपर छोंड देने. रामजी सब अच्छा करेंगे, उसने वैसाही किया, तब सबको भोजन पूरा हो गया. पीछे अयोध्याजी होकर, तुलसीदासके दर्शनके लिये चित्रकूटमें गये, छे महीना रहे तब गोसांईजीने स्वामी नन्दलालजीको अपनी हस्तलिखित एक रामरक्षा और शालिग्रामकी मूर्ति दियी. जिस मूर्तिका नाम रामसुन्दर था.

और फेर गोसांईजीने अयोध्यामें और एक दाक्षिणात्य ब्राह्मणसे सुवर्णमयी अयोध्यापुरीको वर्णन किया तब उसने कहा के प्रत्यक्षमें आदर्शका क्या काम है? सुवर्णकी होती तो दीखती क्यों नहीं? तब गोसांईजीने कहा के यहांका कोई कंकर, पत्थर ईंट ले आवो, तब वह ब्राह्मण एक ईंट उठा लाया, तो देखता क्या है कि–सुवर्णकी ईंट हो गई. तब बोला--महाराज! यह किसी दूसरेकीसी मालूम देती है तब गोसांईजीने कहा. वहीं ईंट राखि आवो, रखने गया तो मट्टी हो गई; परंतु उस ब्राह्मणने देखने शिवाय

विश्वास न माना, तब तुलसीदासने कहा देखोगे. पीछे वह ब्राह्मण वहांसे चला और रास्तेमें एक बुढ्ढी मिली उसने पूंछा कि–तुम कौन हो ? तब क्रोध कर बोला के मैं ब्राह्मण हूं सुवर्णमयी अयोध्यापुरी देखनेके लिये दक्षिणदेशसे आया हूं परंतु दीखती नहीं, तब उस बुढ्ढीने कहा कि–तुम यहांके कंकर पत्थर उठा लावो, तब वोह मारे गुस्साके आपनी चक्करमें बहुतसे कंकर पत्थर भर लाया और जमीनमें डाल दिया तो सब सोंना देखनेमें आया और वह बुढ्ढी अंतर्धान होगई तब उस ब्राह्मणने माना कि–मेरेको श्रीअयोध्यापुरीने दर्शन दिये और अपनेको धन्य माना.

और एकदफे श्रीअयोध्यापुरीमें सिंहदरवाजेपर एक मुक्तामणि साधु रहते थे, सो उन्होंने शयनके बखतका एक भजन बनाया

विष्णुपद ॥

(राग बिहाग) शयन करहु रघुबीर पियारे ॥
हौं पठई आई कौशल्या बडे भूप उठि सदन सिधारे
युगुल याम यामिनि बीती हैं नैना नींद भरे रतनारे॥
प्रफुलित शरदकोकनदमानोंमन्दसमीर मलयकरधारे
रत्नजटित मणिमयमन्दिरमहँरचिशुचिशोभितजनकसुतारे
मग सोवत सहचरी सियाकी शयन उचित सबसौंज सँवारे.
अति आलसबश भये हैं भरतयुत लषणलालरिपुहनउजियारे
सुनत सकल दे पान बिदा करि उठे दास मुक्तामणि वारे॥

वार्त्तिक--इसको सुन, गोसांईजी अतिप्रसन्न हो बडे प्रेमसे उनके पास आय भक्तसे अतिभक्त अपना स्वरूप बनादिया.

ऐसे कुछदिन गोसांईजी अयोध्याजीमें रहकर, संतोंके साथ नीमखारको चले, सो पहिले रवनाहीमें ठहरे, कि जहां मान्धाताने रावणको हराया था. और वहांसे सूकरखेतमें आये. जोअयोध्याजीसे बारह १२ कोश है. जहाँ बराह अवतार भया था जिनके घुरघुरहटशब्दसे घाघरा नदी प्रगट हुई और यहांहीपर गुरु नृसिंह दाससे श्रीगोसांईजीने ज्ञान पाया और यहांसे पसकामें ठहर सियाबारगावमें ठहरे जिसमें श्रीसीताजीका धाम था, जहांपर आजदिनभी एक सियाकूप बना है जिसका जल अतिमीठा है मुसाफिर लोगोंको आनंद देता है; और यहांसे श्रीलक्ष्मणजीकी पुरी लखनऊमें आये और हनुमान्‌जीका दर्शन कर, कुछ रोज रहे भजन भाव किया. जैसें कि हिन्दीमें लिखा है.

छन्द०कहुँ दीननको प्रतिपाल करै ॥
कहुँ साधुनके मन मोद भरै ॥
कहुँ लषणलालके चरित बँचैं ॥
कहुँ प्रेममग्न व्है आप नचै ॥
कहुँ रामायण शुभगान सचै ॥
कहुँ उत्साह कुलाहल भोर मचै ॥
कहुँ आरतजनको दुःख हरै ॥
कहुँ अज्ञाननपर ध्यान धरै ॥

और गोसांईजीने लखनऊमें एक गरीब भाटको अपने प्रतापसे कबि और बड़ा धनी बना दिया; और उसके वंशमें आजतक सब कबितामें निपुण होते हैं.

और एक बखत गोसांईजी लालाभीखमसिंहके मिलनेको मंडियानेको चले, सो लखनऊसे तीन कोशपर चनहटनें जाय सुना के लालासाहेब बडे कबि हैं परंतु इस बखत झगडेमें हैं, यह सुन गोसांईजीने कहा के झगडेमे कुछ रामचर्चा नहीं होगी, इसीसे मलिहाबाद चलेगये वहांपर परमवैष्णव एक भाटको एक रामायण दिया, जिस्को पाकर वह पाठ करते २ कृतार्थ होगया, जो प्रति आज दिनतक मलिहाबादमें मौजूद हैं.

और गोसांईजी मलिहाबादसे चलकर बिठूर जानेके लिये रसूलाबादके पास कोटरा गांवमें पहूंचे जहांपर अनन्य माधवदास रहतेथे, यह बड़े महात्मा रामजीके परमभक्त थे, कोई दिन अपने ननिहाल कोटरा गांवमें आये, सो मामाने खरिहानें रखानेके लिये भेज दिया, तब यह महात्माजीने विचार किया के अन्न दानका बड़ा माहात्म्य है और सब अन्न साधुसंतगरीबोंको देदिया और पीछे डरके घरवाले लोग मुझको मारैंगे और एक पुराने इमलीके कोलमें छिप रहे और भगवत्‌का ध्यान करते थे और इधर सब लोग ढूंढने लगे, कि इतनेमें इनकी माता रोतीहुई उसी इमलीके पास आई तब अनन्यमाधवदासने बहार निकल मातासे कहा, के हे मातः! इस संसारमें कोई किसीका लडका और माता पिता सुख देनेवाला नहीं है, अकेले रामजी सबको सुख देनेवाले हैं और यह पद कहा.

विष्णुपद--ऐसा शोच न करिये माता ॥
देवलोक सुर देह धरी जिन किन पाई कुशलता ॥
पराक्रमी भीषमसो को भा दानी करणसो दाता ॥
जिनके चक्र चलत हैं अजहूं घरी न भई बिलाता ॥
मृत्यु बांधि रावण वशि राखी भरो गर्ब उर माथा॥
तेऊ उडि़ उडि़ भये कालवश ज्यों तरुवरके पाता॥
सुनु जननी अब सावधान रहै परमपुरातन बाता ॥
मणिमाधव माधवके सेवक कौन काहि सों नाता ॥

वार्तिक–इसतरे माताको समझाकर रामभजनमें मग्न रहे जिनका ठाकुरद्वारा आजदिनभी बना है. ऐसे माधवदासके पास गोसांईजी एक पद बताकर, सुनाय बैठ गये.

विष्णुपद--मैं हरि पतितपावन सुने ॥
हौं पतित तुम पतितपावन दोउ बानक बने ॥
व्याध गणिका गज अजामिल साखि निगमागमभने
और पतित अनेक तारे जात सो कापै गने ॥
जानि नाम अजान लीन्हो नरक यमपुर मने॥
दास तुलसी शरण आयो राख लिये अपने ॥

वार्तिक--यह पद सुन अनन्य माधवदासने जाना कि गोसांईजी आये. सो उठके बड़े प्रेमसे मिले और बहुत आनन्दसे अपना बनाया पद सुनाया.

पद--तबते कहा पतित नर रह्यो ॥

जबते गुरु उपदेश दीन्ह्यो नाम नौका लह्यो ॥
लोह जैसे परसि पारस नाम कंचन कह्यो ॥
उभरि आयो बारह बानी मोल महँगे गह्यो ॥
क्षीर नीरते भयो न्यारो नरकते निरबह्यो ॥
मूल माखन हाथ आयो त्यागि सरबर मह्यो ॥
अनन्य माधवदास तुलसी भवजलधि निरबह्यो ॥

वार्तिक--ऐसे दोनोंजने भगवद्गुणानुवाद कहते सुनते रहे.

और श्रीगोसांईजी एक बखत सन्डीलामें गये और एक ब्राह्मणके घरको प्रणाम किया, तब उसकी औरतने कहा इधर उतरनेकी जगा नहीं हैं. यह सुन गोसांईजी हँसकर रामबागमें उतर पडे और यहां जब वह ब्राह्मण आया और सुना के गोसां-ईजी मेरे मकानसे लौट गये, उसी बखत दौड़के गोसांईजीके पांव पडा और क्षमा मांगी तब इन्होंने कहा के हम जिस कामको गये थे सो काम होगया, कारण तुम्हारे घरमें कृष्णजीका सखा मनसुखा अबतार लेवैगा और गोसांईजीने उस लडकेका जो जो महात्म्य कहा सो देखनेमें आया. सो लिखते हैं कि उसके कुछ दिन बाद ब्राह्मणके घरमें पुत्र उत्पन्न भया, बडा सुन्दर और तेजवान् ब्राह्मणोंनें उसका नाम बंशीधर रखखा, ऐसे कुछ दि-नके बाद एक कोढी ब्राह्मण जगन्नाथजीके दर्शनको जाताथा, उसको जगन्नाथजीने स्वप्नमें कहा के, तू वहां न जा सन्दीलामें एक लड़का बंशीधर मिसिर है, अगर वह अपना भोग लगाया हुवा प्रसाद तुझको देवै, तो तेरा रोग मिट जाय, लेकिन सपनेकी समझकर उस ब्राह्मणको बोध न

हुवा, फिर आगे चला, दुसरी रातमें क्या देखता है? के जगन्नाथजी कहतें हैं के-तुम्हें संदीला जानेकी आज्ञा हुई है, तुम इसी वख्त वहां जाव और हम जब श्रीकृष्णलीला करते थे तब वह हमारे साथ था और मनसुखा उस्का नाम है, और अब उसने ब्राह्मणके घरमें जन्म लिया है, बंशीधर नाम है और तुम जब वहां जाना तब मनसुखा नाम लेकर पुकारना, के सुनतेही वह लड़का आयेगा तब उससे अपना हाल कहना और उसका दिया हुवा प्रसाद लेना और उस ब्राह्मणके घरका पताभी बतादिया, तब उस कोढ़ी ब्राह्मणको निश्चय भया, और राहमेंसे लौट कर संदिलामें आया और जो पता स्वप्नमें सुना था, उसी जरियेसे उस ब्राह्मणके दरवाजेपर पहुँच गया और मनसुखा नाम लेकर पुकारा, और इस वख्त वह लड़का अपने घरमें दूध भात खा रहा था, जूंठे बाहर निकल आया और पूंछा कि मुझको किसने पुकारा है इतनेमें वह कोढ़ी ब्राह्मण दौडकर पांवोंपर गिरपड़ा और अपना हाल कहा के जिसवास्ते आया था, तब उस लड़केने कहा कि जल्दी कुछ मिठाई लावो तब वह ब्राह्मण बताशे लाया उनमेंसे दो बताशे उसने खाय लिये और बाकीके उस ब्राह्मणको देदिये जैसे इसने खाये के सब रोग दूर हो गया, फिर उसने ब्राह्मणसे कहा के अब यहांसे तुम चले जावो, और किसीसे जिक्र नहीं करना और आप अपने घरमें चला गया; और लड़कपनके बाद जब सयाना हुवा तब श्रीकृष्णजीकी लीला बड़े प्रेमसे गाया करता था और कभी कभी प्रेमसे नाचताभी था और दुनियांके कोई

व्यवहारसे वार्ता नहीं रखताथा और जब किसीसे बात चीत करता था, तब यह उपदेश कहता था.

चौ०सुत वित नारि भवन परिवारा * दुखरूपी तोहिं सब संसारा
जेंहि तू मग्न सो काम न ऐहैं * अजहुँ जलावत तबहुँ जलै हैं॥

॥ कबित्त ॥ जिन्हैं तू मगन तिन्हैं देख नगनके निकारिबेको जीता हैं ॥ सपनेकी संपदा सुलभ साथ सबहीके सोई हित लाग्यो हरिनाम अनहीता है ॥ कहै मिसिर बंशीधर कबहूं न आई मति जैसे चहूं ठहूं ठहराई गावै गीता है ॥ चेत नहीं परैगो पै तरी ताको चलो अब सीताराम जपि लेउ जन्म जात बीता है ॥

दो०हरे.रचहिं तापहिं बरे, फरे पसारहिं हाथ ॥
तुलसी स्वारथ मीठ सब, परमारथ रघुनाथ॥
तुलसी विलँब न कीजे, भजलीजे रघुबीर ॥
तनुतरकसते जात हैं, श्वाससारखे तीर ॥
काशी बसि बुध तनु तजे,हठि तनु तजै प्रयाग॥
तुलसी जो फल सो सुलभ, रामनामअनुराग ॥

वार्तिक–इसी तरह भजन भावके आनन्दमें रहता था, और पिछले दोहेका मतलब रामनाम अनुराग अपनेमें देखा दिया, के एकदिन मुकाम संदीलामें स्वामी दयालुदासजीके ठाकुरद्वारमें रहाथा, उसमें अच्छें २ महात्मा साधु संत बैठे

थे और बंशीधरभी गया था उस बखत रहसधारियोंनें श्रीकृष्ण-चन्द्र आनन्दकन्दकी रहसलीला खूब रूबरू दर्शाई, के जिस्से सब सभा खुश होगई और बंशीधर प्रेममें मग्न बैठा था, के इतनेमें रहसधारियोंने यह विष्णुपद गाया, जिस्में श्रीकृष्णचन्द्रका तथा राधिकाजीका वैराग्य वर्णन है.

॥पद॥ सुधि करत कमलदलनयनकी ॥
वेदिनबिसरिगये मोहनको बांहऊसीसे शयननकी

वार्तिक--इसपर बंशीधरको सँभार न हो सका, उसीध्यानमें अपना दहिना हाथ फैलाकर प्राण छोंड दिया, यह हाल देख कर, सबोंने धन्य धन्य कहा और उसी समय खैराबादमें रामजीके सभामंडपमें सिद्धा हलवाई रामायण बांचता था. सो उसने श्रोतागणोंसे कहा कि इस बखत संदीलाके रहसमे वंशीधर मिसिर भगवान्के प्रेममें मग्न हो अपना प्राण छोड विमानमें शवार हो भगवान्के लोकको जाता है, यह संदीलामें रहता था, ऐसे ऐसे लोग संसारमें कभी कभी जन्म लेते हैं मगर इनकी पहिचान सबको नहीं मिलती, इसी तरहँ एक ब्राह्मणका लड़का मुरलीधर था, हमेशः मुरली बजा श्रीकृष्णजीके सामने भजन करता था और दिनरात प्रेमके रंगमें रँगा रहता था, एक बखत हाकिमने उसको पकड़ बुलाया के हमको अपना गाना सुनावो. मुरलीधरने कहा के हम कथिक नहीं है, श्रीकृष्णजीके सामने गाते हैं और किसीके सामने गाना मंजूर नहीं है. इसपर हाकिमने खफा होकर, कैद करने तथा सखी बनानेका हुकुम देदिया, तब मुरलीधरने कहा के हमको बन्धनमें रहना

मंजूर नहीं है और श्रीकृष्णचन्द्रका ध्यान करके उसी जगहँ देह छोड दी.

और एक बखत गोसांईजी तुलसीकी माला लिये जप कर रहेथे, इतनेमें कवि गंग अपने कविताई और धनके मदसे मतवाला बना सामने आया और भक्तिभावके अपमानमें एक कवित्त पढ़ा, जिस्का मतलब यह के हाथी कौन माला रखता है जिस्से पेट भरता है यह सुन, गोसांईजीने कहा कि—हमतो इसी मालाको अपना उद्धार जानते हैं और हाथीकी बात तुम जानों और चौपाई पढ़ी—

चौपाई ॥

उमा बचन जे समुझि न बोलहिं*सुधा होय विष कर्मते डोलहिं॥

वार्तिक ॥ यह सुन, कवि गंग हस्तिनापुर दिल्लीमें आया और कवित्त बनाकर, बादशाहके सामने पढ़ा, उसमें कुछ बेगमकी बाबत बुरी थी, इसपर बादशाहने नाराज हो हाथीके पांवके नीचे कवि गंगको दबवाके मरवाडाला, सच है महात्माके साथ जो कोई बुराई करता है वही बुराई उसको मारडालती है, जैसे कामदेवने शिवजीसे बुराई किया वही बुराई जानकी दुसमन भई.

इसके पीछे गोसांईजी नीमखारमें बहुत रोज रहकर मिसिरिखमें आये, यहां एक राजा आया और गोसांईजीको प्रणाम किया, तब इन्होंने पूंछा तुम कहां रहते हो? उसने कहा मेरा स्थान रामपुर है, इस्पर ए बहुत खुश हुये और बोले तुमलोग धन्य हो जो कि रामपुरमें रहते हो, तब राजा बोला महाराज!

इस बखतमें यवनराजसे बहुत पीडित हूं अगर आप चलैं तो दुःख दूर होनेका संभव है, गोसांईजी उसके साथ चल दिये रामपुर पहुंचे और एक अपनी लकड़ी जो वंशीबटसे लाये थे, सो दिया और कहा के इसको अपने गांबमें स्थापन करो, कुछ दिनके बाद इसमें पत्ते हो जायँगे, सो अगहन सुदी पंचमीके रोज दरसाल रहस कराया करो सब तुम्हारा दुःख दूर हो जायगा, उस राजाने वैसेही किया तबसे कोई हाकिमने दांद न किया.

फेर गोसांईजी रामपुरसे लौट खैराबादमें परमभक्त सिद्धा हलवाईसे भेंट कर, नावमें सवार हो, घाघराके रास्तेसे श्रीअयोध्यापुरीमें आये और विचार किया के प्रदक्षिणाकी रीतसे अयोध्याजीकी परिक्रमा करनी चाहिये और सब जगा बढे प्रेमसे आनन्दपूर्वक फिरते भये.

एकवार देशमें के दस्तकी बीमारी होगई, सो सैकडों आदमी मरने लगे कि त्राहि ! त्राहि ! पुकारके सब गोसांईजीके शरण आये और यह कहते भये ॥ लगिये नाथ गोहार और बल कछु न विशांता ॥ राखैं हरिके दास कि सिरजन हार विधाता ॥

वार्तिक–यह उनलोगोंका दुःखदेख इनकूं अतिदया उत्पन्न भई, और उसी प्रेममें हनुमान्‌जीकी स्तुति करी.

कबित्त ॥ रचिबेको विधि जैसे पालिबेको हरि जैसे मारिबेको हर जैसे ज्यायबेको सुधा पाणि भो ॥ धरिबेको धरणि तरणि तम दलिबेको शोषिबेको कृशानु पोषिबेको हिमभानु भो ॥

खलदुःख देखिबेको सुजन परितोषिबेको मांगिबो मलिनताको मोदक सुदान भो ॥ आरतकी आरतिहि निबारिबेको तिहूंपुर तुलसीको साहिब हठिलो हनुमान भो ॥

वार्तिक–यह सुनतेही श्रीहनुमान्‌जीकी दयासे सब बीमारी हवाके माफक उड़गई और फेर कोई बीमार न भया, सब बड़ी खुशीसे जयजयकार करते अपने अपने घर गये.

और एक बखत मीराबाई तुलसीदासके पास गई और कहा कि महाराज ! मेरको मेरा गुरु और माता, पिता, पति इत्यादि भगवद्भजन नहीं करने देते सो मैं आपकी आज्ञा चाहती हूं. यह सुन, गोसांईजीने कहा–

पद ॥ जिनके प्रिय न राम वैदेही ॥
त्यागिय तिन्हैं कोटि बैरीसम यद्यपि परमसनेही ॥
तज्यो पिता प्रल्हाद बिभीषण बंधु भरत महतारी॥
हरिहित गुरु बलि ब्रजवनितनपति भये सब मंगलकारी
नाते नेह रामहीके मनियत नेह जहां लौं ॥
अंजन कहा आंखि जो फूटै बहुतो कहौं कहां लौं ॥
तुलसी सोई अपनो सकलविधि पूज्य प्राणते प्यारो
जाते होय सनेह रामपद इतनो मतो हमारो ॥

वार्तिक–इस्को सुन मीराबाई प्रेममें मग्न होगई और जास्ती भक्तिभाव बढाया.

और एक बखत कोई ब्राह्मण गोसांईजीके पास आया और

बोला कि, महाराज ! मेरेको धन मिले. तब इन्होंने कहा राम राम किया करो धन मिलेगा. ऐसे उसने राम राम कहना शुरू किया, तिससे थोडे दिनोंमें श्रीहनुमान्‌जीने ब्राह्मणका रूप रख, एक थालमें अशर्फी भरके कपडेसे ढांक उस ब्राह्मणको देके चले गये, पीछे वह ब्राह्मण गोसांईजीके पास आया तब इन्होंने कहा के तुमको यह धन श्रीहनुमान्‌जीने दिया है इसीसे आनन्दमें रहोगे.

और कोई समयमें जहांगीरशाह बादशाहसे गोसांईजीसे भेट भई और उसने उन्होंसे कहाकि काशीका इलाका आप सेवा पूजाके निर्वाहार्थ लीजिये, इन्होंने कहाकि हमको नहीं चाहिये.

दो०अर्बखर्बलौं द्रव्य है, उदयअस्तलौं राज ॥
जो तुलसी निजमरण है, तो आवै केहिकाज ॥

वार्तिक–यह सुन, बादशाहने कहा के हमारे बापके बखतमें बीरबल, सूरदास आदि १४ रत्न थे सो सूरदास आते थे और जो कुछ दिया जाता था सो ग्रहण करते थे तुम क्यों नहीं लेते ? यह सुन गोसांईजीने जवाब दिया, के सूरदास चन्द्रवंशके उपासक थे और चन्द्रमामें जो दृष्टि लगाता है उसको ठंढकके सबबसे अन्यभी सब पदार्थ दिखते हैं और हम सूर्य्यवंशके उपासक हैं सो सूर्यमें दृष्टि लगानेसे शिवाय सूर्यके. दुसरा कुछ नहीं दिखाता यह सुन बादशाहने खूब राजी होकर कहा, के मैंने आपके समान दूसरा त्यागी देखनेको कौन बोले सुनाभी नहीं और प्रणाम करके काशीजीसे दिल्लीको गया, और एक बखत एक ब्राह्मणने गोसांईजीके पास आय

ऐसा हठ किया के महाराज! मेरेको एक रोजमें श्रीरामजीका दर्शन करा दीजिये, इन्होंने बहुत तरहकी उपासनाकी रीतें बताया परन्तु उसनें एकभी न माना, तब गोसांईजीने कहा के जाव तुम एक वृक्षके ऊपर चढ़ नीचे त्रिशूल गाडके, ऊपरसे त्रिशूलके ऊपर कूदो दर्शन हो जायगा; तब उसने वैसेही किया परंतु उस वृक्षके ऊपर चढ गया तब घबडाके नीचे आया फेर बिचार करके चढ़ा, फेर उतरा यही हाल उस्का हैं, इतनेमें एक मुसाफिर आया और हाल पूंछा तब उस्ने कहा के मेरेको गोसांईजीने एक ज्ञान बताया है, सो करते बनता नहीं, यह सुन उस मुसाफिरने उस ब्राह्मणको कुछ द्रव्य दे, राजी कर और आप खुद उस झाडके ऊपर चढ श्रीमहात्मा गोसांईजीको स्मरण कर उस त्रिशूलके ऊपर कूद पडा, के बीचहीमें श्रीरामजीने उस्को दर्शन दे दिया और वह त्रिशूल मोंम की तरहं नरम होगया, तब वह मुसाफिर झट दौंडके गोसांईजीके शरण आय, पांव पडा तब गोसांईजीने उस्की बडी प्रशंसा कर, अच्छा उपदेश दिया. जिस्से उस्को मोक्ष होगया.

श्रीगोस्वामीजीका देहान्त संवत् १६८० में श्रावण शुक्ल ७ को हुआ था जो कि निम्न लिखित दोहेसे सिद्ध होता है.

दो०"संवत सोलहसौ असी, असी गंगकेतीर॥
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर॥

श्रीगोस्वामीजी श्रीतुलसीदासजीका अंतिमवाक्य निम्नलिखित दोहा है.

दो०राम नाम यश वर्णिके, भयो चहत अबमौन तुलसीके मुखदीजिये, अबहीं तुलसी सौन ॥

और गोस्वामीजिके निम्नलिखित ग्रंथोंका अधिकतर प्रचार देखनेमें आता हैं जेसे कि १ कवित्तरामायण. २ गीतावली. ३ दोहावली. ४ विनयपत्रिका. ५ राम सतसई. ६ कृष्णावली. ७ रामलता. ८ नहछु. ९ वैराग्यसंदीपिनी. १० बरवह रामायण. ११ पार्वतीमंगल. १२ जानकीमंगल. १३ रामशकुनावली. १४ चौपाई रामायण. १५ संकटमोचन. १६ हनुमद्बाहुक. १७ रामशलाका. १८ कुंडलिया रामायण १९ कडखारामायण. २० रोहा रामायण. २१ छप्पै रामायण. और झुलना रामायण.

ऐसे ऐसे गोसांईजीके अपार चरित हैं उनका निःशेष कहने सक्ता नहीं, तथापि यह एक दिङ्मात्र किया है.

॥ इति श्रीगोस्वामितुलसीदास चरितामृत संपूर्णम् ॥

यह पुस्तक छोटेलाल लक्ष्मीचन्दने श्रीमहाराज परमउदार सुयशविस्तार श्री १०५ स्वामी परमहंस सीताशरणजीकी आज्ञासे छापनेको हमे दिया.

हरिप्रसाद भगीरथजी.

ठिकाना–कालिकादेवीरोड़–रामवाड़ी–मुंबई.

इति श्रीतुलसीदासचरितामृत
समाप्त.

※ एकश्लोकी रामायण. ※
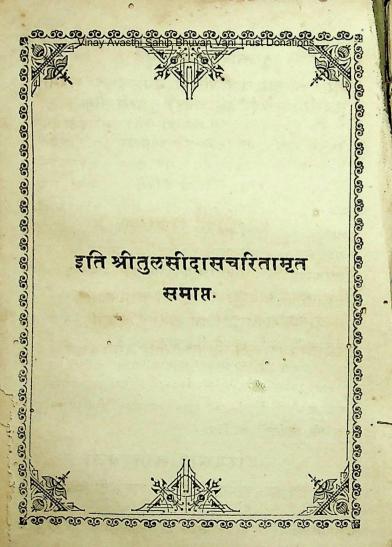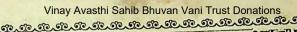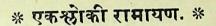
आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगं काञ्चनं ॥
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणम् ॥
वालीनिग्रहणं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनं
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननं एतद्धि रामायणम् ॥१॥

* राममहामंत्र *

॥ शिव उवाच ॥

राम रामेति रामेति
रमे रामे मनोरमे ॥
सहस्रनाम तत्तुल्यं
रामनाम वरानने ॥१॥
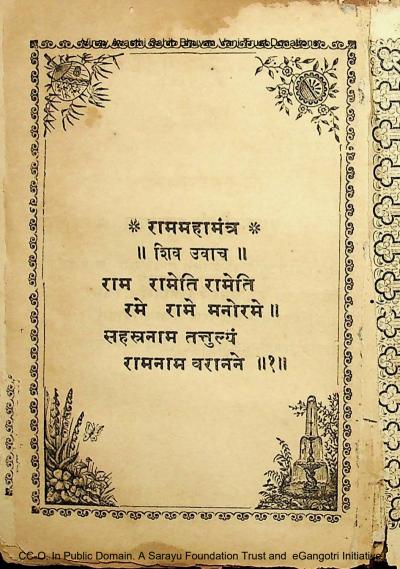
श्रीयुतगोस्वामी

तुलसीदासकृत–

रामायणम्

(बालकाण्डम्)

संवत् १९५६

किय कुबेष साधु-सनमानू * जिमि जग जामवंत हनुमानू॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू * लोकहु बेद विदित सबकाहू॥
गगन चढ़ै रज पवन—प्रसंगा * कीचइ मिलइ नीच जलसंगा ॥
साधुअसाधुसदन शुक सारी * सुमिरहिं राम देहिं गण गारी ॥
धूम कुसंगति कारिख होई * लिखिय पुराण मंजुमसि सोई ॥
सोइ जलअनलअनिलसंघाता * होइ जलद जगजीवनदाता ॥

दो०ग्रह भेषज जल पवन पट, पाइ कुयोग सुयोग।
होइँ कुवस्तु सुवस्तु जग, लखहिं सुलक्षणलोग८
सम प्रकाश तम पाख दुहुँ, नामभेद विधि कीन्ह
शशिपोषक शोषक समुझि, जग यश अपयशदीन्ह
जड चेतन जग जीव जे, सकल राममय जानि ॥
बंदौं सबके पदकमल, सदा जोरि युग पाणि॥१०॥
देव दनुज नर नाग खग, प्रेत पितर गंधर्व ॥
बंदौं किन्नर रजनिचर, कृपा करहु अब सर्व॥११॥

आकर चारलाख चौरासी * जाति जीव नभजलथलवासी
सीयराममय सब जग जानी * करौं प्रणाम जोरि युग पानी ॥
जानि कृपा करि किंकर मोहू * सब मिलि करहु छांड़ि छल छोहू
निजबुधिबलभरोस मोहिं नाहीं * ताते बिनय करौं सबपाहीं ॥
करन चहौं रघुपतिगुणगाहा * लघुमति मोरि चरित अवगाहा
सूझ न एकौ अंग उपाऊ * मम मति रंक मनोरथ राऊ ॥
मति अतिनीच ऊँचि रुचि आछी * चहिय अमिय जग जुरै न छाछी

---

१ आकाशमें. २ धूल. ३ मेघ. ४ जगत्को जल देनेवाला. ५दवा
६ दोनों. ७ दैत्य.

क्षमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई * सुनिहहिं बालबचन मन लाई
ज्यों बालक कह तोतरि बाता * सुनहिं मुदितमन पितुअरुमाता
हँसिहहिं क्रूर कुटिल कुविचारी * जे पर--दूषण- भूषण--धारी ॥
निजकबित्त केहि लाग न नीका * सरस होउ अथवा अतिफीका॥
जे परभाणित सुनत हर्षाहीं * ते बर पुरुष बहुत जग नाहीं॥
जग बहु नर सुरसरिसम भाई * जे निजबाढ़ बढ़हिं जल पाई॥
सज्जन सुकृत सिंधुसम कोई * देखि पूरविधु बाढ़हिं जोई॥

दो० भाग छोट अभिलाष बड़, करहुँ एकविश्वास
पैहहिं सुख सुनिसुजनजन,खलकरिहहिंउपहास१२

खलपरिहास होइ हित मोरा * काक कहहिं कलकंठ कठोरा
हंसहि बक दादुर चातकही *हँसहि मलिनखलबिमलबतकही
कवितरसिक न रामपद नेहू * तिन्हकहँ सुखद हासरस एहू॥
भाषाभाणित मोरि मति भोरी * हँसिबेयोग हँसे नहिं खोरी ॥
प्रभुपद प्रीति न सामुझि नीकी*तिन्हहिं कथा सुनि लागिहि फीकी
हरिहरपदरति मति न कुतरकी * तिन्हकहँ मधुर कथा रघुबरकी
रामभक्तिभूषित जिय जानी * सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी
कवि न होउँ नहिं चतुर प्रवीना* सकलकला सब विद्याहीना॥
आखर अर्थ अलंकृति नाना * छंदप्रबंध अनेक बिधाना ॥
भावभेद रसभेद अपारा *कबितदोषगुण विविधप्रकारा॥
कबिताविवेक एक नहिं मोरे * सत्य कहौं लिखि कागज कोरे

दो०भणितमोरसबगुणरहित,बिश्वबिदितगुणएक
सो विचारिसुनिहहिं सुमति,जिनकेबिमलबिवेक१३

१ श्रेष्ठ. २ गंगाके सदृश. ३ पूर्णचंद्र. ४ कोकिला अथवा हंस पत. ५ मेंढक. ६ कवितामें रसिक. ७कविताका ज्ञान.

इहिमहँ रघुपतिनाम उदारा * अतिपावन पुराणश्रुतिसारा ॥
मंगल--भवन अमंगलहारी * उमासहित जेहि जपु त्रिपुरारी
भणित विचित्र सुकविकृत जोऊ * रामनामबिनु सोह न सोऊ॥
विधुवदनी[१] सबभांति सवांरी * सोह न बसनबिना बर नारी॥
सबगुणरहित कुकविकृत बानी * रामनामयशअंकित जानी ॥
सादर कहहिं सुनहिं बुध ताही * मधुकरसरिस संत गुणग्राही ॥
यदपि कवितगुण एकौ नाहीं * रामप्रताप प्रगट यहिमाहीं ॥
सोइ भरोस मोरे मन आवा * केहिं न सुसंग बड़ापन पावा॥
धूमउ तजै सहजै- करुआई[२] * अगरप्रसंग सुगंध बसाई ॥
भणित भदेसँ[३] वस्तु भलि बरणी * राम-कथा जग-मंगलकरणी॥

छन्द॥ मंगलकरणिकलिमलहरणितुलसीकथारघुनाथकी गतिकूर कविताससरितकी ज्यों परमपावनपाथकी प्रभुसुयशसंगतिभणितभलिहोइहिसुजनमनभावनी भव अंगभूति मसानकी सुमिरत सुहावनिपावनी१

दो॰ प्रियलागहिं अतिसबहिंमम, भणितरामयशसंग दारु[५] विचार कि करइ कोउ, वंदिय मलयप्रसंग १४॥
श्यामसुरभिपय[६] विशद अति, गुणँद[७]करहिंतेहिपान गिराग्राम सियरामयश, गावहिं सुनहिं सुजान१५॥

मणिमाणिकमुक्ताछवि जैसी * अहिगिरिगजशिर सोह न तैसी॥
नृपकिरीट[८] तरुणीतनु[९] पाई * लहहिं सकल शोभाअधिकाई॥

---

१ चंद्रबदनी. २ स्वभावकी कटुता. ३ भेदासिल. ४जल. ५ लकड़ीका. ६ काली गौका दूध. ७ गुण देनेवाला. ८ राजमुकुट. ९. जवान स्त्रीकी देह.

तैसहिं सुकविकवित बुध कहहीं * उपजहिं अनत अनत छबिलहहीं
भक्तहेतु बिधिभवन बिहाई * सुमिरत शारद[1] आवति धाई ।
रामचरितसर बिनु अन्हवाये * सो श्रम जाइ न कोटि उपाये ॥
कवि कोबिद अस हृदय बिचारी * गावहिं हरिगुण कलिमलहारी ॥
कीन्हे प्राकृतजन-गुण-गाना * शिर धुनि गिरा लागि पछिताना
हृदय सिंधु मति सीपसमाना * स्वाती शारद कहहिं सुजाना ॥
जो वर्षै बर बारि बिचारू * होहिं कबित मुक्तामणि चारू ॥

दो०युक्ति बेधि पुनि पोहिये,रामचरित बर ताग ॥
पहिरहिं सज्जन बिमल उर,शोभाअतिअनुराग१६

जे जनमे कलिकाल कराला * करतब वायस[2] वेष मराला[3] ॥
चलत कुपंथ वेदमग[4] छाँड़े * कपटकलेवर कलिमलभाँड़े ॥
बंचक[5] भक्त कहाइ रामके * किंकर कंचन कोह[6] कामके ॥
तिनमहँ प्रथम रेख जग मोरी * धिक धर्मध्वज[7] धंधक धोरी ।
जो अपने अवगुण सब कहऊं * बाढ़ै कथा पार नहिं लहऊं ॥
ताते मैं अतिअल्प बखाने * थोरेमहँ जानिहहिं सयाने ॥
समुझि बिबिधबिधि बिनतीमोरी * कोउ न कथा सुनि देइहि खोरी ॥
एतेहुपर करिहहिं जे शंका * मोहिते अधिक ते जड़ मतिरंका
कवि न होउँ नहिं चतुर कहाऊँ * मतिअनुरूप रामगुण गाऊँ ।
कहँ रघुपतिके चरित अपारा * कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥
जेहि मारुत गिरि मेरु उड़ाहीं * कहहु तूल केहि लेखेमाहीं ।
समुझत अमित रामप्रभुताई * करत कथा मन अतिकदराई ।

---

१ सरस्वती. २ कागका. ३ हंसका. ४ बेदकी राह. ५ छली. ६ कपट वा क्रोध. ७ दंभयुक्त.

दो०शारद शेष महेश विधि,आगम निगम पुरान॥
नेति नेति कहि जासु गुण, करहिँ निरंतर गान१७

सब जानत प्रभु-प्रभुता सोई * तदपि कहे बिन रहा न कोई॥
तहाँ बेद अस कारण राषा * भजनप्रभाव भांति बहु भाषा॥
एक अनीह अरूप अनामा * अज सच्चिदानन्द परधामा॥
व्यापक विश्वरूप भगवाना * तेहिं धरि देह चरित कृत नाना॥
सो केवल भक्तनहितलागी * परमकृपालु प्रणतअनुरागी॥
जेहि जनपर ममता अरु छोहू * तेंहि करुणा करि कीन्ह न कोहू
गई बहोरि गरीबनेवाजू * सरल सबल साहिब रघुराजू॥
बुध[१] वर्णहिं हरियश अस जानी * करहिं पुनीत सुफल निजबानी॥
तेहि बल मैं रघुपतिगुणगाथा * कहिहौं नाइ रामपद माथा॥
मुनिन्हे[२] प्रथम हरिकीरति गाई * तेहिमगु चलत सुगम मोहिं भाई

दो०अतिअपार जे सरितवर, ज्यों नृप सेतु कराहिं॥
चाढ़ि पिपीलिका[३] परमलघु,बिनुश्रम पारहिजाहिं१८

यहिप्रकार बल मनहिँ दृढ़ाई * करिहौं रघुपतिकथा सुहाई॥
व्यासआदि कबिपुंगव नाना * जिन सादर हरिचरित बखाना
चरणकमल बंदौं सबकेरे * पुरवहु सकल मनोरथ मेरे॥
कलिके कविन करौं परणामा * जिन बरणे रघुपतिगुणग्रामा॥
जे प्राकृतकबि परमसयाने * भाषा जिन हरिचारित बखाने॥
भये जे अहहिँ जे होइहैं आगे * प्रणवौं सबहिं कपट छल त्यागे॥
होउ प्रसन्न देहु बरदानू * साधुसमाज भणितसन्मानू *॥
जो प्रबंध बुध नहिँ आदरहीं * सो श्रम बादि बालकबि करहीं॥

---

१ पंडित. २ वाल्मीकिआदि मुनियोंने. ३ चींटी अथवा भृंगी.

कीरति भणित भूति भलि सोई * सुरसरिसम सबकहँ हित होई॥
रामसुकीरति भणित भदेसा * असमंजस अस मोहि अँदेसा॥
तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे * सिअनि सुहावनि टाट पटोरे।
करहु अनुग्रह अस जिय जानी * विमलयशहिं अनुहरइ सुबानी।

दो०-सरलकबितकीरतिबिमल, सोइआदरहिंसुजान
सहजबैर बिसराइ रिपु, जो सुनि करहिं बखान १९
सो न होइ बिनुबिमलमति, मोहिंमतिबलअतिथोर॥
करहु कृपा हरियश कहौं, पुनि पुनि करउँ निहोर २०
कवि कोविदरघुबरचरित, मानस मंजु मराल * ॥
बालबिनय सुनि सुरुचि लखि, मोपरहोउ कृपाल२१
सो०-बंदौं मुनिपदकंज, रामायण जिन निर्मयो॥
सखर सकोमल मंजु, दोषरहित दूषणसाहित६॥
बंदौं चारिउ बेद, भवबारिधि बोहितसारिस ॥ *
जिनहिं न सपनेहु खेद, बर्णत रघुपतिविशदयश ७
बंदौं विधिपदरेणु, भवसागर जिन कीन यह ॥
संत सुधा शशि धेनु, प्रगटे खल विष बारुणी॥८॥
दो०-विवुधविप्रबुधगुरुचरण, बंदि कहौं कर जोरि॥
होइ प्रसन्न पुरवहु सकल, मंजु मनोरथ मोरि २२॥
पुनि बंदौं शारद सुरसरिता * युगल पुनीत मनोहर चरिता ॥
मज्जन पान पाप हर एका * कहत सुनत इक हर अबिबेका॥

---

१ गंगाजीकी तरह. २ मुनि वाल्मीकिजीके चरणकमलोंको. ३ बनाया. ४ खरनामक राक्षसके आख्यानसहित ५ काव्यदोषरहित. ६ जहाजके समान ७ संसारसमुद्र.

गुरु पितु मातु महेश भवानी * प्रणवौं दीनबंधु दिनदानी ॥
सेवक स्वामिसखा सियपीके *हित निरुपधि सबबिधि तुलसीके।
कलिबिलोकि जगहितहरगिरिजा* साबरमंत्रजाल जिन सिरजा ॥
अनमिल आखर अर्थ न जापू * प्रगट प्रभाव महेशप्रतापू ॥
सो महेश मोपर अनुकूला * करौं कथा मुदमंगलमूला ॥
सुमिरि शिवाशिव पाइ पसाऊ * बरणौं रामचरित चितचाऊ ॥
भणित मोरि शिवकृपा विभाती * शशिसमाज मिलि मनहु सुराती
जो यह कथा सनेहसमेता * कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता
होइहहिं रामचरण--अनुरागी * कलिमल--रहित सुमंगलभागी

दो०सपनेहु साँचेहु मोहिंपर,जो हरगौरि पसाउ ॥
तौ फुर होइजो कहउँ सब,भाषाभणितप्रभाउ२३०॥

वंदौं अवधपुरी अतिपावनि * सरयू सरि कलिकलुषनशावनि
प्रणवौं पुरनरनारि बहोरी * ममता जिनपर प्रभुहिं न थोरी॥
*सियनिंदक अघ[२]ओघ नशाये * लोक बिशोक बनाइ बसाये॥
बंदौं कौसल्या दिशि प्राची[३] * कीरति जासु सकलजग माची

* एक धोबीकी स्त्री बिना अपने पतिके हुकुम अपने मातापिताके घरको चली गई. पीछे तीन दिनके बाद फिर अपने घर आई; तब धोबीने झिड़ककर कहा कि--तू मेरे घरसे निकल; मैं तुझे नहीं रक्खूंगा. क्या मैं राम हूं? कि जिसने ११ मास, रावणके घरमें रहीहुई सीताको फिरभी अपने घरमें रखलिया. यह बात दूतोंसे सुनकर रामचंद्रजीने सीताको लक्ष्मणके साथ तपोबनको भेजदिया; और उस निंदक धोबीको बैकुंठबास दिया.

१ महादेव पार्वती. २ पापकी राशि (ढेर). ३ पूर्वदिशा.

प्रगटे जहँ रघुपति शशि चारू[१] * विश्वसुखद खलकमलतुषारू[२]।
दशरथराउ--सहित सब रानी * सुकृत सुमंगल मूरतिखानी ॥
करौं प्रणाम कर्म मन बानी * करहु कृपा सुतसेवक जानी ॥
जिनहिंबिरचिबड़भयउविधाता * महिमाअवधि राम पितुमाता॥

सो०-बंदौं अवधभुवाल, सत्यप्रेम जेहि रामपद॥
बिछुरत दीनदयाल, प्रियतनु तृणइव परिहरेउ॥२॥

प्रणवौं परिजनसहित बिदेहू * जाहि रामपद गूढ़ सनेहू ॥
योग भोगमहँ राखेउ गोई * राम बिलोकत प्रगटेउ सोई ॥
प्रणवौं प्रथम भरतके चरणा * जासु नेम व्रत जाइ न बरणा॥
रामचरणपंकज[३] मन जासू * लुब्ध मधुप[४]-इव तजै न पासू।
बंदौं लक्ष्मणपदजलजाता * शीतल सुभग भक्तसुखदाता ॥
रघुपतिकीरति बिमल पताका * दंडसमान भयो यश जाका ॥
शेष सहस्रशीस जगकारण * जो अवतरेउ भूमिभयटारण॥
सदा सो सानुकूल रह मोपर * कृपासिंधु सौमित्रि गुणाकर ॥
रिपुसूदन--पदकमल नमामी * शूर सुशील भरतअनुगामी ।
महाबीर बिनवौं हनुमाना * राम जासु यश आपु बखाना॥

सो०-बंदौं पवनकुमार, खलबन[५]पावक ज्ञानघन ॥
जासु हृदय[६]आगार, बसहिं राम शरचापधर॥१०॥

कपिपति ऋक्ष[७] निशाचर[८]राजा * अंगदादि जे कीशसमाजा ॥
बंदौं सबके चरण सुहाये * अधम शरीर राम जिन पाये ॥

---

१ रमणीक. २ दुष्टजनरूप कमलोंको पालारूप. ३ रामचंद्र-जीके पदकमलमें. ४ भ्रमरजैसे. ५ दुष्टजनरूप बनको जलानेमें दावाग्निके समान. ६ हृदयरूप घरमें. ७ जाम्बवान्. ८ बिभीषण.

रघुपतिचरणउपासक जेते * खग मृग सुर नर असुर समेते
बंदौं पदसरोज सबकेरे * जे बिनुकाम रामके चेरे॥
शुकसनकादि आदिमुनि नारद * जे मुनिवर विज्ञानविशारद ॥
बंदौं सबहिं धरणि धरि शीशा * करहु कृपा जन जानि मुनीशा
जनकसुता जगजननि जानकी * अतिशयप्रिय करुणानिधानकी
ताके युग पदकमल मनाऊं * जासु कृपा निर्मल मति पाऊं॥
पुनि मन वचन कर्म रघुनायक * चरणकमल बंदौं सबलायक ॥
राजिवनयन धरे धनुसायक * भक्तविपतिभंजन सुखदायक॥

दो०गिरा अर्थ जलबीचिसम, कहियत भिन्ननभिन्न
बंदौं सीतारामपद, जिनहिं परमप्रिय खिन्न ॥२४॥

बंदौं रामनाम रघुवरको * हेतु कृशानु[१]-भानु[२]-हिमकर[३]को ॥
विधि हरिहरमय बेद प्राणसो * अगुण अनूपम[४] गुणनिधानसो॥
महामंत्र जोइ जपत महेशू * काशी मुक्तिहेतु उपदेशू ॥
महिमा जासु जान *गणराऊ * प्रथम पूजियत नामप्रभाऊ ॥

* एक समय ब्रह्माजीने सब देवतावोंसे पूंछा, कि-पहले किसकी पूजा होनी चाहिये? यह सुन, सब देवता आपसमें लड़ने लगे; तब ब्रह्माजीने कहा-जो कोई सबसे पहले पृथ्वीकी प्रदक्षिणा कर आवे, वही प्रथमपूज्य होगा. यह सुन, सब देवता दौड़े. इतनेमें गणेशजी पछड़गये; क्योंकि एकतो उनकी देह बहुत मोटी, दूसरे वाहन चूहा था, इसकारण वे बहुत ब्याकुल भये. तब नारदजीने तहां आकर कहा कि-रामनाम जमीनमें लिखके, परिक्रमा करो तो पृथ्वीकी प्रदक्षिणा होजायगी. यह सुन, गणेशजी वैसाही करके ब्र-

१ अग्नि. २ सूर्य. ३ चंद्र. ४ उपमारहित.

जान आदिकवि नामप्रतापू * भयउ शुद्ध करि उलटा जापू॥
*सहसनामसम सुनि शिव बानी * जपि जेई पियसंग भवानी॥
हर्ष हेतु हेरि हरहीको * किय भूषण तियभूषण तीको॥
नामप्रभाव जान शिव नीके * कालकूट फल दीन्ह अमीके॥

ह्माजीके पास गये. तब ब्रह्मादिदेवों ने रामनामका माहात्म्य बिचारकर प्रथमपूज्य गणेशजीहीको बनाया. ऐसा नामप्रभाव है. ऐसेही एकसमय शंकरजीने स्वामिकार्तिक और गणेशजीसे कहा, तब स्वामिकार्तिक मोरपर चढ़ चलदिये और गणेशजी पीछे रहगये; तब नारदजीके उपदेशसे रामनामको पृथ्वीमें लिख, परिक्रमाकरके, गणेशजी शंकरके पास गये. आतेही शंकरजीने विचारकर गणेशजीहीको प्रथमपूज्य बनाया.

* एक दिन शंकरजी भोजन करने चले तो पार्वतीजीको बुलाया; उन्होंने कहा कि मै " विष्णुसहस्रनाम " का पाठ पूर्ण करके आती हूं. शिवजीने कहा " रामरामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ॥सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने"अर्थात् हे वरानने! एक रामनामही विष्णुसहस्रनामके समान है. यह सुन रामका नाम ले पार्वतीजीने भोजन किया. यह देख शिवजी उनपर बहुत प्रसन्न हुये.

† जब देवता और दानवोंने समुद्रमथन किया तब समुद्रमेंसे कालकूट नाम जहर पैदा हुआ; उससे सब जगत् जलने लगा सब लोग शंकरकी शरणमें जाके बोले कि–महाराज! इससे बचाओ. हम भस्म भये जाते हैं. ऐसे सुन, सबको दुःखी देख, दयालु शंक-

१ वाल्मीकिमुनि. २ पापरहित. ३ जहर.

राम सुप्रेमहिं पोषत पानी * हरत सकल कलिकलुषगलानी
भवश्रमशोषक तोषक तोषा * शमन दुरित-दुख-दारिद-दोषा॥
काम-क्रोध-मद- मोहनशावन * बिमलविवेकबिराग-बढ़ावन॥
सादर मज्जन पान कियेते * मिटहिं पाप परिताप हियेते॥
जिन यहि बारि न मानस धोये * ते कायर कलिकालबिगोये॥
तृषित निरखि रबिकरभव बारी * फिरहिं मृगाजिमि जीव दुखारी

दो०मतिअनुहारि सुबारिबर, गुणगण मन अन्हवाइ
सुमिरि भवानीशंकरहिं, कह कवि कथा सुहाइ५४
भरद्वाज जिमि प्रश्न किय, याज्ञवल्क्य मुनि पाय॥
प्रथम मुख्य संबाद सोइ, कहिहौं हेतु बुझाय॥५५॥
अब रघुपतिपदपंकरुह, हिय धरि पाइ प्रसाद॥
कहौं युगल मुनिवर्य्यकर, मिलन सुभग संवाद५६॥

भरद्वाजमुनि बसहिं प्रयागा * जिनहिं रामपद अतिअनुरागा॥
तापस शम-दम-दयानिधाना * परमारथपथ मर्म सुजाना॥
माघ मकरगत रवि जब होई * तीरथपतिहिं आव सबकोई॥
देव-दनुज-किन्नर-,नर-श्रेणी * सादर मज्जहिं सकल त्रिवेणी॥
पूजहिं माधव-पद- जलजाता * परसि अक्षयबट हर्षितगाता॥
भरद्वाज-आश्रम अति-पावन * परमरम्य मुनिबर-मनभावन॥
तहाँ होइ मुनिऋषयसमाजा * जाहिं जे मज्जन तीरथराजा॥
मज्जहिं प्रात समेत उछाहा * कहहिं परस्पर हरिगुणगाहा॥

दो०ब्रह्मनिरूपण धर्मबिधि, वर्णहिं तत्वविभाग॥
कहहिं भक्ति भगवन्तकी, संयुत ज्ञान विराग॥५७॥

१ कलियुगके पापोंकी ग्लानि. २ निर्मल ज्ञानवैराग्यको बढ़ानेवाला

यहिप्रकार भरि मकर नहाहीं * पुनि सब निजनिजआश्रमजाहीं
प्रतिसम्बत अस होइ अनन्दा * मकर मज्जि गवनहिं मुनिबृन्दा॥
एकबार भरि मकर नहाये * सब मुनीश[1] आश्रमन सिधाये॥
याज्ञवल्क्यमुनि परमविवेकी * भरद्वाज राखेउ पद टेकी॥
सादर चरणसरोज पखारे * अतिपुनीत आसन बैठारे॥
करि पूजा मुनिसुयश बखानी * बोले अतिपुनीत मृदु बानी॥
नाथ एक संशय बड़ मोरे * करतल[2] वेदतत्व सब तोरे॥
कहत मोहिं लागत भय लाजा * जो न कहौं बड़ होइ अकाजा

दो०सन्त कहहिं अस नीति प्रभु श्रुतिपुराणमुनिगाव
होइ न बिमल विवेक उर, गुरुसन किये दुराव५८॥

अस बिचारि प्रगटहुँ निजमोहू * हरहु नाथ करि जनपर छोहू॥
रामनामकर अमित[3] प्रभावा * सन्त पुराण उपनिषद गावा॥
सन्तत जपत शम्भु अविनाशी[4] * शिव भगवान ज्ञानगुणराशी॥
आकर[5] चारि जीव जग अहहीं * काशी मरत परमपद लहहीं॥
सोपि राममहिमा मुनिराया * शिव उपदेश करत करि दाया
राम कवन प्रभु पूछौं तोहीं * कहहु बुझाय कृपानिधि मोहीं
एक राम अवधेशकुमारा * तिनकर चरित बिदित संसारा
नारिबिरहदुख लहेउ अपारा * भयेउ रोष[6] रण रावण मारा॥

दो०प्रभुसोइ राम कि अपरकोउ, जाहि जपत त्रिपुरारि
सत्यधाम सर्वज्ञ तुम, कहहु बिबेकबिचारि॥५९॥

जैसे मिटै मोह भ्रम भारी * कहहु सो कथा नाथ विस्तारी॥

---

१ मुनिनमें श्रेष्ठ. २ हाथमें. ३ बहुत. ४ नाशरहित. ५ खानि. ६ क्रोध.

याज्ञवल्क्य बोले मुसुकाई * तुमहिं बिदित रघुपतिप्रभुताई॥
रामभक्त तुम मन क्रम बानी * चतुराई तुम्हारि हम जानी॥
चाहहु सुनै रामगुण गूढ़ा *कीन्हेउ प्रश्न मनहु अतिमूढ़ा॥
तात सुनहु सादर मन लाई * कहौं रामकी कथा सुहाई॥
महामोह महिषेश बिशाला * रामकथा कालिका[1] कराला॥
रामकथा शशिकिरणसमाना *सन्तचकोर करहिं जेहिं पाना
ऐसेहि संशय कीन भवानी * महादेव तब कहा बखानी॥

दो०कहौं सो मतिअनुहारि अब, उमाशम्भुसम्बाद
भयउसमयजेहिहेतुजेहिं,सुनिमुनिमिटहिंविषाद ६०

एकबार त्रेतायुगमाहीं * शम्भु गये कुम्भजऋषिपाहीं[2]॥
संग सती जगजननि भवानी[3] * पूजे ऋषि अखिलेश्वर[4] जानी॥
रामकथा मुनिवर्य्य बखानी * सुनी महेश[5] परमसुख मानी॥
ऋषि पूँछी हरिभक्ति सुहाई * कही शम्भु अधिकारी[6] पाई॥
कहत सुनत रघुपतिगुणगाथा *कछुदिन तहाँ रहे गिरिनाथा॥
मुनिसन बिदा माँगि त्रिपुरारी * चले भवन सँग दक्षकुमारी॥
तेहि अवसर भंजन[7] महिभारा *हरि रघुवंश लीन्ह अवतारा॥
पितावचन तजि राज्य उदासी *दण्डकवन बिचरत अविनासी

दो० हृदय बिचारत जात हर,केहिबिधि दर्शन होइ
गुप्तरूप अवतरेउ प्रभु, गये जान सबकोइ॥ ६१ ॥
सो० शंकरउर अतिक्षोभ,सती न जानहिं मर्म सोइ॥
तुलसी दर्शनलोभ, मन डर लोचन लालची ॥११

१ कालिकादेवी. २ अगस्तऋषिके पास. ३ पार्वती. ४ सबजगतके स्वामी ५ महादेव. ६ रामभक्तिमें अधिकरी. ७ नाशक.

रावण मरण मनुजकर यांचा*प्रभु बिधिबचन कीन्ह चहँसाँचा
जो नहिं जाउँ रहे पछितावा* करत विचार न बनत बनावा॥
यहिबिधि भये शोचबश ईशा * ताही समय जाइ दशशीशा ॥
लीन्ह नीच मारीचाहिं संगा * भयेउ तुरत सोइ कपटकुरंगा॥
करि छल मूढ़ हरी वैदेही * प्रभुप्रताप उर विदित न तेही ॥
मृग बधि बंधुसहित हरि आये * आश्रम देखि नयन जल छाये ॥
बिरहबिकल नरइव रघुराई * खोजत बिपिन फिरत दोउ भाई
कबहूँ योग वियोग न जाके * देखा प्रगट बिरहदुख ताके ॥

दो॰ अतिविचित्ररघुपतिचरित,जानहिं परमसुजान
जे मतिमन्द विमोहवश,हृदय धराहिं कछु आन६२

शम्भु समय तेहिं रामहिं देखा * उपजा हिय अतिहर्ष विशेखा॥
भरि लोचन छबिसिंधु निहारी*कुसमय जानि न कीन्ह चिन्हारी
जय सच्चिदानन्द जगपावन * अस कहि चले मनोजनशावन
चले जात शिव सतीसमेता *पुनि पुनि पुलकित कृपानिकेता
सती सो दशा शम्भुकी देखी * उर उपजा संदेह विशेखी ॥
शंकर जगत्बन्द्य जगदीशा * सुर नर मुनि सब नावत शीशा
तिन नृपसुताहिं कीन्ह परणामा*कहि सच्चिदानंद परधामा ॥
भये मग्न छबि तासु विलोकी*अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी

दो॰ ब्रह्म जो ब्यापक विरज अज,अकल अनीह अभेद
सो कि देह धरि होइ नर, जाहि न जानत वेद६३

विष्णु जो सुरहित नरतनुधारी* सोउ सर्वज्ञ यथा त्रिपुरारी ॥
खोजत सो कि अज्ञइव नारी * ज्ञानधाम श्रीपति असुरारी ॥

१ शोभाके समुद्र. २ कामदेवके नाशक शंकरजी. ३ मायारहित.

शम्भुगिरा पुनि मृषा न होई * शिव सर्वज्ञ जान सबकोई ॥
अस संशय मन भयउ अपारा* होइ न हृदय प्रबोधप्रचारा ॥
यद्यपि प्रकट न कहेउ भवानी* हर अन्तर्यामी सब जानी ॥
सुनहु सती तव नारिसुभाऊ * संशय अस न धरिय उर काऊ
जासु कथा कुंभज–ऋषि गाई* भक्ति जासु मैं मुनिहिं सुनाई
सोइ मम इष्टदेव रघुवीरा * सेवत जाहि सदा मुनि धीरा ॥

छंद॰मुनिधीरयोगीसिद्धसन्ततविमलमनजेहिध्यावहीं
कहि नेति निगम पुराणआगमजासुकीरतिगावहीं
सोइ राम व्यापक ब्रह्मभुवननिकायपतिमायाधनी
अवतरेउ अपनेभक्तहितनिजतंत्र नितरघुकुलमनी
सो॰लाग न उरउपदेश,यदपि कहेउशिवबारबहु ॥
बोले बिहँसि महेश, हरिमायाबश जानि जिय ६२

जो तुम्हरे मन अतिसंदेहू * तौ किन जाइ परीक्षा लेहू ॥
तबलगि बैठि रहौं बटछाहीं * जबलगि तुम ऐहौ मोहिंपाहीं॥
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी * करहु सो यत्न बिबेक बिचारी॥
चलीं सती शिवआयसु पाई * करहिं बिचार करौं का भाई॥
उहाँ शम्भु अस मन अनुमाना*दक्षसुताकहँ नाहिं कल्याना ।:
मोरेहु कहे न संशय जाहीं * बिधि बिपरीत भलाई नाहीं॥
होइहि सोइ जो राम रचि राखा* को करि तर्क बढ़ावहि शाखा
अस कहि जपन लगे हरिनामा* गई सती जहँ प्रभु सुखधामा

दो॰पुनि पुनिहृदयबिचारकरि,धरि सीताकर रूप
आगे होइ चलि पंथतेहि, जेहि आवत नरभूप ६४

---

१ हमेस २ हम नहीं जानते इसप्रकार. ३ वेद. ४ शास्त्र. ५ लोकसमूहके स्वामी. ६ स्वाधीन.

लक्ष्मण दीख उभा कृतवेषा * चकित हृदय भ्रम भयउ विशेषा
कहि न सकत कछु अतिगंभीरा * प्रभुप्रभाव जानत मतिधीरा॥
सतीकपट जानेउ सुरस्वामी * समदर्शी सब-अन्तर्यामी ॥
सुमिरत जाहि मिटै अज्ञाना * सोइ सर्वज्ञ राम भगवाना ॥
सती कीन्ह चह तहाँ दुराऊ * देखहु नारिस्वभावप्रभाऊ ॥
निजमायाबल हृदय बखानी * बोले बिहँसि राम मृदुबानी ॥
जोरि पाणि प्रभु कीन्ह प्रणामू * पितासमेत लीन्ह निजनामू ॥
कहेउ बहोरि कहाँ वृषकेतू * बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू

दो०रामबचन मृदु गूढ़ सुनि, उपजा अतिसंकोच॥
सती सभीत महेशपहँ, चलीं हृदय बड़ शोच६५

मैं शंकरकर कहा न माना * निजअज्ञान रामपहँ आना ॥
जाइ उतर अब देहौं काहा * उर उपजा अतिदारुण दाहा।
जाना राम सती दुख पावा * निजप्रभाव कछु प्रकट जनावा
सती दीख कौतुक मग जाता * आगे राम सहित सिय भ्राता
फिरि चितवा पाछे प्रभु देषा * सहित बंधु सिय सुंदरबेषा ॥
जहँ चितवतितहँ प्रभु आसीना * सेवहिं सिद्ध मुनीश प्रवीना॥
देखे शिव[1] बिधि विष्णु अनेका * अमित प्रभाव एकते एका॥
वन्दन चरण करत प्रभुसेवा * बिबिधवेष देखे सब देवा ॥

दो०सती[2] विधात्री[3] इन्दिरा[4], देखे अमित अनूप ॥
जेहि जेहि वेष अजादिसुर,तेहि तेहितनुअनुरूप६६

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते * शक्तिनसहित सकल सुर तेते॥
जीव चराचर जे संसारा * देखे सकल अनेकप्रकारा ॥

---

१ महादेवजी. २ महाकाली. ३ महासरस्वती. ४ महालक्ष्मी.

पूजहिं प्रभुहिं देव बहुवेषा * रामरूप दूसर नहिं देषा ॥
अवलोके रघुपति बहुतेरे * सीतासहित न वेष घनेरे ॥
सोइ रघुवर सोइ लक्ष्मणसीता * देखि सती अति भई सभीता ॥
हृदयकम्प तनुसुधि कछु नाहीं * नयन मूँदि बैठीं मगमाहीं ॥
बहुरि बिलोकेउ नयन उघारी * कछु न दीख तहँ दक्षकुमारी ॥
पुनि पुनि नाइ रामपद शीशा * चलीं तहाँ जहँ रहे गिरीशा ॥

दो०गईं समीप महेश[1] तब, हँसि पूँछी कुशलात॥
लीन्ह परीक्षा कवनबिधि, कहहु सत्य सब बात६७

सती समुझि रघुबीरप्रभाऊ * भयबश शिवसन कीन्ह दुराऊ
कछु न परीक्षा लीन्ह गुसांई * कीन्ह प्रणाम तुम्हारिहि नाईं
जो तुम कहा सो मृषा न होई * मोरे मन प्रतीति अस सोई ॥
तब शंकर देखेउ धरि ध्याना * सती जो कीन्ह चरित सब जाना
बहुरि राममायहिं[2] शिर नावा * प्रेरि सतिहिं जेहिं झूठ करावा
हरिइच्छा भावी बलवाना * हृदय बिचारत शम्भु सुजाना
सती कीन्ह सीताकर बेषा * शिवउर भयेउ बिषाद[4] विशेषा॥
जो अब करौं सतीसन प्रीती * मिटै भक्तिपथ[3] होइ अनीती॥

दो०परमप्रेम नहिं जाइ तजि, किये प्रेम बड़ पाप॥
प्रकट न कहत महेश कछु, हृदय अधिक सन्ताप६८

तबहिं शम्भु प्रभुपद शिर नावा * सुमिरत राम हृदय अस आवा
यहितनु सतिहिं भेंट मोहिं नाहीं * शिव संकल्प कीन्ह मनमाहीं॥
अस बिचारि शंकर मतिधीरा * चले भवन सुमिरत रघुबीरा॥

---

१ महादेव. २ योगमायाको. ३ भक्तिमार्ग. ४ दुःख.

चलत गगन भइ गिरा सुहाई * जय महेश भलि भक्ति दृढ़ाई
अस प्रण तुमबिन करै को आना * रामभक्त समरथ भगवाना ॥
सुनि नभगिरा सतीउर शोचू * पूँछा शिवहि समेत-सँकोचू॥
कीन्ह कवन प्रण कहहु कृपाला* सत्यधाम प्रभु दीनदयाला॥
यदपि सती पूँछा बहुभाँती * तदपिनकहेउ त्रिपुरआरा[१]ती॥

दो०सती हृदय अनुमान किय,सब जानासर्वज्ञ॥
कीन्ह कपट मैं शंभुसन, नारि सहजजडअज्ञ६९
सो०जलपय[२]सरिसबिकाइ, देखहुप्रीतिकिरीतिभलि
बिलग[३] होइ रस जाइ, कपट[४] खटाई परतही॥१३॥

हृदय शोच समुझत निजकरणी*चिन्ता अमित जाइ नहिं बरणी
कृपासिन्धु शिव परम[५]अगाधा * प्रगट न कहेउ मोर अपराधा॥
शंकररुख अवलोकि भवानी*प्रभुमोहिँ तजेउ हृदय अकुलानी
निजअर्घ[६]समुझि न कछु कहिजाई*तपै अँवांइव उर अधिकाई॥
सतिहिं सशोच जानि वृषकेतू[७] * कहेउ कथा सुंदर सुखहेतू ॥
वर्णत पंथ, बिबिध इतिहासा * बिश्वनाथ पहुँचे कैलासा ॥
तहँ पुनि शंभु समुझि प्रण आपन*बैठे बटतर करि कमलासन॥
शंकर सहजस्वरूप सँभारा * लागिसमाधि अखंडअपारा ॥

दो०सती बसहिं कैलासतब,अधिकशोच मनमाहिँ
मर्मन कोऊजानकछु,युगसमदिवस सिराहिँ॥७०॥

नित नव शोच सतीउर भारा * कब जैहहुँ दुखसागरपारा ॥
मैं जो कीन्ह रघुपतिअपमाना * पुनिपतिबचन मृषाकरिजाना॥

---

१ त्रिपुरासुरके शत्रु महादेवजीने. २ दूधकी बराबर. ३ न्यारा. ४ छल. ५ अत्यंत अथाह. ६ अपना पाप. ७ महादेव.

सो फल मोहिं बिधाता दीन्हा *जो कछु उचित रहा सो कीन्हा॥
अब बिधि अस बूझिय नहिं तोहीं*शंकरबिमुख जिआवहु मोहीं॥
कहि न जाइ कछु हृदयगलानी *मनमहँ रामहि सुमिरि सयानी
जो प्रभु दीनदयालु कहावा * आरतिहरण वेद यश गावा॥
तौ मैं विनय करौं कर जोरी * छूटै बेगि देह यह मोरी ॥
जो मोरे शिवचरणसनेहू * मन क्रम बचन सत्यव्रतयेहू॥

दो०तौ समदर्शी सुनिय प्रभु,करौसो बेगि उपाय॥
होइमरणजेहिंबिनाहिंश्रम,दुस्सहबिपतिबिहाय ७१

यहि बिधि दुखित प्रजेशकुमारी[1]*अकथनीय दारुण दुख भारी॥
बीते सम्वत सहस सताशी *तजी समाधि शंभु अबिनाशी[2]॥
रामनाम शिव सुमिरन लागे * जानेउ सती जगतूपतिजागे॥
जाइ शंभुपदवन्दन कीन्हा * सन्मुख शंकर आसन दीन्हा॥
लगे कहन हरिकथा रसाला *दक्ष प्रजेश[3] भयो तेहि काला॥
देखा बिधि[4] बिचारि सबलायक * दक्षहिं कीन्ह प्रजापतिनायक॥
बड़ अधिकार दक्ष जब पावा * अतिअभिमान हृदय तब आवा
नहिं कोउ अस जन्मेउ जगमाहीं * प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

दो०दक्ष लिये मुनि बोलि सब, करन लगे बड़याग ॥
नेवते सादर सकल सुर, जे पावत मखभाग[5]॥७२॥

किन्नर नाग सिद्ध गन्धर्वा * बधुनसमेत चले सुर सर्वा ॥
विष्णु बिरञ्चि महेश बिहाई * चले सकल सुर यान बनाई॥
सती बिलोके गगन बिमाना * जात चले सुन्दर बिधि नाना

---

१ दक्षकन्या. २ नाशरहित. ३ प्रजाओंका मालिक. ४ ब्रह्माने.
५ यज्ञका भाग.

सुरसुन्दरी करहिं कलगाना * सुनत श्रवण छूटहिं मुनिध्याना
पूछेउ तब शिव कहेउ बखानी * पितायज्ञ सुनिकै हर्षानी ॥
जो महेश मोहिं आयसु देहीं * कछुदिन जाइ रहौं मिस एहीं॥
पतिपरित्याग हृदय दुख भारी * कहै न निजअपराध बिचारी
बोलीं सती मनोहर बानी * भय संकोच–प्रेमरस-सानी ॥

दो०पिताभवन उत्सव परम, जो प्रभु आयसु होइ ॥
तौ मैं जाउँ कृपायतन, सादर देखन सोइ ॥७३॥

कहेउ नीक मोरे मन भावा * यह अनुचित नहिं नेवत पठावा
दक्ष सकल निजसुता बुलाई * हमरे बैर तुम्हैं बिसराई ॥
*ब्रह्मसभा हमसन दुख माना * तेहिते अजहुँ करहि अपमाना
जो बिनु बोले जाहु भवानी * रहै न शील सनेह न कानी॥
यदपि मित्रप्रभुपितुगुरुगेहा * जाइय बिनु बोलेहु न सँदेहा
तदपि बिरोध मान जहँ कोई * तहाँ गये कल्याण न होई ॥
भांति अनेक शम्भु समुझावा * भावीबश न ज्ञान उर आवा
कह प्रभु जाहु जो बिनहिं बुलाये * नहिं भलि बात हमारे भाये

*महादेवजी भवानीसे कहते हैं कि–एकसमय विष्णुआदि देवोंके साथ मैं ब्रह्माकी सभामें बैठा था इतनेमे दक्ष (तुम्हारा बाप) वहां आया. उसको देख, सब देवता उठे. परंतु ब्रह्मा, विष्णु और मैं नहीं उठा. तब दक्षने महाक्रोध कर; मुझको बहुत कटुवचन सुनाया और शाप दिया कि आजसे तुमको यज्ञोंमे भाग नहीं मिलेगा. तभीसे वह मेरेसे बैर करताहै और मेरी प्रतिष्ठाकी हानिमें उद्यत रहता है.

---

१ मनोहर गायन. २ मर्यादा वा लाज. ३ वैर.

दो॰ कहि देखा हर यत्न बहु, रहै न दक्षकुमारि ॥
दिये मुख्यगण संग तब, बिदा किये त्रिपुरारि ७४

पिताभवन जब गंई भवानी * दक्षत्रास[1] काहु न सन्मानी
सादर भलेहि मिली यक माता * भगिनी मिली बहुतमुसकाता
दक्ष न कछु पूछी कुशलाता * सतिहिं बिलोकि जेर सबगाता[2]
सती जाइ देखेउ तब यागा * कतहुँ न दीख शंभुकर भागा
तब चित चढ़ेउ जो शंकर कहेऊ * प्रभुअपमान समुझिउरदहेऊ[3]
पाछिल दुख न हृदय असव्यापा * जस यह भयउ महापरितापा
यद्यपि जग[4] दारुण दुख नाना * सबते कठिन जातिअपमाना
समुझि सो सतिहिं भयो अतिक्रोधा * बहुविधिजननीकीन्हप्रबोधा[5]

दो॰ शिवअपमान न जाइ सहि, हृदय न होत प्रबोध
सकल सभहिं हठि हटकि तब, बोली बचन सक्रोध ७५

सुनहु सभासद सकल मुनिंदा * कही सुनी जिन शंकरनिंदा ॥
सो फल तुरत लहब सबकाहू * भलीभांति पछिताव पिताहू ॥
सन्त--शम्भु--श्रीपति--अपवादा[6] * सुनिय जहाँ तहँ अस मर्यादा
काटिय जीभ जो बूत बसाई * श्रवण मूंदि नहिं चलियपराई ।
जगदातम महेश त्रिपुरारी * जगतजनक सबके हितकारी
पिता मन्दमति निन्दत तेही * दक्षशुक्रसम्भव यह देही ॥
तजिहौं तुरत देह तेहि हेतू * उर धरि चंद्रमौलि वृषकेतू ॥
अस कहि योगअग्नि तनुजारा * भयउ सकलमख हाहाकारा

दो॰ सतीमरण सुनिशम्भुगण, लगे करन मखखीश
यज्ञविध्वंस बिलोकि भृगु, रक्षा कीन्ह मुनीश ७६

---

१ दक्षके डरसे. २ अंग. ३ छाती. ४ संसारमें. ५ ज्ञान तथा संतोष. ६ साधु, महादेव और विष्णु इनकी निंदा.

समाचार जब शंकर पाये * बीरभद्र करि कोप पठाये ॥
यज्ञबिध्वंस जाइ तिन्ह कीन्हा *सकलसुरन्हविधिवत्फल दीहा
भइ जग बिदित दक्षगति सोई *जस कछु शम्भुविमुखकी होई
यह इतिहास सकलजग जाना * ताते मैं संक्षेप बखाना ॥
सती मरत हरिसन बर माँगा * जन्म जन्म शिवपद अनुरागा
तेहि कारण हिमगिरिगृह जाई * जन्मी पारबती-तनु पाई ॥
जबते उमा शैलगृह आई *सकल सिद्धि सम्पति तहँ छाई
जहँ तहँमुनिन सुआश्रम कीन्हे *उचित बास हिमभूधर दीन्हे॥

दो०सदा सुमनफलसहित सब,द्रुम नव नानाजाति
प्रगटीं सुन्दर शैलपर, मणिआकर[1] बहुभांति॥७७॥

सरिता सर पुनीत जल बहईं * खग मृग मधुप सुखी सब रहईं
सहजबैर सब जीवन त्यागा * गिरिपर सकल करहिं अनुरागा
सोह शैल गिरिजा गृह आये * जिमि नर रामभक्तिके पाये ॥
नित नूतन मंगल गृह तासू * ब्रह्मादिक गावहिं यश जासू
नारद समाचार सब पाये * कौतुक हिमगिरिगेह[2] सिधाये
शैलराज बड़ आदर कीन्हा * पद पखारि बर आसन दीन्हा
नारिसहित मुनिपद शिर नावा *चरणसलिल[3] सबभवन सिंचावा
निजसौभाग्य बहुत गिरि बरणा *सुता बोलि मेली मुनिचरणा

दो० त्रिकालज्ञ सर्वज्ञ तुम, गति सर्वत्र तुम्हारि ॥
कहहु सुताके दोष गुण, मुनिवर हृदय बिचारि ७८

कह मुनि बिहँसि गूढ़ मृदुबानी * सुता तुम्हारि सकलगुणखानी

---

१ रत्नोंकी खानि. २ हिमवान्‌के घरमे. ३ पादजलसे.

सुन्दरि सहजसुशील सयानी * नाम उमा अंबिका भवानी
सब-लक्षण-संपन्न कुमारी * होइहि सन्तत पियाहिं पियारी
सदा अचल यहिकर अहिवाता[१] * यहिते यश पैहहिं पितु माता
होइहि पूज्य सकलजगमाहीं * यहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं
यहिकर नाम सुमिरि संसारा *तियचढ़िहाहिं पतिव्रतअसिधारा
शैल सुलक्षण सुता तुम्हारी *सुनहु जे अब अवगुण दुइचारी
अगुण अमान मातुपितुहीना * उदासीन सब संशय छीना ॥

दो०-योगी जटिल अकाम मन, नग्न अमंगल वेष ॥
अस स्वामी इहिकहँ मिलिहि,परी हस्त अस रेष७९

सुनि मुनिगिरा सत्य जिय जानी * दुख दम्पतिहिं उमा हर्षानी
नारदहू यह भेद न जाना * दशा एक समुझत बिलगाना
सकल सखी गिरिजा गिरिमयना* पुलक शरीर भरे जल नयना॥
होइ न मृषा देवऋषिभाखा * उमा सो बचन हृदय धरि राखा
उपजेउ शिवपदकमलसनेहू * मिलन कठिन मन यह संदेहू
जानि कुअवसर प्रीति दुराई * सखि--उत्संग[२] बैठि पुनि जाई
झूठि न होइ देवऋषिबानी * शोचहिं दम्पति[३] सखी सयानी
उर धरि धीर कहै गिरिराऊ * कहहु नाथ का करिय उपाऊ॥

दो०-कहमुनीश हिमवंत सुनु,जोबिधिलिखा लिलार
देव दनुज नर नाग मुनि, कोउ न मेटनहार ॥८०॥

तदपि एक मैं कहौं उपाई * होइ करै जो दैव सहाई ॥
जस वर मैं वर्णेउँ तुमपाहीं *मिलिहि उमहिंकछुसंशय नाहीं
जे जे बरके दोष बखाने * ते सब शिवपहँ मैं अनुमाने॥

---

१ सुहाग. २ सखीकी गोदीपर. ३ हिमवान् व मेना.

जो बिबाह शंकरसन होई * दोषौ गुणसम कह सबकोई॥
जो अहिसेजशयन हरि करहीं *बुध कछु तिनकहँ दोष नधरहीं
भानु कृशानु सर्वरस खाहीं *तिनकहँ मन्द कहत कोउनाहीं
शुभअरु अशुभ सलिल सब बहहीं *सुरसरि कोउन अपावनिकहहीं
समरथकहँ नहिं दोष गुसांई * रवि--पावक- सुरसरिकी नांई

दो॰ जो असि ईर्षा करहिं नर,जड बिबेकअभिमान
परहिं कलपभरि नरकमहँ, जीव कि ईशसमान ८१

सुरसरिजलकृत वारुणि जाना * कबहुँ न संत करहिं तेहिपाना
सुरसरिमिले सुपावन जैसे * ईश अनीशहि अन्तर तैसे॥
शम्भु सहजसमरथ भगवाना * इहि विबाह सबबिधि कल्याना
दुराराध्य पै अहहिं महेशू * आशुतोष पुनि किये कलेशू॥
जो तप करै कुमारि तुम्हारी * भाविउ मेटि सकैं त्रिपुरारी॥
यद्यपि वर अनेक जगमाहीं * यहिकहँ शिव तजि दूसर नाहीं
बरदायक प्रणतारति-भंजन * कृपासिन्धु सेवकमनरंजन॥
इच्छित फल बिनु शिव आराधे * लहै न कोटियोग जप साधे॥

दो॰ असकहिनारदसुमिरिहरि,गिरिजहिंदीन्हअशीश
होइहि सब कल्याण अब, संशय तजहु गिरीश ८२

कहि अस ब्रह्मभुवन मुनि गयऊ *आगिल चरित सुनहु जस भयऊ
पतिहिं इकांत पाय कह मैनाँ * नाथ न मैं समुझेउँ मुनिबैना
जो घर बर कुल होइ अनूपा * करिय बिबाह सुताअनुरूपा
नतु कन्या बरु रहै कुमारी * कन्त उमा मम प्राणपियारी॥

---

१ शेषशय्यामें. २ अग्नि ३ जल.४ मादिरा. ५ जल्दी प्रसन्न होते हैं. ६ दीनदुःखनाशन, ७ पार्बतीकी माता.

जो न मिलिहिबर गिरिजाहिं योगू * गिरि जड़सहज कहाहिं सब लोगू
सो बिचारि पति करहु बिवाहू * जेहि न बहोरि होइ उर दाहू
अस कहि परी चरण धरि शीशा * बोले सहित सनेह गिरीशा ॥
बरु पावक प्रगटै शशिमाहीं * नारदबचन अन्यथा नाहीं ॥

दो०प्रिया शोच परिहरहु सब, सुमिरहु श्रीभगवान
पार्वती जिन निर्मयउ, सोइ करिहहिं कल्यान ८३

अब जो तुमहिं सुतापर नेहू * तौ अस जाइ सिखावन देहू
करै सो तप जेहि मिलहिं महेशू * आन उपाय न मिटहिं कलेशू
नारदबचन सत्य सबहेतू * सुन्दर सबगुणनिधि वृषकेतू
अस बिचारि तुम तजि सब शंका * सबहिं भांति शंकर अकलंका
सुनि पतिबचन हर्ष मनमाहीं * गई तुरत उठि गिरिजापाहीं
उमहिं बिलोकि नयन भरि बारी * सहित सनेह गोद बैठारी ॥
बारहि बार लेति उर लाई * गद्गद कण्ठ न कछु कहि जाई
जगतमातु सर्वज्ञ भवानी * मातुसुखद बोलीं मृदु बानी ॥

दो०सुनहु मातु मैं दीख अस, स्वप्न सुनाऊं तोहिं ॥
सुन्दर गौर सुबिप्र बर, अस उपदेशेउ मोहिं ८४

करहु जाइ तप शैलकुमारी * नारद कहा सो सत्य बिचारी
मातुपितहिं पुनि यह मत भावा * तप सुखप्रद दुखदोषनशावा ॥
तपबल रचैं प्रपंच बिधाता * तपबल बिष्णु सकलजगत्राता
तपबल शम्भु करहिं संहारा * तपबल शेष धरहिं महिभारा ॥
तपअधार सब सृष्टि भवानी * करहु जाइ तप अस जिय जानी
सुनत बचन बिस्मित महतारी * स्वप्न सुनायेउ गिरिहिं हँकारी

१ अग्नि. २ कलंकरहित. ३ श्रेष्ठ. ४ संसार. ५ समस्त जगतके रक्षक.

मातुपितहिं बहुबिधि समुझाई * चलीं उमा तपहित हर्षाई ॥
प्रिय परिवार पिता अरु माता * भये बिकल मुख आव न बाता

दो०बेदशिरा मुनि आय तब, सबहिं कहा समुझाइ
पार्बतीमहिमा सुनत, रहे प्रबोधहिं पाइ ॥८५॥

उर धरि उमा प्राणपतिचरणा * जाइ बिपिने लागी तप करणा
अतिसुकुमारि न तनु तपयोगू * पतिपद सुमिरि तजेउ सबभोगू
नित नव चरण उपज अनुरागा * बिसरी देह तपहिं मन लागा॥
संबत सहस मूल फल खाये * शाक खाइ शतवर्ष गँवाये ॥
कछुदिन भोजन बारि बतासा * किये कठिन कछुदिन उपवासा
बेल–पात महि परे सुखाई * तीनि सहस सम्बत सो खाई
पुनि परिहरेउ सुखानेउ पर्णा * उमानाम तब भयेउ अपर्णा ॥
देखि उमहिं तपखिन्नशरीरा * ब्रह्मगिरा भइ गगन गभीरा ॥

दो०भयउ मनोरथ सफल तव, सुनु गिरिराजकुमारि
परिहरु दुसह कलेश सब, अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ८६

अस तप काहु न कीन्ह भवानी * भये अनेक धीर मुनि ज्ञानी॥
अब उर धरहु ब्रह्मवरबानी * सत्य सदा सन्तत शुचि जानी
आवें पिता बुलावन जबहीं * हठ परिहरि घर जायहु तबहीं
मिलहिं तुमहिं जब सप्तऋषीशा * जानेहु तब प्रमाण बागीशा॥
सुनत गिरा बिधि गगनबखानी * पुलक गात गिरिजा हर्षानी॥
उमाचरित मैं सुन्दर गावा * सुनहु शम्भुकर चरित सुहावा
जबते सती जाइ तनु त्यागा * तबते शिवमन भयउ बिरागा ॥

---

१ वनमें. २ जल. ३ पवन. ४ तभीसे पार्वतीका 'अपर्णा' यह नाम पड़ा. ५ पार्बती! ६ महादेवजी. ७ हृदयमें.

जपहिं सदा रघुनायकनामा * जहँ तहँ सुनहिं रामगुणग्रामा ॥

दो०चिदानन्द सुखधाम शिव, बिगत-मोह-मद-काम
बिचरहिं महिधरि हृदयहरि, सकललोकअभिराम ८७

कतहुँ मुनिन उपदेशहिं ज्ञाना * कतहुँ रामगुण करहिं बखाना
यदपि अकाम तदपि भगवाना * भक्तबिरहदुखदुखित सुजाना
याहि बिधि गयउ काल बहु बीती * नितनव होइ रामपद प्रीती ॥
नेम प्रेम शंकरकर देखा * अबिचल हृदय भक्तिकी रेखा
प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला * रूपशीलनिधि तेज बिशाला ॥
बहुप्रकार शङ्करहिं सराहा * तुमबिनु अस व्रत को निर्बाहा ॥
बहुविधि राम शिवहिं समुझावा * पारबतीकर जन्म सुनावा ॥
अतिपुनीत गिरिजाकी करणी * बिस्तरसहित कृपानिधि बरणी

दो०अब विनती मम सुनहु शिव, जो मोपर निजनेहु
जाइ विवाहहु शैलजहिं, यह मोहिं माँगे देहु ८८॥

कह शिव यदपि उचित अस नाहीं * नाथबचन पुनि मेटि न जाहीं
शिर धरि आयसु करिय तुम्हारा * परमधर्म यह नाथ हमारा ॥
मातु–पिता–गुरु-प्रभुकी बानी * बिनहिं बिचार करिय शुभजानी
तुम सबभांति परमहितकारी * आज्ञा शिरपर नाथ तुम्हारी ॥
प्रभु तोषेउ सुनि शंकरबचना * भक्तिबिवेकधर्मयुत रचना ॥
कह प्रभु हर तुम्हार प्रण रहेऊ * अब उर राखेउ जो हम कहेऊ
अन्तर्धान भये अस भाषी * शंकर सोइ मूरति उर राखी ॥
तबहिं सप्तऋषि शिवपहँ आये * बोले प्रभु अस बचन सुहाये ॥

दो० पारबतीपहँ जाइ तुम, प्रेमपरीक्षा लेहु ॥ *
गिरिहिं प्रेरि पठवहु भवन, दूर करेहु संदेहु ८९

१ रामचन्द्रजीने. २ पार्वतीको. ३ अपने स्वामीका कहना.

ऋषिन गौरि देखी तहँ कैसी * मूरतिवन्त तपस्या जैसी॥
बोले मुनि सुनु शैलकुमारी * करहु कवनकारण तप भारी।
केहि आराधहु का तुम चहहू * हमसन सत्य मर्म सब कहहू॥
सुनत ऋषिनके वचन भवानी * बोलीं गूढ मनोहर बानी॥
कहत मर्म मन अतिसकुचाई * हँसिहहु सुनि हमारि जड़ताई
मन हठ परा न सुनै सिखावा * चहत बारिपर भीति उठावा॥
नारद कहा सत्य सोइ जाना *बिनुपंखन हम चहहिं उड़ाना॥
देखिय मुनि अबिबेक[१] हमारा * चाहत पति शंकर अबिकारा

दो०-सुनत बचन बिहँसे ऋषय, गिरिसंभव[२] तव देह
नारदकर उपदेश सुनि, कहहु बसेउ को गेह ९०

* दक्षसुतन उपदेशिनि जाई * तिन फिरि भवन न देखा आई
† चित्रकेतुकर घर उन घाला[३]*‡कनककशिपुकर[४] पुनिअसहाला

* दक्षने पहले हर्यश्व नामवाले दशहजार पुत्र पैदा करके उनसे कहा कि हे पुत्रो! तुम सब मिलकर सृष्टि करो. यह सुन पिताका बचन-मान वे तप करने गये. तब तहां उनको नारदजीने ऐसा ज्ञान सिखाया कि-जिससे वे सबके सब संसारको असार समझ, मोक्षमार्गमें लग गये; फिर लौटे नहीं. इसके पीछे फिर दक्षने दशहजार पुत्र और पैदा किये; उनकीभी नारदजीने वही दशा करी, तब दक्षने क्रोध कर नारदजीको शाप दिया कि "तू सब जगतमें घूमता रह" यह शाप नारदजीने बड़े खुश हो ग्रहण किया.

† चित्रकेतु राजाकी कथा ऐसी है कि-इस राजाके एक करोड़ रानियां थी; पर किसीके पुत्र नहीं हुआ. राजा बूढ़ा होगया. तब इसबातकी बड़ी चिन्ता करने लगा. एकदिन अंगिराऋषि राजा चित्रकेतुके घर आये उनका आदरपूर्वक पूजनादि करके इसने प्रार्थना करी तब

१ अज्ञान. २ पर्वतसे उत्पन्न. ३ नाश किया. ४ हिरण्यकशिपुका.

नारदशिख जु सुनहिं नरनारी * अवशि भवनतजि होहिं भिखारी
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा * आपसरिस सबहीं चह कीन्हा
तिनके बचन मानि विश्वासा * तुम चाहहु पति सहज उदासा
निर्गुण निलज कुवेष कपाली * अकुल अगेह दिगम्बर व्याली
कहहु कवन सुख अस बर पाये * भल भूलिहु ठगके बौराये ॥
पंच कहैं शिव सती बिबाही * पुनि अवडेरि मरायनि ताही ॥

ऋषिने पुत्रका बरदान दिया और कहा कि–तेरे पुत्र तो होगा परंतु वह हर्ष व शोकका देनेवाला होगा. ऐसे कहकर ऋषिने यज्ञावशेष हवि पटरानी कृतद्युतिको दिया तिससे उसके पुत्र हुआ; तब छोटी रानियाँ और इसके बीचमें द्वेष बढ़नेसे उन्होने जहर देकर बालकको मारडाला. तब राजा दुःख और शोकमें बूड़ रहा. इतनेमें तहां नारद और अंगिराऋषि आये. उन्होंनें राजाको बहुतेरा उपदेश किया परंतु वह न समझा. तब नारदजीने पुत्रके जीवात्माको बुलाकर कहा कि, अरे पुत्र! ये तेरे माता पिता तेरे लिये रोते हैं सो अब तू इस शरीरमें रहके राज कर. ऐसे सुन जीवने पीछा जबाब दिया कि, "ये कौनसे जन्ममें मेरे माता पिता थे? मैं तो जहां जाताहूं वहीं माता पिता आगे मिलते हैं, मेरे कर्मानुसार मैं तो संसारमें भटकता फिरता हूं. सब जीव अपने २ कर्मानुसार इकठ्ठे हो जाते हैं और बिछुरजाते हैं." ऐसे कहकर जीव चला गया. तब फिर नारदजीके उपदेशसे वह राजा राज छोड़कर तपके अर्थ बनमें चलागया.

‡ हिरण्यकशिपुकी गर्भवती कयाधूनाम स्त्रीको पकड़कर इन्द्र लेजाताथा. उसे नारदजीने छुड़ाली और अपने आश्रममें रखकर उसके मिषसे गर्भमें रहहुए प्रल्हादजीने उपदेश पाय बापका कहना नहीं माना. जब पिता हिरण्यकशिपुने उसे मारना चाहा तब विष्णु भगवानने नृसिंहावतार धारण कर हिरण्यकशिपुको मारा और दुष्टदैत्योंका संहार किया.

---

१ घर. २ कोईतरेसे.

दो॰ अब सुखसोवत शोच नहिं, भीखमाँगि भवखाहिं
सहजएकाकिनके भवन, कबहुँ कि नारि खटाहिं ९१

अजहूँ मानहु कहा हमारा * हम तुमकहँ बर नीक बिचारा
अतिसुंदर शुचि सुखद सुशीला * गावहिं वेद जासु यश लीला ॥
दूषणरहित सकल–गुणराशी * श्रीपतिपुर वैकुंठ–निवासी ॥
अस बर तुमहिं मिलाउब आनी * सुनतबिहँसि कह बचनभवानी
सत्य कहहु गिरिभवँ तनु एहा * हठ न छूट छूटै बरु देहा ॥
कनकौ पुनि पखानते होई * जारेउ सहज न परिहर सोई
नारदवचन न मैं परिहरऊँ * बसौ भवन उजरौ नहिं डरऊँ
गुरुके बचन प्रतीति न जेही * सपनेहु सुगम न सुखनिधि तेही

दो॰ महादेव अवगुणभवन, बिष्णु सकलगुणधाम ॥
जेहिकर मन रम जाहिसन, ताहि ताहिसन काम

जो तुम मिलतेउ प्रथम मुनीशा * सुनतिउँ शिख तुम्हारि धरि शीशा
अब मैं जन्म शम्भुहित हारा * को गुणदोषहि करै बिचारा
जो तुम्हरे हठ हृदय विशेषी * रहि न जाइ बिनु कियेबरेषी
तौ कौतुकिअन्ह आलस नाहीं * बर कन्या अनेक जगमाहीं ॥
जन्मकोटिलगि रगर हमारी * बरौं शम्भु नतु रहौं कुमारी
तजौं न नारदकर उपदेशू * आप कहहिं शतबार महेशू ॥
मैं पाँपरौं कहै जगदम्बा * तुम गृह गवनहु भयउ बिलम्बा
देखि प्रेम बोले मुनि ज्ञानी * जय जय जय जगदंब भवानी

दो॰ तुम माया भगवान शिव, सकलजगतपितुमात
नाइ चरण शिर मुनि चले पुनिपुनि हर्षितगात ९३

१ शिव. २ स्वभावसे अकेलोंके. ३ हिमवान्से पैदा. ४ बर देखना.

जाइ मुनिन हिमवन्त पठाये * करि बिनती गिरिजहिं गृह लाये
बहुरि सप्तऋषि शिवपहँ जाई * कथा उमाकी सकल सुनाई
भये मग्न शिव सुनत सनेहा * हर्षि सप्तऋषि गवने गेहा ॥
मन थिर करि तब शम्भु सुजाना * लगे करन रघुनायकध्याना ॥
तारक असुर भयेउ तेहिकाला * भुज प्रताप बल तेज बिशाला
तेहिं सबलोक लोकपति जीते * भये देव सुख सम्पति-रीते ॥
अजर अमर सो जीति न जाई * हारे सुर करि बिबिध लराई
तब बिरंचिसन जाइ पुकारे * देखे बिधि सब देव दुखारे

[illegible]सन कहा बुझाइ बिधि,दनुजनिधन तब होइ
[illegible]शुक्रसम्भूत सुत,इहिं जीते रण सोइ ॥ ९४ ॥

मोर कहा सुनि करहु उपाई * होइहि ईश्वर करिहि सहाई ।
सती जो तजी दक्षमख देहा * जन्मी जाइ हिमाचलगेहा ॥
तेहिं तप कीन्ह शंभुपतिलागी * शिवसमाधि बैठे सब त्यागी
यदपि अहै असमंजस भारी * तदपि बात यक सुनहु हमारी
पठवहु काम जाइ शिवपाहीं * करै क्षोभ शंकर-मनमाहीं ॥
तब हम जाइ शिवहिं शिर नाई * करवाउब बिवाह बरिआई ॥
यहिबिधि भले देवहित होई * मति अतिनीक कही सबकोई
अस्तुति सुरन्ह कीन्ह अतिहेतू * प्रगटेउ बिषमबाण झषकेतू

दो०-सुरन कहीनिजबिपतिसब,सुनि मन किन्हबिचार
शंभुबिरोध न कुशलमोहिं,बिहँसिकहेउ अस मार

तदपि करब मैं काज तुम्हारा * श्रुति कह परमधर्म उपकारा
परहितलागि तजै जो देही * सन्तत सन्त प्रशंसहि तेही ॥

---

१ सुख और संपत्तिसे रहित. २ ब्रह्मासे,३ राक्षसका नाश.

असकहि चलेउ सबहिं शिरनाई * सुमनधनुष कर सहित सहाई
चलत मार अस हृदय विचारा * शिवबिरोध ध्रुव मरण हमारा
तब आपन प्रभाव बिस्तारा * निजबसी कीन्ह सकल संसारा
कोपेउ जबहिं बारिचरकेतू * क्षणमहँ मिटे सकल श्रुतिसेतू
ब्रह्मचर्यव्रत संयम नाना * धीरज धर्म ज्ञान विज्ञाना ॥
सदाचार जप योग बिरागा * सभय विवेककटक सब भागा

छंद॥ भागेउ विवेक सहायसह सो सुभट संयुगमहि मुरे
सद्ग्रंथ पर्वतकन्दरनमहँ जाइ तेहि अवसर दुरे
होनहार का करतार को रखवार जग खरभरा परा
दुइमाथकेहि रतिनाथ जेहिकहँ कोपिकर धनुशर धरा

दो०॥ जे सजीव जग अचर चर, नारि पुरुष अस नाम
ते निज निज मर्याद तजि, भये सकल बश काम॥ ८६

सबके हृदय मदन अभिलाषा * लता निहारि नवहिं तरुशाखा॥
नदी उमँगि अंबुधिकहँ धाई * संगम कराहिं तलाव तलाई॥
जहँ अस दशा जडनकी बरणी * को कहिसकै सचेतनकरणी॥
पशु पक्षी नभ-जल-थलचारी * भये कामबश समय बिसारी॥
मदनअन्ध व्याकुल सब लोका * निशिदिन नहिं अवलोकहिं कोका[3]
देव दनुज नर किन्नर व्याला[4] * प्रेत पिशाच भूत बेताला॥
इनकी दशा न कहेउँ बखानी * सदा कामके चेरे जानी।
सिद्ध बिरक्त महामुनि योगी * तेपि कामबश भये बियोगी॥

छंद॥ भये कामवश योगीश तापस पामरनकी को कहे
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे॥

---

१ कामदेव. २ निश्चित. ३ चक्रवाक. ४ सर्प.

अबला बिलोकहिं पुरुषमय जग पुरुष सब अबलामय
दुइदण्ड[2] भरि ब्रह्मांडभीतर कामकृत कौतुक अयं[3]
सो०धरा न काहू धीर, सबके मन मनसिज[4] हरे॥
जिन राखे रघुवीर, ते उबरे तेहि कालमहँ॥१४॥

उभय घरी अस कौतुक भयऊ*जबलगि काम शंभुपहँ गयऊ॥
शिवहिं बिलोकि सशंकेउ मारू* भउ यथाथित सब संसारू
भये तुरत जग जीव सुखारे * जिमि मद उतरिगये मतवारे॥
रुद्रहिं देखि मदन भय माना * दुराधर्ष दुर्गम भगवाना॥
फिरत लाज कछु कहि नहिं जाई* मरण ठानि मन रचेसि उपाई॥
प्रगटेसि तुरत रुचिर ऋतुराजा[5] *कुसुमित नवतरुराजि बिराजा
बन उपवन बापिका तड़ागा * परम सुभग[6] सबदिशाबिभागा॥
जहँ तहँ जनु उमँगत अनुरागा * देखि मुयेहु[3] मनमनसिज[4] जागा

छं०जागेउ मनोभव मुएमन बनसुभगता न परै कही
शीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा
कलहंसपिकशुकसरसरवकरिगाननाचहिंअप्सरा
दो०सकल कला करि कोटि बिधि,हारेउ सेनसमेत
चली न अचल समाधि शिव,कोपेउ हृदयनिकेत॥

देखि रसाल बिटप बर शाखा * तेहिपर चढ़ेउ मदन मन माखा
सुमनचाप निजशर सन्धाने * अतिरिस ताकि श्रवणलगि ताने
छाँड़े बिषम बिशिख उर लागे* छूटि समाधि शम्भु तब जागे॥
भयेउ ईशमन क्षोभ बिशेखी * नयन उघारि सकल दिशिदेखी

१ स्त्रीरूप. २ दो घरीमें. ३ यह. ४ कामने. ५ बसंत. ६ रमणीक.

सौरभपल्लव मदन बिलोका * भयेउ कोप कम्पेउ त्रयलोका
तब शिव तीसर नयन उघारा *चितवत काम भयउ जरिछारा
हाहाकार भयउ जग भारी *डरपे सुर भये असुर सुखारी ॥
समुझिकामसुख शोचहिं भोगी*भये अकंटक साधक योगी ॥

छंद॰योगी अकंटक भयेपतिगति सुनतरति मूर्च्छितभई
रोदति वदति बहुभांति करुणा करति शंकरपहँ गई
अतिप्रेमकरिविनतीविविधविधिजोरिकरसन्मुखरही
प्रभुआशुतोषकृपालुशिवअबलानिरखिबोलेसही ६

दो॰अबते रति तव नाथकर, होइहि नाम अनंग ॥
बिनुबपुब्यापहि सबहिं पुनि सुनुनिजमिलनप्रसंग९८

जब यदुवंश कृष्ण-अवतारा * होइहि हरण महामहिभारा॥
कृष्णतनय होइहि पति तोरा * बचन अन्यथा होइ न मोरा॥
रति गवनी सुनि शंकरबानी * कथा अपर अब कहौं बखानी
देवन समाचार जब पाये * ब्रह्मादिक बैकुण्ठ सिधाये ॥
सब सुर विष्णुबिरंचिसमेता * गये जहाँ शिव कृपानिकेता॥
पृथक् पृथक् तिन कीन्ह प्रशंसा * भये प्रसन्न चन्द्रअवतंसा ॥
बोले कृपासिंधु वृषकेतू * कहहु अमर आयहु केहि हेतू
कह बिधि तुम प्रभु अन्तर्यामी * तदपि भक्तिबश बिनवौं स्वामी

दो॰सकल सुरनके हृदय अस, शंकर परमउछाह
निजनयनन देखा चहहिं,नाथ तुम्हार विवाह ९९

यह उत्सव देखिय भरि लोचन *सो कछु करिय मदनमदमोचन
काम जारि रतिकहँ बर दीन्हा *कृपासिन्धुयह अतिभलकीन्हा

---

१ जल्दी प्रसन्न होनेवाले. २ पतिका. ३ शरीर. ४ शिक्षा.

सासति करि पुनि करहिं पसाऊ * नाथ प्रभुनकर सहजसुभाऊ
पारबती तप कीन्ह अपारा * करहु तासु अब अंगीकारा ॥
सुनि विधिबचन समुझि प्रभुबानी * ऐसेहि होउ कहा सुख मानी
तब देवन दुन्दुभी बजाई * बर्षि सुमन जय जय सुरसाईं
अवसर जानि सप्तऋषि आये * तुरतहि विधि गिरिभवन पठाये
प्रथम गये जहँ रहीं भवानी * बोले बचन मधुरछलसानी ॥

दो०कहा हमार न सुनेहु तब, नारदकर उपदेश॥
अब भा झूँठ तुम्हार प्रण, जारेउ काम महेश १००

सुनि बोली मुसकाय भवानी * उचित कहेउ मुनिवर विज्ञानी
तुम्हरे जान काम हर जारा * अबलगि शंभु रहे सविकारा॥
हमरे जान सदा शिव योगी * अज अनवद्य[1] अकाम अभोगी
जो मैं शिव सेयेउँ अस जानी * प्रीतिसमेत कर्म मन बानी ॥
तौ हमार प्रण सुनहु मुनीशा * करिहहिं सत्य कृपानिधि ईशा[2]
तुम जो कहा हर जारेउ मारा[3] * सो अतिबड़ अबिबेक तुम्हारा
तात अनलकर सहजसुभाऊ * हिम[4] तेहि निकट जाइ नहिंकाऊ
गये समीप सो अवशि नशाई * जिमि सँपाति निजपक्ष गँवाई

दो०हिय हर्षे मुनिबचन सुनि, देखि प्रीति विश्वास
चले भवानिहिं नाइ शिर, गये हिमाचलपास १०१

सब प्रसंग गिरिपतिहिं सुनावा * मदनदहन सुनि अतिदुखपावा
बहुरि कहेउ रतिकर वरदाना * सुनि हिमवन्तबहुत सुख माना
हृदय बिचारि शंभुप्रभुताई * सादर मुनिवर लिये बुलाई ॥
सुदिन सुनखत सुघरी सुहाई * बेगि बेदबिधि लग्न धराई ॥

१ दोषरहित. २ महादेवजी. ३ काम. ४ शीत.

पत्री सप्तऋषिन सोइ दीन्ही * गहि पद बिनय हिमाचल कीन्ही
जाइ विधिहिं तिन दीन्ह सोपाती * बाँचत प्रीति न हृदय समाती
लग्न बाँचि अज सबहिं सुनाई * हर्षे सुनि सब सुरसमुदाई ॥
सुमनवृष्टि नभ बाजन बाजे * मङ्गलकलश दशहु दिशि साजे

दो॰ लगे सँवारन सकल सुर,बाहन बिबिध बिमान
होहिं सगुण मङ्गलसुभग,करहिं अप्सरा गान१०२

शिवहिं शम्भुगण करहिं सिंगारा * जटा मुकुट अहि मौर सँभारा
कुण्डल कंकण पहिरे व्याला * तनु बिभूति पट केहरिछाला
शशि ललाट सुन्दर शिरगंगा * नयन तीन उपवीत[१] भुजंगा ॥
गरल कण्ठ उर नरशिरमाला * अशिवबेषे[२] शिवधाम[३] कृपाला
कर त्रिशूल अरु डमरु बिराजा * चले वृषभ चढ़ि बाजहिं बाजा
देखि शिवहिं सुरत्रिय मुसकाहीं * बरलायक दुलहिनि जग नाहीं
बिष्णुबिरंचिआदि सुरव्राता[४] * चढ़िचढ़ि बाहन चले बराता ॥
सुरसमाज सबभांति अनूपा * नहिं बरात दूलहअनुरूपा

दो॰ विष्णुकहाअसबिहँसितब, बोलिसकलदिशिराज
बिलगबिलगहोइचलहुसब,निजनिजसहितसमाज१०३

बरअनुहार बरात न भाई * हँसी करैहहु परपुर जाई *
विष्णुवचन सुनि सुर मुसुकाने * निजनिजसेनसहित बिलगाने
मनहीं मन महेश मुसकाहीं * हरिके व्यंग बचन नहिं जाहीं
अतिप्रिय बचन सुनत हरिकेरे * भृङ्गी प्रेरि सकल गण टेरे ॥
शिवअनुशासन सुनि सब आये * प्रभुपदजलज शीश तिननाये॥
नाना बाहन नाना बेषा * बिहँसे शिव समाज निज देषा॥

---

१ जनेऊ. २ कुरूप. ३ कल्याणका स्थान. ४ इन्द्रादिदेवता.

कोउ मुखहीन बिपुल मुख काहू * बिनु पद कर कोउ बहुपद बाहू॥
बिपुल नयन कोउ नयनबिहीना * हृष्ट पुष्ट कोउ अतितनुक्षीना॥
छंद॰तनुक्षीणकोउ अतिपीनपावनकोउअपावनतनुधरे
भूषण कराल कपाल कर सब सद्यशोणित तनु भरे
खरश्वान सुअर शृगालमुखगणवेष अगणितको गनै
बहु जिनिसिप्रेत पिशाचयोगिनि भांति बर्णत नाहिबनै
सो॰ नाचहिं गावहिं गीत, परमतरंगी भूत सब॥*
देखत अतिबिपरीत, बोलहिं बचन बिचित्र बिधि१५
जस दूलह तस बनी बराता *कौतुक बिबिध होहिं मगु जाता
इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना * अतिबिचित्र नहिं जाइ बखाना
शैलसकल जहँलगि जगमाहीं * लघु बिशाल नाहिं बर्णि सिराहीं
बन सागर सब नदी तलावा * हिमगिरि सबकहँ नेवत पठावा
कामरूप सुन्दर-तनु-धारी * सहित समाज सहित बरनारी॥
गये सकल तुहिनाचलगेहा * गावहिं मंगल सहित सनेहा॥
प्रथमहिं गिरि बहु गृह सँवराये * यथायोग्य जहँ तहँ सब छाये॥
पुरशोभा अवलोकि सुहाई * लागै लघु बिरंचिनिपुणाई॥
छंद-लघुलागिबिधिकीनिपुणताअवलोकिपुरशोभासही
बनबागकूपतड़ागसरितासुभगसबसककोकहीं॥*
मंगलबिपुल तोरण पताका केतु गृह गृह सोहहीं॥
बनितापुरुषसुन्दरचतुरछबिदेखिमुनिमनमोहहीं ८
दो॰ जगदम्बा जहँ अवतरी, सो पुर बर्णि न जाइ॥
ऋद्धिसिद्धिसम्पति सकल, नित नूतन अधिकाइ१०४

---

१ हिमाचलके घरको. २ स्त्रियां. ३ नवीन.

नगरनिकट बरात जब आई * पुरशोभा खरभरअधिकाई ॥
करि बनाव सजि बाहन नाना * चले लेन सादर अगवाना ॥
हिय हर्षे सुरसेन निहारी * हरिहिं देखि अतिभये सुखारी
शिवसमाज जब देखन लागे * बिडरि चले बाहन सब भागे
धरि धीरज तहँ रहे सयाने * बालक सब लै जीव पराने ॥
गये भवन पूँछहिंपितु माता * कहहिं बचन भयकंपित गाता॥
कहिय कहा कहि जाइ न बाता * यमकरधार किधौं बरियाता
बर बौरहा बरदअसवारा * [1]व्यालकपालविभूषण क्षारा ॥

छंद॰ तनु[2]क्षार[3] व्यालकपालभूषण नग्नजटिलभयंकरा
सँग भूत प्रेत पिशाचयोगिनि बिकटमुख रजनीचरा
जो जियतरहहिं बरात देखत पुण्यबड़तिनकर सही
देखिहैं सो उमाबिबाह घरघर बातअस लरिकनकही९

दो॰ समुझि महेशसमाज सब, जननिजनक मुसकाहिं
बाल बुझाये बिबिध बिधि, निडर होउडर नाहिं१०५

लै अगवानि बरातहिं आये * दिये सबहिं जनवास सुहाये॥
मेना शुभ आरती सँवारी * संग सुमंगल गावहिं नारी ॥
कंचनथार सोह बर पानी * परिछन चलीं हरहिं हर्षानी॥
बि[4]कटबेष जब रुद्रहिं देषा * अबलनउर भय भयउ बिशेषा
भागि भवन पैठीं अतित्रासा * गये महेश जहां जनवासा ॥
मेनाहृदय भयउ दुख भारी * लीन्ही बोलि गिरीशकुमारी॥
अधिक सनेह गोद बैठारी * श्यामसरोजनयन भरि बारी॥
जेहिंबिधि तुमहिं रूप अस दीन्हा * तेहिं जड बर बाउर कस कीन्हा

---

१ सर्प और मुंड येही हैं गहने जिनके. २ देहमें. ३ भस्म. ४ खराबरूप.

जेंवत बढ़्यो जो अनन्द सो सुख कोटिहू न परै कह्यो
अँचवाइ दीन्हे पान गमने बास जहँ जाको रह्यो ॥ १३

दो० बहुरि मुनिन हिमवन्तकहँ, लग्न जनाई आइ ॥
समय बिलोकि बिवाहकर, पठये देव बुलाइ १०९

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे * सबहिं यथोचित आसन दीन्हे ॥
बेदी बेधाविधान सँवारी * सुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥
सिंहासन अतिदिव्य सुहावा * जाइ न वर्णि बिरंचि बनावा ॥
बैठे शिव बिप्रन शिर नाई * हृदय सुमिरि निजप्रभु रघुराई ॥
बहुरि मुनीशन उमा बुलाई * करि शृंगार सखी लै आई ॥
देखत रूप सकल सुर मोहैं * बर्णै छबि अस जग कबि कोहैं
जगदम्बिका जानि भवबामा * सुरन मनहि मन कीन्हप्रणामा
सुन्दरता — मर्याद भवानी * जाइ न कोटिहु बदन बखानी ॥

छंद० कोटिहुबदननहिंबनैबर्णतजगजननिशोभा महा
सकुचहिंकहतश्रुतिशेषनारदमंदमतितुलसीकहा ॥
छबिखानिमातुभवानिगवनीमध्यमंडपशिवजहाँ ॥
अवलोकिसकहिंनसकुचिपतिपदकमलमनमधुकरतहाँ

दो० मुनिअनुशासन गणपतिहिं, पूजे शंभु भवानि ॥
कोउसुनिसंशयकरैजनि, सुरअनादिजियजानि ११०

जस बिबाहकी बिधि श्रुति गाई * महामुनिन सो सब करवाई ॥
गहि गिरीश कुश कन्या पानी * शिवहि समर्पी जानि भवानी ॥
पाणिग्रहण जब कीन्ह महेशा * हिय हर्षे तब सकल सुरेशा ॥
बेदमंत्र मुनिवर उच्चरहीं * जय जय जय शंकर सुर करहीं ॥
बाजहिं बाजन बिबिध बिधाना * सुमनवृष्टि नभ भै बिधि नाना

१ सुंदर. २ ब्रह्मा. ३ देवतावोंने. ४ बहुत. ५ विवाह.

हरगिरिजाकर भयउ बिबाहू * सकलभुवन भरि रहा उछाहू॥
दासी दास तुरग रथ नागा * धेनु बसन मणि बस्तुबिभागा॥
अन्न कनक भाजन भरि याना * दायज दीन्ह न जाइ बखाना॥

छंद—दायजदियोबहुभांतिपुनिकरजोरिहिमभूधरकह्यो।
का देउँ पूरणकाम शंकरचरणपंकज गहि रह्यो॥
शिवकृपासागरश्वशुरकरपरितोषसबभांतिन कियो।
पुनि गहेउ पदपाथोज मेना प्रेमपरिपूरणहियो १५

दो०नाथ उमा मम प्राणसम, गृहकिंकरी करेहु॥
क्षमेहु सकल अपराध अब, होइ प्रसन्न बर देहु १११

बहुविधि शंभु सासु समुझाई * गवनी भवन चरण शिर नाई॥
जननी उमा बोलि तब लीन्ही * लै उछंग सुन्दर शिख दीन्ही॥
करेहु सदा शंकर-पद-पूजा * नारिधर्म पतिदेव न दूजा॥
वचन कहति भरि लोचन बारी * बहुरि लाइ उर लीन्ह कुमारी॥
कत विधि सृजी नारि जगमाहीं * पराधीन सपनेहु सुख नाहीं॥
भै अति-प्रेमबिकल महतारी * धीरज कीन्ह कुसमय बिचारी॥
पुनि२ मिलति परति गहि चरणा * परमप्रेम कछु जाइ न बरणा॥
सब नारिन मिलि भेंटि भवानी * जाइ जननिउर पुनि लपटानी॥

छंद—जननिहिंबहुरिमिलिचलीउचितअशीशसबकाहूँदई।
फिरिफिरिबिलोकतिमातुतनतबसखीलैशिवपहँगई।
याचक²सकल सन्तोषि शंकरउमासह भवनहिंचले।
सबअमरहर्षे सुमन बर्षिनिशान³नभ⁴बाजहिं भले १६।

दो०चले संग हिमवन्त तब, पहुँचावन अतिहेतु॥
बिबिधभांतिपरितोषकरि, बिदाकीन्हवृषकेतु ११२॥

१ घरकी दासी. २ मांगनेवाले. ३ बाजा. ४ आकाशमें. ५ पर्वत.

तुरत भवन आये गिरिराई * सकल शैल सर लिये बुलाई
आदर दान विनय बहु माना * सबकर बिदा कीन्ह हिमवाना
जबहिं शम्भु कैलासहिं आये *सुर सब निज निज धामसिधाये
जगतमातुपितु शम्भु भवानी * तेहि शृंगार न कहौं बखानी ॥
करहिंबिबिधबिधिभोगबिलासा * गणनसमेत बसहिं कैलासा ॥
हरगिरिजाबिहार नित नयऊ *इहिबिधिबिपुलकालचलिगयऊ
तब जन्मे षड्वदन कुमारा * तारक असुर समर जिन मारा
आगम[1] निगम[2] प्रसिद्ध पुराना * षण्मुख[3]-जन्मकर्म जग जाना

छं० जग जान षण्मुख जन्म कर्म प्रताप पुरुषारथमहा
तेहिहेतु मैं वृषकेतसुतकर चरित संक्षेपहि कहा॥
यह उमाशम्भुबिबाह जे नरनारि कहहिं जे गावहीं
कल्याणकार्य बिबाह मंगलसर्वदासुखपावहीं॥१७॥

दो० चरितसिंधु गिरिजारमण,वेद न पावहिं पार॥
बर्णै तुलसीदास किमि, अतिमतिमन्द गँवार ११३

शम्भुचरित सुनि सहजसुहावा * भरद्वाज मुनि अतिसुख पावा
बहु लालसा कथापर बाढ़ी * नयन नीर रोमावलि ठाढ़ी ॥
प्रेमबिबश मुख आव न बानी * दशा देखि हर्ष मुनि ज्ञानी ॥
अहो धन्य तव जन्म मुनीशा * तुमहिं प्राणसम प्रिय गौरीशा
शिवपदकमल जिनहिं रति नाहीं * रामहिं ते सपनेहु न सुहाहीं॥
बिनुछल बिश्वनाथ-पदनेहू * रामभक्तकर लक्षण येहू ॥
शिवसम को रघुपतिव्रतधारी *बिनु अघ[4] तजी सती असिनारी
प्रण करि रघुपतिभक्ति दृढ़ाई * को शिवसम रामहिं प्रिय भाई

दो० प्रथम कहेउँ मैं शिवचरित बूझा मर्मतुम्हार

१ शास्त्र. २ वेद. ३ स्वामिकार्तिकेयका. ४ पाप. ५ पार्वतीजी.

शुचि सेवक तुम रामके, रहित समस्त बिकार ११४

मैं जाना तुम्हार गुण शीला * कहौं सुनहु अब रघुपतिलीला
सुनु मुनि आजु समागम तोरे * कहि न जाइ जस सुख मन मोरे
रामचरित अतिअमित मुनीशा * कहिनसकहिंशतकोटिअहीशा
तदपि यथाश्रुति कहौं बखानी * सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी
शारद दारुनारिसम स्वामी * राम सूत्रधर अन्तर्यामी ॥
जेहिपर कृपा करहिं जन जानी * कबिउरअजिर नचावहिं बानी
प्रणवउँ सोइ कृपालु रघुनाथा * बर्णौं बिशद जासु गुणगाथा
परमरम्य गिरिवर कैलासू * सदा जहाँ शिवउमानिवासू ॥

दो०सिद्ध तपोधन योगिजन, सुरकिन्नरमुनिवृन्द
बसहिं तहाँसुकृतीसकल, सेवहिंशिवसुखकन्द ११५

हरिहरबिमुख धर्मरत नाहीं * ते नर तहाँ न सपनेहुँ जाहीं
तेहि गिरिपर बटबिटप बिशाला * नित नूतन सुन्दर सबकाला
त्रिबिध समीर सुशीतल छाया * शिवविश्रामविटप श्रुति गाया
एकबार तेहितर प्रभु गयऊ * तरु बिलोकि उरअतिसुखभयऊ
निजकर डासि नागरिपुछाला * बैठे सहजहि शम्भु कृपाला ॥
कुन्द– इन्दु– दर– गौरशरीरा * भुज प्रलम्ब परिधनमुनिचीरा
तरुणअरुणअम्बुजसम चरणा * नखद्युति भक्तहृदयतमहरणा ॥
भुजग – भूति भूषण त्रिपुरारी * आनन शरदचन्द्रछबिहारी ॥

दो०जटामुकुटसुरसरितशिर, लोचननलिनबिशाल
नीलकण्ठलावण्यनिधि, सोह बालबिधु भाल ११६

बैठे सोह कामरिपु कैसे * धरे शरीर शान्तरस जैसे ॥
पार्वती भल अवसर जानी * गईं शम्भुपहँ मातु भवानी ॥

---

१ बहुत असंख्य. २ शेष. ३ कठपुतरीके समान.

जानि प्रिया आदर अति कीन्हा * बाम भाग आसन हर दीन्हा॥
बैठी शिवसमीप हर्षाई * पूरबजन्मकथा चित आई॥
पतिहियहेतु अधिक अनुमानी * बिहँसि उमा बोलीं प्रियबानी
कथा जो सकललोकहितकारी * सोइ पूछन चह शैलकुमारी॥
विश्वनाथ मम नाथ पुरारी * त्रिभुवनमहिमा बिदित तुम्हारी
चर अरु अचर नाग नर देवा * सकल कराहिं पदपंकजसेवा॥

दो० प्रभु समर्थ सर्वज्ञ शिव, सकलकलागुणधाम
योगज्ञानबैराग्यनिधि, प्रणतकल्पतरु नाम ११७

जो मोपर प्रसन्न सुखराशी * जानिय सत्य मोहिं निजदासी॥
तौ प्रभु हरहु मोर अज्ञाना * कहि रघुनाथकथा विधि नाना
जासु भवन सुरतरुतर होई * सह कि दरिद्रजनित दुख सोई
शशिभूषण अस हृदय बिचारी * हरहु नाथ मम मतिभ्रम भारी
प्रभु जे मुनि परमारथबादी * कहहिं रामकहँ ब्रह्म अनादी॥
शेष शारदा बेद पुराना * सकल कराहिं रघुपतिगुणगाना॥
तुम पुनि रामनाम दिनराती * सादर जपहु अनंगअराती॥
राम सो अवधनृपतिसुत सोई * की अज अगुण अलखगति कोई

दो० जो नृपतनय तौ ब्रह्म किमि, नारिबिरहमतिभोरि
देखिचरितमहिमासुनत, भ्रमतिबुद्धिअतिमोरि ११८

जो अनीह व्यापक बिभु कोऊ * कहहु बुझाइ नाथ मोहिं सोऊ॥
अज्ञ जानि रिस जनि उर धरहू * जेहिबिधि मोह मिटै सोइ करहू
मैं बन दीख रामप्रभुताई * अतिभयबिकल न तुमहिं सुनाई
तदपि मलिन मन बोध न आवा * सो फल भलीभांति हम पावा
अजहूं कछु संशय मन मोरे * करहु कृपा बिनऊँ कर जोरे॥

१ भक्तको कल्पवृक्ष. २ कल्पवृक्षके नीचे. ३ कामदेवके शत्रु शंकर.

प्रभु तब मोहिं बहुभांति प्रबोधा* नाथसोसमुझिकरहुजीन क्रोधा
तबकर अस बिमोह मोहिं नाहीं*रामकथापर रुचि मनमाहीं ॥
कहहु पुनीत रामगुणगाथा * भुजगराजभूषण सुरनाथा ॥

दो०बंदौं पद धरि धरणि शिर बिनयकरौंकरजोरि
बर्णहुरघुबर विशदयश, श्रुतिसिद्धांतनिचोरि१ ११९

यदपि योषिता अनअधिकारी * दासी मन क्रम बचन तुम्हारी॥
गूढौ तत्व न साधु दुरावहिं * आरत आधिकारी जहँ पावहिं ॥
अतिआरत पूछौं सुरराया * रघुपतिकथा कहहु करि दाया॥
प्रथम सो कारण कहहु बिचारी*निर्गुण ब्रह्म सगुणबपुधारी ॥
पुनि प्रभु कहहु रामअवतारा * बालचरित पुनि कहहु उदारा॥
कहहु यथा जानकीबिबाहा * राज तज्यो सो दूषण काहा॥
बन बसि कान्हेउ चरित अपारा* कहहु नाथ जिमि रावण मारा
राज बैठि कीन्ही बहु लीला * सकल कहहु शंकर सुखशीला

दो०बहुरि कहहु करुणायतन, कीन्हजोअचरजराम
प्रजासहितरघुबंशमणि किमिगवनेनिजधाम १२०

पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी * जेहि बिज्ञानमग्न मुनि ज्ञानी
भक्ति ज्ञान बिज्ञान बिरागा * पुनि सब बर्णहु सहितबिभागा ॥
औरौ रामरहस्य अनेका * कहहु नाथ अतिविमल बिवेका
जो प्रभु मैं पूँछा नहिं होई * सोउ दयालु राखहु जनि गोई ॥
तुम त्रिभुवनगुरु बेद बखाना* आन जीव पामर का जाना ॥
प्रश्न उमाके सहजसुहाये * छलविहीन सुनि शिवमन भाये ॥
हरहिय रामचरित सब आये* प्रेम पुलकि लोचन जल छाये ॥
श्रीरघुनाथरूप उर आवा * परमानन्द अमित सुख पावा ॥

---

१ वासुकी तक्षक हैं दगीने जिनके. २ निर्मल, ३ अधीकार नहीं. ४ ज्ञान.

दो०-मग्न ध्यानरस दण्डयुग, पुनिमनबाहिर कीन्ह
रघुपतिचरित महेश तब, हर्षित बर्णै लीन्ह १२१

झूँठौ सत्य जाहि बिनु जाने * जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने॥
जेहि जाने जग जाइ हेराई * जागे यथा सपनभ्रम जाई ॥
बंदौं बालरूप सोइ रामू * सबबिधि सुलभ जपत जस नामू
मंगल – भवन अमंगलहारी * द्रवौ सो दशरथ[२]अजिरबिहारी ॥
करि प्रणाम रामहिं त्रिपुरारी * हर्षि सुधासम गिरा उचारी॥
धन्य धन्य गिरिराजकुमारी * तुमसमान नहिं कोउ उपकारी॥
पूँछेहु रघुपति– कथाप्रसंगा * सकललोकपावन जस गंगा ॥
तुम रघुबीरचरण– अनुरागा *कीन्हेउ प्रश्न जगतहितलागी ॥

दो०-रामकृपाते पार्बती, सपनेहुँ तव मनमाहिं ॥
शोक मोह संदेह भ्रम, मम बिचार कछु नाहिं १२२

तदपि अशंका कीन्हेउ सोई * कहत सुनत सबकर हित होई॥
जिन हरिकथा सुनी नहिं काना * श्रवणरन्ध्र[३] अहिभवनसमाना ॥
नयनन्ह सन्तदरश नहिं देखा * लोचन मोरपंखकर लेखा ॥
ते शिर कटुतूमरसम तूला * जे न नमत हरिगुरुपदमूला ॥
जिन हरिभक्तिहृदय नहिं आनी * जीवत शवसमान ते प्रानी ॥
जे नहिं कहहिं रामगुणगाना * जीह सो दादुरजीहसमाना ॥
कुलिशकठोर निठुर सोइछाती *सुनि हरिचरित न जो हर्षाती॥
गिरिजा सुनहु रामकै लीला * सुरहित दनुजबिमोहनशीला॥

दो०-रामकथा सुरधेनुसम, सेवत सबसुखदानि॥
सतसभा सुरलोकसम, को न सुनै अस जानि १२३

१ दोघड़ी. २ दशरथके घरमें बिहार करनेवाले. ३ कानोंके छिद्र.

रामकथा सुन्दर करतारी * संशय-बिहग- उड़ावनहारी ॥[1]
रामकथा कलि-बिटप-कुठारी*सादर सुनु गिरिराजकुमारी[2]
रामनाम गुण चरित सुराये* जन्मकर्म अगणित श्रुति गाये ॥
यथा अनन्त राम भगवाना * तथा कथा कीरति गुण नाना
तदपि यथाश्रुति जस मति मोरी*कहिहौं देखि प्रीति अति तोरी
उमा प्रश्न तव सहजसुहावा * सुखद सन्तसम्मत मुहिं भावा
एकबात नहिं मोहिं सुहानी * यदपि मोहबश कहेउ भवानी ॥
तुम जो कहा राम कोउ आना* जेहिश्रुतिगाव धरहिंमुनिध्याना

दो०कहहिंसुनहिंअसअधमनर, ग्रसेजेमोहपिशाच
पाखण्डीहरिपदबिमुख, जानहिं झूठ न साच १२४

अज्ञ अकोबिद अन्ध अभागी * काई विषय मुकुर मन लागी ॥
लम्पट कपटी कुटिल बिशेखी*सपने सन्तसभा नहिं देखी ॥
कहहि ते बेदअसम्मत बानी * जिनहिं न सूझ लाभ नहिं हानी
मुकुर मलिन अरु नयनबिहीना रामरूप देखहिं किमि दीना ॥
जिनके अगुण न सगुण बिबेका*जल्पहिं कल्पित बचन अनेका॥
रहि मायाबश जगत भ्रमाहीं *तिनहिं कहत कछु अघटित नाहीं
बातुल भूत बिबश मतवारे * ते नहिं बोलहिं बचन सँभारे ॥
जिन कृत माहमोहमदपाना * तिनकर कहा करिय नहिं काना

सो०असनिजहृदयबिचारि,तजिसंशयभज रामपद,
सुनु गिरिराजकुमारि, भ्रमतमरविकरबचनमम १६

सगुणहिं अगुणहिं नहिं कछु भेदा*गावहिं मुनि पुराण बुध बेदा॥
अगुण अरूप अलख अज जोई* भक्तप्रेमबश सगुण सो होई ॥

---

१ संशयरूप पक्षीकें उड़ानेवाली. २ कलियुगरूप वृक्षको काटनेमें कुल्हाड़ीरूप.

जो गुणरहित सगुण सो कैसे * जल हिमउपलबिलग नहिं जैसे॥
जासु नाम भ्रमतिमिरपतंगा *तेहि किमि कहियबिमोहप्रसंगा ॥
राम सच्चिदानन्द दिनेशा * नहिं तहँ मोहनिशालवलेशा॥
सहज-प्रकाशरूप भगवाना * नहिं तहँ पुनि विज्ञानबिहाना ॥
हर्ष बिषाद ज्ञान अज्ञाना * जीवधर्म अहमिति अभिमाना ॥
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना* परमानन्द परेश पुराना ॥

दो०पुरुष प्रसिद्ध प्रकाशनिधि, प्रगट परावरनाथ
रघुकुलमणिममस्वामिसोइ,कहिशिवनायउमाथ

निजभ्रम नहिं समझहिं अज्ञानी*प्रभुपर मोह धरहिं जड प्राणी॥
यथा गगन घनपटलनिहारी *झम्पेउ भानु कहहिं कुबिचारी॥
चितवत लोचन अंगुलि लाये*प्रगट युगुल शशि तेहिके भाये ॥
उमा रामविषयक अस मोहा*नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा
बिषयकरण सुर जीवसमेता * सकल एकते एक सचेता ॥
सबकर परमप्रकाशक जोई * राम अनादि अवधपति सोई॥
जगतप्रकाश्य प्रकाशक रामू * मायाधीश ज्ञानगुणधामू ॥
जासु सत्यताते जड माया * भास सत्यइव मोहसहाया ॥

दो०रजतसीपमहँभासजिमि, यथाभानुकरबारि॥
यदपिमृषातिहुँकालसोइ, भ्रमनसकैकोउटारि१२६

यहिबिधि जगहारिआश्रित रहई*यदपि असत्य देत दुख अहई॥
ज्यों स्वप्ने शिर काटै कोई * बिन जागे दुख दूरि न होई ॥
जासु कृपा अस भ्रम मिटि जाई * गिरिजा सोइ कृपालु रघुराई ॥
आदि अन्त कोउ जासु न पावा * मतिअनुमान निगम अस गावा॥

---

१ हिमका पत्थर (बर्फ), २ मोहरूप अन्धकारको सूर्य. ३ दो.

बिनु पद चलै सुनै बिनु काना * कर बिनु कर्म करै बिधि नाना
आननरहित सकलरसभोगी * बिनु बाणी बक्ता बड़ योगी ॥
तनुबिनु परस नयनबिनु देषा * ग्रहै घ्राणबिनु बास अशेषा ॥
अस सबभांति अलौकिक करणी * महिमा जासु जाय नहिं बरणी

दो० जेहिंइमिगावहिंबेदबुध, जाहिंधरहिंमुनिध्यान॥
सोइदशरथसुतभक्तहित, कोशलपतिभगवान १२७

काशी मरत जन्तु अवलोकी * जासु नामबल करौं बिशोकी॥
सोइ प्रभु मोर चराचरस्वामी * रघुबर सबउरअन्तर्यामी ॥
बिवशहु जासु नाम नर कहहीं * जन्मअनेकसंचित[2] अघदहहीं ॥
सादर सुमिरण जो नर करहीं * भववारिधि गोपद इव तरहीं ॥
राम सो परमातमा भवानी * तहँ भ्रम अतिअबिहित तव बानी
अस संशय आनत उरमाहीं * ज्ञान बिराग सकल गुण जाहीं ॥
सुनि शिवके भ्रमभंजन बचना * मिटि गइ सब कुतर्ककी रचना
भइ रघुपति-पद-प्रीति-प्रतीती * दारुण असम्भावना बीती ॥

दो० पुनिपुनि प्रभुपदकमलगाहि, जोरिपंकरुह[3]पानि
बोलीं गिरिजा बचनकर, मनहुं प्रेमरससानि १२८

शशिकरसम सुनि गिरा तुम्हारी * मिटा मोहशरदातप भारी ॥
तुम कृपालु सब संशय हरेऊ * रामस्वरूप जानि मोहिं परेऊ॥
नाथकृपा अब गयउ विषादा * सुखी भइउँ प्रभुचरणप्रसादा ॥
अब मोहिं आपनि किंकरि जानी * यदपि सहजजड़ नारि अयानी
प्रथम जो मैं पूँछा सो कहहू * जो मोपर प्रसन्न प्रभु अहहू ॥
राम ब्रह्म चिन्मय अविनाशी * सर्वरहित सबउरपुरबासी ॥

---

१ गंध. २ अनेकजन्मके जोरे. ३ हस्तकमल.

नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू * मोहिं समुझाइ कहहु वृषकेतू॥
उमावचन सुनि परमविनीता * रामकथापर प्रीति पुनीता ॥

दो०हिय हर्षे कामारि तब, शंकर सहजसुजान ॥
बहुविधिउमाहिं प्रशंसिपुनि, बोलेकृपानिधान १२९

सो०सुनुशुभकथाभवानि,रामचरितमानसबिमल
कहा भुशुंडि बखानि, सुना बिहगनायक गरुड १७
सोइ सम्बाद उदार, जेहिबिधि भा आगे कहब ॥
सुनहु रामअवतार, चरित परमसुन्दर अनघ १८
हरिगुणनाम अपार, कथा रूप अगणित अमित ॥
मैं निजमतिअनुसार, कहौं उमा सादर सुनहु १९

सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाये* बिपुल बिशद निगमागमगाये॥
हरिअवतार हेतु जेहि होई * इदमित्थं कहि जाइ न सोई ॥
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी * मत हमार अस सुनहु भवानी
तदपि सन्त मुनि बेद पुराना*जस कछु कहहिं स्वमतिअनुमाना
तस मैं सुमुखि सुनावउँ तोहीं* समुझि परै जस कारण मोहीं ॥
जब जब होइ धर्मकी हानी * बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी
करहिं अनीति जाइ नहिं बरणी* सीदहिं विप्र धेनु सुर धरणी ॥
तब तब प्रभु धरि बिविधशरीरा* हरहिं कृपानिधि सज्जनपीरा ॥

दो०असुरमारिथापहिंसुरन्हि,राखहिंनिजश्रुतिसेतु
जग बिस्तारहिं बिशद यश, रामजन्मकर हेतु१३०

सोइ यश गाइ भक्त भव तरहीं* कृपासिन्धु जनहित तनु धरहीं॥
रामजन्मके हेतु अनेका * परमविचित्र एकते एका ॥

---

१ शिवजी. २ सराहि. ३ इसतरहका है ऐसा. ४ क्लेशको पाते हैं.

जन्म एक दुइ कहौं बखानी * सावधान सुनु सुमति भवानी॥
द्वारपाल हरिके प्रिय दोऊ * जय अरु विजय जान सबकोऊ
बिप्र-शापते दोनौ भाई * तामस असुरदेह तिन पाई ॥
कनककशिपु अरु हाटकलोचन[१]* जगतविदितसुरपतिमदमोचन[२]॥
बिजयी समरबीर विख्याता * धरि बराहबपु एक निपाता ॥
होइ नरहरिबपु[३] दूसर मारा * जन प्रह्लादसुयश बिस्तारा ॥

दो०भये निशाचर जाइ ते, महाबीर बलवान ॥
कुम्भकर्ण रावण सुभट, सुरबिजयी जग जान१३१

मुक्त न भये हते भगवाना * तीन जन्म द्विजबचनप्रमाना॥
एकबार तिनके हितलागी * धरेउ शरीर भक्तअनुरागी ॥
कश्यप-अदिति तहाँ पितुमाता* दशरथ कौशल्या विख्याता॥
एक कल्प इहिविधि अवतारा * चरित पवित्र किये संसारा ॥
एक कल्प सुर देखि दुखारे * समर जलन्धरसन सब हारे ॥
शम्भु कीन्ह संग्राम अपारा * दनुज महाबल मरै न मारा ॥
परम सती असुराधिपनारी * तेहि बल ताहि न जीत पुरारी

दो०छलकर टारेउतासुव्रत, प्रभु सुरकारज कीन्ह
जब तेहिं जानेउ मर्म तब, शापकोपकर दीन्ह १३२॥

तासु शाप हरि कीन्ह प्रमाना * कौतुकनिधि कृपालु भगवाना
तहाँ जलन्धर रावण भयऊ * रण हति राम परमपद दयऊ ॥
एकजन्मकर कारण एहा * जेहिलगि राम धरी नरदेहा ॥
प्रतिअवतार कथा प्रभुकेरी * सुनि सुनि बर्णी कबिन घनेरी॥
नारद शाप दीन्ह यकबारा * कल्प एक तेहिलगि अवतारा

१ हिरण्याक्ष. २ इन्द्रका गर्व दूर करनेवाले. ३ नृसिंहशरीर.

गिरिजा चकित भई सुनि बानी * नारद विष्णुभक्त मुनि ज्ञानी
कारण कवन शाप मुनि दीन्हा * का अपराध रमापति कीन्हा
यह प्रसंग मोहिं कहहु पुरारी * मुनिमन मोह सो अचरजभारी

**दो०बोले विहँसि महेश तब, ज्ञानी मूढ़ न कोइ॥
जेहिजसरघुपतिकराहिंजब,सोतसतेहिक्षणहोइ१३३**

**सो०कहौं रामगुणगाथ, भरद्वाज सादर सुनहु॥
भवभंजन रघुनाथ, भजु तुलसी तजि मानमद २०**

हिमगिरिगुहा एक अतिपावनि * बह समीप सुरसरित[1] सुहावनि
आश्रम परमपुनीत सुहावा * देखि देवऋषिमन अतिभावा
निरखि शैलसरि बिपिनबिभागा * भयउ रमापतिपदअनुरागा॥
सुमिरत हरिहिं श्वासगति बाँधी * सहजविमलमन लागि समाधी
मुनिगति देखि सुरेश डराना * कामहिं बोलि कीन्ह सन्माना
सहित सहाय जाहु मम हेतू * चलेउ हर्षि हिय जलचरकेतू[2]
सुनासीरमनमहँ[3] अतित्रासा * चहत देवऋषि मम पुर बासा॥
जे कामी लोलुप जगमाहीं * कुटिल काक इव सबहिं डेराहीं

**दो०सूख हाड़ ले भाग शठ, श्वान निरखिमृगराज
छीनिलेइजनिजानजड़,तिमिसुरपतिहिं नलाज१३४**

तेहि आश्रमाहिं मदन जब गयऊ * निजमाया बसन्त निर्मयऊ॥
कुसुमित विविध बिटप बहुरंगा * कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा
चली सुहावन त्रिविध बयारी * कामकृशानु–बढ़ावनहारी॥
रम्भादिक सुरनारि नबीना * सकल कुसुमशरकलाप्रवीना
करहिं गान बहु तान तरंगा *बहुबिधि क्रीड़हिं[4] पाणि पतंगा

---

१ गंगा. २ कामदेव. ३ इंद्रके मनमें. ४ शब्द करतेहैं.

देखि सहाय मदन हर्षाना * कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधि नाना
कामकला कछु मुनिहिं न ब्यापी * निजभय डरेउ मनोभव पापी
सीमे कि चापि सकै कोउ तासू * बड़ रखवार रमापति जासू ॥

दो०सहित सहाय सभीत अति, मानिहारिमनमैनं
गहेसि जाइ मुनिबरचरण, कहि सुठि आरतबैन ॥

भयउ न नारदमन कछु रोषा * कहि प्रिय बचन काम परितोषा
नाइ चरण शिर आयसु पाई * गयउ मदन तब सहित सहाई ॥
मुनि सुशीलता आपनि करणी * सुरपतिसभा जाय सब बरणी ॥
सुनि सबके मन अचरज आवा * मुनिहिं प्रशंसि हरिहिं शिर नावा
तब नारद गवने शिवपाहीं * जीति काम अहंमिति मनमाहीं
मारचरित शंकरहिं सुनावा * अतिप्रिय जानि महेश सिखावा
बारबार बिनवउँ मुनि तोहीं * जिमि यह कथा सुनायउ मोहीं
तिमि जनि हरिहिं सुनावहु कबहूँ * चलेहु प्रसंग दुरायहु तबहूँ

दो०शम्भु दीन्ह उपदेश हित, नहिं नारदहिं सुहान
भरद्वाज कौतुक सुनहु, हरिइच्छा बलवान १३६

राम कीन्ह चाहैं सोइ होई * करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥
शम्भुबचन मुनिमनहिं न भाये * तब बिरंचिके लोक सिधाये ॥
एकबार करतल बरबीणा * गावत हरिगुण गानप्रवीणा ॥
क्षीरसिंधु गवने मुनिनाथा * जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा ॥
हर्षि मिले उठि रमानिकेता * बैठे आसन ऋषिहिं समेता ॥
बोले बिहँसि चराचरराया * बहुत दिनहिं कीन्ही मुनि दाया
कामचरित नारद सब भाषे * यद्यपि प्रथम बर्जि शिव राखे ॥

---

१ मर्यादा. २ काम. ३ अहंकार. ४ हाथमें. ५ श्रेष्ठ बीणा. ६ क्षीरसमुद्रमें.

अतिप्रचंड रघुपतिकी माया * जेहि न मोह अस को जग जाया

दो०रूख बदन करि बचन मृदु, बोले श्रीभगवान
तुम्हरे सुमिरणते मिटहिं, मोह मार मद मान ॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताके * ज्ञान बिराग हृदय नहिं जाके
ब्रह्मचर्यव्रत-रत मतिधीरा *तुमहिं कि करै मनोभव पीरा॥
नारद कहेउ सहित अभिमाना * कृपा तुम्हारि सकल भगवाना
करुणानिधि मन दीख विचारी* उर अंकुरेउ गर्बतरु भारी ॥
बेगि सो मैं डारिहौं उपारी * प्रण हमार सेवक-हितकारी॥
मुनिकर हित मम कौतुक होई* अवशि उपाय करब मैं सोई॥
तब नारद हरिपद शिर नाई * चले हृदय अँहमिति अधिकाई
श्रीपति निजमाया तब प्रेरी * सुनहु कठिन करणी तेहिकेरी॥

दो०बिरचेउमगमहँ नगर तेहिं, शतयोजनविस्तार
श्रीनिवासंपुरते अधिक, रचना बिविधप्रकार १३८

बसहिं नगर सुंदर नर नारी * जनु बहु मनसिजरतितनुधारी ॥
तेहिपुर बसै शीलनिधि राजा* अगणित हय गज सेन समाजा॥
शत सुरेशसम विभवविलासा* रूप तेज बल नीति-निवासा ॥
बिश्वमोहिनी तासु कुमारी * श्रीबिमोह जेहि रूप निहारी ॥
सो हरिमाया सबगुणखानी * शोभा तासु कि जाइ बखानी ॥
करै स्वयम्बर सो नृपबाला * आये तहँ अगणित महिपाला ॥
मुनि कौतुकी नगर तेहि गयऊ *पुरबासिनसन बूझत भयऊ ॥
सुनि सब चरित भूपगृह आये * करि पूजा नृप मुनि बैठाये॥

दो०आनि देखाई नारदहिं, भूपति राजकुमारि ॥

---

१ कामदेव. २ अभिमानका वृक्ष. ३ अहंकार. ४ वैंकुंठसे.

कहहु नाथ गुण दोष सब, यहिकर हृदय बिचारि १३९

देखि रूप मुनि बिरति बिसारी * बड़ीबारलगि रहे निहारी ॥
लक्षण तासु बिलोकि भुलाने * हृदय हर्ष नहिं प्रगट बखाने
जो यहि बरै अमर सो होई * समरभूमि तेहि जीत न कोई
सेवहिं सकल चराचर ताही * बरै शीलनिधिकन्या जाही ॥
लक्षण सब बिचारि उर राखे * कछुक बनाइ भूपसन भाखे ॥
सुता सुलक्षणि कहि नृपपाहीं * नारद चले शोच मनमाहीं ॥
करौं जाइ सोइ यत्न बिचारी * जेहि प्रकार मोहिं बरै कुमारी
जप तप कछु न होइ यहि काला * हेबिधि मिलै कवन बिधिबाला

दो०यहि अवसर चाहिय परम, शोभारूप बिशाल
जो बिलोकि रीझै कुँवरि, तब मेलै जयमाल १४०

हरिसन माँगौं सुन्दरताई * होइहि जात गहरु अतिभाई
मोरे हित हरिसम नहिं कोऊ * यहि अवसर सहाय सो होऊ
बहुबिधिबिनयकीन्हतेहिकाला * प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला
प्रभु बिलोकि मुनिनयन जुड़ाने * होइहि काज हिये हर्षाने ॥
अतिआरत कहि कथा सुनाई * करहु कृपा प्रभु होहु सहाई॥
आपन रूप देहु प्रभु मोहीं * आनभांति नहिं पावहुँ ओहीं
जेहिबिधि नाथ होइ हित मोरा * करौ सो बेगि दास मैं तोरा॥
निजमायाबल देखि बिशाला * हिय हँसि बोले दीनदयाला॥

दो०जेहिबिधिहोइहिपरमहित, नारदसुनहुतुम्हार
सोइ हम करब न आन कछु, बचन न मृषा हमार

कुपथ माँग रुजब्याकुल रोगी * वैद्य न देइ सुनहु मुनि योगी

१ ज्ञान. २ श्रेष्ठ. ३ बहुत दुःखी. ४ झूंठा. ५ खराब.

यहिबिधि हित तुम्हार मैं ठयऊ * कहि अस अन्तर्हित प्रभुभयऊ
मायाबिबश भये मुनि मूढा * समुझी नाहिं हरिगिरा निगूढा
गमने तुरत तहाँ ऋषिराई * जहाँ स्वयम्बरभूमि बनाई ॥
निजनिजआसन बैठे राजा * बहु बनाव करि सहित समाजा
मुनिमन हर्ष रूप अति मोरे * मोहिं तजिआन बरिहिनहिंभोरे
मुनिहितकारण कृपानिधाना * दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना
सो चरित्र लखि काहु न पावा * नारद जानि सबहिं शिर नावा

दो०रहे तहां दुइ रुद्रगण, ते जानहिं सब भेउ ॥
बिप्रबेष देखत फिरहिं, परमकौतुकीतेउ ॥१४२॥

जेहि समाज बैठे मुनि जाई * हृदय रूप अहमिति अधिकाई
तहँ बैठे महेशगण दोऊ * बिप्रबेष गति लखै न कोऊ॥
करहिं कूट नारदहिं सुनाई * नीकि दीन्ह हरि सुन्दरताई॥
रीझिहि राजकुँवरि छवि देखी * इनहिं बरहिं हरि जानि बिशेषी
मुनिहिं मोह मन हाथ पराये * हँसहिं शम्भुगण अतिसचुपाये
यदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी * समुझि न परै बुद्धि भ्रमसानी
काहु न लखा सो चरित बिशेषी * सो स्वरूप नृपकन्या देखी ॥
मर्कटबदन भयंकर देही * देखत हृदय क्रोध भा तेही॥

दो०सखीसंग लै कुँवरि तब, चलि जनु राजमराल
देखत फिरै महीप सब, करसरोज जयमाल १४३

जेहि दिशि बैठे नारद फूली * सो दिशि तेहिं न बिलोकेउभूली
पुनि२मुनि उकसहिं अकुलाहीं * देखि दशा हरगण मुसुकाहीं॥
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला * कुँवरि हर्षि मेली जयमाला

---

१ ब्राह्मणरूप. २ बानरमुख. ३ राजहंस. ४हस्तकमल. ५ राजाका रूप.

दुलहिनि लैगये लक्ष्मिनिबासा *नृपसमाज सब भयउ निराशा ॥
मुनि अतिबिकल मोहमति नाठी*मणि गिरिगई छूटि जनु गाँठी ॥
तब हरगण बोले मुसकाई * निजमुख मुकुर¹ बिलोकहु जाई
अस कहि दोउ भागे भयभारी* वदन दीख मुनि वारि² निहारी
बेष बिलोकि क्रोध अतिबाढ़ा * तिनहिं शाप दीन्हा अतिगाढ़ा

दो० होहु निशाचर जाय तुम,कपटी पापी दोउ ॥
हँसेउ हमहिं सो लेहु फल,बहुरि हँसेहु मुनि कोउ

पुनि जल दीख रूप निज पावा * तदपि हृदय संतोष न आवा॥
फरकत अधर³ कोप मनमाहीं * तदपि चले कमलापतिपाहीं ॥
देहौं शाप कि मरिहौं जाई * जगत मोर उपहास कराई ॥
बीचहि पन्थ मिले दनुजारी * संग रमा सोइ राजकुमारी ॥
बोले मधुर बचन सुरसाई * मुनि कहँ चले बिकलकी नाईं
सुनत बचन उपजा अतिक्रोधा*मायाबश न रहा मन बोधा ॥
परसम्पदा सकहु नहिं देखी * तुम्हरे ईर्षा कपट बिशेखी ॥
मथत सिन्धु रुद्रहि बौरायहु * सुरन प्रेरि बिषपान करायहु ॥

दो० असुर सुरा⁴ विष शंकरहिं,आपु रमा⁵ मणि चारु
स्वारथसाधक कुटिल तुम,सदाकपटव्यवहारु१४५

परम स्वतंत्र न शिरपर कोई * भावै मनहिं करहु तुम सोई ।
भलेहिं मन्द मन्दहिं भलकरहू * बिस्मय हर्ष न हिय कछु धरहू
डहकि डहकि परचेउ सबकाहू* अतिअशंक मन सदा उछाहू॥
कर्म शुभाशुभ तुमहि न बाधा * अबलगि तुमहिं न काहू साधा
भले भवन अब बायन दीन्हा * पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥

१ सीसामें. २ जलमें, ३ ओष्ठ. ४ असुरनको मदिरा. ५ लक्ष्मी.

बंचेहु[1] मोहिं जवन धरि देहा * सोइ तनु धरहु शाप मम एहा
कपिआकृति[2] तुम कीन्ह हमारी * करिहहिं कीश सहाय तुम्हारी
मम अपकार कीन्ह तुम भारी * नारिबिरह तुम होब दुखारी॥

दो॰ शाप शीस धरि हर्षि हिय, प्रभु सुरकारज कीन्ह
निजमायाकी प्रबलता, कर्षि[3] कृपानिधि लीन्ह १४६

जब हरि माया दूरि निबारी * नहिं तहँ रमा न राजकुमारी॥
तबमुनिअतिसभीतहरिचरणा * गहे पाहि प्रणतारतिहरणा॥
मृषा होहु मम शाप कृपाला * मम इच्छा कह दीनदयाला॥
मैं दुर्बचन कहेउँ बहुतेरे * कह मुनि पाप मिटहिं किमि मेरे
जपहु जाइ शंकर शतनामा * होइहि हृदय तुरत बिश्रामा॥
कोउ नहिं शिवसमान प्रिय मोरे * अस प्रतीति त्यागहु जनि भोरे॥
जेहिपर कृपा न करहिं पुरारी * सो न पाव मुनि भक्ति हमारी
अस उर धरि महि बिचरहु जाई * अब न तुमहिं माया नियराई॥

दो॰ बहुबिधि मुनिहिं प्रबोधि प्रभु, तब भये अंतर्ध्यान
सत्यलोक नारद चले, करत रामगुणगान १४७

हरगण मुनिहिं जात पँथ देषी[4] * बिगतमोह मन हर्ष बिशेषी॥
अतिसभीत नारदपहँ आये * गहि पद आरत बचन सुनाये॥
हरगण हम न बिप्र मुनिराया * बड़ अपराध कीन्ह फल पाया
शाप-अनुग्रह करहु कृपाला * बोले नारद दीनदयाला॥
निशिचर[5] जाइ होउ तुम दोऊ * वैभव[6] विपुल तेज बल होऊ॥
भुजबल विश्व जितब तुम जहियाँ * धरि हैं विष्णु मनुजतनु[7] तहियाँ
समरमरण हरिहाथ तुम्हारा * होइहहु मुक्त न पुनि संसारा॥

---

१ छलेहु. २ बानररूप. ३ खेंचि. ४ रस्तामें. ५ राक्षस. ६ ऐश्वर्य ७ मनुष्यअवतार.

चले युगल मुनिपद शिर नाई * भये निशाचर कालहिं पाई ॥
दो०एक कलप यहि हेतु प्रभु, लीन्ह मनुज अवतार
सुररंजन सज्जनसुखद, हरि भंजन भूभार ॥१४८॥
यहिबिधि जन्म कर्म हरिकेरे * सुन्दर सुखद बिचित्र घेनेरे
कल्पकल्पप्रति प्रभु अवतरहीं * चारु चरित नानाबिधि करहीं
तब तब कथा मुनीशन गाई * परम बिचित्र प्रबन्ध बनाई॥
बिबिध प्रसंग अनूप बखाने * करहिं न सुनि आश्चर्य सयाने
हरि अनंत हरिकथा अनन्ता *कहहिंसुनहिंबहुबिधिश्रुतिसन्ता
रामचंद्रके चरित सुहाये * कल्प कोटिलगि जाहिं न गाये
यह प्रसंग मैं कहा भवानी * हरिमाया मोहहिं मुनि ज्ञानी
प्रभु कौतुकी प्रणत-हितकारी * सेवत सुलभ सकलदुखहारी॥
सो०सुरनरमुनिकोउनाहिं, जेहिनमोहमायाप्रबल
अस विचारिमनमाहिं, भजियमहामायापतिहिं२१
अपर हेतु सुनु शैलकुमारी * कहौं बिचित्र कथा बिस्तारी
जेहि कारण अज अगुण अनूपा * ब्रह्म भये कोशलपुरभूपा ॥
जो प्रभु बिपिन फिरत हम देषा * बन्धुसमेत किये मुनिवेषा ॥
जासु चरित अवलोकि भवानी * सतीशरीर रहिउ बौरानी ॥
अजहुँ न छाया मिटी तुम्हारी * तासु चरितसुनुभ्रम रुज-हारी
लीला कीन्ह जो तेहि अवतारा * सो सब कहिहौं मतिअनुसारा
भरद्वाज सुनि शंकरबानी * सकुचि सप्रेम उमा मुसकानी
लगे बहुरि बर्णै वृषकेतू * सो अवतार भयउ जेहि हेतू
दो०सो मैं तुमसन कहौं सब, सुनु मुनीश मन लाइ॥

१ दोनो. २ बहुत. ३ अच्छे. ४ जन्मरहित. ५ उपमारहित.

रामकथा कलिमलहरणि, मङ्गलकरणि सुहाइ ४९

स्वायम्भुव मनु अरु शतरूपा * जिनते भै नरसृष्टि अनूपा ॥
दम्पति धर्मआचरण नीका * अजहुँ गाव श्रुति जिनकी लीका
नृप उत्तानपाद सुत तासू * ध्रुव हरिभक्त भये सुत जासू
लघुसुत नाम प्रियव्रत जाही * वेद पुराण प्रशंसत ताही ॥
देवहूति पुनि तासु कुमारी * जो मुनि कर्दमकी प्रिय नारी
आदिदेव प्रभु दीनदयाला * जठर धरेउ जेहिं कपिलकृपाला
सांख्यशास्त्र जिन प्रगट बखाना * तत्वविचारनिपुण भगवाना ॥
तेहिं मनु राज कीन्ह बहुकाला * प्रभुआयसु बहुविधि प्रतिपाला

सो०होइनबिषयबिराग, भवनबसतभाचौथपन ॥
हृदयबहुतदुखलाग, जन्मगयउ हरिभक्तिबिन २२

बरबश राज्य सुतहिं तब दीन्हा * नारिसमेत गमन बन कीन्हा॥
तीरथबर नैमिष बिख्याता * अतिपुनीत साधकसिधिदाता
बसहिं जहाँ मुनिसिद्धसमाजा * तहँ हिय हर्षि चले मनु राजा
पन्थ जात सोहहिं मतिधीरा * ज्ञान भक्ति जनु धरे शरीरा॥
पहुँचे जाइ धेनुमतितीरा[२] * हर्षि नहाने निर्मल नीरा ॥
आये मिलन सिद्ध मुनि ज्ञानी * धर्मधुरन्धर नृप ऋषि जानी॥
जहँ तहँ तीरथ रहे सुहाये * मुनिन सकल सादर करवाये॥
कृशशरीर मुनिपट[३] परिधाना * सन्तसभा नित सुनहिं पुराना॥

दो०द्वादशअक्षरमंत्र बर, जपहिं सहित अनुराग॥
वासुदेवपदपंकरुह, दम्पतिमन अति लाग १५०

करहिं अहार शाक फल कन्दा * सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा ॥

१ स्त्रीपुरुषोंके. २ गोमती नदीके तीरपर. ३ ऋषिवस्त्र.

पुनि हरिहेतु करन तप लागे * बारिअहार मूल फल त्यागे ॥
उर अभिलाष निरंतर होई * देखिय नयन परमप्रिय सोई ॥
अगुण अखण्ड अनन्त अनादी * जेहि चितहि परमारथबादी ॥
नेति नेति जेहि वेद निरूपा * चिदानंद निरुपाधि अनूपा ॥
शम्भु विरंचि विष्णु भगवाना * उपजहिं जासु अंशते नाना ॥
ऐसे प्रभु सेवकबश अहहीं * भक्तहेतु लीलातनु गहहीं ॥
जो यह बचन सत्य श्रुतिभाषा * तौ हमार पूजहि अभिलाषा ॥

दो०यहिबिधि बीते वर्षषट, सहस[२] बारिआहार ॥
सम्बत सप्तसहस्र पुनि, रहे समीर[३]अधार ॥१५१॥

बर्ष सहसदश त्यागेउ सोऊ * ठाढ़े रहे एकपद दोऊ ॥
बिधि हरि हर तप देखि अपारा * मनुसमीप आये बहु बारा ॥
माँगहु बर बहुभांति लुभाये * परमधीर नहिं चलहिं चलाये ॥
अँस्थिमात्र होय रह्यो शरीरा * तदपि मनागपि नहिं मनपीरा ॥
प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी * गति अनन्य तापस नृपरानी ॥
माँगु माँगु बर भै नभवानी * परम-गभीर कृपामृत-सानी ॥
मृतकजिआवनि गिरा सुहाई * श्रवणरन्ध्र होय उर जब आई ॥
हृष्ट पुष्ट तनु भयउ सुहाये * मानहुँ अबहिं भवनते आये ॥

दो०श्रवणसुधासमबचनसुनि, पुलकप्रफुल्लितगात
बोले मनु करि दण्डवत, प्रेम न हृदय समात १५२

सुनु सेवक-सुरतरुसुर-धेनू * बिधि-हरि-हरबन्दित पदरेनू ॥
सेवत सुलभ सकलसुखदायक * प्रणतपाल सचराचरनायक ॥
जो अनाथहित हमपर नेहू * तौ प्रसन्न होय यह बर देहू ॥

---

१ जलही आहार. २ हजार. ३ पवनके आधारसे. ४ केवल हाड़.

जो स्वरूप[१] बस शिवमनमाहीं * जेहिकारण मुनि यत्न कराहीं॥
जो भुशुंडि--मनमानस--हंसा * सगुण अगुण जेहि निगम प्रशंसा
देखाहिं हम सो रूप भरिलोचन * कृपा करहु प्रणतारतिमोचन॥
दम्पतिबचन परम प्रिय लागे * मृदुल बिनीत प्रेमरसपागे ॥
भक्तबछल प्रभु कृपानिधाना * विश्ववास प्रगटे भगवाना ॥

दो०नीलसरोरुह नीलमणि, नीलनीरधरश्याम ॥
लाजहिंतनुशोभानिरखि,कोटिकोटिशतकाम१५३

शरदेमयंक-बदन-छबि-सींवा * चारु कपोल-चिबुक दरग्रीवा॥
अधर अरुण रद सुन्दर नासा * बिधुकरनिकरबिनिन्दक हासा
नवअम्बुज-अम्बकछबि नीकी * चितवन ललित भावती जीकी
भ्रुकुटि मनोजचाप-छबिहारी * तिलक ललाटपटलद्युतिकारी
कुण्डलमकर मुकुट शिर भ्राजा * कुटिलकेश जनु मधुपसमाजा
उर श्रीवत्स रुचिर बनमाला * पदिकहार भूषण मणिजाला ॥
केहरिकन्धर चारु जनेऊ * बाहु बिभूषण सुन्दर तेऊ ॥
करिकरसरिस सुभग भुजदण्डा * कटि निषंग कर शर कोदण्डा

दो०तड़ितविनिन्दक पीतपट, उदररेख बर तीनि॥
नाभिमनोहरलेतिजनु, यमुन भँवरछबि छीनि१५४

पदराजीव बर्णि नहिं जाहीं * मुनिमनमधुप बसहिं जेहि माहीं
बामभाग शोभित अनुकूला * आदिशक्ति छबिनिधि जगमूला
जासु अंश उपजहिं गुणखानी * अगणित उमा रमा ब्रह्मानी॥
भ्रुकुटिविलास जासु जग होई * रामबामदिशि सीता सोई ॥
छबिसमुद्र हरिरूप बिलोकी * यकटक रहे नयनपट रोकी॥

---

१ कोमल. २ शरदऋतुके चंद्र समान है मुखकी शोभा जिनके.

चितवहिं सादर रूप अनूपा * तृप्ति न मानहिं मनुशतरूपा ॥
हर्षबिबश तनुदशा भुलानी * परे दण्ड इव गहि पद पानी
शिर परशेउ प्रभु निजकरकंजा * तुरत उठायो करुणापुंजा ॥

दो०-बोले कृपानिधान पुनि, अतिप्रसन्न मोहिं जानि
माँगहुबरजोइभावमन, महादानिअनुमानि १५५

सुनि प्रभुबचन जोरि युग पानी * धरि धीरज बोले मृदु बानी ॥
नाथ देखि पदकमल तुम्हारे * अब पूजे सब काम हमारे ॥
एक लालसा बड़ि मनमाहीं * सुगम अगम कहिजातसो नाहीं
तुमहिं देत अतिसुगम गुसांई *अगम लागि मोहिं निजकृपणाई
यथा दरिद्र बिबुधतरु[२] जाई * बहुसम्पति माँगत सकुचाई ॥
तासु प्रभाव न जानै सोई * तथा हृदय मम संशय होई ॥
सो तुम जानहु अंतर्यामी * पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
सकुच बिहाइ माँगु नृप मोहीं * मोरे नाहिं अदेय कछु तोहीं ॥

दो०-दानिशिरोमणि कृपानिधि,नाथ कहौं सतभाव
चाहौं तुमहिं समानसुत,प्रभुसन कवनदुराव १५६

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले * एवमस्तु[३] करुणानिधि बोले ॥
आपसरिस खोजौं कहँ जाई * नृप तव तनय होब मैं आई
शतरूपहिं बिलोकि कर जोरे * देवि माँगु बर जो रुचि तोरे ॥
जो बर नाथ चतुर नृप माँगा * सोइकृपालुमोहिंअतिप्रियलागा
प्रभु परन्तु सुठि होति ढिठाई * यदपि भक्तिहित तुमहिंसुनाई
तुम ब्रह्मादिजनक[४] जगस्वामी * ब्रह्म सकल-उर-अंतर्यामी ॥
अस समुझत मन संशय होई * कहा जो प्रभुप्रमाण पुनि सोई

---

१ इच्छा. २ कल्पवृक्षके पास. ३ ऐसाही होगा. ४ ब्रह्मादिकोंके पिता.

जो निजभक्त नाथ तव अहई * जो सुख पावहिं जो गतिलहई

दो॰ सोइसुखसोइगतिसोइभगति, सोइनिजचरणसनेहु
सोइबिबेकसोइरहनिप्रभु, मोहिंकृपाकरिदेहु १५७

सुनि मृदु गूढ रुचिर बर रचना * कृपासिन्धु बोले मृदु बचना
जो कछु रुचि तुम्हरे मनमाहीं * मैं सो दीन्ह सब संशय नाहीं
मातु बिबेक अलौकिक तोरे * कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरे
बन्दि चरण मनु कहेउ बहोरी * अवर एक बिनती प्रभुमोरी
सुतविषयक तव पदरति होऊ * मोहिं बरु मूढ कहै किनकोऊ
मणिबिनुफणिजिमिजलबिनमीना * ममजीवनतिमितुमहिंअधीना
अस बर माँगि चरण गहि रहेऊ * एवमस्तु करुणानिधि कहेऊ
अब तुम मम अनुशासन मानी * बसहु जाइ सुरपतिरजधानी॥

सो॰ तहँकरिभोगबिलास, तातगयेकछुकाल पुनि॥
होइहहु अवधभुआल, तब मैं होबतुम्हारसुत २३

इच्छामय नरवेष सँवारे * होइहौं प्रकट निकेत तुम्हारे॥
अंशनसहित देह धरि ताता * करिहौं चरित भक्तसुखदाता॥
जे सुनि सादर नर बड़भागी * भव तरिहहिं ममतामद त्यागी
आदिशक्ति जेहिंजग उपजवाया * सोउअवतरहिंमोरि यहमाया॥
पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा * सत्य सत्य प्रण सत्य हमारा॥
पुनिपुनि असकहिकृपानिधाना * अन्तर्धान भये भगवाना॥
दम्पति उर धरि भक्ति कृपाला * तेहिआश्रमानिबसे कछुकाला॥
समय पाय तनु तजि अनयासा * जाइ कीन्ह अमरावति बासा

दो॰ यहइतिहासपुनीतअति, उमहिंकहेउवृषकेतु॥

---

१ अच्छी. २ सर्प. ३ आज्ञा. ४ इन्द्रकीपुरीमें. ५ घरमें.

भरद्वाज सुनु अपर पुनि, रामजन्मकर हेतु १५८॥

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी * जो गिरिजाप्रति शम्भु बखानी
विश्वबिदित यक केकयदेशू * सत्यकेतु तहँ बसै नरेशू ॥
धर्मधुरन्धर नीति-निधाना * तेज-प्रताप-शील बलवाना॥
तेहिके भये युगलसुत बीरा * सब-गुण--धाम महारणधीरा॥
रजधानी जेठे सुत आही * नाम प्रतापभानु अस ताही ॥
अपर[1] सुतहिं अरिमर्द्दन नामा * भुजबल अतुल अचल संग्रामा
भाइहि भाइहि परम सुरीती * सकलदोषछलबर्जित प्रीती ॥
जेठे सुतहिं राज्य नृप दीन्हा * हरिहित आपु गमन बन कीन्हा

दो०जब प्रतापरबि भयउ नृप, फिरी दोहाई देश॥
प्रजापाल अतिवेदबिधि, कतहुँ नहीं अघलेश१५९

नृपहितकारक सचिव[2] सुजाना * नाम धर्मरुचि शुक्रसमाना ॥
सचिव सयान बन्धु बलवीरा * आपु प्रतापपुंज रणधीरा ॥
सेन संग चतुरंग[3] अपारा * अमित सुभट सब समरजुझारा
सेन बिलोकि राउ हर्षाना * अरु बाजे गहगहे निशाना ॥
बिजयहेतु सब कटक बनाई * सुदिन सोधि नृप चलेउ बजाई
जहँतहँ परीं अनेक लराई * जीते सकलभूप बरिआई ॥
सप्तद्वीप भुजबल वश कीन्हा * लै लै दण्ड छाँड़ि नृप दीन्हा॥
सकल अवनिमण्डल[4] तेहिकाला * एक प्रतापभानु महिपाला ॥

दो०स्वबशबिश्वकरि बाहुबल, निजपुरकीन्ह प्रवेश
अर्थधर्मकामादिसुख, सेवहिं सबै नरेश ॥१६०॥

भूप--प्रताप--भानु--बल पाई * कामधेनु भै भूमि सुहाई ॥

---

१ दूसरे. २ मंत्री. ३ रथ, हाथी, घोड़ा, और प्यादे. ४पृथ्वीमण्डलमें.

सबदुखबर्जित प्रजा सुखारी * धर्मशील सुन्दर नर नारी ॥
सचिव धर्मरुचि हरिपद प्रीती * नृपहितहेतु सिखावत नीती ॥
गुरु सुर सन्त पितर महिदेवा * करै सदा नृप सबकी सेवा ॥
भूपधर्म जे बेद बखाने * सकल करै सादर सुखमाने ॥
दिनप्रति देइ बिबिधबिधि दाना * सुनै शास्त्रबर बेद पुराना ॥
नाना बापी कूप तड़ागा * सुमनवाटिका सुन्दर बागा ॥
बिप्रभवन सुरभवन सुहाये * सब तीरथन बिचित्र बनाये॥

दो०जहँलगि कहे पुराण श्रुति,एकएक सब याग॥
बारसहस्र सहस्र नृप,किये सहित अनुराग॥१६१॥

हृदय न कछु फलअनुसंधाना * भूप बिबेकी परमसुजाना ॥
करै जो धर्म कर्म मन बानी * बासुदेव अर्पित नृप ज्ञानी ॥
चढ़ि बर बाजि बार यकराजा * मृगयाकर सब साजि समाजा
बिन्ध्याचल गभीरबन गयऊ * मृगपुनीत बहु मारत भयऊ
फिरत बिपिन नृप दीख बराहू * जनुबनदुरेउशशिहिंग्रसिराहू
बड़ बिधु नाहिं समात मुखमाहीं * मनहुँक्रोधबश उगिलत नाहीं
कोल करालदशन छबि गाई * तनुबिशाल पीवर अधिकाई
घुरघुरात हयआरव पाये * चकित बिलोकत कानउठाये

दो०नीलमहीधरशिखरसम,देखि,बिशाल बराह॥
चपरिचलेउहयसुटुकिनृप,हाँकिनहोइ निबाह१६२

आवत देखि अधिक रव बाजी * चला बराह मरुतगति भाजी
तुरत कीन्ह नृप शरसन्धाना * महिमिलिगयऊबिलोकतबाना
तकि तकि तीर महीश चलावा * करि छल सुअर शरीर बचावा

१ देव. २ ब्राह्मण. ३ उत्तमशास्त्र. ४ श्याममृग. ५ शूकर.

प्रकटत दुरत जाइ मृग भागा * रिसबशभूपचलेउ सँगलागा॥
गयउ दूरि बन गहन बराहू * जहँनाहीं गज बाजि निबाहू॥
अतिअकेल बन बिपुल कलेशू * तदपि न मृगमग तजै नरेशू
कोलै बिलोकि भूप बड़ धीरा * भागि पैठ गिरिगुहा गभीरा॥
अगम देखि नृप अतिपछिताई * फिरेउ महाबन परेउ भुलाई॥

दो०खेदखिन्न प्यासा क्षुधित, राजा वाजिसमेत
खोजतव्याकुलसरितसर, जलबिनुभयउअचेत ॥

फिरत बिपिन आश्रमयक देषा * तहँ बस नृपति कपटमुनिवेषा
जासु देश नृप लीन्ह छुड़ाई * समर सेन तजि गयेउ पराई॥
समय प्रतापभानुकर जानी * आपन अतिअसमय अनुमानी
गयेउ न गृह मन बहुत गलानी * मिला न राजाहिंनृपअभिमानी
रिस उर मारि रंक जिमि राजा * बिपिन बसै तापसके साजा॥
तासु समीप गमन नृप कीन्हा *यह प्रतापरवि तेहिंतब चीन्हा
राउ तृषित नाहिं तोहिं पहिचाना* देखि सुबेष महामुनि जाना
उतरि तुरगते कीन्ह प्रणामा * परमचतुर न कहेउ निजनामा

दो०भूपतितृषितबिलोकितेहिं,सरवरदीन्हदेखाइ॥
मज्जनपान समेत हय, कीन्ह नृपतिहर्षाइ १६४

गै श्रम सकल सुखी नृपभयऊ * निजआश्रम तापस लै गयऊ
आसन दीन्ह अस्त रबि जानी * पुनि तापस बोला मृदुबानी॥
को तुम कस बन फिरहु अकेले* सुन्दर युँवा जीवपर हेले ॥
चक्रवर्तिके लक्षण तोरे * देखत दया लागि अति मोरे
नाम प्रतापभानु अवनीशा *तासु सचिव मैं सुनहु मुनीशा

---

१ शूकर. २ राजा प्रतापभानु. ३ तालाव. ४ जवान. ५ राजा.

फिरत अहेरहिं¹ परेउँ भुलाई * बड़े भाग्य देखेउँ पद आई ॥
हमकहँ दुर्लभ दर्श तुम्हारा * जानत हौं कछु भल होनहारा
कह मुनि तात भयउ अँधियारा * योजनसत्तरि नगर तुम्हारा ॥

दो०निशा² घोर गम्भीर बन, पन्थ न सूझ सुजान
बसहुआज़ु³असजानितुम, जायहुहोत बिहान १६५
तुलसी जसि भवितव्यता, तैसेहि मिलै सहाइ ॥
आपु न आवै ताहिपै, ताहि तहाँ ले जाइ ॥ १६६ ॥

भलेहि नाथ आयसु³ धरि शीशा * बाँधि तुरग तरु बैठ महीशा
नृप सबभांति प्रशंसेउ ताही * चरण बन्दिनिजभाग्यसराही ॥
पुनि बोलेउ मृदु गिरा सुहाई * जानि पिता प्रभु करौंढिठाई
मोहिं मुनीश सुत सेवक जानी * नाथ नाम निजकहहु बखानी
तेहिंनजान नृपनृपाहिंसो जाना * भूप हृदय सो कपट सयाना ॥
बैरी पुनि क्षत्रिय पुनि राजा * छल बलकीन्हचहै निजकाजा ॥
समुझि राजसुखदुखित अराती * अंवाँ⁴अनलइव सुलगै छाती ॥
सरल बचन नृपके सुनि काना * बैर सँभारि हृदय हर्षाना ॥

दो०कपटबोरि बाणी मृदुल, बोलेउ युक्तिसमेत ॥
नामहमार भिखारि अब, निर्धन रहित-निकेत १६७

कह नृप जे बिज्ञाननिधाना * तुम सारिखे गलित अभिमाना ॥
सदा अपनपौ रहहिं दुराये * सबबिधि कुशल कुबेष बनाये
तेहिते कहहिं संत श्रुति टेरे * परमअकिंचन प्रिय हरिकेरे ॥
तुमसम अधन भिखारि अगेहा * होत बिरंचिशिवहिं सन्देहा ॥
योसि सोसि तव चरण नमामी * मोपर कृपा करिय अबस्वामी

१ शिकारके लिये. २ रात्रि. ३ आज्ञा ४. आवांकी अग्निजैसे.

सहजप्रीति भूपतिकी देषी * आपविषय विश्वास बिशेषी
सबप्रकार राजहिं अपनाई * बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
सुनु सतिभाव कहौं महिपाला * इहाँ बसत बीते बहुकाला ॥

**दो०अबलगिमोहिं न मिलेउकोउ,मैं न जनायेउँकाहु ॥
लोकमान्यता अनलसम, करि तप काननदाहु १६८**

**सो०तुलसीदेख सुबेष, भूलहिं मूढ़ न चतुर नर॥ *
सुन्दर केकी[1] पेख, बचन सुधासम अशन[2] अहि[3] २४**

तातें गुप्त रहौं जगमाहीं * हरितजि किमपि प्रयोजन नाहीं
प्रभु जानत सब बिनहिं जनाये * कहहु कवन सिधि लोकरिझाये
तुम शुचि सुमति परम प्रिय मोरे * प्रीतिप्रतीति मोहिंपर तोरे ॥
अब जो तात दुरावौं तोहीं * दारुण दोष बढ़ै अति मोहीं ॥
जिमि जिमि तापस कथै उदासा * तिमि तिमि नृपहिं होइ विश्वासा
देखा स्वबश कर्म मन बानी * तब बोला तापस बकध्यानी ॥
नाम हमार एकतनु भाई * सुनि नृप बोलेउ पुनि शिर नाई
कहहु नामकर अर्थ बखानी * मोहिं सेवक अति आपन जानी

**दो०आदिसृष्टि उपजी जबै, तब उत्पति भइ मोरि
नाम एकतनु हेतु तेहि,देह न धरी बहोरि ॥१६९॥**

जनि आश्चर्य करहु मनमाहीं * सुत तपते दुर्लभ कछु नाहीं ॥
तपबलते जग सृजै[4] बिधाता * तपबल विष्णु भये परित्राता[5] ॥
तपबल शम्भु करहिं संहारा * तपते अगम न कछु संसारा ॥
भयउ नृपहिं सुनि अति अनुरागा * कथा पुरातन कहै सो लागा ॥
कर्म धर्म इतिहास अनेका * करै निरूपण बिरति बिबेका ॥

१ मयूरकी बोली. २ भोजन. ३ सर्प. ४ पैदा करते हैं. ५ रक्षक.

उद्भव-पालन-प्रलय-कहानी * कहेसि अमित आश्चर्य बखानी
सुनि महीश तापसबश भयऊ * आपन नाम कहन तब लयऊ
कह तापस नृप जानौं तोहीं * कीन्हेउ कपट लाग भल मोहीं॥

सो०सुनु महीशअसनीति, जहँतहँ नाम नकहहिंनृप
मोहिं तोहिंपरप्रीति, परमचतुरता निरखि तव२५

नाम तुम्हार प्रतापदिनेशा * सत्यकेतु तव पिता नरेशा॥
गुरुप्रसाद सब जानिय राजा * कहिय न आनहिं जानि अकाजा
देखि तात तव सहजसुधाई * प्रीतिप्रतीति नीतिनिपुणाई॥
उपजिपरी ममता मन मोरे * कहेउँ कथा निज बूझे तोरे॥
अब प्रसन्न मैं संशय नाहीं * माँगु जो भूप भाव मनमाहीं॥
सुनि सुबचन भूपति हर्षाना * गहि पद बिनय कीन्ह बिधिनाना
कृपासिन्धु मुनि दर्शन तोरे * चारि पदारथ करतल मोरे॥
प्रभुहिं तथापि प्रसन्न बिलोकी * माँगिअगमबरहोउँ अशोकी

दो०जरामरणदुखरहिततनु, समरनजीतै कोउ॥
एकछत्ररिपुहीनमहिं, राजकलपशत होउ॥१७०॥

कह तापसनृप ऐसेइ होऊ * कारणएक कठिनसुनु सोऊ॥
कालौ तव पद नाइहि शीशा * एक विप्रकुल छाँड़ि महीशा
तपबल बिप्र सदा बरियारा * तिनके कोप न कोउ रखवारा।
जो विप्रन बश करहु नरेशा * तौ तव बश विधि विष्णु महेशा
चल न ब्रह्मकुलसे बरिआई * सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई॥
बिप्रशाप बिनु सुनु महिपाला * तोर नाश नहिं कवनिहुँ काला
हर्षे राउ बचन सुनि तासू * नाथ न होइ मोर अब नाशू॥

१ उत्पत्ति, पालन और नाशकी कथा. २ राजा. ३ उत्पन्नभई.

तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना * मोकहँ सर्वकाल कल्याना ॥
दो०एवमस्तु कहि कपटमुनि,बोला कुटिलबहोरि
मिलबहमारभुँवालनिज,कहहुतोमोरिनखोरि १७१
ताते मैं तोहिं बरजौं राजा * कहे कथा तव परमअकाजा
छठें श्रवण यह परत कहानी * नाश तुम्हारसत्य मम बानी॥
यह प्रकटे अथवा द्विजशापा * नाश तोर सुनु भानुप्रतापा॥
आन उपाय निधन तव नाहीं * जो हरिहर कोपाहिं मनमाहीं
सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा * द्विजगुरुकोप कहहु को राषा॥
राखै गुरु जो कोप बिधाता * गुरुबिरोध नहिं कोउजगत्राता
जो न चलब हम कहे तुम्हारे * होइ नाश नहिं शोच हमारे॥
एकहि डर डरपत मन मोरा * प्रभु महिदेवशाप अतिघोरा॥
दो०होहिंबिप्रबशकवनबिधि, कहहुकृपाकरिसोउ
तुमतजिदीनदयालुनिज, हितूनदेखौंकोउ॥ १७२ ॥
सुनु नृप बिविध यत्न जगमाहीं * कष्टसाध्यपुनि होहिं कि नाहीं
अहै एक अतिसुगम उपाई * तहाँ परन्तु एक कठिनाई ॥
मम आधीन युक्ति नृप सोई * मोर जांब तव नगर न होई॥
आजु लगे अरु जबते भयऊँ * काहूके गृह ग्राम न गयऊँ॥
जो न जाब तव होइ अकाजू * बना आइ असमंजस आजू॥
सुनि महीप बोले मृदुबानी * नाथ निगमअस नीति बखानी
बड़े सनेह लघुनपर करहीं * गिरिनिजशिरनसदा तृणधरहीं
जलधि अगाध मौलि बह फेणू *सन्त धरणि धारत शिर रेणू॥
दो०अस कहि गहे नरेश पद,स्वामी होहु कृपालु ॥

१ ऐसेही होय. २ हे राजन्! ३ नाश. ४ ब्राह्मणोंका शाप.

मोहिं लागि दुख सहिय प्रभु, सज्जन दीनदयालु ॥

जानि नृपाहिं आपनआधीना * बोला तापस कपटप्रबीना ॥
सत्य कहौं भूपति सुनु तोहीं * जगमहँ नाहिं दुर्लभ कछु मोहीं ॥
अवसि काज मैं करिहौं तोरा * मन क्रम बचन भक्त तैं मोरा ॥
योग-युक्ति-तप-मंत्र-प्रभाऊ * फलैं तबाहिं जब करिय दुराऊ ॥
जो नरेश मैं करउँ रसोई * तुम परसहु मोहिं जान न कोई ॥
अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई * सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई ॥
पुनि तिनके गृह जेंवै जोई * तव वश होइ भूप सुनु सोई ॥
जाइ उपाय रचहु नृप येहू * सम्बत भरि संकल्प करेहू ॥

दो०नितनूतनद्विजसहसशत, बरेउसहितपरिवार
मैं तुम्हरे संकलपलगि, दिनहिं करव जेवनार १७४

इहि बिधि भूप कष्ट अति थोरे * होइहहिं सकल विप्र बश तोरे ॥
करिहहिं बिप्र होम मख सेवा * तेहि प्रसंग सहजहिं बश देवा ॥
और एक तोहिं कहौं लखाऊ * मैं यहि बेष न आउब काऊ ॥
तुम्हरे उपरोहितकहँ राया * हरि आनब मैं करि निजमाया
तपबल तेहिकरि आपुसमाना * रखिहौं इहाँ बर्ष-परमाना ॥
मैं धरि तासु बेष सुनु राजा * सबबिधि तोर सँवारब काजा ॥
गै निशि बहुत शयन अबकीजे * मोहिं तोहिं भूप भेंट दिन तीजे ॥
मैं तपबल तोहिं तुरगसमेता * पहुँचैहौं सोवतहिं निकेता ॥

दो०मैं आउब सोइ वेषधरि, पहिंचानेहु तब मोहिं ॥
जब एकान्त बुलाइ सब, कथा सुनाऊँ तोहिं १७५

शयन कीन्ह नृप आयसु मानी * आसन जाइ बैठ छल ज्ञानी ॥

---

१ तुम्हारी. २ आज्ञा. ३ नवीन. ४ यज्ञ ५ राजा ६ तीनदिनमें.

श्रमित भूप निद्रा अति आई * सो किमि सोव शोच अधिकाई
कालकेतु निश्चर तहँ आवा * जेहिं शूकर होइ नृपहिं भुलावा
परममित्र तापस नृपकेरा * जानै सो अतिकपट घनेरा ॥
तेहिके शत सुत[1] अरु दश भाई * खल अतिअजय देवदुखदाई ॥
प्रथमहिं भूप समर सब मारे * बिप्र सन्त सुर[2] देखि दुखारे ॥
तेहिं खल पाछिल बैर सँभारा * तापस नृप मिलि मन्त्र बिचारा
जेहि रिपुक्षय सोइ रचेसि उपाऊ * भावीवश न जान कछु राऊ ॥

दो०रिपु तेजसी अकेलअति, लघुकरिगनिय न ताहु
अजहुँ देत दुख रबिशशिहिं, शिरअवशेषित राहु

तापसनृप निजसखहिं निहारी * हर्षि मिलेउ उठि भयउसुखारी
मित्रहिं कहि सब कथा सुनाई * यातुधान[3] बोला सुख पाई ॥
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेशा * जो तुम कीन्ह मोर उपदेशा ॥
परिहरि शोच रहहु तुम सोई * बिनुऔषधहिंब्याधि[4]बिधिखोई
कुलसमेत रिपुमूल बहाई * चौथेदिवस मिलब मैं आई ॥
तापसनृपहिं बहुत परितोषी * चला महाकपटी अतिरोषी ॥
भानुप्रतापहिं बाजिसमेता * पहुँचायेसि सोवतहिं निकेता ॥
नृपहिं नारिपहँ शयन कराई * हयगृह बांधेसि बाजि बनाई ॥

दो०राजाके उपरोहितहिं, हरि लैगयउ बहोरि ॥
लै राखेसि गिरिखोहमहँ, माया करि मति भोरि

आपु बिरंचि[5] उपरोहितरूपा * परा जाय तेंहि सेज अनूपा ॥
जागेउ नृप अनु भयउ बिहाना * देखि भवन अतिअचरजमाना
मुनिमहिमा मनमहँ अनुमानी * उठेउ गवहिं जेहि जान न रानी

१ पुत्र. २ देवता. ३ राक्षस. ४ रोग. ५ विधाताने. ६ रचिके.

कानन गयउ बाजि चढ़ि तेही * पुर नर नारि न जानेउ केही
गये यामयुग¹ भूपति आवा * घर घर उत्सव बाजु बधावा
उपरोहितहिं दीख जब राजा *चकितबिलोकिसुमिरिसोइकाजा
युगसम नृपहिं गये दिन तीनी * कपटीमुनि नृपमति हरि लीनी
समय जानि उपरोहित आवा * नृपहिं मतो सब कहि समुझावा

दो०नृप हर्षे पहिंचानि गुरु, भ्रमबश रहा न चेत
बरे तुरत शत सहस बर, विप्र कुटुम्बसमेत१७८

उपरोहित जेवनार बनाई *छरस चारिबिधि जस श्रुति गाई
मायामय तेहिं कीन्ह रसोई * व्यंजन बहु गनि सकै न कोई
विविध मृगनकर आमिष² राँधा * तेहिमहँ बिप्रमांस³ खल साँधा
भोजनकहँ सब विप्र बुलाये * पद पखारि सादर बैठाये ॥
परसन लाग जबहिं महिपाला * भइ अकाशवाणी तेहि काला
विप्रवृन्द उठिउठि गृह जाहू * है बड़ि हानि अन्न जनि खाहू
भयउ रसोई भूसुरमासू * सब द्विज उठे मानि विश्वासू
भूप बिकलमति मोहभुलानी * भावबिश न आव मुख बानी ॥

दो०बोले विप्र सकोप तब, नाहिं कछु कीन्ह विचार
जाइ निशाचर⁴ होउ नृप, मूढ सहित परिवार१७९

क्षत्रिबन्धु तैं विप्र बुलाई * घालैंलिये सहित समुदाई ॥
ईश्वर राखा धर्म हमारा * जैहसि तैं समेत परिवारा ॥
सम्बतमध्य नाश तव होऊ * जलदाता न रहहि कुल कोऊ ॥
नृपसुनिशापविकलअतित्रासा* भइ बहोरि बर गिरा अकासा ॥
विप्रहु शाप बिचारि न दीन्हा* नाहिं अपराध भूप कछु कीन्हा ॥

१ दो पहर. २ मांस. ३ ब्राह्मणका मांस. ४ राक्षस.

चकित बिप्र सब सुनि नभबानी * भूप गये जहँ भोजनखानी ॥
तहँ न अशन[1] नाहिं बिप्र सुआरा[2] * फिरेउ राउ मन शोच अपारा
सबप्रसंग महिसुरन[3] सुनाई * त्रसित परेउ अवनी[4] अकुलाई

दो०भूपति भावी मिटै नाहिं, यदपि न दूषण तोर ॥
किये अन्यथा होइ नहिं, बिप्रशाप अतिघोर ॥१८०॥

॥ अथ क्षेपक ॥

विप्रवचन सुनि नृप अकुलाना *पुनितेहिंविनयकीन्हबिधिनाना
पुनि पुनि पद गहि कहेउभुवाला * शापअनुग्रह कहहु कृपाला ॥
सुनि नृपवचन विनयरससाने * बोले विप्र दया उर आने ॥
जब तुम होब निशाचर जाई * ब्रह्मवंश तामस तनु पाई ॥
शिवप्रसाद बर पाइ बहोरी * होइहै सब जग प्रभुत तोरी ॥
मिलहिं तोहिं जब सनतकुमारा * तब तैं समुझब शाप हमारा॥

दो०तुम पूछहु निस्तारनिज, सादर मुनिहिं नरेश ॥
सब परिवार उधार तब, होइहै मुनिउपदेश ॥१॥

॥ इति क्षेपक ॥

अस कहि सब महिदेव सिधाये * समाचार पुरलोगन पाये ॥
शोचहिं दूषण दैवहिं देहीं * बिरचत हंस काक किय जेहीं
उपरोहितहिं भवन पहुँचाई * असुर तापसहिं खबरिजनाई॥
तेहिं खल जहँ तहँ पत्र पठाये * साजि साजि सेन भूप सब आये
घेरिन्हि नगर निशान बजाई * बिबिधभांति नित होति लराई
जूझे सकल सुभट करि करणी * बन्धुसमेत परेउ नृप धरणी ॥
सत्यकेतुकुल कोउ न बाँचा * विप्रशाप किमि होइ असाँचा

१ भोजन. २ रोटी बनानेवाला. ३ ब्राह्मणोंको. ४ पृथ्वीपर.

रिपुहिं जीति नृप नगर बसाई * निजनिज पुर गे जय यश पाई

दो०भरद्वाज सुनु जाहि जब, होत बिधाता बाम ॥
धूरि मेरुसम जनक यम, ताहि ब्यालसम दाम १८१

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा * भयउ निशाचर सहित समाजा
दशशिर ताहि बीस भुजदण्डा * रावण नाम बीर बरिबण्डा ॥
भूपअनुज अरिमर्द्दन नामा * भयउ सो कुम्भकर्ण बलधामा
सचिव जो रहा धर्मरुचि जासू * भयउ बिमात्र बन्धु लघु तासू
नाम बिभीषण जेहि जग जाना * विष्णुभक्त बिज्ञाननिधाना ॥
रहे जे सुत सेवक नृपकेरे * भये निशाचर घोर घनेरे ॥
कामरूप खल जिनिसि अनेका * कुटिल भयंकर बिगतबिबेका
कृपारहित हिंसक सब पापी * बर्णि न जाइ विश्वपरितापी ॥

दो०उपजे यदपि पुलस्त्यकुल, पावन अमल अनूप
तदपि महीसुरशापवश, भये सकल अघरूप १८२

कीन्ह बिबिध तप तीनों भाई * परमउग्र सो बार्णि न जाई ॥
गयउ निकट तप देखि बिधाता * माँगहु बर प्रसन्न मैं ताता ॥
करि बिनती पद गहिं दशशीशा * बोलेहु बचन सुनहु जगदीशा॥
हम काहूकर मरहिं न मारे * बानर मनुज जाति दुइ बारे ॥
एवमस्तु तुम बड़ तप कीन्हा * मैं ब्रह्मा मिलि तोहिं बर दीन्हा॥
पुनि प्रभु कुम्भकर्णपहँ गयऊ * तेहिं बिलोकि मन बिस्मयभयऊ
जोयहखल नित करहि अहारा * होइहि सब उजारि संसारा ॥
शारदे प्रेरि तासु मति फेरी * माँगेसि नींद मास षटकेरी ॥

दो०गयउ बिभीषणपास तब, कहा पुत्र बर माँग॥

१ पिता. २ रस्सी. ३ ब्राह्मणोंके शापसे. ४ छोंड़. ५सरस्वतीजीको.

तेहिं माँगे भगवन्तपद, कमल अमल अनुराग१८३

तिनहिं देइ बर ब्रह्म सिधाये * हर्षित ते अपने गृह आये ॥
मयतनुजा मन्दोदरि नामा * परमसुन्दरी नारि ललामा ॥
सोइ मय दीन्ह रावणहिं आनी * भई सो यातुधानपतिरानी ॥
हर्षित भयउ नारि भलि पाई * पुनि दोउ बन्धु बिबाहेसि जाई ॥

॥ क्षेपक ॥

सानन्दनि बृकदन्तकुमारी * सो भय कुम्भकर्णकी नारी ॥
नगदन्ती केहरिमखजाई * सो वल्लभा बिभीषण पाई॥इति॥
गिरि त्रिकूट यक सिन्धुमँझारी * बिधिनिर्मित दुर्गम अतिभारी ॥
सोइ मय दानव बहुरि सँवारा * कनकरचित मणिभवन अपारा ॥
भोगवती जस अहिकुलबासा * अमरावति जस शक्र निबासा ॥
तिनते अधिक रम्य अतिबंका * जगविख्यात नाम तेहिं लंका ॥

दो०खाईं सिंधुगभीर अति, चारिउ दिशि फिरि आव
कनककोट मणिखचित दृढ, बर्णि न जाय बनाव ॥
हरिप्रेरित जेहि कल्प जोइ, यातुधानपति होय ॥
शूर प्रतापी अतुल बल, दलसमेत बश होय ॥ *

रहे तहाँ निशिचर भट भारे * ते सब सुरन समर संहारे ॥
अब तहँ रहहिं शक्रके प्रेरे * रक्षक कोटि यक्षपतिकेरे ॥
दशमुख कबहुँ खबरि अस पाई * सेन साजि गढ़ घेरेसि जाई ॥
देखि बिकट भट अतिकटकाई * यक्ष जीव लै गये पराई ॥
फिरि सब नगर दशानन देषा * गयउ शोच सुख भयउ बिशेषा ॥
सुन्दर सहजअगम अनुमानी * कीन्ही तहँ रावण रजधानी ॥

१ लंकामें मकान पत्थरके पांच लाख. काष्ठके नव लाख. तांबेके एककरोड़, सोनाचांदीके चार करोड़. तृणके नव करोड़.

जेहि जस योग बाँटिगृह दीन्हे * सुखी सकल रजनीचर कीन्हे ॥
एकबार कुबेरपहँ धावा * पुष्पकयान जीति लै आवा ॥

(क्षेपक)

तब कुबेर निजकुटुँबसमेता * अलकापुरी बसाइ सचेता ॥
आपु गये सुरपतिके तीरा * सकल व्यवस्था कही अधीरा ॥
सुनि सुरेश सब देव बुलाये * हनि निशान लंकहिं चढ़ि आये
दशमुख लै निकसा कटकाई * होइ इन्द्रते लगी लराई ॥
बासव कोपि बज्र यक मारा * गिरा मूर्छि तब अवनिमँझारा ॥
निजगजते तनु मर्दन लाग्यो * मानहुँ श्रमित जानि अनुराग्यो ॥
कुम्भकर्ण तब भिरेउ प्रचारी * व्याकुल भये अदितिसुत भारी ॥
रबिसुत सेन बिचल निज जानी * झपटि दंड[३] मारेउ उर तानी ॥
रावणअनुज दंड गहि लयऊ * सहजै निजमुख मेलत भयऊ ॥
राखि उदर शठ सोवनलागा * षटमहिना बीते पुनि जागा ॥

दो०भयोतासुउरदाहतब,उगिलिदिहिसियमदण्ड
तमकि लीन महिषेश पुनि, मारेहु दण्ड प्रचण्ड॥१॥

लागत शिर त्यहिं पीर न व्यापी * भयो नींदबश पुनि खल पापी ॥
तब हरि हने दण्डै[३] अधिकाई * सोवत सो अधिकहु सचुपाई ॥
मूर्छाते तब रावण जागा * पुनि देवनते जूझन लागा ॥
नखभुजदण्ड धनुष शर लीन्हे * मारि बिबुध सब व्याकुल कीन्हे
लखि दिग्गज चिक्करि ढिग आये * धनुष बाण सब काटि बहाये ॥
गहेसि तिन्हे तब भुजा पसारी * मारे द्विरदन दशन प्रचारी ॥
दशमुखके उर लागहिं कैसे * शिलामाँझ बिनफर शर जैसे ॥

---

१ देव. २ यमराज. ३ कालदंड. ४ यमराजने. ५ बीशोंहाथोंमें.

लखि रावणतनकी कठिनाई * तब सब दिग्गज चले पराई ॥
धनद इन्द्र तब गे बिधिपाशा * शिश नाइ सब हाल प्रकाशा ॥
कह बिरंचि सुनु शक्र सुजाना * रावण है तपबल-बलवाना ॥
त्यहिते तुम जनि करहु लराई * गिरिखोहनमाँ जाहु पराई ॥
सुरनसहित सुमिरहु करतारा * बिन हरि को दुख मेटनहारा ॥
स्रष्टा--बचन सुनत मनमाने * देवनते तब आइ बखाने ॥
सीख पुरन्दरकी लहि काना * सबहुन गिरि बन कीन पयाना ॥
जाय दशानन सैनसमेता * शोधेसि देवनकेर निकेता ॥
जो सुर पुर घर मारग पावा * तिन्हैं पकरि निजलंकाहिं आवा ॥
रावण लंकहि गा सुनि काना * बसे अमर पुनि निजनिज थाना ॥

॥ इति ॥

दो०कौतुकहीं कैलास पुनि, लीन्हेसि जाइ उठाइ
मनहुँ तौलि निजबाहुबल, चला अधिकसुखपाइ १८५

सुख सम्पति सुत सेन सहाई * जय प्रताप बल बुद्धि बढ़ाई ॥
नित नूतन[२] सब बाढ़त जाई * जिमि प्रतिलाभ[३] लोभ अधिकाई ॥
अतिबल कुभकर्ण अस भ्राता * जेहिकहँ नहिं प्रतिभट जगजाता
करि मदपान सोव षटमासा * जागत होइ तिहूँपुर त्रासा ॥
जो दिनप्रति अहार करु सोई * विश्व बेगि सब चौपट होई ॥
समरधीर नाहिं जाइ बखाना * तेहिसम अधिक न कोउ बलवाना
वारिदनाद[४] जेठ सुत तासू * भटमहँ प्रथमलीक जग जासू ॥
जेहि न होइ रणसन्मुख कोई * सुरपुर नितहिं परावन होई ॥

दो०कुमुख अकम्पन कुलिशरद[५], धूम्रकेतु अतिकाय

१ देवता. २ नवीन. ३ रोजरोज. ४ मेघनाद. ५ वज्रदन्त.

एक एक जग जीति सक, ऐसे सुभटनिकाय ॥१८६॥

कामरूप जानाहिं सब माया * सपनेहुँ जिनके धर्म न दाया ॥
दशमुख बैठि सभा यकबारा * देखि अमित आपन परिवारा ॥
सुतसमूह जन परिजन नाती * गनै को पार निशाचर जाती ॥
सेन बिलोकि सहजअभिमानी * बोला बचन क्रोधमदसानी ॥
सुनुहु सकल रजनीचरयूथा * हमरे बैरी बिबुधबरूथा ॥ *
ते सन्मुख नहिं करहिं लराई * देखि सकल रिपु जाहिं पराई ॥
तिनकर मरण एकविधि होई * कहौं बुझाइ सुनहु अब सोई ॥
द्विजभोजन मख होम सराधा * सबकर जाइ करहु तुम बाधा ॥

दो० क्षुधाक्षीणबलहीनसुर, सहजहिंमिलिहहिंआइ
तब मारिहौं कि छाँड़िहौं, भली भांति अपनाइ १८७

मेघनादकहँ पुनि हँकरावा * दीन्ह सीख बर[1] बैर बढ़ावा ॥
जे सुर समरधीर बलवाना * जिनके लरिबेको[2] अभिमाना ॥
तिनहिं जीतिरण आनसिबाँधी * उठि सुत पितु अनुशासनसाँधी ॥
इहिविधि सबहीं आज्ञा दीन्हा * आपुन चलेउ गदा कर लीन्हा ॥
चलत दशानन डोलत अवनी[3] * गर्जत गर्भ स्रवत सुररवनी[4] ॥
रावण आवत सुनेउ सकोहा * देवन तकेउ मेरुगिरिखोहा ॥
दिगपालनके लोक सिधाये * सूने सकल दशानन पाये ॥
पुनि पुनि सिंहनाद करि भारी * देइ देवतन गारि प्रचारी ॥
रणमदमत्त फिरै जग धावा * प्रतिभट खोजत कतहुँ न पावा ॥

॥ अथ क्षेपक ॥

दो० सप्तद्वीप नवखण्डलागि, सप्तपताल अकाश ॥

१ बड़ा. २ पिता रावणकी आज्ञा. ३ पृथ्वी ४ देवांगनावोंके.

कंपमान धरणी धकत, सरितपतिन मन त्रास २

नारद मिले कहेसि मुसुकाई * देव कहाँ मुनि देहु दिखाई ॥
सुनत अनख नारदहिं न भावा * श्वेतद्वीप तेहिं तुरत पठावा ॥
सागर उतरि पार सो गयऊ * नारिवृन्द तहँ देखत भयऊ ॥
तिन्हसन कहेउ पतिनपहँ जाहू * कहेउ कि आव निशाचरनाहू ॥
तब मैं तिनहिं जीति संग्रामा * लै जैहौं तुमकहँ निजधामा ॥
सुनत बचन एक जरठ रिसानी * धाइ चरण गहि गगन उड़ानी ॥
गइ अंबर धरि धरि झकझोरा * डारेसि सिन्धुमध्य अतिजोरा ॥

दो०गयो पताल अचेत ह्वै, मरै न बिप्रप्रसाद * ॥
सावधान उठि चलेउ पुनि, हिये न हर्ष बिषाद३॥

जीतेसि नागनगर सब झारी * गयो बहुरि बलिलोक सुरारी ॥
बैरोचनसुत[1] आदर दयऊ * कुशल बूझि तब बोलत भयऊ॥
तुमहूं निजशत्रुहिं गहि लीजै *चलि महिलोक राज निज कीजै
कह बलि कनककशिपुके[2] मण्डन[3]*पहिरि लेहु तुम सुत दुखखण्डन॥
लाग उठावन उठा न कोई *याही पौरुषते जय होई ॥
जिन ये भूषण अंगन धारे * ते भट गे इक क्षणमा मारे ॥
तेहिते भवन जाहु लै प्राना * चला तुरत मनमाहिं लजाना ॥
बामन रावण आवत जाना * किये देवऋषिसन अपमाना ॥
खेलत रहे नगर शिशु[4] नाना * निजबल तिनहिं दीन्ह भगवाना
धाइ धरा तिन पुर लै आये * नगर नारि नर देखन धाये ॥
बीस बाहु दश कंधर[5] भाई * बिधि यह गढ़नि कहाँकी आई॥
राखिनि बाँधि खिझावहिंभारी * नाम न कहै सहै बरु मारी ॥

१ बलि. २ हिरण्यकशिपुके. ३ आभूषण. ४ बालक. ५ मस्तक.

वामन दीख बहुत सकुचाना * तब छुड़ाइ दिय कृपानिधाना ॥
चला तुरन्त निशाचरनाहा * लाज शंक कछु नाहिं मनमाहा॥

दो०अतिनिर्लज्ज दयारहित, हिंसापर अतिप्रीति॥
रामबिमुख दशकन्ध शठ, तापर चाहत जीति॥४॥
भरद्वाज सुनु जाहि जब, होइ विधाता बाम ॥ *
मणिहुँ काच होइजाइ तब, लहै न कौड़ी दाम ॥५॥

जहँ कहुं फिरत देव द्विज पावै * दण्ड लेइ बहु त्रास दिखावै ॥
इहि आचरण फिरै दिनराती * महामलिनमन खल उतपाती ॥
बहुरि तुरत पम्पापुर आवा * बालि नाम कपिपति[1] जेहि ठांवा
अवलोकेसि यक सरवरशोभा * जिहिं मन महामुनिन्हकर लोभा
तहाँ कपीश[2] करै निजध्याना * दशकन्धरहिं देखि मुसुकाना ॥
जाइ ठाढ़ भा तहँ रजनीशा * ठोंकि बाहु गर्जत भुज बीशा ॥
तब कपीश चितवा मुसकाई * ध्यानकि अवसर रिस बिसराई॥
तब रावण बोला करि क्रोधा *बकध्यानी कपि शठ बिनबोधा[3] ॥
नाम तोर सुनि आयउँ धाई * दे कपि युद्ध छाँड़ि कदराई ॥

दो०मोहिंजीतेबिनुसमरसुनु, वृथाध्यानतवकीशँ[4]॥
कटकटाइ कह रजनिचर, रदन[5] तीनसै बीश ॥६॥

तब बाली बोला मुसुकाई * बल तुम्हार ऐसो है भाई ॥
रविअंजुलि मैं देहुँ सप्रीती * ठाढ़ होउ जायहु मुहिं जीती ॥
तब निशिचरपति उठा रिसाई * दे कपि युद्ध छाँड़ि कदराई ॥
तबहिं कीशपति मनहिं बिचारा* शिव बल दीन्ह मरै नहिं मारा॥
दशकन्धर घर जाहु बिचारी *अजय तुम्हारि सुना दिशि चारी॥

---

१ बन्दरोंका राजा. २ वालि. ३ ज्ञानरहित. ४ हे बन्दर! ५ दांत.

इहिबिधिवालि बहुतसमुझावा * कवनिहुँ भांति बोध नाहिं आवा
तब सकोप उठि झपटि कपीशा * दृढ़ गहि काँख चापि दशदीशा
अंजुलि दीन रविहिं मनबानी * अँचई सप्त उदधिकर पानी ॥
जपा आदि शंकर मन बानी * तिहिंक्षण संध्या बंदि सिरानी॥
वालिहिं बिसरिगई सुधि तासू * यहिबिधि बिगत भये षटमासू॥
सो कलेशबश करै उपाई * तहँ न चलै कछु आतुरताई ॥
बहु प्रस्वेद[1] कखरीमहँ जामा * अतीकुवास तहाँ भइ धामा ॥
कलमलाइ रिस दशननिकाटा * कचकर जीवँ[2] मनहुँ भ्रम चाटा॥
एकदिवस रविअंजलि साजा * काँखते निखरि दशानन भाजा॥
तब पुनि धरि कपीश सो बाँधा * लै आयो अंगदके राँधा ॥
बीश भुजा दशशीश सुधारा * चरण दोउ धरि पुनि उर पारा॥
धरि समेटि झूमारिसम कीन्हा * बाँधि शेजपर शोभा दीन्हा ॥
अंगद खेलि लात शिर मारा * किलकिलाइ किलकैं किलकारा

दो०तारा चीन्हा रावणहिं, तेहि क्षण दीन छोड़ाइ
जाहु तुरंत लंकेश गृह, बहुरि धरहिं कपिराइ ७

पुनि रावण आवा तिहि ठांवा * सहसबाहु जहँ रास बनावा ॥
जलक्रीडा जु करहिं सब नारी * बिबिधभांति शोभा अतिभारी॥
आवा रासमँडल जहँ रेवाँ[3] * सुर नर नाग करहिं सब सेवा ॥
जाइ दीख रावण सुख नाना * हर्षसमेत हृदय सुख माना ॥
तहँ लंकेश जाइ शिव देखा * मनहुँ बिरंचि[4] रचे बहुरेखा ॥
तुलसी कमलपत्र सब आना * बिल्वपत्र अरु पुष्पप्रमाना ॥
जाके जल क्षोभेउ दशशीशा * पढ़ै मंत्र सुमिरै गौरिशा ॥

---

१ पसीना. २ जुवां. ३ नर्मदा. ४ ब्रह्मा.

निलज अशंक आव पुनि तहवाँ * कर भुजकेलि सहसभुज जहवाँ॥
दो०—क्षोभेउ जल भुजबीसबल, बूड़न लगी समाज॥
सहसबाहु अतिक्रोधमन, मोहिं समान को आज
जाइ दीख तहँ रावण ठाढ़ा * जासु विपुल भुजबल जल बाढ़ा॥
मायाप्रबल महाबल भारी * लंकेश्वरकहँ धरिसि प्रचारी॥
निरखितियन आचरजबिशाला * बांधि राखि कछुदिन हयशाला
लज्जित दुष्ट मष्ट करि रहई * रिस उर मारि कष्ट बहु सहई॥
सकल आइ देखाहिं नर नारी * माराहिं लात हँसैं दै गारी॥
नाम न कहै रहै सकुचाना * बहुविधि पूँछैं नृपति सुजाना॥
नृत्य करैं रंभादिक नारी * दशहु माथ दश दीपक बारी॥
मुनि पुलस्त्य तब जाइ छुड़ावा * पुनि नॅलशाप आय तिहिं पावा
दो०—मारगजात दीख अति, अनुपम सुन्दरि नारि॥
चन्दन पुष्प पत्र कर, पूजन चलि त्रिपुरारि॥९॥
देखि उर्बशी मन सकुचानी * तब रावण बोला मृदुबानी॥
को तुम नारि गमन कहँ कीन्हा * लज्जावश तिहिं उतर न दीन्हा॥
मन मदमत्त बिचार न करेऊ * धॅनपति-पुत्रबधू-कर धरेऊ॥
चीन्हि ताहि पुनि शंका आई * घाटिकर्म कीन्ही पछिताई॥
मन पछिताय शोच उर भयऊ * लंकेश्वर लंकाकहँ गयऊ॥
विकल उर्बशी अलकाहिं आई * नलकूबरसन बात जनाई॥
दीन्ह शाप तिन क्रोध अपारा * रावणबंश होहु क्षयकारा॥
चलो शाप लंकाकहँ आवा * दशकंधर बैठा जिहिं ठावा॥
आगे आइ ठाढ़ भयो शापा * निरखि दशानन अतिभय काँपा॥
दो०—शापहिं अंगीकार करि, मनमहँ कीन्ह बिचार॥

१ नलकूबरका. २ नलकी स्त्रीका हाथ.

दण्ड ऋषिन्हसे लीन्ह नाहिं, रोषेउ[1] लंकभुआर[2]१०॥

दूत चारि पठये ऋषिआश्रम * निरखि बिसरि गे मुनिअधिआतम
तिनसन तब पूँछहिं मुनिहाला * कहहु कुशल लंकेशभुआला ॥
कुशल तासु यह सुनहु मुनीशा * कर[3] तुमसन चाहत दशशीशा ॥
सुनि सो बचन महाभय पाई * कराहिं विचार बिरति बिसराई॥
जेहि दरबार नीति नाहिं भाई * खलमण्डली जुरी तहँ आई ॥
कछु बिन दिये नहीं गतिआछी * घटभरि रुधिर दिये तनुकाछी ॥
दूतन्ह सौंपि कहा मुनिज्ञानी * भूपहि कहेउ जाइ यह बानी ॥

दो०घट उघरतक्षय होइहहु, सहित सकलपरिवार
दूत तुरत घट लैगये, लंकापतिदरबार ॥ ११ ॥

रावण घट लखि परम हुलाशा * तब दूतन मुनिबचन प्रकाशा ॥
सुनि मुनिशाप उपज उर दाहू * बोला घट लै उत्तर जाहू ॥
यत्नसमेत धरणि धरि एहू * जानि न पाव बात यह केहू ॥
लै घट जनकनगर ते गये * गाड़त क्षेत्रमध्य तहँ भये ॥
शम्भुसभा श्रुतिबादमँझारा * प्रथमें रहा जनकते हारा ॥
तेहि गसते तहँ कुंभ पठावा * दूत गाड़ि मिथिलापुर आवा ॥
याज्ञवल्क्य पुनि कह मुनिपाहीं * अवर कथा सुनहू चितमाहीं ॥
जब तहँ दूत रुधिरघट धरेऊ * तब दुर्भिक्ष अचानक परेऊ ॥
सर सरिता नद सूखनलागे * पशु पक्षी व्याकुल व्है भागे ॥
अनजलरहित प्रजा अस कहही * दैवाधीन जगतगाति अहही ॥
प्रजा पंच पुनि नृपपहँ आये * धीरज दीन जनक समुझाये ॥

दो०बचन सुना भूपति जनक, मुनिवर लिये बुलाय

१ क्रुधित हुआ. २ लंकाधिपरावण. ३ दण्ड.

सुनहु बिप्र बंदित सकल, कीजे कौन उपाय ॥१२॥
शतानंद तब कहहिं बिचारी * यज्ञ करहु नृप बर्षहि बारी ॥
जनक यज्ञरचना तहँ ठयऊ * चामीकरहले[1] कर्षत भयऊ ॥
प्रगट अवनितें[2] ऋषयकुमारी * कन्या काहि लीन्ही उर धारी॥

दो०सुनिनृपकीन्हीयुक्तिसोइ, जोतत अजिरमँझार
प्रगट्यो सिंहासन सुभग, अद्भुत तेज अपार ॥१३॥
चार सखी चारों तरफ, लीन्हे मुरछल हाथ ॥
मध्य विराजत भूमिजा, रूपराशि शुचिगाथ॥१४॥
वेदवती रिपुवधनहित, तजनहोत माहिअंश ॥ *
एकरूप ह्वै प्रगट भइ, आदिशक्ति निमिवंश ॥१५॥

देखि बिदह विनय तब ठानी * भई तुरत कन्या लघु जानी॥
सखिनसहित सिंहासन सोई * अन्तर्द्धान गयो तब होई ॥
रोदन सुनत सुनयना रानी * लीन उठाय गोंद सुख मानी॥
सुनि पुरजन सब भये सुखारी * देखन उठि धाये नर नारी ॥
भूपति दान दीन विधि नाना * यथा मनोरथ जाकर जाना ॥
नाम जानकी परमपुनीता * नारद आइ कहा पुनि सीता॥

छं०कहिपुनिसीतापरमपुनीता, आदिज्योतिकीशक्तिसही
नृपनीतिनिधाना परमसुजाना, आदिमध्यअवसाननही
भवउद्भवकरणी पालनि हरणी, नेतिनेंतियहवेदकहैं
तवकृत्यप्रकाशीभुजाविलासी तीनिलोकमहँपूरिरहैं

दो०सकलकथा नृप जनकसों,नारद कही बखानि॥
सकल सुलक्षणि लक्ष्मिगुण, जगदम्बा जिय जानि॥

१ सोनेका नांगर. २ पृथ्वीसे.

जनक सबिनय कहत कर जोरे * नाथ मनोरथ पूजे मोरे ॥
चरण पखारि सुथल बैठारी * विनय कीन अस्तुति बिस्तारी
धन्य धन्य कहि सुताप्रभाऊ * मुनि अस प्रीति कीन नहिं काऊ
जो तुम कृपा कीन पगु धारे * मिटे अमंगल दोष हमारे ॥
साधु बिदेहराज श्रीजाकी * उपमा और कहौं नृप काकी
तुम उपमा उपमेय और सब * जहाँ प्रगट भइ कुजा आइ अब

दो०योगभोगमें गोइ मन, कियो न प्रगट प्रभाव ॥
भये बिदेह बिदेह सुनि, मुनि पुनि कह सतिभाव ॥

सुरंजन भंजने-खल-हेता * प्रगट भई नृप तव संकेता ॥
सकल लोकपति प्रभु सुखराशी * मिली इन्है बर जो अविनाशी
सुनिऋषिवचनमालगुहिलीन्ही * सोनिजउर सिय धारण कीन्ही
कहि सु कथा ऋषिराउ सिधाये * बहुरि दूत लंकापुर आये ॥
कहहिं कि घट आये हम राखी * सो शंकर गिरिजासन भाषी ॥
चारि ठांव हारा लंकेशा * देवनको बहु देत कलेशा ॥

॥ इति क्षेपक ॥

रवि शशि पवन वरुण धनुधारी * अग्नि काल यम सब अधिकारी
किन्नर सिद्ध मनुज सुर नागा * हठि सबहीके पंथहिं लागा ॥
ब्रह्मसृष्टि जहलँगि तनुधारी * दशमुखबशवर्ती नर नारी ॥
आयसु करहिं सकल भयभीता * नवहिं आइ नित चरण विनीता॥

दो०भुजबल विश्वबश्य करि,राखेसि कोउ न स्वतंत्र
मण्डलीकमणि रावण, राज करे निजमंत्र॥ १८९ ॥
दो०देव--यक्ष--गन्धर्व--नर,-किन्नर-- नागकुमारि ॥

---

१ पृथ्वीसे उत्पन्न सीता. २ दुष्टोंके नाशके लिये. ३ तुम्हारे. ४ घरमें.

जीति बरीं निजबाहुबल, बहु सुन्दर बरनारि १९०

इन्द्रजीतसन जो कछु कहेऊ * सो सब जनु पहिले करि रहेऊ ॥
प्रथमाहिं जिनकहँ आयसु दीन्हा * तिन्हकहँ चरित सुनहु जो कीन्हा ।
देखत भीमरूप सब पापी * निशिचरनिकर देवपरितापी ॥
करहिं उपद्रव असुरनिकाया * नानारूप धरहिं करि माया ॥
जेहिबिधि होइ धर्म निर्मूला * सो सब करहिं वेदप्रतिकूला ॥
जेहि जेहि देश धेनु द्विज पावहिं * नगर ग्राम पुर आगि लगावहिं ॥
शुभ आचरण कतहुँ नहिं होई * वेद विप्र गुरु मान न कोई ॥
नहिं हरि भक्ति यज्ञ जप दाना * सपनेहुँ सुनिय न वेद पुराना ॥

छन्द-जपयोगबिरागा तप मख भागा, श्रवणसुनै दशशीसा
आपुन उठि धावै रहै न पावै, धरि सब घालै खीसा॥
अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा, धर्म सुनियनहिं काना
तेहिं बहुविधि त्रासै देश निकासै, जो कह बेद पुराना ३७

सो०-बर्णि न जाय अनीति, घोर निशाचर जो करहिं
हिंसापर अतिप्रीत्ति, तिनके पापहिं कवन मिति १९१॥

बाढ़े बहु खल चोर जुआरी * जे लम्पट परधन परनारी ॥
मानहिं मातु पिता नहिं देवा * साधुनसों करवावहिं सेवा ॥
जिनके यह आचरण भवानी * ते जानउ निशिचरसम प्रानी ॥
अतिशय देखि धर्मकी हानी * परमसभीत धरा अकुलानी ॥
गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोहीं * जस मोहि गरुअ एक परद्रोही॥
सकल धर्म देखहि विपरीता * कहि न सकै रावण भयभीता ॥
धेनुरूप धरि हृदय विचारी * गई तहाँ जहँ सुरमुनिझारी ॥

---

१ सहर. २ बाजारवाले. ३ प्रमाण. ४ पृथ्वी. ५ सब.

निजसन्ताप सुनायसि रोई * काहूते कछु काज न होई ॥
छन्द॰ सुरमुनिगन्धर्वामिलिकरि सर्वा, गयेबिरंचिकेलोका
सँगगोतनुधारीभूमिबिचारी, परमबिकलभयशोका
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना, मेरो कछु न बसाई॥
जाकरितैं दासी सो अबिनाशी, हमरौ तोर सहाई १८
सो॰ धरणिधरहुमनधीर, कहबिरंचिहरिपदसुमिरि
जानत जनकी पीर, प्रभु भंजहिं दारुण बिपति २७
बैठे सुर सब करहिं बिचारा * कहँ पाइय प्रभु करिय पुकारा ॥
पुर वैकुंठ जान कह कोई * कोइ कह पॅयनिधिमहँ बस सोई
जाके हृदय भक्ति जस प्रीती * प्रभु तेहिं प्रगट सदा यह रीती ॥
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊँ * अवसर पाय बचन यक कहेऊँ॥
हरि व्यापक सर्वत्र समाना * प्रेमते प्रगट होहिं मैं जाना ॥
देशकालदिशि बिदिशिहुँमाहीं * कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं॥
अगजगमय सबरहित बिरागी * प्रेमते प्रभु प्रगटहिं जिमि आगी॥
मोर बचन सबके मन माना * साधु-साधु करि ब्रह्म बखाना ॥
दो॰ सुनि बिरंचि मन हर्ष तन, पुलक नयन बह नीर॥
अस्तुति करत स जोरि कर, सावधान मतिधीर९१
छन्द॰ जयजयसुरनायकजनसुखदायक, प्रणतपालभगवन्ता
गोद्विजहितकारी जयअसुरारी, सिंधुसुताप्रियकन्ता
पालनसुरधरणी अद्भुतकरणी, मर्म न जानै कोई॥*

* हे देवताओंमें मुख्य! हे भक्तोंके सुखदाता! हे दीनदयालु भगवान्! आपकी जय हो, जय हो. हे गोब्राह्मणोंके हितकर्ता! हे दैत्योंके शत्रु!

१ क्षीरसागरमें. २ स्थावरजंगम. ३ अच्छा बहुतआच्छा. ४ वे ब्रह्माजी.

जो सहजकृपाला दीनदयाला, करो अनुग्रह सोई १९
जयजय अविनाशी सबघटबासी, व्यापकपरमानन्दा
अभिगतगोतीताचरितपुनीता, मायारहितमुकुंदा ॥
जेहिलागिबिरागीअतिअनुरागी, बिगतमोहमुनिवृंदा
निशिवासरध्यावहिंहरिगुणगावहिं, जयतिसचिदानंदा
जेहिंसृष्टिउपाई त्रिविधबनाई, संगसहाय न दूजा ॥
सो करहुअधारी चिंतहमारी, जानियभक्ति न पूजा ॥
जो भवभयभंजन जनमनरंजन, गंजन विपतिबरूथा॥
मनबचक्रमबानीछाँडिसयानी, शरणसकलसुरयूथा २१
शारदश्रुतिशेषाऋषयअशेषा, जाकहँकोउनजाना ॥
जेहिं दीने पियारे बेदपुकारे, द्रवो सो श्रीभगवाना ॥

हे लक्ष्मीके प्यारे कांत! आपकी जय हो. हे देव और पृथ्वीके पालक! हे अद्भुत कर्मकर्ता! जिनका कोई भेद नहीं जानता और जो सहजही-में दया कर्ते हैं ऐसे दीनदयालु जो आपहो सो अनुग्रह करो ॥ १९ ॥ और जो नाशरहित, सबमें व्याप्त परमानंद यानी अद्वैत ब्रह्म और चौगिर्दसे प्राप्त, इन्द्रियोंसे परे, जिनकी लीला पवित्र है, मायारहित अर्थात् माया (अविद्याउपाधि) जो है तिस्से रहित, मोक्ष देनेवाले, जिनके लिये अतिअनुरागी और सब विषयभोगोंसे बिरक्त मोहरहित जो मुनिनके समूह वे रात्रि दिन ध्याते हैं और आपके गुण गाते हैं ऐसे हे सच्चिदानंद! आपकी जय हो ॥ २० ॥ हे प्रभु! आप जो संसारके भयनाश करनेवाले भक्तोंके मनको आनन्द देनेवाले, सब विपत्तियोंके दूर करनेवाले हो; जिनकी शरणमें सब चतुरता छोंड़ मन बचन कर्मसे सब देवतावोंके समूह प्राप्त होते हैं; जिसने बगैर सहाय

भवबारिधिमन्दर सबबिधिसुन्दर, गुणमंदिरसुखपुंजा॥
मुनिसिद्धसकलसुरपरमभयातुर,नमतनाथपदकंजा२२
दो०जानि भयातुर भुमि सुर,बचन समेत सनेह ॥
गगन गिरा गम्भीर भइ, हरणि शोकसन्देह १९२

जानि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेशा* तुमहिंलागि धरिहौं नरवेशा ॥
अंशनिसहित मनुज--अवतारा* लेहौं दिनकर[1]वंश उदारा ॥
*कश्यपअदिति महातप कीन्हा*तिनकहँ मैं पूरब बर दीन्हा ॥
ते दशरथ-कौशल्या- रूपा * कोशलपुरी प्रगट नरभूपा ॥
तिनके गृह अवतरिहौं जाई * रघुकुलतिलक सो चारिउ भाई॥
नारदबचन सत्य सब करिहौं * परमशक्तिसमेत अवतरिहौं ॥
हरिहौं सकल भूमिगरुआई * निर्भय होहु देव[2]समुदाई ॥
गगन ब्रह्मबाणी सुनि काना * तुरत फिरे सुर हृदय जुड़ाना ॥

अनेक प्रकारकी सृष्टि उत्पन्न करी सो हे पापनाशक! आप मेरी सुध लो. मैं आपकी भक्ति व पूजा कुछ नहीं जानता हूं ॥ २१ ॥ और जिनको सरस्वती, बेद, शेष, संपूर्ण, ऋषि आदि किसीने न जाना, जिनको वेद दीनदयालु कहते हैं, जो संसारसागरके मथनेको मंदराचल, सब तरेसे सुंदर, गुणनको घर और सुखका समूह हैं सो भगवान् मेरे ऊपर दया करें; क्योंकि हे प्रभु ! मुनि, सिद्ध, देवता आदि सबलोग अत्यंत भयातुर होके हे नाथ ! आपके चरणकमलोंको नमस्कार करते हैं ॥ २२ ॥

* कोई समयमें कश्यप ऋषि और उनकी स्त्री देवमाता अदितिने तपस्या करके, विष्णुजीसे बरदान माँग लिया कि-जब जब आप जन्म लेओगे तब तब माता पिता हम होवें इसीसे वेही ये कौसल्या दशरथ होते भये.

१ सूर्यवंशमें. २ देवता.

तब ब्रह्मा धरणिहिं समुझावा * अभय भई भरोस जिय आवा ॥

दो०निजलोकहिं बिरंचि गे, देवन्ह यहै सिखाइ ॥
बानरतनु धरि धरणिमहँ, हरिपद सेवहु जाइ१९३

गये देव सब निज निज धामा * भूमिसहित पाये बिश्रामा ॥
जो कछु आयसु ब्रह्मै दीन्हा * हर्षे देव बिलम्ब न कीन्हा ॥
बनचरदेह[1] धरी क्षितिमाहीं * अतुलितबल प्रताप तिनपाहीं ॥
गिरि-तरु[2]-नखआयुध सब बीरा * हरिमारग चितवहिं रणधीरा ॥
गिरिकानन जहँ तहँ भरिपूरी * रह निजनिज अनीक[3] रुचिरूरी ॥

अथ क्षेपक ॥

यह सब चरित सुना बिबुधारी[4] * जन्मतहीं हत करब बिचारी ॥
बसत सकल मम वश रबिबंशी * ते का शकिहैं मोहिं बिध्वंशी ॥
तद्यपि सजग रहे का हानी * दिये असुर करि कछु तहँ थानी ॥
उत्पति मरणआदि कछु होई * करि सम्मत पहुँचावैं सोई ॥
भये दिलीप भूप जब आई * जानि असुर सब दिये उठाई ॥
सुनि रावण बल देखन आवा * द्विज लखि सब रानिनं बैठावा ॥
पूजत पद प्रगटेसि निजरूपा * भागीं भवन भीरु मणिभूपा ॥
तब रावण सरयूतट आयो * अर्चत तंडुल नृपति चलायो ॥
पूँछा लोगनते तब कहेऊ * धेनुहिं हरि इक मारन चहेऊ ॥
सुमिरत सपदि शालि हौं प्रेरे * क्षतशर व्है लागे हरिकेरे ॥
सुनि दशमुखमन अचरज आवा * देखा जाय मृतक बन पावा ॥
समुझि प्रताप गयो निजधामा * नृपते हाल कहा नृपवामा ॥

दो०रावणकृतसुनिअवधपति, चंगुलभरिजललीन

---

१ वानरऋक्षनकी देह. २ वृक्ष. ३ फौज. ४ रावण.

पवनमंत्र पढि क्रोधयुत,दक्षिण दिशि तजि दीन२१
भये बिशिखं दशलाख लखि, कह नृप लंकहिं जाहु
सहित त्रिकूट समुद्रमहँ, बोरि फिरहु तेहि नाहु २२
सो०चले पवनगति मोरि, जातै उलटावन लगे ॥
मयतनया कर जोरि, दीन्ह दोहाई नृपतिकी ॥१॥
तव शरनिकर नृपतिपहँ आये* मयतनयाके वचन सुनाये ॥
इमि दशसहसवर्ष चलिगयऊ * रघुराजा तब परचौ दयऊ ॥
मारुतबाण दहन गृह लागे * बनितोबिनयवचन सुनि त्यागे ॥
बहुरि भये अजअवनिपकानन* माँझ देखि रण रच्यो दशानन ॥
अनिलअस्त्रते कटकसमेता * दीन ताहि पहुँचाय निकेता ॥
तेजवान लखि रहा चुपाई * तेहि पाछे भे दशरथराई ॥
दो०दशसहस्र रविकर लखैं, दशौ दिशा रथ जाहि
दशशिररिपु प्रगटै सुवन, कहिये दशरथ ताहि २३
सुनि रावण निजदूतमुख, माँगि पठायो दंड ॥
हरिशर प्रेरे भूप कहि, जड्यो कपाट प्रचंड ॥ २४ ॥
जो रावण पट लेइ उघारी * तौ हम कर देई बिन रारी ॥
मंदिरद्वार गये सब मूँदी * रहा उघारि असुरपति खूँदी ॥
टसक्यो पटन भटन मुख मोरे* मिली माग मयजा कर जोरे ॥
तब रावण मन बात बिचारी * बिपिन जाइ कीन्हिसि तप भारी
बरंब्रूहि ब्रह्मा जब भाषा * बोला तब दशमुख अभिलाषा ॥
दशरथ--नृप—बीरजते सोई * जगमें पुत्र न प्रगटै कोई ॥

१वाण. २स्रीकी नम्र बातें. ३अजनाम राजा. ४ पवनके बाण. ५ दंड.

सुनि स्रष्टा मनमें दुख माना * ऐवमस्तु कहि कीन पयाना ॥
तब दशमुख कोशलपुर गयऊ * कौशल्यै हरि लावत भयऊ ॥
सहित मँजूषा सागर जाई * राघवमच्छ दिहिसि सौंपाई ॥
चतुरानन धरि रावणरूपा * लाये माँगि सुता सोइ भूपा ॥
बनमें धरि बिधि गे निजलोका * तहँ सुमंतु पट खोलि बिलोका ॥
कन्याते बोले मृदु बानी * तुम हौ किनकी सुता सयानी ॥
तब कौसल्या गिरा उचारी * हम हैं कोशलराज--कुमारी ॥
नहिं जाना को बनमें लावा * सुनि सुमंतु तुरतै उठवावा ॥
लै आये कोशलपुर तामा * रोदन होत रहै नृपधामा ॥
जाय मँजूषा भूपहिं दीन्हा * जेहिविधि मिली सो वर्णन कीन्हा
बोले नृप तुम को हौ ताता * कह सुमंतु सुनिये प्रभु बाता ॥
अवधपुरी नृप दशरथ नामा * धर्मधुरंधर सबगुणधामा ॥
बलानिधि लयनिधि रघुकुलदीपा * तासु सचिव हम अहैं महीपा ॥
सुनि राजा बोला कहि धन्या * तव नृपका बरिहौं मैं कन्या ॥
तुरतै नाऊ बिप्र पठावा * नृपके टीका आइ चढ़ावा ॥
चली बरात विपुलनरनाहा * बड़ी धूमते भयो बिबाहा ॥
बिदा कराइ फिरे सब धामा * मग खरादि रोंक्यो सुनि नामा ॥
कौशल्यै लय मुनिथल राख्यो * शिवबरदान अभय गुरु भाष्यो ॥
आप समरकरि असुरबिडार्‌यो * देखि विजय सुरे जयति उचार्‌यो ॥

दो०तहँ बिरधासनसुतसुता, नाम सागरा आनि॥
दीन्हीं ब्याहि सुमंतुकहँ, सुभँग गर्गकुलजानि२५

दीन्ह्यो दायज विविध प्रकारा * भये मुदित मुनि सहितभुवारा ॥

१ ब्रह्मा. २ यही हो. ३ ब्याहि हौं. ४ दशरथके. ५ देव. ६ सुंदर.

पुनि व्हैबिदा निलयँ निज आये * बहुबिधि दान याचकन पाये ॥
तब केकयी सुमित्रा परनी * तिन पाछे ब्याही बहु धरनी ॥
करहिं सदा सेवा सब रानी * पालैं भूप प्रजहिं सनमानी ॥

॥ इति क्षेपक ॥

यह सब रुचिर चरित मैं भाषा * अब सो सुनहु जो बीचहिं राषा॥
अवधपुरी रघुकुलमणिराऊ * बेदविदित तेहि दशरथ नाऊ ॥
धर्मधुरंधर गुणनिधि ज्ञानी * हृदय भक्तिमति शारंगपानी ॥

दो०कौशल्यादि नारि प्रिय, सब आचरण पुनीत॥
पतिअनुकूल प्रेम दृढ़, हरिपदकमल बिनीत १९४

एकबार भूपति–मनमाहीं * भै गलानि मोरे सुत नाहीं ॥
गुरुगृह गये तुरत महिपाला * चरणलागि करि बिनय बिशाला
निजदुखसुखनृपगुरुहिं सुनायो * कहि बाशिष्ठ बहुबिधि समुझायो
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी * त्रिभुवनबिदित भक्तभयहारी ॥
शृंगीऋषिहिं बाशिष्ठ बुलावा * पुत्रलागि शुभ यज्ञ करावा ॥
भक्तिसहित मुनि आहुतिदीन्हे * प्रकटे अग्नि चरू कर लीन्हे ॥
जो बसिष्ठ कछु हृदय बिचारा * सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा ॥
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई * यथा योग्य जेहि भाग बनाई ॥

दो०तब अदृश्य पावक भये, सकलसभहिं समुझाय
परमानंदमग्न नृप, हर्ष न हृदय समाय ॥१९५॥

तबहिं राउ प्रिय नारि बुलाई * कौशल्यादि तहाँ चलि आई ॥
अर्ध भाग कौशल्यहिं दीन्हा * उभय भाग आधे कर लीन्हा ॥
कैकेयीकहँ सो नृप दयऊ * रहेउ सो उभय भाग पुनि भयऊ॥

१ घर. २ ब्याही. ३ स्त्रियां ४ शार्ङ्गधनुष है हाथमें जिनके ऐसे प्रभुकी.

कौशल्या कैकयी हाथ धरि * दीन्ह सुमित्राहिं मन प्रसन्न करि॥
यहिबिधि गर्भसहित सब नारी * भयेउ हृदय हर्षित सुख भारी ॥
जादिनते हरि गर्भाहिं आये * सकल-लोक-सुख-संपति-छाये॥
मन्दिरमहँ सब राजहिं रानी * शोभाशील तेजकी खानी ॥
सुखयुत कछुककाल चलिगयऊ * जेहि प्रभु प्रकट सो अवसरभयऊ

दो०योग लग्न ग्रह बार तिथि, सकल भये अनुकूल
चर अरु अचर हर्षयुत, रामजन्म सुखमूल १९६

नवमी तिथि मधुमास[2] पुनीता * शुक्लपक्ष अभिजित[3] हरिप्रीता
मध्यदिवस अतिशीत न घामा * पावन काल लोकबिश्रामा ॥
शीतल मन्द सुरभि बह बाऊ * हर्षित सुर सन्तनमन चाऊ ॥
बन कुसुमितगिरिगण मणियारा[4] * श्रवहिंसकलसरितामृत धारा ॥
सो अवसर बिरंचि जब जाना * चले सकलसुर साजि बिमाना ॥
गगन बिमल संकुल सुरयूथा * गावहिं गुण गन्धर्वबरूथा ॥ *
बर्षहिं सुमन सुअंजलि साजी * गह गह गगन दुन्दुभी बाजी ॥
अस्तुति कराहिं नाग मुनि देवा * बहुबिधिलावहिं निजनिजसेवा

दो०सुरसमूह बिनती करी, पहुँचे निज निज धाम
जगनिबास प्रभु प्रगटेउ, अखिललोकबिश्राम १९७

छंद०भयेप्रगटकृपालादीनदयाला, कौशल्याहितकारी
हर्षित महतारी मुनिमनहारी, अद्भुत रूप निहारी॥
लोचनअभिरामातनुघनश्यामा, निजआयुधभुजचारी
भूषणबनमालानयनबिशाला, शोभासिंधुखरारी २३

---

१ अच्छे. २ चैत्रमास. ३ नक्षत्र. ४ मणियोंसे युक्त भये.

कहदुहुँकरजोरीअस्तुतितोरी, केहिविधिकरौंअनन्ता ॥
मायागुणज्ञानातीत अमाना, बेदपुराण भनन्ता * ॥
करुणासुखसागरसबगुणआगर, जेहिंगावहिंश्रुतिसंता ॥
सोममहितलागी जन अनुरागी, प्रगट भये श्रीकंता
ब्रह्माण्डनिकाया निर्मित माया, रोमरोमप्रति बेद कहै
ममउरसोबासीयहउपहासी, सुनतधीरमतिथिरनरहै ॥
उपजाजबज्ञानाप्रभुमुसकाना चरितबहुतविधिकीन्हचहै ॥
कहिकथासुनाई मातबुझाई जेहिप्रकारसुतप्रेमलहै ॥२५॥

* वे दीनदयालु, कृपालु, कौशल्याके हितकर्ता, भगवान् प्रगट भये. कैसे हैं प्रभु? कि मुनिनके मनको हरनेवाले जिनके अद्भुत रूपको देखके माता प्रसन्न भई; जिनके नेत्र मनोहर हैं; देह मेघकी माफिक श्याम हैं; शंख; चक्र, गदा व पद्म धारण किये हैं; चार भुजायें हैं; बनमालासे भूषित हैं, विशाल नेत्र हैं; शोभाके समुद्र. और खर दानवके शत्रु हैं ॥ २३ ॥ तब कौशल्याजी दोनों हाथ जोड़ बोलीं कि हे अनंत! आपकी स्तुति मैं कैसे करूं! आपको बेद और पुराण, माया गुण व ज्ञानसे रहित और आदिअंतरहित कहते हैं; तथा दया व सुखोंके समुद्र और गुणोंके घर आप हो ऐसा बेद और संत कहते हैं. वे भक्त-वत्सल आप मेरे हितके लिये साक्षात् लक्ष्मीपति प्रगट भये ॥ २४ ॥ और मायाके बनाये बहुतसे ब्रह्माण्ड आपके रोवें रोवेंमें हैं ऐसाभी बेद कहते हैं; सो; ऐसे आपने मेरे हृदयमें बास किया यह उपहासकी बात है. इसको सुन, धीर पुरुषोंकीभी बुद्धि स्थिर नहीं रहती. हे पार्वती! इसप्रकार जब कौशल्याको ज्ञान पैदा हुवा तब रामजी मुसक्याने. क्योंकि वे प्रभु बहुत तरहका चरित्र किया चहैं. पीछे भगवानने बहुत कथा कह, माताको समुझाया कि जिससे पुत्रमें प्रेम लगै. ॥२५॥ जब

मातापुनिबोलीसोमतिडोली तजहुतातयहरूपा ॥
कीजैशिशुलीलाअतिप्रियशीला,यहसुखपरमअनूपा
सुनिबचनसुजानारोदनठाना, होयबालकनरभूपा ॥
यह चरितजेगावहिंहरिपदपावहिं,तेनपरैंभवकूपा॥
दो०बिप्रधेनुसुरसंतहित, लीन्ह मनुजअवतार ॥
निजइच्छानिर्मित तनु, मायागुणगोपार ॥ १९८ ॥

सुनि शिशुरुदन परमप्रिय बानी * सम्भ्रम चलि आई सब रानी ॥
हर्षित जहँ तहँ धाई दासी * आनँदमग्न सकल पुरबासी ॥
दशरथ पुत्रजन्म सुनि काना * मानहुँ ब्रह्मानन्दसमाना ॥ *
परम प्रेम मन पुलक शरीरा * चाहत उठन करत मति धीरा ॥
जाकर नाम सुनत शुभ होई * मोरे गृह आवा प्रभु सोई ॥ *
परमानन्द पूरि मन राजा * कहा बुलाइ बजावहु बाजा ॥
गुरु बसिष्ठकहँ गयेउ हँकारा * आये द्विजनसहित नृपद्वारा ॥
अनुपम बालक देखि न जाई * रूपराशि गुण कहि न सिराई ॥

दो०तब नांदीमुख श्राद्ध करि,जातकर्म सब कीन्ह
हाटक धेनु वसन मणि, नृप विप्रनकहँ दीन्ह१९९

ऐसी बुद्धि मोहित हो गई तब माता फिर बोली कि- हे पुत्र! यह रूप छोड़ो और बड़ी प्यारी बाललीला करिये; यही सबसे उत्तम उपमारहित सुख है. ऐसा बचन सुन, बड़े चतुर भगवान् नारायण राजकुमार हो, रोने लगे. ऐसे यह चरित जो गातेहैं वे लोग संसाररूपी कुयेमें नहीं पड़ते किन्तु बैकुण्ठ पाते हैं ॥ २६ ॥

१ देह. २ बालकका रोना. ३ शीघ्र. ४ सोना.

ध्वज पताक तोरण पुर छावा * कहि न जाय जेहि भाँति बनावा ॥
सुमनवृष्टि आकाशते होई * ब्रह्मानंदमग्न सबकोई * * ॥
वृन्द वृन्द सब चलीं लुगाई * सहज शृंगार किये उठि धाई ॥
कनककलश मंगल भरि थारा * गावत पैठहिँ भूपदुआरा * ॥
करि आरती निछावरि करहीं * बार बार शिशुचरणन परहीं ॥
मागध सूत बंदि गुणगायक * पावन गुण गावहिं रघुनायक ॥
सर्बस दान दीन्ह सबकाहू * जेहि पावा राखा नाहिं ताहू ॥
मृगमद–चन्दन –कुंकुमकीचा * मची सकल बीथिन बिच बीचा ॥

दो०गृह गृह बाज बधाव शुभ, प्रगट भये सुखकन्द
हर्षवंत सब जहँ तहँ, नगरनारिनरवृन्द ॥ २०० ॥

केकयसुता सुमित्रा दोऊ * सुन्दरसुत जन्मत भइँ सोऊ ॥
वह सुखसम्पति समय समाजा * कहि न सकैं शारद अहिराजा ॥
अवधपुरी सोहै इहि भाँती * प्रभुहिँ मिलन आई जनु राती ॥
देखि भानु जनु मन सकुचानी * तदपि बनी सन्ध्या अनुमानी ॥
अगर धूप जनु बहु अँधियारी * उड़ै अबीर मनहुँ अरुणारी ॥
मन्दिर मणिसमूह जनु तारा * नृपगृह कलश सो इंदु उदारा ॥
भवन वेदधुनिअनि मृदु बानी * जनु खग मुखर समय सुखसानी ॥
कौतुक देखि पतंग भुलाना * एकमास तेहिँ जात न जाना ॥

दो०मासदिवसका दिवस भा, मर्म न जानै कोइ ॥
रथसमेत रवि थाकेउ, निशा कौनबिधि होइ २०१

यह रहस्य काहू नहिं जाना * दिनमणि चले करत गुणगाना ॥

---

१ सोना. २ इन्द्रध्वज. ३ फूलोंकी बरसात. ४ सोनेके कलश. ५ वस्तु.

देखि महोत्सव सुर मुनि नागा * चले भवन वर्णत निजभागा ॥
औरौ एक कहौं निजचोरी * सुनु गिरिजा अतिदृढ़मति तोरी॥
काकभुशुण्डिसंग हम दोऊ * मनुजरूप जानैं नहिं कोऊ ॥
परमानन्द प्रेम—सुख—फूले * बीथिनै[1] फिरहिं मग्नमन भूले ॥
यह सब चरित जान पै सोई * कृपा रामकी जापर होई ॥
तेहिअवसर जोजेहिविधिआवा * दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा ॥
गज रथ तुरग हेम गो हीरा * दीन्हे नृप नानाविधि चीरा ॥

दो०मन सन्तोषे सबनके, जहँ तहँ देहिं अशीश ॥
सकलतनय चिरजीवहू, तुलसिदासके ईश२०२॥

कछुक दिवस बीते यहि भाँती*जात न जानहिं दिन अरु राती ॥
नामकरणकर अवसर जानी * भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी ॥
करि पूजा भूपति अस भाषा * धरिय नाम जो मुनि गुनि राषा॥
इनके नाम अनेक अनूपा * मैं नृप कहब स्वमतिअनुरूपा ॥
जो आनन्दसिंधु सुखराशी * शीकरते[3] त्रैलोक्यसुपाशी ॥
सो सुखधाम राम अस नामा * अखिल लोक दायक बिश्रामा॥
विश्व भरण पोषण करु जोई * ताकर नाम भरत अस होई ॥
जाके सुमिरणते रिपुनाशा * नाम शत्रुहन वेदप्रकाशा ॥

दो०लक्ष्मणधाम रामप्रिय, सकलजगतआधार ॥
गुरु बसिष्ठ तेहि राखेऊ, लक्ष्मण नाम उदार २०३

धरे नाम गुरु हृदय बिचारी * बेदतत्व नृप तव सुत चारी ॥
मुनिजनधन सर्बस शिवप्राना * बालकेलिरस तेहिं सुखमाना ॥

---

१ सूर्य. २ गलियोंमें. ३ किणुकासे. ४ संसारका.

बारेहित निजहित पति जानी * लक्ष्मण रामचरणरति मानी ॥
भरत शत्रुहन दोनों भाई * प्रभुसेवक जस प्रीति बड़ाई ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी * निरखहिं छबिजननीतृण तोरी॥
चारिउ शील-रूप-गुण-धामा * तदपि अधिक सुखसागर रामा॥
हृदय अनुग्रह इन्दुप्रकासा * सूचित किरण मनोहर हासा ॥
कबहुँ उछंग कबहुँ बर पालन * मातु दुलारहि कहि प्रिय लालन

दो०व्यापक ब्रह्म निरंजन, निर्गुण बिगतविनोद ॥
सो अज प्रेमभक्तिबश, कौशल्याकी गोद ॥२०४॥

कामकोटिछबि श्यामशरीरा * नीलकंज बारिद गंभीरा ॥
अरुणचरणपंकज नखजोती * कमलदलन बैठे जनु मोती ॥
रेख कुलिश ध्वज अंकुश सोहैं * नूपुरधुनि सुनि मुनिमन मोहैं ॥
कटि किंकिणी उदर त्रय रेखा * नाभि गँभीर जानु जेहि देखा ॥
भुज विशाल भूषणयुत भूरी * हिय हरिनखशोभा अतिरूरी ॥
उर मणिहार पदिककी शोभा * विप्रचरण देखत मन लोभा ॥
कम्बुकंठ अतिचिबुक सुहाई * आनन अमितमदनछबि छाई ॥
दुइ दुइ दशन अधर अरुणारे * नासा तिलक को बर्णै पारे ॥
सुन्दर श्रवण सुचारु कपोला * अति प्रिय मधुर सुतोतरि बोला॥
नीलकमल दोउ नयन बिशाला* विकट भृकुटि लटकन बरमाला
चिक्कण कच कुंचित गभुआरे * बहुप्रकार रचि मातु सँवारे ॥
पीत झँगुलिया तनु पहिराये * जानु पाणि बिचरत महि भाये
रूप सकाहिं नहिं कहिश्रुतिशेषा * सो जाने सपनेहुँ जिन्ह देषा ॥

दो० सुखसन्दोह मोहपर, ज्ञान गिरागोतीत ॥*

---

१ बालपनते. २ आत्माराम. ३ जन्मरहित. ४ श्यामकमल.

दम्पति परमप्रेमबश, करि शिशुचरित पुनीत २०५

॥ अथ क्षेपक ॥

एकदिन एक सलूका आवा * नृपके द्वारे कीशै नचावा * ॥
देखि राम ठानी मचलाई * कहैं कि मोहिं कपि देहु मँगाई ॥
भूप मँगाय देन बहु लागे * तदपि न लेत रुदत पुनि आगे ॥
तब नृप भाष्यो गुरुते जाई * सुनि बशिष्ठ बोले हर्षाई * ॥

दो० जेहि हित रोवत रामजी, सो मर्कट है आन॥
सुनौ नृपति सो रहत जहँ, तुमते करौं बखान ॥१॥

केसरिसुवन नाम महबीरा * रहत सदा पंपासरतीरा * ॥
है रविसुत कीशनकर राजा * तहाँ रहत नित सहित समाजा ॥
दूत पठाय लेहु तुम आनी * तुमसन कहौं सत्य मम बानी ॥
तुरत भूप भट भूरि पठाये * सकल सुकंठपास चलिआये ॥
जो नृप कह्यो सो वर्णन कीन्हा * सुनि सुकण्ठ तुरतै कपि दीन्हा ॥
लै आये मंदिर हर्षाई * देखि राम उर लीन लगाई ॥
हनूमानके अतिसुख भयऊ * मिलि लघुरूप तहाँ होय गयऊ ॥
जहँ जहँ खेलैं राम सुरंगा * तहँ तहँ कपि राखैं निजसंगा॥
यकदिन राम पतंग उड़ाई * देवलोक सो पहुँची जाई ॥
तहँ हरिसुत जयन्तकी नारी *अतिविचित्र त्याहिं चंग निहारी॥

दो०मनमेंकिहिसिबिचारइमि, जासुगुडीअसिआहि
सो पूरुष कस होइ धौं,हँसिगहिलीन्हेसि ताहि३१

तब प्रभु हनूमानते भाखी * देखौ काहिं पतंग गहि राखी ॥
तुरत पवनसुत जाइ निहारी * देहु छाँड़ि पुनि गिरा उचारी॥

१ बन्दर नचानेवाला. २ बन्दर. ३ केसरीका पुत्र. ४ सूर्यपुत्र सुग्रीव.

बोली जासु चंग यह आही * दर्शन तासु कीन हम चाही * ॥
ताहीते याको हम गहेऊ * आइ अनिलसुत प्रभुते कहेऊ॥
सुनि हरि कहा कहउ तुम जाई * चित्रकूटमहँ देब देखाई * * ॥
हनूमान चलि तासों भाषा * दिहिसि छाँड़िमनकारिअभिलाषा॥
तब रघुनाथ खैंचि सो लीन्हा * निशि गृह आय बियारू कीन्हा॥

॥ इति क्षेपक ॥

यहि बिधि राम जगतपितुमाता * कोशलपुरबासिन सुखदाता ॥
जिन रघुनाथचरण रति मानी * तिनकी यह गति प्रगट भवानी॥
रघुपतिबिमुख यत्नकर कोरी * कवन सकै भवबन्धन छोरी ॥
जीव चराचर बश कै राषै * सो माया प्रभुसों भय भाषै ॥
भृकुटिबिलास नचावै ताही * अस प्रभु छांड़ि भजिय कहुकाहीं
मन क्रम बचन छाँड़ि चतुराई * भजतहिं कृपा करैं रघुराई * ॥
यहिबिधि शिशुबिनोद प्रभु कीन्हा * सकलनगरबासिन्ह सुख दीन्हा
लै उछंग कबहूँ हलरावैं * कबहुँ पालने घालि झुलावैं ॥

दो०प्रेममग्न कोशलसुता, निशिदिन जात न ज़ान
सुतसनेहबश मातुअति, बालचरित कर गान२०६

एकबार जननी अन्हवाये * करि सिंगार पलँग पौढ़ाये * ॥
निजकुल इष्टदेव भगवाना * पूजा–हेतु कीन्ह पकवाना ॥
करि पूजा नैवेद्य चढ़ावा * आपु गई जहँ पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहँवाँ चलिआई * भोजन करत दीख रघुराई * ॥
गइ जननी शिशुपहँ भयभीता * सोवत बालक तहाँ पुनीता ॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई * हृदय कम्प मन धीर न होई ॥

१ बाललीलाको आनंद. २ रसोई. ३ ब्रह्मा. ४ नदी.

इहाँ उहाँ दुइ बालक देषा * मतिभ्रम मोरि कि आनबिशेषा॥
देखि रामजननी अकुलानी * प्रभु हँसि दीन मधुर मुसुकानी॥

दो०दिखरावा मातहिं निज, अद्भुतरूप अखण्ड ॥
रोमरोमप्रति लागेउ, कोटि कोटि ब्रह्मांड ॥२०७॥

अगणित रबिशशिशिवचतुरानन*बहुगिरि सरित सिंधु महिकानन॥
काल कर्म गुण दोष सुभाऊ * सो देखा जो सुना न काऊ ॥
देखी माया सबबिधि गाढ़ी * अतिसभीत जोरे कर ठाढ़ी *॥
देखा जीव नचावै जाही * देखी भक्ति जो छोरै ताही *॥
तनु पुलकित मुख बचन न आवा*नयन मूँदि चरणन शिर नावा॥
विस्मयवंत देखि महतारी * भये बहुरि शिशुरूप खरारी ॥
अस्तुति करि न जाय भय माना* जगतपिता मैं सुत करि जाना॥
हरि जननिहिं बहुबिधि समुझाई* यह जनि कतहुँ कहसि सुनु माई

दो०बार बार कोशलसुता, बिनय करै कर जोरि॥
अब जनि कबहूँ व्यापै, प्रभु मोहिं माया तोरि२०८

बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा*अतिअनंद दासनकहँ दीन्हा ॥
कछुक काल बीते सब भाई * बड़े भये परिजनसुखदाई *॥
चूड़ाकरण[१] कीन्ह गुरु आई * बिप्र दक्षिणा पुनि बहु पाई ॥
परममनोहर चरित अपारा * करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥
मनक्रमबचनअगोचर जोई * दशरथअजिरे[२] बिचर प्रभु सोई ॥
भोजन करत बुलावत राजा * नहिं आवहिं तजि बालसमाजा ॥
कौसल्या जब बोलन जाई * ठुमुकि ठुमुकि प्रभु चलहिं पराई ॥
निगम नेति शिव अन्त न पावा*ताहि धरैं जननी हठि धावा ॥

१ मुंडन. २ दशरथके आंगनमें.

धूसर धूरभरे तनु आये * भूपति बिहँसि गोद बैठाये * ॥

दो०भोजन करत चपलचित;इत उत अवसर पाइ
भाजि चलेकिलकातमुख;दधि[1]ओदन[2]लपटाइ२९॥

जिनकर मन इनसन नहिं राता * ते जग बंचित[3] किये बिधाता ॥
भये कुमार जबहिं सब भ्राता * दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥
गुरुगृह गये पठन रघुराई * अल्पकाल[4] विद्या सब पाई * ॥
जाकी सहजश्वास श्रुति चारी * सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी ॥
विद्याबिनयनिपुण गुणशीला * खेलहिं खेल सकल नृपलीला ॥
करतल बाण धनुष अति सोहा * देखत रूप चराचर मोहा * ॥
जिन बीथिन बिचरहिं सब भाई * थकित होहिं सबलोग लुगाई ॥

दो०कोशलपुरवासी नर, नारि वृद्ध अरु बाल ॥
प्राणहुते प्रिय लागहीं, सबकहँ राम कृपाल॥२१०॥

बन्धु सखा सब लेहिं बुलाई * बन मृगया नित खेलहिं जाई
पावन मृग मारहिं जिय जानी * दिनप्रतिनृपहिं देखावहिं आनी
जे मृग रामबाणके मारे * ते तनु तजि सुरलोक सिधारे
अनुजसखासँग भोजन करहीं * मातुपिताआज्ञाअनुसरहीं * ॥
जेहिबिधि सुखी होइँ पुरलोगा * करहिं कृपानिधि सोइ संयोगा ॥
वेद पुराण सुनहिं मन लाई * आपु कहहिं अनुजहिं समुझाई ॥
प्रातकाल उठिकै रघुनाथा * मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥
आयसु माँगि करहिंपुरकाजा * देखि चरित हर्षहिं मन राजा ॥

दो०व्यापक अकल[5] अनीह अज, निर्गुण नाम न रूप
भक्तहेतु नानाबिधिहिं, करत चरित्र अनूप॥२२१॥

---

१ दही २ भात. ३ छलित. ४ थोरेही समयमें ५ कलारहित.

यह सब चरित कहा मैं गाई *आगिल कथा सुनहु मन लाई ॥
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी *बसहिं बिपिन शुभआश्रम जानी
तहँ जप यज्ञ योग मुनि करहीं *अति मारीच सुबाहुहिं डरहीं ॥
देखत यज्ञ निशाचर धावहिं * करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं
गाधितनयमन चिन्ता व्यापी * हरिबिन मरहिं न निशिचर पापी
तब मुनिबर मन कीन्ह बिचारा * प्रभु अवतरेउ हरण महिभारा॥
यहि मिसि देखौं प्रभुपद जाई * करि विनती आनौं दोउ भाई॥
ज्ञानबिराग–सकलगुणअयना * सो प्रभु मैं देखब भरि नयना ॥
"क्वारकृष्ण ऋषिदिवस सिधाये* नौमीदिन कोशलपुर आये" ॥

दो०बहुबिधि करत मनोरथ, जात न लागी बार ॥
करि मज्जन सरयूजल, गये भूपदरबार ॥२१२॥

मुनिआगमन सुना जब राजा * मिलन गयउ लै बिप्रसमाजा ॥
करि दंडवत मुनिहिं सनमानी * निजआसन बैठारे आनी ॥
चरण पखारि कीन्ह अतिपूजा * मोसम धन्य आजु नहिं दूजा॥
बिबिधभांति भोजन करवावा * मुनिबरहृदय हर्ष अति छावा ॥
पुनि चरणन मेले सुत चारी * राम देखि मुनि बिरति[१] बिसारी॥
भये मग्न देखत मुखशोभा * जनु चकोर पूरण शशिलोभा ॥
तब मन हर्ष बचन कह राऊ * मुनि अस कृपा कीन्ह नाहिं काऊ
केहिकारण आगमन तुम्हारा * कहहु सो करत न लाउब बारा॥
असुरसमूह सतावहिं मोहीं * मैं याचने[२] आयउँ नृप तोहीं ॥
अनुजसमेत देहु रघुनाथा * निशिचरबध मैं होब सनाथा॥

दो० देहु भूप मन हर्ष[३] करि, तजहु मोह अज्ञान ॥

१ वैराग्य. २ मांगन. ३ आनन्द.

धर्म सुयश नृप तुमहुँकहँ, इनकहँ अतिकल्यान२१३

सुनि राजा अतिअप्रियबानी * हृदय कम्प मुखद्युति कुम्हिलानी
चौथेपन पायउँ सुत चारी * बिप्र वचन नहिं कहेउ बिचारी
माँगहु भूमि धेनु धन कोषा * सर्बस देउँ आजु सहरोषा ॥
देह प्राणते प्रिय कछु नाहीं * सोउ मुनि देउँ निमिष यकमाहीं
सबसुत प्रिय मोहिं प्राणकिनांई * राम देत नहिं बनै गोसांई ॥
कहँ निशिचर अतिघोर कठोरा * कहँ सुन्दर सुत परमकिशोरा॥
सुनि नृपगिरा प्रेमरससानी * हृदय हर्ष माना मुनि ज्ञानी ॥
तब वसिष्ठ बहुबिधि समुझावा * नृपसंदेह नाशकहँ पावा ॥
अतिआदर दोउ तनय बुलाये * हृदय लाइ बहुभांति सिखाये ॥
मेरे प्राणनाथ सुत दोऊ * तुम मुनि पिता आन नहिं कोऊ॥

दो०सौंपे भूपति ऋषिहिं सुत, बहुविधि देइ अशीश
जननीभवन गये प्रभु, चले नाइ पद शीश॥२१४॥

सो०पुरुषसिंह दोउ बीर, हर्षि चले मुनि भयहरण
कृपासिंधु मतिधीर, अखिलबिश्वंकारणकरण५८

"दुवादशीदिन पारण करिकै * पुरबासिनको धीरज धरिकै ॥
चले दीन हनुमानै छोरी * कछु दिनमहँ बन मिलबबहोरी"
अरुणनयन उर बाहु बिशाला * नीलजलजं तनु श्याम तमाला॥
कटि पट पीत कसे बर भाथा * रुचिरचाप सायक दुहुँहाथा ॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई * बिश्वामित्र महानिधि पाई ॥
प्रभु ब्रह्मण्यदेव मैं जाना * मोहिं हित पिता तजेउ भगवाना
चले जात मुनि दीन्ह दिखाई * सुनि ताड़ुका क्रोध करि धाई ॥

१ समस्त संसारके कारणके कारण. २ श्यामकमल. ३ तरकस.

"परिवादिवस ताडुका धाई * रामहिं मुनिवर दीन देखाई"॥
एकहि बाण प्राण हरि लीन्हा * दीन जानि तेहिं निजपद दीन्हा॥
तबऋषिनिजनाथहिंजियचीन्हा* बिद्यानिधिकहँ बिद्या दीन्हा॥
जाते लागि न क्षुधा पिपासा * अतुलित बल तनुतेज प्रकासा

दो० आयुध सकलसमर्पिकै, प्रभु निजआश्रम आनि
कन्द मूल फल भोजन, दिये भक्तहित जानि॥२१५॥

प्रात कहा मुनिसन रघुराई * निर्भय यज्ञ करहु तुम जाई॥
होम करन लागे मुनिझारी * आपु रहे मखकी रखवारी॥
सुनि मारीच निशाचर कोही * ले सहाय धावा मुनिद्रोही॥
बिनुफरबाण राम तेहिं मारा * शतयोजन गा सागरपारा*॥
पावकशर सुबाहु पुनि मारा * अनुज निशाचरकटकं संहारा
मारि असुर द्विजनिर्भयकारी *अस्तुति करहिं देवमुनिझारी॥
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया * रहे कीन्ह विप्रनपर दाया॥
भक्तिहेतु बहु कथा पुराना * कहैं बिप्र यद्यपि प्रभु जाना
तब मुनि सादर कहा बुझाई * चरित एक देखिय प्रभु जाई॥
धनुषयज्ञ सुनि रघुकुलनाथा * हर्षि चले मुनिबरके साथा॥
आश्रम एक दीख मगमाहीं * खग मृग जीव जन्तु तहँ नाहीं
पूँछा मुनिहिं शिला प्रभु देषी सकल कथा ऋषि कही बिशेषी

* रामचंद्रजीने शिलाको देख, विश्वामित्रसे पूंछा कि, महाराज! यह कौन है? तब विश्वामित्रने यह कथा कही कि एक समयमें ब्रह्माजीने प्रयागराजमें यज्ञ किया सो उसमें सुवर्णके हलसे जोतनेमें एक त्रैलोक्यसुंदरी मनमोहिनी कोमलांगी अहल्या नाम ऐसी कन्या उत्पन्न

१यज्ञकी. २ विना फोंकका बाण. ३अग्निका बाण. ४राक्षसोंकी फौज.

दो० गौतमनारी शापबश, उपलदेह धरिधीर ॥

भई कि, जिसको देख, इंद्रादि सब देवता मोहित होगये. तब ब्रह्माजी उस कन्याको धरोहरकी नाई गौतमजीको सौंपकर चलेगये. निदान बहुतेक कालमें ब्रह्माजीने आकर गौतमजीसे पूंछा कि, वह कन्या कहां है? कि जो पहले मैने तुम्हारे पास रख दीथी,उसका क्या हाल है? यह सुन, गौतमजीने कन्याको ला दिया. तब ब्रह्माजीने उनकी जितेंद्रियतासे प्रसन्न होके, वह कन्या उन्हींको देदी. यह सुन, इंद्रको बड़ा संताप हुवा जिससे सोचने लगा कि–अब मैं उसे कैसे पाऊं ? ऐसे इंद्रके बिचारते २ एक दिन गौतमजी गंगास्नानको गये थे उतनेही कालमें इन्द्रजी कामातुर हो, गौतमजीका रूप धर, जाकर अहल्यासे बोले कि–हे प्रिये ! मेरेको रतिप्रदान कर. ऐसे सुन, अहल्याने कहा कि, महाराज ! आप कुसमयमें यह क्या कहते हो ? तब कपटगौतमने कहा कि, अरी ! तू पतिब्रता है सो पतिका बचन नहीं मानती ? ऐसे सुन कुछ न बोली. उसी समयमे गौतमऋषिनेभी द्वारमें आके पुकारा तब तौ अहल्याने अतिचिंतामें हो इंद्रसे कोपकर कहा अरे दुष्ट ! तू कौन है ? सत्य बोल. तब इंद्रने डरके मारे कहा कि–मैं इन्द्र हूं. पीछे अहल्या किवांड़ खोलने गई तब ऋषिने पूंछा कि, इतनी देर क्यों लगाई ? वह कुछ न बोली. उसवक्त इन्द्र बिलाड़ बन छिप रहा परंतु ऋषिने ध्यानसे सब चरित्र जान शाप दिया कि–हे इंद्र ! तेरे अंगमें हजार भग हो जाँय और अहल्याको कहा कि–तू शिला होजा. रामचंद्रके चरणस्पर्शसे पुनः शरीरको पायेगी. इसके पीछे इन्द्रजीनेभी हाथ जोड़ अतिबिनय, कर, क्षमा मांगी; तब तौ गौतमजीने प्रसन्न होकर, इंद्रसे कहा कि–हे इन्द्र ! जब तुम धनुष टूटनेका शब्द सुनोगे तब तुम्हारे हजार भगोंके हजार नेत्र हो जाँयगे और सहस्राक्ष नाम पड़ेगा.

१ पत्थरकी देह.

चरणकमलरज चाहती, कृपा करहु रघुबीर २३६
छं०परसतपदपावनशोकनशावनप्रगटभईतपपुंजसही
देखतरघुनायकजनसुखदायकसन्मुखहोइकरजोरिरही
अतिप्रेमअधीरापुलकशरीरामुखनहिंआवैबचनकही
अतिशयबड़भागीचरणनलागीयुगलनयनजलधारबही
धीरजमनकीन्हाप्रभुकहँचीन्हारघुपतिकृपाभक्तिपाई
अतिनिर्मलबानीअस्तुतिठानी ज्ञानगम्यजयरघुराई
मैंनारिअपावनिप्रभुजगपावनरावणरिपुजनसुखदाई
राजिवलोचनभवभयमोचनपाहिपाहिशरणहिंआई
मुनिशापजोदीन्हाअतिभलकीन्हापरमअनुग्रहमैंमाना
देखेउँभरिलोचन[1]हरिभवमोचनयहैलाभशंकरजाना
बिनतीप्रभुमोरीमैं मतिभोरी नाथनबरमांगौं आना ॥
पद[2]कमलपरागारसअनुरागाममनमधुपकरैपाना२९
जेहिपद[3]सुरसरितापरमपुनीताप्रगटभईशिवशीसधरी
सोईपदपंकजजेहिपूजतअजममशिरधरेउकृपालुहरी
यहिभांतिसिधारीगौतमनारी बारबारहरिचरणपरी
जोअतिमनभावासोबरपावागइपतिलोकअनन्दभरी
दो०अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारणरहित कृपाल॥
तुलसिदास शठ ताहि भज,छाँड़ि कपटजंजाल २१७
चले राम लक्ष्मण मुनिसंगा * गये जहाँ जगपावनि गंगा ॥
अनुजसहित प्रभु कीन्हप्रणामा* बहुप्रकार सुख पायहु रामा ॥

१ दोनों नेत्रोंसे. २ चरणकमलकी धूलिके रसका. ३ गंगाजी.

॥ अथ गंगोत्पत्ति क्षेपक ॥

पुनि सुरसरिउतूपति रघुराई * कौशिकसन पूँछा शिर नाई ॥
कह मुनि प्रभु तव कुल यकराजा * नाम सगर तिहुँलोक बिराजा
तेहिके युगभामिनि सुकुमारी * प्रथम केशिनी सुमति पियारी ॥
सब प्रकार सम्पति सुर भ्राजा * सुतबिहीन मन विस्मय राजा ॥
एकसमय भामिनि दो साथा * गयो बन तनयहेतु रघुनाथा ॥
सघन सफल तरु सुन्दर नाना * तहँ भृगुमुनि तपतेजनिधाना ॥

दो०सहितनारि नृप मुदित मन, रहे बर्ष शत एक ॥
कीन्हे तपबल देखि भृगु, अस्तुति कीन्ह अनेक ३५

काहि निजदुखप्रणामनृप कीन्हा * दै अशीश तब मुनिबर दीन्हा ॥
नृपरानीसन मुनि अस भाषा * लेहु सोबर जो जेहि अभिलाषा ॥
सुनि मुनिबचन शीशतिननावा * देहु नाथ जो अतिमनभावा ॥
एकहिं कह्यो एक सुत होना * दूसरि साठसहस गुणलोना ॥
हर्षित भयो सुभग बर पाई * पाणि जोरि चरणन शिर नाई ॥
सहित भामिनी अवधाहिं आये * हर्षसहित कछु दिवस गँवाये ॥
जानि सुघरि सुन्दरि सुखदाई * नाम केशि असमंजस जाई ॥
सुमतिप्रसव यक तुम्बरि सोई * भये सुत प्रगट कहे मुनि जोई ॥
निरखे सुत हर्षित सब होई * मंगलचार किये सबकोई * ॥
हर्षसहित दिये दान नरेशू * पूजि विप्र गुरु गौरि गणेशू ॥
घृतघट सुन्दर बिबिध मँगाये * ते सब सुत नृप तिनमहँ नाये ॥

दो०यहिविधि भये सकल सुत, पूजे सब मन काम
जाइ दिवस निशि हर्षबश, सुनहु राम घनश्याम३

---

१ गंगाजीकी होनी. २स्त्रियां. ३ भृगुजीने. ४ इच्छा.

पुरजन सब घर घरनि नरेशू * अतिआनँदतनु मिटा अँदेशू ॥
बालकेलि कर भये कुमारा * लीला करें अगम संसारा * ॥
होइ सो काज सकल मन चीते * यहि सुख बसत बहुत दिन बीते
सरयू नदी अवध जो अहई * बिमल सलिल उत्तरतट बहई ॥
प्रजालोकके बालक नाना * नित उठि तहाँ करैं अस्नाना ॥
असमंजस तहँ तरणी[1] आनी * तिनहिं चढ़ाइ बोरि निजपानी ॥
भये प्रजा सब परमदुखारी * बालकबध सुनि सुनहु खरारी[2] ॥
सकल गये जहँ बैठ नृपाला * बोल बचन नाइ पद भाला[3] ॥
तुम नृप चहहु प्रजाप्रतिपाला * सुत तुम्हार भा सबकर काला ॥

दो० तब सुत कीन्हे पाप बहु, मारे बालकबृन्द ॥
तुमकहँ प्राणसमान यह, सकलप्रजनकहँ मन्द ३७

प्रजागिरा सुनि धीरज दीन्हा * सुतहिं देशते बाहर कीन्हा ॥
असमंजस तब कीन बिचारा * जियत अबहिं ले आनु कुमारा
तिनहिं लागि सरयूके तीरा * गे असमंजस अति मतिधीरा ॥
लै बालक आगे करि तबहीं * आय दीन सब सरयू जबहीं ॥
तब लरिकनको आज्ञा दीन्हा * आपुहिं जाइ तपस्या कीन्हा ॥
तासु तनय जगविदित प्रभाऊ * गुणनिधि अंशुमान तेहिं नाऊ ॥
बसत हृदय नृपके सो कैसे * फणि मणि मीन सलिल रह जैसे
गये प्रजा सब निज निज धामा * भय बिलोकि मन गुण बिश्रामा
बहुरि नृपति मनकीन्ह विचारा * आइ भयो पन चौथ हमारा ॥
हित मंत्री गुरु सुतहु बुलाये * हिमगिरि बिन्ध्यमध्य तब आये

१ नौका. २ हे राम ! ३ माथा. ४ सर्पको मणि जैसे मछरीको जल जैसे. ५ हिमवान.

रुचिर वेदिका एक बनाई * देखत बनै बर्णि नहिं जाई ॥
मख-अरम्भ छाँड़ेउ तब तुरगा * वेगवन्त जिमि देखिय उरगा ॥

दो० सुरपतिसुनिभयदारुणाहिं, मनमहँकरि अनुमान ॥
आन तुरग तब लीन्हेउ, मर्म न काहू जान ॥ ३८ ॥

राखेहु आनि कपिलमुनिपाहीं * कोउ न जान काहुहि गम नाहीं ॥
जुगवत रहे जे सुभट सयाने * तुरग लेत तिनहू नाहिं जाने ॥
तिन सब आय कही नृपपाहीं * महाराज हम कहत डराहीं ॥
लीन्ह तुरग को जान न कोई * कहा करिय जो आयसु होई ॥
सुनत बचन नृप विस्मय पाये * सकलसुतनकहँ तुरत बुलाये ॥
जाहु तुरग तुम हेरहु जाई * सकल चल चरणन शिर नाई ॥
सुरपतिसम देखिय सब बीरा * सकल धनुर्धर अतिरणधीरा ॥
तिनहिं चलत धरणी अकुलाई * बालिपशु जीव भये सब आई ॥
सुमनवाटिका उपबन बागा * सरित कूप बापिका तड़ागा ॥
नगर गाँव मुनिाशथल नाना * गिरिकन्दर कानन अस्थाना ॥

दो० यहिबिधि खोजे तुरग तिन, आये भूपतिपाहिं ॥
चरणन माथहिं नाइ कहि, खोज अश्वकी नाहिं ३९

खोदहु महि सुत पुनर पठाये * चले सकल पूरबदिशि आये ॥
तिनके कर[1] जिमिकुलिशसमाना[2] * योजनभारि खोदहिं बलवाना ॥
देखि अतुल बल देव डराने * मरिहाहिं कहि वि[3]रंचिसनमाने ॥
शोधत महि पताल सब आये * दिग्गज देखि एक शिर नाये ॥
तिन पूँछा सब कथा सुनाये * बहुरि सकल दक्षिणदिशि आये
यहिबिधि पुनि दूसर गज देषा * अतिउतंग गज बिमल बिशेषा ॥

---

१ हाथ. २ वज्रके माफक. ३ ब्रह्माने.

ताहू बहु प्रणाम तिन कीन्हे * चले सुनत पश्चिम चित दीन्हे॥
तीसर देखि प्रदक्षिण कीन्ही * पुनि उत्तर दिशि शोधहि लीन्ही
दिग्गज श्वेत निरखि सुख पाये * सकल कपिलमुनिपहँ पुनिआये
खोजत मही पार नहिं पावा * शोभा चहुँ दिशि जलधिसोहावा

दो०-देखेन आइ तुरंग तब, बाँधा मुनिबरबास ॥
बोले बचन सुकोप करि, भा चह सबकर नास ४०

खोदा महि हम चारिउ कोधा * रे रे दुष्ट बहुत तोंहि शोधा ॥
कोउ कह चोर दीख बहु होई * यहि सम छली और नहिं कोई ॥
परधन ले पताल पुनि आयो * तस्कर मुनिबरबेष बनायो ॥
कोउ कहै यह मुनिबर नाहीं * समुझि देखि लक्षण मनमाहीं ॥
कोउ कह बकतप कीन्ह अपारा * अहो दुष्ट लै तुरग हमारा * ॥
सुनत बचन मुनिचितवा जबहीं * भये भस्म सब क्षणमें तबहीं ॥
उमा बचन जोहिं समुझि नबोला * सुधा होइ विषतिक्तम ओला ॥
पावक जानि धराहिं कर प्रानी * जरहि काहिनाहिं अतिअभिमानी
जान गरल जे संग्रह करहीं * सुनहु राम ते काहे न मरहीं ॥
क्रोधकरे बिन किये बिचारा * भये सकल तेहिते जरि क्षारा॥
इहाँ नृपति अँशुमान बुलाये * नाहिं आये सब तिनहिं पठाये॥

दो०-दीन्हा नृपति अशीश तब, अतिहितबारहिंबार
बेगि फिरहु लै तुरग सुत, मेरे प्राणअधार ॥४१॥

चलेउ नाइ पद शीश कुमारा * विष्णुभक्तहित कुलउजियारा ॥
जहँ तहँ देखि मुनिनके धामा * पूँछि खबरि करि दण्डप्रणामा ॥
पन्नग अहिसन पाइ अशीशा * चहुँ दिग्गजकहँ नायउ शीशा ॥

१ ब्रह्मा: २ दिशानके हाथी.

यहिबिधिशोधतमगमहँजाता * मिले गरुड़ सुमतीकर भ्राता ॥
चरण परत तब आशिषदयऊ * जो सकल जेहिबिधि सोकहेऊ ॥
सुनतहिं बचनशोचभयोभारी * लिये खगेश दीख थल बारी ॥
अंशुमान तहँ मंज्जन कीन्हा * क्रमक्रम सबहिं जलांजलिदीन्हा॥
बहुरि गरुड बोले सुनु ताता * मैं तोहिं कहौं करिय यक बाता ॥

सो०करु सुत सोइ उपाय, गंगा आवहिं अवनि[3]महँ॥
दर्शनते अघ[4] जाय, मज्जन कीन्हे परमसुख ॥ ३ ॥

षष्टिसहस तरिहैं येही बिधि * गंगा पाय परमपावननिधि ॥
सुनि असबचनहृदयमनभाये * सहित गरुड मुनिबरपहँ आये ॥
तब खगेश मुनिचरणन नायउ * पूरबकथा सकल मुनि गायउ ॥
आयसु देइ तुरग मुनि दीन्हा * हर्षि हृदय निजअश्वहिं चीन्हा ॥
नगरसमीप गरुड़ पहुँचाई * गये भवन निज तब रघुराई ॥
इहाँ तुरग लै नृप शिर नाई * षष्टिसहस मुनिकथा सुनाई ॥
बिस्मयहर्षबिबश नृप भयऊ * कीन्हा यज्ञ दान बहु दयऊ ॥
बहुबिधि नृपतिराज पुनिकीन्हा*प्रजालोककहँ अतिसुखदीन्हा ॥

दो०अंशुमानकहँ राज दै, निजमन हरिपद लाग॥
गयउ सगर तपकाज बन, हृदय अधिक अनुराग ४२

तासु तनय दिलीप नृप भयऊ * बन तपहेतु उतरदिशि गयऊ ॥
वहाँ अगम तप कीन्ह नृपाला * भये कालबश गय कछु काला ॥
कहहुँ कवन दिलीपप्रभुताई * सेवैं सकल नृपति जेहिं आई ॥
जुगवत जिहिंनितसुरपतिरहहीं * महिमातासु सुकबि किमि कहहीं
भागीरथ अस सुत भयो जासू * पितुसम प्रीति अधिक उर तासू

१ गरुड. २ स्नान. ३ पृथ्वीपर. ४ पाप.

तिनहिं बोलि नृप दीन्हेउ राजू * आप चले उठि तपके काजू ॥
मनमहँ करत पंथ अनुमाना * सुरसरि आव तजउँ नहिं प्राना
निजमन तनु दीन्हेउ तिमि देऊँ * फिर निजनगरकनाम न लेऊँ ॥

सो०यहिबिधि करत बिचार,नृपकीन्हेतबप्रबलतप
बीते कछु यक काल, देहतजीकोउप्रगटनहिं ॥४॥

जेहिं सुरसरिलगि तजि तनु भूपा * सो तजि मूढ़ पियाहिं जल कूपा ॥
यहाँ भगीरथ अस मन भयऊ * पितु न आव बहु दिन चलि गयऊ
काकुत्स्थ नाम तनय यक रहेऊ * दीन्हा राज नीति बहु कहेऊ ॥
कहि तब पूर्वकथा सुतपाहू * दीन्ह अशीश चले नरनाहू ॥
निकसत नगर शकुन भल पाये * अतिहि निबिड़[२] बन जहँ नृप आये
देखि भगीरथ बन सुख पावा * सुरसरिहित तपकहँ मन लावा ॥
एक चरण दोउ भुजा उठाये * रबिसन्मुख चितवहिं मनभाये ॥
बर्षसहस बीते यहि भांती * जात न जाने दिन अरु राती ॥
देखि उग्रतप अँज[३] चलि आये * बोले वचन नृपाहिं मनभाये ॥
चहहु नृपति जो ले वर कामा * बोले नृप करि अजाहिं प्रणामा ॥
जो मांगों सो जानत अहहू * सो मन मांगन प्रभु किन कहहू ॥

सो०तदपि कहौं प्रभु देहु बर,सबसन्तनकहँवृद्धि॥
दूसर मांगों जोरि कर, गंगा आवहिं निद्धि ॥४३॥

एवमस्तु कहि पुनि बि[३]धि कहही * सुरसरि देव राखि को सकही ॥
छूटि जाहिं पुनि तुरत रसातल * फिरहिं न नृपति बहुरि सुनु भूतल
तेहिते कहौं एक तोहिंपाहीं * अतिदयालु शंकर सबकाहीं ॥

---

१ गंगाजी. २ बड़ा सघन. ३ ब्रह्मा.

सोइ शिव राखहिं सुरसरि आजू * उनहिं जपे तव होइहै काजू ॥
अस कहि विधि अन्तर्हित भये * बहुरि भगीरथ शिवपहँ गये ॥
बिबुध-वर्ष अंगुष्ठ अधारा * बार बार शिवनाम उचारा ॥
शिव दयालु प्रगटे तब आई * हाथ जोरि नृप बिनय सुनाई ॥
मैं राखब सुरसरि कह ईशा * बहुरि रमापतिध्यान करीशा ॥

दो०यहां देवसरिशिवबचन,सुनिमनकीन्हबिचार
जाउँरसातलशिवसहित,जातनलावोंबार ॥ ४४ ॥

अन्तर्यामी शिवहु उपाई * निजशिरजटा सो अगम बनाई ॥
इहां भगीरथ अस्तुति कीन्ही * सुनिमृदुगिराछांड़िबिधिदीन्ही ॥
छूटे शोर भयउ जगभारी * चकित देव अहि दिग्गज चारी ॥
सुरसरि पुनि हरजटा समानी * वर्ष एक तहँ रही भवानी * ॥
कौतुक देखि सकल सुर हर्षे * कह जय जयति सुमन बहु वर्षे ॥
बहुरि भगरिथ सुमिरण कीन्हा * डारि जटा शिब बुंन्दक दीन्हा ॥
तेहिते भई तीनि पुनि धारा * एक गई नभ एक पतारा * ॥
गइ नभ सोइ कि भई अघनाशिनि * देवन धरा नाम मन्दाकिनि ॥

सो०दूसरिगईपताल, नामप्रभावतिहरणदुख ॥
तीसरिगंगासोइ,सबसन्तनकोकरणसुख ॥ ४५ ॥

आय भगीरथ पुनि शिर नाये * बोली सुरसरि बचन सुहाये ॥
बेगवन्त नृप रथ लै आनू * तुरत तुरग शुभगति जिमि भानू ॥
तेहि रथ चढ़िनृपचलुममआगे * चलिहौं मैं तव पाछे लागे ॥
सुनिनृपदिव्य तुरगरथ आना * चले हृदय सुमिरत भगवाना ॥
चली अग्र करिनृपहिंसुरसरी * देवन मुदित सुमनझरि करी ॥

१ गंगा. २ देवतनकी बरसभर. ३ महादेव. ४ संसारमें ५ एक बुंद.

चलत तेज कछु बार्णि न जाई * टूटाहिं गिरि तरु शैलं सुहाई ॥
करैं कुलाहल बिधि बहुभाँती * कमठं-नक्र झष व्याल सोमाती॥
मज्जन करहिं देव तहँ आई * सुनि गति सिद्ध रहे सब छाई ॥

सो०-तर्पण कर मन लाय, हर्ष हृदय नाहिं जात काहिं॥
दर्शनतें अघ जाय, तरें सकल मुनिज्ञन कहैं ॥५॥

करै जो मज्जन जप मन लाई * तिनकी महिमा कहि न सिराई ॥
रथपर जात सोह नृप कैसे * तेजवन्त रवि देखिय जैसे * ॥
नाँघत शैल सुहावन देशा * पाछे सुरसरि अग्र नरेशा * ॥
हरिद्वार समीप जब आये * तीर्थ देखि सुरसरि मन लाये ॥
तीर्थनिरखिमन भयो सुखारी * आदिप्रयाग पहुँचि अघहारी ॥
तहँ मज्जन कीन्हे दुख जाई * बहुरि देवसरि काशी आई ॥
सो शिवपुरी सहजसुखदाई * बार्णि न जाइ मनोहरताई * ॥
औरौ तीर्थ बिबिधविधिजानी * गई तहाँ किमि कहौं बखानी ॥
मगलोगनकहँ करत सनाथा * जाइ चली इहिविधि रघुनाथा ॥

दो०-मिलीजाइपुनिउदधिमहँ,उदधिहृदयसुखमान
लागे कहन भगीरथहिं, तुमसम धन्य न आन ४६

कीन्हो अस जो करै न कोई * तपमहिमाबल कस नहिं होई ॥
सगर-सुतनय तरे ततकाला * हर्षवन्त तब भयो नृपाला ॥
औरौ रहे जे कुलमहँ कोऊ * तिनके संग तरे अब सोऊ ॥
सकलसुरन्ह तहँ संग बिधाता * नृपसन आय कही सब बाता॥
धन्य भगीरथ जग यश लयऊ * तुमसमान नृप अवर न भयऊ ॥
आपनि सत्य प्रतिज्ञा कियऊ * सम्मतवेदजनन सुख दयऊ ॥

१ पहाड़. २ कच्छप. ३ ग्राह. ४ मछली. ५ सर्प.

गंगासागर सबकोइ कहहीं * अघउलूक[1] देखत रवि डरहीं ॥
भागीरथी नाम अरु कहहीं * सुनि सुर सिद्ध नागयश लहहीं॥
असबिधिकहिनिजलोकहिंआये*यहाँ भगीरथ अतिसुख पाये ॥

छंद॰ पाये अमितसुखबहुरिपूजासुरसरिहिंमनलाइकै
तबदीन्ह आशिषमुदित गंगानृपभवनसुखपाइकै॥
यहिभांतिसुनि गंगाकथातबरामरुचिचरणननये॥
कहदासतुलसीरामलषणहिंमहामुनिआशिषदये
दो॰ कौशिकआशिष अमियसम[2], पाय हर्ष रघुनाथ
प्रभु सुख पाइकहेउ पुनि, बेगि चलिय मुनिनाथ४७

॥ इति क्षेपक ॥

गाधिसुवन सब कथा सुनाई * जेहि प्रकार सुरसरि महि आई ॥
तब प्रभु ऋषिनसमेत अन्हाये * विविध दान महिदेवन[3] पाये ॥
हर्षि चले मुनिवृन्द सहाया * बेगि बिदेहनगर नियराया * ॥
पुररम्यता राम जब देखी * हर्षे अनुजसमेत विशेखी * ॥
वापी कूप सरित सर नाना * सलिल सुधासम मणिसोपाना[4] ॥
गुंजत मंजु[5] मत्त-रस-भृङ्गा * कूजत कल बहुवर्ण विहङ्गा ॥
वर्ण वर्ण विकशे जलजाता[6] * त्रिविध समीर सदा सुखदाता ॥

दो॰ सुमनवाटिका बाग बन,बिपुलबिहंगनिवास॥
फूलतफलतसुपल्लवित,सोहतपुरचहुँपास॥२१८॥

बनै न वर्णत नगरनिकाई * जहां जाइ मन तहां लुभाई ॥

---

१ पापरूप उलूक. २ अमृतके समान. ३ ब्राह्मणोंने. ४ मणिनकी सीढ़ी. ५ मनोहर. ६ कमल.

चारु बजार विचित्र अटारी * मणिमय विधि जनु स्वकर सवांरी
धनिक बणिक बर धनदसमाना[1] * बैठे सकल वस्तु ले नाना ॥
चौहटे[2] सुन्दर गली सुहाई * सन्तत रहहिं सुगन्धसिचाई ॥
मंगलमय मन्दिर सबकेरे * चित्रित जनु रतिनाथ चितेरे ॥
पुरनरनारि सुभग शुचि संता * धर्मशील ज्ञानी गुणवंता * ॥
अतिअनूप जहँ जनकनिवास * बिथके विबुध विलोकि विलासू ॥
होत चकित चित कोट बिलोकी * सकलभुवनशोभा जनु रोकी ॥

दो०धवल धाम मणि पुरट[3] पट, सुघटितनानाभांति
सियानिबास सुन्दर सदन, शोभा किमिकहिजाति॥

सुभग द्वार सब कुलिशकपाटा * भूप भीर नट मागध भाटा ॥
बनी विशाल वाजिगजशाला * हय–गज–रथसंकुल सबकाला ॥
शूर सचिव सेनप बहुतेरे * नृपगृहसरिस सदन सबकेरे ॥
पुरनाहिर सर सरित समीपा * उतरे जहँ तहँ विपुल महीपा ॥
देखि अनूप एक अमराई * सब सुवास सब भांति सुहाई ॥
कौशिक कहेउ मोर मन माना * यहाँ रहिय रघुवीर सुजाना ॥
भलेहि नाथ कहि कृपानिकेता * उतरे तहँ मुनिवृन्दसमेता ॥
विश्वामित्र महामुनि आये * समाचार मिथिलापति पाये ॥

दो०संग सचिवशुचि भूरि भट, भूसुरबरगुरुज्ञाति
चलेमिलन मुनिनायकहिं,मुदितराउइहिभांति २२०

कीन्ह प्रणाम धरणि धरि माथा * दीन्ह अशीश मुदित मुनिनाथा
विप्रवृन्द सब सादर बन्दे * जानि भाग्य बड़ राउ अनन्दे ॥
कुशलप्रश्न कहि बारहिं बारा * विश्वामित्र नृपहिं बैठारा * ॥
तेहि अवसर आये दोउ भाई * गये रहे देखन फुलवाई * *॥

१ कुबेरसम. २ चौक. ३ सोना.

श्याम गौर मृदु वयस किशोरा* लोचनसुखद विश्वचितचोरा ॥
उठे सकल जब रघुपति आये * विश्वामित्र निकट बैठाये *।
भये सब सुखी देखि दोउ भ्राता* बारिविलोचन पुलकित गाता॥
मूरति मधुर मनोहर देषी * भयउ विदेह विदेह विशेषी ॥
दो०प्रेममग्न मन जानि नृप, करि विवेक धरि धीर
बोलेउ मुनिपद नाइ शिर,गद्गद गिरा गँभीर २२१
कहहु नाथ सुन्दर दोउ बालक* मुनिकुलतिलककिनृपकुलपालक
ब्रह्म जो निगमनेति कहि गावा*उभय वेष धरि सोइ की आवा ॥
सहजविरागरूप मन मोरा *.थकित होत जिमि चंद्र चकोरा॥
ताते प्रभु पूछौं सतिभाऊ * कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥
इनहिं विलोकत अतिअनुरागा*बरबश ब्रह्मसुखहिं मन लागा ॥
कहमुनि विहँसि कहेहु नृप नीका*वचन तुम्हार न होइ अलीका ॥
ए प्रिय सबहिं जहांलगि प्राणी * मन मुसकाहिं राम सुनि वाणी ॥
रघुकुलमणि दशरथके जाये * मम हितलागि नरेश पठाये* ॥
दो०राम लषण दोउबन्धुबर,रूपशीलबलधाम*॥
मखराखेउसबसाखिजग,जीतिअसुरसंग्राम २२२॥
मुनि तव चरण देखि कह राऊ * कहि न सकौं निजपुण्यप्रभाऊ॥
सुन्दर श्याम गौर दोउ भ्राता * आनँदहूके आनँददाता * * ॥
इनकी प्रीति परस्पर पावनि * कहि न जाइ मनभाव सुहावनि॥
सुनहु नाथ कह मुदित विदेहू * ब्रह्मजीवइव सहजसनेहू ॥
पुनि पुनि प्रभुहिं चितव नरनाहू* पुलकगात उर अधिक उछाहू॥
मुनिहिं प्रशंसि नाइ पद शीशा * चले लिवाइ नगर अवनीशा ॥

१ नेत्रोंमें जल भर आया. २ ज्ञान. ३ श्रेष्ठतासे. ४ मिथ्या.

सुन्दर सदन सुखद सबकाला * तहां बास लै दीन्ह भुवाला ॥
करि पूजा सबबिधि सेवकाई * गयेउ राउ गृह बिदा कराई * ॥
दो०ऋषयसंगरघुवंशमणि,करिभोजनबिश्राम॥ *
बैठेप्रभुभ्रातासहित,दिवसरहाभरियामे ॥ २२३ ॥
लषणहृदय लालसा बिशेषी * जाइ जनकपुर आइय देषी * ॥
प्रभुभयबहुरिमुनिहिंसकुचाहीं * प्रकट न कहहिं मनहिं मुसकाहीं
राम अनुजमनकी गति जानी * भक्तबछलता हिय हुलसानी ॥
परमबिनीत सकुचि मुसुकाई * बोले गुरुअनुशासन पाई ॥
नाथ लषण पुर देखन चहहीं * प्रभुसकोच डर प्रकट न कहहीं
जो राउरअनुशासन पाऊँ * नगर दिखाइ तुरत लै आऊँ ॥
सुनि मुनीश कह बचन सप्रीती * कस न राम राखहु तुम नीती ॥
धर्मसेतु-पालक तुम ताता * प्रेमबिवश सेवकसुखदाता ॥ *
दो०जाइदेखिआवहुनगर, सुखनिधानदोउभाइ ॥
करहुसफलसबकेनयन,सुन्दरबदनदिखाइ २२४॥
मुनिपदकमल वन्दि दोउ भ्राता * चले लोकलोचनसुखदाता * ॥
बालकवृंद देखि अतिशोभा * लगे संग लोचन मन लोभा ॥
पीतबसन परिकर कटि भाथा * चारुचापशर सोहत हाथा * ॥
तनु अनुहरत सुचन्दनखोरी * श्यामल गौर मनोहर जोरी ॥
केहरिकन्धर बाहु बिशाला * उर अतिरुचिर नागमणिमाला॥
सुभग श्रवण सरसिरुहलोचन * वदन मयंक तापत्रयमोचन ॥
कानन कनकफूल छबि देहीं * चितवत चितहिं चोर जनु लेहीं॥
चितवनि चारु भृकुटि बर बांकी * तिलकरेख शोभा जनु चाँकी ॥

१ मकान. २ प्रहरभर. ३ विश्वामित्रकी आज्ञा. ४ दुपट्टा. ५ तरकस.

दो०रुचिरचौतनीसुभगशिर, मेचककुंचितकेश॥
नखशिखसुन्दरबन्धुदोउ,शोभासकलसुदेश२२५

देखन नगर भूपसुत आये * समाचार पुरवासिन पाये * ॥
धाये धामकाम सब त्यागे * मनहुँ रंकनिधि लूटन लागे ॥
निरखि सहजसुन्दर दोउ भाई * होहिं सुखी लोचनफल पाई ॥
युवती भवन झरोखन लागीं * निरखहिं रामरूप अनुरागीं ॥
कहहिं परस्पर बचन सप्रीती * सखि इन कोटिकामछबि जीती
सुर-नर-असुर–नाग-मुनिमाहीं * शोभा असकहुँ सुनियत नाहीं ॥
विष्णु चारिभुज विधि मुखचारी * विकट वेष मुखपञ्च पुरारी ॥
अपर देव अस को जग आही * यह छबि सखि पटतरिये जाही

दो०बय किशोर सुषमासदन,श्याम गौरसुखधाम॥
अंगअंगपर वारिये, कोटि कोटि शत काम ॥२२६॥

कहहु सखी अस को तनुधारी * जो न मोह यह रूप निहारी ॥
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी * जो मैं सुना सो सुनहु सयानी॥
ये दोउ नृप दशरथके ढोटा * बाल–मरालनके कल जोटा ॥
मुनिकौशिकमखके रखवारे * जिन रण अजय निशाचर मारे
श्यामगात कलकंजविलोचन * जो मारीच--सुभुज--मदमोचन
कौशल्यासुत सो सुखखानी * नाम राम धनुसायकपानी ॥
गौर किशोर बेष बर काछे * कर शर चाप रामके पाछे ॥
लक्ष्मण नाम रामलघुभ्राता * सुनु सखि तासु सुमित्रा माता

दो०बिप्रकाज करि बन्धु दोउ,मग मुनिबधू उधारि

१ शोभाके घर. २ बालहंसोंके. ३ मनोहर कमलसे नेत्र. ४ रास्तेमें.

आये देखन चापमख, सुनि हर्षी सबनारि ॥२२७॥
देखि रामछवि कोउ यक कहई * योग्य जानकी यह बर अहई ॥
जो सखि इनहिं देखि नरनाहू* प्रण परिहरि हठि करहिं बिबाहू
कोउ कह इन भूपति पहिंचाने * मुनिसमेत सादर सन्माने * ॥
सखि परन्तु प्रण राउ न तजई* बिधिबश हठि अबिबेकहिं भजई
कोउ कह जो भल अहै बिधाता* सबकहँ सुनिय उचितफलदाता
तौ जानकिहिं मिलिहि बर एहू* नाहिन आली यह सन्देहू ॥
जो विधिवश अस बनै सँयोगू* तौ कृतकृत्य होइँ सबलोगू ॥
सखि हमरे अतिआरति ताते* कबहुँक ए आवहिं यहि नाते॥
सो०नाहित हमकहँसुनहुसखि, इन्हकर दर्शनदूरि
यह संघट तब होइ जब, पुण्य पुराकृत भूरि ॥२२८॥
बोली अपर कहेउ सखि नीका* यह बिवाह अतिहित सबहीका
कोउ कह शंकरचाप कठोरा * ये श्यामल मृदुगात किशोरा ॥
सब असमंजस अहै सयानी * यह सुनि अपर कहै मृदु बानी॥
सखि इनकहँ कोउ२अस कहहीं* बड़ प्रभाव देखत लघु अहहीं ॥
परसि जासु पदपंकजधूरी * तरी अहल्या कृतअघभूरी ॥
सो कि रहैं बिनु शिवधनु तोरे* यह प्रतीति परिहरिय न भोरे ॥
जेहिं बिरंचि रचि सीयसँवारी* तेहिं श्यामलबर रचेउ बिचारी
तासु बचन सुनि सब हर्षानी* ऐसेइ होउ कहहिं मृदु बानी ॥
दो०हियहर्षहिंवर्षहिंसुमन, सुमुखिसुलोचननिवृन्द
जाहिं जहां जह बंधु दोउ, तहँ तहँ परमानन्द २२९
पुरपूर्बदिशि गे दोउ भाई * जहाँ धनुषमखभूमि बनाई ।

१ किये बहुत पाप. २ फूल. ३ धनुषयज्ञकी भूमि.

अतिबिस्तार चौरु गच ढारी * बिमल बेदिका रुचिर सँवारी॥
चहुँ दिशि कंचनमंच बिशाला* रचे जहाँ बैठहिं महिपाला॥
तेहिपाछे समीप चहुँपासा * अपर मंच मण्डलीबिलासा॥
कछुक ऊँच सबभांति सुहाई * बैठहिं नगरलोग जहँ आई॥
तिनके निकट बिशाल सुहाये* धवलधाम बहुवर्ण बनाये॥
जहँ बैठी देखहिं पुरनारी * यथायोग निजकुल अनुहारी॥
पुरबालक कहि कहि मृदु बचना* सादर प्रभुहिं दिखावहिं रचना॥

दो०सबशिशुइहिमिसिप्रेमबश, परसिमनोहरगात॥
तनुपुलकहिं अतिहर्ष हिय,देखिदेखि दोउभ्रात २३०

शिशु सब राम प्रेमबश जाने * प्रीतिसमेत निकेत बखाने*॥
निज निज रुचि सब लेंहिं बुलाई* सहित सनेह जाहिं दोउ भाई॥
राम देखावहिं अनुजहिं रचना * कहि मृदु मधुर मनोहर बचना॥
लवनिमेषमहँ भुवनानिकाया * रचे जासु अनुशासन माया॥
भक्तहेतु सोइ दीनदयाला * चितवत चकित धनुषमखशाला
कौतुक देखि चले गुरुपाहीं * जानि विलंब त्रास मनमाहीं॥
जासु त्रास डरकहँ डर होई * भजनप्रभाव देखावत सोई॥
कहि बातैं मृदु मधुर सुहाई * किये बिदा बालक बरिआई॥

दो०सभयसप्रेमबिनीतअति, सकुचसहितदोउभाइ
गुरुपदपंकज नाइ शिर, बैठे आयसु पाइ २३१॥

निशिप्रबेश मुनि मधुर सुहाई * किये बिदा बालक बरिआई॥
कहत कथा इतिहास पुरानी * रुचि रजनी युगयाम सिरानी॥
मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई* लगे चरण चापन दोउ भाई॥

---

१ रमणीक. २ सोनेके मंचान. ३ थोरे कालमें. ४ आज्ञासे.

जिनके चरणसरोरुहलागी * करत बिबिधजप योग बिरागी ॥
ते दोउ बंधु प्रेम जनु जीते * गुरुपदकमल पलोटत प्रीते[१] ॥
बार बार मुनि आज्ञा दीन्हा * रघुबर जाइ शयन तब कीन्हा ॥
चापत चरण लषण उर लाये * समय सप्रेम परमसुख पाये ॥
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता * पौढ़े धरि उर पदजलजाता ॥

दो० उठेलषणनिशिबिगतसुनि, अरुणशिखाधुनिकान
गुरुते पहिले जगत्पति, जागे राम सुजान २३२ ॥

सकल शौच करि जाइ नहाये * नित्य निबाहि गुरुहिं शिर नाये
समय जानि गुरुआयसु पाई * लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥
भूपबाग वर देखेउ जाई * जहँ बसन्तऋतु रहै लोभाई ॥
लागे बिटप[२] मनोहर नाना * बर्ण बर्ण बर बेलि बिताना ॥
नव पल्लव फल सुमन सुहाये * निजसम्पति सुरतरुहिं लजाये ॥
चातक कोकिल कीर चकोरा * कूजत बिहँग नचत कल मोरा ॥
मध्य बाग सर सुमन सुहावा * मणिसोपान बिचित्र बनावा ॥
विमल सलिल सरसिज[३] बहुरङ्गा * जलखग कूजत गुंजत भृङ्गा ॥

दो० बाग तडाग बिलोकि प्रभु, हर्षे बन्धुसमेत ॥
परमरम्य आराम[४] यह, जो रामहिं सुख देत २३३

चहुँ दिशि चितै पूँछि मालीगन * लगे लेन दल फूल मुदित मन
तेहि अवसर सीता तहँ आई * गिरिजापूजन जननि पठाई ॥
संग सखी सब सुभग सयानी * गावहिं गीत मनोहरबानी ॥
सरसमीप गिरिजागृह सोहा * वर्णि न जाय देखि मन मोहा ॥
मज्जन करि सर सखीसमेता * गई मुदितमन गौरिनिकेता ॥

---

१ पदकमलके वास्ते. २ वृक्ष. ३ कमल. ४ बगीचा.

पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा * निजअनुरूप सुभग वर माँगा ॥
एक सखी सियसंग बिहाई * गई रही देखन फुलवाई ॥
तेहिं दोउ बन्धु विलोकेउ जाई * प्रेमबिबश सीतापहँ आई ॥

दो०तासु दशा देखी, सखिन, पुलक गात चल नैन
कहु कारण निजहर्षकर, पूँछहि सब मृदु बैन॥३४॥

देखन बाग कुँवर दोउ आये * बय किशोर सबभांति सुहाये ॥
श्याम गौरकिमि कहौं बखानी * गिरा अनयन नयन बिनु बानी
सुनि हर्षीं सब सखीं सयानी * सियहिय अतिउत्कण्ठा जानी
एक कहहिं नृपसुत ते आली * सुने जे मुनिसँग आये काली
जिन्ह निजरूपमोहिनी डारी * कीन्हे स्वबश नगरनरनारि ॥
वर्णत छबि जहँ तहँ सब लोगू * अवशि देखिये देखनयोगू ॥
तासु बचन अति सियहिं सुहाने * दर्शलागि लोचन अकुलाने ॥
चली अग्र करि प्रियसखिसोई * प्रीति पुरातन लखै न कोई ॥

दो०सुमिरिसीय *नारदवचन, उपजीप्रीतिपुनीत॥
चकितबिलोकतिसकलदिशिजनुशिशुमृगीसभीत

* एकसमय जानकी गिरिजापूजनके निमित्त जातीं थीं; तहां मार्गमें नारदजी मिले तब जानकीजीने हाथ जोड़ मुनिसे कहा कि-महाराज ! मैं गिरिजा देवीकी पूजा करने जाती हूं. यह सुन नारदजीने आशीर्बाद दिया कि-हे जानकी ! इसी गिरिजाबारीमें श्रीरामचन्द्र तुम्हारे पति तुमको मिलेंगे. जानकीजीने पूँछा कि, महाराज! हम उन्हें कैसे चीन्हेंगी ? नारदजी बोले कि इस बगीचेमें जिसको देखनेसे तुम्हारा मन लोभित होजाय उसीको जानना कि, यही मेरा पति है.

१ वाणीके नेत्र नहीं जो देखके कहे.

कंकणकिंकिणिनुपूरधुनि सुनि * कहत लषणसन राम हृदय गुनि
मानहुँ मैदन दुन्दुभी दीन्ही * मैनसा विश्वविजयकहँ कीन्ही॥
असकहि फिर चितये त्यहि ओरा * सियमुखशशिभयेनयनचकोरा॥
भये विलोचन चारु अँचंचल * मनहुँ सकुच नि ँमितजेउ दृगंचल
देखि सीयशोभा सुख पावा * हृदय सराहत बचन न आवा॥
जनु बिरंचि सब निजनिपुणाई * बिरचि विश्वकहँ प्रकट दिखाई॥
सुन्दरताकहँ सुन्दर करई * छबिगृह दीपशिखा जनु बरई॥
सब उपमा कवि रहे जुठारी * केहि पटतरिय विदेहकुमारी॥

दो०सियशोभा हियवर्णिप्रभु, आपनिदशाबिचारि
बोले शुचि मन अनुजसन, वचन समयअनुहारि

तात जनकतनया यह सोई * धनुषयज्ञ जेहि कारण होई॥
पूजन गौरि सखी लै आई * करति प्रकाश फिराति फुलवाई
जासु बिलोकिअलौकिकशोभा * सहजपुनीत मोर मन क्षोभा॥
सो सब कारण जान बिधाता * फरकहिं सुभग अंग सुनु भ्राता॥
रघुबंशिनकर सहज-सुभाऊ * मनकुपंथ पग धरैं न काऊ॥
मोहिंअतिशयप्रतीतिजियकेरी * जेहिं सपनेहुँ परनारि न हेरीं॥
जिनके लहहिं न रिपुरणपीठी * नहिं लावहिं परतियमन डीठी॥
मंगन लहहिं न जिनके नाहीं * ते नरबर थोरे जगमाहीं॥

दो०करत बतकहीअँनुजसन, मनसियरूपलुभान
मुखसरोजमकरन्दछबि, करत मधुपइव पान २३८

चितवत चकितचहूँदिशिसीता * कहँ गये नृप किशोर मनचीता

१ कामदेवने. २ इच्छा. ३ चंचलतारहित. ४ राजा. ५ लक्ष्मणसे.

जहँ बिलोक मृगशावकनयनी * जनु तहँ बर्ष कमलसितश्रेनी ॥
लताओट तब सखिन लखाये * श्यामल गौर किशोर सुहाये ॥
देखि रूप लोचन ललचाने * हर्षे जनु निजनिधि पहिचाने ॥
थके नयन रघुपतिछबि देषी * पलकनहूँ परिहरी निमेषी ॥
अधिक सनेह देह भइ भोरी * शरदशशिहिजनुचितव चकोरी
लोचनमग रामहिं उर आनी * दीन्हे पलककपाट सयानी ॥
जब सिय सखिन प्रेमबश जानी * कहिनसकहिंकछुमनसकुचानी

दो०-लताभवनते प्रगट भे, तेहिअवसरदोउभाइ ॥
निकसेजनुयुगविमलबिधु, जलदपटलबिलगाइ ॥

शोभासींव सुभग दोउ बीरा * नील-पीत-जलजात शरीरा ॥
काकपक्ष शिर सोहत नीके * गुच्छा बिच बिचकुसमकलीके
भाल तिलक श्रमबिन्दु सुहाये * श्रवण सुभग भूषण छबिछाये ॥
बिकट भृकुटि कच घूँघरवारे * नव-सरोज-लोचन रतनारे ॥
चोरु[1] चिबुक[2] नासिका कपोला * हास बिलास लेत जनु मोला ॥
मुखछबिकहिनजाहिमोहिंपाहीं * जो बिलोकि बहुकामलजाहीं ॥
उर मणिमाल कम्बुकलग्रीवा[3] * कामकलभकरिभुज बलसींवा ॥
सुमनसमेत वामकर दोना * साँवर कुँवर सखी सुठि लोना ॥

दो०केहरिकटि[4] पटपीतधर, सुषमाशीलनिधान ॥
देखि भानुकुलभूषणहिं, बिसरासखिनअपान २३९

धरि धीरज यक सखी सयानी * सीतासन बोली गहि पानी ॥
बहुरि गौरिकर ध्यान करेहू * भूपकिशोर देखि किन लेहू ॥
सकुचि सीय तब नयन उघारे * सन्मुख दोउ रघुबंश निहारे ॥

---

१ सुंदर. २ डाढ़ी. ३ शंखकी माफक मनोहर गला. ४ सिंहकीसी कमर.

नख शिख देखि रामकी शोभा * सुमिरिपिताप्रणमन अतिक्षोभा॥
परवश सखिन लखी जब सीता* भई गहरु सब कहहिं सभीता ॥
पुनि आउब इहि बिरियाँ काली * अस कहिमन बिहँसी यक आली
गूढ़ गिरा सुनि सिय सकुचानी* भयउ विलम्ब मातुभय मानी ॥
धरि बड़ धीर राम उर आनी * फिरी आप प्रण पितुवश जानी॥

दो०देखनमिसुमृगीबहगतरु, फिरति बहोरि बहोरि
निरखि निरखिरघुबीरछबि,बाढ़ीप्रीतिनथोरि२४

जानि कठिन शिवचाप बिसूरति* चली राखि उर श्यामल मूरति॥
प्रभु जब जात जानकी जानी * सुख-सनेह-शोभागुणखानी ॥
परमप्रेममय मृदु मसि कीन्ही * चारु चत्रभीतर लिखि लीन्ही॥
गई भवानीभवन बहोरी * बन्दि चरण बोली कर जोरी ॥
जय जय जय गिरिराजकिशोरी* जय महेशमुखचन्द्रचकोरी ॥
जय गजबदन-षडानन माता * जगतजननि दामिनिद्युतिगाता॥
नहिं तव आदि मध्य अवसाना* अमितप्रभाव वेद नहिं जाना ॥
भवभवविभवपराभव-कारिणि * विश्वविमोहिनिस्ववशविहारिणि

दो०पतिदेवतासुतीयमहँ, मातु प्रथम तव रेष॥
महिमाअमितनकहिसकहिं,सहसशारदाशेष२४१

सेवत तोहिं सुलभ फल चारी * वरदायिनि त्रिपुरारिपियारी ॥
देवि पूजि पदकमल तुम्हारे * सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ॥
मोर मनोरथ जानहु नीके * बसहु सदा उरपुर सबहीके ॥
कीन्हेउँ प्रगट न कारण तेही * अस कहि चरण गहे बैदही ॥
विनयप्रेमवश भई भवानी * खसी माल मूरति मुसुकानी ॥

१ जगत्की उत्पति, पालन, व नाश करनेवाली.

सादर सियप्रसाद उर धरेऊ * बोली गौरि हर्ष हिय भरेऊ ॥
सुनु सिय सत्य अशीश हमारी * पूजिहि मनकामना तुम्हारी ॥
नारदवचन सदा शुचि साँचा * सो बर मिलिहि जाहि मन राँचा

छंद०मनजाहिराचोमिलिहिसोवरसहजसुन्दरसाँ-
वरो।करुणानिधानसुजानशीलसनेहजानतरावरो।
यहिभांतिगौरिअशीशसुनिसियसहितहियहर्षित
अली।तुलसीभवानिहिंपूजिपुनिपुनिमुदितमनमंदिरचली
सो०जानिगौरिअनुकूल,सियहियहर्षनजायकहि ॥
मंजुलमंगलमूल, बाम अंग फरकन लगे ॥ २९ ॥

हृदय सराहत सीयलुनाई * गुरुसमीप गवने दोउ भाई ॥
राम कहा तब कौशिकपाहीं * सरलस्वभाव छुआ छल नाहीं॥
सुमन[१] पाइ मुनिपूजा कीन्ही * पुनि अशीश दोउ भाइन दीन्हीं
सुफल मनोरथ होइँ तुम्हारे * राम लषण सुनि भये सुखारे ॥
करि भोजन मुनिवर बिज्ञानी * लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥
बिगत दिवस मुनिआयसु पाई * सन्ध्या करन चले दोउ भाई॥
प्राचीदिशि[२] शशि उगेउ सुहावा * सियमुखसरिस देखि सुख पावा॥
बहुरि बिचार कीन्ह मनमाहीं * सीयबदनसम हिमकर नाहीं ॥

दो०जन्मसिन्धुपुनिबन्धुबिष, दिनमलीनसकलंक
सियमुखसमतापाव किमि, चन्द्रबापुरोरंक॥२४२॥

घटै बढ़ै बिरहिनि दुखदाई * ग्रसै राहु निजसन्धिहिं पाई ॥
कोकशोकप्रद[३] पंकजद्रोही * अवगुण बहुत चन्द्रमा तोही ॥

१ फूल. २ पूर्वदिशामें. ३ चक्रवाकोंको शोच देनेवाला.

वैदहीमुखपटतर दीन्हे * होइ दोष बड़ अनुचित कीन्हे
सियमुखछबि बिधुब्याजबखानी*गुरुपहँ चले निशा बड़ि जानी ॥
करि मुनिचरणसरोजप्रणामा * आयसु पाइ कीन्ह बिश्रामा ॥
बिगतनिशा रघुनायक जागे * बन्धु बिलोकि कहन अस लागे
उगेउ अरुण अवलोकहु ताता* पंकज–कोक–लोक–सुखदाता।
बोले लषण जोरि युग पाणी * प्रभुप्रभावसूचक मृदु बाणी ॥

दो०अरुणोदयसकुचेकुमुद,उडुगणज्योतिमलीन॥
जिमितुम्हारआगमनसुनि,भयेनृपतिबलहीन१४३॥

नृप सब नखत कराहिं उजियारी* टारि न सकहिं चापतम भारी॥
कमल लोक मधुकर खग नाना* हर्षे सकल निशाअवसाना ॥
ऐसेहि प्रभु सब भक्त तुम्हारे * होइहहिं टूटे धनुष सुखारे ॥
उदय भानु बिनु श्रम तम नाशा* दुरे नखत जग तेज प्रकाशा ॥
रवि निजउदयब्याज रघुराया * प्रभुप्रताप सब नृपन दिखाया॥
तव भुजबलमहिमाउद्घाटी * प्रगटी धनुबिघटनपरिपाटी ॥
बन्धुबचन सुनि प्रभु मुसुकाने* होइ शुचि सहज पुनीत अन्हाने ॥
नित्यक्रिया करि गुरुपहँ आये * चरणसरोज सुभग शिर नाये ॥
शतानन्द तब जनक बुलाये* कौशिकमुनिपहँ तुरत पठाये ॥
जनकबिनय तिन आय सुनाई* हर्षे बोलि लिये दोउभाई ॥

दो०शतानन्दपद बान्दि प्रभु,बैठे गुरुपहँ जाइ॥
चलहु तात मुनिकहेउ तब,पठवाजनक बुलाइ२४४

सीयस्वयम्बर देखिय जाई * ईश काहि धौं देहि बड़ाई ॥
लषण कहा यशभाजन सोई * नाथ कृपा तव जापर होई ॥

१ भुजावोंकेबलकीमहिमाकेप्रसिद्धकरनेवाली २ ईश्वर. ३ यशका पात्र.

हर्षे सुनि सब मुनिबर बानी * दीन्ह अशीश सबहिं सुख मानी॥
पुनि मुनिवृन्दसमेत कृपाला * देखन चले धनुषमखशाला ॥
रंगभूमि आये दोउ भाई * अस सुधि सब पुरवासिन पाई॥
चले सकल गृहकाज बिसारी * बालक युवा जरठ नर नारी ॥
देखा जनक भीर भइ भारी * शुचिसेवक सब लिये हँकारी ॥
तुरत सकल लोगनपहँ जाहू * आसन उचित देहु सबकाहू ॥

दो०कहि मृदु बचन बिनीत तिन, बैठारे नर नारि॥ उत्तम मध्यमनीचलघु,निजनिजथलअनुहारि २४५

राजकुँवर तेहि अवसर आये * मनहुँ मनोहरता छविछाये
गुणसागर नागर बर बीरा * सुन्दर श्यामल गौर शरीरा ॥
राजसमाज बिराजत रूरे * उडुगणमहँ जनु युग बिधु पूरे ॥
जिनके रही भावना जैसी * प्रभुमूरति देखी तिन तैसी ॥
देखहिं भूप महारणधीरा * मनहुँ बीररस धरे शरीरा ॥
डरे कुटिल नृप प्रभुहिं निहारी * मनहुँ भयानक मूरति भारी ॥
रहे असुर छल जो नृपबेषा * तिन प्रभु प्रकट कालसम देषा ॥
पुरवासिन देखे दोउ भाई * नरभूषण लोचनसुखदाई ॥

दो०नारिविलोकहिंहर्षिहिय, निजनिजरुचिअनुरूप जनु सोहत शृंगार धरि, मूरति परम अनूप ॥

बिदुषन[1] प्रभु विराटमय दीसा * बहु मुख कर पग लोचनशीसा
जनकजाति अवलोकहिं कैसे * सजन सगे[2] प्रिय लागहिं जैसे ॥
सहित विदेह बिलोकहिं रानी * शिशुसम प्रीति न जात बखानी
योगिन परमतत्त्वमय भासा * शान्त शुद्ध सम सहजप्रकाशा ॥

१ विद्वानोंको. २ बालकसमान.

हरिभक्तन देखेउ दोउ भ्राता* इष्टदेव इव सबसुखदाता ॥
रामहिं चितव भावजेहिसीया* सो सनेह सुख नहिं कथनीया ॥
उर अनुभवति न कहिसक सोऊ* कवन प्रकार कहै कवि कोऊ॥
जहिं बिधि रहा जाहि जस भाऊ* तेहि तस देखेउ कोशलराऊ ॥

दो०राजत राजसमाजमहँ, कोशलराजकिशोर ॥
सुन्दर श्यामल गौर तनु, विश्वविलोचनचोर२४७

सहज-मनोहर-मूरति दोऊ * कोटिकामउपमा लघु सोऊ ॥
शरदचन्दनिन्दक मुख नीके * नीरजनयन भावते जीके ॥
चितवनि चारु मारमदहरणी * भावत हृदय जाइ नहिं बरणी॥
कलकपोल श्रुति कुंडल लोला* चिबुक अधर सुन्दरमृदु बोला
कुमुदबन्धुकर निन्दक हासा * भृकुटी विकट मनोहर नासा॥
भाल बिशाल तिलक झलकाहीं*कच बिलोकिअलिअवलिलजाहीं
पीत चौतनी शिरन सुहाई * कुसुमकली बिच बीचबनाई ॥
रेखा रुचिर कम्बुकलग्रीवा * जनु त्रिभुवनसुषमाकी सींवा ॥

दो०कुंजरमणिकंठा कलित, उर तुलसीकी माल॥
वृषभकन्ध केहरिठवनि, बलनिधिबाहुबिशाल ॥

कटि तूणीर पीतपट बांधे * कर शर धनुष बाम कर काँधे॥
पीत यज्ञउपवीत सुहाई * नख शिख मंजु महाछबि छाई ॥
देखि लोग सब भये सुखारे * यकटक लोचन टरहिं न टारे ॥
हर्षे जनक देखि दोउ भाई * मुनिपदकमल गहे तब जाई ॥
करि बिनती निजकथा सुनाई* रंगअवनि सब मुनिहिं दिखाई ॥
जहँ जहँ जाहिं कुँवरबरदोऊ* तहँ तहँ चकित चितव सबकोउ

२ जगतकी दृष्टि जिनमें अटकती है. २ कमलनेत्र.

निज निज रुचि रामहिं सब देषा*कोउ न जान कछुमर्मविशेषा
भलि रचना नृपसन मुनि कहेऊ*राजा मुदित परमसुखलहेऊ ॥
दो०सबमंचनते मंच यक, सुन्दर बिशद बिशाल
मुनिसमेत दोउबन्धु तहँ, बैठारे महिपाल॥ २४९ ॥
प्रभुहिं देखि सब नृप हिय हारे* जनु राकेशउदेय भय तारे ॥
अस प्रतीति तिनके मनमाहीं * रामचाप तोरब शक नाहीं ॥
विनु भंजेहु भवधनुष बिशाला* मेलिहि सीय रामउर माला ॥
अस बिचारि गवनहु घर भाई* जय प्रताप बल तेज गँवाई ॥
बिहँसे अपर भूप सुनि बाणी * जे अविवेकअन्ध अभिमानी॥
तोरेउ धनुष ब्याह अवगाहा * बिनतोरे को कुँवरि बिबाहा ॥
एकबार कालहु किन होई * सियहित समर जितब हम सोई॥
यह सुनि अपर भूप मुसुकाने * धर्मशील हरिभक्त सयाने ॥
सो०सीय विवहिब राम,गर्व दूर करि नृपनकर ॥
जीति को सक संग्राम, दशरथके रणबाँकुरे३०॥
वृथा मरहु जनि गाल बजाई * मनमोदक नहिं भूख बुताई ॥
शिख हमारि सुनि परमपुनीता* जगदम्बा जानहु जिय सीता ॥
जगतपिता रघुपतिहिं विचारी * भरि लोचन छबि लेहु निहारी॥
सुन्दर सुखद सकलगुणराशी * ये दोउ बन्धु शम्भुउरबाशी ॥
सुधा-समुद्र समीप बिहाई * मृगजल निरखि मरहु कत धाई॥
करहु जाय जाकहँ जोइ भावा* हम तो आजु जन्मफल पावा ॥
अस कहि भले भूप अनुरागे * रूप अँनूप बिलोकन लागे ॥
देखहिं सुर नभ चढ़े बिमाना * वर्षहिं सुमन करहिं कलगाना॥

१ जैसे. २ चंद्रके उदयमें तारा. ३ मूर्खतासे अन्धे. ४ उपमारहित.

दो०जानि सुअवसर सीय तब, पठवा जनक बुलाइ
चतुरसखी सुन्दर सकल, सादर चलीं लिवाइ२५०

सियशोभा नहिं जाइ बखानी * जगदम्बिका रूपगुणखानी ॥
उपमा सकल मोहिं लघु लागी * प्राकृत नारि अंग अनुरागी ॥
सीय बार्णि तेहि उपमा देई * को कवि कहै अयश को लेई ॥
जो पटतरिय तीयसम सीया * जग अस युवति कहाँ कमनीया॥
गिरा[1] मुखर[2] तनु अर्ध भवानी * रतिअतिदुखितअतनुपतिजानी ॥
विष वारुणी बन्धु प्रिय जेही * कहिय रमासम किमि बैदेही॥
जो छवि-सुधापयोनिधि होई * परमरूपमय कच्छप सोई ॥
शोभारजु मन्दर शृङ्गारू * मथै पाणिपंकज निज मारू ॥

दो०यहिविधि उपजै लक्ष्मि जब, सुंदरतासुखमूल
तदपि सकोचसमेत कबि, कहहिं सीयसमतूल२५१

चली संग लै सखी सयानी * गावत गीत मनोहर बानी ॥
सोह नवलतनु सुन्दरि सारी * जगतजननि अतुलित छवि भारी
भूषण सकल सुदेश सुहाये * अंग अंग रचि सखिन बनाये॥
रंगभूमि जब सिय पगु धारी * देखि रूप मोह नर नारी ॥
हर्षि सुरन दुंदुभी बजाई * बर्षि प्रसून अप्सरा गाई ॥
पाणिसरोज सोह जयमाला * औचक चितै सकल महिपाला॥
सीय चकितचित रामहिं चाहा * भये मोहबश सब नरनाहा ॥
मुनिसमीप बैठे दोउ भाई * लगे ललकि लोचन निधि पाई

दो०गुरुजनलाजसमाजबड़ि, देखिसीयसकुचानि
लगीविलोकनसखिनतन, रघुवीरहिंउरआनि२५२॥

१ सुन्दरी. २ सरस्वती. ३ वाचाल. ४ देहरहित. ५ हस्तकमलसे.

रामरूप अरु सियछबि देषी * नरनारिन पहिरेउ निमेषी[१]॥
शोचहिं सकल कहत सकुचाहीं * विधिसेन[२] विनय कराहिं मनमाहीं॥
हरु विधि बेगि जनकजड़ताई * मति हमारि अस देहु सुहाई॥
बिनु बिचार प्रण तजि नरनाहू * सीयरामकर करै विवाहू॥
जग भल कहहि भाव सबकाहू * हठ कीन्हे उरअन्तर दाहू॥
यहि लालसामग्न सबलोगू * बर साँवरो जानकीयोगू॥
तब बंदीजन जनक बुलाये * बिरुदावली कहत चलि आये॥
कह नृप जाइ कहहु प्रण मोरा * चले भाट हिय हर्ष न थोरा॥

दो०बोलेबन्दीबचनबर, सुनहुसकलमहिपाल ॥
प्रण विदेहकरकहहिंहम,भुजाउठायविशाल २५३॥

नृपभुजबल[३] विधु शिवधनु राहू * गरुअ कठोर विदित सबकाहू॥
रावण बाण महाभट भारे * देखि शरासन गवहिं सिधारे॥
सोइ पुरारिकोदण्ड कठोरा * राजसमाज आजु जेहिं तोरा॥
त्रिभुवन–जय- समेत वैदेही * विनय विचार बरै हठ तेही॥
सुनि प्रण सकल भूप अभिलाषे * भट मानी अतिशय मन माषे॥
परिकर बाँधि उठे अकुलाई * चले इष्टदेवन शिर नाई॥
तमकि ताकि तकि शिवधनु धरहीं * उठे न कोटिभांति बल करहीं॥
जिनके कछु विचार मनमाहीं * चापसमीप महीप न जाहीं॥

दो०तमकि धरहिं धनु मूढ नृप,उठै न चलहिंलजाइ॥
मनहुँ पाइ भटवाहुबल,अधिक अधिक गरुआइ २५४॥

भूप सहसदश एकहिबारा * लगे उठावन टरै न टारा॥
डिगै न शम्भुशरासन कैसे * कामीवचन सतीमन जैसे॥

१ पलक. २ बिधातासे. ३ राजावोंके भुजावोंका बल.

सब नृप भये योग उपहासी * जैसे बिनु बिराग संन्यासी ॥
कीरति विजय बीरता भारी * चले चापकर सरबस हारी ॥
श्रीहत भये हारि हिय राजा * बैठे निज निज जाइ समाजा ॥
नृपन बिलोकि जनक अकुलाने * बोले बचन रोष जनु साने ॥
द्वीप द्वीपके भूपति नाना * आये सुनि हम जो प्रण ठाना॥
देव दनुज धरि मनुजशरीरा * विपुल बीर आये रणधीरा ॥

दो० कुँवरिमनोहरिविजयबड़ि,कीरतिअतिकमनीय पावनहार बिरंचि जनु, रचेउ न धनुदमनीय २५५

कहहु काहि यह लाभ न भावा * काहु न शंकरचाप चढ़ावा ॥
रहा चढ़ाउब तोरब भाई * तिल भरि भूमि न सकेउ छुड़ाई
अब जनि कोउ माखैं भट मानी * बीरविहीन मही मैं जानी ॥
तजहु आश निज निज गृह जाहू * लिखा न बिधि बैदेहिबिवाहू ॥
सुकृत जाय जो प्रण परिहरऊँ * कुँवरि कुँवारि रहौ का करऊँ
जो जनतेउँ बिनुभट महि भाई * तौ प्रण करि होतेउँ न हँसाई
जनकबचन सुनि सब नरनारी * देखि जानकी भये दुखारी ॥
सुनतहि लषण कुटिल भईं भौंहैं * रदपट फरकत नयन रिसौंहैं॥

दो०कहि न सकत रघुवीरडर,लगे वचन जनु बाण नाइ रामपदकमल शिर, बोले गिरा प्रमाण॥२५६॥

रघुवंशिनमहँ जहँ कोउ होई * तेहि समाज अस कहै न कोई॥
कही जनक जस अनुचित बानी * विद्यमान रघुकुलमणि जानी॥
सुनहु भानुकुल-पंकज-भानू * कहौं सुभाव न कछु अभिमानू
जो राउर-अनुशासन पाऊँ * कन्दुकइव ब्रह्माण्ड उठाऊँ ॥

१ पृथ्वी. २ होंठ. ३ सूर्यवंशरूप कमलके सूर्य. ४ गेंदसा.

काचे घट जिमि डारों फोरी * सकौं मेरु मूलकइव तोरी ।
तव प्रतापमहिमा भगवाना * का बापुरो पिनाक पुराना ।
नाथ जानि अस आयसु होऊ* कौतुक करौं बिलोकिय सोऊ।
कमलनालइमि चाँप चढ़ावौं * शतयोजनप्रमाण लै धावौं ।

दो०तोरौं छत्रकदंड जिमि, तव प्रतापबल नाथ।
जो न करौं प्रभुपदशपथ, पुनि न धरौं धनु हाथ

लषण सकोप बचन जब बोले * डगमगानि महि दिग्गज डोले
सकल लोक सब भूप डराने * सियहिय हर्ष जनक सकुचाने
गुरु रघुपति सब मुनि मनमाहीं * मुदित भये पुनि पुनि पुलकाहीं
सैनहिं रघुपति लषण निबारे * प्रेमसमेत निकट बैठारे ।
विश्वामित्र समय शुभ जानी * बोले अतिसनेह मृदु बानी ।
उठहु राम भंजहु भवचापू * मेटहु तात जनकपरितापू ।
सुनि गुरुवचन चरण शिर नावा* हर्ष बिषाद न कछु उर आवा ।
ठाढ़ भये उठि सहजसुभाये * ठवनि युवा मृगराज लजाये ।

दो०उदित उदयगिरिमंचपर, रघुबर बालेपतंग ॥
बिकसे सन्तसरोज सब, हर्षे लोचनभृंग ॥ २५८ ।

नृपनकेरि आशानिशि नाशी * बचननखतअवली न प्रकाशी।
मूढ़–महीप–कुमुद सकुचाने * कपटी भूप उलूक लुकाने ।
भये बिशोक लोक मुनि देवा * बर्षाहिं सुमन जनावहिं सेवा ।
गुरुपद बन्दि सहित अनुरागा * राम मुनिनसन आयसु माँगा।
सहजहिं चले सकलजगस्वामी * मत्त–मंजु–कुंजर–बरगामी ॥
चलत राम सब पुरनरनारी * पुलकपूरि तनु भये सुखारी ॥

१ धनुष्य. २ भोरके सूर्य. ३ साधुरूप कमल. ४ फूल.

बन्दि पितर सुर सुकृत सँभारे * जो कछु पुण्यप्रभाव हमारे ॥
तौ शिवधनु मृणालकी नाई * तोरहिं राम गणेश गुसाँई ॥
दो०रामहिं प्रेमसमेत लखि, सखिन समीप बुलाइ
सीतामातु सनेहवश, बचन कहै बिलखाइ ॥२५९॥
सखि सब कौतुक देखनहारे * जेउ कहावत हितू हमारे ॥
कोउ न बुझाइ कहै नृपपाहीं * ये बालक अस हठ भल नाहीं
रावण बाण छुआ नहिं चापा * हारे सकल भूप करि दापा ॥
सो धनु राजकुँवरकर देहीं * बाल[1]मराल कि मन्दर लेहीं ॥
भूपसयानप सकल सिरानी * सखिबिधिगतिकछु जाइनजानी
बोली चतुरसखी मृदुबानी * तेजवन्त लघु गणिय न रानी॥
कहँ * कुम्भज[2] कहँ सिंधु[3]अपारा* शोषेउ सुयश सकल संसारा ॥

१ एक समयमें इन्द्र और वृत्रासुरका संग्राम भया; जिसमें इन्द्रकी तरफ सब देवता और वृत्रासुरकी तरफ सब दैत्य थे. निदान ऐसे युद्ध होते होते इन्द्रने वज्रसे वृत्रासुरको मार डाला. पीछे औरभी दानवोंको देवता मारने लगे तब विना मालिककी दैत्योंकी फौज भागचली उसमेंसे जिसको जहां ठिकान बैठा वह वहाँ गया. उसीमें एक कालकेय नामका राक्षसोंका गण था;वे लोग भागके, समुद्रके अंदर गये और वहां बिचार करने लगे कि–देवतोंका नाश कैसे होवे ? तब किसीने कहा कि देवतोंका मूल तप और तपका मूल ब्राह्मण हैं सो इन्हीके मारनेसे देवता आपहीसे मर जावेंगे ऐसे बिचारकर वह कालकेय नाम राक्षसोंका गण दिनभर समुद्रके जलमें रहकर रात्रिमें निकलके तपस्वी ब्राह्मणोंको मारने खाने लगे. इसतरह उन राक्षसोंने बसिष्ठजीके आश्रममें १९७, च्यवनजीके आश्रममें १०० और भरद्वाजके आश्रममें २० ऐसे कितनेएक ब्राह्मणोंको खा खाके, हड्डियोंके ढेरके ढेर लगा दिये. जिससे

१ बालहंस २ अगस्ति. ३ समुद्र.

रविमंडल देखत लघु लागा * उदय तासु त्रिभुवनतम भागा[1]॥

दो०मंत्र परमलघु जासु बश बिधि हरिहर सुरसर्ब
महामत्तगजराजकहँ, बश कर अंकुश[2]खर्ब[3] ॥२६०॥

काम कुसुमधनुसायक लीन्हे * सकलभुवन अपने बश कीन्हे
देवि तजिय संजय जिय जानी * भंजब धनुष राम सुनु रानी॥
सखीबचन सुनि भइ परतीती * मिटा बिषाद बढ़ी अतिप्रीती
तब रामहिं बिलोकि बैदेही * सभय हृदय बिनवति जेहि तेही
मनही मन मनाय अकुलानी * होउ प्रसन्न महेश भवानी ॥
करहु सफल आपनि सेवकाई * करि हित हरहु चापगरुआई॥
गणनायक बरदायक देवा * आजु लगे कीन्ही तव सेवा॥
बार बार बिनती सुनि मोरी * करहु चापगुरुता अतिथोरी ॥

स्वाहा स्वधा सब बंद होगये तब देवताओंने बहुत पीडित हो, भगवान् नारायणकी शरणमें जाकर बड़ी स्तुति करी; तब भगवानने कहा कि-हमने तुम्हारी सब पीडा जानली. कालकेय नाम राक्षसोंका गण समुद्रके जलके अंदर है सो जो समुद्र सूखे तौ वे लोग मारे जावें परंतु लक्ष्मीके नातासे हम नहीं सुखावेंगे. इसलिये तुम लोग अगस्त्यजीकी शरणमें जावो, ऐसे सुन शीस नवाय सब देवताओंने अगस्त्यजीकी शरणमें जाकर उनकी स्तुति करी और कहा कि-बातापी आतापीको आपने मारा और बिन्ध्याचलको भी आपने शान्त किया, सो हे दयालु मुनि ! अब कृपा करके हमारा संकट काटो. ऐसे देवताओंके बचन सुन महादयालु अगस्त्यजी समुद्रका पान करगये. जब समुद्र सूख गया, तब देवतोंने दैत्योंको मार पीट लिया उनमेंसे कछु मरे और कछु पाताल गये.

---

१ त्रिलोकीका अंधकार. २ आंगुस. ३ छोटासा

दो०देखि देखि रघुबीरतन, सुर मनाव धरि धीर
भरे बिलोचन प्रेमजल, पुलकावली शरीर ॥२६१॥
नीके निरखि नयन भरि शोभा *पितुप्रण सुमिरि बहुरि मन क्षोभा
अहह तात दारुण हठ ठानी *समुझत नहिं कछु लाभ न हानी
सचिव समयशिख देइ न कोई * बुधसमाज बड़ अनुचित होई
कहँ धनु कुलिशहुँचाहि कठोरा* कहँ श्यामल मृदु गात किशोरा
बिधि केहिभांति धरौं उर धीरा* सिरससुमन इमि बेधिहि हीरा
सकलसभाकी मति भइ भोरी * अब मोहिं शम्भुचाप गति तोरी
निजजड़ता लोगनपर डारी * होहु हरुअ रघुपतिहिं निहारी॥
अतिपरिताप सीयमनमाहीं * लवनिमेष युगसम शत जाहीं॥
दो०प्रभुहिंचितैपुनि चितै महि, राजतलोचनलोलें
खेलतमनसिजमीनियुग,जनु बिधुमंडललोल २६२
गिरा अलिनि मुखपंकज रोकी * प्रगट न लाजनिशा अवलोकी
लोचनजल रहु लोचनकोना * जैसे परमकृपणकर सोना ॥
सकुची व्याकुलता बड़ि जानी * धरि धीरज प्रतीति उर आनी॥
तनु मन बचन मोर पण साँचा * रघुपतिपदसरोज मन राँचा ॥
तौ भगवान सकलउरबासी * करिहहिं मुहिं रघुपतिकी दासी ॥
जेहिकर जेहिपर सत्य सनेहू * सो तेहि मिलत न कछु संदेहू ॥
प्रभुतन चितै प्रेमप्रण ठाना * कृपानिधान राम सब जाना ॥
सियहिं बिलोकि तकेउ धनु कैसे* चितव गरुड़ लघु व्यालहिं जैसे ॥
दो०लषण लखेउ रघुवंशमणि, ताकेउहरकोदंड ॥
पुलकिगातबोलेबचन,चरणचापिब्रह्माण्ड ॥२६३॥

१ बड़े कष्टकी बात है. २ बज्रहूसे कठोर. ३ शोभित. ४ चंचल नेत्र.

दिशिकुंजरहु कमठ अहिकोला * धारहु धरणि धरि धीर न डोला ॥
राम चहहिं शंकरधनुतोरा * सजग होहु सुनि आयसु मोरा ॥
चापसमीप राम जब आये * नरनारिन सुर सुकृत मनाये ॥
सबकर संशय अरु अज्ञानू * मन्द–महीपनकर अभिमानू ॥
भृगुपतिकेरि गर्ब गरुआई * सुरमुनिबरनकेरि कदराई ॥
सियकर शोच जनकपछितावा * रानिनकर दारुण दुखदावा ॥
शम्भुचाप–बड़–बोहित पाई * चढ़े जाइ सब संग बनाई ॥
रामबाहुबल सिंधु अपारा * चहत पार नहिं कोउ कनहारा ॥

दो०राम बिलोके लोग सब, चित्रलिखेसे देषि ॥ *
चितई सीय कृपायतन, जानी विकल बिशेषि२६४ ॥

देखी बिपुल बिकल बैदही * निमिष[1] बिहात कल्पसम तेही ॥
तृषित बारिबिनु जो तनु त्यागा * मुये करै का सुधातड़ागा[2] * ॥
का बर्षा जब कृषी सुखाने * समय चूक पुनि का पछिताने ॥
अस जिय जानि जानकी देषी * प्रभु पुलके लखि प्रीति विशेषी
गुरुहिं प्रणाम मनहिं मन कीन्हा * अतिलाघव उठाइ धनु लीन्हा ॥
दमकेउ दामिनिजिमिघनलयऊ * पुनि धनु नभमंडलसम भयऊ ॥
लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े[3] * काहु न लखा देख सब ठाढ़े ॥
तेहिक्षणमध्य राम धनु तोरा * भरेउ भुवन धुनि घोर कठोरा ॥

छंद०भरिभुवनघोरकठोरर[4]वरबिबाँ[5]जितजिमारगचले
चिक्करहिं दिग्गजडोल महिअहिकोल कूरम कलमले
सुरअसुरमुनिकरकानदीन्हेसकलविकलबिचारहीं ॥
कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं ३२

१ पलक. २ अमृतका तालाब. ३ जोरसे. ४ शब्द. ५ सूर्यके घोड़े.

सो०शंकरचाप जहाज, सागर रघुबरबाहुबल ॥ *
बूड़ी सकल समाज, चढ़े जे प्रथमहिं मोहबश॥३१॥

प्रभु दोउ खंड चाप महि डारे * देखि लोग सब भये सुखारे ॥
कौशिकरूप पयोनिधि पावन * प्रेमबारि अवगाह सुहावन ॥
रामरूप राकेश निहारी * बढ़ी बीचि पुलकावलि भारी ॥
बाजे नभ गहगहे निशाना * देवबधू नाचहिं करि गाना ॥
ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीशा * प्रभुहिं प्रशंसहिं देहिं अशीशा ॥
वर्षहिं सुमन रंग बहु माला * गावहिं किन्नर गीत रसाला ॥
रही भुवन भरि जय जय बानी * धनुषभंगधुनि जात न जानी ॥
मुदित कहहिं जहँ तहँ नरनारी * भंजेउ राम शम्भुधनु भारी ॥

दो०बन्दीमागधसूतगण, बिरद बदहिं मतिधीर ॥
करहिंनिछावरिलोग सब, हय गज धन मणि चीर ॥

झाँझ मृदंग शंख सहनाई * भेरि ढोल दुन्दुभी सुहाई ॥
बाजहिं बहु बाजने सुहाये * जहँ तहँ युवतिन मंगल गाये ॥
सखिनसहित हर्षित अति रानी * सूखत धान परा जनु पानी ॥
जनक लहेउ सुख शोच बिहाई * पैरत थके[2] थाह जनु पाई ॥
श्रीहत भये भूप धनु टूटे * जैसे दिवस दीपछबि छूटे ॥
सियाहियसुख बर्णिय केहि भाँती * जनु चातक पाये जल स्वाती ॥
रामहिं लषण बिलोकत कैसे * शशिहिं चकोर[3]किशोरक जैसे ॥
शतानन्द तब आयसु दीन्हा * सीता गमन रामपहँ कीन्हा ॥

दो०संग सखी सुन्दरि चतुर, गावहिं मंगलचार॥
गवनी बाल[4]मरालगति, सुषमा अंग अपार॥२६६॥

---

१ घोड़े २ दियाका तेज. ३ चकोरका बालक. ४ छोटे हंसकी चाल.

सखिनमध्य सिय सोहति कैसी * छबिगणमध्य महाछबि जैसी ॥
करसरोज जयमाल सुहाई * विश्वविजयशोभा जनु छाई ॥
तनु सकोच मन परम उछाहू * गूढ प्रेम लखि परै न काहू ॥
जाइ समीप रामछबि देखी * रहि जनु कुँवरि चित्र अवरेखी॥
चतुरसखी लखि कहा बुझाई * पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥
सुनत युगलकर माल उठाई * प्रेमबिवश पहिराइ न जाई ॥
सोहत जनु युगजलज सनाला * शशिहिं सभीत देत जयमाला ॥
गावहिं छबि अवलोकि सहेली * सिय जयमाल रामउर मेली ॥

सो०रघुबरउर जयमाल, देखि देव वर्षहिं सुमन
सकुचे सकल भुआल, जनुबिलोकिरविकुमुदगण

पुर अरु व्योमे बाजने बाजे * खेल भये मलिन साधुसबगाजे॥
सुर किन्नर नर नाग मुनीशा * जयजय सब कहि देहिं अशीशा
नाचहिं गावहिं बिबुधबधूटी * बार बार कुसुमावलि छूटी ॥
जहँ तहँ बिप्र बेदधुनि करहीं* बन्दी बिरदावलि उच्चरहीं ॥
मही पाताल नाक यशव्यापा* राम बरी सिय भंजेउ चापा ॥
करहिं आरती पुरनरनारी * देहिं निछावरि वृत्ति बिसारी ॥
सोहत सीयरामकी जोरी * छबिशृंगार मनहुँ यकठौरी ॥
सखी कहहिंप्रभुपदगहुसीता * करति न चरणपरस अतिभीता

दो०गौतमतियगतिसुरतिकरि, नहिंपरसतिपदपानि
मन बिहँसे रघुवंशमणि, प्रीतिअलौकिकजानि ॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे* क्रूर कपूत मूढ मन माषे * ॥
उठि उठि पहिरिसनाहअभागे* जहँ तहँ गाल बजावनलागे ॥

१ आकाशमें. २ दुष्ट. ३ देवांगना. ४ स्वर्गमें. ५ अपनी औकात.

लेहु छुड़ाइ सीय कह कोऊ * धरि बाँधहु नृपबालक दोऊ ॥
तोरे धनुष काज नहिं सरई * जीवत हमहिं कुँवरि को बरई॥
जो बिदेह कछु करै सहाई * जीतहु समर सहित दोउ भाई ॥
साधु भूप बोले सुनि बानी * राजसमाजहिं लाज लजानी ॥
बल प्रताप बीरता बड़ाई * नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥
सोइ शूरता कि अब कहुँपाई* अस बुधि तौ बिधिमुहमसिलाई

दो०देखहु रामहिं नयन भरि,तजिईर्षा मदमोहु ॥
लषणरोषपावक प्रबल,जानि शलभजनिहोहु ॥

वैनतेयबालि जिमि चह कागू * जिमि शशचहहिनागअरिभागू
जिमिचह कुशलअकारणकोही* सुख सम्पदा चहहि शिवद्रोही
लोभी लोलुप कीरति चहई * अकलंकिता कि कामीलहई ॥
हरिपदबिमुख परमगति चाहा* तस तुम्हार लालच नरनाहा ॥
कोलाहल सुनि सीय सकानी* सखी लिवाइ गई जहँ रानी ॥
राम सुभाय चले गुरुपाहीं * सियसनेह बर्णत मनमाहीं ॥
रानिनसहित शोचबश सीया* अबधौं बिधिहि कहाकरणीया ॥
भूपबचन सुनि इत उत तकहीं* लषण रामडर बोलिनसकहीं ॥

दो०अरुण[2] नयन भुकुटीकुटिल,चितवतनृपनसकोप ॥
मनहुँ मत्तगजगणनिरखी, सिंहकिशोरहिंचोप ॥

खरभर देखि बिकल नरनारी * सब मिलि देहिं महीपनगारी ॥
तेहि अवसर सुनि शिवधनुभंगा * आये भृगुकुलकमलपतंगा * ॥
देखि महीप सकल सकुचाने * बाजझपट जनु लवा लुकाने ॥
गौर शरीर भूति भलि भ्राजा * भाल बिशाल त्रिपुण्ड्र बिराजा॥

१ जैसे, गरुडके भागको कागड़ा चाहै. २ लाल.

शीश जटा शशिबदन सुहावा * रिसिबशकछुक अरुणहोइआवा
भृकुटी कुटिल नयन रिसिराते * सहजहिं चितवत मनहुँ रिसाते॥
वृषभकन्ध उर बाहु विशाला * चारु जनेउ माल मृगछाला ॥
कटि मुनिबसन तूण दुइ बांधे * धनु शर कर कुठार कल कांधे

दो०शान्तबेषकरणीकठिन,बर्णि न जाइस्वरूप ॥
धरिमुनितनुजनुबीररस,आयेजहँसबभूप ॥२७०॥

देखत भृगुपतिवेष कराला * उठे सकल भयविकल भुआला॥
पितुसमेत कहि कहि निजनामा * लगे करन सब दण्डप्रणामा ॥
जेहिसुभायाचितवहिं हितजानी * सो जानै जनु आयु खुटानी ॥
जनक बहोरि आय शिर नावा * सीय बुलाय प्रणाम करावा ॥
आशिष दीन्हि सखी हर्षानी * निजसमाज लै गईं सयानी ॥
बिश्वामित्र मिले पुनि आई * पदसरोज मेले दोउ भाई ॥
राम लषण दशरथके ढोटा * दीन्ह अशीस जानि भल जोटा
रामहिं चितय रहे थकि लोचन * रूप अपार मारमदमोचन[१] ॥

दो०बहुरिबिलोकिबिदेहसन,कहहुकहाअतिभीर॥
पूँछतजानअजानजिमि,व्यापेउकोपशरीर ॥२७१॥

समाचार कहि जनक सुनाये * जेहि कारण महीप[२] सब आये॥
सुनत बचन फिरि अनत निहारे * देखे चापखण्ड महि डारे ॥
अतिरिसि बोले बचन कठोरा * कहु जड़ जनक धनुष केहिं तोरा
बेगि दिखाउ मूढ नतु आजू * उलटौं महि जहँलगि तव राजू॥
अतिडर उतर देत नृप नाहीं * कुटिल भूप हर्षे मनमाहीं * ॥
सुर[३] मुनि नाग नगरनरनारी * शोचहिं सकल त्रास उर भारी॥

१ कामदेवके मदके छुटानेवाले. २ पृथ्वीमें ३ देवता. आधापलक.

मन पछिताति सीयमहतारी * बिधि सवाँरि सब बात बिगारी ॥
भृगुपतिकर स्वभाव सुनि सीता* अर्धनिमेषं कल्पसम बीता ॥

दो०सभय बिलोके लोग सब, जानि जानकी भीर॥
हृदय न हर्ष विषाद कछु, बोले श्रीरघुवीर ॥२७२॥

नाथ शम्भुधनु-भंजनहारा * होइहि कोउ यक दास तुम्हारा ॥
आयसु कहा कहिय किन मोही*सुनि रिसाय बोले मुनि कोही ॥
सेवक सो जो करै सेवकाई * अरिकरणी करि करिय लराई ॥
सुनहु राम जेहिं शिवधनु तोरा* सहसबाहुसम सो रिपु मोरा ॥
सो बिलगाय बिहाय समाजा * नतु मारे जैहैं सब राजा * ॥
सुनि मुनिबचन लषण मुसुकाने* बोले परशुधरहिं अपमाने * ॥
बहु धनुहीं तोरउँ लरिकाईं * कबहुँ न अस रिसिकीन्ह गुसांईं॥
यहि धनुपर ममता केहिहेतू * सुनि रिसाय कह भृगुकुलकेतू ॥

दो०रे नृपबालक कालबश, बोलत तोहिं न सँभार
धनुहींसमत्रिपुरारिधनु, बिदित सकल संसार२७३

लषण कहा हँसि हमरे जाना * सुनहु देव सब धनुष समाना ॥
का क्षितिलाभ जीर्ण धनु तोरे * देखा राम नयेके भोरे * ॥
छुवत टूट रघुपतिहिं न दोषू * मुनि बिनकाजकरियकतरोषू ॥
बोले चितय परशुकी ओरा * रे शठ सुनेसि प्रभावनमोरा ॥
बालक जानि बधौं नहिं तोहीं* केवल मुनि जड़ जानेसि मोहीं॥
बाल-ब्रह्मचारी अति-क्रोही * विश्वविदित क्षत्रियकुलद्रोही ॥
भुजबल भूमि भूपबिनु कीन्हे * बिपुलबार महिदेवन दीन्हे ॥
सहसबाहु- भुज--छेदनहारा * परशु बिलोकु महीपकुमारा ॥

१ क्रोधी. २ शत्रुका कर्म करके. ३ महादेवका धनुष.

दो०मातुपितहिंजनिशोचबश, करसिमहीपकिशोर ॥
गर्भनके अर्भकदलन, परशु मोर अतिघोर ॥२७४॥

बिहँसि लषण बोले मृदु बानी * अहो मुनिश महाभट मानी* ॥
पुनि पुनि मोहिं दिखाव कुठारा * चहत उड़ावन फूँकि पहारा ॥
इहाँ कुम्हड़बतिया कोउ नाहीं* जो तर्जनि देखत मरिजाहीं ॥
देखि कुठार शरासन बाना * मैं कछु कहा सहित अभिमाना॥
भृगुकुल समुझि जनेउ बिलोकी* जो कछु कहहु सहौं रिसि रोकी
सुर महिसुर[2] हरिजन अरु गाई * हमरे कुल इनपर न शुराई * ॥
बधे पाप अपकीरति हारे * मारतहूँ पाँ परिय तुम्हारे * ॥
कोटि कुलिश[3]सम बचन तुम्हारा* वृथा धरहु धनु बाण कुठारा ॥

दो०जो बिलोकि अनुचित कहेउँ, सुनहुमहामुनिधीर ॥
सुनि सरोष भृगुबंशमणि, बोले गिरा गँभीर॥२७५॥

कौशिक सुनहु मन्द यह बालक * कुटिल कालबश निजकुलघालक
भानुबंश-राकेश-- कलंकू * निपट निरंकुश अबुध अशंकू ॥
कालकवर होइहि क्षणमाहीं * कहौं पुकारि खोरि मोहिं नाहीं॥
तुम हटकहु जो चहहु उबारा * कहि प्रताप बल रोष हमारा ॥
लषण कहेउ मुनिसुयशतुम्हारा* तुमहिं अछत को बर्णै पारा ॥
अपने मुख तुम आपनि करणी* बार अनेक भांति बहु बरणी ॥
नहिं संतोष तौ पुनिकछुकहहू* जनि रिसिरोंकिदुसहदुखसहहू॥
बीरवृत्ति तुम धीर अछोभा * गारी देत न पावहु शोभा * ॥

दो०शूर समर करणीकरहिं,कहिनजनावहिंआपु॥
विद्यमानरणपाइरिपु, कायर कथहिं प्रलापु ॥२७६॥

---

१ बालकनके मारनेवाला. २ ब्राह्मण. ३ बज्रतुल्य.

तुमकहँ काल हाँकि जनुलावा * बार बार मोंहि लागिबुलावा ॥
सुनत लषणके बचन कठोरा * परशु सुधारि धरेउकरघोरा ॥
अब जनि देहु दोष मोहिं लोगू * कटुवादी बालक बधयोगू * ।
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा * अब यह मरणहार भा साँचा ॥
कौशिक कहा क्षमिय अपराधू * बालदोषगुण गणहिं न साधू ॥
कर कुठार मैं अकरणकोही * आगे अपराधी गुरुद्रोही ॥
उतर देत छाँड़ौं बिनु मारे * केवल कौशिक शील तुम्हारे ॥
नतु यहि काटि कुठार कुठोरे * गुरुहिं उऋण होतेउँ श्रमथोरे ॥

दो०गाधिसुवनकहहृदयहँसि, मुनिहिंहरिअरैसूझ
अजगव खण्डेउ ऊखजिमि, अजहुँनबूझअबूझ ॥

कहेउ लषण मुनिशीलतुम्हारा * को नहिं जान बिदितसंसारा ॥
मातहिं पितहिंउऋणभये नीके * गुरुऋण रहा शोच बहुजीके ॥
सो जनु हमरे माथे काढ़ा * दिन चलि गयो ब्याजबहुबाढ़ा
अब आनिय ब्यैबहरिया बोली * तुरत देब मैं थैली खोली * ॥
सुनि कटुबचन कुठार सुधारा * हा हा कहि सब लोग पुकारा
भृगुवर परशु देखावेहु मोहीं * बिप्र बिचारि बचौ नृपद्रोही ॥
मिले न कबहुँ सुभट रण गाढ़े * द्विजदेवता घरहिके बाढ़े * ॥
अनुचित कहि सबलोग पुकारे * रघुपति सैनहिंलषणनिवारे ॥

दो०लषणउतरआहुतिसरिस, भृगुवरकोपकृशानु ॥
बढ़त देखि जलसमवचन, बोले रघुकुलभानु २७८

नाथ करहु बालकपर छोहू * शुद्ध दूधमुख करियनकोहू ॥
जो पै प्रभुप्रभाव कछु जाना * तौ कि बराबर करतअयाना ॥

---

१ विश्वामित्रजीने. २ शत्रुभाव. ३ शिवधनु. ४ व्यवहाररूप

जो लरिकाकछुअनुचितकरहीं* गुरु पितु मातु मोदमनभरहीं॥
करिय कृपा शिशु सेवकजानी* तुम समशील धीरमुनि ज्ञानी॥
रामबचन सुनि कछुक जुड़ाने *कहि कछु लषण बहुरि मुसुकाने॥
हँसतदेखिनखशिखरिसिब्यापी * राम तोर भ्राता बड़ पापी॥
गौर शरीर श्याम मनमाहीं * कालकूट[1] मुख पयमुख नाहीं॥
सहज टेढ़ अनुहरै न तोहीं * नीच मीचसम[2] लखै न मोहीं॥

दो०लषणकहेउ हँसिसुनहुमुनि, क्रोधपापकरमूल
जेहिबश जनअनुचितकरहिं, चरहिंबिश्वप्रतिकूल

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया * परिहरि कोप करियअबदाया॥
टूट चाप नहिं जुरहिं रिसाने * बैठिय होइहि पाँय पिराने *॥
जो अतिप्रिय तौ करियउपाई * जोरिय कोउ बड़गुणी बुलाई॥
बोलत लषणहिं जनक डराहीं * मष्ट[2] करहु अनुचितभलनाहीं॥
थर थर काँपहिं पुरनरनारी * छोट कुमार खोट अतिभारी॥
भृगुपति[3] सुनि सुनि निर्भयबानी* रिस तनु जरै होय बलहानी॥
बोले रामहिं देइ निहोरा * बचै बिचारि बन्धुलघु[4] तोरा॥
मन मलीन तनु सुन्दर कैसे * विषरसभरा कनकघट जैसे*॥

सो०सुनिलक्ष्मणबिहसेबहुरि, नयन तरेरे राम॥
गुरुसमीपगवने सकुचि,परिहरिबाणीबाम॥१८०॥

अतिबिनीत मृदु शीतल बाणी * बोले राम जोरि युग पाणी॥
सुनहु नाथ तुम सहजसुजाना * बालकवचन करिय नहिं काना॥
बरैं बालक एकस्वभाऊ * इनहिं न सन्त विदूषहिं काऊ॥
तेहिं नाहीं कछु काज बिगारा * अपराधी मैं नाथ तुम्हारा *॥

---

१ मृत्युसमान. २ चुप रहो. ३ परशुरामजी. ४ छोटा भाई.

कृपा कोप वध बन्धु गुसाईं * मोपर करिय दासकी नाईं ॥
कहियबेगिजहिबिधिरिसिजाई * मुनिनायक सोइ करिय उपाई ॥
कह मुनि राम जाइ रिस कैसे * अजहुँ बन्धु तव चितव अनैसे ॥
यहिके कण्ठ कुठार न दीन्हा * तौ मैं कहा कोप करि कीन्हा ॥

दो०गर्भस्त्रवहिंअवनिपरमणि,सुनिकुठारगतिघोर॥
परशु अछत देखौंजियत,बैरीभूपकिशोर ॥ २८१ ॥

बहै न हाथ दहै रिस छाती * भा कुठार कुंठित नृपघाती* ॥
भयउ बाम बिधिफिरेउ सुभाऊ * मोरे हृदय कृपा कस काऊ ॥
आजु दैव दुख दुसह सहावा *सुनि सौमित्रि बिहँसिशिर नावा ॥
बाउ कृपा मूरतिअनुकूला * बोलत बचन झरत जनु फूला ॥
जो पै कृपा जरै मुनिगाता * क्रोध भये तनु राखु विधाता ॥
देखु जनक हठि बालक एहू * कीन्ह चहत जड़ यमपुरगेहू ॥
बेगि करहु किन आँखिनओटा * देखत छोट खोट नृपढोटा ॥
बिहँसे लषण कहा मुनिपाहीं * मूँदिय आँखि कतहुँ कोउ नाहीं ॥

दो०परशुराम तब रामप्रति, बोलेबचनसक्रोध ॥
शम्भुशरासनतोरिशठ,करसिहमारप्रबोध॥२८२॥

बन्धु कहै कटु सम्मत तोरे * तू छल बिनय करसि कर जोरे ॥
करु परितोष मोर संग्रामा * नाहिंत छाँडु कहाउब रामा ॥
भल तजि करहु समर शिवद्रोही * बन्धुसहित नतु मारौं तोहीं ॥
भृगुपति तमकि कुठार उठाये * मन मुसुकाहिं राम शिर नाये ॥
गुणहु लषणकर हमपर रोषू * कतहुँ सुधाइहुते बड़ दोषू ॥
टेढ़ जानि शंका सबकाहू * वक्र चन्द्रमहिं ग्रसै न राहू ॥

---

१ राजरानिनके.

राम कहेउ रिस तजिय मुनीशा * कर कुठार आगे यह शीशा ॥
जेहिरिसजाइ करिय सोइ स्वामी*मोहिं जानि आपन अनुगामी ॥

दो०प्रभुहिंसेवकहिंसमरकस, तजहुविप्रबररोष ॥
वेषबिलोकिकहेसिकछु,बालकहूनहिंदोष ॥२८३॥

देखि कुठार बाणधनुधारी * भे लरिकहिं रिस बीर बिचारी॥
नाम जान पै तुमहिं न चीन्हा * वंशस्वभाव उतर तेहिं दीन्हा ॥
जो तुम अवतेउ मुनिकी नाईं * पदरज शिर शिशु धरत गुसाईं ॥
क्षमहु चूक अनजानतकेरी * चहिय विप्रउर कृपा घनेरी ॥
हमहिं तुमहिं सरिवरिकस नाथा *कहहु तो कहा चरणकहँ माथा॥
राममात्र लघु नाम हमारा * परशुसहित बड़ नाम तुम्हारा ॥
देव एक गुण धनुष हमारे * नवगुण परमपुनीत तुम्हारे ॥
सब प्रकार हम तुमसन हारे * क्षमहु विप्र अपराध हमारे ॥

दो०बारबार मुनि बिप्रबर,कहा रामसन राम * ॥
बोलेभृगुपतिसरुष होइ,तुहूँबन्धुसमबाम ॥२८४॥

निपटहि द्विजकरि जानेहु मोहीं* मैं जस विप्र सुनाऊँ तोहीं ॥
चापस्रुवा शर आहुति जानू * कोप मोर अतिघोर कृशानू ॥
समिध सेन चतुरंग सुहाई * महामहीप भये पशु आई ॥
मैं यहि परशु काटि बलि दीन्हा* समरयज्ञ जग कोटिन कीन्हा ॥
मोर प्रभाव बिदित नहिं तोरे * बोलसि निदरि बिप्रके भोरे ॥
भंजेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा * अहमिति मनहुँ जीति जग ठाढ़ा

---

१ चरणकी धूरि. २ नम्र, तपस्या करना, संतुष्ट,क्षमावान्, सुशील, इ-न्द्रियोंको जीतना, ज्ञानी, दानी, दयालु ऐसे नवगुणोंसे युक्त ब्राह्मण होता है. और यज्ञोपवीतसे.

राम कहा मुनि कहहु बिचारी * रिसि अति बड़ि लघुचूक हमारी॥
छुवतहि टूट पिनाक पुराना * मैं केहि हेतु करौं अभिमाना ॥

दो०जो हम निदरहिं बिप्रबर, सत्य सुनहु भृगुनाथ
तौ अस को जगसुभट जेहि, भयबश नावहिं माथ ॥

देव दनुज[1] भूपति भट नाना * समबल अधिक होउ बलवाना॥
जो रण हमहिं प्रचारय कोऊ * लरहिं सुखेन काल किन होऊ॥
क्षत्रियतनु धरि समर सकाना * कुलकलंक तेहिं पामर जाना ॥
कहौं स्वभाव न कुलहिं प्रशंसी * कालहु डरहिं न रण रघुबंशी ॥
बिप्रबंशकी अस प्रभुताई * अभय होय सो तुमहिं डराई ॥
सुनि मृदु गूढ़बचन रघुपतिके * उघरे पेटल[2] परशुधरमतिके * ॥
राम रमापतिकर धनु लेहू * खैंचहु मोर मिटै संदेहू * ॥
लेत चाप आपुहि चढ़ि गयऊ * परशुराममन बिस्मय भयऊ ॥

दो०जाना रामप्रभाव तब, पुलकप्रफुल्लितगात * ॥
जोरि पाणि[3] बोले बचन, प्रेम न हृदय समात२८६॥

जय रघुबंश-बनज-बन-भानू[4] * गहनदनुजकुलदहनकृशानू * ॥
जय सुर विप्र-धेनु-हितकारी * जय मदमोहकोहभ्रमहारी ॥
विनय-शील--करुणा-गुणसागर * जयति वचनरचनाअतिनागर ॥
सेवकसुखद सुभग सब अंगा * जय शरीरछबि कोटिअनंगा॥
करौं कहा मुख एक प्रशंसा * जय महेश मन--मानसहंसा ॥
अनुचित बहुत कहेउँ अज्ञाता * क्षमहु क्षमामन्दिर दोउभ्राता॥
कहि जय जय जयरघुकुलकेतू * भृगुपति गये बनहिं तपहेतू॥
अपभय कुटिल महीप डराने * उठि उठि कायरगवहिंपराने ॥

---

१ राक्षस. २ केंवाड़े. ३ हाथ. ४ रघुकुलकमलप्रभाकर.

सो०देवन दीन्ही दुन्दुभी, प्रभुपर वर्षहिं फूल ॥
हर्षे पुरनरनारि सब, मिटा मोहमय शूल ॥२८७॥

अति गहगहे बाजने बाजे * सबहिं मनोहर मंगलसाजे * ॥
यूथ यूथ मिलि सुमुखिसुनयनी* करहिं गान कल कोकिलबयनी
सुख बिदेहकर बर्णि न जाई * जन्मदरिद्र मनहुँ निधिपाई ॥
विगतत्रास भइ सीय सुखारी * जनु विधुउदय चकोरकुमारी॥
जनक कीन्ह कौशिकहिं प्रणामा* प्रभुप्रसाद धनु भेजेउ रामा ॥
मोहिं कृतकृत्य कीन्ह दोउ भाई*अब जो उचित सो कहिय गुसाँई
कह मुनि सुनु नरनाह प्रवीना * रहा विवाह चापआधीना ॥
टूटतही धनु भयेउ विवाहू * सुर नर नाग विदित सबकाहू ॥

दो०यदपि जाइ तुम करहु अब,यथावंशव्यवहार॥
बूझि विप्र कुलबृद्ध गुरु, बेदविदित आचार२॥८८॥

दूत अवधपुर पठवहु जाई * आनैं नृपदशरथहिं बुलाई * ॥
मुदित राउ कहि भलेहि कृपाला* पठये दूत अवध तेहिकाला ॥
बहुरि महाजन सकल बुलाये * आइ सबन सादर शिर नाये ॥
हाट बाट मन्दिर पुरबासा * नगर सँवारहु चारिहु पासा ॥
हर्षि चले निज निज गृह आये * पुनि परिचारक बोलि पठाये ॥
रचहु विचित्र वितान बनाई * शिर धरि वचन चले सचुपाई॥
पठये बोलि गुणी तिन्ह नाना * जो वितानविधिकुशल सुजाना॥
विधिहिं बन्दि तिन्ह कीन्ह अरंभा* रचे कनक-कदलीके थंभा* ॥

दो०हरितमणिनके पत्र फल, पद्मरागके फूल * ॥
रचनादेखिबिचित्रअति,मनबिरंचिकरभूल॥२८९॥

---

१ चंद्रोदयमें. २ चकोरी. ३ बाजार.

बेणु हरितमणिमय सब कीन्हे * सरल सपर्ण परहिं नहिं चीन्हे ॥
कनककलित अहिबेलि बनाई * लखि नहिं परै सवर्ण सुहाई ॥
तेहिके रचि पचि बंध बनाये * बिच बिच मुक्तादाम सुहाये ॥
मौणिक[1] मरकत[2] कुलिश[3] पिरोजा*चीरकोर पचि रचेउ सरोजा ॥
किये भृङ्ग बहुरंग विहंगा * गुंजहिं कूजहिं पवनप्रसंगा * ॥
सुरप्रतिमा खम्भन गढ़ि काढ़े * मंगलद्रव्य लिये सब ठाढ़े ॥
चौकैं भांति अनेक पुराये * सिन्दुरमणिमय सहजसुहाये ॥

दो०सौरभपल्लवसुभगसुठि, कियेनीलमणिकोर ॥
हेमबौर मरकत घँवरि,लसतपाटमयडोर ॥२९०॥

रचे रुचिर बर बन्दनवारे * मनहु मनोभवफंद सँवारे * ॥
मंगलकलश अनेक बनाये * ध्वज पताक पट चमर सुहाये ॥
दीप मनोहर मणिमय नाना * जाइ न बर्णि बिचित्र बिताना ॥
जेहि मण्डप दुलहिनि बैदही * सो बर्णै असमति कवि केही ॥
दूलह राम रूपगुणसागर * सो वितान तिहुँलोक उजागर॥
जनकभवनकी शोभा जैसी * गृहगृहप्रति पुर देखिय तैसी ॥
जेहिं तिरहुति तेहि समयनिहारी* तेहिं लघु लगे भुवन दशचारी ॥
जो सम्पदा नीचगृह सोहा * सो बिलोकि सुरनायक मोहा ॥

दो०बसै नगर जेहि लक्ष्मि करि, कपटनारिवरबेष
तेहि पुरकी शोभा कहत, सकुच शारदा शेष२९१॥

पहुँचे दूत रामपुर पावन * हर्षे नगर बिलोकि सुहावन ॥
भूपद्वार तिन खबरि जनाई * दशरथ नृप सुनि लिये बुलाई ॥
करि प्रणाम तिन पाती दीन्ही * मुदित महीप आपउठि लीन्ही॥

१ माणिक (लालमणि), २ मरकत (नीलमणि), ३ कुलिश (हीरा)

बारि बिलोचन बाँचत पाती * पुलकगात आई भरि छाती ॥
राम लषणउर कर बरचीठी * रहिगये कहत न खाटी मीठी ॥
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची * हर्षी सभा बात सुनि साँची ॥
खेलत रहे तहां सुधि पाई * आये भरतसहित दोउभाई ॥
पूंछत अतिसनेह सकुचाई * तात कहांते पाती आई ॥

दो०कुशलप्राणप्रियबन्धुदोउ, अहहिंकहहुकेहिदेश
सुनि सनेहसाने बचन, बाँची बहुरि नरेश ॥२९२॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता * अधिकसनेह समात न गाता ॥
प्रीति पुनीत भरतकी देषी * सकलसभहिं सुख लहेउ विशेषी
तब नृप दूत निकट बैठारे * मधुर मनोहर बचन उचारे ॥
भैया कुशल कहहु दोउ बारे * तुम नीके निजनयन निहारे ॥
श्यामल गौर धरे धनु भाथा * वयकिशोर कौशिकमुनिसाथा ॥
पहिंचानेहु तुम कहहु सुभाऊ * प्रेमविवश पुनि पुनि कह राऊ ॥
जादिनते मुनि गये लिवाई * तबते आजु साँचि सुधि पाई ॥
कहहु बिदेह कवनविधि जाने * सुनि प्रियवचन दूत मुसुकाने ॥

दो०सुनहु महीपतिमुकुटमणि,तुमसमधन्यनकोउ
राम लषण जिनके तनय, बिश्वबिभूषण दोउ ॥२९३॥

पूँछनयोग न तनय तुम्हारे * पुरुषसिंह तिहुँपुर उजियारे ॥
जिनके यशप्रतापके आगे * शशि मलीन रवि शीतल लागे ॥
तिनकहँकाहियनाथकिमिचीन्हे * देखिय रविहिं कि दीपक लीन्हे ॥
सीयस्वयम्बर भूप अनेका * सिमिट सुभट एकते एका ॥
शम्भुशरासन काहु न टारा * हारे सकल भूप बरियारा ॥
तीनलोकमहँ जे भट मानी * सबकी शक्ति शम्भुधनु बानी ॥

१ तरकस. २ पंदरहवर्षकी उमिरि. ३ जोधा. ४ महादेवको धन्वा.

सकैं उठाइ सुरासुर मेरू * तेउ हिय हारि गये कर फेरू ॥
जेहिं कौतुक शिवशैल उठावा * सोउ तेहि सभा पराभव पावा॥

दो०तहाँ राम रघुबंशमणि, सुनिय महामहिपाल॥
भंजेउ चाप प्रयासबिनु, जिमि गज पंकजनाल २९४

सुनि सरोष भृगुनायक आये * बहुतभांति तिन आँखि दिखाये॥
देखि रामबल निजधनु दीन्हा * करि बहु बिनयगमन बन कीन्हा
राजत राम अतुलबल जैसे * तेजनिधान लषण पुनि तैसे ॥
कम्पाहिं भूप बिलोकत जाके * जिमि गज हरिकिशोरके[1] ताके ॥
देव देखि तव बालक दोऊ * अवनि आँखतर आव न कोऊ ॥
दूतबचनरचना प्रिय लागी * प्रेम-प्रताप-बीररस-पागी * ॥
सभासमेत राउ अनुरागे * दूतन देन निछावरि लागे * ॥
कहि अनीति ते मूँदहिं काना * धर्म बिचारि सबहिं सुख माना॥

दो०तब उठि भूप बसिष्ठकहँ, दीन्ह पत्रिका जाइ॥
कथा सुनाई गुरुहिं सब, सादर दूत बुलाइ २९५

सुनि बोले मुनि अतिसुख पाई * पुण्यपुरुषकहँ महि सुखछाई ॥
जिमि सरिता सागरमहँ जाहीं * यद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमिसुखसम्पति बिनहिं बुलाये* धर्मशीलपहँ जाहिं सुभाये ॥
तुम गुरु-बिप्र-धेनु-सुरसेवी * तस पुनीत कौसल्या देवी ॥
सुकृती तुमसमान जगमाहीं * भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं॥
तुमते अधिक पुण्य बड़ काके* राजन रामसरिस सुत जाके ॥
बीर बिनीत धर्मव्रतधारी * गुणसागर बालक बर चारी ॥
तुमकहँ सर्वकाल कल्याना * सजहु बरात बजाइ निशाना ॥

[1] सिंहके बालकके.

दो०चलहुबेगिसुनिगुरुबचन, भलेहिनाथशिरनाइ
भूपति गमने भवन तब, दूतहिं बास दिवाइ ॥२९६॥

राजा सब रनिवास बुलाई * जनकपत्रिका बाँचि सुनाई ॥
सुनि सन्देश सकल हर्षानी * अपरकथा सब भूप बखानी ॥
प्रेमप्रफुल्लित राजा रानी * मनहुँ शिखिन सुनि बारिदबानी
मुदित अशीस देहिं गुरुनारी * अति–आनंद–मग्न महतारी ॥
लेहिं परस्पर अतिप्रिय पाती * हृदय लगाइ जुड़ावहिं छाती ॥
रामलषणकी कीरति करणी * बारहिं बार भूपबर बरणी * ॥
मुनिप्रसाद कहि द्वार सिधाये * रानिन्ह तब महिदेव[1] बुलाये ॥
दिये दान आनन्दसमेता * चले बिप्रबर आशिष देता ॥

सो०याचकलियेहँकारि,दीन्हनिछावरिकोटिविधि
चिरजीवहु सुत चारि, चक्रवर्ति दशरत्थके ॥३३॥

कहत चले पहिरे पट[2] नाना * हर्षि हने गहगहे निशाना * ॥
समाचार सबलोगन पाये * लागे घर घर होन बधाये ॥
भुवन चारिदशौं[3] भरेउ उछाहू * जनकसुता-रघुबीर-बिबाहू * ॥
सुनि शुभकथा लोग अनुरागे * मग गृह गली सँवारन लागे ॥
यद्यपि अवध सदैव सुहावनि * रामपुरी मंगलमय पावनि ॥
तदपि प्रीतिकी रीति सुहाई * मंगलरचना रची बनाई * ॥
ध्वज पताक पट चामर चारू * छावा परमबिचित्र बजारू * ॥
कनककलश तोरण मणिजाला * हरद दूब दधि अक्षत माला ॥

दो०मंगलमय निज निज भवन, लोगन रचे बनाइ
बीथी सींची चतुर सब, चौकें चारु पुराइ ॥ २९७॥

---

१ ब्राह्मण. २ वस्त्र. ३ चौदा.

जहँतहँ यूथयूथमिलि भामिनि * सजि नवसप्त सकल द्युतिदामिनि
बिधुबदनी मृगशावकलोचनि * निजस्वरूपरतिमानबिमोचनि ॥
गावहिं मंगल मंजुलबानी * सुनि कलरव कलकंठ लजानी ॥
भूपभवन किमि जाइ बखाना * बिश्वबिमोहन रचेउ बिताना ॥
मंगलद्रव्य मनोहर नाना * राजत बाजत बिपुल निशाना ॥
कतहुँ बिरद बन्दी उच्चरहीं * कतहुँ वेदध्वनि भूसुर करहीं ॥
गावहिं सुन्दरि मंगलगीता * लै लै नाम राम अरु सीता ॥
बहुत उछाह भवन अतिथोरा * मानहुँ उमँगि चला चहुँ ओरा

दो०शोभा दशरथभवनकी, को कवि बर्णै पार * ॥
जहाँ सकलसुरशीसमणि, राम लीन्ह अवतार २९८

भूप भरत पुनि लिये बुलाई * हय¹ गज² स्यन्दन³ साजहु जाई ॥
चलहु बेगि रघुबरिबराता * सुनत पुलकपूरे दोउ भ्राता ॥
भरत सकल साँहनी⁴ बुलाये * आयसु दीन्ह मुदित उठि धाये
रुचि रुचि जीन तुरग तिन साजे * वर्ण वर्ण बर बाजि बिराजे ॥
सुभग सकल सुठि चंचलकरणी * हय जिमि जरत धरत पगु धरणी
नानाभांति न जाहिं बखाने * निदरि पवन जनु चहत उड़ाने
तिनपर छैल भये असवारा * भरतसरिस सब राजकुमारा ॥
सब सुन्दर सबभूषणधारी * कर शरचाप तूंण⁵ कटि भारी ॥

दो०छरे छबीले छैल सब, शूर सुजान नवीन * ॥
युगपदचर असवारप्रति, जे असिकलाप्रबीन २९९

बाँधे बिरद बीर रण गाढ़े * निकसि भये पुरबाहिर ठाढ़े ॥
फेरहिं चतुर तुरग गति नाना * हर्षहिंध्वनि सुनि पणवनिशाना ॥

१ घोड़े. २ हाथी, ३ रथ. ४ फौजके मालिक. ५ तर्कस.

रथ सारथिन विचित्र बनाये * ध्वज पताक मणिभूषण छाये ॥
चँवर चारुकिंकिणध्वनिकरहीं * भानुयान[1] शोभा अपहरहीं ॥
श्यामकर्ण अगणित हय होते * ते तिन्ह रथन सारथिन जोते ॥
सुन्दर सकल अलंकृत सोहैं * जिनहिं बिलोकत मुनिमन मोहैं ॥
जे जल चलहिं थलहिं की नाईं * टाप न बूड बेग अधिकाई ॥
अस्त्र शस्त्र सब साज बनाई * रथी सारथिन लिये बुलाई ॥

दो०चढ़ि चढ़ि रथ बाहर नगर, लागी जुरन बरात ॥
होत सगुनसुन्दरसुखद, जोजेहि कारज जात ३००

कलित करिबरन[2] परीं अँबारी * कहि न जाइ जेहि भांति सँवारी ॥
चले मत्तगज घण्ट बिराजे * मनहुँ सुभग सावनघन गाजे ॥
बाहन अपर अनेकबिधाना * शिबिका सुभग सुखासन याना ॥
तिन्ह चढ़ि चले बिप्रवरवृन्दा * जनु तनु धरे सकल श्रुतिछन्दा ॥
मागध सूत बन्दि गुणगायक * चले यान चढ़ि जो जेहि लायक
बेसर ऊँट वृषभ बहुजाती * चले बस्तु भरि अगणितभाती ॥
कोटिन काँवरि चले कहारा * बिबिध वस्तु को बर्णै पारा ॥
चले सकल सेवकसमुदाई * निज निज साजसमाज बनाई ॥

दो०सबके उर निर्भर हरष, पूरित पुलक शरीर * ॥
कबहिं देखिहैं नयन भरि, रामलषण दोउ बीर ३०१

गर्जहिं गजघण्टाध्वनि घोरा * रथरव बाजिहिंस चहुँओरा ॥
निदरि घनहिं घुमराहिंनिशाना * निजपराव कछु सुनिय न काना ॥
महाभीर भूपतिके द्वारे * रज होइजाइँ पखान पँवारे ॥
चढ़ी अटारिन देखहिं नारी * लिये आरती मंगलथारी ॥

१ मानों सूर्यके रथकी शोभाको हरण करते हैं. २ हाथियोंपर.

गावहिं गीत मनोहर नाना * अतिअनन्द नहिं जाइ बखाना॥
तब सुमन्त दुइ स्यन्दन साजी * जोते रविहयनिन्दक बाजी ॥
दोउ रथ रुचिर भूपपह आने * नहिं शारदप्रति जाहिं बखाने ॥

दो०तेहि रथ रुचिर बशिष्ठकहँ, हर्षि चाढ़इ नरेश॥
आपु चढ़ेउ स्यंदन सुमिरि, हर गुरु गौरि गणेश ३०२

राजसमाज एकरथ साजा * दूसर तेजपुंज अतिभ्राजा ॥
सहित बशिष्ठ सोह नृप कैसे * सुरगुरु-संग पुरंदर जैसे ॥
करि कुलरीति बेदबिधि राऊ * देखि सबहिं सबभांति बनाऊ ॥
सुमिरि राम गुरुआयसु पाई * चले महीपति शंख बजाई ॥
हर्षे बिबुध बिलोकि बराता * बर्षहिं सुमन सुमंगलदाता ॥
भयउ कोलाहल हय गज गाजे * व्योम बरात बांजने बाजे ॥
सुरनरनारि सुमंगल गाई * सरस राग बाजहिं सहनाई ॥
घण्टघण्टिध्वनि बर्णि न जाई * सरौं करैं पायक फहराई ॥
करहिं बिदूषक कौतुक नाना * हास्यकुशल कलगान सुजाना

दो०तुरग नचावहिं कुँवरबर, अकनि मृदंगनिशान॥
नागरनटचितवहिंचाकित,डिगहिंनतालबिधान ३०३

बने न बर्णत बनी बराता * होइँ सगुण सुन्दर शुभदाता ॥
चारा लाख बामदिशि लेई * मनहुँ सकल मंगल कहि देई॥
दाहिन काग सुखेन सुहावा * नकुलदर्श सबकाहूँ पावा ॥
सानुकूल बह त्रिबिध बयारी * सघट सबाल आव बरनारी ॥
लोवा फिरि फिरि दर्श दिखावा * सुरभीसन्मुखशिशुहिंपिआवा ॥
मृगमाला दाहिनि दिशि आई * मंगलगण जनु दीन दिखाई ॥

१ घोड़े. २ सरस्वतीसे. ३ रथमें. ४ इन्द्र. ५ देवांगना और मनुष्योंकी स्त्री

क्षेमकरी कह क्षेम बिशेषी * श्यामा बाम सुतरुतर देषी ॥
सन्मुख आयउ दधि अरु मीना * कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना ॥

दो० मंगलमय कल्याणमय, अभिमतफलदातार ॥
जनु सब साँचे होनहित, भये सगुन यकबार ३०४

मंगल शकुन सुगम सब ताके * सगुण ब्रह्म सुन्दर सुत जाके ॥
रामसरिस बर दुलहिनि सीता * समधी दशरथ जनक पुनीता॥
सुनि अस ब्याह सगुन सब नाचे * अब कीन्हे बिरंचि हम साँचे॥
यहि बिधि कीन्ह बरात प्रयाना * हयगजगाजहिं हनाहिं निशाना॥
आवत जानि भानुकुलकेतू * सरितन जनक बँधाये सेतू ॥
बीच बीच बरबास बनाये * सुरपुरसरिस सम्पदा छाये ॥
अशन[३] शयन बर बसन सुहाये * पावहिं सब निजनिज मन भाये
नित नूतन लखि सुख अनुकूले * सकल बरातिन मन्दिर भूले॥

दो० आवत जानि बरात बर, सुनि गहगहे निशान ॥
सजिगजरथपदचरतुरग, लेन चले अगवान ३०५

कनककलश कल[४] कोपर[५] थारा * भाजन ललित अनेकप्रकारा॥
भरे सुधासम सब पकवाना * भांति भांति नहिं जाहिं बखाना
फल अनेक बर बस्तु सुहाई * हर्षि भेंटहित भूप पठाई ॥
भूषण बसन महामणि नाना * खग मृग हय गज बहुबिध याना
मंगल सगुन सुगन्ध सुहाये * बहुत भांति महिपाल पठाये ॥
दधि चिउरा उपहार अपारा * भरि भरि काँवरि चले कहारा॥
अगवानिन जब दीख बराता * उर आनन्द पुलकभरगाता ॥
देखि बनाव सहित अगवाना * मुदित बरातिन हने निशाना ॥

१ सुन्दरी गौ. २ मछरी. ३ भोजन. ४ अच्छे. ५ कठोर.

दो०हर्षि परस्पर मिलनहित, कछुक चले बगमेल॥
जनु अनन्दसमुद्र दुइ, मिलत बिहाय सुवेल ३०६

बर्षि सुमन सुरसुन्दरि गावहिं * मुदित देव दुन्दुभी बजावहिं॥
वस्तु सकल राखी नृपआगे *बिनय कीन्ह तिन्ह अति अनुरागे
प्रेमसमेत राउ सब लीन्हा * भै बकशीस याचकन दीन्हा॥
करि पूजा मान्यता बड़ाई * जनवासेकहँ चले लिवाई॥
वसन[1] बिचित्र पाँवड़े परहीं * नृप दशरथ तापर पग धरहीं॥
देखि धनद[2]-धनमद परिहरहीं * बर्षि सुमन[3] सुर[4] जय जय करहीं
अतिसुन्दर दीन्हेउ जनवासा * जहँ सबकहँ सबभांति सुपासा
जानी सिय बरात पुर आई * कछु निजमहिमा प्रगट जनाई
हृदय सुमिरि सबसिद्धि बुलाई * भूपपहुनई करन पठाई॥

दो०सियआयसु[5]शिरसिद्धिधरि, गईजहाँजनवास
लियेसम्पदासकलसुख, सुरपुरभोगबिलास ३०७॥

निज निजवास बिलोकि बराती* सुरसुख सकल सुलभ सबभाँती
बिभव भेद कछु काहु न जाना* सकलजनककर करहिं बखाना॥
सियमहिमा रघुनायक जानी * हर्षे हृदय हेतु पहिंचानी॥
पितुआगमन सुनत दोउ भाई * हृदय न अतिआनन्द समाई॥
सकुचत कहि न सकत गुरुपाहीं* पितुदर्शनलालच मनमाहीं॥
बिश्वामित्र बिनय बड़ि देषी * उपजा उर सन्तोष बिशेषी॥
हर्षि बन्धु दोउ हृदय लगाये * पुलक अंग लोचन जलछाये॥
चले जहाँ दशरथ जनवासे * मनहुँ सरोवर[6] तकेउ पियासे॥

दो०भूप बिलोके जबहिं मुनि, आवत सुतनसमेत

१ वस्त्र. २ कुबेर. ३ फूल. ४ देवता. ५सीताजीकी आज्ञा.६ तालाव.

उठे हार्षि सुखसिन्धुमहँ, चले थाहसी लेत॥३०८॥

मुनिहिं दण्डवत कीन्ह महीशा * बार बार पदरज धरि शीशा ॥
कौशिक राउ लिये उर लाई * कहि अशीश पूँछी कुशलाई ॥
पुनि दंडवत करत दोउ भाई * देखि नृपतिउर सुख न समाई ॥
सुत हिय लाइ दुसह दुख मेटे * मृतक शरीर प्राण जनु भेंटे ॥
पुनि बशिष्ठपद शिर तिन नाये * प्रेममुदित मुनिबर उर लाये ॥
विप्र-वृन्द बंदे दुहुँ भाई * मनभावति अशीश तिन्ह पाई ॥
भरत सहानुज कीन्ह प्रणामा * लिये उठाइ लाइ उर रामा ॥
हर्षे लषण देखि दोउ भ्राता * मिले प्रेम--परिपूरण गाता ॥

सो०पुरजन परिजन जातिजन, याचक मंत्री मीत॥
मिले यथाविधि सबहिं प्रभु, परमकृपालु बिनीत॥

रामहिं देखि बरात जुड़ानी * प्रीतिकि रीत न जाइ बखानी ॥
नृपसमीप सोहहिं सुत चारी * जनु धनधर्मादिक तनुधारी
सुतनसहित दशरथकहँ देषी * मुदित नगरनरनारि विशेषी
सुमन बार्षि सुर हनहिं निशाना * नाकनटी नाचहिं करि गाना
शतानन्द अरु विप्र सचिवगन * मागध सूत बिदुष बन्दीजन ॥
सहित बरात राउ सन्माना * आयसु माँगि चले अगवाना ॥
प्रथम बरात लगनते आई * ताते उर प्रमोद अधिकाई ॥
ब्रह्मानन्द लोग सब लहहीं * बढ़हुदिवसनिशिविधिसन कहहीं

दो०रामसीयशोभाअवधि,सुकृतअवधि दोउ राज
जहँतहँ पुरजन कहहिं अस,मिलि नरनारिसमाज

जनक-सुकृत-मूरति बैदेही * दशरथसुकृत राम धरि देही ॥

१ राजाने. २ मुनिश्रेष्ठ. ३ छोटेभाईसहित. ४ मित्र. ५ नम्र.

इनसम काहु न शिव आराधे * काहु न इनसमान भल साधे ॥
इनसम कोउ न भयउ जगमाहीं * है नहिं कतहूँ होनेउ नाहीं ॥
हम सब सकल सुकृतकी राशी * भये जग[1] जन्मि जनकपुरवासी॥
जिन जानकी–रामछवि देखी * को सुकृती[2] इनसरिस विशेषी ॥
पुनि देखब रघुवीरविवाहू * लेब भलीविधि लोचनलाहू ॥
कहहिं परस्पर कोकिलबयनी * यहविवाह बड़लाभ सुनयनी ॥
बड़े भाग विधि बात बनाई * नयनअतिथि होइहैं दोउ भाई ॥

दो०बारहिं वार सनेहबश, जनक बोलाउब सीय ॥
लेन आइहहिं बन्धु दोउ, कोटिकाम[3]कमनीय ३११

बिबिधभांति होइहि पहुनाई * प्रिय न काहि अस सासुर माई ॥
तब तब रामलषणहिं निहारी * होइहहिं सब पुरलोग सुखारी ॥
सखि जस रामलषणकर जोटा * तेसेइ भूपसंग दुइ ढोटा ॥
[illegible]याम गौर सब अंग सुहाये * ते सब कहहिं देखि जे आये ॥
[illegible]हा एक मैं आजु निहारे * जनु बिरंचि निजहाथ सँवारे ॥
[illegible]त राम एकहि अनुहारी * सहसा लखि न सकहिं नर नारी
लषण शत्रुसूदन इकरूपा * नखशिखते सब अंग अनूपा ॥
मन भावहिं मुख वर्णि न जाहीं * उपमाकहँ त्रिभुवन कोउ नाहीं ॥

छंद०उपमानकोउकहदासतुलसीकतहुँकबिकोविदकहैं
बलबिनयबिद्याशीलशोभासिन्धुइनसमयेअहैं * ॥
पुरनारिसकलपसारिअंचलबिधिहिंबचनसुनावहीं ॥
ब्याहियहुचारिउभाइयहिपुरहमसुमंगलगावहीं ॥
सो०कहहिं परस्पर नारि, बारि बिलोचन पुलकतनु

१ संसारमें. २ पुण्यवान्. ३ करोडो कामदेवोंके समान सुन्दर.

सखिसबकरबपुरारि, पुण्यपयोनिधिभूपदोउ॥३४॥

यहिविधि सकल मनोरथ करहीं * आनँद उमँगि उमँगि उर भरहीं
जे नृप सीयस्वयम्बर आये * देखि बन्धु सब तिन सुख पाये
कहत रामयश बिशद बिशाला * निज निज भवन गये महिपाला॥
गये बीति कछु दिन यहिभांती * प्रमुदित पुरजन सकल बराती॥
मंगलमूल लग्नदिन आवा * हिमऋतु अगहनमास सुहावा॥
ग्रह तिथि नखतयोग बर बारू * लग्न शोधि विधि कीन्ह विचारू॥
पठै दीन नारदसन सोई * गुणी जनकके गणकन जोई॥
सुनी सकल लोगन यह बाता * कहाहिं ज्योतिषी अपरविधाता॥

दो०धेनुधूलिबेला बिमल, सकलसुमंगलमूल॥
विप्रन कहेउ बिदेहसन, जानि समयअनुकूल ३१२

उपरोहिताहिं कहेउ नरनाहा * अब बिलम्बकर कारण काहा॥
शतानन्द तब सचिव बुलाये * मंगलकलश साजि सबल्याये॥
शंख निशान पणव बहु बाजे * मंगल कलश सगुण सब साजे॥
सुभग सुआसिनि गावहिं गीता * कराहिं वेदधुनि बिप्र पुनीता॥
लेन चले सादर यहिभाँती * गये जहाँ जनवास बराती॥
कोशलपतिकर देख समाजू * अतिलघु लगे तिनहिं सुरराजू॥
भयउ समय अब धारिय पाँऊ * यह सुनि परा निशानन घाऊ॥
गुरुहिं पूँछि करि कुलबिधिराजा * चले संग मुनि साज समाजा॥

दो०भाग्य बिभव अवधेशकर, देखि देव ब्रह्मादि॥
लगे सराहन सहसमुख, जानि जन्म निज बादि ३१३

सुरन सुमंगलअवसर जाना * बर्षहिं सुमन बजाइ निशाना॥

१ महादेवजी. २ पुण्यके सागर. ३ निर्मल. ४ श्रेष्ठ. ५ ज्योतिषियोंने.

शिव ब्रह्मादिक बिबुधबरूथा[1] * चढ़े बिमानन नाना यूथा ॥
प्रेम पुलकतनु हृदय उछाहू * चले बिलोकन रामबिबाहू ॥
देखि जनकपुर सुर अनुरागे * निज निज लोक सबहिं लघु लागे
चितवहिं चकित बिचित्र बिताना * रचना सकल अलौकिक नाना
नगर–नारि--नर रूपनिधाना * सुघर सुधर्म सुशील सुजाना ॥
तिनहिं देखि सब सुर--नर--नारी * भये नखत जनु बिधुउँजियारी[2] ॥
बिधिहिं भयउ आश्चर्य बिशषी * निजकरणी कछु कतहुँ न देषी ॥

दो०शिव समुझाये देव सब, जनि आश्चर्य भुलाहु॥
हृदयबिचारहुधीरधरि, सियरघुबीरबिबाहु ३१४॥

जिनकर नाम लेत जगमाहीं * सकल अमंगलमूल नशाहीं ॥
करतल[3] होहिं पदारथ चारि * ते सियराम कहेउ कामारी ॥
यहिविधि शंभु सुरन समुझावा * पुनि आगे बर बसह चलावा ॥
देवन देखे दशरथ जाता * महामोद मन पुलकित गाता ॥
साधु–समाज–संग महिदेवा * जनु तनु धरे करहिं सुरसेवा ॥
सोहत साथ सुभग सुत चारी * जनु अपवर्ग सकल तनुधारी ॥
मरकतकनकवर्ण बर जोरी * देखि सुरन भइ प्रीति न थोरी ॥
पुनि रामहिं बिलोकि हिय हर्षे * नृपहिं सराहि सुमन तिन्ह बर्षे ॥

दो०रामरूप नखशिख सुभग, बारहिंबार निहारि॥
पुलक गात लोचन सजल, उमासमेत पुरारि ३१५

केकि–कण्ठद्युति–श्यामलअंगा * तड़ितविनिन्दक बसन सुरंगा ॥
व्याहविभूषण विविध बनाये * मंगलमय सबभांति सुहाये ॥
शरदबिमलविधुवदन सुहावन * नयन नवलराजीवलजावन ॥

१ देवतावोंके समूह. २ चंद्रकी उजेलीमें. ३ हाथमें.

सकल अलौकिक सुन्दरताई * कहि न जाय मनहीं मन भाई॥
बन्धु मनोहर सोहहिं संगा * जात नचावत चपल तुरंगा॥
राजकुँवर बर बाजि नचावहिं * बंशप्रशंसक बिरद सुनावहिं॥
जेहि तुरंगपर राम बिराजे * गति बिलोकि खगनायक लाजे
कहि न जाइ सबभांति सुहावा * वाजिवेष जनु काम बनावा॥
छं०जनु बाजिबेष बनाइ मनसिज राम हित अतिसोहहीं
अपने सुबय बल रूप गुण गनि सकल भुवन बिमोहहीं
जगमगति जीन जड़ाव जोति सुमोति माणिक मणि लगे
किंकिणि ललाम लगाम ललित बिलोकि सुर नर मुनिठगे
दो०प्रभु मनसाहिं लयलीन मब, चलत बाजिछबि पाव
भूषण उडुगण तडित बन, जनु बरवरहि नचाव ३१६
जेहि बर वाजि राम असवारा * तेहि शारदहु न बरणै पारा॥
शंकर राम-रूप अनुरागे * नयनपंचदश अति प्रिय लागे॥
हरि हितसहित राम जब जोहे * रमा-समेत रमापति मोहे॥
निरखि रामछबि बिधि हर्षाने * आठहि नयन जानि पछिताने॥
सुरसेनपउर बहुत उछाहू * बिधिते डेवढ़े लोचन लाहू॥
रामहिं चितव सुरेश सुजाना * गौतमशाप परमहित माना॥
देव सकल सुरपतिहिं सिहाहीं * आजु पुरन्दरसम कोउ नाहीं॥
मुदित देवगण रामहिं देषी * नृपसमाज दुहुँ हर्ष विशेषी॥
छं०अतिहर्ष राजसमाज दुहुँदिशि दुन्दुभीबाजहिंघनी
वर्षहिं सुमनसुर हर्षि कहि जय जयति जयरघुकुलमनी
यहि भांति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं॥

१ घोड़े. २ गरुड. ३ कामदेव. ४ मनोहर. ५ विष्णु.

रानी सुआसिनि बोलि परिछन हेतु मंगलसाजहीं ॥
दो॰ सजि आरती अनेकबिधि, मंगल सकल सँवारि
चलीं मुदित परिछन करन, गजगामिनि वरनारि ३१७
बिधुवदनी मृगशावलोचनि * सब निजतनछबिरतिमदमोचनि
पहिरे बर्ण बर्ण बर चीरा * सकलबिभूषण सजे शरीरा ॥
सकल सुमंगल अंग बनाये * करहिं गान कलकंठ लजाये ॥
कंकण किंकिणि नूपुर बाजहिं * चाल बिलोकि कामगजलाजहिं
बाजहिं बाजन बिबिध प्रकारा * नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥
शची शारदा रमा भवानी * जे सुरतिय शुचि सहज सयानी
कपटनारि बर बेष बनाई * मिलीं सकल रनिवासहिं आई ॥
करहिं गान कल मंगलवानी * हर्षबिबश सब काहु न जानी ॥
छं॰ को जान केहि आनन्दबश सब ब्रह्मवरपरिछनचलीं
कलगान मधुर निशान बर्षहिं सुमन सुर शोभा भली
आनन्दकन्द बिलोकि दूलह सकल हिय हर्षित भई
अम्भोजअम्बक अम्बु उमँगि सुअंग पुलकावलि छई
दो॰ जो सुख भा सियमातुमन, देखि रामबरबेष ॥
सो न सकहिं कहि कलपशत, सहस शारदा शेष
नयननीर हठि मंगल जानी * परिछन करहिं मुदितमन रानी॥
बेदबिहित अरु कुलव्यवहारू * कीन्ह भलीबिधि सब परिचारू
पंचशब्दध्वनि मंगल गाना * पट पाँवड़े परहिं बिधि नाना ॥
करि आरती अर्घ तिन दीन्हा * राम गमन मंडप तब कीन्हा ॥
दशरथ सहित समाज बिराजे * बिभव बिलोकि लोकपति लाजे

१ हाथीकीसी चालवाली. २ चन्द्रमुखी. ३ हरिणके बचेकेसे नेत्र.

समय समय सुर वर्षहिं फूला * शांति पढ़हिं महिसुर[1] अनुकूला ॥
नभ अरु नगर कोलाहल होई * आपन पर कछु सुनै न कोई ॥
यहि विधि राम मंडपहिं आये * अर्घ देइ आसन बैठाये * ॥

छन्द॰ बैठारिआसनआरतीकरिनिरखिबरसुखपावहीं
मणि बसन[2] भूषण भूरि[3] वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥
ब्रह्मादि सुरवर विप्रबेष बनाइ कौतुक देखहीं * ॥
अवलोकिरविकुलकमलरविछबिसुफलजीवनलेखहीं

दो॰ नाऊ बारी भाट नट, रामनिछावरि पाइ ॥ *
मुदित अशीशहिंनाइ शिर, हर्ष न हृदय समाइ ३१९

मिले जनक दशरथ अतिप्रीती * करि वैदिक लौकिक सब रीती ॥
मिलत राज दोउ महाविराजे * उपमा खोजि खोजि कवि लाजे ॥
लही न कतहुँ हारि हिय मानी * इनसम ए उपमा उर आनी ॥
समधी देखि देव अनुरागे * सुमन बर्षि यश गावन लागे ॥
जग विरंचि[4] उपजावा जबते * देखे सुने ब्याह बहु तबते ॥
सकल भांति सम साज समाजू * सम समधी देखे हम आजू ॥
देवगिरा[5] सुनि सुंदर साँची * प्रीति अलौकिक दुहुँदिशि माँची
देत पाँवड़े अर्घ सुहाये * सादर जनक मण्डपहिं ल्याये ॥

छन्द॰ मण्डपविलोकिविचित्ररचनारुचिरतामुनिमनहरे
निजपाणिजनकसुजानसबकहँआनिसिंहासनधरे ॥
कुलइष्टसरिसबसिष्ठपूजेबिनयकरिआशिषलही ॥
कौशिकहिंपूजतपरमप्रीतिकिरीतितौनपरैकही ३८

दो॰ वामदेवआदिक ऋषय, पूजे मुदित महीश ॥

१ ब्राह्मण. २ वस्त्र. ३ बहुत. ४ ब्रह्मा ५ देववाणी.

केहिभांतिबर्णिसिरातरसनाएकमुखमंगलमहा ॥ ४७
तव जनकपाइ वसिष्ठआयसु व्याहसाजसँवारिकै ॥
माण्डवी श्रुतकीर्ति उर्मिला कुँवरि लई हँकारिकै ॥
कुशकेतुकन्या प्रथम जो गुणशीलसुखशोभामयी ॥
सबरीतिप्रीतिसमेतकरिसोव्याहिनृपभरतहिंदई ४८
जानकीलघुभगिनि जो सुन्दरिशिरोमणि जानिकै॥
सोजनकदीन्हीव्याहिलषणहिंसकलबिधिसनमानिकै
जेहिनामश्रुतकीरतिसुलोचनिसुमुखिसबगुणआगरी
सो दई रिपुसूदनहिं भूपति रूपशीलउजागरी॥४९॥
अनुरूपबरदुलहिनिपरस्परलखिसकुचिहियहर्षहीं
सब मुदित सुन्दरता सराहहिं सुमन सुरगण बर्षहीं॥
सुन्दरी सुन्दरवरनसह सब एकमण्डप राजहीं ॥
जनुजीवअरुचारिउअवस्था विभुनसहितबिराजहीं
दो॰ मुदितअवधपतिसकलसुत,वधुनसमेतनिहारि
जनुपायेमहिपालमणि,क्रियनसहितफलचारि३२५

जस रघुवीरब्याहविधि बरणी * सकल कुँवर व्याहे तेहि करणी
काहि न जाइ कछु दाइज भूरी * रहा कनक[1] मणि मंडप पूरी ॥
कम्बल[2] बसन विचित्र पटोरे[3] * भांति भांति बहुमोल न थोरे ॥
गज रथ तुरग दास अरु दासी * धेनु अलंकृत कामदुहासी ॥
बस्तु अनेक करिय किमि लेखा * कहि न जाइ जानहिं जिन देखा
लोकपाल अवलोकि सिहाने * लीन्ह अवधपति सब सुखमाने
दीन्ह याचकन[4] जो जेहि भावा * उबरा सो जनवासहिं आवा ॥

---

१ सुवर्ण. २ दुसाला. ३ रेशमी. ४ मांगनेवालोंको.

तब कर जोरि जनक मृदुबानी * बोले सब बरात सनमानी ॥
छन्द। सनमानि सकल बरात सादर दान बिनय बड़ाइकै ॥
प्रमुदित महामुनिबृन्द बन्दे पूजि प्रेम लगाइकै ॥
शिर नाइ देव मनाइ सबसन कहत करसंपुट किये ॥
सुरसाधु चाहत भाव सिन्धु कि तोषजल अंजलि दिये
कर जोरि जनक बहोरि बन्धुसमेत कोशलरायसों
बोले मनोहर बयन सानि सनेह शील सुभायसों ॥
सम्बन्ध राजन रावरे हम बड़े अब सबविधि भये॥
यह राजसाजसमेत सेवक जानबो बिनुगथ[1] लये ॥
ये दारिका[2] परिचारिका[3] करि पालबी करुणामयी
अपराध क्षमिबो बोलि पठये बहुत हौं ढीठी दयी॥
पुनि भानुकुलभूषण सकल सन्मान बिधि समधी किये
कहि जात नाहिं बिनती परस्पर ,प्रेमपरिपूरण हिये
वृंदारकागण[4] सुमन बर्षाहिं राउ जनवासहिं चले ॥
दुन्दुभीध्वनि वेदध्वनि नभ नगर कौतूहल भले॥
तब सखिन मंगलगान करत मुनीशआयसु पाइकै
दूलह दुलहिनिन सहित सुन्दरि चलीं कुहवर ल्याइकै
दो०। पुनि पुनि रामहिं चितव सिय, सकुचति मन सकुचै न
हरति मनोहर मीन छवि, प्रेमपियासे नैन ॥३२६॥
श्याम शरीर सुभाय सुहावन * शोभा कोटि-मनोज-लजावन ॥

---

१ बिना मोलके. २ कन्या. ३ सेवकिनी. ४ देवतोंवाके समूह.

यावकयुत पदकमल सुहाये * मुनिमनमधुप रहत जहँ छाये॥
पीत पुनीत मनोहर धोती * हरत बालरबिदामिनिज्योती॥
कल किंकिणि कटिसूत्र मनोहर * बाहु बिशाल बिभूषण सुंदर॥
पीत जनेउ महाछबि देई * कर मुद्रिका चोर चित लेई॥
सोहत ब्याहसाज सब साजे * उर आयत सब भूषण राजे॥
पीत उपरना काँखा सोती * दुहुँ आँचरन्ह लगे मणिमोती
नयनकमल कल कुण्डल काना * बदन सकलसौंदर्य्यनिधाना॥
सुन्दर भृकुटि मनोहर नासा * भालतिलक शुचि रुचिरनिवासा
सोहत मौर मनोहर माथे * मंगलमय मुक्तामणि गाथे॥

छंद॥ गाथे महामणि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं॥
पुरनारि सुन्दर बर बिलोकहिं निरखि छबितृणतोरहीं॥
मणि बसन भूषण वारि आरति करहिं मंगल गावहीं॥
सुर सुमन बर्षहिं सूत मागध बन्दि सुयश सुनावहीं॥
कुहबरहिं आने कुँवर कुँवरि सुआसिनिन्ह सुख पाइकै
अतिप्रीति लौकिकरीति लागीं करन मंगल गाइकै॥
लहकौरि गौरि सिखाव रामहिं सीयसन शारद कहैं॥
रनिवासहासबिलासरसबशजन्मको फलसब लहैं
निजपाणिमणिमहँ[1] देखि प्रतिमूरति[2]सुरूपनिधानकी
चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरहबश भइ जानकी
कौतुक[3] बिनोद[4] प्रमोद प्रेम न जाइ कहि जानहिं अलीं
बरकुँवरिसुन्दरसकलसखिनालिवाइजनवासहिंचलीं
तेहिसमयसुनियअशीसजहँ तहँनगरनभआनँदमहा

१ आदर्शिकामें. २छायारूप प्रतिबिंब.३ अपूर्व देखनेमें उत्साह.४लीला.

चिरजियहुजोरीचारुचारिउमुदितमनसबहींकहा ॥
योगीन्द्रसिद्धमुनीशदेवबिलोकिप्रभुदुन्दुभिहनी ॥
चलेहर्षिबर्षिप्रसूननिज २ लोकजयजयजयभनी ५८

दो०सहित बधूटिनकुँवरसब, तबआयेपितुपास ॥
शोभामंगलमोदभरि,उमगेउजनुजनवास ॥३२७॥

पुनि जेवनार भयउ बहुभाँती * पठये जनक बुलाइ बराती ॥
परत पाँवड़े बसन अनूपा * सुतनसमेत गमन किय भूपा ॥
सादर सबके पाँव पखारे * यथायोग्य पीढ़न बैठारे ॥
धोये जनक अवधपतिचरणा * शील सनेह जाइ नहिं बरणा ॥
बहुरि रामपदपंकज धोये * जे हरहृदयकमलमहँ गोये ॥
तीनों भाइ रामसम जानी * धोये चरण जनक निजपानी ॥
आसन उचित सबहिं नृप दीन्हे * बोले सूपकारि[1] सब लीन्हे ॥
सादर लगे परन पनवारे * कनकील[2] मणिपर्ण[3] सँवारे ॥

दो०सूपोदन[4] सुरभीसरपि, सुन्दर स्वादु पुनीत ॥
क्षणमहँ सबके परसिगे, चतुर सुआर बिनीत ॥३२८

पंचकवल करि जेंवन लागे * गारिगान सुनि अतिअनुरागे ॥
भांति अनेक परे पकवाना * सुधासरिस नहिं जाहिं बखाना॥
परसन लगे सुआर सुजाना * ब्यंजन बिबिध नाम को जाना
चरिभांति भोजनविधि गाई * एक एक बिधि बर्णि न जाई ॥
छरस रुचिर ब्यंजन बहुजाती * एक एक रस अगणितभाँती ॥
जेंवत देहिं मधुरध्वनि गारी * लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥
समय सुहावन गारिबिराजा * हँसत राउ सुनि सहित समाजा ॥

१ रसोई बनानेवाले. २ सोनेके खीले.३ मणिमके पत्ते.४ दाल भात.

यहिबिधि सबहीं भोजन कीन्हा * आदरसहित आचमन लीन्हा॥

दो०देइ पान पूजे जनक, दशरथ सहित समाज॥
जनवासे गवने मुदित, सकलभूपशिरताज ॥३२९

नित नूतन मंगल पुरमाहीं * निमिषसरिसदिनयामिनिजाहीं॥
बड़े भोर भूपतिमणि जागे * याचक गुणगण गावन लागे॥
देखि कुँवर बरवधुनसमेता * किमि कहि जात मोद मन जेता॥
प्रातक्रिया करि गे गुरुपाहीं * महाप्रमोद प्रेम मनमाहीं *॥
करि प्रणाम पूजा कर जोरी * बोले गिरा अमिय जनु बोरी॥
तुम्हरी कृपा सुनिय मुनिराजा * भयउ आजु मम पूरण काजा॥
अब सब विप्र बुलाइ गुसांई * देहु धेनु सबभांति बनाई॥
सुनि गुरु करि महिपालबड़ाई * पुनि पठये मुनिवृन्द बुलाई॥

दो०बामदेवअरुदेवऋषि[1], वाल्मीकि जाबालि॥*
आयेमुनिवरनिकरतब,कौशिकादितपशालि ३३०

दण्डप्रणाम सबहिं नृप कीन्हा * पूजि सप्रेम बरासन दीन्हा॥
चारि लक्ष बर धेनु मँगाई * कामसुरभिसम[2] शीलसुहाई॥
सबबिधि सकल अलंकृत कीन्ही * मुदित महीप ऋषिनकहँ दीन्ही॥
करत बिनय बहुबिधि नरनाहू * लहेउ आजु जगजीवनलाहू॥
पाइ अशीस महीश अनन्दा * लिये बोलि पुनि याचकवृन्दा॥
कनक[3] वसन[4] मणिहय[5] गज स्यंदन[6] * दिये बूझि रुचि रबिकुलनंदन॥
चले पढ़त गावत गुणगाथा * जय जय जय दिनकरकुलनाथा
यहिबिधि राम-बिबाह उछाहू * सकै न बर्णि सहसमुख जाहू॥

दो०बार बार कौशिकचरण, शीसनाइकह राव॥

१ नारद. २ कामधेनुके समान, ३ सोना. ४ कपड़े. ५ घोड़े. ६ रथ.

यह सब सुख मुनिराज तव, कृपाकटाक्षप्रभाव ३३१

जनक–सनेह–शील–करतूती * नृप सबभांति सराह बिभूती ॥
दिनउठि बिदा अवधपतिमाँगा * राखहिं जनक सहित अनुरागा ॥
नित नूतन आदर अधिकाई * दिनप्रति सहसभांति पहुनाई ॥
नित नव नगर अनन्दउछाहू * दशरथगमन सोहाइ न काहू ॥
बहुत दिवस बीते यहि भांती * जनु सनेहरजु बँधे बराती ॥
कौशिक शतानन्द तब जाई * कही विदेहनृपाहिं समुझाई ॥
अब दशरथकहँ आयसु देहू * यद्यपि छाँड़ि न सकहु सनेहू ॥
भलेहि नाथकहि सचिवबुलाये * कहि जयजीव शीस तिन नाये ॥

दो०अवधनाथ चाहत चलन, भीतर करहु जनाव॥
भये प्रेमबशसचिव सुनि, विप्र सभासद राव ३३२

पुरबासी सुनि चली बराता * पूँछत विकल परस्पर बाता ॥
सत्य गमन सुनि सब बिलखाने * मनहुँ साँझ सरसिज[1] सकुचाने ॥
जहँ जहँ आवत बसे बराती * तहँ तहँ सीध, चला बहुभाँती ॥
बिबिधभांति मेवा पकवाना * भोजनजात न जाइ बखाना ॥
भरि भरि वस्तु अपार कहारा * पठये जनक अनेक सुआरा ॥
तुरग लाख रथ सहस पचीसा * सकल सँवारे नख अरु शीसा ॥
मत्त सहसदश सिंधुर[2] साजे * जिन्हहिं देखि दिशिकुंजर[3] लाजे॥
कनक बसनमणि भरि भरि याँना[4] * महिषी धेनु वस्तु बिधि नाना ॥

दो०दायजअमितनसकियकहि, दीन्हविदेहबहोरि
जोअवलोकत[5]लोकपति,लोकसम्पदाथोरि ॥३३३॥

सब समाज यहिभांति बनाई * जनक अवधपुर दीन्ह पठाई ॥

१ कमल. २ हाथी. ३ दिग्गज. ४ गाडी. ५ देखते.

चालिहि बरात सुनत सब रानी * बिकल मीनगण[1] जनु लघुपानी ॥
पुनि पुनि सीय गोद कर लेहीं * देइ अशीश सिखावन देहीं ॥
होइहहु संतत पियाहिं पियारी * चिर आहिवात अशीश हमारी ॥
सासु-ससुर-गुरुसेवा करहू * पतिरुख लखि आयसु[3] अनुसरहू ॥
अतिसनेहवश सखी सयानी * नारिधर्म सिखवाहिं मृदुबानी ॥
सादर सकल कुँवरि समुझाई * रानिन बार बार उर लाई ॥
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारी * कहहिं बिरंचि रची कत नारी ॥

दो०तेहि अवसर भाइनसहित, राम भानुकुलकेतु॥
चले जनकमन्दिर मुदित, बिदाकरावनहेतु॥३३४॥

चारिउ भाइ सुभायसुहाये * नगरनारिनर देखन धाये ॥
कोउ कह चलनचहत हैं आजू * कीन्ह बिदेह बिदाकर साजू ॥
लेहु नयनभरि रूप निहारी * प्रिय पाहुने भूपसुत चारी ॥
को जान केहि सुकृत सयानी * नयनअतिथि कीन्हे विधि आनी
मरणशील जिमि पाव पियूषा[4] * सुरतरु[5] लहै जन्मकर भूखा ॥
पात्र नारकी हरिपद जैसे * इनकर दर्शन हमकहँ तैसे ॥
निरखि रामशोभा उर धरहू * निजमन फणि मूरति मणि करहू
यहिविधि सबहिं नयनफल देता * गये कुँवर सब राजनिकेता ॥

दो०रूपसिन्धुसबबन्धुलखि, हर्षिउठींरनिवासु ॥
करहिंनिछावरआरती,महामुदितमनसासु॥३३५॥

देखि रामछबि अतिनुरागी * प्रेमबिबश पुनि पुनि पद लागी ॥
रही न लाज प्रीति उर छाई * सहजसनेह बर्णि किमिजाई ॥
भाइनसहित उबटि अन्हवाये * छरस अशन अतिहेतु जिवाँये॥

---

१ मछलियोंका झुंड. २ थोड़े. ३ आज्ञा. ४ अमृत. ५ कल्पवृक्ष.

यह सब सुख मुनिराज तव, कृपाकटाक्षप्रभाव ३३१

जनक-सनेह-शील-करतूती * नृप सबभांति सराह बिभूती ॥
दिनउठि बिदा अवधपतिमांगा * राखहिं जनक सहित अनुरागा ॥
नित नूतन आदर अधिकाई * दिनप्रति सहसभांति पहुनाई ॥
नित नव नगर अनन्दउछाहू * दशरथगमन सोहाइ न काहू ॥
बहुत दिवस बीते यहि भांती * जनु सनेहरजु बँधे बराती ॥
कौशिक शतानन्द तब जाई * कहा विदेहनृपाहिं समुझाई ॥
अब दशरथकहँ आयसु देहू * यद्यपि छाँडि न सकहु सनेहू ॥
भलेहि नाथकहि सचिवबुलाये * कहि जयजीव शीस तिन नाये ॥

दो०अवधनाथ चाहत चलन, भीतर करहु जनाव॥
भये प्रेमबशसचिव सुनि, विप्र सभासद राव ३३२

पुरबासी सुनि चली बराता * पूँछत विकल परस्पर बाता ॥
सत्य गमन सुनि सब बिलखाने * मनहुँ साँझ सरसिज[1] सकुचाने ॥
जहँ जहँ आवत बसे बराती * तहँ तहँ सीध चला बहुभाँती ॥
विविधभांति मेवा पकवाना * भोजनजात न जाइ बखाना ॥
भरि भरि वस्तु अपार कहारा * पठये जनक अनेक सुआरा ॥
तुरग लाख रथ सहस पचीसा * सकल सँवारे नख अरु शीसा ॥
मत्त सहसदश सिंधुर[2] साजे * जिनहिं देखि दिशिकुंजर[3] लाजे ॥
कनक बसनमणि भरि भरि याँना[4] * महिषी धेनु वस्तु विधि नाना ॥

दो०दायजअमितनसकियकाहि, दीन्हविदेहबहोरि
जोअवलोकतलोकपति, लोकसम्पदाथोरि ॥३३३॥

सब समाज यहिभांति बनाई * जनक अवधपुर दीन्ह पठाई ॥

---

१ कमल. २ हाथी. ३ दिग्गज. ४ गाडी. ५ देखते.

चालिहि बरात सुनत सब रानी * बिकल मीनगण जनु लघुपानी ॥
पुनि पुनि सीय गोद कर लेहीं * देइ अशीश सिखावन देहीं ॥
होइहहु संतत पियहिं पियारी * चिर आहिवात अशीश हमारी ॥
सासु-ससुर-गुरुसेवा करहू * पतिरुख लखि आयसु अनुसरहू ॥
अतिसनेहवश सखी सयानी * नारिधर्म सिखवहिं मृदुबानी ॥
सादर सकल कुँवरि समुझाई * रानिन बार बार उर लाई ॥
बहुरि बहुरि भेंटहिं महतारी * कहहिं बिरंचि रची कत नारी ॥

दो०तेहि अवसर भाइनसहित, राम भानुकुलकेतु॥
चले जनकमन्दिर मुदित, बिदाकरावनहेतु॥३३४॥

चारिउ भाइ सुभायसुहाये * नगरनारिनर देखन धाये ॥
कोउ कह चलनचहत हैं आजू * कीन्ह बिदेह बिदाकर साजू ॥
लेहु नयनभरि रूप निहारी * प्रिय पाहुने भूपसुत चारी ॥
को जान केहि सुकृत सयानी * नयनअतिथि कीन्हे बिधि आनी
मरणशील जिमि पाव पियूषा * सुरतरु लहै जन्मकर भूखा ॥
पाव नारकी हरिपद जैसे * इनकर दर्शन हमकहँ तैसे ॥
निरखि रामशोभा उर धरहू * निजमन फणि मूरति मणि करहू
यहिबिधि सबहिं नयनफल देता * गये कुँवर सब राजानिकेता ॥

दो०रूपसिन्धुसबबन्धुलखि, हर्षिउठींरनिवासु ॥
करहिंनिछावरआरती,महामुदितमनसासु॥३३५॥

देखि रामछबि अतिनुरागी * प्रेमबिबश पुनि पुनि पद लागी ॥
रही न लाज प्रीति उर छाई * सहजसनेह बर्णि किमिजाई ॥
भाइनसहित उबटि अन्हवाये * छरस अशन अतिहेतु जिवाँये॥

१ मछलियोंका झुंड. २ थोड़े. ३ आज्ञा. ४ अमृत. ५ कल्पवृक्ष.

बोले राम सुअवसर जानी * शीलसनेहसकुचमय बानी ॥
राउ अवधपुर चहत सिधाये * बिदा होनाहित हमहिं पठाये ॥
सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू * बोलि न सकहिं प्रेमबश सासू ॥
हृदय लगाइ कुँवरि सब लीन्ही * पतिन सौंपि बिनती अति कीन्ही

सो०करिबिनयसियरामहिंसमर्पीजोरिकरपुनिपुनिकहै
बलिजाउँतातसुजानतुमकहँविदितगतिसबकी अहै
परिवारपुरजनमोहिं राजहिं प्राणप्रियसियजानिबी
तुलसीसुशीलसनेहलखिनिजकिंकरीकरिमानिबी

सो०तुम परिपूरणकाम,ज्ञानिशिरोमणि भावप्रिय॥
जगगुणगाहक राम, दोषदलन[1] करुणायतन ॥३५॥

अस कहि रही चरण गहि रानी * प्रेमपंक[2] जनु गिरा[3] समानी ॥
सुनि सनेहसानी बर बानी * बहुबिध राम सासु सन्मानी ॥
राम बिदा माँगत कर जोरी * कीन्ह प्रणाम बहोरि बहोरी ॥
पाइ अशीश बहुरि शिर नाई * भाइनसहित चले रघुराई ॥
मंजु[4] मधुर मूरति उर आनी * भई सनेहशिथिल सब रानी ॥
पुनि धीरज धरि कुँवरि हँकारी * बार बार भेंटहिं महतारी ॥
पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी * बढ़ी परस्पर प्रीति न थोरी ॥
पुनिपुनिमिलतिसखिनबिलगाई * बाल बत्स जनु धेनु लवाई[5] ॥

दो०प्रेमबिबशनरनारिसब, सखिनसहितरनिवास
मानहुँकीन्हबिदेहपुर,करुणाविरहनिवास ॥३३६॥

शुक सारिका जानकी ज्याये * कनकपिंजरन राखि पढ़ाये ॥

१ दोषनाशक. २ प्रेमरूपकीचड़में. ३ वाणि. ४ कोमल. ५ बियानि.

ब्याकुल कहहिं कहाँ बैदेही * सुनि धीरज परिहरै न केही ॥
भये बिकल खग[1] मृग यहिभांती * मनुजदशा कैसे कहि जाती ॥
बन्धुसमेत जनक तब आये * प्रेमउमँगि लोचन जल छाये ॥
सीय बिलोकि धीरता भागी * रहे कहावत परमविरागी ॥
लीन्ह राउ उर लाइ जानकी * मिटी महामर्याद[2] ज्ञानकी ॥
समुझावत सब सचिव सयाने * कीन्ह बिचार अनवसर जाने ॥
बारहिं बार सुता[3] उर लाई * सजि सुन्दरि पालकी मँगाई ॥

दो०प्रेमबिबश परिवार सब, जानि सुलग्न नरेश[4] ॥
कुँवरि चढ़ाई पालकी, सुमिरे सिद्धि गणेश ३३७ ॥

बहुबिधि भूप[5] सुता समुझाई * नारिधर्म कुलरीति सिखाई ॥
दासी दास दिय बहुतेरे * शुचि सेवक जे प्रिय सियकेरे ॥
सीय चलत ब्याकुल पुरवासी * होंइ सगुन शुभ मंगलराशी ॥
भूसुर[5] सचिव समेत समाजा * संग चले पहुँचावन राजा ॥
रथ गज बाजि बरातिन साजे * सुनि गहगहे बाजने बाजे ॥
दशरथ बिप्र बोलि सब लीन्हे * दानमान परिपूरण कीन्हे ॥
चरणसरोजधूरि धरि शीसा * मुदित महीपति पाइ अशीसा ॥
सुमिरि गजानन कीन पयाना * मंगलमूल सगुन भये नाना ॥

दो०सुर प्रसून वर्षहिं हरषि, करहिं अप्सरा गान ।
चले अवधपति अवधपुर, मुदित बजाइ निशान ॥

नृप करि बिनय महाजन फेरे * सादर सकल मांगने टेरे ॥
भूषण बसन बाजि गज दीन्हे * प्रेमपोषि ठाढ़े सब कीन्हे ॥
बार बार बिरदावलि भाखी * फिरे सकल रामहिं उर राखी ॥

१ पक्षी. २ जनक मोहबश भये. ३ सीताजी. ४ जनकजी. ५ब्राह्मण.

बहुरि बहुरि कोशलपति कहहीं * जनक प्रेमबश फिरा न चहहीं ॥
पुनि कह भूपति बचन सुहाये * फिरिय महीप दूरि बड़िआये ॥
राउ बहोरि उतरि भये ठाढ़े * प्रेम--प्रबाह बिलोचन बाढ़े ॥
तब विदेह बोले कर जोरी * बचन सनेहसुधा जनु बोरी ॥
करौं कवनबिधि विनयसुहाई * महाराज मोहिं दीन्ह बड़ाई ॥

दो०कोशलपतिसमधीजनक, सनमानेसबभाँति ॥
मिलनपरस्परविनयअति, प्रीतिनहृदयसमाति ३३९

मुनिमण्डली जनक शिर नावा * आशीर्वाद सबहिंसनपावा ॥
सादर पुनि भेटे जामाता * रूपशीलगुणनिधि सब भ्राता ॥
जोरि पंकरुहपाणि[2] सुहाये * बोले बचन प्रेम जनु छाये ॥
राम करौं केहि भांति प्रशंसा * मुनि--महेश--मनमानस--हंसा ॥
करहिं योग योगी जेहि लागी * कोह[3] मोह ममता मद त्यागी ॥
व्यापक ब्रह्म अलखअविनाशी * चिदानन्द निर्गुण गुणराशी ॥
मनसमेत जेहि जान न बानी * तर्कि न सकहिंसकलअनुमानी ॥
महिमा निगमनेतिकरिकहहीं * जो तिहुँकाल एकरस रहहीं ॥

दो०नयनविषयमोकहँ भयेउ, सोसमस्तसुखमूल ॥
सबहिंलाभजगजीवकहँ, भये ईश[4]अनुकूल ॥ ३४० ॥

सबहि भांति मोहिं दीन्हबड़ाई * निजजन जानि लीन्ह अपनाई ॥
होइँ सहसदश शारद शेषा * करहिं कल्पभरि कोटिकलेखा ॥
मोर भाग्य राउरगुणगाथा * कहि न सिराहिंसुनियरघुनाथा
मैं कछु कहौं एक बल मोरे * तुम रीझहु सनेह सुठि थोरे ॥
बार बार मांगौं कर[5] जोरे * मन परिहरै चरण जनि भोरे ॥

१ दशरथ. २ हस्तकमल. ३ कपट. ४ ईश्वरके प्रसन्न होनेपर. ५ हाथ.

सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे * पूरणकाम राम परितोषे * ॥
करि बैर[1] बिनय ससुरसनमाने * पितुकौशिकबशिष्ठसम[2] जाने ॥
बिनती बहुरि भरतसन कीन्ही * मिलि सप्रेमपुनिआशिषदीन्ही ॥

दो०मिलेलषणरिपुसूदनहिं, दीन्हअशीशमहीश॥
भये परस्परप्रेमवश,फिरफिरिनावहिंशीश ॥४४१॥

बार बार करि बिनय बड़ाई * रघुपति चले संग सब भाई ॥
जनक गहे कौशिकपद जाई * चरणरेणु शिर नयनन लाई ॥
सुनु मुनीश सब दर्शन तोरे * अगम न कछु प्रतीतिमनमोरे
जो सुख सुयश लोकपति चहहीं * करत मनोरथ सकुचतअहहीं ॥
सोसुखसुयशसुलभमोहिंस्वामी * सबबिधि तव दर्शनअनुगामी ॥
कीन्ह बिनय पुनिपुनिशिरनाई * फिरे महीपति आशिष पाई ॥
चली बरात निशान बजाई * मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥
रामहिं निरखि ग्रामनरनारी * पाइ नयनफल होहिं सुखारी ॥

दो०बीच बीच बर बास करि, मगलोगन सुख देत॥
अवधसमीप पुनीत दिन, पहुँची आय जनेत॥३४२॥

हने निशान पणव बहु बाजे * भेरिशंखधुनि हय गज गाजे ॥
झांझ मृदंग डिमडिमी सुहाई * सरस राग बाजै सहनाई ॥
पुरजन आवत अकनि बराता * मुदित सकल पुलकावलि गाता॥
निजनिज सुन्दर सदन सँवारे * हाट बाट चौहट पुर द्वारे ॥
गली सकल अरगजा सिंचाई * जहँ तहँ चौकैं चारु पुराई ॥
बनी बजार न जाय बखाना * तोरण केतु पताक बिताना ॥
सफल पूगफल कदलि रसाला * रोपे बकुल कदम्ब तमाला ॥

१ श्रेष्ठ. २ पिता दशरथजी, बिश्वामित्र ओर वसिष्ठ इनके समान.

लगे सुभग तरु परसत धरणी * मणिमय आलबाल कल करणी

दो०विबिधभांति मंगलकलश, गृहगृह रचे सँवारि
सुरब्रह्मादि सिहाहिं सब, रघुबरपुरी निहारि ३४३

भूपभवन तेहि अवसर सोहा * रचना देखि मदनमन मोहा ॥
मंगल शकुन मनोहरताई * ऋधि सिधि सुख संपदा सुहाई ॥
जनु उछाह सब सहजसुहाये * तनु धरि धरि दशरथगृह आये॥
देखन-हेतु राम बैदेही * कहहु लालसा होइ न केही ॥
यूथयूथमिलिचलीं सुआसिनि * निजछबिनिदरहिं मदनबिलासिनि
कलश सुमंगल सजीं आरती * गावहिं जनु बहुबेष भारती ॥
भूपतिभवन कुलाहल होई * जाइ न बर्णि समय सुख सोई ॥
कौशल्यादि राम-महतारी * प्रेमबिबश तनुदशा बिसारी ॥

दो० दिये दान बिप्रन बिपुल, पूजि गणेश पुरारि[1] ॥
प्रमुदित परम दरिद्र जनु, पाइ पदारथ चारि ३४४

प्रेमप्रमोदबिबश सब माता * चलहिं नचरण शिथिल सबगाता
रामदर्शहित अतिअनुरागीं * परिछनसाज सजन सब लागीं ॥
बिबिध बिधान बाजने बाजे * मंगल मुदित सुमित्रा साजे ॥
हरद दूब दधि पल्लव फूला * पान पूगफल मंगलमूला * ॥
अक्षत अंकुर रोचन लाजा[2] * मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा॥
छुहे[3] पुरटघट[4] सहजसुहाये * मदनशकुनि जनु नीड़[5] बनाये
शकुनसुगंध न जाहिं बखानी * मंगल सकल सजहिं सब रानी॥
रची आरती बिबिध बिधाना * मुदित कराहिं कल मंगलगाना॥

सो०कनकथार भरि मंगलनि, कमलकरनि लिये मात॥

१ शंकर. २ धानकी खील (लाई). ३ रँगे. ४ सुवर्णके घट. ५ घोंसले.

चलीं मुदित परिछनकरन, पुलकप्रफुल्लितगात ३४५

धूपधूम नभ मेचक भयऊ * सावनघनघमंड जनु छयऊ ॥
सुरतरुसुमनमाल सुर बर्षहिं * मनहुँ बलाकअवलि मन कर्षहिं ॥
मंजुल मणिमय बन्दनवारा * मनहुँ पाकारिचाप सँवारा ॥
प्रकटहिंदुरहिंअटनपरभामिनि * चारुचँपलजनुदमकहिं दामिनि ॥
दुन्दुभिध्वनिघनगरजहिं घोरा * याचक चातक दादुर मोरा ॥
शुचि सुगन्ध बहु बर्षहिं बारी * सुखी सकल लखि पुरनरनारी ॥
समय जानि गुरुआयसु कीन्हा * पुर प्रवेश रघुकुलमणि कीन्हा ॥
सुमिरि शंभु गिरिजा गणराजा * मुदित महीपति सहित समाजा ॥

दो० होहिं शकुन बर्षहिं सुमन, सुर दुन्दुभी बजाइ ॥
विबुधबधू नाचहिं मुदित, मंजुल मंगल गाइ ॥ ३४६ ॥

मागध सूत बन्दि नट नागर * गावहिं यश तिहुँलोक उजागर
जयध्वनि बिमलवेदबरबानी * दश दिशि सुनिय सुमंगलसानी
बिपुल बाजने बाजन लागे * नभ सुर नगर लोग अनुरागे ॥
बने बराती बर्णि न जाहीं * महामुदित मन सुख न समाहीं
पुरबासिन तब राउ जुहारे * देखत रामहिं भये सुखारे ॥
करहिं निछावरि मणिगण चीरा * बारि बिलोचन पुलकशरीरा ॥
आरति करहिं मुदित पुरनारी * हर्षहिं निरखि कुँवर बर चारी ॥
शिबिका सुभग उघारि उघारी * देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी ॥

दो० यहिबिधि सबहीं देत सुख, आये राजदुआर ॥
मुदित मातु परिछनि करहिं, बधुनसमेत कुमार ४७

करहिं आरती बारहिं बारा * प्रेम प्रमोद कहै को पारा ॥

१ श्याम. २ इन्द्रधनुष. ३ बिजली. ४ पालकी. ५ सुंदर. ६ आनन्द.

भूषण मणि पट[१] नानाजाती * करहिं निछावरि अगणितभाँती
वधुनसमेत देखि सुत चारी * परमानन्द-मग्न महतारी * ॥
पुनि पुनि सीयरामछबि देखी * मुदित सुफल जगजीवन लेखी
सखीसीयमुख पुनि पुनि चाही * गान करहिं निजसुकृत सराही॥
बर्षहिं सुमन[२] क्षणहिं क्षण देवा * नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥
देखि मनोहर चारिउ जोरी * शारद उपमा सकल ढँढोरी ॥
देत न बनहि निपट लघु लागी* यकटक रहीं रूपअनुरागी ॥

दो०निगमनीतिकुलरीति करि, अर्घ पाँवड़े देत ॥
बधुनसहित सुत परछि सब, चलीं लिवाय निकेत[३]

चारि सिंहासन सहजसुहाये * जनु मनोज[४] निजहाथ बनाये ॥
तिनपर कुँवरि कुँवर बैठारे * सादर पाँय पुनीत पखारे ॥
धूप दीप नैवेद्य बेदबिधि * पूजे बर दुलहिनि मंगलनिधि॥
बारहिं बार आरती करहीं * ब्यजन[५] चारु चामर शिर ढरहीं
बस्तु अनेक निछावरि होहीं * भरीं प्रमोद मातु सब सोहीं ॥
पावा परमतत्त्व जनु योगी * अमृत लह्यो जनु सन्ततरोगी[६]॥
जन्मरंक जनु पारस पावा * अन्धहिं लोचनलाभ सुहावा॥
मूकबदन जस शारद छाई * मानहुँ समर शूर जय पाई ॥

दो०यहि सुखतेशतकोटिगुण, पावहिं मातुअनंद॥
भाइनसहित बिवाहि घर, आये रघुकुलचंद ३४९
लोकरीति जननी करहिं, बर दुलहिनिसकुचाहिं॥
मोद बिनोद बिलोकि बड़, राममनहिंमुसुकाहिं ॥

देव पितर पूजे बिधि नीकी * पूजीं सकल बासना जीकी ॥

---

१ बस्त्र. २ फूल. ३ घरमें. ४ कामदेवने. ५ पंखा. ६ हमेशाका रोगी.

सबहिं बन्दि माँगहिं बरदाना * भाइनसहित राम कल्याना ॥
अन्तर्हित सुर आशिष देहीं * मुदित मातु अंचल भरि लेहीं ॥
भूपति बोलि बरातिन्ह लीन्हे * यान बसन मणि भूषण दीन्हे ॥
आयसु पाइ राखि उर रामहिं * मुदित गये सब निज २ धामहिं
पुरनरनारि सकल पहिराये * घर घर बाजहिं अनँदबधाये ॥
याचकजन याचहिं जोइ जोई * प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई ॥
सेवक सकल बजनिया नाना * पूरण किये दान सन्माना ॥

दो०देहिं अशीशजुहारिसब, गावहिंगुणगणगाथ ॥
तबगुरुभूसुरसहितगृह, गमनकीन्हनरनाथ ६५१

जो बसिष्ठ अनुशासन दीन्हा * लोकबेदबिधि सादर कीन्हा ॥
भूसुरभीर देखि सब रानी * सादर उठीं भाग्य बड़ जानी ॥
पाँय पखारि सकल अन्हवाये * पूजि भलीबिधि भूप जेंवाये ॥
आदर दान प्रेम परितोषे * देत अशिश चले मन तोषे ॥
बहुबिधि कीन्ह गाधिसुतपूजा * नाथ मोहिंसम धन्य न दूजा ॥
कीन्ह प्रशंसा भूपति भूरी * रानिन्हसहित लीन्हपगधूरी ॥
भीतर भवन दीन्ह बर बासू * मनु जुगवत रह नृपरनिवासू ॥
पूजे गुरु-पदकमल बहोरी * कीन्ह बिनय मन प्रीति न थोरी ॥

दो०बधुनसमेतकुमारसब, रानिन्हसहितमहीश ॥
पुनिपुनिबन्दतगुरुचरण, देत अशीसमुनीश ।३५२॥

बिनय कीन्हउरअतिअनुरागे * सुतसम्पदा राखि सब आगे ॥
नेग माँगि मुनिनायक लीन्हा * आशीर्बाद बहुतबिधि दीन्हा ॥
उर धरि रामहिं सीयसमेता * हर्षि कीन्ह गुरु गमन निकेता ॥

१ सवारी. २ ब्राह्मणोंकी भीड़. ३ दशरथजी. ४ बहुत. ५ स्थानको

बिप्रवधू कुलवृद्ध बुलाई * चीर चारु[1] भूषण[2] पहिराई ॥
बहुरि बुलाइ सुआसिनि[3] लीन्हा * रुचि बिचारि पहिरावन दीन्हा ॥
नेगी नेग योग सब लेहीं * रुचिअनुरूप भूपमणि देहीं ॥
प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने * भूपति भलीभांति सनमाने ॥
देव देखि रघुबीरबिबाहू * बर्षि प्रसून प्रशंसि उछाहू ॥

दो०चलेनिशानबजाइसुर, निजनिजपुरसुखपाइ ॥
कहत परस्पर रामयश, हर्ष न हृदय समाइ ॥

सबबिधि सबहिं मुदित नरनाहू * रहा हृदय भरि पूरि उछाहू ॥
जहँ रनिवास तहाँ पगु धारे * सहित बधूटिन कुँवर निहारे ॥
लिये गोद करि मोद समेता * को कहिसकै भयउ सुख जेता ॥
बधू सप्रेम गोद बैठारी * बार बार हिय हर्षि दुलारी ॥
देखि समाज मुदित रनिवासू * सबके उर आनन्दबिलासू ॥
कह्यो भूप जिमि भयउबिबाहू * सुनि सुनि हर्ष होत सबकाहू ॥
जनकराज गुण शील बड़ाई * प्रीति रीति सम्पदा सुहाई ॥
बहुबिधि भूप भाटजिमि बरणी * रानी सब प्रमुदित सुनि करणी

दो०सुतनसमेतनहाइ नृप, बोलि लिये गुरुज्ञाति
भोजन कीन्ह अनेकबिधि, घरीपांचगइराति[4] ॥

मंगलगान करहिं बर भामिनि * भइ सुखमूल मनोहर यामिनि ॥
अँचै पान सबकाहुन पाये * स्रग सुगन्ध भूषित छबिछाये ॥
रामहिं देखि रजायसु पाई * निज निज भवन चलेशिरनाई ॥
प्रेम प्रमोद बिनोद बड़ाई * समय समाज मनोहरताई ॥
कहि न सकहिं श्रुति शारदशेशू * बेद बिरंचि महेश गणेशू ॥

१ रमणीक. २ दगीने. ३ पतिपुत्रवती स्त्री. ४ रात्रि.

सो मैं कहौं कवनाबिधि बरणी * भूमिनाग शिर धरै कि धरणी॥
नृप सबभांति सबहिं सन्मानी * कहि मृदु बचन बुलाई रानी॥
बधू लरिकिनी परघर आई * राखेहु नयन पलककी नाई॥

दो०लरिका श्रमित उनींदवश, शयनकरावहुजाइ।
असकहिगेबिश्रामगृह, रामचरण चित लाइ ३५५

भूपबचन सुनि सहजसुहाये * जड़ित कनकमणिपलँगदसाये॥
सुभग सुरभिपयफेनु-समाना * कोमल ललित सपेदी नाना।
उपबर्हण बर बर्णि न जाहीं * स्रग सुगन्ध मणिमान्दिरमाहीं॥
रत्नदीप सुठि चारु चँदोवा * कहत न बनै जानजेहिंजोवा।
सेज रुचिर रचि राम उठाये * प्रेम--समेत पलँग पौढ़ाये।
आज्ञा पुनि भाइनकहँ दीन्ही * निजनिजसेजशयनतिनकीन्ही।
देखि श्याम मृदु मंजुलगाता * कहहिं सप्रेम बचन सब माता॥
मारग जात भयानक भारी * केहिबिधि तात ताड़ुका मारी॥

दो०घोर निशाचर बिकट भट, समर गनैं नहिं काहु॥
मारेसहित सहाय किमि, खल मारीच सुबाहु३५६॥

मुनिप्रसाद बल तात तुम्हारे * ईश[3] अनेक करवरे टारे॥
मखरखवारी करि दुहुँ भाई * गुरुप्रसाद सब बिद्या पाई॥
मुनितिय[4] तरी लगत पगधूरी * कीरति रही भुवन भरि पूरी॥
कमठ-पीठ-पबिकूट-कठोरा * नृपसमाजमहँ शिवधनु तोरा॥
बिश्वबिजययश जानकि पाई * आये भवन ब्याहि सब भाई॥
सकल अमानुष कर्म तुहारे * केवल कौशिककृपा सुधारे॥
आजु सफल जग जन्म हमारे * देखि तात बिधुबदन तुम्हारे।

१ पृथ्वीका सर्प. २ तकिया. ३ ईश्वरने. ४ गौतमकी स्त्री अहल्या

जे दिन गये तुमहिं बिनु देखे * ते बिरंचि जनि पावहिं लेखे ॥

सो०राम प्रतोषी मातु सब, कहि बिनीत बर बैन ॥
सुमिरि शंभुगुरुबिप्रपद,किये नींदवश नैन ॥ ३५७॥

नींदहु बदन सोह सुठि लोना * मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना ॥
घर घर करहिं जागरण नारी * देहिं परस्पर मंगलगारी ॥
पुरी बिराजति राजत रजनी * रानी कहहिं बिलोकहु सजनी ॥
सुन्दरि बधू सासु लै सोई * फणिपतिजनुशिरमणिउरगोई ॥
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे * अरुणचूड़ बर बोलन लागे ॥
बंदी मागध गुणगण गाये * पुरजन द्वार जुहारन आये ॥
बन्दि बिप्र सुर गुरु पितुमाता* पाइ अशीश मुदित सबभ्राता ॥
जननिन्ह सादर बदन निहारे * भूपतिसंग द्वार पगु धारे ॥

दो०कीन्हशौचसबसहजशुचि, सरितपुनीतनहाइ
प्रातक्रिया करि तातपहँ, आयेचारिउभाइ ॥ ३५८॥

भूप बिलोकि लिये उर लाई * बैठे हर्षि रजायसु पाई ॥
देखि राम सब सभा जुड़ानी * लोचनलाभअवधिं अनुमानी ॥
पुनि वशिष्ठ मुनि कौशिक आये * आसन सुभग मुनिन बैठाये ॥
सुतनसमेत पूजि पद लागे * निरखि राम दोउ उर अनुरागे ॥
कहहिं बसिष्ठ धर्मइतिहासा * सुनहिं महीप सहित–रानिवासा ॥
मुनिमन अगम गाधिसुतकरणी* मुदित बसिष्ठ बिपुलविधि बरणी
बोले वामदेव सब साँची * कीरति कलित लोक तिहुँ माची
सुनि आनन्द भयउ सबकाहू * रामलषणउर अधिक उछाहू ॥

दो०मंगल मोद उछाह नित,जाहिं दिवस यहिभांति

१ सरयू. २ विश्वामित्र. ३ चरण. ४ राजा दशरथ. ५ आनन्द.

उमँगी अवध आनंद भरि, अधिक२अधिकाति३५९

सुदिन साधि करकंकण छोरे * मंगल मोद बिनोद न थोरे ॥
नित नव सुख सुर[1] देखि सिहाहीं * अवधजन्म याचैंहि[2] बिधिपाँहीं[3]॥
विश्वामित्र चलन नित चहहीं * रामसुप्रेमबिनयबश रहहीं ॥
दिन दिन सद्गुण भूपतिभाऊ * देखि सराह महामुनिराऊ ॥
माँगत बिदा राउ अनुरागे * सुतनसमेत ठाढ़ भै आगे ॥
नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी * मैं सेवक समेत सुत नारी ॥
करब सदा लरिकनपर छोहू * दर्शन देत रहब मुनि मोहू ॥
अस कहिराउ सहित सुत रानी * परेउ चरण मुख आव न बानी॥
दीन्ह अशीस बिप्र बहुभांती * चले न प्रीतिरीति कहि जाती॥
राम सप्रेम संग सब भाई * आर्यसु[4] पाइ फिरे पहुँचाई ॥

दो०रामरूप भूपतिभगति, ब्याहउछाहअनन्द ॥
जात सराहत मनहिंमन, मुदितगाधिकुलचन्द३३०

वामदेव रघुकुलगुरु ज्ञानी * बहुरि गाधिसुतकथा बखानी ॥
सुनि मुनिसुयश मनहिं मन राऊ * बर्णत आपन पुण्यप्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजायसु भयऊ * सुतनसमेत नृपति गृह गयऊ ॥
जहँ तहँ रामब्याहयश गावा * सुयश पुनीत लोक तिहुँ छावा॥
आये ब्याहि राम घर जबते * बसे अनन्द अवध सब तबते॥
प्रभु बिवाह जस भयउ उछाहा * सकहिं न बर्णि गिरा[5] अहिनाहा[6]॥
कलिजीवन पावन जानी * रामसीययश मंगलखानी * ॥
तेहि मैं कछु कहा बखानी * करन पुनीत हेतु निजबानी ॥

छं०निजगिरा पावनकरणकारण रामयश तुलसी कह्यो

१ देवता. २ मागते हैं. ३ ब्रह्मासे. ४ आज्ञा. ५ सरस्वती. ६ शेष.

रघुबीरचरितअपारबारिधि पार कबि कवने लह्यो
उपवीतव्याहउछाह मंगल सुनहिं सादर गावहीं ॥
बैदेहिरामप्रसाद ते जन सर्बदा सुख पावहीं ॥६०॥
सुनि गाय कहौं गिरीशकन्या धन्य अधिकारी सही
नित प्रीति अनुपम सुनत हरिगुण भक्ति अनुपम लेतही
रघुबीरपदअनुरागजल लोभाग्नि बेगि बुझावई ॥
यहजानि तुलसीदास मन क्रमवचन हरिगुणगावई॥
दो०कठिनकालमलग्रसिततनु,साधनकछुकनहोइ
यह बिचारि बिश्वासकरि,हरि सुमिरे बुधसोइ ३६१
सो०मन हरिपदअनुराग, करहु त्यागि नाना कपट
महामोहनिशि जाग, सोवत बीतो काल बहु॥३६॥
सियरघुबीरबिबाह, जे सप्रेम सादर सुनहिं ॥
तिनकहँ सदा उछाह, मंगलायतन रामयश॥३७॥

इति श्रीरामचरित्रमानसे सकलकलिकलुषवि-
सने विमलविज्ञानवैराग्यसन्तोषसम्पादनो
नाम श्रीगोस्वामितुलसीदासकृत-
बालकांडः प्रथमः सोपानः
समाप्तः ॥ १ ॥

इदं पुस्तकं भगीरथात्मजहरिप्रसादशर्मणा
मोहमयीराजधान्यांमुद्रापितम् ।

---

१ रामचंद्रजीके चरित्रोंका समुद्र, पारावाररहित है. २ ज्ञानी.

श्रीगणेशायनमः ॥

रामायण तुलसीकृत ॥

अयोध्याकण्ड ॥

श्लोक ॥

वामाङ्केचविभातिभूधरसुतादेवापगामस्तके भालेबालवि गलेचगरलंयस्योरसिव्यालराट् ॥ सोयंभूतिविभूषणः सुरव सर्वाधिपःसर्व्वदा शर्वःसर्वगतःशिवःशशिनिभः श्रीशंकरःप तुमाम् १ प्रसन्नतांयेनगताभिषेक तस्तथानमम्लौवनवा दुःखतः ॥ मुखाम्बुजंश्रीरघुनन्दनस्यमेसदास्तुतन्मंजुलमंगलप्र म् २ नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभा म् ॥ पाणौमहाशायकचारुचापं नमामिरामंरघुवंशनाथम् ॥ ३

दो० श्री गुरुचरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि ।
वरणौरघुबर विमलयश जो दायक फल चारि ॥

जबते राम ब्याहि घर आये । नितनव मंगल मोद बधाये ।
भुवन चारि दश भूधर भारी । सुकृत मेघ बरषहिं सुखबारी ।
ऋधिसिधि सम्पतिनदी सुहाई । उमँगिअवध अम्बुधिकहँआई ।
[illegible]गण पुर नर नारि सुजाती । शुचिअमोल सुन्दरसब भांती ।
[illegible] न जाइ कछुनगर विभूती । जनु इतनी विरंचि करतूती ।

क्षित मातु सब सखीं सहेलीं । फलित बिलोकि मनोरथ बेली ॥
राम रूप गुण शील स्वभाऊ । प्रमुदित होहिं देखि मुनिराऊ ॥

दो० सब के उर अभिलाष अस कहहिं मनाइ महेश ।
आप अछत युवराज पद रामहिं देहिं नरेश ॥

एक समय सब सहित समाजा । राज सभा रघुराज बिराजा ॥
सकल सुकृत मूरति नरनाहू । रामसुयशसुनिअतिहिउछाहू ॥
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाखे । लोपक रहहिं प्रीति रुख राखे ॥
त्रिभुवन तीनि काल जगमाहीं । भूरि भाग दशरथ समनाहीं ॥
मंगल मूल रामसुत जासू । जो कछु कहिय थोर सब तासू ॥
राउ स्वभाव मुकुर कर लीन्हा । बदनबिलोकिमुकुटसमकीन्हा ॥
श्रवण समीप भये सित केशा । मनहुँ चौथपन अस उपदेशा ॥
नृप युवराज राम कहँ देहू । जीवन जन्म सुफल करि लेहू ॥

दो० अस बिचारि उर आनि नृप सुदिन सुअवसर पाइ ।
तन पुलकित मन मुदित अति गुरुहिं सुनायउ जाइ ॥

कह्यो भुआल सुनिय मुनि नायक । भये राम सब बिधि सब लायक ॥
सेवक सचिव सकल पुरवासी । जे हमार अरि मित्र उदासी ॥
सबहिं राम प्रिय जेहि बिधि मोहीं । प्रभु अशीश जनु तनु धरि सोहीं ॥
बिप्र सहित परिवार गुसाईं । करहिं छोह सब रौरेहि नाईं ॥
जे गुरु चरण रेणु शिर धरहीं । ते जनु सकल बिभव बश करहीं ॥
मोहिं समान अरु भयउ न दूजे । सब पायउँ प्रभु पदरज पूजे ॥
अब अभिलाष एक मन मोरे । पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू । कह्यो नरेश रजायसु देहू ॥

दो०सबके उर अभिलाष अस, कहहिं मनाइ महेश
आप अक्षत युवराजपद, रामहि देहिं नरेश ॥२॥

॥ अथ क्षेपक ॥

एक बार जानकी-समेता * बैठे प्रभु निजरुचिरानिकेता ॥
भुज प्रलंब उर नयन बिशाला * पीत बसन तनुश्यामतमाला ॥
कोटि मनोज देखि छवि मोहा * सीताकर चामर बर सोहा ॥
त्यहि अवसर नारद मुनि आये * सुरहितलागि विरंचि पठाये ॥
तेजपुंज करतल बर बीणा * हरिगुणगण गावत लयलीना ॥
देखि राम सहसा उठि धाये * करत दण्डवत मुनि उर लाये॥
सादर निजआसन बैठारे * जनकसुता तब चरण पखारे ॥
तेहि चरणोदक भवन सिंचावा * जगपावन हरि शीश चढ़ावा ॥
सुनु मुनि विषयनिरत जे प्राणी* हमसारिखे देहअभिमानी * ॥
तिनकहँ सत्संगति जब होई * करहिं कृपा जापर प्रभु सोई ॥
ताकहँ भुनि नाहिन भव[1] आगे * जेहि बिनु हेतु संत प्रिय लागे ॥
ताते नारद मैं बड़भागी * यद्यपि गृह-कुटुम्ब-अनुरागी॥

दो०सुनि प्रभुवचन मधुर प्रिय, करि बिचार मुनिधीर
परमकृपालू लोकहित, कस न कहौ रघुबीर ॥७॥

कह मुनि तव महिमा रघुराया* मैं जानौं कछु तुम्हरी दाया ॥
वचन कहेउ प्राकृतकी नाई * यामें नाहें कछु घटेउ गोसाँई ॥
प्रभु यह तुमहिं सदा बनि आई * निजलघुता जनकेरि बड़ाई ॥
सहज-स्वभाव--प्रणत--अनुरागी* नरतनु[2] धरेउ दासहितलागी ॥
मायागुण-गो-ज्ञान-अतीता * अजित[3] नाम सो दासन जीता ॥

१ संसार. २ मनुष्यदेह. ३ जो जीता न जावे.

जेहि प्रभुसमअतिशयकोउनाहीं* व्यापक अज समान सबपाहीं॥
उदर चराचर मेलि जो सोवा * अस्तनपानलागि सो रोवा ॥
नाम रूप वपु वर्ण न भेदा * अविगत सकल नेति कह वेदा॥
निर्मम मुक्त निरामय जोई * दशरथसुत कहि गाइय सोई*॥
जप तप योग यज्ञ व्रत दाना * बिमल बिराग ज्ञान बिज्ञाना ॥
करहिं यत्न मुनि पावहिं कोई * देखा प्रगट भक्तबश सोई ॥
हठबश शठ बहुसाधन करहीं * भक्तिहीन भवसिन्धु न तरहीं॥

दो०जानि सकहु ते जानहु, निर्गुण--सगुणस्वरूप
मम हियपंकज[2] भृंग इव, बसहु राम नररूप ॥ ८ ॥

ब्रह्मभवन[3] मैं रह्यँउ कृपाला * गावत तव गुण दीनदयाला ॥
अस इच्छा उपजी मनमाहीं * देखेउँ चरण बहुत दिन नाहीं ॥
यद्यपि प्रभु सर्वत्र समाना * सगुणरूप मोरे मन माना ॥
अवधचलतबिरंचि मोहिं जाना *कीन्ही बिनय लागि मम काना॥
प्रभु जानत सबअन्तर्यामी * भक्तबछल बिनती यह स्वामी॥
जेहि हितलागि मनुजअवतारा * नाथ ताहि अब करिय सँभारा
सुनत बचन रघुपति मुसुकाने * मुनि अजहूँ बिरंचिभयमाने॥
कह्यउ तात ब्रह्महिं समुझाई * कछुदिन गये देखिहैं आई ॥
बार बार चरणन शिर नाई * ब्रह्मानन्द न हृदय संमाई ॥
रामरूप उर धरि मुनि नारद * चले करत गुणगान बिशारद
तब रघुपति सीतहिं समुझाई * पूर्वकथा सबहेतु सुनाई ॥
सुरहितलागि सो करिय उपाई * जोइय बन परिहरि ठकुराई ॥

दो०जगसंभवअस्थितिप्रलय, जाकीभृकुटिबिलास

१ अधिक. २ हृदयकमलमें भ्रमरके जैसे. ३ ब्रह्मलोकमें.

सो प्रभु यत्न बिचारत, केहि बिधि निश्चरनाश ॥

इति क्षेपक

एक समय सब सहितसमाजा * राजसभा रघुराज बिराजा ॥
सकल-सुकृत-मूरति नरनाहू * रामसुयश सुनि अतिहिंउछाहू
नृप सब रहहिं कृपाअभिलाषे * लोकप रहहिं प्रीतिरुख राषे ॥
त्रिभुवन तीनिकाल जगमाहीं * भूरि भाग दशरथसम नाहीं ॥
मंगलमूल राम सुत जासू * जो कछु कहिय थोर सब तासू ॥
राउ स्वभाव मुकुर कर लीन्हा * बदन बिलोकि मुकुटसमकीन्हा
श्रवणसमीप भये सित केशा * मनहुँ चौथपन अस उपदेशा ॥
लागि श्रवण जनु कहत बुढ़ाई * रामहिं राज्य देहु किन जाई ॥
नृप युवराज रामकहँ देहू * जीवन जन्म सुफल करि लेहू ॥

दो०असविचारिउरआनिनृप, सुदिनसुअवसरपाइ
तनु पुलकितमनमुदितअति, गुरुहिंसुनायउजाइ ॥

कहेउ भुआलसुनियमुनिनायक * भये राम सबविधिसबलायक ॥
सेवक सचिव सकल पुरवासी * जे हमारि अरि मित्रउदासी ॥
सबहिं रामप्रियजेहिविधिमोहीं * प्रभुअशीस जनुतनुधरिसोहीं ॥
विप्र सहित परिवार गुसाईं * करहिं छोह सब रौरेहि नाईं ॥
जे गुरुचरणरेणु शिर धरहीं * ते जनु सकल बिभव वशकरहीं
मोहिं समान अरु भयउ न दूजे * सब पायउँ प्रभुपदरज पूजे * ॥
गुणसागर नागर श्रुति गाये * बड़े भाग्य मोरे गृह आये * *
जेठे राम सकलहितकारी * सकल सराहत पुरनरनारी ॥
अब अभिलाष एक मन मोरे * पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे * ॥
मुनि प्रसन्न लखि सहजसनेहू * कहेउ नरेश रजायसु देहू * ॥

१ दशरथ २ इन्द्रादिदेव. ३ सीसा. ४ सपेद. ५ शत्रु. ६ श्रेष्ठ.

दो० राउर राजन नाम यश, सबअभिमतदातार ॥
फलअनुगामी महिपमणि, मनअभिलाषतुम्हार ४

सबविधि गुरुप्रसन्न जिय जानी * बोले राउ बिहँसि मृदुबानी ॥
नाथ राम करिये युवराजू * कहिय कृपा करि करिय समाजू
मोहिं अक्षत अस होउ उछाहू * लहहिं लोग सब लोचनलाहू[1]॥
प्रभुप्रसाद शिव सबै निबाहीं * इहै लालसा इक मनमाहीं ॥
पुनि न शोच तनु रहै कि जाऊ * जेहि न होइ पाछे पछिताऊ ॥
सुनि मुनि दशरथवचन सुहाये * मंगलमूल मोद अति पाये ॥
सुनु नृप जासु विमुख पछिताही * जासु भजन बिनु जरनि न जाही
भये तुम्हार तनय सो स्वामी * राम पुनीत प्रेम–अनुगामी ॥

दो० बेगि विलम्ब न करिय नृप, साजिय सबैसमाज
सुदिन सुमंगल तबहिं जब, राम होहिं युवराज॥५॥

मुदित महीपति मन्दिर आये * सेवक सचिव[2] सुमन्त बुलाये॥
कहि जय जीव शीश तिन नाये * भूप सुमंगल बचन सुनाये ॥
प्रमुदित मोहिं कहेउ गुरु आजू * रामहिं राज देहु युवराजू ॥
जो पाँचहिं मत लागै नीका * करहु हर्षि हिय रामहिं टीका[3] ॥
मंत्री मुदित सुनत प्रिय बानी * अभिमतबिरव[4] परेउ जनु पानी ॥
बिनती सचिव करहिं कर जोरी * जियहु जगत्पति बर्ष करोरी ॥
जगमंगल भल काज विचारा * बेगहिं नाथ न लाइय बारा ॥
नृपहिं मोद सुनि सचिवसुभाषा * बढ़त विटप जनु लही सुशाषा ॥

दो० कहेउ भूप मुनिराजकर, जो जो आयसु होइ ॥
रामराज्यअभिषेकहित, बेगि करहु सोइ सोइ ॥६॥

१ नेत्रोंका लाभ. २ मंत्री. ३ राज्यतिलक. ४ वांछितरूप वृक्षमें.

हर्षि मुनीश कहेउ मृदु बानी * आनहु सकलसुतीरथपानी ॥
ओषध मूल फूल फल नाना * कहे नाम गणि मंगल याना ॥
चामर¹चर्म बसन बहुभाँती * रोम²पाट पट अगणितजाती ॥
मणिगण मंगलवस्तु अनेका * जो जग योग भूपअभिषेका ॥
बेदबिहित कहि सकल बिधाना * कहेउ रचहु पुर बिबिधबिताना॥
पनस रसाल पूगफल केरा * रोपहु बीथिन पुर चहुँफेरा ॥
रचहु मंजु मणि चौकैं चारू * कहेउ बनावन बेगि बजारू ॥
पूजहु गणपति गुरु कुलदेवा * सबबिधि करहु भूमिसुरसेवा ॥

दो०ध्वज पताक तोरण कलश, सजहु तुरगरथनाग
शिरधरिमुनिबरबचनसब, निजनिजकाजहिंलाग ७

जेहि मुनीश जो आयसु दीन्हा * सो जनु काज प्रथम तेहिं कीन्हा
बिप्र साधु सुर पूजत राजा * करत रामहित मंगलकाजा ॥
सुनत रामअभिषेक सुहावा * बाजे गहगह अवध बधावा ॥
रामसीयतनु शकुन जनाये * फरकहिं मंगल अंग सुहाये ॥
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं * भरत-आगमन सूचक अहहीं
भये बहुतदिन अतिअवसेरी * सगुनप्रतीति भेंट प्रियकेरी ॥
भरतसरिस प्रिय को जगमाहीं * यहै शकुनफल दूसर नाहीं ॥
रामहिं बन्धुशोच दिनराती * अंडन्ह कमठहृदय जेहि भांती ॥

दो०तेहि अवसर मंगल परम, सुनि हर्षेउ रनिवास
शोभित लखि बिधु बढ़त जनु, बारिधिबीचिबिलास

प्रथम जाइ जेहिं बचन सुनावा * भूषण बसन भूरि तिन्ह पावा ॥

१ मृगका चर्म, २ वस्त्र. ३ दुसाला. ४ चँदवा. ५ कटहर. ६ आम्र.

प्रेमपुलकि तनु मन अनुरागीं * मंगलसाज सजन सब लागीं ॥
चौकें चारु सुमित्रा पूरी * मणिमय बिबिध भांति अतिरूरी॥
आनँद-मग्न राम-महतारी * दिये दान बहु बिप्र हँकारी ॥
पूजेउ ग्रामदेव सुर नागा * कहेउ बहोरि देन बलिभागा ॥
"बार बार गणपतिहिं निहोरा * कीजिय सफल मनोरथ मोरा ॥
भूपहृदय प्रभु प्रेरेहु जाई * मतदृढ़ होहि जो जियमें आई ॥
जो कछु इच्छा करि मनमाहीं * सो फुर होहि आन कछु नाहीं"
जेहि बिधि होइ रामकल्याना * देहु दया करि सो बरदाना ॥
गावहिं मंगल कोकिलबयनी * बिधुबदनी मृगशावकनयनी ॥

दो०रामराजअभिषेक सुनि, हिय हर्षे नर नारि ॥
लगीं सुमंगल सजन सब, बिधि अनुकूल बिचारि॥

तब नरनाह बसिष्ठ बुलाये * रामधाम शिख देन पठाये ॥
गुरुआगमन सुनत रघुनाथा * द्वार आइ नायउ पद माथा ॥
सादर अर्घ देइ घर आने * सोरहभांति पूजि सनमाने ॥
गहे चरण सियसहित बहोरी * बोले राम कमलकर जोरी ॥
सेवकसदन स्वामि-आगमनू * मंगलमूल अमंगल-दमनू * ॥
यदपि उचित अस बोलि सप्रीती* पठइय नाथ काज अस नीती ॥
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू* भयउ पुनीत आजु मम गेहू ॥
आयसु[2] होय सो करिय गुसाँई * सेवक लहै स्वामिसेवकाई ॥

दो०सुनि सनेहसाने वचन, मुनि रघुबरहिं प्रशंस[3]
राम कस न तुम कहहु अस, हंसवंशअवतंस[4]॥१०॥

वर्णि राम-गुण-शील-स्वभाऊ* बोले प्रेमपुलकि मुनिराऊ ॥

---

१ सर्प. २ आज्ञा. ३ सराहा. ४ सूर्यवंशमें उत्पन्न.

भूप सजेउ अभिषेकसमाजू * चाहत देन तुमहिं यूवराजू ॥
राम करहु सब संयम आजू * जो बिधि कुशल निबाहै काजू॥
गुरु शिख देइ रामपहँ गयऊ * रामहृदय अस बिस्मय भयऊ ॥
जनमे एकसंग सब भाई * भोजन शयन केलि लरिकाई ॥
कर्णबेध[1] उपवीत[2] बिवाहा * संग संग सब भयउ उछाहा ॥
बिमलवंश यह अनुचित एका * अनुज बिहाय बड़ेहिं अभिषेका
प्रभु-सप्रेम पछितानि सुहाई * हरत भरतमनकी कुटिलाई ॥

दो०तेहि अवसर आये लषण, मग्न प्रेम आनंद ॥
सनमाने प्रिय वचन कहि, रविकुलकैरवचंद॥११॥

बाजहिं बाजन बिबिधबिधाना * पुरप्रमोद नहिं जाइ बखाना ॥
भरतआगमन सकल मनावहिं * आवहिं बेगि नयनफल पावहिं ॥
हाट बाट घर गली अथाई * कहहिं परस्पर लोग लुगाई ॥
कालिह लग्न भल केतिक बारा * पूजिहि बिधि अभिलाष हमारा
कनकसिंहासन सीयसमेता * बैठहिं राम होइ चितचेता ॥
सकल कहहिं कब होइहि काली * बिघ्न मनावहिं देव कुचाली ॥
तिनहिं सोहात न अवधबधावा * चोरहिं चाँदनिराति न भावा ॥
[illegible] बोलि बिनय सुर करहीं * बारहिं बार पाँय लै परहीं ॥

दो०बिपति हमारि बिलोकि बडि, मातुकरियसोइआज
राम जाहिं बन राज तजि, होइ सकलसुरकाज ॥

सुनि सुरबिनय ठाढ़िपछिताती * भयउ सरोजबिपिनहिमराती[3] ॥
देखि देव पुनि कहहिं बहोरी * मातु तोहिं नहिं थोरिउखोरी ॥

---

१ कर्णछेदन. २ जनेऊ.३ कमलवनको हिमऋतुकी मानों राति है.

बिस्मय-‥हर्ष-रहित रघुराऊ * तुम जानहु रघुबीरस्वभाऊ ॥
जीव कर्मवश दुखसुखभागी * जाइय अवध देवहितलागी ॥
बार बार गहि चरण सकोची * चली बिचारिबिबुधमतिपोची
ऊंच निवास नीच करतूती * देखि न सकहिं पराइ बिभूती ॥
आगिल काज बिचारि बहोरी * करि हैं चाह कुशलकबि मोरी॥
हर्षि हृदय दशरथपुर आई * जनु ग्रहदशा दुसह दुखदाई ॥

दो०नाम मन्थरा मन्दमति, चेरि केकयी केरि ॥
अयशपिटारीताहिकरि,गईगिरामतिफेरि ॥ १३ ॥

देखि मन्थरा नगर बनावा * मंगल मंजुल बाजु बधावा ॥
पूँछिसि लोगन्ह काह उछाहू * रामतिलक सुनि भा उर दाहू ॥
करै बिचार कुबुद्धि कुचाली * होइ अकाज कवन विधि काली
देखि लागि मधु कुटिलकिराती * जिमि गँव तकै लेउँ केहि भाँती॥
भरतमातुपहँ गइ बिलखानी * काअनमनि हँसि हँसि कह रानी
उतर न देइ सो लेइ उसासू * नारिचरित करि ढारति आँसू ॥
हँसि कह रानि गाल बड़ तोरे * दीन्ह लषण शिख असमन मोरे ॥
तबहुँ नबोलि चेरि बड़ि पापिनि * छाँड़ै श्वास कारि जनु साँपिनि ॥

दो०सभयरानिकहकहसिकिन,कुशलराममहिपाल
भरत लषण रिपुदमन सुनि, भा कुबरीउरशाल १४

का सोवत सुहागअभिमानी * निकट महाभय तू न डरानी ॥
कत शिख देहि हमहिं कोउ भाई * गाल करब केहिकर बल पाई॥
रामहिं छाँड़ि कुशलकेहिआजू * जाहि नरेशै देत युवराजू ॥

---

१ देवतोंकी बुद्धि. २ सरस्वती. ३ भिल्लिनी. ४ राजा दशरथ.

भाकौशल्यहिंबिधिअतिदाहिन * देखत गर्ब रहत उर नाहिन ॥
देखहु कस न जाइ सबशोभा * जो अवलोकि मोर मनक्षोभा॥
पूत बिदेश न शोच तुम्हारे * जानतिहौ वश नोह हमारे ॥
नींद बहुत प्रिय सेजे-तुराई * लखहु न भूपकपटचतुराई ॥
सुनिप्रियबचनकुटिलमनजानी * झखी रानि तव रहिअरगानी ॥
पुनि अस कबहुँकहसिघरफोरी * तौ धरि जीहँ कढ़ावौं तोरी ॥

दो०कानेखोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि ॥
तियबिशेषपुनि चेरि कहि, भरतमातु मुसकानि १५

प्रियबादिनि शिख दीन्हेउँतोहीं * सपनेहुँ तोपर कोप न मोहीं ॥
सुदिन सुमंगल-दायक सोई * तोर कहा फुर जो दिन होई ॥
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई * यह दिनकरकुलरीति सदाई ॥
रामतिलक जो साँचेहु काली * माँगु देउँ मनभावत आली ॥
कौशल्या-सम सब महतारी * रामहिं सहजस्वभावपियारी ॥
मोपर करहिं सनेह बिशेषी * मैं करि प्रीति परीक्षा देषी ॥
जो बिधि जन्म देइ करि छोहू * होहिं राम सिय पूत पतोहू ॥
प्राणते अधिक राम प्रिय मोरे * तिनके तिलक क्षोभ कस तोरे ॥
अस प्रिय बचन सुनायो मोहीं * कहु मंथरा देहूँ का तोहीं ॥

दो०भरतशपथतोहिंसत्यकहु,परिहरिकपटदुराव
हर्षसमय बिस्मय करसि, कारण मोहिं सुनाव १६

सुनत बचन मंथरा रिसानी * बोली बचन कपटछलसानी ॥
एकहि बार आश सब पूजी * अब कछु कहब जीभ करि दूजी॥

१ राजा. २ रुईभरा गुलगुला बिछौना. ३ जीभ. ४ सूर्यवंशकी रीति.

फोरैयोग कपार अभागा * भलौ कहत दुख रौरेहु लागा ॥
कहइ झूँठ फुर बात बनाई * सो प्रिय तुमहिं करुइ मैं माई॥
हमहुँ कहब अब ठकुर सुहाती* नाहिं तौ मौन रहब दिनराती॥
कारि कुरूप बिधि परबश कीन्हा* बाचाशाल हमैं तिन्ह दीन्हा ॥
कोउ नृप होउ हमैं का हानी * चेरि छाँड़ि अब होब कि रानी
जारैयोग स्वभाव हमारा * अनभल देखि न जाइ तुम्हारा ॥
ताते कछुक बात अनुसारी * क्षमहु देवि बड़ चूक हमारी ॥

दो०गूढकपटप्रियबचनसुनि,तीयअधरबुधिरानि॥
सुरमायाबशबैरिणिहिं,सुहृदजानिपतिआनि ॥१७॥

सादर पुनि पुनि पूँछति ओही* शबरीगान मृगी जनु मोही ॥
तस मति फिरी अहै जस भावी * रहसी चेरि घात भलि फावी॥
तुम पूँछहु मैं कहत डराऊँ * धरेहु मोर घरफोरी नाऊँ ॥
सजिप्रतीतिगढ़िबहुबिधिछोली * अवधसाढ़साती जनु बोली ॥
प्रिय सियराम कहा तुम रानी * रामहिं तुम प्रिय सो फुर बानी ॥
रहे प्रथम अब सो दिन बीते * समय पाइ रिपु होहिं पिरीते ॥
भानु कमलकुल–पोषनहारा * बिनु जल जारि करै सो क्षारा ॥
जर तुम्हारि चह सवति उपारी * रूँधहु करि उपाय बर बारी ॥

दो०तुमहिंनशोचसुहागबल, निजवशजानहुराव ॥
मनमलीनमुहँमीठनृप, राउरसरलस्वभाव ॥ १८ ॥

चतुर गभीर राममहतारी * बीच पाइ निजकाज सँवारी ॥
पठये भरत भूप ननिऔरे * राममातु–मत जानब रौरे ॥

---

१ गुप्त. २ तुच्छबुद्धि. ३ भिल्लीनीके गायनसे. ४ सूर्य. ५ जल.

सेवहिं सकलसवति मोहि नीके * गर्वित भरतमातु बल पीके ॥
शाल तुम्हार कौशिलहिं माई * चतुरकपट नहिं परत लखाई ॥
राजहिं तुमपर प्रीति बिशेषी * सवतिस्वभाव सकै नहिं देषी॥
रचि प्रपंच भूपहिं अपनाई * रामतिलकहित लग्न धराई ॥
यहि कुल उचित रामकहँ टीका * सबहिं सुहाइ मोहिं सुठि नीका ॥
आगिल बात समुझि डर मोहीं * दैव देव फल सो फिरि ओहीं ॥

दो०रचिपचिकोटिककुटिलपन, कीन्हेसिकपटप्रबोध[2] ॥
कहेसिकथाशतसौतिकर, जाते बढ़ै बिरोध ॥ १९॥

भावीबश प्रतीति उर आई * पूँछि रानि निजशपथ दिवाई ॥
का पूँछहु तुम अजहुँ न जाना * हितअनहितनिजपशुपहिचाना॥
भये पाख दिन सजत समाजू * तुम सुधि पायहु मोसन आजू ॥
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे * सत्य कहे नहिं दोष हमारे ॥
जो असत्य कछु कहब बनाई * तौ बिधि देइहि हमहिं सजाई॥
रामहिं तिलक कालिह जो भयऊ * तुमकहँबिपतिबीज बिधिभयऊ॥
रेखा खैंचि कहौं बल[3] भाषी * भामिनि भइउ दूधकी माषी ॥
जो सुतसहित करहु सेवकाई * तौ घर रहहु न आन उपाई ॥

दो०*कद्रू[4] बिनतहिं दीन दुख, तुमहिं कौशल्यादेव
भरत बन्दिगृह सेइहैं, रामलषणकर नेव[5] ॥ २० ॥*

केकयसुता सुनत कटुबानी * कहि न सकै कछु सहमिसुखानी
तनु पसेव कदली जनु काँपी * कुबरी दशन जीह तब चापी ॥

* सर्पोंकी माता कद्रू और गरुडादि पक्षियोंकी माता बिनता ये दोनों कश्यपजी महर्षिकी पत्नी थी एक समय कद्रूने बिनतासे कहा

१ दुःख. २ ज्ञान. ३ प्रतिज्ञा व पैज. ४ सर्पनकी माता.

कहि कहि कोटिक कपटकहानी * धीरज धरहु प्रबोधि सिरानी ॥
कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू * जिमि न नवै फिरि उकठ कुकाठू ॥
फिरा कर्म प्रिय लागि कुचाली * बकिहिं सराहत मनहुँ मराली ॥
सुनु मंथरा बात फुर तोरी * दहिन आँख नित फरकत मोरी ॥
दिनप्रति देखौं राति कुसपना * कहौं न तोहिं मोहवश अपना ॥
कहा करौं सखि शुद्ध सुभाऊ * दाहिन बाम न जानौं काऊ ॥

दो० अपनेचलतनआजुलगि, अनभलकाहुककीन्ह
केहि अघ[२] एकहि बार मोहिं, दैव दुसह दुखदीन्ह २१

नैहर जन्म भरब बरु जाई * जियत न करब सवतिसेवकाई ॥
अरिबश[३] दैव जिआवत जाही * मरण नीक तेहि जियब न चाही ॥
दीन बचन कह बहुविधिरानी * सुनि कुबरी तियमाया ठानी ॥
अस कस कहहु मानि मन ऊना * सुख सुहाग तुमकहँ दिन दूना ॥
जो राउर अस अनभल ताका * सो पाइहि यह फलपरिपाका ॥
जबते कुमति सुना मैं स्वामिनि * भूँख न बासर नींद न यामिनि[४] ॥
पूँछा गुणिन्ह रेख तिन खाँची * भरत भुआल[५] होब यह साँची ॥

कि-सूर्यके घोड़ोंकी पूँछ किस रंगकी है? बिनताने कहा, सपेद कद्रूने कहा कि, नहीं, काली है. निदान " जो हारे अर्थात् जिसका कहना झूँठा हो वह दासी होके रहे. " ऐसा कह कर वे दोनों देखने चलीं. तब कद्रूने छलसे अपने लड़के सर्पोंको यह बात कहकर भेज दिया. वोह माताके हुकुमसे घोड़ोंकी पूँछमें चिपट गये? उनकी पूँछ काली होगई. पीछे कद्रूने विनतासे कहा, देख यह पूछतो काली ही है. सो सुन, सत्य मान, बिनता कद्रूकी दासी होके, रहने लगी.

१ हंसिनी. २ पापसे. ३ शत्रुके वश. ४ रात्रिको. ५ राजा.

भामिनि करहु तौ कहौं उपाऊ * हैं तुम्हरे सेवावश राऊ ॥

दो०परौं कूप तव वचनलगि,सकौं पूत पति त्यागि
कहसि मोर दुखदेखि बडि, कसनकरबहितलागि॥

कुबरी करी कुबलि कैकेयी * कपटछुरी उरपाहनै टेयी ॥
लखै न रानि निकट दुख कैसे * चरै हरित तृण बलिपशु जैसे॥
सुनत बात मृदु अंत कठोरी * देति मनहुँ मधु माहुर घोरी ॥
*कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं*स्वामिनि कहेहु कथा मोहिंपाहीं
दुइ बरदान भूपसन थाती * माँगहु आजु जुड़ावहु छाती ॥
सुतहिं राज रामहिं बनवासू * देहु लेहु सब सवतिहुलासू ॥
भूपति रामशपथ जब करई * तब माँगहु जेहि वचन न टरई॥
होइ अकाज आजु निशि[२] बीते* बचन मोर प्रिय मानहुँ जीते॥

दो०बडकुघातकरिपातकिनि, कहेसिकोपगृहजाहु
काज सँवारहु स[३]जग सब, सहँ[४]सा जनि पतियाहु२३

कुबरिहिं रानि प्राणसम जानी * बार बार बड़ि बुद्धि बखानी ॥

* एक समय देवासुरसंग्राममे हारेहुए इन्द्रादि देवता बिनय करके, राजा दशरथको लेगये कैकेयीभी साथ गई.और दैत्योंसे युद्ध होने लगा. कुछ कालमें राजा दशरथका सारथी मारा गया, तब कैकेयीने रथ हांका, निदान इनकी जीत भई. तब राजा दशरथने प्रसन्न होके कैकेयीसे कहा कि–हे प्रिये! तू मनमाने दो बर मांग ले. कैकेयीने कहा कि– ये मेरे बर थातीकी माफक अपने पास रक्खो जब काम पडेगा तब मागूंगी.

१ छातीरूप पत्थरमें. २ रात्रि. ३ सावधान रहकर. ४ इकाकी.

तुहिं सम हित न मोर संसारा * बहे जातकर भयसि अधारा ॥
जो बिधि पुरव मनोरथ काली * करौं तोहिं चखपूतरि[1] आली ॥
बहुबिधि चेरिहिं आदर देयी * कोपभवन गवनी केकेयी ॥
बिपतिबीज बर्षा-ऋतु चेरी * भुइँ भइ कुमति केकयीकेरी ॥
पाइ कपटजल अंकुर जामा * बर दोउ दल[2] फल दुख परिणामा
कोपसमाजसाज सजि सोई * राज करत तेहिं कुमति बिगोई ॥
राउनगर कोलाहल होई * यह कुचाल कछु जान न कोई ॥

दो०प्रमुदित पुरनरनारि सब, साजि सुमंगलचार॥
यक प्रबिशहिं यक निकसहीं, भीर भूपदरबार २४

बालसखा सुनि हिय हर्षाहीं * मिलि दश पाँच रामपहँ जाहीं॥
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिचानी * पूँछहिं कुशल क्षेम मृदु बानी ॥
फिरहिं भवन प्रभुआयसु पाई * करत परस्पर रामबड़ाई ॥
को रघुबीरसरिस संसारा * शील सनेह निबाहनहारा ॥
जेहिं जेहिं योनि कर्मबश भ्रमहीं * तहँ तहँ ईश देहिं यह हमहीं ॥
सेवक हम स्वामी सियनाहू * होउ नाथ यह ओर निबाहू ॥
अस अभिलाष नगर सबकाहू * केकयसुताहृदय अतिदाहू ॥
को न कुसंगति पाइ नशाई * रहै न नीचमते[3] गरुआई ॥
अतिहिं सुशील केकयी रानी * दुष्ट-संगते मति बौरानी ॥

दो०साँझसमय सानन्द नृप, गये केकयीगेह ॥
गमन निठुरतानिकटकिय, जनु धरि देहसनेह २५

कोपभवन सुनि सकुचे राऊ * भयबश आगे परै न पाऊ ॥
सुरपति बसै बाहुबल जाके * नरपति रहहिं सकलरुख ताके

१ नेत्रकी पूतरी. २ पत्ता. ३ नीचकी बुद्धिसे.

सो सुनि तियरिसि गये सुखाई * देखहु काम-प्रताप-बड़ाई ॥
शूल कुलिश[1] असि[2] अंगनि हारे * ते रतिनाथ सुमनशरमारे[3] ॥
सभय नरेश प्रियापहँ गयऊ * देखि दशा दुख दारुण भयऊ ॥
भूमिशयन पट मोट पुराना * दिये डारि तनुभूषण नाना ॥
कुमतिहि कस कुबेषता फाबी * अनहित बात सूच जनु भावी॥
जाइ निकट नृप कह मृदु बानी * प्राणप्रिया केहि हेतु रिसानी ॥

छंद॰ केहिहेतुरानिरिसानिपरसतपाणिपतिहिंनिबारई
मानहुँसरोषभुअंगभामिनि बिषमभाँति निहारई ॥
दोउ बासना रसना[4] दशन बर मर्म ठाहर देखई ॥
तुलसीनृपतिभवितव्यतावश कामकौतुकलेखई ॥

सो॰ बारबारकहराउ,सुमुखिसुलोचनिपिकबचनि
कारण मोहिं सुनाउ, गजगामिनि निजकोपकर ॥१॥

अनहिततोर प्रियाकेहि कीन्हा * केहिंदुइशिरकेहिं यमचहलीन्हा
कहु केहि रंकहि करौं नरेशू * कहु केहि नृपहिं निकारौं देशू ॥
सकौं तोर अरि अमरहिं मारी * कहा कीट बपुरे नर नारी ॥
जानसि मोर स्वभाव बरोरू * तव मुख मम दृग चन्द्र चकोरू॥
प्रिया प्राणबश सर्बस मोरे * परिजन प्रजा सकल बश तोरे ॥
जो कछु कहौं कपट करि तोहीं * भामिनि रामशपथ शत मोहीं ॥
बिहँसि माँगु मनभावति बाता * भूषण साजु मनोहरगाता ॥
घरी कुघरी समुझि जिय देषू * बेगि प्रिया परिहरहु कुबेषू ॥

दो॰ यहसुनिमनगुणिशपथबडि,बिहँसिउठीमतिमन्द
भूषण सजति बिलोकिमृग,मनहुँकिरातिनि फन्द २६

---

१ वज्र. २ तलवार. ३ कामदेवने फूलके बाणसे मारा. ४ जीभ.

पुनि कह राउ सुहृद जियजानी * प्रेमपुलकि मृदु मंजुल बानी ॥
भामिनि भयउ तोर मनभावा * घर घर नगर अनन्द बधावा॥
रामहिं देउँ कालिह युवराजू * सजहु सुलोचनि मंगलसाजू ॥
दलकि उठी सुनि बचन कठोरा * जनु छुइ गयउ पाक बर तोरा॥
ऐसी पीर बिहँसि तेहिं गोई * चोरनारि जिमि प्रगट न रोई॥
लखी न भूप कपटचतुराई * कोटि कुटिल गुण गुरू पढ़ाई॥
यद्यपि नीतिनिपुण नरनाहू * नारिचरित जलनिधि[1]अवगाहू॥
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी * बोली बिहँसि नयनमुख मोरी॥

दो०मांगु माँगु पै कहहु पिय, कबहूँ देहु न लेहु ॥
देन कहेउ बरदान दुइ, तेउ पावत सन्देहु ॥ २७ ॥

जानेउँ मर्म राउ हँसि कहई * तुमहिं कोहाब परम प्रिय अहई॥
थाती राखि न माँगेउ काऊ * बिसरि गयो मम भोर सुभाऊ ॥
झूँठहु दोष हमहिं जनि देहू * दुइके चारि माँगि किन लेहू ॥
रघुकुलरीति सदा चलि आई * प्राण जाइँ बरु बचन न जाई॥
नहिं असत्यसम पातकपुंजा * गिरिसम होहि कि कोटिकगुंजा
सत्यमूल सब सुकृत सुहाई * बेदपुराणविदित मुनि गाई ॥
तेहिपर रामशपथ करि आई * सुकृतसनेहअवधि रघुराई ॥
बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली* कुमति बिहंगकुलह[2] जनु खोली॥

दो०भूपमनोरथसुभगबन, सुखसुबिहंगसमाज[3] ॥
भिल्लिनि जनु छाँडनचहत, बचन भयंकर बाज२८

सुनहु प्राणपति भावत जीका * देहु एक बर भरतहिं टीका ॥
दूसर बर माँगों कर जोरी * नाथ मनोरथ पुरवहु मोरी ॥

---

१ समुद्रकी माफिक अगाध है. २ सूध. ३ पक्षिसमूह.

तापसबेष विशेष उदासी * चौदह बर्ष राम बनवासी॥
सुनि तियबचन भूपउर शोकू * शशिकर[1]छुवतबिकलजिमिकोकू[2]
गये सहमि कछु कहिनाहिं आवा* जनु शचान बन झपटेउ लावा[3]॥
बिबरण भयउ निपट महिपालू * दामिनि हनेउ मनहु तरु तालू[4]॥
माथे हाथ मूँदि दोउ लोचन * तनु धरि शोच लागु जनु शोचन
मोर मनोरथ सुरतरुफूला * फरत करिणि जनु हतेउ समूला
अवधउजारि कीन्ह कैकेयी * दीन्हेसि अचल बिपातिके नेयी॥

दो०कवने अवसर का भयउ, गयउँ नारिविश्वास
योगसिद्धिफलसमय जिमि, यतिहिं अबिद्यानास

इहिबिधि राउ मनहिं मन दहई * देखि कुभांति कुमति असकहई॥
भरत कि राउर पूत न होहीं * आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं ॥
जो सुनि शरसम लाग तुम्हारे * काहे न बोलहु बचन सँभारे॥
देहु उतर अस कहहु कि नाहीं * सत्यसिन्धु तुम रघुकुलमाहीं ॥
देन कहेउ बर अब जनि देहू * तजहु सत्य जग अपयश लेहू ॥
सत्य सराहि कहेउ बर देना * जानेहु लेइहि माँगि चबेना ॥
*शिबि|दधीचि †बलि जो कछुभाषा*तनुधन तजेउ बचनप्रणराषा

* जब राजा शिबिने९२ यज्ञ किये बाद ९३ का आरंभ किया तब इन्द्रजी डरके अग्निजीको कबूतर बनाय आप बाज बन उसपर झपट करते हुये राजाके सामने आ पहुँचे. तब कबूतर राजा शिबिकी शरणमें गया. महादयालु शिबि राजाने उस कबूतरको अपनी गोदमें छिपा रक्खा. तब बाज बोला कि–महाराज! मैं भूँखसे मर जाऊंगा तो तुमको पाप होगा. यह सुन, राजाने कहा हम इसके बदले आहार

१ चन्द्रमाकी किरण. २ चक्रवाक. ३ बटेर. ४ ताड़का झाड.

अतिकटु बचन कहति कैकेयी * मानहुँ लोन जेरपर देयी ॥

दो०-धर्मधुरन्धर धीर धरि, नयन उघारे राउ ॥
शिर धुनि लीन्हउसास अति, मारेसि मोहिं कुठांउ

आगे देखि बरति रिसि भागी * मनहुँ रोषतरवारि¹ उघारी ॥
मूठ कुबुद्धि धार निठुराई * धरि कुबेरी² जनु सान बनाई ॥
लखेउ महीप कराल कठोरा * सत्य कि जीवन लेहहि मोरा ॥
बोले राउ कठिन करि छाती * बानी बिनय³ न ताहि सोहाती ॥

जो बोलो सो देवें. बाजने कहा कि, अपनी देहका मांस इसकी बराबर तोलके दो. राजा शिबि प्रसन्न हो, तुला मँगाय एक बाजू उसे रख अपना मांस काट २ कर तुलापर रखने लगे निदान ऐसे रखते रखते सब देह काटके रख दी तौभी मांस कबूतरकी बराबर न भया. अब राजा अपने गलेमें तलवार मारना चाहताथा कि विष्णुजीने प्रगट हो राजाशिबिको मोक्ष दिया.

† इन्द्रादि देवताओंने वृत्रासुरसे पीड़ित हो, नारायणके पास जाकर अपना दुःख निवेदन किया; नारायणने कहा-कि दधीचि ऋषिकी हड्डी माँग लावो. और उनका बज्र बनाकर उससे वृत्रासुरको मारो. ऐसे सुन, देवताओंने दधीचिसे सविनय याचना की तब महर्षि दधीचिने हड्डियां दे, परब्रह्ममें ध्यान लगाके शरीरत्याग किया. और इन्द्रने हड्डी ले, वज्र बनाय, वृत्रासुरको मारा.

‡ भगवान्ने बामनरूप हो राजा बलिके पास जाय तीन पैग पृथ्वीके मिस उसका सर्बस्व ले, बांधके पातालमें भेजा तौभी अपने सत्यमें टिका रहा.

---

१ क्रोधकी तरवारि २ मंथराने. ३ नम्रता.

मोरे भरत राम दोउ आँखी * सत्य कहौं करि शंकर साखी॥
प्रिया बचन कस कहसि कुभाँती * रीति प्रतीति प्रीति करि घाती॥
अवशि दूत मैं पठउब प्राता * ऐहैं बेगि सुनत दोउ भ्राता ॥
सुदिन साधि सब साज सजाई * देहौं भरतहिं राज बजाई ॥

दो०लोभ न रामहिं राजकर, बहुत भरतपर प्रीति॥
मैं बड छोट बिचार करि, करत रहेउँ नृपनीति ३१

रामशपथशत कहौं सुभाऊ * राममातु मोहिं कहा न काऊ॥
मैं सब कीन्ह तोहिं बिनु पूँछे * ताते परेउँ मनोरथ छूँछे * ॥
रिसि परिहरि अब मंगलसाजू * कछु दिन गये भरतयुवराजू ॥
एकहि बात मोहिं दुख लागा * बर दूसर असमंजस माँगा ॥
अजहूँ हृदय दहत तेहि आँचा * रिसिपरिहास कि साँचहु साँचा
कहु तजि रोष रामअपराधू * सबकोउ कहत राम सुठिसाधू॥
तैंहु सराहसि करसि सनेहू * अब सुनि मोहिं परमसन्देहू ॥
जासु स्वभाव अरिहु[1] अनुकूला * सो किमि करहि मातुप्रतिकूला

दो०प्रियाहास्यरिसिपरिहरहु,माँगुबिचारिबिबेक[2]
जेहिं देखौं अबनयन भरि, भरतराजअभिषेक॥३२॥

जियै मीन बरु बाँरि[3]बिहीना * मणिबिनु[4]फणिकिजियैदुखदीना॥
कहौं स्वभाव न छल मनमाहीं * जीवन मोर रामबिनु नाहीं ॥
समुझि देखु तैं प्रिया प्रबीना * जीवन दशरथ रामअधीना ॥
सुनि मृदु[5]बचन कुमति अतिजरई * मनहुँ अनल[6] आहुति घृत परई ॥
कहहु करहु किन कोटि उपाया * इहाँ न लागिहि राउरमाया ॥
देहु कि लेहु अयश करि नाहीं * मोहिं न बहु परपंच सुहाहीं ॥

१ शत्रुपरभी. २ ज्ञान. ३ जलबिन. ४ सर्प. ५ कोमल. ६ अग्निमें

राम साधु तुम साधु सुजाना * राममातु तुम भलि पहिंचाना॥
जस-कौशला मोर भल ताका * तस फल देउँ कहौं करि शाका

दो०होत प्रात मुनिवेष धरि, जो न राम बन जाहिं
मोर मरण राउर अयश, नृप समुझहु मनमाहिं ३३

अस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी* मानहुँ रोषतरंगिणि बाढ़ी ॥
पापपहार प्रगट भइ सोई * भरी क्रोध जल जाइ न जोई ॥
दोउ बर कूल कठिन हठ धारा* भँवर कूबरीबचन प्रचारा ॥
ढाहति भूप[3]रूपतरुमूला * चली बिपतिबारिधि अनुकूला॥
लखी नरेश बात सब साँची * तियमिसु मीच शीशपर नाँची॥
गहि पद बिनय कीन्ह बैठारी * जनि दिनकरकुल होसि कुठारी
माँगु माथ अबहीं देउँ तोहीं * रामबिरह जनि मारसि मोहीं॥

दो०देखी व्याधि असाध्य नृप,परेउधरणिधुनिमाथ
कहत परमआरत बचन, राम राम रघुनाथ॥३४॥

राखु रामकहँ जेहि तेहि भांती* नाहित जरिहि जन्मभरि छाती
व्याकुल राउ शिथिल सब गाता* करिणि कल्पतरु मनहुँ निपाता
कण्ठ सूख मुख आव न बानी * जिमि पाठीन दीन बिनु पानी॥
पुनि कह कटु कठोर कैकेयी * मर्म पाछि जनु माहुर देयी ॥
जो अन्तहु अस करतब रहेऊ* माँगु माँगु तुम केहिबल कहेऊ॥
दुइ कि होइँ यक संग भुआलू* हँसब ठठाइ फुलाउब गालू ॥
दानि कहाउब अरु कृपणाई * चाहिय क्षेम कुशल रौताई ॥
छाँड़हु बचन कि धीरज धरहू * जनि अबला इव करुणा करहू
तन तिय तनय धाम धन धरणी* सत्यसिंधुकहँ तृणसम बरणी ॥

---

१ अच्छे. २ क्रोधकी नदी. ३ राजा दशरथरूप वृक्षकी जड़को.

दो०मर्म बचन सुनि राउ कह, कछुक दोष नहिं तोर
लागेउ तोहिं पिशाच जनु, काल कहावत मोर॥
चहत न भरत भूपपद भोरे * बिधिबश कुमति बसी उर तोरे
सो सब मोरे पाप–परिणामू * कछु न बसाइ भयो बिधि बामू
सुबस बसिहि पुनि अवध सुहाई * सब गुण धाम राम-प्रभुताई॥
करि हैं भाइ सकल सेवकाई * होइहि तिहुँपर रामबड़ाई॥
तोर कलंक मोर पछिताऊ * मुयउ मेटि नहिं जाइहि काऊ॥
अब तोहिं नीक लागु कर सोई * लोचनओट बैठु मुख गोई॥
जबलगि जियों कहौं कर जोरी * तबलगि जनि कछु कहसि बहोरी
फिरि पछितैहसि अन्त अभागी * मारसि गाय नेहारु लागी॥
दो०परेउ राउ कहि कोटिबिधि, काहे करसि निदान
कपट चतुर नहिं कहति कछु, जागति मनहुँ मसान३६
रामराम रटि बिकल भुआलू * जनु बिनपंख बिहंग बिहालू॥
हृदय मनाव भोर जनि होई * रामहिं जाइ कहै जनि कोई॥
उदय करहु जनि रविकुलपूरा * अवध बिलोकि शूल होइ ऊरा
भूपप्रीति केकइ–निठुराई * उभय अवधि बिधि रची बनाई
बिलपत नृपहिं भयउ भिनुसारा * बीणा--बेणु--शंख--ध्वनि द्वारा॥
पढ़हिं भाट गुण गावहिं गायक * सुनत नृपहिं लागत जनु सायक॥
मंगलकलश सोहाइँ न कैसे * सहगामिनिहिं बिभूषण जैसे॥
तेहि निशिनींद परी नहिं काहू * रामदर्श–लालसा–उछाहू *॥
दो०द्वार भीर सेवक सचिव, कहहिं उदय रबि देषि
जागे अजहुँ न अवधपति, कारण कवन बिशेषि३७

१कुबुद्धि. २बाज अथवा व्याघ्र. ३ बाण. ४पतिकेसाथ जलनेवाली स्त्रीको.

पछिले पहर भूप नित जागा * आजु हमाहिं बड़ अचरज लागा
जाहु सुमन्त जगावहु जाई * कीजिय काज रजायसु पाई ॥
गे सुमन्त नृप–मन्दिर–पाहीं * देखि भयानक जात डेराहीं ॥
धाइ खाइ जनु जात न हेरा * मानहुँ विपतिविषादबसेरा ॥
पूँछत कोउ न उतर कछु देयी* गे जेहि भवन भूप कैकेयी ॥
कहि जय जीव बैठि शिर नाई* देखि भूपगति गयउ सुखाई ॥
शोकविकल बिबरण महि परेऊ* मानहुँ कमलमूल परिहरेऊ ॥
सचिव सभीत सकहिं नहिं पूँछी * बोली अशुभभरी शुभछूँछी ॥

दो०परी न राजहिं नींद निशि,मर्म जानु जगदीश
राम राम रटि भोर किय, हेतु न कहेउ महीश३८

आनहु रामहिं बेगि बुलाई * समाचार तब पूँछहु आई ॥
चले सुमन्त राउरुख जानी * लखी कुचाल कीन्ह कछु रानी॥
शोचबिबश महि परै न पाऊ * रामहिं बोलिकहहिंकाराऊ ॥
उर धरि धीरज गयेउ दुआरे * पूछहिं सकल देखि मनमारे ॥
समाधान मन कर सबहीका * गये जहाँ दिनकरकुलटीका ॥
राम सुमंतहिं आवत देखा * आदर कीन्ह पितासम लेखा॥
निरखि बदन कहि भूपरजाई * रघुकुलदीपहिं चले लिवाई ॥
राम कुभांति सचिवसँग जाहीं*देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं ॥

दो०जाइ दीख रघुबंशमणि,नरपतिनिपट कुसाज॥
सहमि परेउ लखि सिंहिनहिं,मनहुँ बृद्ध गजराज॥

सूखे अधर जरे सब अंगा * मनहुँ दीन मणिहीन भुजंगा ॥
सरुष समीप देखि कैकेयी * मानहुँ मृत्यु--घरी गनि लेई ॥

---

१ विपत्ति और दुःखकाघर है. २हृदयमें. ३हाथी. ४ ओष्ठ. ५क्रोधयुक्त.

करुणामय¹ रघुनाथसुभाऊ * प्रथम दीख दुख सुना न काऊ ॥
तदपि धीर धरि समय बिचारी * पूँछा मधुर बचन महतारी ॥
मोहिं कहु मातु तातदुखकारण * करिय यत्न जेहि होइ निवारण ॥
सुनहु राम सब कारण एहू * राजहिं तुमपर बहुत सनेहू ॥
देन कहेउ मोहिं दुइ बरदाना * माँगेउँ जो कछु मोहिं सुहाना ॥
सो सुनि भयउ भूपउर शोचू * छाँड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू ॥

दो०सुतसनेह इत बचन उत, संकट परेउ नरेश ॥
सकहु तौ आयसु² शीश धरि, मेटहु कठिन कलेश ॥

निधरक बैठि कहति कटु बानी * सुनत कठिनता अति अकुलानी ॥
जीभ कमान बचन शर जाना * मनहुँ भूप मृदुलक्ष्य³समाना ॥
जनु कठोरपन धरे शरीरा * शिखै धनुषबिद्या बर बीरा ॥
सब प्रसंग रघुपतिहिं सुनाई * बैठी जनु तनु धरि निठुराई ॥
मन मुसकाहिं भानुकुल-भानू⁴ * राम सहज-आनन्दनिधानू ॥
बोले बचन बिगतसबदूषण * मृदु मंजुलजनु बागबिभूषण * ॥
सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी * जो पितुमातुबचन अनुरागी ॥
तनय मातु-पितु-पोषणहारा * दुर्लभ जननि सकलसंसारा ॥

दो०मुनिगणमिलन बिशेष बन, सबहिंभांति भलमोर ॥
तेहिमहँ पितुआयसु बहुरि, संमत जननी तोर ४१ ॥

भरत प्राणप्रिय पावहिं राजू * बिधिसबबिधिमोहिंसन्मुखआजू ॥
जो न जाहुँ बन ऐसेहु काजा * प्रथम गणिय मोहिं मूढ़समाजा ॥
सेवहिं रण्ड कल्पतरु त्यागी * परिहरि अमिय लेहिं बिषमाँगी ॥

१ दयामय. २ आज्ञा. ३ कोमल निशानाके सदृश. ४ सूर्यवंशके सूर्य.

तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं * देखु बिचारि मातु मनमाहीं ॥
अम्ब एक दुख मोहिं विशेषी * निपट[1] बिकल नरनायक देषी ॥
थोरिहि बात पितहिं दुख भारी * होत प्रतीति न मोहिं महतारी ॥
राउ धीर गुणउदधि अगाधू * भा मोते कछु बहु अपराधू ॥
ताते मोहिं न कहत कछु राऊ * मोर शपथ तोहिं कहु सति भाऊ

दो०॥ सहजसरलरघुबरबचन, कुमतिकुटिलकारिजान
चलै जोंक जिमि वक्रगति[2] यद्यपि सलिलसमान॥४२॥

रहँसि[3] सो रानि रामरुख पाई * बोली कपट-सनेह जनाई ॥
शपथ तुम्हार भरतकै आना * हेतु न दूसर मैं कछु जाना ॥
तुम अपराधयोग नहिं ताता * जननीजनकबन्धु-सुखदाता ॥
राम सत्य तुम जो कछु कहहू * तुम पितुमातुबचनरत अहहू ॥
पितहि बुझाइ कहौ बलि सोई * चौथेपन जेहि अयश न होई ॥
तुमसम सुवन सुकृत जेहि दीन्हे * उचित न तासु निरादर कीन्हे ॥
लागहिं कुमुखिबचन शुभ कैसे * मगह गयादिक तीरथ जैसे ॥
रामहिं मातुबचन सब भाये * जिमि सुरसरि[4]गतसलिल सुहाये ॥

दो०॥ गै मूर्छा रामहिं सुमिरि, नृप फिरि करँवट लीन्ह
सचिव रामआगमन कहि, बिनय समयसम कीन्ह

जब नृपअकनि राम पगुधारे * धरि धीरज तब नयन उघारे ॥
सचिव सँभारि राउ बैठारे * चरण परत नृप राम निहारे ॥
लिये सनेहविकल उर लाई * गै मणिफणिक बहुरि जिमिपाई॥
रामहिं चितै रहैं नरनाहू * चला विलोचन–बारि-प्रबाहू॥
शोकविकल कछु कहै न पारा * हृदय लगावत बारहिं बारा ॥

१ अत्यंत. २ टेढ़ी. ३ एकांतमें, ४ गंगाजल. ५ राजाके निकट.

बिधिहिं मनाव राउ मनमाहीं * जेहिं रघुनाथ न कानन जाहीं॥
सुमिरि महेशहिं कहहिं निहोरी* बिनती सुनहु सदाशिव मोरी ॥
आशुतोष तुम औघड़दानी * आरति हरहु दीन जन जानी ॥

दो० तुम प्रेरक सबके हृदय, सो मति रामहिं देहु ॥
बचन मोर तजि रहहिं घर, परिहरि शीलसनेहु ४४

अयश होहु बरु सुयश नशाऊँ* नरक परौं बरु सुरपुर जाऊँ ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं* लोचन ओट राम जनि होहीं ॥
असमन गुनत राउ नहिं बोला* पीपरपातसरिस मन डोला ॥
रघुपति पितहिं प्रेमवश जानी* पुनि कछु कहेउ मातु अनुमानी
देशकाल अवसर अनुसारी * बोले बचन बिनीत बिचारी ॥
तात कहौं कछु करौं ढिठाई * अनुचित क्षमब जानि लरिकाई
अतिलघुबातलागि दुख पावा * काहे न मोहिं कहि प्रथम जनावा
देखि गुसाँइहिं पू[illegible] माता * सुनि प्रसंग भा शीतल गाता ॥

दो० मंगलसमय सनेहवश, शोच परिहरिय तात ॥
आयसु देइय हर्षि हिय, कहि पुलके प्रभुगात ॥४५॥

धन्य जन्म जगतीतल तासू *पितहिं प्रमोद चरित सुन जासू॥
चारि पदारथ करतल ताके * प्रिय पितु मातु प्राणसम जाके
आयसु पालि जन्मफल पाई* ऐहौं बेगिहि होहु रजाई ॥
बिदा मातुसन आवौं माँगी * चलि हौं बनहिं बहुरि पगलागी
अस कहि राम गमन तब कीन्हा*भूप शोकबश उतर न दीन्हा
नगर व्यापि गइ बात सु तीछी*छुवत चढ़ी जनु सबतन बीछी॥
सुनि भये बिकलसकल नरनारी* बेलिबिटप जनु लागु दवारी ॥

१ वनको. २ जल्दी प्रसन्न. होनेवाले. ३ स्वर्गको. ४ नम्र. ५ आज्ञा.

जो जहँ सुनै धुनैं शिर सोई * बड़ विषाद नहिं धीरज होई ॥

दो०मुखसूखहिं लोचनस्रवहिं, शोकनहृदयसमाय
मानहु करुणारसकटक, उतरा अवध बजाय ॥४६॥

भलिबनाइ बिधि बात बिगारी * जहँ तहँ देहिं केकयिहिं गारी ॥
यहि पापिनिहिं बूझि का परेऊ * छायभवनपर पावक धरेऊ ॥
निजकर नयन काढ़िचह दीखा * डारि सुधा बिष चाहत चीखा ॥
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी * भइ रघुवंश–बेणुबन आगी ॥
पल्लव बैठि पेड़ यहिं काटा * सुखमहँ शोकठाट यहिं टाटा ॥
सदा राम यहि प्राणसमाना * कारण कवन कुटिल पण ठाना ॥
सत्य कहहिं कवि नारिसुभाऊ * सबबिधि अगम अगाध दुराऊ
निजप्रतिबिम्ब मुकुर गहि जाई * जानि न जाइ नारिगति भाई ॥

दो०काह न पावक जरि सकै, का न समुद्र समाइ ॥
का न करै अबला प्रबल, केहि जग काल न खाइ ४७

का सुनाइ बिधि काह सुनावा * का दिखाइ चह काह दिखावा
एक कहैं भल भूप न कीन्हा * बर बिचारि नहिं कुमतिहिंदीन्हा
जो हठि भयउ सकलदुखभाजन * अबलाबिबशज्ञानगुणगाजन ॥
एक धर्मपरिमिति पहिंचाने * नृपहिं दोष नहिं देहिं सयाने ॥
शिबिदधीचि *हरिचन्दकहानी * एक एकसन कहहिं बखानी ॥

* एकसमय वसिष्ठ महर्षिने विश्वामित्रसे राजा हरिश्चन्द्रको बड़ा धन्यवाद दिया कि ऐसा सत्वशील सत्यप्रतिज्ञ और सत्यवक्ता राजा सूर्य बंशमें नहीं हुआ और नहीं होगा. यह बात विश्वामित्रजीने मनमें

१ शिबि और दधीचिका इतिहास "शिबिदधीचिबलि जो कछु भाषा" इस चौपाईपर लिखागया है.

एक भरतकर सम्मत कहहीं * एक उदास भाव सुनि रहहीं ॥

रक्खी. निदान किसी कालमें राजा वनमें शिकार खेलने गये. वहां जब रास्ता भूल गये तब एक अतिउत्तम तालाव देखनेमें आया, उसको देख; प्रसन्न हो, घोड़ेसे उतर, जबहीं राजा स्नान करनेको उद्यत भये इतनमें विश्वामित्र बूढ़े ब्राह्मण बन, राजासे बोले कि- महाराज ! आज बड़ी पर्व है सो कुछ दान दीजिये. तब राजाने कहा कि मांगो, तब विश्वामित्रने वेदीपर कीजिये ऐसे कहकर राजाको एक कन्याकुमारका बिबाह होता-था वहां लेगये और कहा 'इसी वेदीमें सब खजाना और सब पृथ्वीका राज्य दो' ऐसे सुन, राजाने संकल्प करके खज़ाना राज्य आदि सब दान दिया, फिर घर आये पीछे प्रातःकालमें वह ब्राह्मण राजाके यहां आकर बोला कि अब मेरे राज्यमेंसे निकलो. ऐसे सुन, राजा अपनी स्त्री और रोहिताश्वनाम पुत्रको लेके चलने लगे. तब ब्राह्मणने कहा कि मेरी सांगता बाकी है सो दीजिये, तब राजाने कहा उपाय करके सात दिनमें दे देंगे, ऐसे कह, राजा काशी पहुँचे वहां अपनी स्त्रीको ब्राह्मणके हाथ बेच डाला बिकी हुई माताको देख लड़का रोने लगा तब रानीने ब्राह्मणसे कहा कि जो तुम अपना काम अच्छीतरेसे कराया चाहो तो इस लड़केको भी लेलो तब उसने लड़केकोभी ले लिया. इन दोनोंका जो मोल मिला सो राजाने विश्वामित्रके हवाले किया तौभी पूरी सांगता न भई तब खुद राजाने अपनेकोभी वेच लिया और काशीजीके स्मशानके मालिक चाण्डालके यहां मर्घटाके कर लेनेमें नोकरी करली 'जो कोई मुर्दा फूंकने जावे उससे दंडका पैसा लेलेना' यही काम रात्रिदिन स्मशानमें करते रहे. यहां वह रानी और राजकुमार ब्राह्मणके घरमें रहकर घरका काम किया करें. एकदिन राजपुत्र फूल लेने वनमें गया सो मारे धूपके श्रमित हो लकड़ियोंपर बैठ, विश्राम करने लगा. इतनेमें विश्वामित्रजीने छलसे सर्पबन उस लडकेको काट खाया जिससे कुछ देरमें

कान मूंदि कर रंद गहि जीहा * एक कहहिं यह बात अलीहा॥
सुकृत जाइ अस कहत तुम्हारे * भरत रामकहँ प्राणपियारे ॥
दो०चन्द्र श्रवै बरु अनलकण, सुधा होइ बिषतूल॥

लडका मरगया. पीछे और ब्राह्मणोंके लडकोंने रानीसे कहा कि तुम्हारे पुत्रको सर्पने काटा सो मरगया, ऐसे सुन, महादुखित हो, हाथ जोड रानीनें उस ब्राह्मणसे कहा कि–महाराज! लडकेको मट्टी दे आऊं? ब्राह्मणने गुस्सा करके कहा, नहीं, अभी हमारे घरमें काम हैं. ऐसे सुन चुप रही पीछे जब अर्धरात्र भई और वह उस ब्राह्मणके पाँव मलने लगी, तब उसने कहा कि अब जा पुत्रकी मट्टी देके, जल्दी आ. तब रानी पुत्रके पास आय, छातीमें लगाय बडा बिलाप कर रोतीहुई पुत्रको मिट्टी देनेको लेचली तब तो काशीवाले लोग बोलने लगे कि यह कोई डाइन है. ऐसे कोई सूरतसे मरघटमें पहुची तो राजा दौडके, आया और बोला कि दंड दे. रानीने कहा कि मेरे पास कुछ नहीं है राजाने कहा–बिना दंड दिये फूकने नहीं पावोगी. तब रानी बडा विलापकर हरिश्चंद्रका नाम ले रोने लगी. तब राजाने पहचाना कि हाय! ये मेरेही स्त्री पुत्र हैं ऐसे कह आपभी रोने लगा और दोनों पुत्रके साथ जलनेको तयार भये, इतनेमें विष्णुआदि सब देवता आय दर्शन दे राजाका सब दुःख दूर कर बोले कि–हे महात्मा हरिश्चंद्र! तुम अक्षय स्वर्गलोकमें वास करो. राजाने कहा यह हमारा मालिक चाण्डालभी जाय. देवतोंने कहा " तथास्तु " (ऐसाही हो,) ऐसे सब स्वर्गको गये. पीछे हरिश्चन्द्रके बेटा रोहिताश्वको अयोध्याकी राजगादी दे, देवता अपने अपने स्थानको गये. देखिये इतना कष्ट हरिश्चन्द्रने सहा परंतु सत्य न छोंडा.

१ दांत. २ असत्य. ३ जहरकी बरोबर.

स्वप्नेहुँ कबहुं न करहिं कछु, भरत रामप्रतिकूल ४८

एक विधातहिं दूषण देहीं * सुधा दिखाइ दीन्ह विष जेहीं॥
खरभर नगर शोच सबकाहू * दुसहदाह उर मिटा उछाहू॥
विप्र बधू कुलमानि जठेरी * जे प्रिय परम कैकयीकेरी॥
लगीं देन शिख शील सराही * बचन बाणसम लागहिं ताही॥
भरत न प्रिय मोहिं रामसमाना * सदा कहहु यह सब जग जाना॥
करहु रामपर सहजसनेहू * केहि अपराध आजु बन देहू॥
कबहुँ न कीन्हि सवतिअवरेशू * प्रीतिप्रतीति जान सब देशू॥
कौशल्या अब कहा बिगारा * तुम जेहिलागि वज्र पुर पारा॥

दो०सीयकिपियसँगपरिहारिहि, लषणकिरहिहहिंधाम
भरत कि भोगब राजपुर, नृपकिजियहिं विनुराम४९

अस विचारि जिय छाँड़हु कोहू * शोककलंककोटि जनि होहू॥
भरताहें अवशि देहु युवराजू * कानन कौन रामकर काजू॥
नाहिन राम राजकर भूखे * धर्मधुरीण विषयरस रूखे॥
गुरुगृह बसहिं राम तजि गेहू * नृपसन अस बर दूसर लेहू॥
रामसरिस सुत काननयोगू * कहा कहहिं सुनि तुमकहँ लोगू॥
जो न मानिहौ कहे हमारे * नहिं लागिहि कछु हाथ तुम्हारे॥
जो परिहास कीन कछु होई * तौ कहि प्रगट जनावहु सोई॥
उठहु बेगि सोइ करहु उपाई * जेहि विधि शोक कलंक नशाई॥

छंद॥जेहिभांतिशोककलंकजायउपायकरिकुलपालहू
हठि फेरु रामहिं जात बन जनि बात दूसरि चालहू॥
जिमिभानुविनुदिनप्राणविनुतनुचंद्रविनुजिमियामिनी

१ घरमें २ कपट. ३ रात्रि.

तिमिअवधतुलसीदासप्रभुबिनुसमुझियेमनभामिनी
सो०सखिनसिखावनदीन्ह,सुनतमधुरपरिणामहित
तेहिं कछु कान न कीन्ह, कुटिलप्रबोधी कूबरी २
उतर न देइ दुसह रिस रूखी *मृगिगहिं चितव जनु बाघिनिभूखी
ब्याधि[1]असाधिजानितिन त्यागी* चली कहति मति[2] मन्द अभागी
राज करत इहिं दैव बिगोई * कीन्हेसि अस जस करै न कोई ॥
यहि बिधि बिलपहिं पुरनरनारी* देहिं कुचालिहिं कोटिकगारी ॥
जरहि विषमज्वर लेहि उसासा * कवन रामबिनु जीवन आसा॥
बिकल वियोग प्रजा अकुलानी* जिमि जलचरगण सूखत पानी
अतिबिषादवश लोग लुगाई * गये मातुपहँ राम गुसाँई ॥
मुखप्रसन्न चित चौगुण चाऊ * यहै शोच जनि राखहिं राऊ ॥
दो०नव गँयन्द[3] रघुबंशमणि, राज अँलान[4]समान
छूटिजान बनगमन सुनि,उर आनँद अधिकान ५०
रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा* मुदित मातुपद नायउ माथा ॥
दीन्ह अशीश लाइ उर लीन्हे * भूषण बसन निछावरि कीन्हे ॥
बार बार मुख चूंबति माता * नयननेहजल पुलकित गाता ॥
गोद राखि पुनि हृदय लगाये * श्रवतप्रेमरस पयद[5] सुहाये ॥
प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई* रंक धनदपदवी जनु पाई ॥
सादर सुन्दर वदन निहारी * बोली मधुर बचन महतारी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी * कबहिं लग्न मुदमंगलकारी ॥
सुकृतशील सुखसींव सुहाई * जन्मलाभल हि अवध अघाई॥
दो०जेहिचाहतनरनारिसब, अतिआरतयहिभांति

१ रोग. २ बुद्धि. ३ हाथी. ४हाथीके पांवकी जंजीरकी सदृश. ५ स्तन.

जिमिचातकि चातक तृषित, वृष्टिशरद ऋतु स्वाति

तात जाउँ बलि बेगि नहाहू * जो मन भाव मधुर कछु खाहू ॥
पितुसमीप तब जावहु भैया * प्रेमविवश सादर कहि मैया ॥
मातुबचन सुनि अतिअनुकूला * जनु सनेह-सुरतरुके¹ फूला ॥
सुख-मकरन्द-भरे श्रीमूला * निरखि राममन भँवर न भूला ॥
धर्मधुरीण धर्मगति जानी * कहेउ मातुसन अतिमृदुबानी ॥
पिता दीन्ह मोहिं काननराजू * जहँ सबभांति मोर बड़ काजू ॥
आयसु² देहु मुदितमन माता * जेहिं मुद मंगल काननजाता ॥
जनि सनेहवश डरपसि भोरे * आनँद मातु अनुग्रह तोरे ॥

दो० वर्षचारिदशबिपिनबसि, करिपितुबचनप्रमान
आय पाँय पुनि देखिहौं, मन जनि करसि मलान५२

बचन विनीत मधुर रघुबरके * शरसम लगे मातुउर करके ॥
सहमि सूखि सुनि शीतल बानी * जिमि जवासपर पावस पानी ॥
कहि न जाय कछु हृदयविषादू * जनु सहमेउ करि³ केहरिनादू⁴ ॥
नयन सलिल तनु थरहर काँपी * माँजा⁵ मनहुँ मीनकहँ व्यापी ॥
धरि धीरज सुतबदन निहारी * गद्गदबचन कहति महतारी ॥
तात पिताहिं तुम प्राणपियारे * देखि मुदित नित चरित तुम्हारे ॥
राजदेनकहँ शुभ दिन साधा * कहेउ जान बन केहि अपराधा ॥
तात सुनावहु मोहिं निदानू * को दिनकरकुल भयउ कृशानू ॥

दो० निरखि रामरुख सचिवसुत, कारण कहेउ बुझाइ
सुनि प्रसंग रहि मूकजिमि, दशा बर्णि नहिं जाइ॥

राखि नसकहिं नकहिसकजाहू * दुहूं भांति उर दारुण दाहू ॥

१ प्रेमरूप कल्पवृक्षके. २ आज्ञा. ३ हाथी. ४ सिंहकी गर्जनासे. ५ फेन.

लिखत सुधाकर लिखि गा राहू * विधिगति वाम सदा सबकाहू ॥
धर्म-सनेह-उभय--मति घेरी * भइ गति साँप छछूंदरिकेरी ॥
राखौं सुतहिं होइ अनुरोधू * धर्म जाइ अरु बन्धुविरोधू ॥
कहौं जान बन तौ बड़ि हानी* संकटशोचविकल भइ रानी ॥
बहुरि समुझि तियधर्म सयानी* राम भरत दोउ सुतसम जानी ॥
सरलस्वभाव राम-महतारी * बोली वचन धीर धरि भारी ॥
तात जाउ बलि कीन्हेउ नीका * पितुआयसु सब धर्मक टीका ॥

दो०राज देन कह दीन्ह बन, मोहिं न शोच लवलेश
तुमबिन भरतहिं भूपतिहिं, प्रजहिं प्रचण्ड कलेश॥

जो केवल पितुआयसु ताता * तौ जनि जाहु जाइ बलि माता॥
जो पितु मातु कहैं बन जाना * तौ कानन शतअवधसमाना ॥
पितु बनदेव मातु बनदेवी * खग मृग चरणसरोरुहसेवी ॥
अन्तहुँ उचित नृपहिं बनबासू * वय विलोकि हिय होत हिरासू॥
बड़भागी बन अवध अभागी * जो रघुवंशतिलक तुम त्यागी ॥
जो सुत कहौं संग मोहिं लेहू * तुम्हरे हृदय होइ संदेहू ॥
पुत्र परमप्रिय तुम सबहीके * प्राण प्राणके जीवन जीके ॥
ते तुम कहहु मातु बन जाऊँ * मैं सुनि वचन बैठि पछिताऊं ॥

दो०यह बिचारि नहिं करउँ हठ, झूंठ सनेह बढाइ ॥
मानि मातुके नात बलि, सुरति बिसरि जनि जाइ ५५

देव पितर सब तुमहिं गोसाँई * राखहिं पलकनयनकी नाई ॥
अवधि अम्बु प्रियपरिजनमीना* तुम करुणाकर धर्मधुरीना ॥
अस विचारि सोइ करहु उपाई* सबहिं जियत जेहिं भेंटहु आई

१ चंद्रमा. २ टेढ़ी. ३ पिताकी आज्ञा. ४ किंचित. ५ पदकमलसेवक

जाहु सुखेन बनहिं बलि जाऊँ * करि अनाथ जन परिजन गाऊँ
सबकर आजु सुकृतफल बीता * भयो कराल काल विपरीता ॥
बहुविधि विलपि चरणलपटानी * परमअभागिनि आपुहिं जानी ॥
दारुण दुसह दाह उर व्यापा * बर्णि न जाय विलापकलापा ॥
राम उठाय मातु उर लावा * कहि मृदु बचन बहुत समुझावा ॥

दो०समाचार तेहि समय सुनि, सीयउठीअकुलाय
जाइ सासुपदकमलयुग, वन्दि बैठि शिर नाय ॥५६

दीन्ह अशीश सासु मृदु बानी * अतिसुकुमारि देखि अकुलानी ॥
बैठि नामितमुख शोचति सीता * रूपराशि पति-प्रेम-पुनीता ॥
चलन चहत बन जीवननाथा * कवन सुकृतसन होइहि साथा ॥
की तनु प्राण कि केवल प्राना * विधिकरतब कछु जात न जाना
चारुचरणनख लेखति धरणी * नूपुर मुखर मधुर कवि बरणी ॥
मनहुँ प्रेमवश बिनती करहीं * हमहिं सीयपद जनि परिहरहीं
मंजु बिलोचन मोचति बारी * बोली देखि राममहतारी ॥
तात सुनहु सिय अतिसुकुमारी * सासु ससुर परिजनहिं पियारी

दो०पिता जनक भूपालमणि, ससुर भानुकुलभानु
पति रविकुलकैरवविपिन, विधु गुणरूपनिधानु ५७

मैं पुनि पुत्रबधू प्रिय पाई * रूपराशि गुण-शील-सुहाई ॥
नयनपुतरि इव प्रीति बढ़ाई * राखहुँ प्राण जानकिहिं लाई ॥
कलपबेलि जिमि बहुबिधिलाली * सींचि सनेहसलिल प्रतिपाली ॥
फूलत फलत भयो बिधि बामा * जानि न जाइ काह परिणामा ॥

१ उलटा. २ रुदनसमूह. ३ शब्दायमान. ४ मुन्दर. ५ परिवारको.

पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा * सिय न दीन पगु अवनि कठोरा
जिवनमूरि जिमि जुगवति रहेऊँ * दीपबाति नाहिं टारन कहेऊँ ॥
सो सिय चहति चलन बन साथा * आयसु कहा होइ रघुनाथा ॥
चन्द्रकिरणरसरसिक चकोरी * रबिरुख नयन सकै किमिजोरी

दो०करि[2]केहरि[3]निशिचरचरहिं, दुष्टजन्तुबनभूरि ॥
विषबाटिका कि सोह सुत, सुभग सजीवनमूरि ॥

बनहित कोल किरात किशोरी * रची बिरंचि विषयरसभोरी ॥
पाहनकृमि जिमि कठिनस्वभाऊ * तिनहिं कलेश न कानन काऊ ॥
कै तापसतिय काननयोगू * जिन तपहेतु तजा सब भोगू ॥
सियबन बसिहि तात केहिभांती * चित्रलिखित कपि देखि डराती ॥
सुरसरि सुभग बनज बनचारी * डाबर-योग कि हंस--कुमारी ॥
अस बिचारि जस आयसु होई * मैं शिख देउँ जानकिहिं सोई ॥
जो सिय भवन रहै कह अम्बा * मोकहँ होइ प्राण अवलम्बा ॥
सुनि रघुबीर मातुप्रिय बानी * शीलसनेहसुधा जनु सानी ॥

दो०कहि प्रियबचन विवेकमय, कीन्ह मातुपरितोष
लगे प्रबोधन[4] जानकिहिं, प्रगट बिपिनगुणदोष ५९

मातुसमीप कहत सकुचाहीं * बोले राम समुझि मनमाहीं ॥
राजकुमारि शिखावन सुनहू * आनभांति जिय जनि कछु धरहू ॥
आपन मोर नीक[5] जो चहहू * वचन हमार मानि घर रहहू ॥
आयसु मोर सासु-सेवकाई * सबबिधि भामिनि भवन भलाई ॥
यहिते अधिक धर्म नहिं दूजा * सादर सासु- ससुर--पद--पूजा ॥
जबजब मातु करिहिं सुधि मोरी * होइहि प्रेमबिकल मति भोरी ॥

१ पृथ्वीपर. २ हाथी. ३ सिंह. ४ समझाने. ५ अच्छा (हित,).

तब तब तुम कहि कथा पुरानी * सुन्दरि समुझायहु मृदु बानी ॥
कहौं स्वभाव शपथ शत मोहीं * सुमुखि मातुहित राखौं तोहीं ॥
दो०गुरुश्रुतिसम्मतधर्मफल,पाइयबिनहिंकलेश ॥
हठवश सब संकट सहे, गालव नहुष*नरेश ६०॥

अथ क्षेपक ॥

दो०गालव कौशिककेर शिषि, कह्यो दक्षिणा लेहु॥
सेवाते संतुष्ट हम, हमैं तुष्ट नहिं येहु ॥ १० ॥ * *
श्यामकर्ण हय[२] आठ शत, हठ लखि बोले लाउ ॥
सुनि मुनि गयउ ययातिनृप, निकटबिचारिनभाउ ११
पूँछि प्रयोजन तिन दई, कन्या सो लै बिप्र ॥ * *
नृप हरश्वते कह्यो यह, लेहु देहु हय क्षिप्र[३] ॥ १२ ॥
एक सुवन[४] जन्माइ तिन, दीन्हे[५] दुइशत बाज॥ *
तिमि काशीश उशीर्णपति, अर्प्यो अर्भककाज[६]॥ १३॥
दुइशत मिले न तेहुँपर, तब मुनि मानि गलानि ॥
रोये विश्वामित्रढिग, अस है हठ दुखदानि ॥ १४ ॥

॥ इति क्षेपक ॥

मैं पुनि करि प्रमाण पितुबानी * बेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी ॥
दिवस जात नहिं लागिहिबारा * सुन्दरि शिखवन सुनहु हमारा ॥
जो हठ करहु प्रेमवश बामा * तौ तुम दुख पाउब परिणामा ॥
कानन कठिन भयंकर भारी * घोर घाम हिम बारि बयारी ॥

*नहुषराजाकी कथा अयोध्याकाण्डमें २१९ वें दोहपर लिये हुये इतिहासमें देखो.

१ बिश्वामित्रके. २ घोड़े. ३ जल्दी. ४ पुत्र. ५ दियो. ६ पुत्रके वास्ते.

कुश कंटक मग कंकर नाना * चलब पयादेहि बिनु पदत्राना ॥
चरणकमल मृदु मंजु तुम्हारे * मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कन्दर खोह नदी नद नारे * अगम अगाध न जाहिं निहारे॥
भालु बाघ वृक केहरि नागा * करहिं नाद सुनि धीरज भागा ॥

दो० भूमिशयन बल्कलवसन, अशन कन्द फलमूल
ते कि सदा सब दिन मिलहिं, समयसमय अनुकूल

नर--अहार रजनीचर करहीं * कपटवेष बन कोटिन धरहीं ॥
लागै अति पहारकै पानी *बिपिनबिपति नहिं जात बखानी
व्याल कराल विहँग बन घोरा * निशिचरनिकर नारिनरचोरा ॥
डरपहिं धीर गहनसुधि आये * मृगलोचनि तुम भीरु सुहाये ॥
हंसगमनि तुम नहिं बनयोगू * सुनि अपयश देहहिं मोहिं लोगू
मानससलिलसुधाप्रतिपाली * जियै कि लवणपयोधि मराली॥
नवरसालबनबिहरणशीला * सोह कि कोकिल बिपिन करीला
रहहु भवन अस हृदय बिचारी * चन्द्रबदनि दुख कानन भारी ॥

दो०सहजसुहृदगुरुस्वामिशिख, जोनकरैहितमानि
सो पछिताइ अघाइ उर, अवशि होइ हितहानि६२

सुनि मृदु बचन मनोहर पियके * लोचननलिन भरे जल सियके ॥
शीतल शिख दाहक भइ कैसे * चकइहिं शरदचाँदनी जैसे ॥
उतर न आव बिकल बैदेही * तजन चहत मोहिं परमसनेही ॥
बरबस रोकि बिलोचन बारी * धरि धीरज उर अवनिकुमारी॥
लागि सासुपद कह कर जोरी * क्षमब मातु बड़ अबिनय मोरी॥
दीन प्राणपति मोहिं शिख सोई * जेहिबिधि मोर परमहित होई ॥

१ कांटा. २ जोड़ा. ३ पर्वत. ४ रीछ. ५ सर्प. ६ भोजन. ७ पक्षी.

मैं पुनि समुझि दीख मनमाहीं * पियबियोगसम दुख जग नाहीं ॥
यहिविधि सिय सासुहिं समुझाई * कहत पतिहिं बरबिनय सुनाई॥

दो०प्राणनाथ करुणायतन, सुन्दर सुखद सुजान॥
तुमबिनु रघुकुलकुमुदविधु[1], सुरपुर नरकसमान६३

मातु पिता भगिनी प्रिय भाई * प्रिय परिवार सुहृदसमुदाई ॥
सासु ससुर गुरु सुजन सुहाई * सुठि सुन्दर सुशील सुखदाई ॥
जहँलगि नाथ नेह अरु नाते * प्रियबिनु तियहिं तरणिते[2] ताते॥
तनु धन धाम धरणि पुरराजू * पतिबिहीन सब शोकसमाजू ॥
भोग रोगसम भूषण भारू * यमयातना--सरिस संसारू ॥
प्राणनाथ तुमबिनु जगमाहीं * मोकहँ सुखद कतहुँ कोउ नाहीं॥
जियबिनु देह नदी बिनु बारी[3] * तैसहि नाथ पुरुषबिन नारी ॥
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे * शरदबिमलबिधुबदन निहारे ॥

दो०खग मृग परिजन नगरबन,बल्कलबसनदुकूल
नाथसाथ सुरसदनसम[4], पर्णशाल सुखमूल ६४

बनदेवी बनदेव उदारा * करि हैं सासुससुरसम सारा ॥
कुश--किशलय साथरी सुहाई * प्रभुसँग मंजु मनोजतुराई ॥
कन्दमूलफल--अमिय अहारू * अवधसहससुखसरिस पहारू ॥
क्षण क्षण प्रभुपदकमल बिलोकी* रहिहौंमुदितदिवसजिमिकोकी॥
बनदुख नाथ कहेउ बहुतेरे * भय बिषाद परिताप घनेरे ॥
प्रभुवियोग-- लवलेशमाना * सबमिलि होहिं न कृपानिधाना
असजियजानिसुजानशिरोमणि * लेइय संग मोहिं छांड़िय जनि॥
बिनती बहुत करौं का स्वामी* करुणामय उरअन्तर्यामी * ॥

१ रघुवंशरूप अनारको चंद्र. २ सूर्यसे. ३ जल. ४ स्वर्गसदृश.

दो०राखियअवधजोअवधिलगि, रहतजानियेप्रान
दीनबन्धु सुन्दर सुखद, शीलसनेहनिधान ॥ ६५ ॥

मोहिं मग चलत न होइहि हारी * क्षण क्षण चरणसरोज निहारी॥
सबहिं भांति पियसेवा करिहौं * मारगजनित सकल श्रम हरिहौं
पाँव पखारि बैठि तरुछाहीं * करिहौं बायु मुदित मनमाहीं ॥
श्रमकणसहित श्याम तनु देखे * का दुखसमय प्राणपति पेखे ॥
सम महि तृणतरुपल्लवडासी * पाँय पलोटिहि सब निशि दासी
बार बार मृदु मूरति जोही * लागिहि ताप बयारि न मोही॥
को प्रभुसँग मोहिं चितवनहारा* सिंहबधुहिं जिमिशशकसियारा
मैं सुकुमारि नाथ बनयोगू * तुमहिं उचित तप मोकहँ भोगू

दो०ऐसहुबचनकठोरसुनि,जो न हृदय बिलगान ॥
तौ प्रभु बिषमबियोगदुख, सहिहैं पामर प्रान ॥६६॥

अस कहि सीय बिकल भइ भारी* बचनबियोग न सकी सँभारी ॥
देखि दशा रघुपति जिय जाना * हठि राखे राखिहि नहिं प्राना ॥
कहेउ कृपालु भानुकुलनाथा * परिहरि शोच चलहु बन साथा
नहिं बिषादकर अवसर आजू * बेगि करहु बनगमनसमाजू ॥
कहि प्रिय बचन प्रियहिं समुझाई* लगे मातुपद आशिष पाई ॥
बेगि प्रजा-दुख मेटब आई * जननी निठुर बिसारि जनि जाई
फिरिहिदशाबिधिबहुरि किमोरी* देखिहौं नयन मनोहर जोरी ॥
सुदिन सुघरी तात कब होई * जननी जियत बदनबिधु जोई॥

दो०बहुरिबच्छकहिलालकहि, रघुपतिरघुबरतात
कबहुँबुलायलगायउर, हर्षिनिरखि हौं गात ॥६७॥

१ रस्तासे उत्पन्न. २ मुखचन्द्र. ३ छातीसे. ४ आनन्दित होके.

लखि सनेहकातरि महतारी * बचन न आव बिकल भइ भारी
राम प्रबोध कीन्ह बिधि नाना * समय सनेह न जाइ बखाना ॥
तब जानकी सासुपग लागी * सुनिय मातु मैं परम अभागी॥
सेवासमय दैव बन दीन्हा * मोर मनोरथ सुफल न कीन्हा॥
तजब क्षोभ जनि छाँड़ब छोहू[१] * कर्म[२] कठिन कछु दोष न मोहू
सुनि सियबचन सासु अकुलानी * दशा कवनबिधि कहौं बखानी ॥
बारहिं बार लाइ उर लीन्ही * धरि धीरज शिख आशिष दीन्ही
अचल होउ अहिवात तुम्हारा * जबलगि गंग-यमुन-जलधारा ॥

दो०सीतहिं सासु अशीष शिख, दीन्ह अनेक प्रकार
चली नाइ पदपद्म शिर, अतिहित बारहिं बार ॥

समाचार जब लक्ष्मण पाये * व्याकुल बिलखि वदन उठि धाये
कम्प पुलक तनु नयन सनीरा * गहे चरण अतिप्रेम अधीरा ॥
कहि न सकत कछु चितवतठाढ़े * मीन[३] दीन जनु जलते काढ़े ॥
शोच हृदय बिधि का होनहारा * सब सुख सुकृत[४] सिरान हमारा
मोकहँ कहा कहब रघुनाथा * रखि हैं भवन कि लै हैं साथा
राम बिलोकि बन्धु कर जोरे * देह गेह सब तृणसम तोरे ॥
बोले बचन राम नव नागर * शील-सनेह-सरल-सुखसागर
तात प्रेमबश जनि कदराहू * समुझि हृदय परिणाम उछाहू॥

दो०मातुपितागुरुस्वामिशिख, शिरधरिकरहिंसुभाय
लहेउ लाभतिन जन्मके, नतरु जन्म जग जाय ६९

असजिय जानि सुनहु शिख भाई * करौ मातु-पितुपद सेवकाई॥
भवन भरत रिपुसूदन[५] नाहीं * राउ[६] वृद्ध मम दुख मनमाहीं ॥

---

१ मोह. २ कर्मकी गति. ३ मछली. ४ पुण्य. ५ शत्रुघ्न. ६ राजा दशरथ.

मैं बन जाउँ तुमहिं लै साथा * होइ सबहि बिधि अवध अनाथा
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारा * सबकहँ परै दुसह दुखभारा ॥
रहहु करहु सबकर परितोषू * नतरु तात होइहि बड़ दोषू ॥
जासु राज प्रियप्रजा दुखारी * सो नृप अवशि नरकअधिकारी॥
रहहु तात अस नीति बिचारी* सुनत लषण भये व्याकुल भारी
सियरे[१] बदन सूखि गे कैसे * परसत तुहिन तामरस जैसे ॥

दो०उतर न आवत प्रेमबश, गहे चरण अकुलाइ
नाथ दास मैं स्वामितुम, तजहु तो कहा बसाइ॥

दीन्ह मोहिं शिख नीकि गुसाँई * लागत अगम अपनि कदराई ॥
नर बर धीर धर्मधुरधारी * निगम नीतिके ते अधिकारी॥
मैं शिशु प्रभुसनेहप्रतिपाला * मन्दर मेरु कि लेइ मराला ॥
गुरु पितु मातु न जानों काहू * कहौं स्वभाव नाथ पतियाहू ॥
जहँलगि जगत सनेहसगाई * प्रीतिप्रतीति निगम निज गाई॥
मोर सबै एक तुम स्वामी * दीन–बन्धु उरअन्तर्यामी ॥
धर्म नीति उपदेशिय ताही *कीरति भूतिं सुगति प्रिय जाही
मन क्रम बचन चरणरति होई* कृपासिन्धु परिहरिय कि सोई॥

दो०करुणासिन्धु सुबन्धुके,सुनि मृदुबचन बिनीत
समुझाये उर लाइ प्रभु, जानि सनेहसभीत ७१

माँगहु बिदा मातुसन जाई * आवहु बेगि चलहु बन भाई॥
मुदित भये सुनि रघुबरबानी * भयउ लाभ बड़ मिटी गलानी॥
हर्षितहृदय मातुपहँ आये * मनहुँ अन्ध फिरि लोचन पाये
जाइ जननिपद नायउ माथा * मन रघुनन्दनजानकिसाथा ॥

१ रामके बचन सुनके पालासे लालकमलजैसे लक्ष्मणका मुख सूखगया.

पूँछेहु मातु मलिनमन देषी * लषण कही सब कथा विशषी ॥
गई सहमि सुनि बचन कठोरा * मृगी देखि जनु दव चहुँ ओरा ॥
लषण लखेउ भा अनरथ आजू * ये सनेहबश करब अकाजू ॥
माँगत बिदा समय सकुचाहीं * जानसंगबिधि कहहिं किनाहीं ॥

दो०समुझि सुमित्रा रामसिय, रूप सुशील सुभाव
नृपसनेह लखि धुनेउ शिर, पापिनि कीन्ह कुदाव७२

धीरज धरेउ कुअवसर जानी * सहजसुहृद बोली मृदु बानी ॥
तात तुम्हार मातु बैदेही * पिता राम सबभांति सनेही ॥
अवध तहाँ जहँ रामनिवासू * तहाँ दिवस जहँ भानुप्रकाशू ॥
जो पै राम सीय बन जाहीं * अवध तुम्हार काज कछु नाहीं॥
गुरु पितु मातु बन्धु सुर साँई * सेइय सकल प्राणकी नाईं ॥
राम प्राणप्रिय जीवन जीके * स्वारथरहित सखा सबहीके ॥
पूजनीय प्रिय परम जहाँते * मानहिं सकल रामके नाते ॥
अस जिय जानि संग बन जाहू * लेहु तात जगजीवनलाहू ॥

दो०भूरिभाग्यभाजन भयउ, मोहिं समेत बलिजाउँ
जो तुम्हरे मन छाँड़ि छल, कीन्ह रामपद ठाउँ ७३

पुत्रवती युवती जग सोई * रघुबरभक्त जासु सुत होई ॥
नतरु बाँझ भलि बादि बियानी * रामबिमुख सुतते बड़ि हानी ॥
तुम्हरेहि भाग राम बन जाहीं * दूसर हेतु तात कछु नाहीं ॥
सकलसुकृतकर फल सुत येहू * राम सीय पद सहज सनेहू ॥
राग रोष ईर्षा मद मोहू * जनि स्वप्नेहुँ इनके वश होहू ॥

१ बहुतसी भाग्यके पात्र. २ स्त्री. ३ सेवाके वास्ते. ४ पुण्यका. ५ क्रोध.

सकलप्रकार बिकार बिहाई * मन क्रम बचन करहु सेवकाई॥
तुमकहँ बन सबभांति सुपासू * सँग पितु मातु रामसिय जासू ॥
जेहि न राम बन लहहिं कलेशू * सुत सोइ करेहु मोर उपदेशू ॥

छन्द०उपदेशयहिजेहिताततुमतेरामसियसुखपावहीं ॥
पितुमातुप्रियपरिवारपुरसुखसुरतिबनबिसरावहीं
तुलसीसुतहिंशिखदेइआयसुदेइपुनिआशिषदई ॥
रति[1]होउअबिरल[2]अमलसियरघुबीरपदनितनितनई

सो०मातुचरण शिर नाइ, चले तुरत शंकितहृदय
बागुर[3] बिषम तुराइ, मनहुँ भागु मृग भागबश ॥३॥

गये लषण जहँ जानकिनाथा * भे मनमुदित आइ प्रिय साथा ॥
बन्दि रामसियचरण सुहाये * चले संग नृपमन्दिर आये ॥
कहहिं परस्पर पुरनरनारी * भलि बनाइ विधि बात बिगारी ॥
तनु कृश मन दुख बदन मलीना * विकल मनहुँ माखी मधुछीना ॥
कर मींजहिं शिरधुनिपछिताहीं * जनु बिनुपंख विहग[4] अकुलाहीं ॥
भइ बड़ि भीर भूपदरबारा * बर्णि न जाइ बिषाद अपारा ॥
सचिव उठाइ राउ बैठारे * कहि प्रिय बचन राम पगु धारे॥
सियसमेत दोउ तनय निहारी * व्याकुल भये भूमिपति[5] भारी ॥

दो०सीयसहितसुतसुभगदोउ, देखिदेखिअकुलाइ
बारहिं बार सनेहबश, राउ लिये उर लाइ ॥ ७४ ॥

सकै न बोलि बिकल नरनाहू * शोकबिकल उर दारुण दाहू ॥
नाइ शीशपद अतिअनुरागा * उठि रघुनाथ बिदा तब माँगा ॥

---

१ प्रीति. २ अचल. ३ मृग बाँधनेकी रस्सी. ४ पक्षी. ५ दशरथ.

पितु अशीश आयसु मोहिं दीजै * हर्षसमय विस्मय कत कीजै ॥
तात किये प्रिय प्रेमप्रमादू * यश जग जाइ होइ अपवादू ॥
सुनि सनेहबश उठि नरनाहू * बैठारे रघुपाति गहि बाहू ॥
सुनहु तात तुमकहँ मुनि कहहीं * राम चराचरनायक[1] अहहीं ॥
शुभ अरु अशुभकर्मअनुहारी * ईश देहफल हृदय बिचारी ॥
करै जो कर्म पाव फल सोई * निगम[2] नीति अस कह सबकोई

दो०और करै अपराध कोइ, और पाव फलभोग ॥
अतिबिचित्र भगवन्तगति, को जग जानैयोग ७५

राउर रामलषणहित लागी * बहुत उपाय कीन्ह छलत्यागी
लखे रामरुख रहत न जाने * धर्मधुरंधर बीर सयाने ॥
तब नृप सीय लाइ उर लीनी * अतिहित बहुत भांति शिखदीनी
कहि बनके दुख दुसह सुनाये * सासुससुरपितुसुख समुझाये ॥
सियमन रामचरणअनुरागा * घर न सुगम बन अगम न लागा
औरौ सबहिं सीय समुझाई * कहिकहिबिपिनबिपति[3] अधिकाई
सचिवनारि गुरुनारि सयानी * सहितसनेह कहहिं मृदु बानी॥
तुमकहँ तौ न दीन्ह बनबासू * करहु जो कहहिं ससुरगुरुसासू ॥

दो०शिषशीतलहितमधुरमृदु, सुनिसीतहिंनसुहानि
शरदचंद्रचांदनि उगत, जनु चकई अकुलानि ७६

सीय सकुचबश उतर न देई * सो सुनि तमकि उठी कैकेई ॥
मुनिपटभूषण भाजन आनी * आगे धरि बोली मृदु बानी ॥
नृपहिं प्राणप्रिय तुम रघुबीरा * शील सनेह न छांड़हिं भीरा ॥

---

१ स्थावरजंगमरूप जगत्के मालिक. २ वेद. ३ बनकी विपत्ति.

सुकृत सुयश परलोक नशाऊ *तुमहिं जान बन कहहिं न राऊ
अस बिचारि सोइ करौ जो भावा*राम जननिशिखसुनि सुखपावा ॥
भूपहिं बचन बाणसम लागे * करहिं न प्राण पयान अभागे ॥
शोकविकल मूर्छित नरनाहू * कहा करिय कछु सूझ न काहू॥
राम तुरत मुनिबेष बनाई * चले जनकजननी शिर नाई ॥

दो०सज बनसाजसमाज प्रभु, बनितावन्धुसमेत॥
वन्दि विप्रगुरु चरण प्रभु,चले करि सबहिं अचेत७७

निकसि बसिष्ठ द्वार भै ठाढ़े * देखे लोग बिरहदवदाढे * ॥
कहि प्रिय बचन सबहिं समुझाये* बिप्रवृन्द रघुबीर बुलाये * ॥
गुरुसन कहि बर शासन दीन्हे* आदर दान बिनय बहु कीन्हे ॥
याचक दान मान सन्तोषे * मीत पुनीत प्रेमपरितोषे * ॥
दासी दास बुलाइ बहोरी * गुरुहिं सौंपि बोले कर जोरी ॥
सबकर सार सँभार गुसाँई * करब जनकजननीकी नाँई ॥
बारहिं बार जोरि युग पाणी * कहत राम सबसन मृदुबाणी ॥
सोइ सबभांति मोर हितकारी * जेहिते रहैं भुआल सुखारी ॥

दो०मातुसकलमोरेबिरह, जेहिनहोहिंदुखदीन ॥
सोइउपायतुमकरबसब, पुरजनपरमप्रबीन ॥ ७८ ॥

यहि बिधि राम सबहिं समुझावा*गुरुपदपद्म हर्षि शिर नावा ॥
गणपति गौरि गिरीश मनाई * चले अशीश पाइ रघुराई ॥
रामचलत अति भयो बिषादू * सुनि न जाइ पुर आरतनादू ॥
कुशकुन लंक अवध अतिशोकू* हर्षबिषादबिवश सुरलोकू ॥

१ पिता दशरथ व माता केकेयीको. २ जानकी और लक्ष्मणसमेत.

गे मूर्छा तब भूपति जागे * बोलि सुमन्त कहन अस लागे॥
राम चले वन प्राण न जाहीं * केहि सुखलागि रहे तनुमाहीं ॥
यहिते कवन व्यथा बलवाना * जो सुख पाइ तजहिं तनु प्राना ॥
पुनि धरि धीर कहहिं नरनाहू * लै रथ संग सखा तुम जाहू ॥

दो०सुठिसुकुमारकुमारदोउ, जनकसुतासुकुमारि
रथचढ़ाइदिखराइवन, फिरहुगयेदिनचारि ॥ ७९ ॥

जो नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई * सत्यसिन्धु दृढ़व्रत रघुराई ॥
तौ तुम बिनय करहु कर जोरी * फेरिय प्रभु मिथिलेशाकिशोरी ॥
जब सिय कानन देखि डराई * कहेउ मोर शिख अवसर पाई ॥
सासु ससुर अस कहेउ सँदेशू * पुत्रि फिरिय बन बहुत कलेशू ॥
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी * रहेउ जहाँ रुचि होइ तुम्हारी ॥
यहि बिधि करेहु उपायकदंबा[१] * फिरइ तो होइ प्राणअवलंबा ॥
नाहिं तो मोर मरण परिणामा * कछु न बसाइ भये बिधि बामा ॥
अस कहि मूर्छि परेउ महि[२] राऊ * राम लषण सिय आनि दिखाऊ॥

दो०पाय रजायसु नाइ शिर, रथ अतिबेगि बनाइ ॥
गये जहाँ बाहर नगर, सीयसहित दोउ भाइ ॥८०॥

तब सुमन्त नृपबचन सुनाये * करि बिनती रथ राम चढ़ाये ॥
चढ़ि रथ सीयसहित दोउ भाई * चले हर्ष[३] अवधहिं शिर नाई ॥
चलत रामलखि अवधअनाथा * बिकल लोग लागे सब साथा ॥
कृपासिन्धु बहु बिधि समुझावहिं * फिरहिं प्रेमबश पुनिफिरिआवहिं
लागत अवध भयानक भारी * मानहुँ कालराति अँधियारी ॥

---

१ उपायसमूह. २ पृथ्वीपर. ३ आनन्दसे.

घोर जन्तु सब पुरनरनारी * डरपहिं एकहि एक निहारी ॥
घर मसान परिजन जनु भूता * सुत हित मीत मनहुँ यमदूता ॥
बागन बिटप[2] बेलि[3] कुम्हिलाहीं * सरित[4] सरोवर देखि न जाहीं ॥

दो०हय गज कोटिन केलिमृग, पुरपशु चातक मोर ॥
पिक[5] रथांग[6] शुक सारिका[7], सारस हंस चकोर८१

रामबियोगविकल सब ठाढ़े * जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े
नगर सकल बन गहबर भारी * खग मृग बिकल सकलनरनारी ॥
विधि केकई किरातिनि कीनी * जेहिं दवदुसहदशहुँ दिशिदीनी ॥
सहि न सके रघुबरबिरहागी * चले लोग सब ब्याकुल भागी ॥
सबहिं बिचार कीन्ह मनमाहीं * रामलषणसियबिनु सुख नाहीं ॥
जहाँ राम तहँ सकलसमाजू * बिनु रघुबीर अवध केहि काजू॥
चले साथ अस मंत्र दृढ़ाई * सुरदुर्लभ सुख सदन बिहाई ॥
राम-चरणपंकज प्रिय जिनहीं * विषयभोग बश करै कि तिनहीं

दो०बालक वृद्ध बिहाय गृह,लगे लोग सब साथ॥
तमसातीर निवास किय,प्रथम दिवस रघुनाथ८२

रघुपति प्रजा प्रेमबश देषी * सदयहृदय दुख भयउ बिशेषी ॥
करुणामय रघुनाथ गुसाँई * बेगि पाइये पीर पराई ॥
कहि सप्रेम मृदु बचन सुहाये * बहुबिधि राम लोग समुझाये ॥
किये धर्म-उपदेश घनेरे * लोग प्रेमबश फिरहिं न फेरे ॥
शीलसनेह छाँड़ि नहिं जाई * असमंजसबश भे रघुराई ॥
लोक शोकश्रमवश गे सोई * कछुक देवमाया मति मोई ॥

---

१ मित्र. २ वृक्ष. ३ लता. ४ नदी. ५कोकिला. ६ चक्रवाक. ७ मैना.

जबहिं यामयुग यामिनि बीती * राम सचिवसन कहेउ सप्रीती॥
खोज मारि रथ हाँकहु ताता * आन उपाय बनहिं नहिं बाता॥

दो०रामलषणसियर्यानचढ़ि, शंभुचरणशिरनाइ॥
सचिव चलायउ तुरत रथ, इत उत खोज दुराइ८३

जागे सकल लोग भये भोरू * गये रघुबीर भयो अति शोरू॥
रथकर खोज कतहुँ नहिं पावहिं * राम रामकहिचहुँदिशिधावहिं॥
मनहुँ बारनिधि बूड़ जहाजू * भयउ बिकल जनु बणिकसमाजू
एकहिं एक देहिं उपदेशू * तजेउ राम हम जानि कलेशू॥
निन्दहिं आपु सराहहिं मीना * धृग जीवन रघुवीरबिहीना॥
जो पै प्रियबियोग बिधि कीन्हा * तौ कस मरण न मांगे दीन्हा॥
यहबिधि करत प्रलापकलापा * आये अवध भरे परितापा॥
विषम वियोग न जाइ बखाना * अवधिआश राखहिं सब प्राना॥

दो०रामदरशहित नेम व्रत, लगे करन नर नारि॥
मनहुँ कोक कोकी कमल, दीनबिहीन तमारि८४॥

सीता–सचिव–सहित दोउ भाई* शृंगबेरपुर पहुँचे जाई॥
उतरे राम देवसरि देखी * कीन्ह दण्डवत हर्ष विशेषी॥
लषण सचिव सिय कीन्ह प्रणामा* सबहिं सहित सुख पायउ रामा॥
गंग सकल–मुद–मंगलमूला *सबसुखकरनि हरनि सबशूला॥
कहिकहि कोटिक कथाप्रसंगा * राम बिलोकत गंगतरंगा॥
सचिवहिं अनुजहिं प्रियहिं सुनाई* बिबुधनदीमहिमाअधिकाई॥
मज्जन कीन्ह पन्थश्रम गयऊ *शुचिजलपियतमुदित मन भयऊ॥

---

१ दो पहर, २ रात्रि. ३ दहिने बांए छिपाके. ४ रथमें. ५ रोदनसमूह.

सुमिरत जाहि मिटहिंभवभारू * तेहिश्रम यह लौकिकव्यवहारू

दो०शुद्ध सच्चिदानन्दमय, राम भानुकुलकेतु ॥
चरित करत नर अनुहरत, संसृति सागर सेतु ॥

यह सुधि गृह निषाद जब पाई * मुदित लिये प्रिय बंधु बुलाई ॥
लै फल मूल भेंट भरि भारा * मिलन चल्यो हिय हर्ष अपारा
करि दण्डवत भेट धरि आगे * प्रभुहिं बिलोकत अतिअनुरागे
सहज-सनेहबिबश रघुराई * पूँछेउ कुशल निकट बैठाई ॥
नाथ कुशल पदपंकज देखे * भयउँ भाग्यभाजन जन लेखे ॥
देव धरणि धन धाम तुम्हारा * मैं जन नीच सहित परिवारा ॥
कृपा करिय पुर धारिय पाऊ * थापिय जन सब लोग सिहाऊ ॥
कहेउ सत्य सब सखा सुजाना * मोहिं दीन्ह पितुआयसु आना ॥

दो०वर्ष चारिदश बास बन, मुनिव्रतवेषअहार ॥
ग्रामबास नहिं उचित सुनि,गुहहिं भयो दुखभार॥

राम लषण सिय रूप निहारी * कहहिं सप्रेम नगर नर नारी ॥
ते पितु मात कहहु सखि कैसे * जिन पठये बन बालक ऐसे ॥
एक कहहिं भूपति भल कीन्हा * लोचनलाहु हमहिंजिनदीन्हा
तब निषादपति उर अनुमाना * तरु शिंशपा मनोहर जाना ॥
लै रघुनाथहिं ठौर बतावा * कहेउ राम सब भांतिसुहावा ॥
पुरजन करि जुहारि गृह आये * रघुबर सन्ध्या करन सिधाये ॥
गुह सँवारि साथरी बनाई * कुश किशलयमृदुपरमसुहावा ॥
शुचि फल मूल मृदुलमधुजानी * दोना भरि भरि राखेसिआनी ॥

दो०सियसुमंतभ्रातासहित, कन्दमूलफलखाइ ॥

१ सूर्यवंशमें ध्वजारूप.२संसार.३भाग्यका पात्र.४पृथ्वी.५अशोक.

शयन कीन्हरघुबंशमणि,पायपलोटत भाइ ॥ ८७॥

उठे लषण प्रभु सोवत जानी * कहि सचिवहिंसोवनमृदुबानी॥
कछुक दूरि सजि बाणशरासन * जागन लगे बैठि बीरासन ॥
गुह बुलाइ पाहरू प्रतीती * ठांव ठांव राखे अति प्रीती ॥
आप लषणपहँ बैठेउ जाई * कटि भाथा[2] शर चाप[1] चढ़ाई ॥
सोवत प्रभुहिं निहारि निषादा * भयउ प्रेमबश हृदय बिषादा ॥
तन पुलकित लोचन जल बहई * बचन सप्रेम लषणसन कहई॥
भूपति भवन सुभाय सुहावा * सुरपति सदन[3] न पटुतरआवा॥
मणिमय रचित चारु चौबारे * जनु रतिपति[4] निजहाथसँवारे ॥

दो०शुचिसुबिचित्रसुभोगमय, सुमनसुगन्धसुबास
पलँग मंजुमणिदीप जहँ,सबबिधिसकलसुपास ॥

बिबिध बसन उपधान सुहाई * क्षीरफेन मृदुबिशद बनाई ॥
तहँ सियराम शयननिशिकरहीं * निजछबि रति मनोजमदहरहीं
ते सिय राम साथरी सोये * श्रमितबसन बिनजाहिंनजोये ॥
मातु पिता परिजन पुरबासी * सखा सुशील दासअरुदासी ॥
जुगवहिं जिनहिं प्राणकी नाँई * महि सोवत सो राम गुसाँई ॥
पिता जनक जगबिदितप्रभाऊ * ससुर सुरेशसखा[5] रघुराऊ ॥
रामचन्द्र पति सो बैदेही * महि[6] सोवतिबिधिबामनकेही ॥
सिय रघुबीर कि काननयोगू * कर्म प्रधान सत्य कह लोगू ॥

दो०केकयनंदिनिमंदमति,कठिनकुटिलपनकीन्ह॥
जेहिं रघुनंदनजानकिहिं, सुखअवसरदुखदीन्ह ॥

भइ दिनकरकुलबिटपकुठारी * कुमति कीन्ह सब बिश्वदुखारी॥

---

१ धन्वा. २ तरकस. ३ घर ४ कामदेव ५ इन्द्रके मित्र. ६ पृथ्वीपर.

भयेउ बिषाद निषादहिं भारी * राम-सीय-महिशयन निहारी ॥
बोले लषण मधुर मृदु बानी * ज्ञान-विराग-भक्तिरससानी ॥
कौन काहु दुख सुखकर दाता * निजकृत कर्म भोग सब भ्राता
योग बियोग भोग भल मन्दा * हित अनहित मध्यम भ्रमफंदा॥
जन्म मरण जहँलगि जगजालू * संपति बिपति कर्म अरु कालू॥
धरणि धाम धन पुर परिवारू * स्वर्ग नरक जहँलगि व्यवहारू॥
देखिय सुनिय गुनिय मनमाहीं * मोहमूल परमारथ नाहीं ॥

दो०सपने होइ भिखारि[1] नृप, रंक नाकपति होइ ॥
जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जिय होइ ९०

अस बिचारि नाहिं कीजिय रोषू * बादि काहु नाहिं दीजिय दोषू ॥
मोहनिशा सब सोवनिहारा * देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा ॥
यहि जगयामिनि[2] जागहिं योगी * परमारथ परपंचबियोगी ॥
जानिय तबहिं जीव जग जागा * जब सबविषयबिलासबिरागा ॥
होइ बिबेक[3] मोहभ्रम भागा * तब रघुबीर-चरण-अनुरागा॥
सखा परम परमारथ एहू * मन क्रम बचन राम-पद नेहू ॥
राम ब्रह्म परमारथ-रूपा * अबिगत अलख अनादि अनूपा॥
सकलबिकाररहित गतभेदा * कहि नित नेति निरूपहिं[4] बेदा ॥

दो०भक्ति भूमि भूसुर[5] सुरभि, सुरहितलागि कृपाल
करत चरित धरि मनुजतनु, सुनत मिटैजगजाल९१

सखा समुझि अस परिहरि मोहू * सिय-रघुबीर-चरण रत होहू ॥
कहत रामगुण भा भिनुसारा * जागे जग-मंगल-दातारा ॥
सकल शौच करि राम अन्हाये * शुचि सुजान बटक्षीर मँगाये ॥

---

१ दरिद्री. २ जगत्‌रूपीरात्रिमें. ३ ज्ञान. ४ कहते हैं. ५ ब्राह्मण.

अनुजसहित शिर जटा बनाये * देखि सुमन्त नयनजल छाये ॥
हृदयदाह अति बदन मलीना * कह करजोरि बचन अतिदीना॥
नाथ कहेउ अस कोशलनाथा * लै रथ जाहु रामके साथा ॥
बन दिखाइ सुरसरि अन्हवाई * आनेहु बेगि फेरि दोउ भाई ॥
लषण राम सिय आनेहुँ फेरी * संशय सकल सकोच निबेरी॥

दो०नृपअसकहेउगुसाँइजस,कहियकरौबलिसोइ
करि विनती पाँयन परेउ, दीन बाल जिमि रोइ ९२

तात कृपा करि कीजिय सोई * जाते अवध अनाथ न होई ॥
मंत्रिहिं राम उठाइ प्रबोधा * तात धर्ममारग तुम शोधा ॥
शिबि दधीचि हरिचन्द्र नरेशा * सहे धर्महित कोटि कलेशा ॥
रन्तिदेव बलि भूप सुजाना * धर्म धरेउ सहि संकट नाना ॥
धर्म न दूसर सत्यसमाना * आगम[१] निगम[२] पुराण बखाना॥
मैं सोइ धर्म्म सुलभ करि पावा * तजे तिहूँपुर अपयश छावा ॥
संभावितकहँ अपयशलाहू * मरणकोटिसम दारुण दाहू ॥
तुमसन तात बहुत का कहऊँ * दिये उतर फिरि पातक लहऊँ ॥

सो०पितुपदगहिकहिकोटिबिधि,विनयकरबकरजोरि
चिन्ता कौनिहुँ बातकी, तात करियजनि मोरि ९३

तुम पुनि पितुसमान हित मोरे * बिनती करौं तात कर जोरे ॥
सबबिधि सोइ कर्तव्य तुम्हारे * दुख न पाव नृप शोच हमारे ॥
सुनि रघुनाथ--सचिव--संबादू * भयउ सपरिजन[३] बिकल निषादू॥
पुनिकछु लषण कहेउकटुबानी[४] * प्रभु बरजेउ बड़ अनुचित जानी॥
सकुचि राम निजशपथ[५] दिवाई * लषणसंदेश कहब जनि आई ॥

१ शास्त्र. २ वेद. ३ नौकरोंसमेत. ४ कड़ुई बात. ५ अपनी सौगन्ध.

कह सुमन्त पुनि भूपसँदेसु * सहि नसकहिसियबिपिन[1]कलेसु ॥
जेहिबिधिअवध आवफिरिसीया*सोइ रघुनाथ तुमहिं करणीया ॥
नतरु निपट अवलंबाविहीना * मैंनजियबजिमि जल बिनु मीना

दो० मैके ससुरे सकल सुख, जबहिं जहाँ मन मान॥
तब तहँ रहब सुखेन सिय, जबलगिबिपतिबिहान

बिनती कीन्ह भूप जेहि भाँती * आरति प्रीति न सो कहि जाती
पितुसँदेश सुनि कृपानिधाना * सियहिंदीन्हशिषकोटिबिधाना॥
सासु ससुर गुरु प्रिय परिवारू * फिरहु तो सबकर मिटै खँभारू[2]
सुनि पतिबचन कहति बैदेही * सुनहु प्राणपति परमसनेही ॥
प्रभु करुणामय परमबिबेकी *तनु तजि छाँह रहत किमि छेकी
प्रभा जाइ कहँ भानु बिहाई * कहँ चँन्द्रिका[3] चन्द्र तजि जाई॥
पतिहिं प्रेममय बिनय सुनाई * कहत सचिवसनगिरासुहाई ॥
तुम पितुससुरसरिस हितकारी* उतर देउँ फिरिअनुचितभारी॥

दो० आरतिबशसन्मुखभइउँ, बिलगनमानबतात ॥
आर्य्यसुतपदकमलबिनु[4],बादिजहाँलगनात ॥ ९५॥

पितुवैभव बिलास मैं दीठा * नृपमणिमुकुटमिलतपदपीठा ॥
सुखनिधान अस पितुगृह मोरे* पतिबिहीन मन भाव न भोरे॥
ससुर चक्कवै कोशल राऊ * भुवन चारि दश प्रगट प्रभाऊ॥
आगे होइ जेहि सुरपति लेई * अर्ध सिंहासन आसन देई ॥
ससुर एतादृश अवधनिवासू* प्रियपरिवार मातसम सासू ॥
बिनु रघुपतिपदपद्म-परागा * मोहिं कोउस्वप्नेहुँसुखदनलागा॥
अगम पन्थ वन भूमि पहारा * करि केहरि सर सरितअपारा ॥

---

१ बनके कष्ट. २ दुःख. ३ उजेरी. ४ रामचन्द्रके चरणकमलके बिना.

कोल किरात कुरंग विहंगा * मोहिं सब सुखद प्राणपतिसंगा॥

दो०सासुससुरसनमोरिहुति, बिनयकरबपरिपाँय
मोर शोच जनि करिय कछु,मैं बन सुखी सुभाय९६

प्राणनाथ प्रिय देवर साथा * बीरधुरीणँ धरे धनु भाथा ॥
नहिं मगु श्रम तुम सुखमनमोरे * मोहिंलगि शोचकरियजनि भोरे
सुनि सुमन्त सियशीतलबानी * भये विकल जनु फणिमणिहानी
नयन न सूझ सुनै नहिं काना *कहि न सकै कछु अति अकुलाना
राम प्रबोध कीन्ह बहुभाँती * तदपि होइ नहिं शीतल छाती ॥
यत्न अनेक साथ हित कीन्हा * उचित उतर रघुनन्दन दीन्हा ॥
मेटि जाय नहिं रामरजाई * कठिन कर्मगति कछु न बसाई ॥
रामलषणसियपद शिर नाई * फिरेउ बणिक जिमि मूल गँवाई॥

दो०रथ हाँके हयरामतन, हेरि हेरिहिय नाँहि ॥
देखिनिषाद विषादवश,शिरधुनिधुनिपछिताहिं९७

जासु वियोग बिकल पशु ऐस *प्रजा मात पित जीवहिं कैसे ॥
बरबस राम सुमंत पठाये * सुरसरितीरआपु चलि आये ॥
माँगी नाव न केवट आना * कहै तुम्हार मर्म मै जाना ॥
चरणकमलरजकहँ सब कहई * मानुषकरणि--मुरीकछुअहई ॥
छुअत शिला भइ नारि सुहाई * पाहनते न काठ--कठिनाई ॥
तरणिउ मुनिघरनी होइ जाई * बाट परे मोरि नाव उड़ाई ॥
यह प्रतिपालै सब परिवारू * नहिं जानौं कछु और कबारू ॥
जो प्रभु अवशि पार गा चहहू * तौ पदपद्म पखारन कहहू ॥
"तुम केवट भवसागरकेरे * नदी नारके हम बहुतेरे ॥

१ सूकर. २ मृग. ३ वीरोंमें श्रेष्ठ. ४ सर्प. ५ घोंडे.

हमरी तुमरी कसि उतराई * नौपितनापितकी बनवाई" ॥

छंद०पदपद्म[2] धोइ चढाइ नाव न नाथ उतराई चहौं मोहिं राम राउरिआनि दशरथशपथसबसाँचीकहौं बरु तीर मारहिं लषण पै जबलगि न पाँव पखारिहौं तबलगि न तुलसीदासनाथ कृपालु पार उतारिहौं

सो०सुनि केवटके बैन, प्रेमलपेटे अटपटे ॥
बिहँसे करुणाऐन, चितै जानकीलषनतन॥ ४ ॥

कृपासिन्धु बोले मुसकाइ * सोई करहु जेहि नाव न जाई ॥
बेगि आनि जल पाँव पखारू * होत विलम्ब उतारहु पारू ॥
जासु नाम सुमिरत एकबारा * उतरहिं नर भवसिन्धु अपारा ॥
सो कृपालु केवटहिं निहोरा * जे किय जग तिहुँ पगते थोरा ॥
पदनख निरखि देवसरि हर्षी * सुनि प्रभुवचन मोहमति कर्षी॥
केवट रामरजायसु पावा * पानिकठवता भरि लै आवा ॥
अतिआनन्द उमँगि अनुरागा * चरणसरोज पखारन लागा ॥
बर्षि सुमन सुर सकल सिहांहीं* यहि सम पुण्यज कोउ नाहीं ॥

दो०पद पखारि जलपान करि, आपु सहित परिवार
पितर पार करि प्रभुहिं पुनि,मुदित गयउ लैपार॥

उतरि ठाढ़ भये सुरसरिरेता * सीय–रामगुहलषणसमेता ॥
केवट उतरि दण्डवत कीन्हा * प्रभु सकुचे कछु यहि नहिं दीन्हा
पियाहियकी सिय जाननहारी * मणिमुंदरी मन मुदित उतारी ॥
कहेउ कृपालु लेहु उतराई * केवट चरण गहेउ अकुलाई ॥
नाथ आजु हम काह न पावा * मिटे दोष दुख दारिददावा ॥

१ नाई नाईकी. २ चरणकमल.

अमित काल मैं कीन्ह मँजूरी * आजु दीन्ह बिधि सब भरि पूरी॥
अब कछु नाथ न चाहिये मोरे* दीनदयालु अनुग्रह तोरे॥
फिरति बार जो कछु मोहिं देवा* सो प्रसाद मैं शिर धरि लेवा॥

दो०बहुत कीन्ह हठ लषण प्रभु, नहिं कछु केवट लेइ
बिदा कीन्ह करुणायतन, भक्ति बिमल वर देइ॥

तब मंजन[1] करि रघुकुलनाथा * पूजि पारथी नायउ माथा॥
सिय सुरसरिहिं[2] कहा कर जोरी* मातु मनोरथ पुरवहु मोरी॥
पतिदेवरसँग कुशल बहोरी * आइ करौं जेहि पूजा तोरी॥
सुनि सियबिनय प्रेमरससानी * भइ तब बिमल बारिबरबानी[3]॥
सुनु रघुबीरप्रिया वैदेही * तव प्रभाव जग बिदित न केही॥
लोकप होहिं बिलोकत तोरे * तोहिं सेवहिं सब सिधि करजोरे
तुम जो हमहिं बड़िबिनय सुनाई* कृपा कीन्ह मोहिं दीन्ह बड़ाई॥
तदपि देवि मैं देब अशीशा * सुफल होनहित निजबागीशा॥

दो०प्राणनाथदेवरसहित, कुशल कोशला[4] आइ॥
पूरिहि सब मनकामना, सुयश रहहि जग छाइ॥

गंगबचन सुनि मंगलमूला * मुदित सीय सुरसरि अनुकूला॥
तब प्रभु गुहहि कहा घर जाहू * सुनत सूख मुख भा उर दाहू॥
दीन बचन गुह कह कर जोरी * बिनय सुनियरघुकुलमणिमोरी॥
नाथसाथ रहि पंथ दिखाई * करि दिन चारि चरणसेवकाई॥
जेहि बन जाइ रहब रघुराई * पर्णकुटी मैं करब सुहाई॥
तब मोकहँ जस देब रजाई * सो करिहौं रघुबीरदुहाई॥
सहजसनेह राम लखि तासु * संग लीन्ह गुह हृदय हुलासु॥

१ स्नान. २ गंगाजीको. ३ जलमें वाणी भई. ४ अयोध्यामें.

पुनि गुह ज्ञाति बोलिसब लीन्हे* करि परितोष बिदा सब कीन्हे

दो०-तब गणपति शिव सुमिरि प्रभु, नाइ सुरसरिहिं माथ
सखा अनुजासियसहित बन,गमन कीन्ह रघुनाथ

तेहि दिन भयउ बिटपतर[१]बासू* लषणसखा सब कीन्ह सुपासू ॥
प्रात प्रातकृत[२] करि रघुराई * तीरथराज दीख प्रभु जाई ॥
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी * माधवसरिस मीत हितकारी ॥
चारि पदारथ[३]भरा भँडारू * पुण्यप्रदेश देश अतिचारू ॥
क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा * स्वप्नेहुँ जिन्ह प्रतिपक्ष न पावा
सेन सकल तीरथ बर बीरा * कलुषअनीकदलन रणवीरा ॥
संगम सिंहासन सुठिसोहा * क्षेत्र अक्षयबट मुनिमन मोहा
चमर यमुन जल गंग तरंगा * देखि होहिं दुखदारिदभंगा ॥

दो०-सेवहिं सुकृती साधु शुचि, पावहिं सब मनकाम
बन्दीबेदपुराणगण, कहहिं बिमल गुणग्राम १०२

को कहि सकै प्रयागप्रभाऊ * कलुषपुंजकुंजरमृगराऊ ॥
अस तीरथपति देखि सुहावा * सुखसागर रघुबर सुख पावा ॥
कहि जिय अनुजहिं सखहिं सुनाई* श्रीमुख तीरथराज--बड़ाई ॥
करि प्रणाम देखत बन बागा * कहत महातम अतिअनुरागा॥
यहि बिधि आइ बिलोकेउ बेनी* सुमिरत सकलसुमंगलदेनी ॥
नौमीदिन तीरथपति गयऊ * तिरबेनीजल मज्जत भयऊ ॥
मुदित अन्हाइ कीन्ह शिवशेवा* पूजि यथाविधि तीरथदेवा ॥
तब प्रभु भरद्वाजपहँ आये * करत दण्डवत मुनि उर लाये
मुनिमनमोह न कछु कहि जाई* ब्रह्मानन्दराशि जनु पाई ॥

---

१ वृक्षके नीचे. २ प्रातःकालकी क्रिया.३ धर्म. अर्थ, काम, व मोक्ष.

दो०दीन्ह अशीश मुनीश उर, अतिअनंद अस जानि
लोचनगोचरसुकृतफल,मनहुँकिये विधिआनि१०३
कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हा* पूजि प्रेमपरिपूरण कीन्हा ॥
कन्द मूल फल अंकुर नीके * दिये आनि मुनि मनहुँ अमीके
सीयलषणजनसहित सुहाये *अति रुचि राम मूल फल खाये॥
भये बिगतश्रम राम सुखारे * भरद्वाज मृदु बचन उचारे ॥
आजु सफल तप तीरथ यागू * आजु सफल जप योग बिरागू
सफल सकल--शुभसाधनसाजू * राम तुमहि अवलोकत आजू
लाभ अवधि सुख अवधि न दूजी*तुम्हरे दर्श आश सब पूजी॥
अब करि कृपा देहु बर एहू * निजपदसरसिजसहजसनेहू ॥
दो०कर्म बचन मन छांड़िछल,जबलगि जनन तुम्हार
तबलगि सुख स्वप्नेहु नाहिं,किये कोटि उपचार१०४
सुनि मुनिबचन राम सकुचाने* भाव भक्ति आनन्द अघाने ॥
तब रघुवर मुनिसुयश सुहावा * कोटिभांति कहिसबहिं सुनावा
सो बड़ सो सबगुणगणगेहू * जेहि मुनीश तुम आदर देहू ॥
मुनि रघुवीर परस्पर नवहीं * बचनअगोचर सुख अनुभवहीं
यह सुधि पाइ प्रयागनिवासी * बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी
भरद्वाज आश्रम सब आये * देखन दशरथसुवन सुहाये ॥
राम प्रणाम कीन्ह सबकाहू * मुदित भये लहि लोचनलाहू॥
दोहैं अशीस परमसुख पाई * फिरे सराहत सुन्दरताई ॥
दो०राम कीन्ह बिश्राम निशि, प्रात प्रयाग नहाइ॥
चले सहित सिय लषण जन,मुदित मुनिहिशिर नाइ ॥

१ अमतके. २ आपके चरणकमलोंका स्वभाविक स्नेह. ३ ब्रह्मचारी.

राम सप्रेम कह्यो मुनिपाहीं * नाथ कहहु हम केहि मगु जाहीं
सुनि मुनि बिहँसि रामसनकहहीं * सुगम सकलमगु तुमकहँ अहहीं
साथलागि मुनि शिष्य बुलाये * सुनि मन मुदित पचासक धाये
सबहिं रामपदप्रेम अपारा * सबहि कहहिं मगु दीख हमारा
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे * जिन्ह बहु जन्म सुकृत बड़ कीन्हे
करि प्रणाम मुनिआयसु पाई * प्रमुदितहृदय चले रघुराई ॥
ग्रामनिकट जब निसरहिं जाई * देखहिं दर्श नारि नर धाई ॥
होहिं सनाथ जन्मफल पाई * फिरहिं दुखित मन संग पठाई ॥

दो० **बिदा कीन्ह बहु बिनय करि, फिरे पाइ मनकाम**
उतरि नहाये यमुनजल, जो शरीरसम श्याम १०६

सुनत तीरबासी नर नारी * धाये निज निज काज बिसारी
लषण– रामसिय– सुन्दरताई * देखि करहिं निजभाग्य बड़ाई॥
अतिलालसा सबहिं मनमाहीं * नाम ग्राम पूँछत सकुचाहीं ॥
जे तिन्हमहँ बयवृद्ध[2] सयाने * तिन्ह करि युक्ति राम पहिंचाने
सकल कथा कहि तिनहिं सुनाई * बनहिं चले पितुआयसु[3] पाई ॥
सुनि सबिषाद सकल पछिताहीं * रानी राय कीन्ह भल नाहीं ॥
राम–लषण–सियरूप निहारी * शोचसनेहबिकल नर नारी ॥
ते पितु मातु कहो सखि कैसे * जिन पठये बन बालक ऐसे ॥

दो० **तबरघुबीरअनेकविधि, सखहिंसिखावनदीन्ह**
रामरजायसु[1] शीस धरि, गवन भवन तेहिं कीन्ह ॥

पुनि सिय राम लषण कर जोरी * यमुनहिं कीन्ह प्रणाम बहोरी॥
गवने सीयसहित दोउ भाई * रबितनया[4]की करत बड़ाई ॥

---

१ ऋषिकी आज्ञा. २ उमरमें बूढ़े. ३ दशरथकी आज्ञा. ४ यमुनाजीकी

तिन्हकेरी * लही रंक जनु सुरमणिढेरी ॥ नि गँवारी ॥
सिख देही * लोचनलाहु लेहु क्षण एही ॥ कत सोने ॥
अनुरागे * चितवत चले जात सँग लागे ॥ वमाऐन ॥
उर आनी * होहिं शिथिल तन मानस बानी ॥ १२ ॥
ानाहिं पानी * अँचइय नाथ कहहीं मृदु बानी ॥ हारे॥

खबटछाँह भलि, डारि मृदुल तृण गात
इय क्षण कश्रम, गवनब अबहिं कि प्रात ११०

चन प्रीति अति देषी * राम कृपालु सुशील बिशेषी ॥ नी॥
श्रमित मनमाहीं * घरिक बिलम्ब कीन्ह बटछाहीं॥ णी॥
नर देखहिं शोभा * रूप अनूप देखि मन लोभा ॥ ती ॥
सोहहिं चहुँओरा * रामचन्द्र–मुखचन्द्र–चकोरा ॥ रे ॥
ालवरण तनु सोहा * देखत काम–कोटि–मनमोहा ॥ ी॥
वरण लषण सुठि नीके * नखशिखसुभग भावते जीके ॥ नी
कटिन्ह कसे तूणीरा * सोहत करकमलन्ह धनु तीरा ॥

जटामुकुट शीसन सुभग, उरभुजनयन बिशाल
रदपर्वबिधुबदन बर, लसत स्वेदकणजाल १११

न जाइ मनोहर जोरी * शोभा अमित मोरि मति थोरी ॥
षण-सिय-सुन्दरताई * सब चितवहिं मनबुधिचितलाई
नारि नर प्रेमपियासे * मनहुँ मृगी मृग देखि दिवासे ॥
समीप ग्रामतिय जाहीं * पूँछत अतिसनेह सकुचाहीं ॥
बार सब लागहिं पाये * कहहिं बचन मृदु सरल सुहाये ॥
नकुमारि विनय हम करहीं * तियसुभाव कछु पूँछत डरहीं ॥

१ दरिद्रीने. २ चिंतामणिकी राशि. ३ उपमारहित. ४ श्याम.

पथिक अनेक मिलहिं मगु जाता * कहहिं सप्रेम
राम लषण सब अंग तुम्हारे * देखि शोच जाहीं
मारग चलहु पयादेहि पाये * ज्योतिष झूठ हहीं
अगम पन्थ गिरि कानन भारी * तेहिमहँ सा[illegible] ाये
करि केहरि बन जाहिं न जोई * हम सँग चल[illegible]मारा
जाब जहाँलगि तहँ पहुँचाई * फिरब बहोरि तुम्हें

सो॰ यहिबिधि बूझहिं प्रेमबश, पुलकगात[illegible]
कृपासिंधु फेरहिं तिनहिं, करि बिनती मृदु

जे पुर ग्राम बसहिं मगुमाहीं * तिनहिं नागसुरनगर
केहि सुकृत केहि घरी बसाये * धन्य पुण्यमय
जहँ जहँ रामचरण चलि जाहीं * तेहि समान अमराव[illegible]
पुण्यपुंज मगु-निकट-निवासा * तिनहि सराहहिं सुरपु[illegible]
जो भरिनयन बिलोकहिं रामहि * सीतालषणसहित घनश्[illegible]
जेहि सरसरित राम अवगाहहिं तिनहि देवसरसरित मग[illegible]
जेहि तरुतर प्रभु बैठहिं जाई * करहि कलपतरु तासु ब[illegible]
परसि रामपद-पद्म-परागा * मानति भूमि भूरि निजभ[illegible]

सो॰ छाँह करहिं घनबिबुधगण बर्षहिं सुमनसिह
देखत गिरिबन बिहँगमृग, राम चले मग जा[illegible]

सीता-लषणसहित रघुराई * गाँवनिकट जब निसर[illegible]
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी * चलहिं तुरत गृहकाज बिस[illegible]
राम--लषण सियरूप निहारी * पाई नयनफल होहि सुखारि
सजल नयन अतिपुलक शरीरा * सब भे मग्न देखि दोउ बीर[illegible]

१ राहचलनेवाले. २ सिंह. ३ सर्पोंके व देवतोंके नगर. ४ इन्द्रपु[illegible]

स्वामिनि अबिनय क्षमब हमारी * बिलग न मानब जानि गँवारी ॥
राजकुँवर दोउ सहजसलोने * इनते लहि द्युति मरकत सोने ॥

दो०श्यामल गौर किशोर बर, सुंदर सुषमाऐन ॥
शरदशर्वरीनाथमुख, शरदसरोरुहनैन ॥ ११२ ॥

कोटि-मनोज-लजावनिहारे * सुमुखि कहहु को अहहिं तुम्हारे॥
सुनि सनेहमय मंजुल बानी * सकुचि सीय मनमहँ मुसुकानी॥
तिनहिंबिलोकिबिलोकतधरणी * दुहुँ सकोच सकुचति बरबरणी॥
सकुचि सप्रेम बालमृगनयनी * बोली मधुर बचन पिकबयनी ॥
सहजस्वभावसुभग तनु गोरे * नाम लषण लघु देवर मोरे ॥
"श्यामबरणबिशाल भुज नैना * आतिसुंदर बोलनि मृदु बैना "
बहुरि बदनाविधु अंचल ढाँकी * हियतन चितै दृष्टि करि बाँकी॥
खंजन- मंजु--निरीक्षण--नयनी * निजपतिकहेउतिनहिंसियसयनी
भई मुदित सब ग्राम-बधूटी * रंकन्ह रत्नराशि जनु लूटी ॥

दो०अतिसप्रेमसियपाँयपरि, बहुबिधिदेहिंअसीस
सदासुहागिनिरहहुतुम, जबलगिमहिअहिशीस १३

पारबतीसम पतिप्रिय होहू * देवि न हमपर छाँड़ब छोहू ॥
पुनिपुनि बिनयकरहिंकरजोरी * जो यहि मारग फिरिय बहोरी ॥
दर्शन देब जानि निजदासी * लखी सीय सब प्रेमपियासी ॥
मधुरबचन कहि कहि परितोषी * जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी ॥
तबहिं लषण रघुवररुख जानी * पूँछेउ मगुलोगन मृदु बानी ॥
सुनत नारि नर भये दुखारी * पुलकित अंग बिलोचन बारी॥
मिटा मोद मन भये मलीने * बिधिनिधिदीन्हलीन्हजनुछीने ॥

१ मणि. २ करोडो कामदेवोंको लज्जित करनेवाले. ३ मनोहर.

समुझि कर्मगतिधीरज कीन्हा * शोधि सुगममगुतिन्हकहिदीन्हा

दो०लषणजानकीसहितबन, गमन कीन्ह रघुनाथ॥
फेरे सब प्रियबचन कहि, लिये लाइ मन साथ ११४

फिरत नारिनरअतिपछिताहीं * दैवहिं दोष देहिं मनमाहीं ॥
सहित बिषाद परस्पर कहहीं * विधिकरतब सबउलटैअहहीं
निपट निरंकुश निठुर निशंकू * जेहिं शशि कीन्हसरुजसकलंकू ॥
रूख कल्पतरु सागर खारा * तेहिं पठये बन राजकुमारा ॥
जो पै इनहिं दीन्ह बनबासू * कीन्ह बादिबिधिभोगबिलासू ॥
ये बिचरहिं मगुबिनुपदत्राना[2] * रचे बादि बिधिवाहननाना ॥
ये महि परहिं डारिकुशपाता * सुभग सेज कतकीन्हबिधाता ॥
तरुतर बास इनहिंबिधिदीन्हा * धवलधाम[3]रचिकतश्रमकीन्हा ॥

दो०जो ये मुनिपटधरजटिल, सुन्दर सुठिसुकुमार
विविधभाँति भूषण बसन, बादि किये करतार ११५

जो ये कन्द मूल फल खाहीं * बादि सुधादिअशन[4]जगमाहीं ॥
एक कहहिं यहसहज-सुहाये * आपु प्रगट भे बिधिनबनाये ॥
जहँलगि बेदकेहउबिधिकरणी * श्रवणनयनमनगोचर बरणी ॥
देखहु खोजि भुवन दशचारी * कहँ असपुरुषकहाँअसनारी ॥
इनहिं देखि बिधिमनअनुरागा * पटुतर योग बनावनलागा ॥
कीन्ह बहुत श्रम एक नआये * तेहि ईर्षा बन आनिदुराये ॥
एक कहहिंहमबहुतनजानहि * आपुहिपरमधन्यकरिमानहि ॥
ते पुनि पुण्यपुंज[5] हम लेखे * जे देखे देखहि जिन्ह देखे ॥

दो०यहिबिधिकहिकहिबचनप्रिय, लेहिंनयनभरिनीर ॥

१ रोगयुक्त. २ जोडा. ३ सपेद मकान. ४ भोजन. ५ पुण्यसमूह.

किमिचलिहैं मारगअगम,सुठिसुकुमारशरीर१ ११६

नारि सनेहबिकल सब होहीं * चकई साँझसमयजिमिसोहीं ॥
मृदुपदकमलकठिनमगुजानी * गहबरिहृदयकहहीं मृदुबानी ॥
परसत मृदुल चरण अरुणारे * सकुचति महिजिमिहृदयहमारे ॥
जो जगदीश इनहिंबनदीन्हा * कस न सुमनमय मारगकीन्हा ॥
जो माँगे पाइय बिधिपाहीं * राखियसखिइन्हआँखिन्हमाहीं ॥
जे नर नारि न अवसरआये * ते सिय राम न देखनपाये ॥
सुनि स्वरूप पूँछहिं अकुलाई * अबलगि गये कहाँलगिभाई ॥
समरथ धाइबिलोकहिं जाई * प्रमुदित फिरहिंनयनफलपाई ॥

सो०अबलाबालकवृद्धजन,करमींजहिंपछिताहिं ॥
होहिंप्रेमबश लोग इमि, राम जहाँ जहँ जाहिं ११७

गाँव गाँव अस होहि अनन्दा * देखि भानुकुलकैरवचन्दा ॥
जे कछु समाचार सुनि पावहिं * ते नृपरानिहि दोष लगावहिं ॥
कहहिं एक अतिभल नरनाहू * दीन्ह हमहि जिन्ह लोचनलाहू
कहहिं परस्पर लोग लुगाई * बातें सरल-सनेह-सुहाई ॥
ते पितु मातु धन्य जे जाये * धन्य सो नगर जहांते आये ॥
धन्य सो शैल देश बन गाऊँ * जहँ जहँ जाहिं धन्य सो ठाऊँ ॥
सुखपायो बिरंचि रचि तेही * ये जिन्हके सबभाँति सनेही ॥
राम-लषण-सिय-कथा सुहाई * रही सकल मग कानन छाई ॥

दो०यहिबिधिरघुकुलकमलरवि, मगलोगनसुखदेत
जाहिं चले देखत बिपिन, सियसौमित्रिसमेत ११८॥

आगे राम लषण पुनि पाछे * तापस बेष बिराजत काछे ।

---

१ पृथ्वी. २ फूलोंका. ३ स्त्री. ४ ब्रह्मा. ५ बन. ६ सीताजी

उभयमध्य सिय शोभति कैसी* ब्रह्मजीवबिच माया जैसी ॥
बहुरि कहौं छबि जस मन बसई* जनु मधुमदनमध्य रति लसई ॥
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही* जनु बुधबिधुबिचरोहिणी सोही॥
प्रभु-पद-रेख-बीचबिच सीता*धरहिं चरणमगचलहिं सभीता॥
सिय-राम-पद-अंक बराये *लषण चलहिं मग दाहिन बायें॥
राम-लषण-सिय-प्रीति सुहाई*बचन अगोचरकिमि कहि जाई॥
खग मृग मग्न देखि छबि होहीं * लिये चोर चित राम बटोही ॥

दो०जिन्हजिन्हदेखेपथिकप्रिय,सीयसहितदोउभाइ
भव मग अगम अनन्दते,बिनु श्रम रहे सिराइ११९।

अजहुँ जासु उर सपनेहुँ काऊ * बसहिं राम सिय लषण बटाऊ॥
राम-धाम-पथ जाइहि सोई * जो पथ पाव कबहु मुनि कोई॥
तब रघुबीर श्रमित सिय जानी*देखि निकट बट शीतल पानी ॥
तहँ बसि कन्दमूल फल खाई * प्रात अन्हाइ चले रघुराई ॥
देखत बन सर शैल[3] सुहाये * बाल्मीकिआश्रम प्रभु आये॥
राम देखि मुनिबास सुहावन * सुंदर गिरि कानन जल पावन॥
सरन सरोज[4] बिटप बन फूले * गुंजत मंजु मधुप रसभूले ॥
खग मृग बिपुल कुलाहल करहीं* रहित बैर प्रमुदित मन चरही॥

दो०शुचि सुंदर आश्रम निरखि, हर्षे राजिवनैन ॥
सुनि रघुबरआगमन मुनि, आगे आये लैन ॥ १२० ॥

मुनिकहँ राम दण्डवत कीन्हा * आशीर्वाद विप्रवर दीन्हा ॥
देखि रामछबि नयन जुड़ाने * करि सन्मान आश्रमहिं आने ॥
तब मुनि आसन दिये सुहाये * मुनिवर अतिथि प्राणप्रिय पाये

१ दोनोंके बीचमें. २ बसंत और कामदेवके बीचमें. ३ पहाड. ४कमल.

कन्द मूल फल मधुर मँगाये * सिय सौमित्रि राम फल खाये
बालमीकिमन आनँद भारी * मंगल--मूरति नयन निहारी ॥
तब करकमल जोरि रघुराई * बोले बचन श्रवणसुखदाई ॥
तुम त्रिकालदर्शी मुनिनाथा * विश्व बदरजिमि तुम्हरे हाथा
अस कहि सब प्रभु कथा बखानी * जेहि जेहि भांति दीन्ह बन रानी

दो०तातबचन पुनि मातुमत, भाइ भरत अस राउ ॥
मोकहँ दर्श तुम्हार प्रभु, सब मम पुण्यप्रभाउ १२१

देखि पाँय मुनिराय तुम्हारे * भये सुकृत सब सुफल हमारे ॥
अब जहँ राउर आयसु होई * मुनि उद्वेग[2] न पावहिं कोई ॥
मुनि तापस जिनते दुख लहहीं * ते नरेश बिनुपावक[3] दहहीं ॥
मंगलमूल बिप्र--परितोषू[4] * दहै कोटिकुल भूसुर--रोषू ॥
अस जिय जानि कहिब सोइ ठाऊँ * सिय सौमित्रि सहित तहँ जाऊँ ॥
तहँ रचि रुचिर पर्णतृणशाला * बास करौं कछु काल कृपाला ॥
सहजसरल सुनि रघुबरबानी * साधु साधु बोले मुनि ज्ञानी ॥
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू * तुम पालक संतत श्रुतिसेतू ॥

छंद श्रुतिसेतुपालक राम तुम जगदीश माया जानकी
जो सृजति जग पालति हरति रुख पाइ कृपानिधानकी ॥
जो सहससीस अहीश महिधर लखन सचराचरधनी
सुरकाज धरि नरराजतनु चले दलन खल निशिचरअनी

सो०राम स्वरूप तुम्हार, बचनअगोचर बुद्धिबर ॥
अबिगति अकथ अपार, नेति नेति नित निगम कह ॥[5]॥

जगपेखन तुम देखनहारे * विधि हरि शंभु नचावनहारे ॥

---

१ बेरजैसे. २ दुःख. ३ विन अग्नि. ४ ब्राह्मणोंकी प्रसन्नता. ५ पैदा करती है.

तेउ न जानहिं मर्म तुम्हारा * और तुमहिं को जाननहारा ॥
सो जानै जेहिं देहु जनाई * जानत तुम्हैं तुमहिं व्है जाई ॥
तुम्हरी कृपा तुमहिं रघुनंदन * जानत भक्त भक्तउरचंदन ॥
चिदानन्दमय देह तुम्हारी * बिगतबिकार जान अधिकारी ॥
नरतनु धरेहु सन्तसुरकाजा * कहहु करहु जस प्राकृत राजा ॥
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे * जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे
तुम जो कहहु करहु सब साँचा * जस इच्छिय तस चाहिय नाँचा

दो०पूँछेहु मोहिं कि रहौं कहँ, मैं कहते सकुचाउँ॥
जहँ न होहु तहँ देहुँ कहि, तुमहिं दिखावौं ठाउँ१२२

सुनि मुनिबचन प्रेमरस-साने * सकुचि राम मनमहँ मुसुकाने ॥
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी * बाणी मधुर अँमियरसबोरी ॥
सुनहु राम अब कहौं निकेता * बसहु जहाँ सिय लषणसमेता ॥
जिनके श्रवण समुदसमाना * कथा तुम्हारि सुभग सरिनाना
भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे * तिनके हिये सदन तव रूरे ।
लोचन चातक जिन करि राखे * रहहिं दर्शजलधर अभिलाषे ।
निदरहिं सिंधुसरितसरबारी * रूपबिन्दु लहि होहिं सुखारी ॥
तिनके हृदयसदन सुखदायक * बसहु लषणसियसह रघुनायक ॥

दो०यश तुम्हार मानसबिमल, हंसिनि जीहाजासु॥
मुक्ताहल गुणगण चुनहिं, बसहु राम हिय तासु१२३

प्रभुप्रसाद शुचि सुभग प्रकाशा * सादर जासु लहै नित नासा ॥
तुमहिं निवेदित भोजन करहीं * प्रभुप्रसाद पट भूषण धरहीं ॥
शीश नवाहिं सुर गुरु द्विज देषी * प्रीतिसहित करि बिनय बिशेषी ॥

१ भक्तोंका हृदय शीतल करनेवाले. २ विद्वान. ३ अमृतरसगे भिगोई.

कर नित करहिं रामपदपूजा * रामभरोस हृदय नहिं दूजा ॥
चरण रामतीरथ चलि जाहीं * राम बसहु तिनके मनमाहीं॥
मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा * पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा॥
तर्पण होम कराहिं बिधि नाना * बिप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना ॥
तुमते अधिक गुरुहिं जिय जानी* सकल भाव सेवहिं सनमानी ॥

दो०सबकर माँगहिं एक फल, रामचरणरति होउ
तिनके मनमन्दिर वसहु, सिय रघुनन्दन दोउ १२४

काम क्रोध मद मान न मोहा * लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा ॥
जिनके कपट दम्भ नाहिं माया * तिनके हृदय बसहु रघुराया ॥
सबके प्रिय सबके हितकारी * दुखसुखसरिस प्रशंसागारी ॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी*जागत सोवत शरण तुम्हारी ॥
तुमहिं छाँड़ि गति दूसरि नाहीं * राम बसहु तिनके मनमाहीं ॥
जननिसम[१] जानहिं परनारी * धन पराय बिषते बिष भारी ॥
जे हर्षहिं परसम्पति देषी * दुखित होहिं परबिपति बिशेषी॥
जिनहिं राम तुम प्राणपियारे * तिनके मन शुभ सदन[२] तुम्हारे ॥

दो०स्वामिसखा[३] पितु मातु गुरु, जिनकेसबतुमतात
तिनके मनमन्दिर वसहु, सीयसहितदोउभ्रात १२५

अवगुण तजि सबके गुण गहहीं * बिप्रधेनुहित संकट सहहीं ॥
नीतिनिपुण जिनकी जग लीका*घर तुम्हार तिनके मन नीका ॥
गुण तुम्हार समुझहिं निजदोसू * जेहि सबभांति तुम्हार भरोसू ॥
राम भक्त प्रिय लागहि जेही * तेहि उर बसहु सहित वैदेही ॥
जाति पाँति धन धर्म्म बड़ाई * प्रियपरिवार-सदन-समुदाई ॥

---

१ माताकी समान. २ घर. ३ मित्र.

सब तजि तुमहिं रहै लव लाई * ताके हृदय बसहु रघुराई ॥
स्वर्ग नरक अपवर्ग--समाना * जहँ तहँ दीख धरे धनु बाना ॥
कर्म बचन मम राउर चेरा * राम करहु ताके उर डेरा ॥

दो॰ जाहि न चाहिय कबहुँ कछु, तुमसन सहज सनेह ।
बसहु निरंतर तासु उर, सो राउर निजगेह ॥१२६॥

यहिविधि मुनिबर ठाम दिखाए* बचन सप्रेम राममन भाए ॥
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक* आश्रम कहौं समयसुखदायक॥
चित्रकूटगिरि करहु निवासू * तहँ तुम्हार सबभांति सुपासू ॥
शैल सुहावन कानन चारू * करिकेहरि–मृग विहँग–बिहारू
नदी पुनीत पुराण बखानी * अत्रिप्रिया निजतपबलआनी ॥
सुरसरिधार नाम मन्दाकिनि * जो सब--पातकपोतक डाकिनि
अत्रिआदि मुनिबर तहँ बसहीं * करहिं योग जपतप तनुकसहीं
चलहु सुफल श्रम सबकर करहू* राम देहु गौरव गिरिवरहू ॥

दो॰ चित्रकूटमहिमा अमित, कही महामुनि गाय ॥
आइ अन्हाने सरितबर, सियसमेत दोउ भाय१२७

"हरिदिन कामदगिरि प्रभु आये* समाचार सुरसंतन पाये" ॥
रघुबर कह्यउ लषण भल घाटू * करहु कतहुँ अब ठाहरठा[illegible]
लषण दीख तव उतरकरारा *चहुँदिशि फिरेउ धनुषजिमि ना[illegible]
नदी पनच शर शम दम दाना * सकलकलुषकलिसाउजनाना ॥
चित्रकूट जनु अचल अहेरी * चक न घात मारु मुठभेरी ॥
अस कहि लषण ठांव दिखरावा* थल विलोकि रघुपति सुख पावा
रमेउ राममन देवन जाना * चले सहित सुरपति परधाना ॥

१ मोक्षके सदृश. २ रमणीक. ३ सब पापरूप बालकोंको डाकिनीरूप

कोलहकिरातवेष धरि आये * रच्यो पर्णतृणसदन सुहाये ॥
बर्णि न जाइँ मंजु दुइ शाला * एक ललित लघु एक बिशाला
दो० लषनजानकीसहित प्रभु,राजत पर्णनिकेत ॥
सोह मदन मुनिवेष जनु, रतिऋतुराजसमेत १२८
अमर नाग किन्नर दिक्‌पाला * चित्रकूट आये तेहि काला ॥
राम प्रणाम कीन्ह सबकाहू * मुदित देव लहि लोचनलाहू ॥
बर्षि सुमन कह देवसमाजू * नाथ सनाथ भये हम आजू ॥
करि बिनती दुख दुसह सुनाये* हर्षित निजनिज गेह सिधाये ॥
चित्रकूट रघुनन्दन छाये * समाचार सुनि सुनि मुनि आये
आवत देखि मुदित मुनिबृन्दा * कीन्ह दण्डवत रघुकुलचन्दा ॥
मुनि रघुबरहिं लाइ उर लेहीं * सुफलहोनहित आशिष देहीं ॥
सियसौमित्रिराम--छबि देखहिं *साधन सकल सुफल करि लेखहिं
दो० यथायोग्य सन्मानि प्रभु,बिदा किये मुनिबृन्द॥
करहिं योग जप यज्ञ तप,निजआश्रम स्वच्छन्द१२९
यह सुधि कोलहकिरातन पाई * हर्षे जनु नवनिधि घर आई ॥
कन्द मूल फल भरि भरि दोना * चले रङ्क जनु लूटन सोना ॥
[illegible] हमहँ जिन्ह देखे दोउ भ्राता* और तिनहिं पूँछहिं मगुजाता॥
[illegible]हत सुनत रघुबीरनिकाई * आय सबन देखे रघुराई ॥
करहिं जोहारि भेंट धरि आगे* प्रभुहिं बिलोकत अतिअनुरागे
चित्रलिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े * पुलक शरीर नयन जल बाढ़े ॥
राम सनेह-मग्न सब जाने * कहि प्रिय बचन सकल सनमाने
प्रभुहिं जोहारि बहोरि बहोरी *बचन बिनीत कहहिं कर जोरी

---

१ पत्तोंके घरमें. २ रति और बसंतसहित. ३ देवता. ४ दरिद्री.

दो०अब हम नाथ सनाथ सब, भये देखि प्रभुपाँय॥
भाग्य हमारे आगमन, राउर कोशलराय॥ १३० ॥

धन्य भूमि बन पन्थ पहारा * जहँ जहँ नाथ पाँव तुम धारा॥
धन्य बिहग मृग काननचारी * सुफल जन्म भये तुमहिं निहारी
हम सब धन्य सहित परिवारा * देखि नयन भरि दर्श तुम्हारा॥
कीन्ह बास भल ठाँव बिचारी * इहाँ सकल ऋतु रहब सुखारी॥
हम सबभांति करब सेवकाई * करि केहरि अहि बाघ बराई॥
बन बेहड़ गिरि कन्दर खोहा * सब हमार प्रभु पग पग जोहा॥
तहँ तहँ तुमहिं अहेर खेलाउब * सर निर्झर सब ठाँव दिखाउब
हम सेवक परिवारसमेता * नाथ न सकुचब आयसु देता॥

दो०बेदबचन मुनिमनअगम, ते प्रभु करुणाऐन॥
बचन किरातनके सुनत, जिमि पितु बालकबैन १३१

रामहिं केवल प्रेम पियारा * जानि लेहु जो जाननिहारा॥
राम सकल बनचर परितोषे * कहि मृदु बचन प्रेम परितोषे॥
बिदा किये शिर नाय सिधाये * प्रभुगुण कहत सुनत घर आये॥
यहिबिधि सीयसहित द्वौ भाई * बसहिं बिपिन सुरमुनिसुखदाई॥
जबते आइ रहे रघुनायक * तबते भो बन मंगलदायक॥
फूलहिं फलहिं बिटपबिधिनाना * मंजु ललित बर बेलिबिताना॥
सुरतरु-सरिस स्वभावसुहाये * मनहुँ बिबुधबन परिहरि आये॥
गुंजत मंजुल मधुकरश्रेनी * त्रिबिध बियारि बहै सुखदेनी॥

दो०नीलकण्ठ कलकण्ठ शुक, चातक चक्र चकोर॥
भांतिभांति बोलहिं बिहग, श्रवणसुखद चितचोर १३२

१ अयोध्याके राजा. २ सर्प. ३ शिकार. ४ दयाके स्थान. ५ वृक्ष.

करि केहरि कपि कोल कुरङ्गा * बिगत बैर बिहरहिं यकसङ्गा ॥
फिरत अहेर रामछबि देखी * होहिं मुदित मृगवृन्द बिशेखी॥
बिबुधबिपिन जहँलग जगमाहीं * देखि रामबन सकल सिहाहीं॥
सुरसरिसरस्वतीदिनकरकन्या[२] * मेकलसुता[३] गोदावरि धन्या ॥
सब सरि सिन्धु नदी नद नाना * मन्दाकिनिकर करहिं बखाना
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू * मन्दर मेरु सकल-सुरबासू ॥
शैल हिमाचलआदिक जेते * चित्रकूटयश गावहिं ते ते ॥
बिन्ध्य मुदितमन सुख न समाई * बिनु श्रम बिपुल बड़ाई पाई ॥

दो०चित्रकूटके बिहग मृग, बेलि बिटप तृणजाति ॥
पुण्यपुंज सब धन्य अस, कहहिं देव दिन राति ॥

नयनवन्त रघुपतिहिं बिलोकी * पाइ जन्मफल होहिं बिशोकी ॥
परसि चरणचर अचर सुखारी * भये परमपदके अधिकारी ॥
सो बन शैल सुभाय सुहावन * मंगलमय अति-पावन--पावन ॥
महिमा कहौं कवन बिधि तासू * सुखसागर जहँ कीन्ह निबासू ॥
पयपयोधि तजि अवध बिहाई * जहँ सिय राम लषण रहे आई ॥
कहिनसकहिंसुखभाजसकानन * जो शतसहस होहिं सहसानन[४]॥
सो मैं बर्णि कहौं बिधि केहीं * डाबरकमठ कि मन्दर लेहीं ॥
सेवहिं लषण कर्ममनबानी * जाइ न शील सनेह बखानी ॥

दो०क्षण क्षण सिय लखि रामपद, जानिआपुपरनेह
करत लषण स्वप्नेन चित, बन्धु मातुपितुगेह १३४ ॥

रामसंग सिय रहहिं सुखारी * पुर-परिजन-गृहसुरति बिसारी
क्षण क्षणपियाबिधुबदन निहारी * प्रमुदित मनहुँ चकोरकुमारी॥

सूकर. २ यमुना. ३ मेकलपर्वतकी पुत्री. ४ सहस्रमुख शेष.

नाह नेह नित बढ़त बिलोकी * हर्षित रहति दिवस जिमिकोकी[१]
सियमन राम–चरण-अनुरागा * अवधसहससम बन प्रिय लागा ॥
पर्णकुटी प्रिय–प्रीतम–संगा * प्रिय परिवार कुरंग विहंगा ॥
सासुससुरसम मुनितियमुनिबर * अशन[२] आमियसम कन्दमूल फर ॥
नाथसाथ साथरी सुहाई * मयनशयनशतसम सुखदाई ॥
लोकप[३] होहिं विलोकत जासू * तेहि किमि मोहै बिषयबिलासू ॥

दो०सुमिरत रामहिंतजहिंजन, तृणसमबिषयबिलासु
रामप्रियाजगजननि[४]सिय, कछुनआचरजतासु १३५

सीयलषणजेहिबिधि सुखलहहीं * सोइ रघुनाथ करैं जोइ कहहीं॥
कहहिं पुरातन कथा कहानी * सुनहिं लषणसिय अतिसुखमानी
जब जब राम अवधसुधि करहीं * तब तब वारि विलोचन भरहीं ॥
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई * भरत--सनेह--शील- सेवकाई ॥
कृपासिन्धु प्रभु होहिं दुखारी * धीरज धरहिं कुसमय विचारी॥
लखि सियलषणबिकलव्है जाहीं * जिमि पुरुषहिं अनुसर परिछाहीं
प्रियाबन्धुगति लखि रघुनन्दन * धीर कृपालु भक्तउरचन्दन ॥
लगे कहन कछु कथा पुनीता * सुनिसुख लहहिंलषणअरु सीता

दो०राम-लषण-सीता-सहित, सोहत पर्णनिकेत॥
जिमि बासव[५] बस अमरपुर, शचीजयन्तसमेत १३५

जुगवहिं प्रभुसियअनुजहिं कैसे * पलक बिलोचनगोलक जैसे ॥
सेवहिं लषण सीयरघुबीरहिं * जिमि अबिवेकी पुरुष शरीरहिं॥
यहिबिधिप्रभुबनबसहिंसुखारी * खग-मृग-सुर-तापस-हितकारी॥
कहेउँ रामवनगवन सुहावा * सुनहु सुमन्त अवध जिमि आवा।

[१] चक्रबाकी. [२] भोजन. [३] लोकपाल. [४] जगत्की माता. [५] इन्द्र

फिरेउ निषाद प्रभुहिं पहुँचाई * सचिवसहित रथ देखेउ आई ॥
मंत्री विकल विलोकि निषादू * कहिनसकहिं जसभयउविषादू ॥
राम राम सिय लषण पुकारी * परेउ धरणि तल व्याकुल भारी॥
देखिदक्षिणदिशि हयहिहिनाहीं * जिमिबिनुपंखविहँग अकुलाहीं॥

दो० नहिंतृणचरहिंनपियहिंजलमोचतलोचनबारि
व्याकुल भयउ निषादगण, रघुबरबाजि निहारि१३७

धरि धीरज तब कहहि निषादू * अब सुमन्त परिहरहु बिषादू ॥
तुम पंडित परमारथज्ञाता * धरहु धीर लखि बाम बिधाता॥
विविधकथा कहिकहिमृदुबानी * रथ बैठारेउ बरबस आनी ॥
शोकशिथिलरथ सकहिनहाँकी * रघुबरबिरहपीर उर बाँकी ॥
तरफराहिं मगु चलहिं न घोरे * बन मृगमनहुँ आनि रथ जोरे ॥
अटकि पराहिं फिरि हेरहिं पीछे * रामवियोगबिकल दुख तीछे ॥
जो कह राम लषण वैदेही * हिकरि हिकरि हय हेरहिं तेही ॥
बाजिविरहगतिकिमिकहिजाती * बिनुमणिफणीबिकलजेहि भाँती

दो० भयो निषाद विषादवश, देखत सचिव तुरंग ॥
बोलि सुसेवक चारि तब, दिये सारथी संग ॥१३८॥

गुह सारथिहिं फिरेउ पहुँचाई * बिरह विषाद वर्णि नाहिं जाई ॥
चले अवध लै रथहिं निषादा * होहिं क्षणहि क्षण मग्न बिशादा ॥
शोच सुमन्त बिकल दुख दीना * धिक जीवन रघुबीरविहीना ॥
रहहि न अन्तहु अधम शरीरू * यश न लहेउ बिछुरत रघुबीरू ॥
भये अयशअघभाजन प्राना * कौन हेतु नाहिं करत पयाना॥
अहह मन्दमति अवसर चूका * अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका ॥

१ गुह. २ पृथ्वीपर. ३ नेत्रोसे जल. ४ रामचन्द्रजीके घोड़े.

मींजि हाथ शिर धुनि पछिताई * मनहुँ कृपण धनराशि गँवाई ॥
बिरद बाँधि बर वीर कहाई * चले समर जनु सुभट पराई ॥

दो०विप्र विवेकी बेदविद, सम्मत साधु सुजाति ॥
जिमि धोखेमदपानकर, सचिवशोचतेहिभांति १३९

जिमि कुलीनतिय साधु सयानी * पतिदेवता कर्म–मन–बानी॥
रहै कर्मबश परिहरि नाहू * सचिवहृदय तिमि दारुण दाहू॥
लोचनसजल दृष्टि भइ थोरी * सुनै न श्रवण विकलमति भोरी
सूखहिं अधर लागि मुँह लाटी * जिय न जाइ उर अवधकपाटी ॥
विवरण भयउ न जाइ निहारी * मारिसि मनहुँ पिता महतारी ॥
हानि गलानि बिपुल मन व्यापी*यमपुरपन्थ शोच जिमि पापी ॥
वचन न आव हृदय पछिताई * अवध कहा मैं देखब जाई ॥
रामरहित रथ देखिहि जोई * सकुचिहि मोहिं विलोकत सोई॥

दो०धाइ पूँछिहहिं मोहिं जब,विकल नगरनरनारि
उतर देब मैं सबहिं तब, हृदय वज्र बैठारि ॥ १४०॥

पूँछहिं दीन दुखित सब माता * कहब कहा मैं तिनहिं विधाता॥
पुँछिहहिं जबहि लषणमहतारी * कहिहौं कौन सँदेश सुखारी ॥
रामजननि जब आइहि धाई * सुमिरि वत्स जिमि धेनु लवाई॥
पूँछत उतर देब मैं तेही * गे बन राम लषण बैदेही ॥
जोइ पूँछहि तेहि उत्तर देवा * जाइ अवध अब यह सुख लेवा
पूँछहिं जबहिं राउ दुखदीना * जीवन जासु रामआधीना ॥
देहौं उतर कवन मुँह लाई * आयउँ कुशल कुँवर पहुँचाई ॥
सुनत लषण सिय रामसँदेशू * तृणइव तनु परिहरब नरेशू ॥

१ ज्ञानी. २ ओष्ठ. ३ देह. ४ राजा दशरथ.

दो०हृदय न बिदरत पंक[1]जिमि, बिछुरत प्रीतमनीर[2]।
जानत हौं मोहिं दीन्ह बिधि, यह यातना शरीर१४१

यहिबिधि करत पन्थ पछितावा * तमसातीर तुरत रथ आवा ॥
बिदा किये करि बिनय निषादू * फिरे पाँय परि बिकल बिषादू॥
" हरिदिन[3] पहुँचे अवध सुमंता * देखि नगर दुख भयो दुरंता"॥
पैठत नगर सचिव सकुचाई * जनु मोरेसि गुरु ब्राह्मण गाई ॥
बैठि बिटपतर दिवस गंवावा * साँझसमय तेइअवसर आवा ॥
अवधप्रवेश कीन्ह अँधियारे * पैठ भवन रथ राखि दुआरे ॥
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनि पाये * भूपद्वार रथ देखन आये ॥
रथ पहिचानि बिकललखि घोरे * गरहि गात जिमि आँतपबोरे[4]॥
नगरनारिनर ब्याकुल कैसे * निघटत नीर मीनगण जैसे ॥

दो०सचिवआगमनसुनतसब, बिकलभयोरानिवास।
भवन भयंकर लाग तेहि, मानहुँ प्रेतनिवास॥ १४२ ॥

अतिआरत सब पूँछहिं रानी * उतर न आव बिकल भइ बानी
सुनै न श्रवण नयन नहिं सूझा * कहहु कहाँ नृप जेहि तेहि बूझा॥
दासिन्ह दीख सचिवबिकलाई * कौशल्यागृह गईं लिवाइ ॥
जाइ सुमन्त दीख कस राजा * अमियरहित जनु चन्द्र बिराजा॥
अशन[5] न शयनबिभूषणहीना * परेउ भूमितल निपट मलीना ॥
लेइ उसास शोच यहि भाँती * सुरपुरते जनु खस्यो*ययाती ॥
लेत शोच भरि क्षण क्षण छाती * जनु जरि पंख परेउ सम्पाती ॥

* ययाति राजा यज्ञादि कर्म व धर्मका आचरण करके, सदेह इन्द्रपदके लिये इन्द्रलोकको गये तब इन्द्रने आगे आय, सत्कार कर, ले जा-

१ कीचके जैसे. २ जल. ३ एकादशीको. ४ घामसे तपे. ५ भोजन.

राम राम कहि राम सनेही * पुनि कह राम लषण वैदेही ॥

दो०देखिसचिवजयजीवकहि,कीन्हेसिदण्डप्रणाम
सुनत उठे व्याकुल नृपति, कहु सुमंत कहँ राम १४३

भूप सुमन्त लीन्ह उर लाई * बूड़त कछु अधार जनु पाई ॥
सहित सनेह निकट बैठारी * पूँछत राउ नयन भरि बारी ॥
रामकुशल कहु सखा सनेही * कहँ रघुनाथ लषण वैदेही ॥
आनेहु फेरि कि बनहिं सिधाये * सुनत सचिवलोचन जल छाये ॥
शोकबिकल पुनि पूँछ नरेशू * कहु सियरामलषणसंदेशू ॥
राम-रूप गुण-शील-स्वभाऊ * सुमिरि सुमिरि उर शोचत राऊ ॥
राज सुनाय दीन वनबासू * सुनि मन भयउ न हर्ष हरासू ॥
सो सुत बिछुरत गये न प्राना * को पापी बड़ मोहिंसमाना ॥

दो०सखा राम सिय लषण जहँ,तहाँ मोहिं पहुँचाउ
नाहित चाहत चलन अब, प्राण कहौं सतभाउ१४४

पुनि पुनि पूँछत मंत्रिहिं[२] राऊ * प्रियतम सुवनसँदेश सुनाऊ ॥
सुनहु सखा सोइ कारिय उपाऊ * रामलषण सिय वेगि दिखाऊ ॥
[२]सचिव धीर धरि कहि मृदु[३] बानी * महाराज तुम पण्डित ज्ञानी ॥

य सिंहासनपर बैठाय, छलके साथ बहुत बड़ाई करके इनसे पूंछा कि-हे राजन्! आपने कैसे २ धर्म किये हैं; कि-जिनके प्रतापसे मेरे पद-को प्राप्त भये. यह सुन राजा ययाति अपने पुण्यको बहुत बड़ाइके साथ इन्द्रको सुनाने लगे. जब कहते कहते समस्त पुण्य क्षीण होगया तब इन्द्रकी इच्छानुसार देवताओंने राजा ययातिको स्वर्गसे मृत्युलो-कमें ढकेल दिया.

१ मंत्री सुमन्तके नेत्रोंमें. २ मंत्री (सुमंत). ३ कोमल.

बीर सुधीर-धुरन्धर देवा * साधुसमाज सदा तुम सेवा ॥
जन्ममरण सब दुखसुख भोगा * हानिलाभप्रियमिलनबियोगा ॥
कालकर्मबश होहिं गुसाँई * परबश राति दिवसकी नाईं ॥
सुख हर्षहिं जड़ दुख बिलखाहीं * दोउ सम धीर धरहिं मनमाहीं ॥
धीरज धरहु बिवेकबिचारी[1] * छाँड़िय शोच सकलहितकारी ॥

दो०प्रथम बास तमसा[2] भयउ, दूसर सुरसरितीर[3]
न्हाय रहे जलपान करि, सियसमेत दोउ बीर १४५

केवट कीन्ह बहुत सेवकाई * सो यामिनि शृंगबेर गँवाई ॥
होत प्रात बटक्षीर मँगावा * जटा मुकुट निजशीश बनावा ॥
रामसखा तब नाव मँगाई * प्रिया चढ़ाइ चले रघुराई ॥
लषण धरे धनु बाण बनाई * आपु चढ़े प्रभुआयसु पाई ॥
बिकल बिलोकि मोहिं रघुबीरा * बोले मधुर बचन धरि धीरा ॥
तात प्रणाम तातसन कहेऊ * बार बार पदपंकज गहेऊ ॥
करब पाँय परि बिनय बहोरी * तात करिय जनि चिंता मोरी ॥
बन मग मंगल कुशल हमारे * कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे ॥

छंद०तुम्हरेअनुग्रहतातकाननजातसबसुखपाइहौं
प्रतिपालिआयसुकुशलदेखनपाँयपुनिफिरि आइहौं
जननीसकलपरितोषकरिपरिपाँयकरिबिनती घनी
तुलसीकरहुसोइयत्नजेहिबिधिकुशलरहकोशलधनी

सो०गुरुसन कहब सँदेश, बार बार पदपद्म गहि ॥
करब सोइ उपदेश, जेहि न शोच मोहिं अवधपति ६

पुरजन परिजन सकल निहोरी * तात सुनावहु बिनती मोरी ॥

---

१ ज्ञानसे विचारके. २ तमसानामक नदीके तटमें. ३ गंगाजीके तटमें.

सोइ सबभांति मोर हितकारी * जाते रह नरनाह सुखारी ॥
कहब सँदेश भरतके आये * नीति न तजब राजपद पाये ॥
पालहु प्रजाहिं कर्म मन बानी * सेयहु मातु सकल सम जानी॥
और निबाहब भायप भाई * करि पितुमातुसुजनसेवकाई ॥
तात भांति तेहि राखब राऊ * शोच मोर जेहिं कराहिं न काऊ
लषण कहेउ कछु बचन कठोरा * बरजि राम पुनि मोहिं निहोरा॥
बार बार निजशपथ दिवाई * कहब न तात लषणलरिकाई ॥

दो॰ कहिप्रणामकछुकहनालिय, सियभइशिथलसनेह
थकित बचन लोचन सजल, पुलकपल्लवित देह ॥

तेहि अवसर रघुबररुख पाई * केवट पारहिं नाव चलाई ॥
रघुकुलातिलक चले यहिभाँती * देखेउँ ठाढ़ कुलिश[1] धरि छाती ॥
मैं आपन किमि कहब कलेशू * जिअत फिरेउँ लै रामसंदेशू ॥
अस कहि सचिवबचनरहि गयऊ * हानिगलानिसोचबश भयऊ ॥
सुनत सुमंतबचन नरनाहू * परेउ धरणि[2] उर दारुण दाहू ॥
तलफत विषम मोह मन मापा * माजा[3] मनहुँ मीनकहँ व्यापा ॥
करि बिलाप सब रोवहिं रानी * महाबिपति किमि जाइ बखानी
सुनि बिलाप दुखहू दुख लागा * धीरजहूकर धीरज भागा ॥

दो॰ भयउ कोलाहल अवध अति, सुनिनृपराउरशोर
विपुलबिहग बन परेउ निशि, मानहुँ कुलिश कठोर॥

प्राणकण्ठगत भयउ भुआलू[4] * मणिविहीनजिमिव्याकुलव्यालू[5]॥
इन्द्रिय सकल बिकल भइँ भारी * जनु सरसरसिजबन[6] बिनु बारी॥
कौशल्या नृप दीख मलीना * रविकुलरवि अथये जनु दीना॥

---

१ वज्र. २ पृथ्वीपर. ३ फेना. ४ राजा. ५ सर्प. ६ कमलबन.

उर धरि धीर राममहतारी * बोली बचन समयअनुहारी ॥
नाथ समुझि मन करिय बिचारू * राम वियोगपयोधि[1] अपारू ॥
कर्णधार[2] तुम अवधि जहाजू * चढेउ सकलप्रियवणिकसमाजू॥
धीरज धरिय तो पाइय पारू * नाहित बूड़हि सब परिवारू ॥
जो जिय धरिय बिनय पिय मोरी * राम लषण सिय मिलब बहोरी

दो० प्रियावचनमृदुसुनतनृप, चितयउआँखिउघारि
तलफत मीन[3] मलीन जनु, सिंचत शीतल बारि १४८

धरि धीरज उठि बैठु भुआलू * कहु सुमन्त कहँ राम कृपालू॥
कहाँ लषण कहँ राम सनेही * कहँ प्रियपुत्रबधू बैदेही ॥
बिलपत राउ बिकल बहुभांती * भइ युगसरिस सिराति न राती
* तापसअन्धशापसुधि आई * कौशल्यहिं सब कथा सुनाई ॥

* एकबार श्रीदशरथ महाराज अहेर खेलने गये थे; तहां रात्रि होनेपर नदीके किनारे अहेरकी खोजमें बैठे थे. वहां श्रवण महाराज अपने अंध माता-पिताकी कांवर राहमें उतार कर, आप उनके लिये पानीको गये ज्योंही तोंबा नदीमें डुबाया तो उसमें शब्द भया; उस शब्दको राजा दशरथजीने गजशब्द जानेक, तीर मारा; सो वह बाण श्रवणको लगा. लागनेके साथही श्रवणने हा तात! २ पुकारा. तब राजा मनुष्य-शब्द सुन अतिब्याकुल हो, क्लेशके साथ श्रवणके पास जाय, बोले. तब श्रवणको यह भान हुवा कि-यह राजा धर्मात्मा है तब ऐसा उन्होंने कहा कि-हे राजन्! मुझे अपने शरीरका मोह नहीं परंतु मेरेमाता पिता अन्धे तृषावन्त हैं. सो तुम जलदी जायके उन्हें पानी पिलावो और मेरे हृदयसे बाण खींचो. इतना सुन, राजाने जब बाण खींचा तब खींचनेके

१ रामचंद्रका वियोगरूप सागर. २ केवट. ३ मछली.

भयउ विकल वर्णत इतिहासा * रामरहित धिक जीवन आसा ॥
सो तनु राखि करब मैं काहा * जेहि न प्रेमपण मोर निबाहा ॥
हा रघुनन्दन प्राणपिरीते * तुम बिनु जिअत बहुत दिन बीते॥
हा जानकी लषण हा रघुवर * हा पितुहितचितचातकजलधर[1]॥

दो०राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ॥
तनु परिहरि रघुबरबिरह, राउ गये सुरधाम[2] १४९॥

जियनमरणफल दशरथ पावा * अण्ड अनेक अमलयश[3] छावा॥
जिअत रामविधुबदन निहारी * रामबिरह मरि मरण सँवारी ॥
शोकबिकल सब रोवहिं रानी * रूप शील बल तेज बखानी ॥
करहिं बिलाप अनेकप्रकारा * परहिं भूमितल बारहिं बारा ॥
बिलपहिं बिकल दास अरु दासी * घर घर रुदन करहिं पुरवासी ॥
अथयउ आजु भानुकुलभानू * धर्मअवधि गुणरूपनिधानू ॥
गारी सकल केकइहि देहीं * नयनबिहीन कीन्ह जग जेहीं॥
यहिबिधि बिलपत रैन बिहानी * आये सकल महामुनि ज्ञानी ॥

दो०तबवसिष्ठमुनिसमयसम, कहिअनेकइतिहास
शोक निवारेउसकलकर, निजविज्ञानप्रकाश १५०॥

साथही श्रवणने शरीरत्याग किया.उसके अनंतर राजाने जल ले, ताप-सअंधके पास जाय उन्हें पानी दिया. तब उन्होंने पुत्र जान, कछु बात कही सो सुनकर राजा चुप रहे तब तापसने कहा कि-हे पुत्र ! तुम न बोलोगे तो हम पानी नहीं पीवेंगे. यह सुन राजाने अतिदीन हो, अपना नाम कह, सब कारण कह सुनाया. तब उन्होंने राजाको यह शाप दिया कि हे राजा ! जैसे पुत्रवियोगमें मेरा शरीर छूटता है तैसेही अंतसमयमें तुम्हेंभी पुत्रवियोगका दुःख प्राप्त होगा.

१ हे पिताके चित्तरूप चातकको मेघरूप ! २ देवलोकमें ३ निर्मल

अथ क्षेपक ॥

कह बशिष्ठ मन धीरज धरहू * धर्म विचार शोच परिहरहू ॥
जो जन्मत सो मरत बिशेषी * देहदशा यह अघटित देखी ॥
कनककशिपु–हिरण्याक्ष-सरीखे* गुणिनकेर गुण गुणियत लीखे ॥
सगर–सहसभुज–आदि नरेशा * सुमिरणमात्र रहे अतुलेशा ॥
जिनके रथपहियनते सागर * भये सो भये कालबश नागर ॥
पूर्वकर्म- अनुसार जहाना * हरत मौत करि बिबिध बहाना ॥
प्रथम सृष्टि जब रची विधाता* उहै न तहँ कोइ जीव निपाता ॥
तब रचि मौत बधायसु दीन्हा * अयश समुझि तेहि रोदन कीन्हा
आँसुनते भे रोग घनेरे * कह बिधि ए सब संचेर तेरे ॥
इनके ओट हरौ तुम प्रानी * करत सोइ बिधिआज्ञा मानी ॥

दो०मेदिनिमेरुअजादिसुर, सोयकदिननशिजात॥
गजश्रुतिसमनरआयुचर, ताकीकौनबिसात ॥ १६ ॥
लही बड़ाई भूपवर, हरिहित परिहरि देह ॥
षडबिकारपरते परे, आतम–आनंद–गेह ॥ १७ ॥
छेदि सकै नहिं शस्त्र जेहि, पावक सकै न जारि ॥
मारुत सकै न शोखि यहि, बोरि सकै नहिं बारि १८
जिमि बिहाय जीरन बसन, धारत मनुज नवीन ॥
तिमि देही तनु जीर्ण तजि, नूतन गहत प्रवीन १९॥
आदि अंत अव्यक्त है, मध्य जासु कछु व्यक्त ॥
तेहि आतमके हेतुकी, करहु कलपना त्यक्त ॥ २० ॥
रोये जो मिलि जाय तेहि, रोवै भले पुकारि ॥

१ मरण. २ सेवक. ३ पृथ्वी. ४ सुमेरुगिरि. ५ ब्रह्माआदिदेवता.

जो न मिलै रघुनाथ तौ, धीरज धरै बिचारि॥२१॥
सज्जनके संसर्गसे, करै न मानस-ताप ॥
मिटी मिटत मिटि है न सुनि, त्यागो सबन कलाप

॥ इति क्षेपक ॥

तेलनाव भरि नृपतनु राषा * दूत बुलाइ बहुरि अस भाषा॥
धावहु बेगि भरतपहँ जाहू * नृपसुधि कतहुँ कहहु जनि काहू
इतनै कहेउ भरतसन जाई * गुरु बुलाइ पठये दोउ भाई ॥
सुनि मुनिआयसु धावन धाये * चले बेगि बर बाजि लजाये ॥
अनरथ अवध अरंभेउ जबते * कुशकुन होंहि भरतकहँ तबते॥
देखाहिं राति भयानक सपना * जागि कराहिं बहु कोटिकल्पना
बिप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना * शिवअभिषेक कराहिं बिधि नाना
माँगाहि हृदय महेश मनाई * कुशल मातु पितु परिजनभाई॥

दो०यहिविधि शोचत भरत मन, धावनपहुँचेजाइ
गुरुअनुशासन श्रवण सुनि, चले गणेश मनाइ १५१

"भूतादिन तहँ पहुँचे जाई * गुरुनिदेश सुनि दोनहुँ भाई ॥
चपलबाजि चढ़ि तुरतसिधाये * कुहूदिवस निजनगरहिं आये ॥
चले समीरबेग हय हाँके * लाँघत सरित शैल बन बाँके ॥
हृदय शोच बड़ कछु न सोहाई * अस जानहिं जिय जाउँ उड़ाई॥
एक निमेष बर्षसम जाई * यहि बिधि भरत नगर नियराई
अशकुन होंहि नगर पैठारा * रटाहिं कुभांति कुखेत करारा ॥
खर शृगाल बोलहिं प्रतिकूला * सुनि सुनि होहिं भरतउरशूला
श्रीहत सर सरिता बन बागा * नगर विशेष भयावन लागा ॥
खग मृग हय गज जाहिं न जोये * राम-बियोग-कुयोग-बिगोये॥

---

१ चतुर्दशीको. २ वसिष्ठकी आज्ञा. ३ घोड़ेपर. ४ अमावास्याको.

नगरनारिनर निपटदुखारी * मनहुँ सबनि सब सम्पति हारी ॥

दो०पुरजनमिलहिंनकहहिंकछु,गँवहिंजोहारहिंजाहिं॥
भरतकुशलपूँछिनसकहिं,भयबिषादमनमाहिं १५२

हाट बाट नहिं जाइ निहारी * जनु पुर दशदिशि लागि दवारी ॥
आवत सुत सुनि केकयनन्दिनि * हर्षी रविकुलजलरुहचंदिनि[1] ॥
सजि आरती मुदित उठि धाई * द्वारहिं भेंटि भवन ले आई ॥
भरत दुखित परिवार निहारी * मानहुँ तुहिन बनजबन मारी ॥
कैकेयी हर्षित यहिभाँती * मनहुँ मुदित दव[3] लाइ किराती
सुतहिं सशोच देखि मन मारे * पूँछति नैहर कुशल हमारे ॥
सकल कुशल कह भरत सुनाई * पूँछी निजकुलकुशलभलाई ॥
कहु कहँ तात कहाँ सब माता * कहँ सिय राम लषण प्रिय भ्राता

दो०सुनि सुतबचन सनेहमय, कपटनीर भरि नैन
भरत श्रवण मन शूलसम,पापिनि बोली बैन १५३

तात बात मैं सकल सँवारी * भइ मन्थरा सहाय बिचारी ॥
कछुक काज बिधि बीच बिगारेउ * भूपति सुरपतिपुर पगु धारेउ ॥
सुनत भरत भये बिबश बिषादा * जनु सहमेउ करि केहरिनादा ॥
तात तात हा तात पुकारी * परेउ भूमितल व्याकुल भारी॥
चलत न देखन पायउँ तोहीं * तात न रामहिं सौंपेउ मोहीं ॥
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी * कहु पितुमरणहेतु महतारी ॥
सुनि सुतवचन कहति कैकेई * मर्म पाछि जनु माहुर देई ॥
आदिहिते सब आपनि करणी * कुटिल कठोर मुदितमन बरणी

दो०भरतहिं बिसरेउ पितुमरण,सुनत रामबनगौन

१ सूर्यवंशरूपकमलको चन्द्रकी चांदनीरूप. २ पालाने.३दावाग्नि.

हेतु अपन पुनि जानजिय, थकित रहे धरि मौन १५४

बिकलबिलोकिसुतहिंसमुझावति * मनहुँ जेरपर लोन लगावति॥
तात राउ नाहिं शोचनयोगू * बड़ेउ सुकृत यश कीन्हेउ भोगू॥
जीवत सकल जन्मफल पाये * अन्त अमेरपतिसदन सिधाये॥
अस अनुमानि शोच परिहरहू * सहित समाज राज पुर करहू॥
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारा * पाके क्षते[2] जनु लागु अँगारा॥
धीरज धरि भरि लेहिं उसाशा * पापिनि सबहि भांतिकुलनाशा॥
जो पै कुरुचि रही असि तोहीं * जन्मत काहे न मारेसि मोहीं॥
पेड़ काटि तैं पल्लव सींचा * मीनजियनहित बारि उलीचा॥

दो०*हंसबंश दशरथ जनक, रामलषणसे भाइ॥
जननी तू जननी भई, विधिते कहा बसाइ॥१५५॥

जबते कुमति कुमत मन ठयऊ * खंड खंड होइ हृदय न गयऊ॥

* भरत मातासे कहते हैं कि-सूर्यबंश और दशरथ ऐसे पिता और रामलक्ष्मणसे भाई ऐसा तो सब उत्तम और हे माता! तू अपनी माताकी तुल्य हुई. इसपर यह कथा है कि-केकयदेशका राजा कैकेयीका बाप सर्वरुतज्ञ था अर्थात् सब प्राणियोंकी बोली समझता था. किसी दिन राजा रानी दोनो एक साथ सोये थे इतनेमें एक गिरगिट कुछ बोला तो राजाने उसका शब्द समझके, अचानक हँस दिया. तब रानी अपना अंग देखने लगी और बोली कि-हे नाथ! क्या देख आप हँसे? तब राजाने कहा कुछ नहीं. रानीने हठ किया कि बतावो.

---

१ इन्द्रलोकमें. २ घावमें.

बर माँगत मन भइ नाहिं पीरा * जरि न जीह मुँह परेउ न कीरा ॥
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही * मरणकालबिधि मतिहरि लीन्ही ॥
बिधिहुननारिहृदयगतिजानी * सकलकपटअघअवगुणखानी ॥
सरल सुशील धर्मरत राऊ * सो किमि जानहिं तीयसुभाऊ ॥
अस को जीव जन्तु जगमाहीं * जेहि रघुनाथ प्राणप्रिय नाहीं ॥
भे अतिअहित राम तेउ तोहीं * को तू अहसि सत्य कहु मोहीं ॥
जोहसि सोहसि मुह मसि लाई * आँखिओट उठि बैठहु जाई ॥

दो०रामबिरोधीहृदयते, प्रगट कीन्ह बिधि मोहिं ॥
मोसमान को पातकी, बादि कहौं कछु तोहिं १५६

सुनि शत्रुघ्न मातुकुटिलाई * जरहिं गात रिस कछु न बसाई ॥
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई * बसन बिभूषण बिबिध बनाई ॥
लखि रिस भरेउ लषणलघुभाई * बरत अनल घृतआहुति पाई ॥
हुमकि लात तकि कूबर मारा * परि मुहभरि महि करत पुकारा ॥
कूबर टूटेउ फूट कपारू * दलित दशन[१] मुख रुधिरप्रचारू ॥
आहि दइय मैं काह नशावा * करत नीक फल अनइस पावा ॥
पुनिरिपुहनलषिनखशिखखोटी * लगे घसीटन धरि धरि झोंटी ॥
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई * कौशल्यापहँ गे दोउ भाई ॥

राजाने कहा हम बतावेंगे तो मर जांयगे तोभी रानीने नहीं माना. तब राजा रानी दोनों काशीमें गये वहां राजाने बताया और मर गया. ऐसा कैकेयीकी माताने अपने पतिको मारा वही भरतजीने कही कि तूनेभी हमारे पिताको वैसेही मारा.

---

१ दांत.

दो०मलिनबसनबिबरणबिकल,कृशशरीरदुखभार
कनककमलबर वेलि बन,मानहुँ हनी तुषार॥ १५७॥

भरतहिं देखि मातु उठि धाई * मूर्छित अवनि[२] परी अकुलाई॥
देखत भरत बिकल भे भारी * परे चरण तनुदशा बिसारी॥
मातु तातकहँ देहि दिखाई * कहँ सिय राम लषण दोउ भाई॥
केकयि कत जन्मी जगमाँझा * जो जन्मी तो भइ कि न बाँझा॥
कुलकलंक जेहिं जन्मेउ मोही * अपयशभाजन[३] प्रियजनद्रोही॥
कोत्रिभुवन मोहिसरिस अभागी*गति असि तोरि मातु जेहि लागी॥
पितु सुरपुर बन रघुकुलकेतू * मैं केवल सब-अनरथ-हेतू॥
धिक मोहिं भयउँ बेणुबनआगी[४]* दुसह-दाह-दुख*दूषणभागी॥

दो०मातुभरतकेबचनमृदु,. सुनिपुनिउठीसँभारि॥
लिये उठाइ लगाइ उर, लोचनमोचतिबारि १५८॥

सरल सुभाय मातु उर लाये * अतिहित मनहुँ राम फिरि आये॥
भेंटेउ बहुरि लषण लघुभाई * शोक सनेह हृदय न समाई॥
देखि सुभाय कहत सबकोई * राममातु अस काहे न होई॥
माता भरत गोद बैठारे * आँसु पोंछि मृदु बचन उचारे
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू * कुसमय समुझि शोक परिहरहू॥
जनि मानहु जिय हानिगलानी * कालकर्मगति अघटित जानी॥
काहुहिं दोष देहु जनि ताता *भा मोहिं सबबिधि बाम बिधाता
जो ऐसेहु बिधि मोहिं जियावा * अजहुँ को जानै का तेहिं भावा॥

दो०पितुआयसुभूषण बसन, तात तजे रघुबीर॥
बिस्मय हर्ष न हृदय कछु,पहिरे बल्कलचीर॥ १५९

१ पाला. २ पृथ्वीपर. ३ अयशका पात्र. ४ बांसोंके बनकी अग्नि.

मुख प्रसन्न मन राग न रोषू * सबकर सबविधि करि परितोषू॥
चले बिपिनै सुनि सिय सँग लागी * रही न रामचरण अनुरागी ॥
सुनतहिं लषण चले लगि साथा * रहे न यत्न किये रघुनाथा ॥
तब रघुपति सबहीं शिर नाई * चले संग सिय अरु लघु भाई॥
राम लषण सिय बनहिं सिधाये * गई न संग न प्राण पठाये ॥
यह सब भा इनआँखिन आगे * तउ न तजत तन जीव अभागे
मोहिं न लाज निजनेहानिहारी * रामसरिस सुत मैं महतारी ॥
जिये मरे भल भूपति जाना * मोर हृदय शतकुलिशसमाना ॥

दो०कौसल्याके वचन सुनि, भरतसहित रनिवास
व्याकुल बिलपत राजगृह, मानहुँ शोकनिबास१६०

बिलपहिं विकल भरत दोउ भाई * कौशल्या लिय हृदय लगाई ॥
भांति अनेक भरत समुझाये * कहि विवेक बर बचन सुनाये॥
भरतहु मातु सकल समुझाई * कहि पुराणश्रुतिकथासुहाई ॥
छलबिहीन शुचि सरल सुबानी * बोले भरत जोरि युग पानी ॥
जे अँघ मातु पिता गुरु मारे * गाइ गोठ महिसुँरपुर जारे ॥
जे अघ तियबालकवध कीन्हे * मीत महीपति माहुर दीन्हे ॥
जे पातक उपपातक अहहीं * कर्मबचनमनभव कवि कहहीं॥
ते पातक मोहिं होउ विधाता * जो यह होइ मोर मत माता ॥

दो०जे परिहरि हरिहरचरण, भजहिं भूतगण घोर॥
तिन्हकीगतिमोहिंदेहु बिधि, जो जननीमतमोर१६१

बेचहिं बेद धर्म दुहि लेहीं * पिशुन पराय पाप कहि देहीं॥
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी * बेदबिदूषक बिश्वबिरोधी ॥

१ वनको. २ दोनों. ३ पाप. ४ ब्राह्मणोंका गांव.

लोभी लम्पट लोल लबारा * जे ताकहिं परधन परदारा ॥
पावउँ मैं तिनकी गति घोरा * जो जननी यह सम्मत मोरा ॥
जे नहिं साधुसंग अनुरागे * परमारथ-पथ-बिमुख अभागे
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई * जिनहिं न हरिहरसुयश सुहाई ॥
तजि श्रुतिपन्थ बामपथ चलहीं * बंचक बिरचि बेष जग छलहीं ॥
तिन्हकी गति शंकर मोहिं देऊ * जननी जो यह जानौं भेऊ ॥

अथ क्षेपक ॥

छंद० मनबचनकर्मकृपायतनकरदासमैंसुनुमातुरी
उरबसतरामसुजानजानतप्रीति अरुछलचातुरी ॥
असकहतलोचनबहतजल तनुपुलकनखलखेतमही
हियलायलियेबहोरिजननीजानिप्रभुपदरतसही" ७

इति क्षेपक ॥

दो० मातु भरतके बचन सुनि, साँचे सरल सुभाय
कहतरामप्रियताततुम, सदाबचनमनकाय ॥१६२॥

राम प्राणते प्राण तुम्हारे * तुम रघुपतिहिं प्राणते प्यारे ॥
बिधु[२] बिष चुवै श्रवै हिम आगी * होइ बारिचर[३] बारिबिरागी ॥
भये ज्ञान बरु मिटै न मोहू * तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू ॥
मत तुम्हार अस जो जग कहहीं * सोस्वप्नेहुँ सुखसुगति न लहहीं
अस कहि मातु भरत हिय लाये * थन पय[४] श्रवहिं नयन जल छाये ॥
करत बिलाप बिपुल यहि भाँती * बैठे बीति गई सब राती ॥
बामदेव बसिष्ठ मुनि आये * सचिव महाजन सकल बुलाये
मुनि बहुभाँति भरत उपदेशे * कहि परमारथ बचन सुदेशे ॥

दो० तात हृदय धीरज धरहु, करहु जो अवसर आजु

१ परस्त्री. २ चंद्र. ३ जलजीव. ४ दूध.

उठे भरतगुरुबचन सुनि, करनकहेउसबकाजु १६३

नृपतनु बेदविहित अन्हवावा * परमबिचित्र बिमान बनावा ॥
गहि पद भरत मातु सब राषी * रहा रामदर्शन अभिलाषी ॥
चन्दनअगरभार बहु आये * अमित अनेक सुगन्ध सुहाये ॥
सरयुतीर रचि चिता बनाई * जनु सुरपुरसोपान[1] सुहाई ॥
या विधि दाहक्रिया सब कीन्हा * विधिवतन्हायतिलांजुलि दीन्हा
शोधि सुमृति[2] सब बेद पुराना * कीन्ह भरत दशगात्रविधाना ॥
" गौरपक्ष[3] ग्यारसि दिन जाना * कीन्ह भरत दशगात्रविधाना ॥
द्विजहिं[4] दान दीन्हेउ बहुभांती * तिसरे दिन भइ त्यरहीं शांती "॥
जहँ जस मुनिबर आयसु दीन्ही * तहँतस सहसभांति सबकीन्ही ॥
भये बिशुद्ध दिये सब दाना * धेनु बाजि गज बाहन नाना ॥

दो०सिंहासन भूषण बसन, अन्न धरणि धन धाम॥
दिये भरत लहि भूमिसुर, भे परिपूरणकाम १६४॥

पितुहित भरत कीन्ह जस करणी * सो मुखलाख जाइनहिं बरणी ॥
सुदिन शोधि मुनिबर तहँ आये * सकलमहाजनसचिव बुलाये ॥
बैठे राजसभा सब जाई * पठये बोलि भरत दोउ भाई ॥
भरत बसिष्ठ निकट बैठारे * नीति धर्ममय बचन उचारे ॥
प्रथम कथा सब मुनिबर बरणी * केकयि कठिन कीन्ह जस करणी
भूप धर्म व्रत सत्य सराहा * जेहिं तनु परिहरि प्रेम निबाहा॥
कहत रामगुण–शील--सुभाऊ * सजल नयन पुलके मुनिराऊ ॥
बहुरि लषणसियप्रीति बखानी * शोकसनेहमगन मुनि ज्ञानी ॥

दो०सुनहुभरतभावीप्रबल, बिलखिकहेउमुनिनाथ
हानिलाभजीवनमरण, यश अपयश विधिहाथ १६५

---

१ स्वर्गकी सीढी. २ स्मृति. ३ शुक्लपक्ष. ४ महापात्रको.

अस बिचारि केहि दीजिय दोषू * व्यर्थ काहिपर कीजिय रोषू ॥
तात बिचार करहु मनमाहीं * शोचयोग दशरथ नृप नाहीं ॥
शोचिय विप्र जो बेदबिहीना * तजि निजधर्म बिषयलवलीना ॥
शोचिय नृपति जो नीति न जाना * जेहि न प्रजा प्रियप्राणसमाना ॥
शोचिय बैश्य कृपण धनवानू * जो न अतिथिशिवभक्तिसुजानू ॥
शोचिय शूद्र बिप्रअपमानी * मुखर[1] मानप्रिय ज्ञानगुमानी ॥
शोचिय पुनि पतिबंचक[2] नारी * कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी ॥
शोचिय बटु[3] निजब्रत परिहरई * जो नाहिं गुरुआयसु अनुसरई ॥

दो०शोचिय गृही जो मोहवश, करै धर्मपथत्याग॥
शोचिय यती[4] प्रपंचरत, बिगत बिबेक बिराग॥१६६॥

बैखानस सोइ शोचनयोगू * तप बिहाय जेहि भावै भोगू ॥
शोचिय पिशुन[5] अकारणक्रोधी * जननि जनकगुरुबंधुबिरोधी ॥
शोचिय लोभनिरत अतिकामी * सुरश्रुतिनिंदक परधनस्वामी ॥
सबबिधि शोचिय परअपकारी * निजतनुपोषक निर्दय भारी ॥
शोचनीय सबही विधि सोई * जो न छाँड़ि छल हरिजन होई ॥
शोचनीय नहिं कोसलराऊ * भुवन चारि दस प्रगट प्रभाऊ ॥
भयउ न अहै न अब होनिहारा * भूत भरत जस पिता तुम्हारा ॥
बिधि हरिहर सुरपति दिशिनाथा * बर्णहिं सब दशरथगुणगाथा ॥
तीनि काल त्रिभुवन जगमाहीं * भूरि भाग दशरथसम नाहीं ॥

दो०कहहु तातकेहि भांतिकोउ, करिहि बड़ाईतासु॥
राम लषण तुम शत्रुहन, सरिससुवन सुत जासु॥१६७॥

सबप्रकार भूपति बड़भागी * बादि बिषाद करिय तेहिं लागी ॥

---

१ बाचाल. २ पतिछलिनी ३ ब्रह्मचारी. ४ संन्यासी ५ चुगल.

भले नाथ सब कहहिं सहर्षा * एकहिं एक बढ़ावहिं कर्षा ॥
चले निषाद जुहारि जुहारी * शूर सकल रण रुचै सु रारी ॥
सुमिरि रामपदपंकज पनहीं * भाथी बांधि चढ़ावहिं धनुहीं॥
अँगुरी पहिरि कुंडि शिर धरहीं * फरसा बाँस शेलसम करहीं ॥
एक कुशल अतिओड़न खाँड़े * कूदहिं गगन मनहुँ क्षिति छाँड़े ॥
निज निज सजासमाज बनाई * गुहरावतहिं जुहारहिं जाई ॥
देखि सुभट सब लायक जाने * लै लै नाम सकल सनमाने ॥

दो०भाइहुलावहुधोखजनि, आजुकाजबडमोहु ॥
सुनिसरोषबोलेसुभट, बीरअधीरनहोहु ॥ १८४ ॥

रामप्रताप नाथ बल तोरे * करहिं कटक[2] बिनुभट बिनुघोरे॥
जियत पाँव नहिं पीछे धरहीं * रुण्डमुण्डमय मे[3]दिनि करहीं ॥
दीख निषादनाथ भल टोलू * कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू ॥
यतना कहत छींक भइ बाँये * कहे शकुनियन्ह खेत सुहाये ॥
बूढ़ एक कह शकुन बिचारी * भरतहिं मिलिय न होइहि रारी ॥
रामहिं भरत मनावन जाहीं * शकुन कहै अस बिग्रह नाहीं ॥
सुनि गुह कहै नीक कह बूढ़ा * सहसा करि पछिताहिं बिमूढ़ा॥
भरत–स्वभाव शील बिन बूझे * बड़ि हितहानि जानि बिनु जूझे

दो०गहहुघाट भटसिमिटिसब, लेउमर्ममिलिजाय
बूझिमित्रअरिमध्यगति, तबतसकरबउपाय १८५॥

लखब सनेह सुहाय सुभाये * बैर प्रीति नहिं दुरत दुराये ॥
अस कहि भेंट सँजोवन लागे * कन्दमूल फल खग मृग माँगे ॥

---

१ तरकस. २ फौंज. ३ पृथ्वी. ४ लडाई.

मीनै[1] पीनै[2] पाठीनै[3] पुराने * भरि भरि भार[4] कहारन आने ॥
सकलसाजसजिमिलन सिधाये * मंगलमूल शकुन शुभ पाये ॥
देखि दूरिते कहि निजनामू * कीन्ह मुनीशहिं दण्डप्रणामू ॥
जानि रामप्रिय दीन्ह अशीशा * भरतहिं कहेउ बुझाइ मुनीशा ॥
रामसखा सुनि स्यंदनै[5] त्यागा * चले उतरि उमँगत अनुरागा ॥
गाँव जाति गुह नाम सुनाई * कीन्ह जुहारि माथ महि लाई ॥

दो०करतदण्डवतदेखितेहिं, भरतलीन्हउरलाइ ॥
मनहुँलषणसनभेंटभइ, प्रेमनहृदयसमाइ ॥ १८६ ॥

भेंटे भरत ताहि अतिप्रीती * लोग सिहाहिं प्रेमकै रीती ॥
धन्य धन्य ध्वनि मंगलमूला * सुर सराहि तेहि बर्षहिं फूला ॥
लोक बेद सबभांतिहिं नीचा * जासु छाँह छुइ लेइय सींचा ॥
तेहि भरि अंक रामलघुभ्राता * मिलत पुलकपरिपूरितगाता ॥
राम राम कहि जे जमुहाहीं * तिनहिं न पापपुंज समुहाहीं ॥
यहिं तौ राम लाय उर लीन्हा * कुलसमेत जग पावन कीन्हा ॥
कर्मनाशजल[6] सुरसरि परई * तेहि को कहहु शीश नहिं धरई ॥
उलटा नाम जपत जग जाना * बाल्मीकि भे ब्रह्मसमाना ॥

दो०श्वपँचशबरखलयवनजड, पामरकोलहकिरात[7] ॥
रामकहतपावनपरम, होतभुवनविख्यात ॥१८७॥

नहिं अचरज युगयुग चलिआई * केहिं न दीन्ह रघुबीर बड़ाई ॥
रामनाममहिमा सुर कहहीं * सुनिसुनिअवधलोगसुखलहहीं ॥
रामसखहिं मिलि भरत सप्रेमा * पूँछहिं कुशल सुमंगल क्षेमा ॥

---

१ मछली. २ पुष्ट. ३ पथ्य. ४ कांवारि. ५ रथ. ६ नदी. ७चांडाल.

देखि भरतकर शील सनेहू * भा निषाद तेहि समय बिदेहू ॥
संकुच सनेह मोद मन बाढ़ा * भरतहिं चितवत यकटक ठाढ़ा॥
धरि धीरज पद बन्दि बहोरी * बिनय सप्रेम करत कर जोरी ॥
कुशलमूल पदपंकज पेखी * मैं तिहुँकाल कुशल निजदेखी ॥
अब प्रभु परमअनुग्रह तोरे * सहित कोटि कुल मंगल मोरे ॥

दो०समुझिमोरिकरतूतिकुल, प्रभुमहिमाजियजोइ
जो न भजै रघुबीरपद, जग बिधिबंचित सोइ १८८

कपटी कायर कुमति कुजाती * लोक–बेद–बाहिर सबभांती ॥
राम कीन्ह आपन जबहींते * भयउँ भुवनभूषण तबहींते ॥
देखि प्रीति सुनि बिनय सुहाई * मिले बहोरि लषण–लघुभाई ॥
कहि निषाद निजनाम सुबानी * सादर सकल जुहारी रानी ॥
जानि लषणसम देहिं अशीशा * जियहु सुखी सौलाख बरीशा ॥
निरखि निषाद नगरनरनारी * भये सुखी जनु लषण निहारी ॥
कहहिं लहेउ यह जीवनलाहू * भेंटेउ रामभाइ भरि बाहू ॥
सुनि निषाद निजभाग्यबड़ाई * प्रमुदित मन लै चलेउ लिवाई ॥

दो०सनकारे सेवक सकल, चले स्वामिरुख पाइ ॥
घर तरुतर सर बाग बन, बास बनायउ जाइ॥१८९॥

शृंगबेरपुर भरत दीख जब * भे सनेहबश अंग शिथिल तब॥
सोहत दिय निषादहिं लागू * जनु तनु धरे बिनय अनुरागू ॥
यहि बिधि भरत सेन सब संगा * दीख जाइ जगपावनि गंगा ॥
रामघाटकहँ कीन्ह प्रणामा * भा मन मग्न मिले जनु रामा॥

१ चरणकमल. २ प्रारब्धकरके छलितें.

करहिं प्रणाम नगरनरनारी * मुदित ब्रह्ममय बारि निहारी ॥
करि मज्जन माँगहिं कर जोरी * रामचंद्रपदप्रीति न थोरी ॥
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू * सकलसुखद सेवकसुरधेनू ॥
जोरि पाणि बर माँगों एहू * सीयरामपद-सहज सनेहू * ॥

दो०यहिबिधिमज्जनभरतकरि, गुरुअनुशासनपाइ
मातुनहानीजानिसब, डेरा चले लिवाइ ॥ १९० ॥

जहँ तहँ लोगन्ह डेरा कीन्हा * भरत शोध सबहीकर लीन्हा ॥
गुरुसेवा करि आयसु पाई * राममातुपहँ गे दोउ भाई ॥
चरण चापि कहिकहि मृदु बानी * जननी सकल भरत सनमानी ॥
भाइहिं सौंपि मातुसेवकाई * आप निषादहिं लीन्ह बुलाई ॥
चले सखाकरसों कर जोरे * शिथिल शरीर सनेह न थोरे ॥
पूंछत सखहिं सो ठाँव देखाऊ * नेकु नयनमनजरनि जुड़ाऊ ॥
जहँ सिय राम लषण निशि सोये * कहत भरे जल लोचनकोये ॥
भरतबचन सुनि भयउ बिषादू * तुरत तहाँ लै गयउ निषादू ॥

दो०जहँशिंशुपापुनीततरु, रघुबरकिय बिश्राम ॥
अतिसनेहसादरभरत, कीन्हेउदंडप्रणाम ॥१९२॥

कुशसाथरी निहारि सुहाई * कीन्ह प्रणाम प्रदक्षिण लाई ॥
चरणरेखरज आँखिन लाई * बनै न कहत प्रीतिअधिकाई ॥
कनकबिन्दु दुइ चारिक देखे * राखे शीश सीयसम लेखे ॥
सजल बिलोचन हृदय गलानी * कहत सखासन बचन सुबानी ॥
श्रीहत सीय बिहर द्युतिहीना * यथा अवधनरनारि मलीना ॥

---

१ जल. २ गंगा. ३ निषादके हाथसे. ४ अशोक. ५ सुवर्णके बिन्दु.

पिता जनक देउँ पटुतर केही * करतल भोग योग जग जेही ॥
ससुर भानुकुलभानु भुआलू * जेहि सिहात अमरावतिपालू ॥
प्राणनाथ रघुनाथ गुसाँई * जो बड़ होत सो रामबड़ाई ॥

दो०पतिदेवतासुतीयमणि, सीयसाथरी देखि ॥
बिदरतहृदयनहहरिमम, पबिते कठिनबिशेषि १९२

लालनयोग लषण लघु लौने * भे न भाइ अस अहहिं न होने॥
पुरजन प्रिय पितुमातुदुलारे * सियरघुबीरहिं प्राणपियारे ॥
मृदु मूरति सुकुमार सुभाऊ * ताति बायु तनु लागि न काऊ
ते बन बसहिं बिपति सबभांती * निदरे कोटि कुलिश यह छाती॥
रामजननि जग कीन्ह उजागर* रूप–शील–सुख-सबगुणसागर॥
पुरजन परिजन गुरुपितुमाता * रामस्वभाव सबहिं सुखदाता ॥
बैरिउ रामबड़ाई करहीं * बोलनिमिलनिबिनयमनहरहीं ॥
शारद कोटि कोटिशत शेशा * कहि न सकहिं प्रभुगुणलवलेशा॥

दो०सुखस्वरूप रघुवंशमणि, मंगलमोदनिधान ॥
ते सोवत कुश डासि महि,बिधिगतिअतिबलवान ॥

राम सुना दुख कान न काऊ * जीवनतरु जिमि जुगवत राऊ ॥
पलकनयनफणिमणिजेहिं भाँती* जुगवहिं जननि सकलदिनराती॥
ते अब फिरत बिपिन पदचारी * कन्द–मूल–फल–फूलअहारी॥
धिक कैकेयी अमंगलमूला * भइसि प्राणप्रियतमप्रतिकूला ॥
मैंधिकधिकअघउदधिअभागी* सब उतपातभयउजेहिलागी ॥
कुलकलंककरिसृजेउबिधाता* साँइद्रोह मोहिं कीन्ह कुमाता ॥

१ इन्द्र. २ कष्टसे. ३ वज्रसे. ४ बज्र. ५ सरस्वती. ६ पापसमुद्र.

सुनि सप्रेम समुझाव निषादू * नाथ करिय कत बादिबिषादू ॥
रामतुमहिंप्रियतुमप्रियरामहिं * यह निर्दोष दोष बिधिबामहिं ॥

छं०बिधि बामकी करणीकठिनजेहिंमातुकीन्हीबावरी
तेहि राति पुनि२ करहिंप्रभुसादरसराहनरावरी ॥
तुलसीनतुमसोंरामप्रीतमकहतहौं सौंहौं किये ॥
परिणाम मंगल जानि अपने आनियेधीरजहिये ॥

सो०अन्तर्यामी राम, सकुच सप्रेमकृपायतन ॥
चलिय करिय विश्राम, यह विचारदृढ़आनिमन ॥

सखावचन सुनि उर धरि धीरा* बास चले सुमिरत रघुबीरा ॥
यह सुधि पाइ नगरनरनारी * चले बिलोकन आरत भारी ॥
परदक्षिण करि करहिंप्रणामा * देहिं कैकयिहिं खोरि निकामा ॥
भरि भरि बारिबिलोचन लेहीं* बाम बिधातहिं दूषण देहीं ॥
एक सराहहिं भरतसनेहू * कोउ कह नृपति निबाहेउनेहू ॥
निन्दहिंआपुसराहनिषादहिं * को कहिसकै बिमोहबिषादहिं ॥
यहिबिधिरातिलोगसबजागा* भा भिनुसार उतारा लागा ॥
गुरुहिं सुनाय चढ़ाय सुहाई* नई नाव सब मातु चढ़ाई ॥
दण्ड चारिमहँ भा सबपारा* उतरि भरत तब सबहिं सँभारा ॥

दो०प्रातक्रिया करि मातुपद, बन्दि गुरुहिंशिरनाइ॥
आगे किये निषादगण, दीन्हेउ कटक[3] चलाइ ॥

किये निषादनाथ अगुआई * मातुपालकी सकल चलाई ॥
साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा* बिप्रनसहित गमन गुरु कीन्हा॥

---

१ कृपाके घर. २ फौज.

आपु सुरसरिहिं कीन्ह प्रणामू * सुमिरे लषणसहितासियरामू ॥
गवने भरत पयादेहि पाँये * कोतल संग जाहिं डोरिआये ॥
कहहिं सुसेवक बारहिंबारा * होइय नाथ अश्व असवारा ॥
राम पयादेहि पाँव सिधाये * हमकहँ रथ गज बाजि बनाये ॥
शिरभे जाउँ उचित असमोरा * सबते सेवकधर्म्म कठोरा ॥
देखि भरतगतिसुनिमृदुबानी * सब सेवकगण करहिं गलानी ॥

दो०भरत तीसरे पहरकहँ, कीन्ह प्रवेशप्रयाग ॥
कहतरामसियरामसिय, उमँगि उमँगि अनुराग ॥

झलका झलकत पाँयन कैसे * पंकेजकोश[1] ओसकण[2] जैसे ॥
भरत पयादेहिं आये आजू * भयउ दुखित सुनिसकलसमाजू ॥
खबरि लीन्हसबलोगअन्हाये * कीन्ह प्रणाम त्रिबेणी आये ॥
सबिधिसितासितनीरअन्हाने[3] * दिये दान महिसुर सन्माने ॥
देखत श्यामल धवल हिलोरे * पुलक शरीर भरत कर जोरे ॥
सकल–कामप्रद तीरथराऊ * बेदबिदित जग प्रगटप्रभाऊ ॥
मांगौं भीख त्यागिनिजधर्मू * आरत काह न करहिं कुकर्मू ॥
असजियजानिसुजानिसुदानी * सफल करौ जगयाचकबानी ॥

सो०अर्थ न धर्म न काम रुचि, गतिनचहौंनिर्वाण
जन्म जन्म रति रामपद, यह बरदान न आन ॥

जानहिं राम कुटिलकरि मोहीं * लोग कहैं गुरुसाहबद्रोही ॥
सीता--राम- चरणरति मोरे * अनुदिन बढ़ै अनुग्रह तोरे ॥
जलद जन्मभरिसुरतिबिसारे * याचत जल पबि पाहन डारे ॥

---

१ कमलकोशमें. २ ओसके बुंद. ३ सित–असित नदियोंके संगममें

चातक रटनि घटे घटि जाई * बढ़े प्रेम सबभाँति भलाई ॥
कनकहि बान चढ़े जिमि दाहे * तिमि प्रीतमपदनेम निबाहे ॥
भरतबचन सुनि माँझ–त्रिबेनी * भै मृदु बाणि सुमंगलदेनी ॥
तात भरत तुम सबबिधि साधू * राम–चरण–अनुराग अगाधू ॥
बादि गलानि करहु मनमाहीं * तुमसम रामहिं प्रिय कोउ नाहीं॥

दो०तनु पुलके हिय हर्षि सुनि, बेणिवचन अनुकूल
भरतधन्यकहिधन्यकहि, नभ सुर बर्षहिं फूल १९७

प्रमुदित तीरथराजनिबासी * बैखानस बटु गृही उदासी ॥
कहहिं परस्पर मिलि दश पाँचा * भरत सनेह शील शुचि साँचा ॥
सुनत रामगुणगान सुहाये * भरद्वाजमुनिबरपहँ आये ॥
दण्डप्रणाम करत मुनि देखे * मूरतिवन्त भाग निज लेखे ॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे * दीन्ह अशीश कृतारथ कीन्हे ॥
आसन दीन्ह नाइ शिर बैठे * चलत सकुचि गृह जनु भजिपैठे
मुनि पूँछब कछु यह बड़ शोचू * बोले ऋषि लखि शील सँकोचू ॥
सुनहु भरत हम सब सुधिपाई * बिधिकरतबपर कछु न बसाई ॥

दो०तुमगलानिजियजनिकरहु,समुझिमातुकरतूति
तात कैकयीदोष नहिं, गई गिरामतिधूति ॥१९८॥

यहउ कहत भल कहहि न कोऊ * लोक–बेद–बुध–सम्मत दोऊ॥
तात तुम्हार बिमल यश गाई * पाइहि लोकहु बेद बड़ाई ॥
लोकबेदसम्मत सब कहई * जेहिं पितु राज देइ सो लहई ॥
राउ सत्यब्रत तुमहिं बुलाई * देत राज सुख धर्म बड़ाई ॥
रामगमन बन अनरथमूला * जो सुनि सकल बिश्व भइ शूला॥

१ आकाशसे. २ ब्रह्मचारी. ३ सरस्वती. ४ बुद्धिको. ५ पीडा.

सो भावीवश रानि अयानी[1] * करि कुचालि अन्तहु पछितानी
तहँउँ तुम्हार अल्प अपराधू * कहै सो अधम अयान असाधू
करते राज तुमहिं नाहिं दोषू * रामाहिं होत सुनत सन्तोषू ॥

दो०अबअतिकीन्हेउभरतभल,तुमहिंउचितमतएहु
सकलसुमंगलमूल जग, रघुबरचरणसनेहु ॥१९९॥

सो तुम्हार धन जीवन प्राना * भूरि भाग को तुमहिं समाना ॥
यह तुम्हार अचरज नाहिं ताता * दशरथसुवन रामलघुभ्राता ॥
सुनहु भरत रघुपतिमनमाहीं * प्रेमपात्र तुमसम कोउ नाहीं ॥
लषणरामसीतहिं अतिप्रीती * निशि सब तुमहिं सराहत बीती ॥
जाना मर्म अन्हात प्रयागा * मग्न होहिं तुम्हरे अनुरागा ॥
तुमपर अस सनेह रघुबरके * सुख जीवन जग जस जड़ नरके ॥
यह न अधिक रघुबीरबड़ाई * प्रणत-कुटुम्ब-पाल-रघुराई ॥
तुम तौ भरत मोर मत एहू * धरे देह जनु रामसनेहू ॥

दो०तुमकहँ भरत कलंक यह, हमसबकहँ उपदेश।
रामभक्तिरससिद्धिहित, भा यहिसमयगणेश२००

नव बिधु[3] बिमल तात यश तोरा * रघुबरकिंकर कुमुद चकोरा ॥
उदय सदा अथइय कबहूँ ना * घटिहि न जगनभ[5] दिन दिनदूना
कोक बिलोकप्रीतिअतिकरहीं * प्रभुप्रतापरबिछबिहिं न हरहीं ॥
निशिदिन सुखद सदा सबकाहू * ग्रसिहि न कैकयिकरतबराहू ॥
पूरण राम-सुप्रेम-पियूषा * गुरुअपमान दोष नहिं दूषा ॥
रामभक्ति अब अमिय अघाहू * कीन्हेउ सुलभ सुधा बसुधाहू ॥
भूप भगीरथ सुरसरि आनी * सुमिरत सकल-सुमंगलखानी ॥

---

१ अज्ञानी. २ थोरा. ३ चंद्र. ४ अनार. ५ आकाशमें.

दशरथगुणगण बर्णि न जाहीं * अधिक काह जेहिसम जगमाहीं

दो०जासु सनेह-सकोच-बश, राम प्रगट भे आय॥
जे हरे हिय नयनन्ह कबहुं, निरखे नाहिं अघाय २०१

कीरति[१]बिधु[२] तुम कीन्ह अनूपा* जहँ बस रामप्रेम मृगरूपा॥
तात गलानि करहु जिय जाये * डरहु दरिद्रहिं पारस पाये॥
सुनहु भरत हम झूँठ न कहहीं * उदासीन तापस बन रहहीं॥
सब साधनकर सुफल सुहावा * लषण-राम-सियदर्शन पावा॥
तेहि फलकर फल दर्श तुम्हारा * सहित प्रयाग सुभाग हमारा॥
भरत धन्य तुम जग यशलयऊ * कहि अस प्रेममग्न मुनि भयऊ॥
सुनि मुनिबचन सभासद[३] हर्षे * साधु सराहि सुमन सुर बर्षे॥
धन्यधन्य ध्वनि गगनें[४] प्रयागा * सुनि सुनि भरत मग्न अनुरागा

दो०पुलकगात हिय राम सिय, सजल सरोरुह नैन॥
करि प्रणाम मुनिमंडलिहिं, बोले गद्गद बैन २०२॥

मुनिसमाज अरु तीरथराजू * साँचिहु शपथ अघाइ अकाजू॥
यहिथल जोकछुकहियबनाई* यहिसम नहिं कछु अघअधमाई
तुम सर्बज्ञ कहौं सतिभाऊ * उर--अन्तर्यामी रघुराऊ॥
मोहिंनमातुकरतबकरशोचू * नहिं दुखजियजगजानहिपोचू॥
नाहिंन डरबिगराहिपरलोकू* पितहु मरेकर नाहिंन शोकू॥
सुकृतसुयशभरिभुवनसुहाये * लक्ष्मणरामसरिस सुत पाये॥
रामबिरह तजि तनु क्षणभंगू* भूपशोचकर कवन प्रसंगू॥
राम लषणसियाबिनुपगपनहीं* करि मुनिवेष फिरहिंबनबनहीं॥

दो०अजिनबसनफलअशनमहि,शयनडासिकुशपात॥

१ महादेवने, २ कीर्तिचन्द्र. ३ सभाके बैठनेवाले. ४ आकाशमें.

बसितरुतरनितसहतदुख, हिमतपबर्षाबात॥२०३॥

यह दुखदाह दहै नित छाती * भूख न बासर नींद न राती ॥
यहि कुरोगकर ओषधि नाहीं * शोधेउँ सकल विश्व मनमाहीं ॥
मातु–कुमति–बढ़ई अघमूला * तेहिं हमार हित कीन्ह बसूला
कलि कुकाठकर कीन्ह कुयंत्रू * गाड़ि अवधि पढ़ि कठिन कुमंत्रू
मोहिंलगि यह कुठाट तेहिं ठाटा * घालिसि सब जग बारहबाटा ॥
मिटै कुयोग राम फिरि आये * बसै अवध नहिं आन उपाये ॥
भरतबचन सुनि मुनि सुख पाई * सबहिं कीन्ह बहुभांति बड़ाई॥
तात करहु जनि शोच विशेखी * सब दुख मिटिहि रामपद देखी॥

दो०करिप्रबोधमुनिबरकहेउ,अतिथिप्राणप्रियहोहु
कन्द मूल फल फूल हम, देहिं लेहु करि छोहु २०४

सुनि मुनिबचन भरतहियशोचू * भयउ कुअवसर कठिन सकोचू॥
जानि गरुइगुरु गिरा बहोरी * चरण बन्दि बोले कर जोरी ॥
शिर धरिआयसुकरियतुम्हारा* परमधर्म यह नाथ हमारा ॥
भरतवचन मुनिबरमन भाये * शुचि सेवक सब निकट बुलाये
चाहिय कीन्ह भरतपहुनाई * कन्द मूल फल आनहु जाई ॥
भलेनाथ कहि तिन्ह शिर नाये * प्रमुदित निज निज काज सिधाये
मुनिहिंशोच पाहुन बड़ नेवता * तस पूजा चाहिय जस देवता ॥
सुनि ऋधि सिधि अणिमादिक आईं*आयसु होय सो करैं गुसाँई ॥

दो०रामविरहव्याकुल भरत, सानुजसकलसमाज
पहुनाई करिहरहु श्रम, कहेउ मुदित मुनिराज२०५

ऋधिसिधिशिरधरिमुनिबरबानी*बड़ भागिनि आपुहिं अनुमानी॥

१ शीत. २ घाम. ३ पवन. ४ कलह. ५ भरद्वाजजीकी बाणी.

कहहिं परस्पर सिधिसमुदाई * अतुलित अतिथि रामलघु भाई
मुनिपदबन्दि करिय सोई आजू * होइ सुखी सब राजसमाजू ॥
असकहि रुचिर रचे गृह नाना * जे बिलोकि बिलखाहिं बिमाना
भोगबिभूति भूरि भरि राषे * देखत जिनहिं अमर अभिलाषे॥
दासी दास साज सब लीन्हे * जुगवत रहहिं मनहिं मन दीन्हे॥
सबसमाज सजि सिधिपलमाहीं * जे सुख सपेहु सुरपुर नाहीं ॥
प्रथमहिं बास दिये सबकेही * सुन्दर सुखद यथारुचि जेही ॥

दो०बहुरिसपरिजनभरतकहँ, ऋषिआयसुअसदीन्ह
बिधिबिस्मयदायकबिभव, मुनिबरतपबलकीन्ह२०६

मुनिप्रभाव जब भरत बिलोका * सब लघु लगे लोकपतिलोका ॥
सुखसमाज नाहिं जाइ बखानी * देखत बिरति बिसारहिं ज्ञानी ॥
आसन शयन सुबसन बिताना * बन बाटिका बिहग मृग नाना॥
सुरभि फूल फल अमियसमाना *बिमल जलाशय बिबिधबिधाना॥
अशन पान शुचि अमित अमीसे* देखि लोक सकुचात यमीसे ॥
सुरसुरभी सुरतरु सबहीके * लखि अभिलाष सुरेश शचीके ॥
ऋतुबसन्त बह त्रिविध बयारी * सबकहँ सुलभ पदारथ चारी ॥
स्रक चन्दन बनितादिक भोगा* देखि हर्ष बिस्मय सबलोगा ॥

दो०सम्पति चकई भरत चक, मुनिआयसुखेलवार
तेहि निशि आश्रम पींजरा, राखे भा भिनुसार२०७

कीन्ह निमज्जन तीरथराजा * नाइ मुनिहिं शिर सहित समाजा
ऋषिआयसु अशीस शिर राखी * करि दण्डवत बिनय बहु भाखी॥
पथगति कुशल साथ सब लीन्हे * चले चित्रकूटहिं चित दीन्हे ॥

१ तौलिबेलायक नहीं. २ देवता. ३ घर. ४ तुच्छ. ५ ज्ञान ६ पक्षी.

रामसखाकर दीन्हे लागू * चलत देह धरि जनुअनुरागू॥
नहिं पदत्राण[१] शीस नहिं छाया* प्रेम नेम व्रत धर्म अमाया॥
लषणराम सिय–पन्थ--कहानी* पूँछत सखहिं[२] कहत मृदुबानी॥
रामबासथल बिटप[३] बिलोके * उर अनुरागि रहत नहिं रोके॥
देखि दशा सुर[४] बर्षहिं फूला * भइ मृदु महि मगु मंगलमूला॥
दो०किये जाहिं छाया जलद[५], सुखद बहत बर वात[६]
तस मगु भयउ न रामकहँ, जस भा भरतहिं जात॥
जड़ चेतन जग जीव घनेरे * जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे॥
ते सब भये परमपदयोगू * भरतदर्श मेटा सब रोगू॥
यह बड़ि बात भरतकी नाहीं * सुमिरत जिनहिं राम मनमाहीं॥
बारक राम कहत जग जेऊ * होत तरणतारण नर तेऊ॥
भरत राम प्रिय पुनि लघु भ्राता* कस न होइ मगु मंगलदाता॥
सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं* भरतहिं निरखि हर्षहिय लहहीं॥
देखि प्रभाव सुरेशहिं शोचू * जग भल भलहिं पोचकहँ पोचू[७]
गुरुसन कहेउ करहु प्रभु सोई * रामहिं भरतहिं भेट न होई॥
दो०रामसकोची प्रेमवश, भरत सुप्रेम–पयोधि॥
बनी बात बिगरन चहत, करिय यतन छल शोधि॥
बचन सुनत सुरगुरु मुसकाने * सहसनयन बिनुलोचन जाने॥
कह गुरु बादिक्षोभ छल छाँडू* इहाँ कपटकरि होइय भाँडू॥
मायापति--सेवकसन माया * करियत उलटि परै सुरराया॥
तब कछु कीन्ह रामरुख जानी * अब कुचाल करि होइहि हानी॥
सुनु सुरेश रघुनाथसुभाऊ * निजअपराध रिसाहिं न काऊ॥

१ जूती. २ निषादसे. ३ वृक्ष. ४ देव. ५ मेघ. ६ पवन. ७ खराब.

जो अपराध भक्तकर करई * रामरोषपावक सो जरई ॥
लोकहु बेद बिदित इतिहासा * यह महिमा जानहिं * दुर्बासा ॥
भरतसरिस को रामसनेही * जग जपु राम राम जपु जेही ॥

दो०मनहुँनआनियअमरपति, रघुपतिभक्तअकाज
अयशलोकपरलोकदुख, दिनदिनशोकसमाज२१०

सुनु सुरेश उपदेश हमारा * रामहिं सेवक परम पियारा ॥
मानत सुख सेवकसेवकाई * सेवकबैर बैर–अधिकाई ॥
यद्यपि सम नहिं राग न रोषू * गहहिं न पाप पुण्य गुण दोषू ॥
कर्म प्रधान बिश्व करि राखा * जोजस करै सो तस फल चाखा॥
तदपिकरहिंसमबिषम बिहारा * भक्त अभक्त हृदयअनुसारा ॥

* एक अम्बरीष नाम राजा परमवैष्णव धर्मज्ञ नीतिमान् होता भया, जिसका ऐसा नियम था कि, अतिथिभोजन कराके पीछे आप भोजन करता, कोई दिन दुर्बासा जायपड़े जो 'अयुताग्रभुक् अर्थात् १०००० दशहजार अपने शिष्योंको भोजन कराय तदनंतर आप भोजन करते थे, ऐसे मुनिको देख राजाने साष्टांग प्रणाम किया और आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, दिया और बोला कि. आज आपको निमंत्रण है, यह सुन दुर्बासा स्नान करनेको गये, कुछ कालात्यय भया और यहाँ राजाने पूर्व दिनमें एकादशीका व्रत किया था, उसदिन द्वादशीमें पारण किया चाहताथा, परंतु द्वादशी थोड़ी थी इसीसे ब्राह्मणोंसे पूछकर भगवानका चरणामृत ले लिया वही पारण भया, इतनेहीमें दुर्बासा ऋषिभी आगये और राजाको चरणामृत लिया जानके बड़ा क्रोध कर अपनी जटा पटक दी, जिससे एक महाघोर मुखसे अंगार छोडती राक्षसी उत्पन्न भई. वह राजाको मारने

१ समदर्शी.

अगुण अलेख अमान एकरस * राम सगुण भे भक्तप्रेमबस ॥
राम सदा सेवकरुचि राखी * बेद पुराण साधु सुर साखी ॥
अस जियजानितजहुकुटिलाई * करहु भरतपदप्रीति सुहाई ॥

दो०रामभक्त परहितनिरत, परदुखदुखी दयाल ॥
भक्तशिरोमणि भरतते, जनि डरपहुसुरपाल २११

सत्यसिन्धु प्रभु सुरहितकारी * भरत रामआयसुअनुसारी ॥
स्वारथविवश विकल तुम होहू * भरतदोष नहिं राउर मोहू ॥
सुनि सुरबर सुरगुरुबरबानी * भा प्रबोध मन मिटी गलानी ॥
बर्षि प्रसून हर्षि सुरराऊ * लगे सराहन भरतस्वभाऊ ॥
यहि बिधि भरतचले मगुजाहीं * दशा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं ॥
जबहिं राम कहि लेहिं उसासा * उमँगत प्रेम मनहुँ चहुँ पासा ॥

चली, परंतु परमभक्त राजा बिलकुल डरा नहीं इतनेमें राजाके रक्षणार्थ भगवान्‌का पठाया सुदर्शन चक्र था, उसने उस राक्षसीको जलादिया और दुर्वासाके पीछे लगा, भगे दुर्वासा, सब देवतोंके शरणमें गये, किसीने रक्षण न किया–पीछे बैंकुंठमें भगवान्‌की शरणमें गये, तब उन्होने कहा, तुम उसी राजाकी शरणमें जावो, ऐसे सुन दुर्वासा एक बरसमें अम्बरीषके पास आये. राजाने बडे मानसे लिया और सुदर्शन चक्रकी स्तुति करके शान्त कर दिया और मुनिको प्रसन्नतापूर्वक भोजन कराके बिदा किया.

---

१ हें इन्द्र ! २ बृहस्पतिजीका उत्तम वाक्य. ३ फूल.

द्रवहिं बचन सुनि कुलिशपषाना * पुरजनप्रेम न जाइ बखाना ॥
बीच बास करि यमुनहिं आये * निरखि नीरलोचनजल छाये ॥

दो०रघुबरवर्ण बिलोकि बर, बारि समेत समाज ।
होत बिरहबारिधिमगन, चढ़े बिबेकजहाज ॥२१२॥

यमुनतीर तेहि दिन करि बासू * भयेउ समयसम सबहिं सुपासू ॥
रातिहिं घाट घाटकी तरणी * आईं अगणित जाइँ न बरणी ॥
प्रात पार भे एकहि खेवा * तोषे रामसखा करि सेवा ॥
चले अन्हाइ नदिहिं शिर नाई * साथ निषादनाथ-लघुभाई ॥
आगे मुनिबर बाहन आछे * राजसमाज जाइ सब पाछे ॥
तेहि पाछे दोउ बन्धु पयादे * भूषण बसन बेष सुठि सादे ॥
सेवक सुहृद सचिवसब साथा * सुमिरत लषण -सीय--रघुनाथा ॥
जहँ तहँ रामबास--बिश्रामा * तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रणामा ॥

दो०मगुबासी नर नारि सुनि, धामकाम तजि धाइ ।
देखि स्वरूप सनेहबश, मुदित जन्मफल पाइ२१३॥

कहहिं सप्रेम एक इकपाहीं * रामलषणसखि होहिं कि नाहीं ॥
बय बपु बसन रूप सोइ आली * शील-सनेह-सरिस समचाली ॥
बेष न सो सखि सीय न संगा * आगे अनी चली चतुरंगा ॥
नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा * सखि सन्देह होत इहि भेदा ॥
तासु तर्क तियगण मनमानी * कहहिं सकल तोहिंसमनसयानी
तेहि सराहि वाणी फुर बूजी * बोली मधुरवचन तिय दूजी ॥
काहि सप्रेम सब कथाप्रसंगू * जेहिबिधि रामराज--रसभंगू ॥

---

१ वज्र. २ जल. ३ ज्ञानरूप जहाजमें. ४ नावें. ५ घरके काम.

भरतहिं बहुरि सराहन लागी * शील सनेह स्वभाव सुभागी ॥

दो०चलत पयादे खात फल,पिता-दीन्ह तजि राज
जात मनावन रघुबरहिं,भरतसरिस को आज २१४

भायप भक्ति भरतआचरणू * कहत सुनत दुखदूषणहरणू ॥
जो कछु कहिय थोर सखि सोई* रामबन्धु अस काहे न होई ॥
हम सब सानुज भरतहिं देखे * भये धन्य युवतीजन लेखे ॥
सुनि गुण देखि दशा पछिताहीं* केकयीजननियोग सुत नाहीं ॥
कोउ कह दूषण रानिहुँ नाहिन* बिधि सबभांति हमाहिं जो दाहिन
कहँ हमलोग बेदबिधिहीना * लघुकुलतिय करतूतिमलीना ॥
बसहिं कुदेश कुगांव कुठामा * कहँ यह दर्श पुण्यपरिणामा ॥
अस अनन्द अचरज प्रतिग्रामा* जनु मरुभूमि कलपतरु जामा॥

दो०भरतदर्श देखत खुलेहु, मगुलोगन्हकर भाग
जनु सिंहलवासिन्ह भयउ,बिधिबश सुलभप्रयाग

निजगुण-सहित रामगुणगाथा * सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा ॥
तीरथ मुनिआश्रम सुरधामा * निरखिनिमज्जहिं करहिं प्रणामा॥
मनहीं मन मांगहिं बर एहू * सीय-राम--पद--पद्म--सनेहू ॥
मिलहिं किरात कोल्ह बनबासी * वैखानस बटु यती उदासी ॥
करि प्रणाम पूँछहिं जेहि तेही * केहि बन लषण रामबैदेही ॥
ते प्रभुसमाचार सब कहहीं * भरतहिं देखि जन्मफल लहहीं ॥
जे जन कहहिं कुशल हमदेखे * ते प्रिय रामलषणसम लेखे ॥
यहिबिधि बूझत सबहिं सुबानी * सुनत राम--बनबास--कहानी ॥

दो०तेहि बासर बस प्रातही, चले सुमिरि रघुनाथ

१ स्त्री. २ मारवाडदेशमें. ३ वानप्रस्थ. ४ ब्रह्मचारी. ५ संन्यासी.

रामदरशकी लालसा,भरतसरिस सब साथ २१६

मंगल शकुन होहिं सबकाहू * फरकहिं सुखद बिलोचन बाहू
भरतहिं सहित समाज उछाहू * मिलिहहिं राम मिटहिं दुखदाहू
करत मनोरथ जस जिय जाके * जाहिं सनेहसुरा[1] सब छाके ॥
शिथिलअंगमगपगडगडोलहिं * बिह्वल बचन प्रेमबश बोलहिं॥
रामसखा तेहि समय देखावा * शैलशिरोमणि सहजसुहावा ॥
जासु समीप सरितपयतीरा * सीयसमेत बसहिं दोउ बीरा ॥
देखि करहिं सब दण्डप्रणामा * कहि जय जानकिजीवन रामा
प्रेममग्न अस राजसमाजू * जनु फिरि अवध चले रघुराजू॥

दो०भरतप्रेम तेहि समय जस,तसकहि सकै नशेषु
कबिहिं अगमजिमिब्रह्मसुख,अहममममलिन जनेषु॥

सकल सनेहशिथिल रघुबरके * गये कोश दुइ दिनकर ढरके ॥
जल थल देखि बसे निशि बीते * कीन्ह गमन रघुनाथ पिरीते *
उमा[2] राम रजनीअवशेषा * जागे सीय स्वप्न अस देषा ॥
सहित समाज भरत जनु आये * नाथ बियोगताप--तनुताये ॥
सकल[3] मलिनमन दीन दुखारी * देखी सासु आन[4]–अनुहारी ॥
सुनि सियस्वप्न भरे जललोचन * भये शोचबश शोचबिमोचन ॥
लषण स्वप्न यह नीक न होई * कठिन कुचाह सुनाइहि कोई॥
अस कहि बन्धुसमेत अन्हाने * पूजि पुरारि[5] साधु सन्माने ॥

छंद॰ सन्मानिसुरमुनिबन्दिबैठे उतरदिशिदेखतभये
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे बिकलप्रभुआश्रम गये
तुलसी उठे अवलोकि कारण काह चितचकितरहे

१ स्नेहरूपी मदिरा. २ हे पार्वती ! ३ सब. ४ दूसरी तरहकी. ५ महादेव.

सबसमाचारकिरातकोलहन आइ तेहि अवसर कहे

सो०सुनत सुमंगलबैन,मन प्रमोद तनु पुलकभर
शरद[1]-सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल ॥ ९ ॥

बहुरि शोचवश भे सियरमनू * कारण कवन भरतआगमनू ॥
एक आइ अस कहा बहोरी * सेन संग चतुरंग न थोरी ॥
सो सुनि रामहिं भा अतिशोचू * इत पितुबच उत बन्धुसँकोचू ॥
भरतस्वभाव समुझि मनमाहीं * प्रभुचितहित थिति पावत नाहीं
समाधान तब भा यह जने * भरत कहेमहँ साधु सयाने ॥
लषण लखेउ प्रभुहृदयखँभारू * कहत समयसम नीतिविचारू ॥
बिनु पूँछे कछु कहउँ गुसाँई * सेवक समय न ढीठ ढिठाई ॥
तुम सर्वज्ञशिरोमणि स्वामी * आपुनि समुझि कहौं अनुगामी॥

दो०नाथ सुहृदसुठि सरलचित,शीलसनेहनिधान
सबपर प्रीतिप्रतीति जिय, जानिय आपुसमान२१८

बिषयी जीव पाइ प्रभुताई * मूढ मोहवश होहिं जनाई ॥
भरत नीतिरत साधु सुजाना * प्रभुपद प्रेम सकल जग जाना ॥
तेऊ आज राजपद पाई * चले धर्म-मर्याद मिटाई ॥
कुटिल कुबन्धु कुअवसर ताकी * जानि रामबनवास एकाकी ॥
करि कुमंत्र मन साजि समाजू * आये करन अकण्टक राजू ॥
कोटिप्रकार कलपि कुटिलाई * आये दल बटोरि दोउ भाई ॥
जो जिय होति न कपटकुचाली * केहि सोहात रथ[2]बाजिगजाली
भरतहिं दोष देइ को जाये * जग बौराइ राजपद पाये ॥

---

१ शरदऋतुके कमलसे नेत्र. २ रथ, घोडे और हाथिनकी पांति.

दो० *शशिगुरुतियगामी† नहुष, चढेउभूमिसुरयान ।
लोकबेदते बिमुख भा, अधम को बेन‡समान २१९ ॥

* चंद्रमाने गुरु बृहस्पतिकी स्त्री ताराको भोग किया किन्तु कुछ बिचार न किया. पीछे उसके गर्भ रहगया सो पुत्र भया, तब बृहस्पति बोले हमारा है. और चन्द्रमा बोला, मेरा है. गुरु बोले--क्षेत्र हमारा है. चन्द्रमा बोला, बीर्य हमारा है. तब देवतोंने न्यायकर, पुत्र चन्द्रमाको दिलाया. वही बुध भया.

† राजा नहुष बड़ा प्रतापी चक्रवर्ती भया. एक समय इन्द्र वृत्रासुरको मार उसकी हत्याके भयसे मानससरोवरमें कमलनालके मध्यमें रहते भये. उस बखतमें इन्द्रासन खाली देख, बृहस्पतिजीने नहुष नाम राजाको ले, इन्द्रासनमें बैठाया. उसने अच्छीतरेसे त्रिलोकीकी शिक्षा करी; परंतु कुछ दिनके बाद अभिमान आया. तब कहा कि--इन्द्रासनमें बैठ मैंने क्या किया ? जो इन्द्राणीको भोग न किया. ऐसे बिचार, इन्द्राणीके पास संदेसा भेजा, कि--हम इसबखतमें इन्द्र हैं. सो हमको रतिदान दो. ऐसे सुन, इन्द्राणी कांपी और बृहस्पतिजीके पास गई और अपना दुःख निबेदन किया, तब गुरुजीने कहा--ऐसा उस्से बोलो कि--तुम सतर्षियोंको कहार बनाके पीनसमेंसे आवो. तब इन्द्राणीने ऐसेही कहला भेजा. कामातुर नहुषने सतर्षियोंको बुलाय, बड़ी प्रार्थना करी कि--आप थोड़ा परिश्रम करो, तो मुझे इन्द्राणी प्राप्त हो जाय. ऋषियोंने कहा, बहुत अच्छा है. ऐसे कह, पालकी उठाई तो ऊपर बैठा नहुष बोला, सर्प सर्प (अर्थात् जल्दी जल्दी चलो). तब ऋषियोंने शाप दिया कि, जा तू सर्प हो. उसी बखत राजा पतित हो,

*सहसबाहु †सुरनाथ ‡त्रिशंकू * केहि न राजमद दीन्ह कलंकू

सर्पयोनिमें गया. फिर देवतालोगोंने इन्द्रको लाय, इन्द्रासनमें बैठाया.

‡ राजा बेन अंगनाम राजाका पुत्र मृत्युकी कन्या सुनीथामें पैदा हुआ. परंतु मातृपक्षमें पड़ गया लडकाईहींसे कुकर्मी हुवा. साथके खेलनेवाले लडकोंको पानीमें डुबा देवे, महलसे डाल देवे, कुंयेमें डाल देवे, चोरी करे, ऐसें कुपुत्र बेनके दुःखसे महादुःखी हो, राजाअंग एक दिन अर्धरात्रको उठके, वनको चले गये, फिर मिले नहीं तब तो बेन राज्यासनमें बैठा और हुकुम लगाया कोई यज्ञ, हवन मत करो, मेराही पूजन गुणानुवाद करो, यह सुन, सब मुनिलोग राजाके पास गये और बोले सनातनधर्मका नाश मत करो. तब बेनने कहा–तुम लोग सब अज्ञानी हो; देखो सब देवोंको रूप राजा है, सो मेराही पूजन करो. ऐसे सुन, ब्राह्मणोंने शाप दे. अपने हुंकारशब्दसे मार डाला. परंतु बिना राजाके देशमें बडा उपद्रव होने लगा. तब फेर बेनकी देहको मथन किया तो जांघसे एक काला २ पुरुष निकला, उसको मुनियोंने कहा निषाद अर्थात् बैठ. उसीसे निषादोंकी जाति हुई. और फेर मथन किया तो बेनके दक्षिण भुजासे नारायणका अवतार पृथुजी तथा उनकी स्त्री लक्ष्मीके अंशसे बाम भुजासे उत्पन्न भई. उसका नाम अर्चि होता भया. पुनः ऋषियोंने पृथुजी महाराजको राज्यासनमें बैठाय, अभिषेक किया.

* सहस्रबाहु राजा दत्तात्रेयके प्रसादसे बडा प्रतापी भया. सो कोई दिन जंगलमें शिकार खेलते २ जमदग्निऋषिके आश्रममें गया. उन्होंने बडा सत्कार किया और कहा कि–हमारे यहां सेनासहित आपको नि-मंत्रण है. तब राजाने आश्चर्य मान, कबूल किया. तब तो थोड़ेही कालमें सबको अनेक प्रकारके ब्यंजनोंसे भोजन करवा दिया. तब

भरत कीन्ह यह उचित ऊपाऊ * रिपुऋण रंच न राखब काऊ॥
एक कीन्ह नहिं भरत भलाई * निदरे राम जानि असहाई ॥
समुझि परिहि सो आज बिशेखी * समर सरोष रामरुख देखी ॥
यतना कहत नीतिरसभूला *रणरसबिटपपुलक जिमि फूला

राजाने मुनिसे पूँछा कि यह कैसी बात है; मुनिने कहा कि-हमारे यहां कामधेनु है; उसीके प्रभावसे यह सब होगया. तब राजाने कहा कि-यह गऊ हमको दो; दूसरी हमसे जितनी चाहो तितनी लो. परंतु जमदग्निने न दिया. तब राजाने जोरावरीसे लिया, और जमदग्निका शिर काट लिया और चला गया, पीछे परशुरामजी आये, उन्होंने पिताको मरा खेद, बड़ा क्रोध कर. प्रातिज्ञा करी कि-अब पृथ्वीमें एक क्षत्रिय न रहने पायेगा. फेर अपना फरसा ले सहस्रबाहुको मार डाला. और इक्कीस बखत पृथ्वीको निःक्षत्र किया.

† इन्द्रकी कथा बालकाण्डमें अहल्याके इतिहासमें देखो.

‡ त्रिशंकु राजा अपने राज्याभिमानसे सदेह स्वर्ग जाने चाहा और बसिष्ठजीसे कहा. उन्होंने जबाब दिया तब उनके लडकोंसें कहा-उन लोगोंनेभी जबाब दिया और बोले कि-तू हमारे पिता पुत्रोंमें विरोध कराना चाहता है इस्से जा तू चाण्डाल हो. तब त्रिशंकु चाण्डाल हो विश्वामित्रके पास गया और अपना मनोरथ सब कह सुनाया. तब तो विश्वामित्रने यज्ञ कराया. और सबको निमंत्रण दिया, परंतु कोई देवता और महर्षि न गये. तब विश्वामित्रने अपने तपोबलसे नये देव उपजाये और जोरावरीसे सदेह स्वर्गको भेजा जब देवतोंने नीचेको ढकेल दिया. तब विश्वामित्रने आते त्रिशंकुको देख, अपने तपोबलसे आकाशमें रोंक दिया तो 'नीचेको मुख ऊपरको पांव' वैसेही उलटा टँग गया आजभी वह राजा वैसेही टँगा है.

प्रभुपद बन्दि शीश रज राखी * बोले सत्य सहजबल भाखी ॥
अनुचित नाथ न मानब मोरा * भरत हमहिं उपचार न थोरा॥
कहँलागि सहिय रहिय मन मारे * नाथसाथ धनु हाथ हमारे ॥

दो० क्षत्रिजाति रघुकुलजनम, रामअनुज जगजान॥
लातहु मारे चढ़त शिर, नीच को धूरिसमान२२०

उठि कर जोरि रजायसु माँगा * मनहुँ बीररस सोवत जागा ॥
बाँधि जटा शिर कसि कटि भाथा* साजि शरासन सायक हाथा॥
आजु रामसेवकयश लेऊँ * भरतहि समर सिखावन देऊँ॥
रामनिरादरकर फल पाई * सोवहु समरसेज दोउ भाई ॥
आइ बना भल सकलसमाजू * प्रगट करौं रिस पाछिल आजू॥
जिमि करिनिकर दलै मृगराजू * लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू॥
तैसहि भरतहिं सेनसमेता * सानुज निदरि निपातौं खेता ॥
जो सहाय कर शङ्कर आई * तदपि हतौं रण रामदुहाई ॥

दो०अतिसरोषभाषे लषण, लखिसुनि शपथप्रमान
समय बिलोकत लोकपति, चाहत भभरि भगान ॥

जग भयमगन गगन भइ बानी * लषणबाहुबल विपुल बखानी॥
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा * को कहि सक को जाननिहारा॥
अनुचित उचित काज कछु होई * समुझि करिय भल कह सबकोई
सहसा करि पाछे पछिताहीं * कहहिं बेद बुध ते बुध नाहीं ॥
सुनि सुरबचन लषण सकुचाने * राम सीय सादर सनमाने ॥
कही तात तुम नीति सुहाई * सबते कठिन राजमद भाई ॥
जो अँचवैं नृप माते तेई * नाहिन साधुसभा जिन्ह सेई ॥
सुनहु लषण भल भरतसरीखा * बिधिप्रपंचमहँ सुना न दीखा ॥

दो०भरतहिं होइ न राजमद, बिधिहरिहरपद पाइ॥
कबहुँ कि काँजीसीकरन्हि, क्षीरसिंधु बिनशाइ२२२

तिमिरतरुणतरणिहिंसकगिलई * गगन मगन मगु मेघहिं मिलई
गोपदजल बूड़हिं घटयोनी * सहजक्षमा बड़ि छाँड़हि क्षोणी॥
मशक फूँक बरु मेरु उड़ाई * होइ न नृपमद भरतहिं भाई॥
लषण तुम्हार शपथ पितुआना * शुचि सुबंधु नहिं भरतसमाना॥
सगुण क्षीर अवगुण जल ताता * मिले रचे परपंच बिधाता॥
भरत हंस रबिबंश तड़ागा * जन्मि कीन्ह गुणदोषविभागा॥
गहि गुणपय तजि अवगुणबारी * निजयश जगत कीन्ह उजियारी
कहत भरतगुण-शील-सुभाऊ * प्रेमपयोधि-मग्न रघुराऊ॥

दो०सुनि रघुबरबाणी बिबुध, देखि भरतपर हेतु॥
लगे सराहन सहसमुख,प्रभुको कृपानिकेतु॥२२३॥

जो न होत जग जन्म भरतको * सकलधर्मधुर धरणि धरत को॥
कबिकुलअगम भरतगुणगाथा * को जानै तुमबिन रघुनाथा॥
लषण रामसिय सुनि सुरबानी * अतिसुख लहेउ न जाइ बखानी
इहाँ भरत सबसहित सुहाये * मंदाकिनी पुनीत अन्हाये॥
सरित-समीप राखि सब लोगा * माँगि मातु-गुरु-सचिवनियोगा
चले भरत जहँ सिय-रघुराई * साथ निषादनाथ-लघुभाई॥
समुझि मातुकरतब सकुचाहीं * करत कुतर्क कोटि मनमाहीं॥
राम लषण सिय सुनि मम नाऊँ * उठिजनि अनत जाहिंतजिठाऊँ

दो०मातुमतेमहँ जानि मोहिं, जो कछुकरहिंसोथोर
अघ अवगुण तजिआदरहिं,समुझि आपनीओर२२४

जोपरिहरहिं मलिन मन जानी * जो सनमानहिं सेवक मानी॥

मोरे शरण रामकी पनहीं * राम सुस्वामि दोष सब जनहीं ॥
जग यशभाजन चातक मीना * नेम प्रेम निजनिपुण नबीना ॥
अस मन गुणत चले मग जाता * सकुचि सनेह शिथिल सब गाता
फेराति मनहुँ मातुकृत खोरी * चलत भक्तिबल धीरज धोरी ॥
जब समुझहिं रघुनाथसुभाऊ * तब पथ परत उतावल पाऊ ॥
भरतदशा तेहि अवसर कैसी * जलप्रवाह जल अलिगण जैसी ॥
देखि भरतकर शोच सनेहू * भा निषाद तेहि समय बिदेहू ॥

दो०लगे होन मंगलशकुन, सुनि गुणि कहत निषाद
मिटिहि शोच होइहि हरष, पुनि परिणाम बिषाद २५

सेवकवचन सत्य सब जाने * आश्रमनिकट जाय नियराने ॥
भरत दीख बनशैलसमाजू * मुदित क्षुधित जनु पाइ सुराजू ॥
ईतिभीति जनु प्रजा दुखारी * त्रिविधतापपीडित ग्रहभारी ॥
पाइ सुराज सुदेश सुखारी * भई भरतगति तेहि अनुहारी ॥
रामबास-बन सम्पति भ्राजा * सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा ॥
सचिव बिराग बिबेक नरेशू * बिपिन सुहावन पावनदेशू ॥
भट यम नेम शैलरजधानी * शांति सुमति शुचि सुंदररानी ॥
सकल-अंग-सम्पन्न सुराऊ * रामचरणआश्रित चित चाऊ ॥

दो०जीति मोहमहिपालदल, सहित बिबेक भुआल
करत अकण्टक राजपुर, सुख सम्पदा सुकाल २२६

बनप्रदेश मुनिबास घनेरे * जनु पुर नगर गाँव गण खेरे ॥
विपुल बिचित्र बिहगमृगनाना * प्रजा समाज न जाइ बखाना ॥
खरहा करि हरि बाघ बराहा * देखि महिष वृक साज सराहा ॥
बैर बिहाय चरहिं यकसंगा * जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरंगा ॥

झरना झरहिं मत्तगज गाजहिं *मनहुँ निशानबिबिधबिधिबाजहिं
चक चकोर चातक शुक पिकगन * कूजत मंजु मराल मुदितमन॥
अलिगण गावत नाचत मोरा * जनु सुराज मंगल चहुँओरा ॥
बेलि बिटप तृण सफल सफूला * सब समाज मुदमंगलमूला ॥

दो०रामशैलशोभा निरखि, भरतहृदय अतिप्रेम॥
तापस तपफल पाइ जिमि, सुखी सिराने नेम२२७

तब केवट ऊँचे चढ़ि जाई * कहा भरतसन भुजा उठाई ॥
नाथ देखु यह बिटप बिशाला * पाकर जम्बु रसाल तमाला ॥
तिन तरुबरन्हमध्य बट सोहा * मंजु बिशाल देखि मनमोहा ॥
नील सघन पल्लव फल लाला * अबिचल छाँह सुखद सबकाला॥
मानहुँ तिमिर अरुणमयराशी * बिरची बिधि सकेलिसुषमाशी॥
तेहि तरु सरित-समीप गुसाँई * रघुबरपर्णकुटी जहँ छाई ॥
तुलसितरुबर बिबिध सुहाये *कहुँ सियपिय कहुँ लषण लगाये
बटछाया बेदिका बनाई * सिय निजपाणिसरोज सुहाई ॥

दो०जहँ बैठैं मुनिगणसहित, नित सिय राम सुजान
सुनहिं कथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान२२८

सखाबचन सुनि बिटप निहारी * उमँगेउ भरतबिलोचन बारी ॥
करत प्रणाम चले दोउ भाई * कहत प्रीतिशारद सकुचाई ॥
हर्षहिं निरखि रामपदअंका * मानहुँ पारस पायहु रंका ॥
रजशिरधरि हियनयनलगावहिं * रघुबरमिलनसरिससुखपावहिं॥
देखि भरतगति अकथ अतीवा *प्रेममगन मृग खग जड़ जीवा॥
सखहिं सनेहबिबश मग भूला * कहि सुपंथ सुर वर्षहिं फूला॥

---

१ शब्द करते हैं. २भमरोंकासमुदाय. ३ आम्र.४अंधकार. ५शोभासरीखी

खि सिद्ध साधक अनुरागे * सहजसनेह सराहन लागे ॥
न भूतल भाव भरतको *अचर सचर चर अचर करत को

३०प्रेमअमियमंदर बिरह, भरत पयोधि गँभीर ॥
थे प्रगटे सुरसाधुहित, कृपासिंधु रघुबीर॥२२९॥

ासमेत मनोहर जोटा * लखेउ न लषण सघनबनओटा॥
भरत दीख प्रभुआश्रम पावन * सकलसुमंगलसदन सुहावन ॥
करत प्रबेश मिटा दुखदावा * जनु योगी परमारथ पावा ॥
देखे लषण भरत प्रभुआगे * पूँछत बचन कहत अनुरागे ॥
शीश जटा कटि मुनिपट बाँधे * तूण कसे कर शर धनु काँधे ॥
बेदीपर मुनि-साधु-समाजू * सीयसहित राजत रघुराजू ॥
वल्कलबसन जटिलतनुश्यामा * जनु मुनिवेष कीन्ह रतिकामा
करकमलन धनु सायक फेरत * जीकी जरनि हरत हँसि हेरत॥

दो०लसत मंजु मुनिमण्डली, मध्य सीय रघुचंद॥
ज्ञानसभा जनु तनु धरे, भक्ति सच्चिदानंद ॥२३०॥

सानुज सखासमेत मगन मन * बिसरे हर्ष शोक सुखदुखगन ॥
पाहि नाथ कहि पाहि गुसाईं * भूतल परे लकुटकी नाईं ॥
बचन सप्रेम लषण पहिचाने * करत प्रणाम भरत जिय जाने॥
बंधुसनेह सरस यहि ओरा * उत साहेबसेवा बरजोरा ॥
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई * सुकबि लषणमनकी गति भनई॥
रहे राखि सेवापर भारू * चढी चंग जनु खैंच खिलारू ॥
कहत सप्रेम नाइ महि माथा * भरत प्रणाम करत रघुनाथा ॥
उठे राम सुनि प्रेमअधीरा * कहुँ पट कहुँ निषंग धनु तीरा

१पर्वतनमें पानी मनुष्य जड. २कमरमें. ३हाथमें. ४शोभत. ५वक्कलके वस्त्र.

दो० बरबस लिये उठाय उर, लाये कृपानिधान ॥
भरत रामकी मिलन लखि, बिसरे सबहिं अपान २३१

मिलन प्रीतिकिमि जाहिबखानी * कबिकुल अगम कर्म मन बानी ॥
परमप्रेमपूरण दोउ भाई * मन बुधिचित अहमिति बिसराई
कहहु सुप्रेम प्रगट को करई * केहि छाया कविमति अनुसरई
कबिहिं अर्थ आखर बल साँचा * अनुहर तालगातिहिं नट नाचा
अगम[2] सनेह भरत-रघुबरको * जहँ न जाइ मनाबिधि हरि हरको
सो मैं बर्णि कहौं केहि भाँती * बाजु सुराग कि गाडरि ताती
मिलनि बिलोकि भरतरघुबरकी * सुरगण सभय धुकधुकी धरकी ॥
समुझाये सुरगुरु जड जागे * वर्षि प्रसून प्रशंसन लागे ॥

दो० मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटेउ राम ॥
भूरि भाग्य भेंटे भरत, लक्ष्मण करत प्रणाम २३२

भेटेउ लषण ललकि लघु भाई * बहुरि निषाद लीन्ह उर लाई ॥
पुनि मुनिगण दोउ भाइन बन्दे * अभिमत आशिष पाइ अनन्दे ॥
सानुज भरत उमगि अनुरागा * धरि शिर सियपदपद्मपरागा ॥
पुनि पुनि करत प्रणाम उठाये * सियकरकमल परसि बठाये ॥
सीय अशीश दीन्ह मनमाहीं * मग्न सनेह देहसुधि नाहीं ॥
सबबिधि सानुकूल लखि सीता * भे अशोच उर अपडर बीता ॥
कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूछा * प्रेम भरा मन निजगति छूछा ॥
तेहि अवसर केवट धीरज धरि * जोरि पाणि बिनवत प्रणाम करि

दो० नाथ साथ मुनिनाथके, मातु सकल पुरलोग ॥
सेवक सेनप सचिव सब, आये बिकल बियोग २

१ देहके कर्म. २ गमरहित वा अथाह. ३ ऊन धुनकनेकी ताँति.

शीलसिन्धु सुनि गुरुआगमनू * सीयसमीप राखि रिपुदमनू ॥
चले सवेग राम तेहिं काला * धीर धर्मधुर दीनदयाला ॥
गुरुहिं देखि सानुज अनुरागे * दण्डप्रणाम करन प्रभु लागे ॥
मुनिवर धाइ लिये उर लाई * प्रेम उमँगि भेंटे दोउ भाई ॥
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू * कीन्ह दूरिते दण्डप्रणामू ॥
रामसखा ऋषि बरबस भेंटे * जनु महि लुटत सनेह समेटे ॥
रघुपतिभक्ति सुमंगल-मूला * नभ सराहिं सुर वर्षहिं फूला ॥
यहि सम निपट नीच कोउ नाहीं*बड़ बासिष्ठसम को जगमाहीं ॥

दो०जेहिलखि लषणहुते अधिक, मिले मुदित मुनिराउ
सो सीतापतिभजनको, प्रगट प्रताप प्रभाउ २३४

आरत लोग राम सब जाना * करुणाकर सुजान भगवाना ॥
जो जेहि भांति रहा अभिलाषी* तेहि तेहिकी तैसी रुचि राखी॥
सानुज मिलि पलमहँ सबकाहू* कीन्ह दूरि दुख दारुण दाहू ॥
यह बड़िबात रामकै नाहीं * जिमि घेटकोटि एक रवि छाहीं
मिलि केवटहि उमँगि अनुरागा* पुरजन सकल सराहहिं भागा ॥
देखी राम दुखित महतारी * जनु सुवेलिअवली हिममारी॥
प्रथम राम भेंटे कैकेयी * सरल स्वभाव भक्ति मति भेयी
पग परि कीन्ह प्रबोध बहोरी * कालकर्मबिधिशिर धरि खोरी

दो०भेंटे रघुवर मातु सब, करि प्रबोध परितोष ॥
अस्व ईशआधीन जग, काहु न देइय दोष २३५

गुरुतियपद बन्दे दोउ भाई * सहित विप्रातिय जे सँग आई ॥
गंगगौरिसम सब सनमानी * देहिं अशीस मुदित मृदु बानी ॥

१ बहुत. २ घडा. ३ भिगोई. ४ माता. ५ अरुधंतीके चरण.

गहि पद लगे सुमित्राअंका * जनु भेटी सम्पति अतिरंको ॥
पुनि जननीचरणन दोउ भ्राता * परे प्रेमब्याकुल सब गाता ॥
अतिअनुराग अम्ब उर लाये * नयन सनेहसलिल अन्हवाये ॥
तेहि अवसरकर हर्ष बिषादू * किमि कबि कहै मूक जिमिस्वादू
मिलिजननिहिं सानुज रघुराऊ * गुरुसन कहेउ कि धारिय पाऊ॥
पुरजन पाइ मुनीश–नियोगू * जलथल तकि तकि उतरे लोगू॥

दो०महिसुर मंत्री मातु गुरु, घने लोग लै साथ ॥
पावनआश्रम गमन किय, भरत लषण रघुनाथ २३६

सीय आइ मुनिबरपग लागी * उचित अशीस लही मन माँगी ॥
गुरुपत्निहिं मुनितियन्हसमेता * मिलि सुप्रेम कहि जाइ न जेता॥
बन्दि बन्दि पद सिय सबहीके * आशिषबचन लहे प्रिय जीके ॥
सासु सकल जब सीय निहारी * मूँदेउ नयन सहमि सुकुमारी ॥
परी बधिकबश मनहुँ मराली[३] * काह कीन्ह करतार कुचाली ॥
तिन्हसियनिरखिनिपटदुखपावा * सो सब सहिय जो दैव सहावा ॥
जनकसुता तब उर धरि धीरा * नीलनलिनलोचन[४] भरि नीरा ॥
मिली सकल सासुन्ह शिर नाई * तेहि अवसर करुणा महि छाई ॥

दो०लागिलागिपगसबनिसिय,भेंटतिअतिअनुराग
हृदयअशीसहिंप्रेमबश, रहिहौभरीसुहाग॥२३७॥

बिकलसनेह सीय सब रानी * बैठन सबहिं कहेउ गुरु ज्ञानी ॥
प्रथम कही जगगति मुनिनाथा * कहेउ कछुक परमारथगाथा ॥
नृपकर सुरपुरगमन सुनावा * सुनि रघुनाथ दुसह दुखपावा ॥
मरणहेतु निजनेह बिचारी * भे अतिबिकल धीरधुरधारी ॥

१ दरिद्रीने. २ वसिष्ठजीकी आज्ञा. ३ हांसिनी. ४ श्यामकमलवत् नेत्रोंमें.

कुलिशकठोर सुनत कटुबानी * बिलपत लषण सीय सब रानी ॥
शोकबिकलअतिसकलसमाजू * मानहुँ राज अकाजेउ आजू ॥
मुनिवर बहुरि राम समुझाये * युतसमाज सुरसरित अन्हाये ॥
व्रतनिरम्बुतेहिदिनप्रभुकीन्हा * मुनिहुँ कहे जल काहु न लीन्हा॥

दो०भोर भये रघुनन्दनहिं, जो मुनि आयसु दीन्ह ॥
श्रद्धाभक्तिसमेत प्रभु, सो सब सादर कीन्ह ॥२३८

करि पितुक्रिया बेदजसबरणी * भे पुनीत पातकतमतरणी ॥
जासु नाम पावकअघतूला * सुमिरत सकल-सुमंगलमूला ॥
शुद्ध सो भये साधुसम्मत अस * तीरथआवाहन सुरसरि जस ॥
शुद्ध भये दुइबासर बीते * बोले गुरुसन राम पिरीते ॥
नाथ लोग सब निपट दुखारी * कन्दमूलफलअम्बु-अहारी ॥
सानुज भरत सचिव सब माता * देखि मोहिं पलजिमि युगजाता॥
सबसमेत पुर धारिय पाऊ * आपु इहाँ अमरावति राऊ ॥
बहुत कहेहुँ सब कियहुँ ढिठाई * उचित होउ तस करिय गुसाँई ॥

दो०धर्महेतु करुणायतन, कस न कहहु अस राम ॥
लोग दुखित दिन दुइ दरश, देखि लहहिं विश्राम ३९

[illegible]बचन सुनि सभय समाजू * जनु जलनिधिमहँ बिकल जहाजू
सुनि मुनिगिरा सुमंगलमूला * भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला ॥
पावन पय तिहुँ काल अन्हाहीं * जेहिं बिलोकि अघओघ नशाहीं
मंगलमूरति लोचन भरि भरि * निरखहिं हर्षि दण्डवत करि करि
राम शैल बन देखन जाहीं * जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं
झरना झरहिं सुधासम बारी * त्रिविधतापहर त्रिविध बयारी ॥

१ वज्रतुल्य कठोर. २ पापरूप अंधकारको सूर्य. ३ पापसमूह.

बिटप बेलि तृण अगणितजाती * फल प्रसून पल्लव बहुभाँती ॥
सुन्दर शिला सुखद तरुछाहीं * जाइ बर्णि बनछबि केहि पाहीं

दो०सरित सरोरुह जलबिहग, कूजत गुंजत भृंग॥
बैरबिगत बिहरत बिपिन, मृग बिहंग बहुरंग २४०

कोल्ह किरात भिल्ल बनवासी * मधु शुचि सुंदर स्वादु सुधासी
भरि भरि पर्णपुटी रचि रूरी * कन्द मूल फल अंकुर जूरी ॥
सबहिं देहिं करि बिनय प्रणामा * कहि कहि स्वाद भेद गुण नामा
देहिं लोग बहुमोल न लेहीं * फेरत राम-दोहाई देहीं ॥
कहहिं सनेहमग्न मृदु बानी * मानत साधु प्रेम पहिचानी ॥
तुम सुकृती हम नीच निषादा * पावा दर्शन राम-प्रसादा ॥
हमहिं अगम अतिदर्श तुम्हारा * जस मरुधरणि देवसरिधारा ॥
राम कृपालु निषाद नेवाजा * परिजन प्रजा चलिय जस राजा

दो०यहजियजानिसकोचतजि,करियछोहलखिनेहु
हमहिंकृतारथकरनलगि,फलतृणअंकुरलेहु २४१

तुम प्रिय पाहुन बन पगु धारे * सेवायोग न भाग हमारे ॥
देब कहा हम तुमहिं गुसाँई * ईंधन पात किरातमिताई ॥
यह हमार अतिबड़ सेवकाई * लेहिं न बासन बसन चुराई ॥
हम जड़ जीव जीवगणघाती * कुटिल कुचाली कुमति कुजाती
पाप करत निशि बासर जाहीं * नहिं पट कटि नहिं पेट अघाहीं॥
स्वप्नेहु धर्मबुद्धि कस काऊ * यह रघुनन्दन-दर्शप्रभाऊ ॥
जबते प्रभुपदपद्म निहारे * मिटे दुसह दुख दोष हमारे ॥
बचन सुनत पुरजन अनुरागे * तिन्हके भाग सराहन लागे ॥

१ पत्थर. २ कमल. ३ भ्रमर. ४ ममाखी या शहद. ५ अमृतसी. ६ दोने.

छंद॥ लागे सराहन भाग सब अनुराग बचन सुनावहीं॥
बोलनि मिलनि सिय राम चरण सनेह लखि सुख पावहीं
नर नारि निदरहिं नेह निज सुनि कोल भिल्लन की गिरा
तुलसी कृपा रघुवंशमणि की, लोह लै नौका तरा ॥११॥
सो०॥ बिहरहिं बन चहुँ ओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब
जल ज्यों दादुर[2] मोर, भये पीन[3] पावस प्रथम ॥ १० ॥
पुरजन नारि मग्न अति प्रीती * बासर[4] जाहिं पलक सम बीती ॥
सीय सासु प्रति बेष[5] बनाई * सादर करहि सरिस सेवकाई ॥
लखा न मर्म राम बिनु काहू * माया सब सिय मायानाहू[6] ॥
सीय सासु सेवावश कीन्ही * तिन्ह लहि सुख शिख आशिष दीन्ही
लखि सिय सहित सरल दोउ भाई * कुटिल रानि पछिताइ अघाई ॥
अब जिय महँ याचति कैकेयी * मोहिं बीचु बिधि मीचु न देई ॥
लोकहु बेद–बिदित कबि कहहीं * राम बिमुख खल नरकन लहहीं ॥
यह संशय सबके मन माहीं * राम गमन विधि अवध कि नाहीं ॥
दो०॥ निशि न नींद नहिं भूख दिन, भरत बिकल सुठि शोच
नीच कीच बिच मग्न जस, मीन हिं सलिल सकोच २४२
कीन्ह मातु मिसु काल कुचाली * ईति–भीति जस पाकत शाली ॥
केहि बिधि होइ राम अभिषेकू * मोहिं अब फुरत उपाय न एकू
अवशि फिरहिं गुरु आयसु मानी * पुनि पुनि कहब राम रुचि जानी ॥
मातु कहे बहुरहिं रघुराऊ * राम जननि हठ करब कि काऊ
मोहिं अनुचर कर केतिक बाता * तेहि महँ कुसमय बाम बिधाता
जो हठ करौं तौ निपट कुकर्मू * हरगिरि ते गुरु सेवक धर्मू ॥

१ बाणी. २ मेंडक. ३ मोटे. ४ दिन. ५ दूसरे रूप. ६ मायाके पति.

एकौ युक्ति न मन ठहरानी * शोचत भरतहिं रैन[1] सिरानी ॥
प्रात अन्हाइ प्रभुहिं शिर नाई * बैठत पठये ऋषय बुलाई ॥

दो०गुरुपदकमल प्रणाम करि, बैठे आयसु पाइ ॥
बिप्र महाजन सचिव सब, जुरे सभासद आइ॥२४३॥

बाले मुनिबर समय–समाना * सुनहु सभासद भरत सुजाना ॥
धर्म–धुरीण भानुकुल–भानू * राजाराम स्ववश भगवानू ॥
सत्यसिंधु पालक–श्रुतिसेतू * राम–जन्म जग-मंगल--हेतू ॥
गुरुपितुमातु--वचन- अनुसारी * खलदलदलन[2] देवहितकारी ॥
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ * कोउ न रामसम जान यथारथ ॥
बि[3]धि[4]हरि[5]हर[6]शशि[7]रविदिकपाला* माया जीव कर्म कलिकाला ॥
अहिप महिप जहँलगि प्रभुताई * योगसिद्धि निगमागम गाई ॥
करि बिचार जिय देखहु नीके * रामरजाय शीश सबहीके ॥

दो०राखे रामरजायरुख, हम–सबकर हित होइ ॥
समुझि सयाने करहु अब, सबमिलि सम्मत सोइ ॥

सबकहँ सुखद रामअभिषेकू * मंगल--मूल मोद--मगु एकू ॥
केहिबिधि अवध चलहिं रघुराई * कहहु समुझि सोइ करौं उपाई ॥
सब सादर सुनि मुनिबरबानी * नय--परमारथ--स्वारथसानी ॥
उतर न आव लोग भे भोरे * तब शिर नाय भरत कर जोरे॥
भानु--बंश भे भूप घनेरे * अधिक एकते एक बड़ेरे ॥
जन्महेतु सबकहँ पितुमाता * कर्म शुभाशुभ देइ बिधाता ॥
दलि दुख सजै सकल कल्याना * अस अशीस राउर जग जाना॥
सो गुसाइँ बिधिगति जेहिं छेकी * सकै को टारि टेंक जो टेंकी ॥

१ रात्रि. २ खलसमूहके नाशकर्ता. ३ ब्रह्मा. ४ विष्णु. ५ महेश. ६ चन्द्रमा. ७ सूर्य.

दो०-बूझिय मोहिं उपाय अब, सो सब मोर अभाग॥
सुनि सनेहमय बचन गुरु, उर उपजा अनुराग २४५॥

तात बात फुर रामकृपाहीं * रामबिमुख सुख स्वप्नेहु नाहीं॥
सकुचौं तात कहत यकबाता * अर्ध तजहिं बुध सर्बस जाता॥
तुम कानन गवनहु दोउ भाई * फिरिहहिं लषण सीय रघुराई॥
सुनि शुभ बचन हर्ष दोउ भ्राता * भे प्रमोद--परिपूरण गाता॥
मन प्रसन्न तनु तेज बिराजा * जनु जिय राउ राम भये राजा॥
बहुत लाभ लोगन्ह लघु हानी * सम दुख सुख सब रोवहिं रानी॥
कहहिं भरत मुनि कहा सो कीन्हे * फल जग जीवनअभिमत दीन्हे
कानन करउँ जन्मभरि बासू * इहिते अधिक न मोर सुपासू॥

दो०अन्तर्यामी राम सिय, तुम सर्बज्ञ सुजान॥
जो फुर कहहुँ तो नाथ निज, कीजिय बचन प्रमान॥

भरतबचन सुनि देखि सनेहू * सभासहित मुनि भयउ बिदेहू॥
भरत महा--महिमा--जलरासी * मुनिमति ठाढ़ि तीर अबलासी॥
गा चह पार यत्न बहु हेरा * पावति नाव न बोहितै बेरा॥
और करहि को भरतबड़ाई * सैरसरि सीपै कि सिन्धु समाई॥
भरत मुनिहिं मनभीतर पाये * सहित समाज रामपहँ आये॥
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह सुआसन * बैठे सब मुनि सुनि अनुशासन॥
बोले मुनिवर बचन बिचारी * देशकाल—अवसर—अनुहारी॥
सुनहु राम सर्बज्ञ सुजाना * धर्म-नीति-गुण-ज्ञान-निधाना॥

दो०सबके उरअंतर बसहु, जानहु भाव कुभाव॥
पुरजनजननीभरतहित, होइ सो करिय उपाव २४७

१ स्त्रीकी माफिक. २ जहाज. ३ नद. ४ सूतीमें समुद्र कैसे समाय ५ आज्ञा.

आरत करहिं बिचार न काऊ * सूझ जुआरिहिं आपन दाऊ ॥
सुनि मुनिबचन कहत रघुराऊ * नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ ॥
सबकर हित रुख राउर राखे * आयसु दिये मुदित पुर भाखे ॥
प्रथम जो आयसु मोकहँ होई * माथे मानि करौं सिख सोई ॥
पुनि जेहिकहँ जस होइ रजाई * सो सबभांति करिहि सेवकाई ॥
कह मुनि राम सत्य तुम भाषा * भरतसनेह बिचार न राषा ॥
तेहिते कहौं बहोरि-बहोरी * भरतभक्तिबश मम मति भोरी ॥
मोरे जान भरतरुचि राखी * जो कीजिय सो शुभ शिव साखी ॥

दो०भरतबिनय सादरसुनिय, करियबिचारबहोरि
करब साधुमत लोकमत, नृपनय[२] निगमनिचोरि२४८

गुरु-अनुराग भरतपर देषी * रामहृदय आनन्द बिशेषी ॥
भरतहिं धर्मधुरन्धर जानी * निजसेवक तनु-मानस-बानी ॥
बोले गुरु-आयसुअनुकूला * बचन मंजु मृदु मंगलमूला ॥
नाथ-शपथ पितु-चरण दुहाई * भयउ न भुवन भरतसम भाई ॥
जे गुरु-पद-अम्बुज-अनुरागी[३] * ते लोकहुँ बेदहु बड़भागी ॥
राउर जापर अस अनुरागू * को कहिसकै भरतकर भागू ॥
लखि लघुबन्धु बुद्धि सकुचाई * करत बदन[४]पर भरतबड़ाई ॥
भरत कहहिं सो किये भलाई * अस कहि राम रहे अरगाई ॥

दो०तब मुनि बोले भरतसन, सब सकोच तजि तात
कृपासिंधु प्रियबन्धुसन, कहहु हृदयकी बात २४९

सुनि मुनिबचन रामरुख पाई * गुरु-साहिब-अनुकूल अघाई ॥
लखि अपने शिर सब छरभारू * कहि न सकैं कछु करैं विचारू

१ आज्ञा. २ राजनीति. ३ गुरुचरणकमलके सेवक हैं. ४ मुखपर.

पुलक शरीर सभा भे ठाढ़े * नीरजनैयन नेह--जल बाढ़े ॥
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा * यहिते अधिक कहौं मैं कहा ॥
मैं जानौं निजनाथ--स्वभाऊ * अपराधिहुपर कोहे न काऊ ॥
मोपर कृपा सनेह बिशेखी * खेलत खुनस कबहुँ नहिं देखी॥
शिशुपनते परिहरेउ न संगू * कबहुँ न कीन्ह मोर मनभंगू ॥
मैं प्रभुकृपारीति जिय जोही * हारेउ खेल जितावहिं मोहीं ॥

दो०महूँ सनेहचकोचवश, सन्मुख कहे न बैन ॥
दर्शनतृप्ति न आजुलगि, प्रेमपियासे नैन ॥२५०॥

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा* नीच बीच जननीमिसु पारा ॥
इहौ कहत मोहिं आजु न शोभा * आपनि समुझि साधुशुचिकोभा॥
मातु मन्द मैं साधु सुचाली * उर अस आनत कोटि कुचाली
फरै कि कोदवबालि सुशाली * मुक्ता खवै कि शंबुकताली ॥
स्वप्नेहु दोष--कलेश न काहू * मोर अभाग--उदधि--अवगाहू
बिनु समुझे निचअघपरिपाकू * जारेहुँ जाइ जननि कहि काकू॥
हृदय हेरि हारेउँ सबओरा * एकहि भांति भलिहि भल मोरा
गुरु गुसाइँ साहिब सिय रामू * लागत मोहिं नीक परिणामू ॥

दो०साधुसभाप्रभुगुरुनिकट, कहौंसुथलसतिभाउ
प्रेम प्रपंच कि झूँठफुर, जानहिं मुनि रघुराउ॥२५१॥

भूपतिमरण प्रेमपण राखी * जननीकुमति जगत सब साखी॥
देखि न जाहिं बिकल महतारी * जरहिं दुसहज्वर पुरनरनारी ॥
मही सकल अनरथकर मूला * सो सुनि समुझि सहौं सब शूला॥
सुनि बनगमन कीन्ह रघुनाथा * करि मुनिबेष लषण सिय साथा॥

---

१ कमलनेत्रोंमें. २ क्रोध. ३ धान. ४ घोंघा. ५ अपने पापके फलको.

बिनु पनहीं अरु प्यादेहि पाये * शंकर साखि रह्यों इहि धाये ॥
बहुरि निहारि निषादसनेहू * कुलिशकठिन उर भयउ न बेहू[१]
अब सब आँखिन्ह देखेउँ आई * जियत जीव जड़ सबै सहाई ॥
जिनहिं निरखिमगुसाँपिनिबीछी * तजहिं बिषम[२] बिष तामसतीछी

दो०ते रघुनन्दन लषण सिय, अनहितलागे जाहि
तासु तनय तजि दुसह दुख, दैव सहावै काहि२५१॥

सुनि अतिबिकल भरतबरबानी* आरतिप्रीतिबिनयनयसानी ॥
शोकमग्न सब सभा खँभारू * मनहुँ कमलबन पऱ्यो तुषारू[३]॥
कहि अनेकबिध कथा पुरानी* भरतप्रबोध कीन्ह मुनि ज्ञानी॥
बोले उचित बचन रघुनन्दू * दिनकरकुल-कैरवबन-चन्दू[४] ॥
तात जीय जनि करहु गलानी * ईशअधीन जीवगति जानी ॥
तीन काल त्रिभुवन मन मोरे * पुण्यश्लोक तात कर तोरे ॥
उर आनत तुमपर कुटिलाई * जाइ लोक परलोक नशाई ॥
दोष देहिं जननिहिं जड़ तेई * जिन्ह गुरुसाधुसभा नहिं सेई ॥

दो०मिटहिं पाप परपंच सब, अखिलअमंगलभार॥
लोक सुयश परलोकसुख, सुमिरत नामतुम्हार२५३

कहौं स्वभाव सत्य शिव साखी * भरतभूमि रह राउर राखी ॥
तात कुतर्क करहु जिय जाये * बैर प्रेम नहिं दुरै दुराये ॥
मुनिगणनिकटविहग मृग जाहीं* बाधक बधिक बिलोकि पराहीं
हित अनहित पशु पक्षिउ जाना * मानुषतनु गुणज्ञाननिधाना ॥
तात तुमहिं मैं जानौं नीके * करौं कहा असमंजस जीके ॥
राखेउ राउ सत्य मोहिं त्यागी * तनु परिहरेउ प्रेमपणलागी ॥

१ छेद. २ कठिन. ३ पाला. ४ सूर्यबंशरूप अनारबनको चन्द्रमारूप.

तासु बचन मेटत मन शोचू * तेहिते अधिक तुम्हार सँकोचू
तापर गुरु मोहिं आयसु दीन्हा * अवशि जो कहहु चहौं सो कीन्हा

दो०मनप्रसन्नकरिसकुचतजि, कहहुकरौं सो आज
सत्यसिन्धुरघुबरबचन, सुनिभासुखीसमाज २५४

सुरगणसहित सभय सुरराजू * शोचहिं चाहत होन अकाजू ॥
करत बिचार बनत कछु नाहीं * रामशरण सबके मनमाहीं ॥
बहुरि विचारि परस्पर कहहीं * रघुबर भक्तभक्तिबश अहहीं ॥
सुधि करि अम्बरीष दुर्वासा * भे सुर सुरपति निपट निराशा ॥
सहे सुरन्ह बहुकाल बिषादा * नरहरि किये प्रगट प्रल्हादा ॥
लगिलगि कानकहहिं धुनि माथा * अब सुरकाज भरतके हाथा ॥
आन उपाय न देखिय देवा * मानत राम सुसेवकसेवा ॥
हिय सप्रेम सेवहिं सब भरतहिं * निजगुणशीलरामबश करतहिं ॥

दो०सुनि सुरमतसुरगुरुकहेउ, भलतुम्हारबड़भाग
सकलसुमंगलमूल जग, भरतचरणअनुराग २५५

सीतापति–सेवक–सेवकाई * कामधेनुशत–सरिस सुहाई ॥
भरतभक्ति तुम्हरे मन आई * तजहु शोच बिधि बात बनाई ॥
देखु देवपति भरतप्रभाऊ * सहजस्वभावबिबश रघुराऊ ॥
मन थिर करहु देव डर नाहीं * भरतहिं जानि रामपरिछाहीं ॥
सुनि सुरगुरुसुरसम्मत शोचू * अन्तर्यामी प्रभुहिं सकोचू ॥
निजशिरभार भरत जियजाना * करत कोटिविधि उर अनुमाना ॥
करि बिचार मन दीन्हो ठीका * रामरजायसु आपन नीका ॥
निजप्रणताजि राखेउ प्रणमोरा * छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा ॥

१ इन्द्र. देवताननें. ३ नृसिंह. ४ रामचंद्रजीकी आज्ञा.

दो०कीन्हअनुग्रह अमितअति,सबबिधिसीतानाथ
करि प्रणाम बोले भरत, जोरि, जलजयुगहाथ[१] २५६

कहउँ कहावउँ का अब स्वामी * कृपाअम्बुनिधि[२] अंतर्यामी ॥
गुरु प्रसन्न साहिब अनुकूला * मिटी मलिनमनकल्पितशूला ॥
अपडर डरउँ न शोच समूले * रबिहिं न दोष देब दिशि भूले ॥
मोर अभाग मातु-कुटिलाई * बिधिगति विषमकालकठिनाई
पाँव रोपि सबमिलि मोहिं घाला * प्रणतपाल प्रण आपन पाला ॥
यह नइ रीति न राउरि होई * लोकहु बेद बिदित नहिं गोई ॥
जग अनभल भल एक गुसाँई * कहिय होइ भल कासु भलाई ॥
देव देवतरुसरिस[३] स्वभाऊ * सन्मुखबिमुख न काहुहि काऊ ॥

दो०जाइ निकटपहिचानि तरु,छाँहशमनसबशोच
माँगत अभिमत पाव फल, राउ रंक[४] भल पोच २५७

लखि सबबिधि गुरुस्वामिसनेहू * मिटेउ क्षोभ नाहिं मन संदेहू ॥
अब करुणाकर कीजिय सोई * जनहित प्रभुचित क्षोभ न होई ॥
जो सेवक साहिब संकोची * निजहित चहै तासु मति पोची
सेवक-हित साहिब-सेवकाई * करै सकलसुख लोभ बिहाई ॥
स्वारथ नाथ फिरे सबहीका * किये रजाइ कोटिबिधि नीका ॥
यह स्वारथ-परमारथ-सारू * सकलसुकृतफल सुगतिसिंगारू
देव एक बिनती सुनि मोरी * उचित होइ तस करब बहोरी ॥
तिलकसमाज साजि सब आना * करिय सुफल प्रभु जो मनमाना ॥

दो०सानुज पठइय मोहिं बन, कीजियसबहिंसनाथ
नातरु फेरिय बन्धु दोउ, नाथ चलौं मैं साथ ॥२५८॥

---

१ दोनो हस्तकमल. २ कृपासिन्धु. ३ कल्पवृक्षसम. ४ दरिद्री.

नतरु जाहिं बन तीनिउँ भाई * बहुरिय सीयसहित रघुराई ॥
जेहिविधि प्रभु प्रसन्न मन होई * करुणासागर कीजिय सोई ॥
देव दीन्ह सब मोपर भारू * मोरे नीति न धर्मबिचारू ॥
कहौं बचन सब स्वारथहेतू * रहत न आरतके चित चेतू ॥
उतर देइ बिनु स्वामिरजाई * सो सेवक लखि लाज लजाई ॥
अस मैं अवगुणउदधि अगाधू * स्वामिसनेह सराहत साधू ॥
अब कृपालु मोहिं सो मत भावा * सकुच स्वामिमन जाइ न पावा
प्रभुपदशपथ कहौं सतिभाऊ * जगमंगलहित एक उपाऊ ॥

दो०-प्रभुप्रसन्नमनसकुचतजि, जोजेहिंआयसुदेव ॥
सोशिरधरि२करहिं सब, मिटिहिं अनट३अवरेव४ ५९

भरतबचन शुचि सुनि हिय हर्षे * साधु सराहि सुमन सुर बर्षे ॥
असमंजसबश अवधनिवासी * प्रमुदितमन तापस बनवासी ॥
चुप रहिगे रघुनाथ सकोची * प्रभुगति देखि सभा सब शोची ॥
जनकदूत तेहि अवसर आये * मुनि बशिष्ठ सुनि बेगि बुलाये ॥
करि प्रणाम तिन्ह राम निहारे * बेष देखि भये निपट दुखारे ॥
दूतहिं मुनिबर पूँछी बाता * कहहु बिदेह-भूप-कुशलाता ॥
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा * बोले चरबर जोरे हाथा ॥
बूझब राउर सादर साईं * कुशलहेतु सो भयउ गुसाईं ॥

दो०-नाहित कोशलनाथके, साथकुशल गइ नाथ ॥
मिथिलाअवधविशेषते, जग सब भयउ अनाथ २६०

कोशलपतिगति सुनि जनकौरा * भे सब लोग शोचबश बौरा ॥
जेहि देखा तेहि समय बिदेहू * नाम सत्य अस लाग न केहू ॥

---

१ दुःखितके. २ अवगुणोंका अथाह समुद्र. ३ केकेयीका बरदान. ४ क्लेश.

नारिकुचालि सुनत महिपालै * सूझ न[1] कछु जसमणि बिनुव्यालै ॥
भरत राज रघुबर बनबासू * भा मिथिलेशहिं हृदय हरासू ॥
नृप बूझे बुध-सचिव-समाजू * कहहु बिचारि उचित का आजू ॥
समुझि अवध असमंजस दोऊ * चलियकिरहियनकहकछुकोऊ ॥
नृपति धीर धरि हृदय बिचारी * पठये अवध चतुर चरे चारी ॥
बूझि भरतगति भाउ कुभाऊ * आयहु बेगि न होइ लखाऊ ॥

दो०गये अवध चर[2] भरतगति, बूझि देखि करतूति ॥
चले चित्रकूटहिं भरत, चार[2] चले तिरहूति[3] ॥२६१॥

दूतन आइ भरतकी करणी * जनकसमाज यथामति बरणी ॥
सुनिगुरुपुरजनसचिवमहीपति * भे सब शोचसनेहबिकलमति ॥
धरि धीरज करि भरतबड़ाई * लिये सुभट साहैनी बुलाई ॥
घर पुर देश राखि रखवारे * हय गज रथ बहु याने सँवारे ॥
दुघड़ी साधि चले ततकाला * किय बिश्राम न मगु महिपाला ॥
भोरहि आजु नहाइ प्रयागा * चले यमुन उतरन सब लागा ॥
खबरि लेन हम पठये नाथा * तिन्हकहि अस महिनायउमाथा ॥
साथ किरात छ सातक दीन्हें * मुनिबर तुरत बिदा चर कीन्हें ॥

दो०सुनत जनकआगमन सब, हर्षेउ अवधसमाज ॥
रघुनन्दनहिं सकोच बड़, शोचबिबशसुरराज २६२

गरइ गलानि कुटिल कैकेयी * काहि कहै केहि दूषण देई ॥
असमनआनिमुदितनरनारी * भयउ बहोरि रहब दिन चारी ॥
यहिप्रकार गत बासर सोऊ * प्रात अन्हान लगे सबकोऊ ॥
करि मज्जन पूजहिं नर नारी * गणपति गौरि पुरारि तमारी ॥

---

१ सर्पको. ५ दूत. ३ जनकपुरीको. ४ फौज. ५ सवारी.

रमारमणपद बन्दि बहोरी * बिनवहिं अंचलअंजुलि जोरी ॥
राजा रम जानकी रानी * आनँदअवधि अवध रजधानी ॥
सुवसबसैफिरसहितसमाजा * भरतहिं राम करैं युवराजा ॥
यहिसुखसुधासींचिसबकाहू * देव देहु जग-जीवन-लाहू ॥

**दो० गुरुसमाजभाइनसहित, रामराज पुर होउ ॥
अछत राम राजा अवध, मरण माँगु सबकोउ ॥२६३॥**

सुनि सनेहमय पुरजनबानी * निंदहिं योग बिरति मुनि ज्ञानी ॥
यहिविधिनित्यकर्मकारिपुरजन * रामहिं करहिं प्रणाम पुलकितन ॥
ऊँच नीच मध्यम नर नारी * लहैं दर्श निजनिजअनुहारी ॥
सावधान सबहीं सनमानहिं * सकल सराहत कृपानिधानहिं ॥
लरकाईते रघुबर-बानी * पालत नीति प्रीति पहिचानी ॥
शील-सकोचसिन्धु रघुराऊ * सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ ॥
कहत रामगुणगण अनुरागे * सब निजभाग सराहन लागे ॥
हमसम पुण्यपुंज[1] जग थोरे * जिनहिं राम जानत करि मोरे ॥

**दो०प्रेममग्न तेहि समय सब, सुनि आवत मिथिलेश
सहित सभा संभ्रम उठे, रविकुलकमलदिनेश[2] २६४**

आगे गमन कीन्ह रघुनाथा * भाइ सचिव गुरु पुरजन साथा ॥
गिरिबर[3]दीखजनकनृपजबहीं * करि प्रणाम रथ त्यागेउ तबहीं ॥
राम- दर्श- लालसा- उछाहू * पथ-श्रम-लेश-कलेश न काहू ॥
मन तहँ जहँ रघुबर बैदेही * बिनु मन तनु दुखसुख सुधि केही ॥
आवत जनक चले यहिभाँती * सहित--समाज प्रेममतिमाती ॥
आये निकट देखि अनुरागे * सादर मिलन परस्पर लागे ॥

१ पुण्यके समूह. २ सूर्यवंशरूप कमलके सूर्य. ३ चित्रकूट.

लगे जनक मुनिगणपद बंदन * ऋषिन्ह प्रणाम कीन्ह रघुनन्दन ॥
भाइनसहित राम मिलि राजहिं * चले लेवाइ समेत समाजहिं ॥

दो० आश्रमसागर शांतरस, पूरण पावन पाथ ॥
सेन मनहुँ करुणासरित, लिये जात रघुनाथ॥२६५॥

बोरति ज्ञान--बिराग--करारे * बचन सशोक मिलत नदि नारे॥
शोच उसास समीरतरंगा * धीरजतटतरुवरकर भंगा ॥
बिषम बिषाद तुरावतिधारा * भय भ्रम भँवर अवर्त्त अपारा ॥
केवट बुध विद्या बड़ि नावा * सकहिं न खेइ एक नहिं आवा ॥
बनचर कोल्ह किरात बिचारे * थके बिलोकि पथिक हिय हारे ॥
आश्रमउदधिमिली जबजाई * मनहुँ उठेउ अंबुधि अकुलाई ॥
शोकबिकल दोउराजसमाजा * रहा न ज्ञान न धीरज लाजा ॥
भूप रूप गुण शील सराही * शोचहिं शोकसिन्धु अवगाही ॥

छं० अवगाहिशोकसमुद्रशोचहिंनारिनरव्याकुलमहा
दै दोषसकलसरोषबोलहिंबामविधिकीन्हो कहा ॥
सुरसिद्धतापस योगिजन मुनिदशा देखि बिदेहकी॥
तुलसी न समरथ कोउ जो तरिसकै सरित सनेहकी

सो० किये अमित उपदेश, जहँ तहँ लोगन मुनिबरन
धीरज धरिय नरेश, कहेउ बशिष्ठ बिदेहसन॥११॥

जासुज्ञानरबिभवनिशिनाशा * बचनकिरण मुनिकमलबिकाशा॥
तेहि कि मोह ममता नियराई * यह सिय- राम- नेह- बड़ाई ॥
बिषयी साधक सिद्ध सयाने * त्रिविध जीव जग बेद बखाने ॥
रामसनेह सरस मन जासू * साधुसभा बड़ आदर तासू ॥

१ पवनकी तरगें. २ धैर्यरूप तटस्थ वृक्षका. ३ पंडित. ४ बहुत.

सोह न रामप्रेम–बिनु ज्ञाना * कर्णधार बिनु जिमि जलयाना[1] ॥
मुनि बहुबिधि बिदेहसमुझाये * रामघाट सबलोग अन्हाये ॥
सकलशोक-संकुल नरनारी * सो बासर बीतेउ बिनु बारी ॥
पशुखगमृगन्हनकीन्हअहारा * प्रियपरिजनकर कवन बिचारा ॥

दो० दोउ समाज निमिराज रघु, राज नहाने प्रात ॥
बैठे सब बटविटपतर[2], मन मलीन कृश गात ॥२६६॥

जे महिसुर[3] दशरथपुरबासी * जे मिथिलापतिनगरनिवासी ॥
हंसबंशगुरु जनक-पुरोधा * जिन्ह जग मग परमारथ शोधा ॥
लगे कहन उपदेश अनेका * सहित धर्म नय बिरति बिवेका ॥
कौशिककहिकहिकथापुरानी * समझाई सब सभा सुबानी ॥
तबरघुनाथ कौशिकहिंकहेऊ * नाथ कालिह बिनु जल सब रहेऊ ॥
मुनि कह उचित कहतरघुराई * गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई ॥
ऋषिरुखलखिकहतिरहुतिराजू[4] * इहाँ उचित नहिं अशन[5] अनाजू ॥
कहा भूप भल सबहिं सुहाना * पाइ रजायसु चले नहाना ॥

दो० तेहिं अवसर फल फूल दल, मूल अनेकप्रकार ॥
लै आये बनचर बिपुल, भरि भरि काँवरिभार २६७

कामद भे गिरि रामप्रसादा * अवलोकत अपहरत बिषादा ॥
सर सरिता बन भूमिबिभागा * जनु उमँगत आनंद अनुरागा ॥
बेलि बिटप सबसफलसफूला * बोलत खग मृग अतिअनुकूला ॥
तेहिअवसरबनअधिकउछाहू * त्रिबिध समीर सुखद सबकाहू ॥
जाइ न बर्णि मनोहरताई * जनु महि करति जनकपहुनाई ॥
तब सबलोग नहाइ नहाई * राम-जनक-मुनि-आयसु पाई ॥

---

१ नौका. २ बरगदके वृक्षके नीचे. ३ ब्राह्मण. ४ जनक. ५ भोजन.

देखि देखि तरुवर अनुरागे * जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे ॥
दल फल मूल कन्द बिधि नाना * पावन सुन्दर सुधासमाना ॥

दो०सादर सबकहँ रामगुरु, पठये भरि भरि भार॥
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु, लगे करन फलहार ॥

यहिबिधि बासर बीते चारी * राम निरखि नर नारि सुखारी ॥
दुहुँ समाज अस रुचि मनमाहीं * बिनु सियराम फिरब भल नाहीं॥
सीता–राम–संग बनबासू * कोटि अमरपुर[१]सरिस सुपासू ॥
परिहरि लषण राम बैदेही * जेहि घर भाव बाम[२] बिधि तेही
दाहिन दैव होइ जब सबहीं * रामसमीप बसिय बन तबहीं॥
मन्दाकिनिमज्जन तिहुँकाला * रामदर्श मुद–मंगल--माला ॥
अटनं[३] रामगिरि बनतापसथल * अशन[४] अमियसम कन्दमूलफल
सुखसमेत संवत दुइ साता * पलसम होहिं न जानिय जाता ॥

दो०यहि सुखयोग न लोग सब, कहहिं कहाँअसभाग
सहजस्वभाव समाज दुहुँ, रामचरणअनुराग २६९

यहि बिधि सकल मनोरथ करहीं * बचन सप्रेम सुनत मन हरहीं ॥
सीयमातु तेहिं समय पठाई * दासी देखि सुअवसर आई ॥
सावकाश सुनि सब सियसासू * आयउ जनकराज–रनिवासू ॥

दो०"ज्येष्ठशुक्ल जिष्णुग[५]दिवस, जनकराजरनिवास
आयहु सुनि सवकाश तहँ, जहँ सियकी सब सास"

कौसल्या सादर सन्मानी * आसन दीन्ह समयसम आनी ॥
शील सनेह सरस दुहुँओरा * द्रवहिं देखि सुनि कुलिश कठोरा
पुलक शिथिल तनुबारि बिलोचन * महि नख लिखन लगींसबशोचन

१ देवलोकसमान. २ उलटा. ३ चलना. ४ भोजन. ५ एकादशीको.

सब सियराम--प्रेमकी मूरति * जनु करुणा बहुबेष बिसूरति ॥
सीयमातु कह विधिबुधि बाँकी* जिमि पयफेनु फारि पवि टाँकी॥
दो०सुनिय सुधा देखिय गरल, सब करतूति कराल
जहँतहँ काक उलूक बक, मानस सुकृति[१] मराल २७०
सुनि सशोच कह देवि सुमित्रा* विधिगति अतिविपरीतबिचित्रा
जो सृजि पालै हरै बहोरी * बालकेलिसम विधिमति भोरी ॥
कौशल्या कह दोष न काहू * कर्मबिबश दुख सुखक्षति[२] लाहू ॥
कठिन कर्मगति जान विधाता* सो शुभ-अशुभ-कर्मफलदाता॥
ईशरजाय[३] शीश सबहीके * उत्पतिथिति लय[४] विषहु अमीके॥
देवि मोहबश शोचिय बादी * विधिप्रपंच अस अचल अनादी
भूपति जियब मरब उर आनी * शोचियसखिलखिनिजहितहानी
सीयमातु कह सत्य सुबानी * सुकृतीअवधि अवधपतिरानी ॥
दो०लषण राम सिय जाहिं बन, भल परिणाम न पोच[५]
गद्गद हिय कह कौशिला, मोहिं भरतकर शोच ॥
ईशप्रसाद अशीश तुम्हारी * सुत सुतवधु देवसरि-बारी ॥
रामशपथ मैं कीन्ह न काऊ * सो करि सखी कहौं सति भाऊ ॥
भरत शील गुण बिनय बड़ाई * भायपभक्ति भरोसे भलाई ॥
कहत शारदहुकै[६] मति हीची * सागर सीप कि जाहिं उलीची॥
जानौं सदा भरतकुलदीपा * बार बार मोहिं कहेउ महीपा ॥
कसे कनकमणिपारिख पाये * पुरुष परखिये समय सुभाये ॥
अनुचित आजु कहब अस मोरा* शोक सनेह सयानप थोरा ॥
सुनि सुरसरिसम पावनि बानी * भई सनेहबिकल सब रानी ॥

१ पुण्यवान. २ हानि. ३ ईश्वरकी आज्ञा. ४ नाश. ५ खराब. ६ सरस्वतीकीभी.

दो०-कौशल्या कह धीर धरि, सुनहु देवि मिथिलेशि
को बिबेकनिधि वल्लभहिं, तुमहिं सकै उपदेशि २७२

रानि रायसन अवसर पाई * अपनी भांति कहब समुझाई ॥
राखियलषणभरतगवनाहिंबन * जो यह मत मानै महीप मन ॥
तौभल यत्न करब सुबिचारी * मोरे शोच भरतकर भारी ॥
गूढ सनेह भरत-मनमाहीं * रहे नीक मोहिं लागत नाहीं ॥
लखिस्वभावसुनिसरलसुबानी * सब भईं मग्न करुणरससानी ॥
नभप्रसूनझरिधन्यधन्यधुनि * शिथिल सनेहसिद्ध योगि मुनि ॥
सबरनिवास थकितलखिरहेऊ * तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ ॥
देवि दण्ड[१] युग यामिनि[२] बीती * राममातु सुनि उठी सप्रीती ॥

दो०-बेगि पाँय धारिय थलहिं, कह सनेह सतिभाय
हमरे तौ अब ईशगति, कै मिथिलेश सहाय ॥२७३

लखिसनेहसुनिबचनबिनीता * जनकप्रिया गहि पाँव पुनीता ॥
देविउचितअसबिनयतुम्हारी * दशरथ-घरनि राम महतारी ॥
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं * अग्नि[३] धूम गिरि शिर तृण धरहीं ॥
सेवक राउ कर्म मनबानी * सदा सहाय महेश भवानी ॥
रौरेअंगयोग जग को है * दीप सहाय कि दिनकर सोहै ॥
राम जाइ बन करि सुकाजू * अचल अवधपुर करिहहिं राजू ॥
अमर नाग नर रामबाहुबल * सुख बसिहहिं अपने अपने थल ॥
यहसबयाज्ञवल्क्य कहिराखा * देवि न होइ मृषा मुनिभाखा ॥

दो०-असकहि पग परि प्रेम अति, सियहितबिनयसुनाइ
सियसमेत सियमातु तब, चलीं सुआयसु पाइ २७४

१ दो. २ रात्रि. ३ अग्नि धूमको और पर्बत तृणनको शिरमें धारणकरते हैं.

प्रिय परिजनहिं मिली वैदेही * जो जेहि योग भांति तस तेही ॥
तापसबेष जानकिहिं देखी * भे सब बिकल बिषाद बिशेखी ॥
जनक राम-गुरु-आयसु पाई * चले थलहिं सिय देखी आई ॥
लीन्ह लाइ उर जनक जानकी * पाहुनि पावनि प्रेम प्राणकी ॥
उर उमँगेउ अम्बुधि अनुरागू * भयउ भूपमन मनहुँ प्रयागू ॥
सिय-सनेह बहु बाढ़त जोहा * तापस रामप्रेम शिशु सोहा ॥
चिरंजीविमुनिज्ञानविकलजनु * बूड़त लहेउ बाल अवलम्बनु ॥
मोहमग्न मति नहिं बिदेहकी * महिमा सिय–रघुबर–सनेहकी ॥

दो०सियपितुमातुसनेहवश, विकलनसकीसँभारि
धरणिसुता धीरज धरेउ, समय सुधर्म बिचारि२७५

तापसबेप जनक सिय देखी * भयउ प्रेम परितोष बिशेखी ॥
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ * सुयश धवल जग कह सबकोऊ ॥
जिमिसुरसरिकीरतिसरितोरी * गमन कीन्ह बिधि अण्ड करोरी ॥
गंग अवनि थल तीनि बडेरे * यहिं किय साधुसमाज घनेरे ॥
पितु कह सत्य सनेह सुबानी * सीय सकुच गृह मनहुँ समानी ॥
पुनि पितु लीन्ह उर लाई * सिख आशिषहित दीन सुहाई ॥
कहति न सीय सकुच मनमाहीं * इहाँ बसब रजनी भल नाहीं ॥
लखि रुख रानि जनायउ राऊ * हृदय सराहत शील स्वभाऊ ॥

दो०बार बार मिलि भेंटि सिय, विदा कीन्ह सन्मानि ॥
कही भरतगति समयसर, रानि सुबानि सयानि ॥

सुनि भूपाल भरतव्यवहारू * सोन सुगन्ध सुधा शशिसारू ॥
मूंदे सकल नयन पुलके तन * सुयश सराहन लगे मुदित मन ॥

---

१ अथार. २ सीता. ३ सपेद. ४ पृथ्वी. ५ रात्रिको.

सावधानसुनुसुमुखिसुलोचनि * भरतकथा भवबन्धबिमोचनि ॥
धर्मराज नय ब्रह्म-बिचारू * इहाँ यथामति मोर प्रचारू ॥
सो मति मोरि भरतमहिमाहीं * कहै काह छलि छु अति न छाहीं ॥
बिधि[1]गणपति[2]अहिपति[3]शिवशारद[4]*कबि कोविद बुर्ध बुद्धि बिशारद॥
भरत-चरित-कीरति-करतूती * धर्मशील गुण बिमल बिभूती ॥
समुझत सुनत सुखद सबकाहू * शुचि सुरसरि[5] रुचि निदरि सुधाहू॥

दो०निरवधिगुणनिरुपमपुरुष, भरतभरतसमजानि
कही सुमेरु कि सेरसम, कबिकुलमतिसकुचानि ७७

अगम सबहिं बर्णत बर बरणी * जिमि जलहीन मीनगण धरणी ॥
भरतअमितमहिमासुनुरानी * जानहिं राम न सकहिं बखानी ॥
बर्णि सप्रेम भरतअनुभाऊ * तियजियकी रुचि लखि कहराऊ॥
बहुरहिंलषणभरतबनजाहीं * सबकर भल सबके मनमाहीं ॥
देबि परन्तु भरतरघुबरकी * प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी ॥
भरत सनेह अवधि ममताके * यद्यपि राम सीम समताके ॥
परमारथ स्वारथ सुख सारे * भरत न स्वप्नेहुँ मनहुँ निहारे ॥
साधन सिद्धि रामपदनेहू * मोहिं लखि परत भरतमत एहू ॥

दो० भोरेहु भरत न पेलिहहिं, मनसहुँ रामरजाइ ॥
करिय न शोच सनेहबश, कहेउ भूप बिलखाइ २७८

रामभरतगुण कहत सप्रीती * निशिदम्पतिहिं पलकसम बीती ॥
राजसमाज प्रात युग जागे * न्हाइ न्हाइ सुर पूजन लागे ॥
गे नहाइ गुरुपहँ रघुराई * बन्दि चरण बोले रुख पाई ॥
नाथ भरत पुरजन महतारी * शोचाबिकल बनबासदुखारी ॥

१ ब्रह्मा. २ शेष. ३ सरस्वती. ४ पंडित. ५ गंगाजी.

सहित समाज राउ मिथिलेशू * बहुत दिवस भे सहत कलेशू ॥
उचित होय सो कीजियनाथा * हित सबहीकर रौरे हाथा ॥
अस कहि अतिसकुचेरघुराऊ * मुनि पुलके लखि शीलस्वभाऊ ॥
तुमबिनु राम सकलसुखसाजा * नरकसरिस दुहुँ राजसमाजा ॥

**दो० प्राण प्राणके जीवके, जिय सुखके सुख राम ॥
तुमतजितातसोहातगृह, जिनहिंतिनहिंबिधिवाम१**

सो सुख कर्म धर्म जरि जाऊ * जहँ न राम–पदपंकज–भाऊ ॥
योगे कुयोग ज्ञान अज्ञानू * जहाँ न रामप्रेम–परधानू ॥
तुम बिन दुखी सुखीतुमतेही * तुम जानहु जिय जो जेहि केही ॥
राउरआयसु शिर सबहीके * बिदित कृपालुहिं गति सबनीके ॥
आपु आश्रमाहिं धारिय पाऊ * भये सनेहशिथिल मुनिराऊ ॥
करि प्रणाम तब राम सिधाये * ऋषि धरि धीर जनकपहँ आये ॥
रामवचन गुरु नृपहिं सुनाये * शील– सनेह–स्वभाव– सुहाये ॥
महाराज अब कीजिय सोई * सबकर धर्मसहितहित होई ॥

**दो० ज्ञाननिधान सुजान शुचि, धर्मधीर नरपाल ॥
तुम बिनु असमंजसशमन, को समर्थ यहिकाल२८०**

सुनिमुनिबचनजनकअनुरागे * लखि गति ज्ञान बिराग बिरागे ॥
शिथिल सनेह गुणत मनमाहीं * आये इहाँ कीन्ह भल नाहीं ॥
रामहिं राय कहेउ वन जाना * कीन्ह आपु प्रिय प्रेमसमाना ॥
हम अब वनते बनहिं पठाई * प्रमुदित फिरब बिबेक बढ़ाई ॥
तापस मुनिमहिसुरगति देखी * भये प्रेमबश बिकल बिशेखी ॥
समय समुझि धरि धीरजराजा * चले भरतपहँ सहित समाजा ॥

---

१ उलटा, टेढा. २ यम, नियम; प्रत्याहार, आसन, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, और समाधि यह अष्टांग.

भरत आय आगे ह्वै लीन्हा * अवसरसरिस सुआसन दीन्हा ॥
तात भरत कह तिरहुतिराऊ * तुमहिं बिदित रघुबीरस्वभाऊ ॥

दो० राम सत्यव्रत धर्मरत, सबकर शील सनेहु ॥
संकट सहत सकोचबश, कहिय जो आयसु देहु२८१

सुनितनुपुलकिनयनभरिबारी* बोले भरत धीर धरि भारी ॥
प्रभु प्रिय पूज्य पितासमआपू * कुलगुरुसम हित माय न बापू ॥
कौशिकादिमुनिसहितसमाजू * ज्ञानअम्बुनिधि आपुन आजू ॥
शिशु सेवक आयसुअनुगामी * जानि मोहिं शिख देइय स्वामी ॥
यहिसमाज थल बूझब राउर * मन मलीन मैं बोलब बाउर ॥
छोटे बदन कहौं बड़ि बाता * क्षमब तात लखि बाम विधाता ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना * सेवाधर्म कठिन जग जाना ॥
स्वामिमर्म स्वारथहिंबिरोधू * बधिर अन्ध प्रेमहिं न प्रबोधू ॥

दो०राखि रामरुखधर्मव्रत, पराधीन मोहिं जान ॥
सबके सम्मत सर्बहित, करिय प्रेम पहिंचान २८२

भरतबचन सुनि देखि सुभाऊ* सहित समाज सराहत राऊ ॥
सुगम अगम मृदु मंजु कठोरा * अर्थ अमित अति आखर थोरा ॥
ज्यों मुखमुकुरमुकुर निजपाणी * गहि न जाय अस अद्भुत बाणी ॥
भूप भरत मुनिसाधुसमाजू * गे जहँ बिबुधकुमुदद्विजराजू ॥
सुनिसुधिशोचबिकलसबलोगा*मनहुँ मीनगण नवजलयोगा ॥
देव प्रथम कुलगुरुगति देखी * निरखि बिदेहसनेह बिशेखी ॥
राम भक्तिमय भरत निहारे * सुर स्वारथी हर्षि हिय हारे ॥
सबकहँ रामप्रेममय पेखा * भये अलेख शोचबश लेखा ॥

१ जनक. २ आज्ञा. ३ विश्वामित्रआदि. ४ ज्ञानसमुद्र. ५ देवता.

दो०रामसनेहसकोचबश, कह सशोच सुरराज ॥
रचहु प्रपंचहिं पंच मिलि, नाहित भयउ अकाज२८३

सुरन सुमिरि शारदा सराही * देवि देहु शरणागत पाही ॥
फेरिभरतमतिकरिनिजमाया * पाल बिबुधकुल करि छलछाया ॥
बिबुधबिनयसुनिदेबिसयानी * बोली सुर स्वारथजड़ जानी ॥
मोसन कहहु भरतमति फेरू * लोचन सहस न सूझ सुमेरू ॥
बिधिहरिहरमाया बड़ि भारी * सो न भरतमति[2] सकै निहारी ॥
सो मतिमोहिं कहतकरुभोरी * चन्दिनि[3] करु कि चन्द[4]करचोरी ॥
भरतहृदय सिय राम निवासू * तहँ कि तिमिर जहँ तरणिप्रकाशू ॥
असकहिशारदगइबिधिलोका * बिबुध बिकलनिशिमानहुँकोका ॥

दो०सुर स्वारथी मलीन मन, कीन्ह कुमंत्र कुठाट ॥
रचि प्रपंच माया प्रबल, भय भ्रम आर्ति उचाट २८४

करि कुचाल शोचत सुरराजू * भरतहाथ सब काज अकाजू ॥
गये जनक रघुनाथसमीपा * सनमाने सब रघुकुलदीपा ॥
समय समाज धर्म अबिरोधा * बोले तब रघुबंशपुरोधा ॥
जनक-भरत सम्बाद सुनाई * भरतकहावति कही सुहाई ॥
तात राम जस आयसु देहू * सो सब करै मोर मत येहू ॥
सुनि रघुनाथ जोरि युग पाणी * बोले सत्य सरल मृदु बाणी ॥
विद्यमान आपुन मिथिलेशू * मोर कहा सबभांति भदेशू ॥
राउर-राय-रजायसु जोई * राउरि शपथ सही शिर सोई ॥

दो०रामशपथ सुनि मुनि जनक, सकुचे सभा समेत
सकल बिलोकहिं भरतमुख, बनै न उत्तर देत॥२८५॥

---

१ इन्द्र. २ भरतकी बुद्धि. ३ चन्द्रमाकी उजेली. ४ चन्द्र.

सभा सकुचबश भरत निहारी * रामबन्धु धरि धीरज भारी ॥
कुसमय देखि सनेह सँभारा * बढ़तबिन्ध्यजिं*मिघटज निबारा
शोक[२]-कनकलोचन मतिक्षोनी[३]* हरी बिमल गुणगण जगयोनी ॥
भरत[४]-बिवेक-बराह बिशाला* अनायास उधरेउ तेहि काला ॥
करि प्रणाम सबकहँ कर जोरी* राम राउ गुरु साधु निहोरी ॥

* कोई समय नारदजी विंध्याचलके निकट आये उन्हें देख बड़े आदरपूर्वक दंडप्रणाम कर. घर (गुफा) मे लेजाय विंध्याचलने अतिउत्तम मनोहर मृदु बेठनेको आसन दे अर्घ्य पाद्य आचमन आदि उपचारोंसे पूजन किया, और हाथ जोड, बिनयपूर्वक कहा कि-महाराज! आज आपके आनेसे मेरा घर पवित्र होगया और मेरा जन्म सफल हुवा. ऐसे बिनय करते २ अंतमें विंध्याचल बोला कि-गुरुजी! आप उदासीन क्यों हो? इतने बचन सुननेके साथही नारदजीने अघाके श्वास ले, कहा कि-क्या कहूं? आज सुमेरुगिरिकी जो प्रभुता व संपात्ति है सो किसीकी नहीं है. और वह अपने सामने किसीको गिनताभी नहीं. इतना सुनतेही महाभिमानी बिन्ध्याचल क्रोध कर, बोला कि-देखो, महाराज मेरा प्रभाव. ऐसे कह, लगा बढ़ने सो सूर्यके समीप पहुँचा. उसे देख सूर्यने विंध्याचलके वृक्ष, लता, घास इत्यादिकोंको जला दिया तब बिंध्याचल पृथ्वीसे दोलक्ष योजन बढ़गया और सूर्य तो एकही लक्ष योजनपर है. जब सूर्यका रथ रुक जानेसे अंधकार फैला गया तब सब देव, मनुष्य, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, गुह्यक, सिद्ध; चारणआदिसंपूर्ण सृष्टिगत प्राणी बहुत बिकल भये. बिना सूर्यके संध्योपासनादि कर्म बंद होगये. तब सब देव अगस्त्यजीके शरण गये और बोले-महाराज! जैसे आपने समुद्रपान

१ अगस्त्य. २ शोक हिरण्याक्ष. ३ बुद्धि पृथ्वी. ४ भरतजीका ज्ञान शूकरावतार.

क्षमब आजु अति अनुचित मोरा * कहउँ बदन मृदु बचन कठोरा ॥
हिय सुमिरी शारदा सुहाई * मानसते मुखपंकज आई ॥
बिमल बिबेक धर्मनयशाली * भरतभारती मंजु--मराली ॥

दो०निरखि बिबेकबिलोचनहिं,शिथिलसनेहसमाज
करिप्रणामबोलेभरत,सुमिरिसीयरघुराज ॥ २८६ ॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी * पूज्य परमहित अन्तर्यामी ॥
सरल सुसाहिब शीलनिधानू * प्रणतपाल सर्वज्ञ सुजानू ॥
समरथ शरणागतहितकारी * गुणग्राहक अवगुणअघहारी ॥
स्वामि गुसाइँहिं सदृश गुसाईं * मोहिं समान मैं स्वामिदुहाई ॥
प्रभु पितुबचन मोहबश पेली * आयउँ इहाँ समाज सकेली ॥
जग भल पोच ऊँच अरु नीचू * अमी अमरपद माहुर मीचू ॥
रामरजाइ मेटि मनमाहीं * देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं ॥
सो मैं सबबिधि कीन्ह ढिठाई * प्रभु मानी सनेहसेवकाई ॥

दो०कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर ॥
दूषण भे भूषणसरिस, सुयश चारु चहुँ ओर २८७॥

राउररीति सुबाणि बड़ाई * जगतबिदित निगमागमगाई ॥

किया तैसे अब इस अपने शिष्य बिंध्याचलको शांत कर हम लोगोंका रक्षण करो. इतना सुनतेही परमदयालु अगस्त्यजी तिसके पास गये. गुरुजीको आते देख. बिंध्याचलने लघुरूप हो, जमीनमें पड, दंडप्रणाम किया. तब अगस्त्यजी मस्तकपर हाथ रख आशीर्वाद देके बोले कि–हे पुत्र ! जबतक हम आवें नहीं तबतक ऐसेही पडे रहो, ऐसे कहकर मुनि चले गये सो न तो वे फिर उसके पास आये और न वह उठने पाया. वह पर्वत अबलौं वैसाही पडा है. इस तरहसे अगस्त्यजीने सबका दुःख दूर किया.

१ मनोहर हंसिनि. २ अमृत.

क्रूर कुटिल खल कुमति कलंकी * नीच निःशील निरीश निशंकी ॥
तेउ सुनि शरण सामुहे आये * सकृत प्रणाम किये अपनाये ॥
देखि दोष कबहु न उर आने * सुनि गुण साधु समाज बखाने ॥
का साहब सेवकहिं निवाजी * आपुसमान साज सब साजी ॥
निजकरतूति न समुझिय सपने * सेवक सकुच शोच उर अपने ॥
सो गुसाइँ नहिं दूसर कोपी * भुजा उठाइ कहौं प्रण रोपी ॥
पशु नाचत शुक पाठ प्रवीना * गुण गति नट पाठक आधीना ॥

दो०सो सुधारि सन्मानि जन, किये साधुशिर मोर
को कृपालु बिनु पालिहै, बिरदावलि बरजोर॥२८८॥

शोक सनेह कि बाल सुभाये * आयसु लाइ रजायसु पाये ॥
तबहुँ कृपालु हेरि निजओरा * सबहिं भांति भल मानेहु मोरा ॥
देखउँ पाइँ सुमंगल-मूला * जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला ॥
बडे समाज बिलोकेउँ भागू * बडी चूक साहिबअनुरागू ॥
कृपा अनुग्रह अंग अघाई * कीन्ह कृपानिधि सब अधिकाई ॥
राखा मोर दुलार गुसाँई * अपने शील स्वभाव भलाई ॥
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई * स्वामिसमाज सकोच बिहाई ॥
अविनय[3] बिनय यथारुचि बानी * क्षमिय देवअति आरति जानी ॥

दो०सुहृद सुजान सुसाहिबहिं,बहुत कहत बडिखोरि॥
आयसु देइय देव अब, समय सुधारिय मोरि २८९

प्रभु- पदपद्म- पराग-- दुहाई * सत्य सुकृत सुखसींव सुहाई ॥
सो करि कहौं हिये अपनेकी * रुचि जागत सोवत सपनेकी ॥
सहज-सनेह स्वामि- सेवकाई * स्वारथ छल फल चारि बिहाई ॥

---

१ एकबखत. २ पढानेवालेके वशमें. ३ नम्रतारहित.

आज्ञासम न सुसाहिबसेवा * सो प्रसाद जन पावैं देवा ॥
अस कहि प्रेमबिवश भे भारी * पुलक शरीर विलोचन बारी ॥
प्रभुपदकमल गहे अकुलाई * समय सनेह न सो कहि जाई ॥
कृपासिन्धु सन्मानि सुबाणी * बैठाये समीप गहि पाणी ॥
भरतबिनय सुनि देखि स्वभाऊ * शिथिल सनेह सभा रघुराऊ ॥
छंद॥ रघुराउ शिथिल सनेह साधुसमाजमुनिमिथिलाधनी॥
मनमहँ सराहत भरतभायपभक्तिकी महिमा घनी॥
भरतहिं प्रशंसत विबुध बर्षत सुमन मानस मलिनसे
तुलसीबिकलसबलोगसुनिसकुचेनिशागमनलिनसे ॥
सो॰ देखि दुखारी दीन, दुहुँ समाज नर नारि सब ॥
मघवा महामलीन, मुये मारि मंगल चहत ॥ १२ ॥
कपट कुचालिसींव सुरराजू * पर अकाज प्रिय आपन काजू॥
काकसमान पाकरिपु-रीती * छली मलिन कतहुँ न परतीती॥
प्रथम कुमति करि कपट सकेला * सो उचाट सबके शिर मेला ॥
सुरमाया सबलोग बिमोहे * रामप्रेम अतिशय न बिछोहे ॥
भय उचाट सब मन थिर नाहीं * क्षण बन रुचि क्षण सदन सुहाहीं॥
द्विविध मनोगति प्रजा दुखारी * सरितसिंधुसंगम जिमि बारी ॥
दुचित कतहुँ परितोष न लहहीं * एक एकसन मर्म न कहहीं ॥
लखि हिय हँसि कह कृपानिधानू * सरिस श्वानै मघवा निज बानू ॥
दो॰ भरत जनक मुनिगण सचिव, साधु सचेत बिहाइ॥
लगी देवमाया सबहिं यथायोग जन पाय ॥२९०॥
कृपासिंधु लखि लोग दुखारे * निजसनेह सुरपतिछलभारे ॥

१ रात्रिको कमलसे. २ दुःखसे मरे. ३ इन्द्रकी रीति. ४ कुत्ता. ५ इन्द्र.

सभा राउ गुरु महिसुर[1] मंत्री * भरतभक्ति सबकी मति यंत्री[2] ॥
रामहिं चितवत चित्र लिखेसे * सकुचत बोलत बचन सिखेसे ॥
भरतप्रीति नित बिनय बड़ाई * सुनत सुखद बर्णत कठिनाई ॥
जासु बिलोकि भक्तिलवलेशू * प्रेममग्न मुनिगण मिथिलेशू ॥
महिमा तासुकहै किमितुलसी * भक्तिप्रभाव सुमतिहिय हुलसी ॥
आपु छोट महिमा बड़ि जानी * कबिकुलकानि[3] मानि सकुचानी ॥
कहिनसकतगुणरुचिअधिकाई * मतिगति बालबचनकी नाईं ॥

दो०भरतंबिमलयशबिमलबिधु[4],सुमतिचकोरकुमारि
उदित बिमल जनहृदयनभ[5], यकटकरही निहारि॥१

भरतस्वाभव न सुगम निगमहू * लघुमति चापलता कबि क्षमहू ॥
कहत सुनहु सतिभावभरतको * सीयरामपद होइ न रत को ॥
सुमिरत भरतहिं प्रेम रामको * जेहि न सुलभ तेहिंसरिसबामको ॥
देखि दयालु दशा सबहीकी * राम सुजान जानि जनजीकी ॥
धर्मधुरीण धीर नयनागर * सत्य–सनेह–शील–सुखसागर ॥
देशकाल लखि समय समाजू * नीतिप्रतिपालक रघुराजू ॥
बोलेबचन बाणि सरबससे * हित परिणाम सुनत शशिरससे[6] ॥
तात भरत तुम धर्मधुरीणा * लोकबेदबिधि परमप्रबीणा ॥

दो०कर्म बचन मानस बिमल, तुमसमान तुम तात॥
गुरुसमाज लघुबन्धुगुण, कुसमयकिमिकहिजात॥

जानहु तात तरणिकुलरीती * सत्यसिंधु पितुकीरति प्रीती ॥
समय समाज लाज गुरुजनकी * उदासीन हित अनहित मनकी ॥
तुमहिं विदित सबहींकर मर्मू * आपन मोर परम-हित–धर्मू ॥

१ ब्राह्मण. २ बँधगई. ३ लज्जा. ४ चंद्र. ५ आकाशमें. ६ अमृतसे.

मोहिं सबभांतिभरोस तुम्हारा * तदपि कहौं अवसरअनुसारा ॥
तात तातबिन बात हमारी * केवल कुलगुरुकृपा सुधारी ॥
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू * हमहिं सहित सब होत दुखारू ॥
जो बिनु अवसरअथवदिनेशू * जग केहि कहौ न होय कलेशू ॥
तसउत्पाततातबिधिकीन्हा * मुनि मिथिलेश राखि सब लीन्हा ॥

दो०राजकाज सब लाज पति, धर्म धरणि धन धाम
गुरुप्रभाव पालिहि सबहिं, भल होइहि परिणाम ९३

सहित समाज तुम्हार हमारा * घर बन गुरुप्रसाद रखवारा ॥
मातु-पिता-गुरु-स्वामिनिदेशू * सकल--धर्म--धरणीधर शेशू ॥
सो तुम करहु करावहु मोहू * तात तरणिकुलपालक होहू ॥
साधक एक सकलसिधिदेनी * कीरतिसुगतिभूतिमय बेनी ॥
सो बिचारि सहि संकट भारी * करहु प्रजा परिवार सुखारी ॥
बाँटि बिपति सबही मिलिभाई * तुमहिं अवधिभरि अतिकठिनाई ॥
जानि तुमाहिं मृदु कहौं कठोरा * कुसमय तात न अनुचित मोरा ॥
होहिं कुठाँव कुबन्धु सहाये * ओढ़िय हाथ अँसिनके घाये ॥

दो०सेवक करपदनयनसे, मुखसों साहिब होइ ॥
तुलसी प्रीतिकि रीति सुनि, सुकबि सराहहिं सोइ ४

सभा सकल सुनि रघुबरबानी * प्रेमपयोधिअमिय जनु सानी ॥
शिथिल समाज सनेहसमाधी * देखि दशा चुप शारद साधी ॥

---

१ माता पिता, गुरु, स्वामी इन्होंकी आज्ञा तथा संपूर्ण धर्मरूप पृथ्वी धरनेको. हे भरत ! तुम शेषनाग हो. २ सूर्यबंशके रक्षक.

भरतहि भयउ परमसंतोषू * सन्मुख स्वामि बिमुख दुख दोषू ॥
मुख प्रसन्न मन मिटा बिषादू * भा जनु गुंगहि गिराप्रसादू ॥
कीन्ह सप्रेम प्रणाम बहोरी * बोले पाणिपंकरुह जोरी ॥
नाथ भयो सुख साथ गयेको * लहेउँ लाभ जग जन्मभयेको ॥
अब कृपालु जस आयसु होई * करौं शीस धरि सादर सोई ॥
सो अवलंब देव मोहिं देई * अवधिपार पावउँ जेहि सेई ॥

दो०देवदेव अभिषेकहित, गुरुअनुशासन पाइ ॥
आनेउ सबतीरथसलिल, तेहिकहँ काह रजाइ ॥

एक मनोरथ बड़ मनमाहीं * सभय सकोच जात कहि नाहीं ॥
कहहु तात प्रभुआयसु पाई * बोले बाणि सनेह सुहाई ॥
चित्रकूट मुनिथल तीरथ बन * खग मृग सरि सर निर्झरगिरिगन ॥
प्रभुपदअंकित अवनि बिशेखी * आयसु होय तो आवौं देखी ॥
अवशि अत्रिआयसु शिर धरहू * तात बिगतभय कानन चरहू ॥
मुनिप्रसाद बन मंगलदाता * पावन परमसुहावन भ्राता ॥
ऋषिनायक जहँ आयसु देहीं * राखेहु तीरथजल थसु तेहीं ॥
सुनि प्रभुबचन भरत सुख पावा * मुनिपदकमसु मुदित शिरनावा ॥

दो०भरतरामसम्बाद सुनि, सकलसुमंगलमूल ॥
सुर स्वारथी सराहि कुल, हर्षित बर्षहिं फूल ॥२९६॥

धन्य भरत जय राम गुसाँई * कहत देव हर्षत बरिआई ॥
सुनि मिथिलेशसभा सबकाहू * भरतबचन सुनि भयउ उछाहू ॥
भरत--राम-गुण-ग्राम-सनेहू * पुलकि प्रशंसत राउ बिदेहू ॥
सेवकस्वामिस्वभाव सुहावन * नेम प्रेम अतिपावनपावन ॥

---

१ आधार (खराऊँ). २ गुरुकी आज्ञा. ३ नद.

मतिअनुसार सराहन लागे * सचिव सभासद सब अनुरागे ॥
सुनि सुर रामभरतसम्वादू * दुहुँ समाज हिय हर्ष विषादू ॥
राममातु दुख-सुख सम जानी * कहि गुण दोष प्रबोधी रानी ॥
एक करहिं रघुबीरबड़ाई * एक सराहत भरतभलाई ॥

दो०अत्रि कहेउ तब भरतसन, शैलसमीपसुकूप
राखिय तीरथतोय तहँ, पावन अमल अनूप॥२९७

भरत अत्रिअनुशासन पाई * जलभाजन सब दिये चलाई ॥
सानुज आपु अत्रिमुनि साधू * सहित गये जहँ कूप अगाधू ॥
पावनपाथ पुण्य थल राखा * प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा॥
तात अनादिसिद्ध थल येहू * लोपेउ काल बिदित नहिं केहू॥
... सेवकन्ह सरस थल देखा * कीन्ह सुजलहित कूप बिशेखा
...धिवश भयउ विश्वउपकारू * सुगम अगम अतिधर्मविचारू॥
...तकूप अब कहिहहिं लोगा * अतिपावन तीरथजलयोगा ॥
...मसमेत निमज्जहिं प्राणी * होइहिं विमल कर्ममनवाणी ॥

दो०कहतकूपमहिमा सकल, गये जहां रघुराउ ॥
अत्रि सुनायहु रघुवरहिं, तीरथपुण्यप्रभाउ॥२९८॥

...हत धर्मइतिहास सप्रीती * भयउ भोर निशि सो सुख बीती
...त्य निबाहि भरत दोउ भाई * राम अत्रिगुरुआयसु पाई ॥
...हित समाज साज सब सादे * चले राम बन अटन पयादे ॥
...मल चरण चलत बिनु पनहीं * भै मृदु भूमि सकुचि मन मनहीं॥
...श कंटक काँकरी कुराई * कटुक कठोर कुबस्तु दुराई ॥
...हि मंजुल मृदु मारग कीन्हे * बहत समीरत्रिबिध सुख लीन्हे ॥

... तीर्थजल. २ जलके पात्र. ३ पवित्र तीर्थजल.

सुमन बर्षि सुर घन करि छाहीं* बिटप फूलि फल देल मृदुताहीं॥
मृग बिलोकि खग बोलि सुबानी* सेवहिं सकल रामप्रिय जानी ॥

सो०सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहुँ, राम कहत जमुहात ॥
राम प्राणप्रिय भरतकहँ, यह न होइ बड़िबात ॥

यहिबिधि भरत फिरत बनमाहीं* नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं॥
पुण्य जलाशय भूमिबिभागा * खगमृग तरुतृण गिरि बनबागा॥
चारु बिचित्र पबित्र बिशेखी * बूझत भरत दिव्य सब देखी ॥
सुनि मन मुदितकहत ऋषिराऊ * हेतु नाम गुण पुण्य प्रभाऊ ॥
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रणामा *कतहुँ बिलोकत मन अभिरामा ॥
कतहुँ बैठि मुनिआयसु पाई * सुमिरत सीयसहित दोउ भाई ॥
देखि सुभाव सनेह सुसेवा * देहिं अशीस मुदित मन देवा ॥
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई * प्रभुपदकमल बिलोकहिं आई॥

दो०देखे थल तीरथ सकल, भरत पाँचदिनमाँझ॥
कहत सुनत हरिहरसुयश गयउ दिवस भइ साँझ ॥

भोर न्हाइ सब जुरा समाजू * भरत भूमिसुर[3] तिरहुतिराजू[4] ॥
भल दिन आजु जानि मनमाहीं* राम कृपालु कहत सकुचाहीं ॥
गुरु नृप भरत सभा अवलोकी *सकुचि रामफिरि अवनिबिलोकी
शील सराहि सभा सब शोची * कहुँ न रामसमस्वामि सकोची॥
भरत सुजान रामरुख देखी * उठि सप्रेम धरि धीर बिशेखी ॥
करि दण्डवत कहत कर जोरी* राखी नाथ सकल रुचि मोरी ॥
मोहिं लगि सबहि सहेउ संतापू * बहुतभांति दुख पावा आपू ॥
अब गुसाइँ मोहिं देहु रजाई * सेवौं अवध[5] अवधिलगि जाई ॥

१ वृक्ष. २ पत्ता. ३ ब्राह्मण. ४ जनक. ५ अयोध्या.

दो०-जेहि उपाय पुनि पाय जन, देखैं दीनदयालु ॥
सो शिष देइय अवधिलगि, कोशलपाल कृपालु ॥
पुरजन परिजन प्रजा गुसाँई * सब शुचि सरस सनेह सगाई ॥
राउर बदि भल भवदुखदाहू * प्रभु बिनु बादि परमपदलाहू ॥
स्वामि सुजान जानि सबहीकी * रुचि लालसा रहनि जन जीकी॥
प्रणतपाल पालहिं सबकाहू * देव दुहूँ दिशि ओर निबाहू ॥
असमोहिंसबबिधिभूरि भरोसो * किये बिचार न शोच खरोसो ॥
आरति मोरि नाथकर छोहू * दुहुँ मिल कीन्ह ढीठ हठि मोहू
यह बड़ दोष दूरि करि स्वामी * तजि सकोच सिखइय अनुगामी
भरतविनय सुनि सबहिं प्रशंसा * क्षीर[1]-नीर[2]-बिबरण-गति हंसा
दो०-दीनबन्धु सुनि बन्धुके, वचन दीन छलहीन॥
देश काल अवसर-सरिस, बोले राम प्रबीन ३०२
तात तुम्हारि मोरि परिजनकी * चिन्ता गुरुहिं नृपहिं घरबनकी ॥
माथेपर गुरुमुनि मिथिलेशू * हमहिं तुमहिं स्वपनेहुँ न कलेशू॥
मोर तुम्हार परम-पुरुषारथ * स्वारथ सुयश धर्म परमारथ ॥
पितुआयसु[3] पालिय दुइ भाई * लोक बेद भल भूपभलाई ॥
गुरुपितुमातुस्वामिसिख पाले * चलत सुमगु पग परत न खाले ॥
अस बिचारि सब शोच बिहाई * पालहु अवध अवधिभरि जाई॥
देश कोश पुरजन परिवारू * गुरुपदरजहिं लाग छरभारू ॥
तुम मुनिमातुसचिवसिख मानी * पालहु पुहुमि प्रजा रजधानी॥
दो०-मुखिया मुख-सो चाहिये,खान-पानको एक॥
पाले पोषे सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक३०३

१ बहुत,२दूध,पानीके विभागमें जैसें हंसकी गति होतीहै.३पिताकीआज्ञा.

राजधर्म सरबस इतनोई * जिमि मनमाहँ मनोरथ गोई ॥
बन्धु प्रबोध कीन्ह बहुभांती * बिनु अधार मन तोष न शांती ॥
भरत शील गुरुसचिवसमाजू * सकुच-सनेह-बिबश रघुराजू ॥
प्रभु करि कृपा पाँवरी दीन्ही * सादर भरत शीश धरि लीन्ही ॥
चरणपीठ करुणानिधानके * जनु युगयामिनि प्रजा-प्रानके ॥
सम्पुट भरत सनेह-रत्नके * आखर युग जनु जीवयत्नके ॥
कुलकपाटकर कुशल कर्मके * बिमल नयन सेवासुधर्मके ॥
भरत मुदित अवलम्ब लहेते * अस सुख जस सियराम रहेते ॥

दो०मांगेउ बिदा प्रणाम करि, राम लिये उर लाय॥
लोग उचाटे अमरपति, कुटिल कुअवसर पाय३०४

सो कुचालि सबकहँ भइनीकी * अवधि आश सब जीवन जीकी ॥
नतरु लषणसियरामबियोगा * हहरि मरत सब लोग कुरोगा ॥
रामकृपा अवरेव सुधारी * बिबुधधार भइ गुणद गुहारी ॥
भेंटत भुजभरि भाइ भरतसो * रामप्रेम रस कहि न परत सो ॥
बारिजलोचन मोचत बारी * देखि दशा सुरसभा दुखारी ॥
मुनिगण गुरुजन धीरजनकसे * ज्ञानअनल मन कसे कनकसे ॥
जे बिरंचि निर्लेप उपाये * पद्मपत्र जिमि जग जलजाये ॥

दो०तेउ बिलोकि रघुबर भरत, प्रीति अनूप अपार॥
भये मग्न तनु मन बचन, सहित बिरागबिचार३०५

जहाँ जनकगुरु गतिमति भोरी * प्राकृत प्रीति कहत बड़ खोरी ॥
बर्णत रघुबर-भरत-बियोगू * सुनि कठोर कबि जानिहिं लोगू ॥

---

१ जीवके मोक्ष होनेके लिये मानो रामनामहीके रकार और मकार.

सो सकोचबश अकथसुबानी * समयसनेह सुमिरि सकुचानी ॥
भेंटि भरत रघुबर समुझाये * पुनि रिपुदमन हर्षि हिय लाये ॥
सेवक सचिव भरतरुख पाई * निज निज काज लगे सब जाई ॥
सुनि दारुण दुख दुहूं समाजा * लगे चलनके साजन साजा ॥
प्रभुपदपद्म बन्दि दोउ भाई * चले शीश धरि रामरजाई ॥
मुनि तापस बनदेव निहोरी * सब सन्मानि बहोरि बहोरी ॥

दो०लषणहिं भेंटि प्रणाम करि, शिर धरि सियपदधूरि॥
चले सप्रेम अशीस सुनि, सकलसुमंगलमूरि३०६

सानुज राम नृपहिं शिर नाई * कीन्ही बहुबिधि बिनय बड़ाई ॥
देव दयाबश बड़ दुख पायहुँ * सहितसमाज काननहिं आयहु ॥
पुर पगु धारिय देइ अशीशा * कीन्ह धीर धरि गमन महीशा ॥
मुनि महिदेवै साधु सन्माने * बिदा किये हरिहरसम जाने ॥
सासुसमीप गये दोउ भाई * फिरे बन्दि पद आशिष पाई ॥
कौशिक बामदेव जाबाली * परिजन पुरजन सचिव सुचाली ॥
यथायोग्य करि बिनयप्रणामा * बिदा किये सब सानुज रामा ॥
नारि पुरुष लघु मध्य बड़ेरे * सब सन्मानि कृपानिधि फेरे ॥

दो०भरतमातुपद बन्दि दोउ, शुचि सनेह मिलि भेंट ॥
बिदा कीन्ह सजि पालकी, सकुचि शोच सब मेट ॥

परिजनमातुपितुहिंमिलिसीता* फिरी प्राणप्रिय–प्रेमपुनीता ॥
करि प्रणाम भेंटी सबसासू * प्रीति कहत कबिहिय न हुलासू॥
सुनिसिखअभिमतआशिषपाई* रही सीय दुहुँ प्रीति समाई ॥
रघुपति पटु पालकी मँगाई * करि प्रबोध सबमातु चढ़ाई ॥

१ ब्राह्मण. २ मनमाना. ३ मनोहर.

बार बार हिलि मिलि दोउ भाई * समसनेह जननी पहुँचाई ॥
साजि बाजि गज बाहन नाना * भूपभरतदल कीन्ह पयाना ॥
हृदय राम सिय-लषण-समेता * चले जाहिं सबलोग अचेता ॥
बसहे[2] बाँजि[3] गँज[4] पशु हिय हारे * चले जाहिं परबश मन मारे ॥

दो०गुरु-गुरुतिय-पद बन्दि प्रभु, सीता--लषण--समेत
फिरे हर्षबिस्मयसहित, आये पर्णनिकेत ॥ ३०८ ॥

बिदा कीन्ह सन्मानि निषादू * चलेउ हृदय बड़ बिरह बिषादू ॥
कोल्ह किरात भिल्ल बनचारी * फिरे जोहारि जोहारि जोहारी ॥
प्रभु सिय लषण बैठि बटछाहीं * प्रियपरिजनबियोग बिलखाहीं ॥
भरतसनेह स्वभाव सुबानी * प्रियाअनुजसन कहत बखानी ॥
प्रीति प्रतीति बचन-मनकरणी * श्रीमुख राम प्रेमबश बरणी ॥
तेहि अवसर खग मृग जल मीना * चित्रकूटचरअचर मलीना ॥
बिबुध बिलोकि दशा रघुबरकी * बर्षि सुमन कहि गति घरघरकी ॥
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह भरोसो * चले मुदित मन डर न खरोसो ॥

दो०सानुज सीय--समेत प्रभु, राजत पर्णकुटीर ॥
भक्ति ज्ञान बैराग्य जनु, सोहत धरे शरीर ॥ ३०९ ॥

मुनि महिसुरगुरु भरत भुआलू * राम बिरह सब साज बिहालू ॥
प्रभुगुणग्राम गुणत मनमाहीं * सब चुपचाप चले मगु जाहीं ॥
यमुना उतरि पार सब भयऊ * सो बासर बिनु भोजन गयऊ ॥
उतरि देवसरि दूसर बासू * रामसखा सब कीन्ह सुपासू ॥
सई उतरि गोमती नहाये * चौथे दिवस अवधपुर आये ॥
जनक रहे पुर बासर चारी * राजकाज सबसाज सँभारी ॥

---

१ जनक और भरतजीकी फौजने, २ बैल, ३ घोड़े, ४ हाथी.

सौंपि सचिव गुरुभरताहिं राजू * तिरहुत चले साजि सब साजू ॥
नगरनारिनर गुरुसिख मानी * बसे सुखेन राम-रजधानी ॥
दो०रामदर्शहित लोग सब, करत नेम उपबास ॥
तजि २ भूषण भोग सुख, जिअतअवधिकी आस ॥
सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे * निज २ काज पाइ शिख सोधे ॥
पुनि शिखदीन्हबोलिलघुभाई * सौंपी सकल-मातु-सेवकाई ॥
भूसुर[1] बोलि भरत करजोरे * करि प्रणाम बर बिनय निहोरे ॥
ऊँच नीच कारज भल पोचू * आयसु देव न करब सकोचू ॥
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये * समाधान करि सुबश बसाये ॥
सानुज गे गुरुगेह बहोरी * करि दण्डवत कहत कर जोरी ॥
आयसु होइ तो रहौं सनेमा * बोले मुनि तब पुलकि सप्रेमा ॥
समुझब कहत करब तुम सोई * धर्मसार जग होइहि जोई ॥
दो०मुनिशिखपाइअशीषबड़ि, गणक[2]बोलि दिनसाधि
सिंहासन प्रभु-पादुका, बैठारी निरुपाधि[3] ॥३११॥
राममातुगुरुपद शिर नाई * प्रभुपदपीठि-रजायसु[4] पाई ॥
नंदिग्राम करि पर्णकुटीरा * कीन्ह निबास धर्मधुर धीरा ॥
जटाजूट शिर मुनिपटधारी * महि खनि कुशसाथरी सँवारी ॥
अशन बसन बासन व्रत नेमा * करत कठिन ऋषिधर्म सप्रेमा ॥
भूषण बसन भोगसुख भूरी * मन तनु बचन तजे तृण तूरी ॥
अवधराज सुरराज सिहाहीं * दशरथधन लखि धनदलजाहीं ॥

१ब्राह्मण. २ज्योतिषी. ३उपाधिरहित. ४रामचन्द्रजीकी खराउवोंकी आज्ञा.

तोहिं पुरवसत भरत बिनु रागा * चंचरीक जिमि चम्पकबागा ॥
रमाबिलास-राम--अनुरागी * तजत भवनजिमि नर बड़भागी॥

दो० रामप्रेमभाजन भरत, बड़ी न यह करतूति ॥
चातक हंस सराहियत, टेक बिबेक बिभूति॥३१२॥

देह दिनहिं दिन दूबरि होई * घट न तेज बल मुखछबि सोई ॥
नित नव रामप्रेमप्रण पीना * बढ़त धर्मदल मन न मलीना॥
जिमि जल निघटत शरद प्रकाशे* बिलसत बेतस बनज बिकाशे॥
शम दम संयम नियम उपासा *नखत भरत हिय बिमल अकाशा
ध्रुव विश्वास अवधि रांकासी * स्वामिसुरति सुरबीथि बिकासी
रामप्रेमबिधु अचल अदोषा * सहित समाज सोह नित चोषा॥
भरतरहनि समुझनि करतूती * भक्तिबिरति गुणबिमलबिभूती॥
बर्णत सकल सुकबि सकुचाहीं* शेष-गणेश-गिरा-गम नाहीं ॥

दो० नित पूजत प्रभुपांवरी, प्रीति न हृदय समाति ॥
माँगि माँगि आयसु करत, राजकाज बहु भांति ३१३॥

पुलकगात हिय सिय रघुबीरू * जीह नाम जपु लोचन नीरू॥
लषण रामसिय कानन बसहीं * भरत भवन बसि तपतनु कसहीं॥
दुहुँ दिशि समुझि कहत सबलोगू* सबबिधि भरत सराहनयोगू ॥
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं * देखि दशा मुनिराज लजाहीं ॥
परम-पुनीत भरत--आचरणू * मधुर मंजु मृदु मंगल-करणू ॥

---

१ भ्रमर. २ पुष्ट. ३ कमल. ४ पूनमसी. ५ मनोहर.

हरण कठिन कलिकलुषकलेशू * महामोहनिशि-दलनदिनेशू[1] ॥
पापपुंज- कुंजर- मृगराजू[2] * शमन सकल-सन्ताप-समाजू ॥
जनरंजन भंजन भवभारू * राम--सनेह-सुधाकर सारू ॥

छंद॥ सियरामप्रेमपियूषपूरण होत जन्म न भरतको
मुनिमनअगमयमनियमशमदम विषमव्रतआचरतको
दुख दाह दारिद दम्भ दूषण सुयशमिस अपहरतको ॥
कलिकाल तुलसीसे शठहि हठि रामसन्मुख करतको

सो॰ भरतचरित करि नेम, तुलसी जो सादर सुनहिं ॥
सीयरामपदप्रेम, अवशि होइ भवरसविरति ॥१३॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमल-
विज्ञानवैराग्यसन्तोषसम्पादनोनाम श्रीगोस्वामि-तुलसी-
दासकृतअयोध्याकाण्डः द्वितीयः सोपानः समाप्तः ॥२॥

इति अयोध्याकाण्डं समाप्तम् ॥

१ महान् मोहरूप रात्रिके नाशक सूर्य. २ पापसमूह रूप हाथीको सिंह.

श्रीयुतगोस्वामी

तुलसीदासकृतरामायणम्.

(अरण्यकाण्डम्)

संवत् १९५६

* अरण्यकाण्डम् *

श्रीः ।

श्रीयुतगोस्वामी

तुलसीदासकृतरामायणे

अरण्यकाण्डप्रारंभः ।

दो॰हनि विराध बनशुचिकरण, शूर्पणखाअँगभंग ॥
दलि खरादिदल सियहरण, काण्ड अरण्यप्रसंग ॥

श्लो॰-मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं वैराग्याम्बुजभास्करं ह्यघघनध्वान्तापहं तापहम्॥ मोहाम्भोधरपूगपाटनविधौ खेसंभवं शंकरं वंदे ब्रह्मकुलं कलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियम्॥ १ ॥ सांद्रानंदपयोदसौभगतनुं पीतांबरं सुंदरं पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम्॥राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥२॥

श्लोकार्थ-जो धर्मरूपवृक्षका मूल कारण,विवेक अर्थात् प्रकृति पुरुषके ज्ञानरूप समुद्रकी वृद्धिके लिये पूर्णचन्द्ररूप,वैराग्यरूप कमलको प्रफुल्लित करनेमें सूर्यरूप, अतएव पापरूप बड़ेभारी अंधकारका नाश करनेवाले, अध्यात्मआदि तीन प्रकारके ताप दूरकरनेवाले, मोहरूप मेघोंके समूहोंके उड़ानेमें पवन और ब्रह्मकुलके पालक और कलंकके नाशक ऐसे जो श्रीराजा रामचन्द्रके प्रिय अथवा राम प्रिय हैं जिन्होंके ऐसे शंकर,
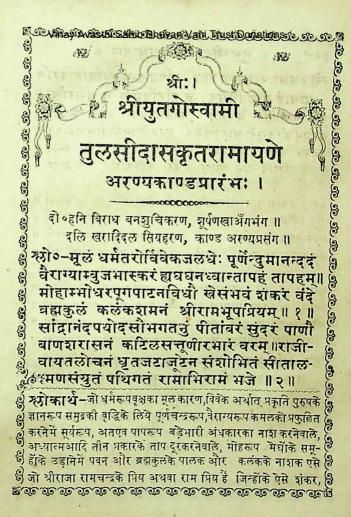
सो०उमा रामगुण गूढ, पण्डितमुनिपावहिंबिरति पावहिं मोह बिमूढ, जे हरिबिमुख न धर्मरति१॥

पूरण भरतप्रीति मैं गाई * मतिअनुरूप अनूप सुहाई ॥
अबप्रभुचरित सुनौ अतिपावन * करतजोबनसुरनरमुनिभावन ॥
एकबार चुनि कुसुम सुहाये * निजकर भूषण राम बनाये ॥
सीतहिं पहिराये प्रभु सादर * बैठे फटिकशिला परमादर ॥

अथ क्षेपक ॥

करहिं प्रकाश पास मणिझारी * रही छिटक पूनों उजियारी ॥
तेहि निशि नारि जयन्ताकेरी * आई तहँ लै सुमुखि घनेरी ॥
रघुपतिरूप बिलोकि जुड़ानी * नृत्य गान कीन्हो कलबानी ॥
मनभावन बर माँगि सिधाई * सोसुधि कतहु जयन्ताहिं पाई ॥

इति क्षेपक ॥

सुरपतिसुत धरि बायसबेखा * शठ चाहत रघुपतिबल देखा ॥
जिमि पिपीलिका सागरथाहा * महामन्द-मति पावन चाहा ॥
सीताचरणचोंच हति भागा * मूढ़ मंदमति कारणकागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना * सींकधनुषसायक सन्धाना ॥

दो०अतिकृपालु रघुनायक, सदा दीनपर नेह॥ तासन आइ कीन्ह छल, मूरख अवगुणगेह॥ १ ॥

जीकी मैं बन्दना करता हूं ॥१॥ सघन आनन्दमय मेघकी तुल्य श्याम सुन्दर शरीर जिनका और पीताम्बरको धारण किये सुन्दर हाथमें धनुषबाण और कमरमें तरकस शोभ रही है और कमलके तुल्य बड़े सुंदर नेत्र और धारण किया जो जटाजूट तिसकरके शोभित और सीतालक्ष्मणसंयुक्त रास्तेमें प्राप्त ऐसे मनोहर रामको मैं भजताहूं॥२॥

१बुद्धिके सदृश. २उपमारहित. ३अति पवित्र. ४देव मनुष्य व मुनियोंका प्रिय.

बिनपराध प्रभु हतैं न काहू * अवसर परे ग्रसै शशि राहू ॥
जबप्रभु लीन्ह धनुषसिकबाना * क्रोध जानि भा अनलसमाना ॥
प्रेरितै अस्त्र ब्रह्मशर धावा * चला भाजि बायस भय पावा ॥
धरि निजरूप गयउ पितुपाहीं * रामविमुख राखा तिन नाहीं ॥
भा निराश उपजी हिय त्रासा * यथा चक्रभय ऋषि दुर्बासा ॥
ब्रह्मधाम शिवपुर सबलोका * फिराश्रमितव्याकुलभय शोका ॥
काहूँ बैठन कहा न ओही * राखि को सकै रामकर द्रोही ॥
मातुमृत्यु पितु शमनसमाना * सुधा होइ विष सुनु हरियाना ॥
मित्र करै शतरिपुकै करणी * ताकहँ विबुधनदी बैतरणी ॥
सब जग ताहि अनलते ताता * जो रघुबीरविमुख सुनु भ्राता ॥

दो०-जिमिजिमि भाजत शक्रसुत, व्याकुल अतिदुखदीन
तिमि तिमि धावत रामशर, पाछे परमप्रवीन ॥२॥

बचहिं उरग बरु ग्रसै खगेशा * रघुपतिशर छुटि बचन अँदेशा ॥
नारद देखा बिकल जयन्ता * लागि दया कोमल चित सन्ता॥
दूरिहिते कहि प्रभुप्रभुताई * भजे जात बहुबिधि समुझाई ॥
पठवा तुरत रामपहँ ताही * कहसि पुकारि प्रणतहित पाही ॥
सुनि मुनिबचन नाइपदमाथा * आवा जहँ कृपालु रघुनाथा ॥
आतुर सभय गहेसि पद जाई * त्राहि त्राहि दयालु रघुराई ॥
अतुलितबल अतुलितप्रभुताई * मैं मतिमन्द जानि नहिं पाई ॥
निजकृतकर्मजानितफलपायउँ * अबप्रभुपाहि शरण तकि आयउँ ॥
सुनि कृपालु अतिआरतबानी * एकनयन करि तजा भवानी ॥

सो०-कीन्ह मोहबशद्रोह, यद्यपि तेहिकरबधउचित

१ अग्निसदृश. २ चलावा. ३ काग. ४ पिता इन्द्रके पास. ५ काल.

प्रभु छाँड़ेउ करि छोह, को कृपालु रघुबीरसम ॥२॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना * चरित करत अति सुधासमाना ॥
"यहि प्रकारप्रभुसहितसुपासा* शास्त्रमास तहँ कीन्हों बासा ॥
अवधलोग तहँ भोरे रहावैं * बीसक जाइँ पचीसक आवैं" ॥
बहुरि राम अस मनअनुमाना * होइहि भीर सबहिँ मोहिँ जाना ॥
सकलमुनिन्हसन बिदा कराई * सीतासहित चले दोउ भाई ॥

दो० 'दशमीतिथिसबऋषिनते, कारमासकहिजान
सहित लषण सिय राम दिशि, दक्षिण कीन पयान'॥

अत्रीके आश्रम प्रभु गयऊ * सुनत महामुनि हर्षित भयऊ ॥
पुलकित गात अत्रि उठिधाये * देखि राम आतुर चलि आये ॥
करत दण्डवत मुनि उर लाये * प्रेमबारि दोउ जन अन्हवाये ॥
देखि रामछबि नयन जुड़ाने * सादर निजआश्रम तब आने ॥
करि पूजा कहि बचन सुहाये * दिये मूल फल प्रभुमन भाये ॥

सो० प्रभु आसनआसीन, भरि लोचन शोभानिरखि
मुनिवरपरमप्रबीन, जोरि पाणि अस्तुति करत॥३॥

न० छं० नमामि भक्तवत्सलं कृपालु शीलकोमलं ॥
भजामि ते पदाम्बुजं अकामिनां स्वधामदं ॥
निकामश्यामसुन्दरं भवाम्बुनाथमन्दरं ॥
प्रफुल्लकंजलोचनं मदादिदोषमोचनं ॥ १ ॥

* भक्त हैं प्रिय जिनके और कृपाका घर और कोमल स्वभाव है जिनका तिनको मैं नमस्कार करता हूं और निष्कामियोंको अपने धामके देनहारे आपके चरणारबिन्दको मैं भजता हूं और हे नाथ !

१ छे महीना. २ प्रेमजलसे.

प्रलम्बबाहुविक्रमं प्रभोऽप्रमेयवैभवं ॥
निषंगचापसायकं धरं त्रिलोकनायकं ॥
दिनेशवंशमण्डनं महेशचापखण्डनं ॥
मुनीन्द्रसन्तरंजनं सुरारिवृंदभंजनं ॥ २ ॥
मनोजवैरिवन्दितं अजादिदेवसेवितं ॥
विशुद्धबोधविग्रहं समस्तदुःखतापहं ॥
नमामि इन्दिरापतिं सुखाकरं सतांगतिं ॥
भजे सशक्तिसानुजं शचीपतिप्रियानुजं ॥ ३ ॥
त्वदंघ्रिमेव ये नरा भजन्ति हीनमत्सराः ॥
पतंति नो भवार्णवे वितर्कवीचिसंकुले ॥
विविक्तवासिनः सदा भजंति मुक्तिदं मुदा ॥
निरस्य इन्द्रियादिकं प्रयांति ते गतिं स्वकाम्॥४॥

संसाररूप समुद्रमथनमें आप मन्दराचल हो और फूले कमलकी तुल्य नेत्र और मदादिदोषोंके छुड़ानेवाले हो ॥ १ ॥ हे प्रभो ! (हे समर्थ) ! आपकी भुजाओंका बल बे प्रमाण है और धनुष तर्कस धारण किये आप तीनों लोकोंके मालिक हो और सूर्यबंशके भूषण और शंकरका धनुष तोड़नेवाले हो बड़े बड़े मुनियोंको तथा संतोंको रमानेवाले, और दैत्योंके समूहोंके मारनेवाले हो ॥२॥ और शंकरकरके बंदित और ब्रह्मादिदेवोंकरके सेवित और विशुद्ध ज्ञानमय शरीर और सब दुःखोंके संताप दूर करनेवाले, सुखोंकी खान, सज्जनोंकी गति, लक्ष्मीपति, ऐसे रामजीकों मैं नमस्कार करता हूं. और इन्द्रके अनुज नाम छोटे भाई उपेन्द्र और सीतालक्ष्मणसहित जो आप तिनको मैं भजता हूं ॥ ३ ॥ और जो लोग मत्सररहित हो केवल तुम्हारे चरणहीको भजते हैं, वे लोग वितर्कलहरोंसे व्याप्त, संसाररूप समुद्रमें नहीं पड़ते. और इन्द्रियादि-

त्वमेकमद्भुतं प्रभुं निरीहमीश्वरं विभुं ॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं तुरीयमेव केवलं ॥
भजामि भाववल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं ॥
स्वभक्तकल्पपादपं समस्तसेव्यमन्वहं ॥ ५ ॥
अनूपरूपभूपतिं नतोहमुर्विजापतिं ॥
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहिमे ॥
पठन्ति ये स्तवं त्विदं नरादरेण ते पदं ॥
व्रजन्ति नात्र संशयं त्वदीय भक्तिसंयुतं ॥ ६ ॥

दो०-बिनती करि मुनि नाइ शिर, कह कर जोरि बहोरि ॥
चरणसरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि ॥

जन्म जन्म तव पद सुखकन्दा॥ बढ़ौ प्रेम चकोर जिमि चन्दा ॥
देखि राम मुनि बिनय प्रणामा॥ बिविध भाँति पायउँ बिश्रामा ॥

कोंकी विषय बासना छोड़,जो लोग मुक्ति देनेवाले आपको एकांतमें बैठके भजते हैं वो लोग आनंदसे आत्मगतिको प्राप्त होते हैं ॥४॥ और अद्भुत, प्रभु नाम समर्थ, निरीह नाम चेष्टाव्यापाराहित; ईश्वर, विभु नाम व्यापक, जगद्गुरु, शाश्वत नाम सनातन, तुरीय नाम जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्तिसे भिन्न केवल भाववल्लभ नाम भक्तिप्रिय, कुयोगियोंको दुर्लभ और अपने भक्तोंको कल्पवृक्ष, सब प्राणियोंकरके सेवित, ऐसे एक तुम्हारेको मैं रोज रोज भजताहूं ॥ ५ ॥ और उपमारहितरूप, पृथ्वीपति, सीतापति आपको मैं नमस्कार करता हूं. आप प्रसन्न होवो, मेरेको अपने चरणारविन्दमें भक्ति देवो और जो कोई इस स्तोत्रको आदरसे पढ़ते हैं वो लोग तुम्हारी भक्तिसंयुक्त निःसंदेह तुम्हारे पदको प्राप्त होतेहैं ॥६॥

१ पदकमल.

अनुसूयाके पद गहि सीता * मिली बहोरि सुशील बिनीता ॥
जो सिय सकललोकसुखदाता * अखिललोकब्रह्माण्डकी माता ॥
ते पाई सिय मुनिबरभामिनि * सुखभिई कुमुदिनिज्योंयामिनि ॥
ऋषिपत्नीमन सुख अधिकाई * आशिष देइ निकट बैठाई ॥
दिव्य बसन भूषण पहिराये * जे नित नूतन अमल सुहाये ॥
जाहि निरखि दुख दूरि पराहीं * गरुड़ जानि जिमि पन्नग जाहीं ॥

**दो०ऐसे बसन बिचित्र सुठि, दिये सीयकहँ आनि ॥
सनमानी प्रिय बचन कहि, प्रीति न जाइ बखानि ॥४॥**

कह ऋषिबधू सरलमृदु बानी * नारिधर्म कछु व्याज बखानी ॥
मात पिता भ्राता हितकारी * मित सुखप्रद सुनु राजकुमारी ॥
अमितदानि भर्त्ता बैदेही * अधम नारि जो सेव न तेही ॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी * आपदकाल परखिये चारी ॥
वृद्ध रोगवश जड़ धनहीना * अन्ध बधिर क्रोधी अतिदीना ॥
ऐसेहु पतिकर किय अपमाना * नारि पाव यमपुर दुख नाना ॥
एकै धर्म एक व्रत नेमा * काय बचन मन पतिपदप्रेमा ॥
जगपतिव्रताचारिबिधिअहहीं * बेद पुराण सन्त अस कहहीं ॥

**दो०उत्तम मध्यम नीच लघु, सकल कहौं समुझाइ
आगे सुनहिं ते भव तरहिं, सुनहु सीय चित लाइ॥५॥**

उत्तमके अस बस मनमाहीं * स्वप्नेहुँ आन पुरुष जग नाहीं ॥
मध्यम परपति देखहिं कैसे * भ्राता पिता पुत्र निज जैसे ॥
धर्म बिचारि समुझि कुल रहहीं * सो निकृष्ट तिय श्रुति अस कहहीं ॥
बिनु अवसर भयते रह जोई * जानेहु अधमनारि जग सोई ॥

---

१ अनुसूयाजी. २ रात्रि. ३ बस्त्र. ४ सर्प. ५ सीताजीको मिस करि.

पतिबंचक परपतिरति करई * रौरवनरक कल्पशत परई ॥
क्षणसुखलागि जन्मशतकोटी। * दुख न समझ तेहि सम को खोटी॥
बिनुश्रम नारि परमगति लहई * पतिव्रतधर्म छाँड़ि छल[1] गहई ॥
पतिप्रतिकूले[2] जन्मि जहँ जाई * विधवा होइ पाइ तरुणाई[3] ॥

सो०सहज अपावनि[4] नारि, पतिसेवत शुभगतिलहहि
यश गावत श्रुति चारि, अजहूँ तुलसी हरिहिं प्रिय ४
सुनु सीता तव नाम, सुमिरि नारि पतिव्रत करहिं ॥
तोहिं प्राणप्रिय राम, कहेउ कथा संसारहित ॥५॥

सुनि जानकी परम सुख पावा * सादर तासु चरण शिर नावा ॥
तब मुनिसन कहकृपानिधाना * आयसु होइ जाउँ बन आना ॥
सन्तत मोपर कृपा करेहू * सेवक जानि तजेहु जनि नेहू ॥
धर्मधुरन्धर प्रभुकी बानी * सुनि सप्रेम बोले मुनि ज्ञानी ॥
जासुकृपाअजशिव सनकादी * चहत सकल-परमारथवादी ॥
ते तुम राम अकामपियारे * दीनबन्धु मृदु बचन उचारे ॥
अब जानी मैं श्रीचतुराई * भजिय तुमहिं सब देव बिहाई ॥
जेहिसमानअतिशयनहिंकोई * ताकर शील कस न अस होई ॥
केहिबिधिकहौंजाहुबनस्वामी*कहहु नाथ तुम अन्तर्यामी ॥
असकहिप्रभुबिलोकिमुनिधीरा*लोचन जल बह पुलक शरीरा ॥

छं०तनुपुलकनिर्भरप्रेमपूरणनयनमुखपंकजादिये॥
मनज्ञानगुणगोतीतप्रभुमैंदीख जप तप का किये ॥
जप-योग-धर्म-समूह ते नर भक्ति अनुपम पावई ॥
रघुबीरचरितपुनीतनिशिदिनदासतुलसीगावई७

१ पतिसे छलकरना. २पतिके विरुद्ध. ३जवानी. ४स्वभावसे अपवित्र.

दो०-कलिमल शमन दमन मन, रामसुयश सुखमूल ॥
सादर सुनहिं जे ताहिपर, राम रहहिं अनुकूल ॥
सो०-कठिन कालमलकोष, धर्म न ज्ञान न योग तप॥
परिहर सकल भरोस, राम भजहिं ते चतुर नर ॥
दो०-मुनिहुँकि अस्तुति कीन्ह प्रभु, दीन्ह सुभग वरदान
सुमनवृष्टि[1] नभ[2] संकुल[3], जय जय कृपानिधान ॥७॥

मुनिपदकमल नाइ करि शीशा * चले बनहिं सुरनरमुनिईशा[4] ॥
आगे राम अनुज पुनि पाछे * मुनिबरबेष बने अति आछे ॥
सरिता बन गिरि अवघट घाटा * पति पहिचानि देहिं बर बाटा॥
जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया * करहिं मेघ नभ तहँ तहँ छाया ॥
आश्रम विपुल दीख बनमाहीं * देवसदन तेहि पटुतर नाहीं ॥
बहुतडाग सुन्दर अमराई * भांति भांति सब मुनिन लगाई
दिव्य विटप बन चहुँदिशि सोहैं * देखत सकल–सुरन--मन मोहैं॥
तेहि दिन तहँ प्रभु कीन्हनिवासा * सकलमुनिनमिलिकीन्हसुपासा॥

दो०-निज निज आश्रम वेदिका, तिहिपर तुलसि बिराज
अनुजजानकीसहित तहँ, राजत भे रघुराज ॥ ८ ॥
आनि सुआश्रम मुदित मन, पूजि पहुनई कीन्ह ॥
कन्द मूल फल अमियसम, आनि रामकहँ दीन्ह ॥९॥

अनुजसीयसह भोजन कीन्हा * जो जिहि भाव सुभग बर दीन्हा
होतप्रभात मुनिन्ह शिरनावा * आशीर्बाद सबहिंसन पावा ॥
सुमिरि उमा सुर सिद्ध गणेशा * पुनि प्रभु चले सुनहु बिहगेशा॥
बन अनेक सुन्दर गिरिनाना * लाँघत चले जाहिं भगवाना ॥

---

१ फूलोंकी बर्षा. २ आकाशमें. ३ व्याप्त. ४ देवता; मनुष्य और ऋषियोंके मालिक

मिला असुर विराध मगु जाता * गर्जत घोर कठोर रिसाता ॥
रूप भयंकर मानहुँ काला * बेगवन्त धायउ जिमि व्याला ॥
गगन देव मुनि किन्नर नाना * तेहि क्षण हृदय हारि भय माना
तुरतहिं सो सीतहिं लै गयऊ * रामहृदय कछु बिस्मय भयऊ ॥
समुझा[1] हृदय केकयीकरणी * कहा अनुजसन बहुबिधि बरणी ॥
बहुरि लषण रघुबरहिं प्रबोधा * पाँच बाण छाँडे करि क्रोधा ॥

**छन्द०भयेक्रोधलषणसंधानिधनुशरमारितेहिव्याकुलकियो
पुनि उठि निशाचर राखि सीतहि शूल लै धावत भयो
जनु कालदंड कराल धावा विकल सब खग मृग भये
धनु तानि श्री रघुबंशमणि पुनिकाटि तेहि[2] रजसमकिये ॥**

**दो०बहुरि एक शर मारेउ, परा धरणि धुनि माथ
उठा प्रबल पुनि गर्जेउ, चला जहाँ रघुनाथ ॥१०॥**

ऐसे कहत निशाचर धावा * अब नहिं बचहु तुमहिं मैं खावा
तासु तेज शत[3]मरुत--समाना * टूटहिं तरु बहु उडहिं पखाना[4] ॥
जीव जन्तु जहँलगि रहे जेते * व्याकुल भाजि चले सब ते ते ॥
आव प्रबल इहिबिधि जनु भूधर[5] * होइहि काह कहहिं व्याकुल सुर ॥
उरगसमान जोरि शर[6] साता * आवतही रघुबीर निपाता ॥
तुरतहि रुचिर रूप तेहिं पावा * देखि दुखी निजधाम पठावा ॥
तासु अस्थि गाड़ेउ प्रभु धरणी * देव मुदितमन लखि प्रभुकरणी
सीता आइ चरण लपटानी * अनुजसहित तब चले भवानी ॥
उहाँ शक्र जहँ मुनि शरभंगा * आये सकल देव निजसंगा ॥
गये कहन प्रभु देन सिखावन * दिशि बलभेद बसत जहँ रावन ॥

दो०सुरपतिसंशय तमससम, रघुपतितेज दिनेश ॥

---

१ समझाया. २ धूलिसमान. ३ सौ पवनके सदृश. ४ पत्थर ५ पर्वत. ६ बाण.

रावणजीतन निशासम, वीते छुटहिं कलेश ॥११॥

सुनासीर प्रभु तिहि क्षणदेखा * तेजनिधान शुभ्र अतिबेषा ॥
तुरग चारि बल मरुतसमाना * रथरबिसम नहिं जाय बखाना ॥
क्षि[1]ति न परस अन्तर्हित रहई * श्वेत छत्र चामर शिर ढरई ॥
अनुजहिंप्रियहिं कहासमुझाई * सुरपति-महिमा–गुण–प्रभुताई ॥
जिहिकारण बासव तहँ आये * सो कछु बचन कहन नहिं पाये ॥
बीचहिं सुनि आवन प्रभुकेरा * कहि सारथी तुरत रथ फेरा ॥
दूरिहिते करि प्रभुहिं प्रणामा * हर्षि सुरेश गयो निजधामा ॥
प्रभु आये जहँ मुनि शरभंगा * सुन्दर–अनुज–जानकी--संगा ॥

दो०देखि राम-मुखपंकजहिं, मुनिवर-लोचन-भृंग॥
सादर पान करत अति, धन्य धन्य शरभंग ॥१२॥

कह मुनि सुनु रघुबीरकृपाला * शंकर[2]--मानस–राजमराला ॥
जात रहेउँ बिरंचिके धामा * सुनेउँ श्रवण बन आवत रामा ॥
चितवत पन्थ रहेउँ दिन राती * अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती ॥
नाथ सकल साधन मैं हीना * कीन्ही कृपा जानि जन दीना ॥
सो कछु देव न मोर निहोरा * निजप्रण राखेउ जनमनचोरा ॥
तबलगि रहहु दीनहितलागी * जबलगि मिलौं तुम्हैं तनु[3] त्यागी ॥
योग यज्ञ जप तप व्रत कीन्हा * प्रभुकहँ देइ भक्ति बर लीन्हा ॥
इहिबिधिसर[4]रचिमुनिशरभंगा * बैठे हृदय छाँड़ि सब संगा ॥

दो०सीता अनुजसमेत प्रभु, नीलजलदतनुश्याम ॥
मम हिय बसहु निरन्तर, सगुणरूप श्रीराम ॥१३॥

अस कहियोगअग्नितनुजारा * रामकृपा वैकुण्ठ सिधारा ॥
तातै मुनि हरिलीन न भयऊ * प्रथमहिं भेट भक्तिवर लयऊ ॥

---

१ पृथ्वी. २ शिवजीके मनरूप मानस सरोवरके राजहंस. ३ देह ४ चिता.

ऋषिनिकायमुनिबरगतिदेखी * सुखी भये निजहृदय बिशेखी ॥
अस्तुति करहिंसकलमुनिवृंदा * जयति प्रणतहित करुणाकंदा ॥
पुनि रघुनाथ चले बन आगे * मुनिवरवृन्द पुलकि सँग लागे ॥
अस्थिसमूह[1] देखि रघुराया * पूँछा मुनिन्ह लागि अति दाया ॥
जानत हौ का पूँछहु स्वामी * समदर्शी तुम-अन्तर्यामी ॥
निशिचरनिकर[2]सकलमुनिखाये * सुनिरघुनाथ नयन जल छाये ॥
दो० निशिचरहीन करौं मही[3], भुज उठाइ प्रण कीन्ह
सकलमुनिन्ह के आश्रमन्ह, जाइ जाइ सुख दीन्ह १४
मुनिअगस्त्यकरशिष्यसुजाना * नाम सुतीक्षण रत भगवाना ॥
मन क्रम बचन रामपदसेवक * स्वप्नेहु आन भरोस न देवक ॥
प्रभुआगमन श्रवणसुनिपावा * करत मनोरथ आतुर धावा ॥
हे विधी दीनबन्धु रघुराया * मोसे शठपर करिहहिं दाया ॥
सहित-अनुजमोहिरामगुसाई * मिलिहहिं निजसेवककी नाई ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ नाहीं * भक्ति न बिरति ज्ञान मनमाहीं ॥
नाहिं सतसंग योग जप यागा * नाहिं दृढ़ चरणकमलअनुरागा ॥
एक बानि करुणानिधानकी * सो प्रिय जाके गति न आनकी ॥
छंद॰ सोपरमप्रियअतिपातकीजिन्हकबहुँप्रभुसुमिरणकर्यो
ते आजु मैं निजनयन देखौं पूरि पुलकित हिय भर्यो
जे पदसरोज[4] अनेक मुनि करि ध्यानकबहुँकआवहीं
ते राम श्रीरघुबंशमणि प्रभु प्रेमते सुख पावहीं ॥९॥
दो०पन्नगारि[5] सुनु प्रेमसम, भजन न दूसर आन ॥
यह विचारि पुनि पुनि मुनी, करत रामगुणगान १५
होइहहिंसफलआजुममलोचन * देखि बदनपंकज भवमोचन ॥

---

१ हाडोंका ढेर. २ राक्षससमूह. ३ पृथ्वी. ४ चरणकमल. ५ गरुड.

निर्भर-प्रेम-मग्न मुनि ज्ञानी * कहि न जाइ सो दशा भवानी ॥
दिशि अरु बिदिशिपंथ नहिं सूझा * को मैं कहाँ चलौं नहिं बूझा ॥
कबहुँक फिरि पाछे पुनि जाई * कबहुँक नृत्य करै गुण गाई ॥
अविरल प्रेम भक्ति मुनि पाई * प्रभु देखहिं तरुओट लुकाई ॥
अतिशय प्रीति देखि रघुबीरा * प्रकटे हृदय हरण-भव-भीरा ॥
मुनिमगमाँझ अचल होइ बैसा * पुलकशरीर पनसफल जैसा ॥
तबरघुनाथ निकट चलिआये * देखि दशा निजजनमन भाये ॥

**सो०राम सुसहजस्वभाव, सेवक-दुखदारिद-दमन॥
मुनिसन कह प्रभुआव, उठ२ द्विज मम प्राणसम॥७॥**

मुनिहिं राम बहुभांति जगावा * जाग न ध्यानजनित सुख पावा॥
भूपरूप तब राम दुरावा * हृदय चतुर्भुजरूप दिखावा ॥
मुनि अकुलाय उठा तब कैसे * बिकल हीन फणि मणिबिनु जैसे॥
आगे देखि राम तनु श्यामा * सीताअनुजसहित सुखधामा ॥
परेउ लकुट इव चरणन्ह लागी * प्रेममग्न मुनिबर बड़भागी ॥
भुज बिशाल गहि लिये उठाई * प्रेम प्रीति राखेउ उर लाई ॥
मुनिहिं मिलत अस सोह कृपाला * कनकतरुहिं जनु भेट तमाला॥
रामबदन बिलोकि मुनि ठाढ़ा * मानहुँ चित्रमांझ लिखि काढ़ा॥

**दो०तव मुनि हृदय धीर धरि, गहि पद बारहिं बार॥
निजआश्रम प्रभुआनि करि, पूजा बिबिध प्रकार १६॥**

कह मुनि प्रभु सुन बिनती मोरी * अस्तुति करौं कवन बिधि तोरी॥
महिमा अमित मोरि मति थोरी * रबि-सन्मुख खद्योत-उजेरी ॥
श्याम-तामरस-दाम-शरीरं * जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ॥
पाणि चापशर कटि तूणीरं * नौमि निरन्तर श्रीरघुबीरं ॥

१ कटहर. २ दासकेदुःख और दरिद्रोंके नाशकर्ता. ३ ध्यानसे उत्पन्न

मोहबिपिन-घनदहन-कृशानू * सन्त--सरोरुह--कानन--भानू ॥
निशिचरकरि--बरूथ--मृगराजं * त्रातु सदा नो भवखग--बाजं ॥
अरुण--नयन राजीव--सुबेशं * सीता--नयनचकोर-निशेशं ॥
हर--हृद--मानस-- राजमरालं * नौमि राम उर बाहु बिशालं ॥
संशयसर्प-- ग्रसन - उरगादं * शमन सकल--सन्ताप-बिषादं॥
भयभंजन रंजन सुरयूथं * त्रातु सदा नो कृपाबरूथं ॥
निर्गुण सगुण बिषम समरूपं * ज्ञान--गिरा--गोतीत--अनूपं ॥
अमल अखिल अनवद्यमपारं * नौमि राम भंजन महिभारं ॥
भक्त- कल्पपादप- आरामं * तर्जन क्रोध लोभ मद कामं ॥
अतिनागर भवसागर- सेतुं * त्रातु सदा दिनकरकुल-केतुं ॥
अतुलित भुजप्रताप बलधामं * कलिमलबिपुलबिभंजननामं ॥
धर्म- वर्म- नर्मद गुण- ग्रामं * सन्तत सन्तनोतु मम कामं ॥
यदपिबिरजव्यापक अबिनाशी * सबके हृदय निरंतरबासी ॥
तदपि अनुजसियसहित खरारी * बसहु मनासि ममकाननचारी ॥
जे जानहिं ते जानहु स्वामी * सगुग अगुण उरअन्तर्यामी ॥
जो कोशलपति राजिवनयना * करौ सो राम हृदय मम अयना॥

सो०मायाबश जिमि जीव,रहहि सदासन्तत मगन
तिमि लागहु मोहिं पीव, करुणाकर सुन्दर सुखद

अस अभिमान जाय जनि भोरे * मैं सेवक रघुपति पति मोरे ॥
रामभक्ति तजि चह कल्याना * सो नर अधम सृगालसमाना ॥
सुनि मुनिबचन राम मन भाये * बहुरि हर्षि मुनिबर उर लाये ॥

---

१ राक्षसरूप हाथियोंके समूहको सिंह. २ जन्ममरणरूप पक्षीके नाशिबेमे बाजरूप.

परमप्रसन्न जानि मुनि मोहीं * जो बर माँगु देउँ मैं तोहीं ॥
मुनि कह मैं बर कबहुँ न याँचो* समुझि न परै झूँठ का साँचा ॥
तुमहिं नीक लागै रघुराई * सो मोहिं देहु दाससुखदाई ॥
अबिरल भक्ति बिरति बिज्ञाना* होहु सकलगुणज्ञाननिधाना ॥
प्रभु जो दीन्ह सो बर मैं पावा* अब सो देहु मोहिं जो भावा ॥

दो०अनुजजानकीसहित प्रभु, चापबाण धरि राम
मम हियगगन इन्दुइव[2], बसहु सदा निष्काम ॥१७॥

एवमस्तु कहि रमानिवासा[3] * हर्षि चले कुंभजऋषिपासा ॥
मुनि प्रणाम करि युगकर जोरी* सुनहु नाथ कछु बिनती मोरी॥
बहुत दिवस गुरुदर्शन पाये * भये मोहिं यहि आश्रम आये ॥
अब प्रभुसंग जाउँ गुरुपाहीं * तुमकहँ नाथ निहोरा नाहीं ॥
चले जात मग तव पदकंजा * देखिहौं जो बिराधमदगंजा ॥
देखि कृपानिधि मुनिचतुराई * लिये संग बिहँसे दोउ भाई ॥
पन्थ कहत निजभक्ति अनूपा* मुनिआश्रम पहुँचे सुरभूपा ॥
आश्रमदेखि महाशुचि सुन्दर* सरित सरोवर कानन भूधर ॥
जलचर थलचर जीव जहीते* बैर न कराहिं प्रीति सबहीते ॥

दो०तरु बहु बिबिध बिहँग मृग, बोलतबिबिधप्रकार
बसहिं सिद्धमुनि तप कराहिं, महिमागुणआगार१८

तुरत सुतीक्षण गुरुपहँ गयऊ * करि दण्डवत कहत अस भयऊ
नाथ कोशलाधीश-कुमारा * आये मिलन जगत-आधारा ॥
राम अनुज-समेत बैदेही * निशि दिन देव जपत हौ जेही ॥
सुनत अगस्त्य तुरत उठि धाये* हरि बिलोकि लोचनजल छाये॥

---

१ माँगा. २ चंद्रजैसे. ३ लक्ष्मीकांत (रामजी).

मुनिपदकमल परे दोउ भाई * ऋषि अतिप्रीति लिये उर लाई
सादर कुशलपूँछि मुनि ज्ञानी * आसनपर बैठारे आनी ॥
पुनि करि बहु प्रकार प्रभुपूजा * मोहिं सम भाग्यवंत नहिं दूजा॥
जहँलगि रहे अपर मुनिवृन्दा * हर्षे सब विलोकि सुखकन्दा ॥

दो०मुनिसमूहमहँ बैठ प्रभु, सन्मुख सबकी ओर
शरदइन्दु जनु चितवत,'मानहुँ निकर² चकोर १९

पाइ सुथल जल हर्षित मीना * पारस पाइ सुखी जिमि दीना² ॥
प्रभुहिं निरखि सुखभायहिभांती * चातक जिमि पाई जल स्वाती
तब रघुबीर कहा मुनिपाहीं * तुमसन प्रभु दुराव कछु नाहीं॥
तुम जानहु जेहि कारण आयउ * ताते तात न कहि समुझायउँ॥
अब सो मंत्र देहु प्रभु मोहीं * जेहि प्रकार मारौं मुनिद्रोही³ ॥
द्विजद्रोही न बचहिं मुनिराई * जिमि पंकजबन⁴ हिमऋतु पाई
मुनि मुसकाने सुनि प्रभुबानी * पूँछहु नाथ मोहिं का जानी ॥
तुम्हरे भजनप्रभाव अघारी * जानौं महिमा कछुक तुम्हारी॥

सो०भृकुटी निरखत नाथ, रहत सदापदकमलतर
जिन डारे निजहाथ, बिबिध बिधाता सिद्ध हर२८

अतिकराल सबपर जग नाना * औरौ कहौं सुनिय भगवाना ॥
ऊमरितरु बिशाल तव माया * फल ब्रह्माण्ड अनेक निकाया॥
जीव चराचर जन्तुसमाना * भीतर बसहिं न जानहिं आना
ते फलभक्षक कठिन कराला * तव भय डरत सदा सो काला॥
ते तुम सकललोकपति साईं * पूँछेहु मोहिं मनुजकी नाईं ॥
यह बर माँगों कृपानिकेता * बसहु हृदय सियअनुजसमेता ॥

१ समूह. २ दारिद्री, ३ राक्षस. ४ कमलबन.

अबिरलभक्तिबिरतिसत्संगा * चरणसरोरुह--प्रीति अभंगा ॥
यद्यपि ब्रह्म अखण्ड अनन्ता * अनुभवगम्य भजहिं जेहिं संता ॥
अस तव रूप बखानौं जानौं * फिरिफिरि सगुणब्रह्मरति मानौं ॥
दो० जेहि जीवपर तव कृपा, संतत रहत हुलास ॥
तिनकी महिमा को कहै, जे अनन्य प्रिय दास ॥२०॥
सन्तत दासन्ह देहु बड़ाई * ताते मोहिं पूँछेहु रघुराई ॥
हे प्रभु परममनोहर ठाऊँ * पावन पंचबटी तेहि नाऊँ ॥
गोदावरी नदी तहँ बहई * चारिहु युग प्रसिद्ध सो अहई ॥
*दंडकवन पुनीत प्रभु करहू * उग्र शाप मुनिबरकर हरहू ॥

* एकसमय दंडकारण्यमें अकाल पड़ा; तब गौतमजी महर्षिने सब मुनियोंको अपने तपोबलसे पालन किया. पीछे वो लोग अपने स्थानको जाया चाहते थे; परंतु उक्त मुनिके डरसे जा नहीं सक्ते थे. पीछे छलसे गौतमजीको गोहत्या लगाके, चले गये. गौतमजीने शाप दिया कि–जिस बनके लोभसे गये वह वन भ्रष्ट होजाय. तभीसे वह वन भ्रष्ट होगया था. दूसरा कारण यह है कि–दंडक राजाने अपनी गुरुकन्याको भोग किया. तब उसने अपने पिता भृगुजीसे यह बात कही. जिससे उन्होंने शाप दिया कि–इस, राजाका सब देश भ्रष्ट हो जाय धूल बरसे. तब ऋषि लोग वहांसे भाग, जहां बसे वही जनस्थान कहलाया. फिर रामचंद्रने पवित्र किया.

---

१ हमेशा.

बास करहु तहँ रघुकुलराया * कीजै सकलमुनिन्हपर दाया ॥
चले राम मुनिआयसु पाई * तुरतहि पंचवटी नियराई ॥
दिव्य लता द्रुम प्रभुमनभाये * निरखि राम ते भये सुहाये ॥
लषणरामासियचरण निहारी * काननअघ गा भा सुखकारी ॥

दो०गृध्रराजसों भेंट भइ, बहुबिधि प्रीति दृढाइ॥
गोदावरीसमीप प्रभु, रहे पर्णगृह छाइ ॥२१॥

जबते राम कीन्ह तहँ बासा * सुखी भये मुनि बीती त्रासा॥
गिरि बन नदी ताल छबिछाये * दिन दिन प्रति अति होत सुहाये
खगमृगवृन्द अनन्दित रहहीं * मधुपँ मधुर कूंजत छबि लहहीं॥
सो वन बर्णि न सक अहिराजा * जहाँ प्रकट रघुवीर बिराजा ॥
एकबार प्रभु सुखआसीना * लक्ष्मण बचन कहे छलहीना॥
सुर नर मुनि सचराचरसाईं * मैं पूँछौं निजप्राणकी नाईं ॥
मोहिं समुझाइ कहौ सोइ देवा * सब तजि करौं चरणरजसेवा ॥
कहहु ज्ञान बिराग अरु माया * कहहु सो भक्त करहु जेहि दया ॥

दो०ईश्वरजीवहिं भेद प्रभु, सकल कहहु समुझाइ
जाते होइ चरणरति, शोक मोह भ्रम जाइ ॥२२॥

थोरेमहँ सब कहौं बुझाई * सुनहु तात मति मन चित लाई ॥
मैं अरु मोर तोर तैं माया * जेहिं वश कीन्हे जीवनिकाया ॥
गोगोचर जहँलगि मन जाई * सो सब माया जानेहु भाई ॥
तेहिकर भेद सुनहु तुम सोऊ * बिद्या अपर अविद्या दोऊ ॥
एक दुष्ट अतिशय दुखरूपा * जावश जीव परा भवकूपा ॥
एक रचै जग गुणबश जाके * प्रभुप्रेरित नहिं निजबल ताके ॥

१ बनका पाप. २ जटायुसे. ३ भ्रमर. ४ शेष. ५ बुद्धि.

ज्ञानमान जहँ एकौ नाहीं * देखत ब्रह्मरूप सबमाहीं ॥
कहिय तात सो परमबिरागी * तृणसम सिद्धि तीनिगुणत्यागि

दो०माया ईश न आपुकहँ, जानि कहै सो जीव ॥
बन्ध-मोक्ष-प्रद सर्वपर, माया-प्रेरक शीव ॥२३॥

धर्मते बिरति योगते ज्ञाना * ज्ञान मोक्षप्रद बेद बखाना ॥
जाते बेगि[1] द्रवौं मैं भाई * सो मम भक्ति भक्तसुखदाई ॥
सो स्वतंत्र अवलंब न आना * जेहि आधीन ज्ञान विज्ञाना ॥
भक्ति तात अनुपम सुखमूला * मिलहि जो सन्त होयँ अनुकूला
भक्तिकें साधन कहौं बखानी * सुगम पन्थ मोहिं पावहिं प्रानी
प्रथमहिं बिप्रचरण अतिप्रीती * निजनिजकर्मनिरतश्रुतिनीती ॥
यहिकर फल मनविषयबिरागा * तब मम चरण उपजु अनुरागा
श्रवणादिक नव भक्ति दृढाहीं * मम लीलारति अति मनमाहीं
सन्त-चरणपङ्कज अति--प्रेमा * मन क्रम बचन भजन दृढ़नेमा॥
गुरु पितु मातु बन्धु पति देबा * सब मोहिंकहँ जानैं दृढ सेवा ॥
मम गुण गावत पुलकशरीरा * गद्गद गिरा नयन बह नीरा ॥

दो०बचन कर्म मन मोर गति, भजन करैं निष्काम[2]
तिनके हृदयकमलमहँ, करौं सदा बिश्राम ॥२४॥

कामआदि मद दम्भ न जाके * तात निरन्तर बश मैं ताके ॥
भक्तियोग सुनि अतिसुख पावा * लक्ष्मण प्रभुचरणन्ह शिर नावा
नाथ सुने गत-मन--संदेहा * भयउ ज्ञान उपजेउ नव[3] नेहा ॥
अनुजबचन सुनि प्रभुमन भाये * हर्षि राम निजहृदय लगाये ॥

---

१ जल्दी, २ कामनारहित. ३ नवतरहकी भक्ति,

यहिबिधि गये कछुक दिन बीती* कहत बिराग ज्ञान गुण नीती॥
शूर्पणखा रावणकी बहिनी * दुष्टहृदय दारुण जिमि अहिनी[1]॥
पंचबटी सो गै इकबारा * देखि बिकल भइ युगल[2] कुमारा
भ्राता पिता पुत्र उरगारी[3] * पुरुष मनोहर निरखत नारी ॥
होइ बिकल सक मन नाहिं रोकी*जिमिरबिमणि[4]द्रवरबिहिबिलोकी॥

दो०अधम निशाचरि कुटिल अति, चली करन उपहास
सुनु खगेश भावी प्रबल, भा चह निशिचरनास ॥

रुचिर रूप धरि प्रभुपहँ आई * बोली बचन मधुर मुसुकाई ॥
तुमसम पुरुष न मोसम नारी* यह संयोग बिधि रचा बिचारी ॥
मम अनुरूप पुरुष जग नाहीं* देखेउँ खोजि लोक तिहुँमाहीं ॥
ताते अबलगि रही कुमारी * मनमाना कछु तुमहिं निहारी ॥
सीतहिं चितइ कही प्रभु बाता* अहै कुमार मोर लघु भ्राता ॥
गइ लक्ष्मण रिपुभगिनी जानी* प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी ॥
सुन्दरि सुनु मैं उन्हकर दासा * पराधीन नाहिं तोर सुपासा ॥
प्रभु समरथ कोशलपुर-राजा * जो कछु कराहिं उन्हैं सब छाजा ॥

दो०केहरिसमनहिंकारिहिंबल,लवाकिबाजसमान
प्रभुसेवक इमि जानहू, मानहु बचन प्रमान ॥२६॥

सेवक सुख चह मान भिखारी * व्यसनी धन सुभक्त व्यभिचारी ॥
लोभी यश चह चार[5] गुमानी * नभ दुहि दूध चहत ये प्रानी ॥
पुनिफिरि रामनिकटसोआई * प्रभु लक्ष्मणपहँ बहुरि पठाई ॥
लक्ष्मण कहा तोहिं सो बरई * जो तृण तोरि लाज परिहरई ॥

१ सांपिनी. २ दोनो. ३ हे गरुड ! ४ सूर्यकांतमणि. ५ दूत.

तब खिसिआनि रामपहँ जाई * रूप भयंकर प्रगटि दिखाई ॥
बिथुरे केश रदन[1] बिकराला * भृकुटी कुटिल कर्णलगि गाला ॥
सीताहिं समय देखि रघुराई * कहा अनुजसन सैन बुझाई ॥
अनुज राममनकी गति जानी * उठे रिसाइ सो सुनहु भवानी ॥

दो०-लक्ष्मण अति लाघव[2] तेहिं, नाककानबिनु कीन्ह ।
ताके कर रावणकहँ, मनहुँ चुनौती दीन्ह ॥२६॥

नाक कान बिनुभइ बिकरारा * जनु श्रव शैल गेरुकै धारा ॥
खरदूषणपहँ गइ बिलखाता * धिक् धिक् तव पौरुषबल भ्राता ॥
तेहिं पूँछा सब कहेसि बुझाई * यातुधान[3] सुनि सैन बुलाई ॥
चौदह सहस सुभट सँग लीन्हे * जिन्ह स्वप्नेहुँ रण पीठ न दीन्हे ॥
धाये निशिचर-निकर-बरूथा * जनु सपक्ष कज्जलगिरियूथा ॥
नाना वाहन नानाकारा * नाना आयुध घोर अपारा ॥
श्याम घटा देखत नभकेरी * तहँ बासवधनु मनहुँ उयेरी ॥
शूर्पणखहिं आगे कर लीन्ही * अशुभरूप श्रुतिनासाहीनी[4] ॥

दो०-निज २ बल सब मिलि कहहिं, एकहिं एकसुनाइ ।
बाजन बजैं जुझावने, हर्ष न हृदय समाइ ॥२७॥

अशकुनअमितहोहिंभयकारी * गनहिं न मृत्युबिबश भयझारी ॥
गर्जहिं तर्जहिं गगन उड़ाहीं * देखि कटक[5] भट अति हर्षाहीं ॥
कोउकहजियत धरहुदोउभाई * धरि मारहु तिय लेहु छुड़ाई ॥
कोउकहसुनो सत्य हमकहहीं * कानन फिरहिं बीर कोउ अहहीं ॥
एकै कहा मष्ट व्है रहहू * खरके आगे अस जनि कहहू ॥
यहिबिधिकहतबचनरणधीरा * आये सकल जहाँ रघुबीरा ॥

१ दांत. २ जल्दी. ३ खर राक्षस. ४ काननाकरहित. ५ फौज

धूरि-पूरि नभमण्डल रहेऊ * राम बुलाइ अनुजसन कहेऊ ॥
लै जानकिहिं जाहु गिरिकन्दर * आवा निशिचरकटक भयंकर ॥
रहेहु सजग सुनि प्रभुके बाणी * चले सहित सिय शरधनुपाणी ॥
देखि राम रिपुदल चलि आवा * बिहँसि कठिन कोदण्ड चढ़ावा॥

छं०कोदण्डकठिनचढ़ाइप्रभुशिर जटाबाँधतसोहक्यों
मरकतकुधरपर लसत दामिनि कोटि सजग भुजंग ज्यों ॥
कटि कसि निषंग बिशाल भुज गहि चापविशिखसुधारिकै
चितवतमनहुँ मृगराजप्रभुगजराजघटा निहारिकै ॥

सो०आय गये बगमेल, धरहु धरहु धाये सुभट ॥
यथा बिलोकि अकेल, बालरबिहिं घेरत दनुज ॥

घेरि रहे निशिचरसमुदाई * दण्डकखगमृग चले पराई ॥
प्रभु बिलोकि शर सकहिंनडारी * थकित भये रजनीचरझारी ॥
सचिव बोलि बोले खर दूषण * यह कोउ नृपबालक नरभूषण ॥
सुर नर नाग असुर मुनि जेते * देखे सुने हते हम केते ॥
हम भरि जन्म सुनहु सब भाई * देखी नहिं असि सुन्दरताई ॥
यद्यपि भगिनिहिं कीन्ह कुरूपा * बधलायक नहिं पुरुष अनूपा ॥
देहु तुरत निजनारि दुराई * जीवत भवन जाहु दोउ भाई ॥
मोर कहा तुम ताहि सुनावहु * तासु बचन सुनि आतुर आवहु॥

दो०भये कालबश मूढ सब, जानहिं नहिं रघुबीर॥
मशकफूँक किमि मेरुउड, सुनहु गरुड मतिधीर ॥

दूतन कहा रामसन जाई * सुनत राम बोले मुसुकाई ॥
आजु भयो बड़भाग हमारा * तुम्हरे प्रभु अस कीन्ह बिचारा

१आकाशमण्डल.२ शत्रुकी फौज.३ धन्वा.४ तरकस.५ बाण.६ हस्तिसमूह.

हम क्षत्रिय मृगया वन करहीं * तुमसे खल मृग खोजत फिरहीं ॥
रिपु बलवन्त देखि नहिं डरहीं * एकबार कालहुसन लरहीं ॥
यद्यपि मनुज दनुजकुलघालक[1] * मुनिपालक खलशालक बालक
जो न होइ बल घर फिरि जाहू * समरबिमुख मैं हतौं न काहू ॥
रण चढ़ि करिय कपट चतुराई * रिपुपर कृपा परम-कदराई ॥
दूतन जाइ तुरत सब कहेउ * सुनि खरदूषणउर अतिदहेउ ॥

छन्द॰ उरदहेउकहेउकिधरहुधावहुबिकटभटरजनीचरा
शरचाप--तोमर--शक्तिशूल--कृपाणपरिघपरशुधरा
प्रभु कीन्ह धनुषटँकोर प्रथम[2] कठोर घोर भयो महा॥
भएबधिरव्याकुल यातुधान[3] नज्ञान तेहि अवसररहा

दो॰ सावधान होय धाये, जानि सबल आराति ॥
लागे बर्षन रामपर, अस्त्र शस्त्र बहुभाँति ॥ २९ ॥
तिन्हके आयुध तृणसम, करि काटे रघुबीर ॥
तानि शरासन श्रवणलगि[4], पुनि छाँडे निजतीर॥३०

तो॰ छन्द॰ तब चले बाण कराल, हुंकरत जनु बहु व्याल[5]
कोपेउ समर श्रीराम, चले विशिख निशितनिकाम
अवलोकि खरतर तीर, मुरि चले निशिचरबीर ॥
एक एककहँ न सँभार, कर तात मातु पुकार ॥
कोउ कहै खर कह कीन्ह, जो युद्ध इनसन लीन्ह
ये बाण अतिहि कराल, ग्रसे आइ मानहुँ काल ॥
भये क्रुद्ध तीनों भाइ, जो भागि रणते जाइ ॥
तेहि बधबहमनिजपानि, फिरेमरणमनमहँठानि १३

१ राक्षसोंके कुलोंके नाशक हैं. २ पहले. ३ राक्षस. ४ कर्णपर्यन्त. ५ सर्प.

दो०उमा एक निजप्रभुहिं बश, पुनि इनके बडभाग ।
तरन चहहिं प्रभुशरलगे, बिना योग जप याग ॥३१॥
तो०छंद०आयुध अनेक प्रकार, सन्मुख ते करहिं प्रहार ॥
रिपु परमकोपे जानि, प्रभु धनुष शर संधानि ॥
छाँडे विपुल नाराच, लगे कटन बिकटपिशाच ॥
उर शीश कर भुज चरन, जहँ तहँ लगे महि परन ॥१४
चिक्करत लागत बान, धर परत कुधरसमान ॥
भट कटत तन शतखंड, पुनि उठत करि पाखंड ॥
नभ उडत बहु भुज मुंड, विनु मौलि धावत रुण्ड॥
खग कंक काक सृगाल, कटकटहिं कठिन कराल॥१५
छंद॰कटकटहिं जम्बुक भूत प्रेत पिशाच खप्पर साजहीं
वैताल बीर कपाल ताल बजाइ योगिनि नाचहीं ॥
रघुवीरबाण प्रचण्ड खण्डहिं भटनके उर भुज शिरा॥
जहतहँपरहिंउठिलरहिं धरुधरुकरहिंसकल भयंकरा ॥
अंत्रावली गहि उडहिं गृध्र पिशाच कर गहि धावहीं
संग्रामपुरबासी मनहुँ बहु बाल गुडी उडावहीं ॥
मारे पछारे उर बिदारे बिपुल भट घूर्मितपरे ॥
अवलोकिनिजदलबिकलभटत्रिशिरादिखरदूषणफिरे ॥
शर शक्ति तोमर परशु शूल कृपाण एकहिं बारहीं ॥
करि कोप श्रीरघुवीरपर अगणित निशाचर डारहीं॥
प्रभु निमिषमहँ रिपुशर निवारि प्रचारि डारेसायका
दश दश बिशिख उरमाँझ मारे सकल निशिचरनायका

---

१ बाण. २ छाती. ३ पृथ्वीपर. ४ चील्ह, ५ श्रगाल. ६ आंतोंकी पांति.

महिपरत उठिभट फिरतपुनिपुनिकरतमाया अतिघनी ॥
सुर डरत चौदह सहस निशिचर एक श्रीरघुकुलमनी
सुरमुनि सभय प्रभु देखि मायानाथअतिकौतुक करे
देखत परस्पर राम करि संग्राम रिपुदल लरि मरे ॥
दो०राम राम करि तनु तजहिं, पावहिं पद निर्बान॥
करि उपाय रिपु मारेउ, क्षणमहँ कृपानिधान॥३२॥
हर्षित बर्षहिं सुमन सुर, बाजहिं गगन निशान ॥
अस्तुति करिकरि सब चले, शोभित बिबिधबिमान

जब रघुनाथ समर रिपु जीते * सुर नर मुनि सबके दुख बीते ॥
तब लक्ष्मण सीतहिं लैआये * प्रभुपदपरत हर्ष हिय लाये ॥
सीता निरखि श्याम मृदु गाता * परमप्रेम लोचन न अघाता ॥
पंचवटी बसि श्रीरघुनायक * करत चरित सुरमुनिसुखदायक॥
धुआँ देखि खरदूषणकेरा * शूर्पणखा तब रावण प्रेरा ॥
बोली बचन क्रोध करि भारी * देशकोशकी सुरति बिसारी ॥
करसि पान सोवसि दिनराती * सुधि न तोहिं शिरपर आराती ॥
राजनीति बिनु धन बिनु धर्मा * हरिहिं समर्पे बिनु सत्कर्मा ॥
विद्या बिनु बिबेक उपजाये * श्रम फल पढ़े किये अरु पाये ॥
संगते यती कुमन्त्रते राजा * गानते ज्ञान पानते लाजा ॥
प्रीति प्रणय बिनु मदते गुनी * नाशहिं बेगिनीति अस सुनी ॥

सो०रिपु रुज पावक पाप, प्रभु इन्ह गणिय न छोटकरि
अस कहि बिबिध बिलाप, करि लागी रोदन करन ॥
दो०सभामाँझ ब्याकुल परी, बहुप्रकार कह रोइ ॥

१ बहुत. २ मोक्ष. ३ शत्रुओंको. ४फूल. ५नगारे. ६काल. ७मदिरा. ८शत्रु.

तोहिं जियत दशकन्धर, मोरि कि अस गति होइ ३४

सुनत सभासद उठि अकुलाई * समुझाई गहि बाँह उठाई ॥
कह लंकेश कहसि निजबाता * केहिं तव नासा कान निपाता ॥
अवधनृपति दशरथके जाये * पुरुषसिंह बन खेलन आये ॥
समुझिपरी मोहिं उनकी करणी * रहित निशाचर करिहैं धरणी ॥
तिनकर भुजबल पाइ दशानन * अभय भये मुनि बिचरहिं कानन ॥
देखत बालक कालसमाना * परमधीर धन्वी गुण नाना ॥
अतुलितबलप्रतापदोउ भ्राता * खलबधरत सुरमुनिसुखदाता ॥
शोभाधाम राम अस नामा * तिन्हके सँग इक नारि ललामा ॥

सो०अतिसुकुमारि पियारि, पटतर योगन आहि कोउ
मैं मन दीख विचारि, जहँ रह तेहिसम आननाहिं ११

रूपराशि बिधि नारि सवाँरी * रतिशतकोटि तासु बलिहारी ॥
अजहुँ जाय देखब तुम जबहीं * होइहौ बिकल तासु बश तबहीं ॥
जीवनमुक्ति लोक वश ताके * दशमुख सुनु सुन्दरि अस जाके ॥
तासु अनुज काटी श्रुति नासा * सुनि तव भगिनीकर परिहासा ॥
बिना चूक असदशा हमारी * अपराधी किमि बचहिं सुरारी ॥
खर दूषण सुनि लगे पुकारा * क्षणमहँ सकल कटक उन मारा ॥
खर-दूषण-त्रिशिराकर घाता * सुनि दशशीश जरे सब गाता ॥
भयो शोचबश नाहिं बिश्रामा * बीतहिं पल मानहुँ शत यामा ॥

दो०शूर्पणखहिं समुझाइ करि, बल बोलेसि बहुभांति
भवन गयउ अतिशोचबश, नींद परी नहिं राति ३५

सुर नर असुर नाग जगमाहीं * मोरे अनुचरसम कोउ नाहीं ॥

---

१ सुन्दर. २ लक्ष्मणने. ३ कान और नाक. ४ बहिनका. ५ फौज.

खर दूषण मोसम बलवंता * तिन्हैं को मौर बिनु भगवन्ता ॥
सुररंजन भंजन महिभारा * जो जगदीश लीन्ह अवतारा ॥
तौ मैं जाइ बैर हठि करिहौं * प्रभुशरते भवसागर तरिहौं ॥
होइ भजन नहिं तामस देहा * मन क्रम बचन मन्त्र दृढ़ एहा ॥
जो नररूप भूपसुत कोऊ * हरिहौं नारि जीति रण दोऊ ॥
चला अकेल यान चढ़ि ताहाँ * बस मारीच सिंधुतट जाहाँ ॥
रथ अनूप जोरे खर चारी * बेगवन्त इमि जिमि उरगारी ॥

छन्द॥ उरगारिसम अतिवेगबर्णतजायनहिंउपमाकही शिरछत्रशोभित श्याम घन जनुचमरश्वेतबिराजहीं यहिभांति नाँघत सरित शैल अनेक वापी सोहहीं ॥ बन बाग उपवन वाटिका शुचि नगर मुनिमन मोहहीं

दोहा॰ बहुतडाग शुचिबिहगमृग, बोलतबिबिधप्रकार
यहिबिधि आयउ सिंधुतट, शतयोजनबिस्तार ३६

सुन्दर जीव बिबिधबिधि जाती * कराहिं कुलाहल दिन अरु राती ॥
कूदहिं ते गर्जहिं घननाई * महाबली बल बर्णि न जाई ॥
कनकबालु सुन्दर सुखदाई * बैठहिं सकल जन्तु तहँ आई ॥
तिहिं पर दिव्य लता तरु लागे * जिहिं देखत मुनिमन अनुरागे ॥
गुहाबिबिधबिधि रहहिं बनाई * बर्णत शारदमन सकुचाई ॥
चाहिय जहाँ ऋषिनकरबासा * तहाँ निशाचर करहिं निवासा ॥
दशमुख देखि सकलसकुचाने * जे जड़ जीव सजीव पराने ॥
इहाँ राम जसि युक्ति बनाई * सुनहु उमा सो कथा सुहाई ॥

दोहा॰ लक्ष्मण गये बनहिं जब, लेन मूल फल कन्द ॥

१ देवोंके आनंददायक. २ रथपर. ३ गर्दभ. ४ गरुड. ५ सोनेकी बारू

जनकसुतासन बोले, बिहँसि कृपासुखकन्द॥३७॥

सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुशीला * मैं कछु करब ललित नरलीला॥
तुम पावक¹महँ करहु निवासा² * जबलगि करौं निशाचरनासा॥
जबहिं राम सब कहेउ बखानी * प्रभुपद धरि हिय अनल समानी॥
निजप्रतिबिम्ब³ राखि तहँ सीता * तैसेइ शील स्वरूप बिनीता॥
लक्ष्मणहूँ यह मर्म न जाना * जो कछु चरित रचा भगवाना॥
दशमुख गयउ जहाँ मारीचा * नाइ माथ स्वारथरत नीचा॥
नवनि नीचकी अतिदुखदाई * जिमि अंकुश धनु उरग⁴ बिलाई॥
भयदायक खलकी प्रिय बानी * जिमि अकाशके कुसुम भवानी॥

दो०करि पूजा मारीच तब, सादर पूँछी बात॥
कवनहेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयउ तात॥

दशमुख सकल कथा तेहि आगे * कही सहित अभिमान अभागे॥
होहु कपटमृग तुम छलकारी * जेहिबिधि हरि आनौं नृपनारी॥
तेहिं पुनि कहा सुनहु दशशीशा * ते नर-रूप चराचर-ईशा॥
तासों तात बैर नहिं कीजै * मारे मरिय जियाये जीजै॥
मुनिमख राखन गयउ कुमारा * बिनफर शर रघुपति मोहिं मारा॥
शतयोजन आयउँ क्षणमाहीं * तिन्हसन बैर किये भल नाहीं॥
भइ मति कीट-भृङ्गकी नाई * जहँ तहँ मैं देखौं दोउ भाई॥
जो नर तात तदपि अतिशूरा * तिनहिं बिरोध न पाइहि पूरा॥

दो०जेहिं ताडका सुबाहु अति, खण्डेउ हरकोदण्ड॥
खर दूषण त्रिशिरा बधेउ, मनुज कि असबरबण्ड ३९

१ अग्निमें. २ स्थान. ३ अपनी छायारूप. ४ सर्प.

रा अस नाम सुनत दशकन्धर * रहत प्राण नहिं मन उरअंतर॥
जाहु भवन कुलकुशल बिचारी * सुनत जरा दीन्हेसि बहुगारी॥
गुरुजिमि मूढ करसि मम बोधा * कहु जग मोहिंसमान को योधा॥
तब मारीच हृदय अनुमाना * येहिं बिरोधे नाहिं कल्याना॥
शस्त्री मर्मी[२] प्रभु शठ धनी * बैद्य बन्दि कबि कोबिद गुनी॥
उभयभांति देखा निजमरणा * तब ताकेउ रघुनायकशरणा॥
उतर देत मोहिं बधिहि अभागी * कस न मरौं रघुपतिशर लागी॥
अस जिय जानि दशाननसंगा * चला रामपदप्रेम अभंगा॥
मन अतिहर्ष जनाव न तेही * आजु देखिहौं परमसनेही॥

छन्द॰ निजपरमप्रीतमदेखि, लोचन सुफलकरि सुखपाइहौं श्रीसहित अनुजसमेत, कृपानिकेतपद मन लाइहौं निर्वाणदायक क्रोध जाकर, भक्त ऐसाहि वशकरी॥ निजपाणिशर संधानि सो, मोहिं बधहिं सुखसागरहरी

दो॰ मम पाछे धर धाइ हैं, धरे शरासन बान॥ फिरि फिरि प्रभुहिं बिलोकिहौं, धन्य न मोसम आन॥

सीतालषणसहित रघुराई * जेहि बन बसहिं मुनिन्ह सुखदाई
तेहिबननिकट दशानन गयऊ * तब मारीच कपटमृग भयऊ॥
अतिबिचित्र कछु बर्णि न जाई * कनकदेह मणिखचित बनाई॥
सीता परमरुचिर मृग देषा * अंग अंग सुमनोहरबेषा॥
सुनहु देव रघुबीर कृपाला * यहि मृगकर अतिसुन्दर छाला॥
सत्यसिंधु प्रभु बध करि एही * आनहु चर्म कहति बैदेही॥
तब रघुपति जाना सब कारण * उठे हर्षि सुरकाजसवाँरण॥

१ हथियोरवालस हथियारसे मरनेकोभय. २ भेदिहा अपने गुण दोष कहेगा

मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा * करतल चापरुचिर शर साँधा ॥
प्रभु लक्ष्मणहिं कहा समुझाई * फिरत बिपिन निशिचर बहु भाई ॥
सीताकेरि करेहु रखवारी * बुधि बिबेक बल समय बिचारी ॥

दो०अस कहि चले तहाँ प्रभु, जहाँ कपटमृग नीच
देव हर्षबिस्मयबिबश, चातक[३] वर्षा बीच ॥ ४१ ॥

प्रभुहिं बिलोकि चला मृग भाजी * धाये राम शरासन साजी ॥
निर्गम नेति शिव ध्यान न पावा * मायामृगपाछे सो धावा ॥
कबहुँ निकट पुनि दूरि पराई * कबहुंक प्रगटै कबहुं दुराई ॥
प्रगटत छपतकरत छल भूरी * यहिबिधि प्रभुहिं गयो लै दूरी ॥
तब तकि राम कठिन शर मारा * धरणि परेउ करि घोर पुकारा ॥
लक्ष्मणकर प्रथमहि लै नामा * पाछे सुमिरेसि मनमहँ रामा ॥
प्राण तजत प्रगटेसि निजदेही * सुमिरेसि रामसहित बैदेही ॥
अन्तरप्रेम तासु पहिंचाना * मुनिदुर्लभ गति दीन्ह सुजाना ॥

दो०बिपुल सुमन सुर वर्षहिं, गावहिं प्रभुगुणगाथ
निजपद दीन्हे असुरकहँ, दीनबन्धु रघुनाथ ॥४२॥

खल बधि तुरत फिर रघुबीरा * सोह चाप कर कटि तूणीरा ॥
आरतगिरा सुनी जब सीता * कह लक्ष्मणसन परमसभीता ॥
जाहु बेगि संकट तव भ्राता * लक्ष्मण बिहँसि कहा सुनु माता ॥
भृकुटिबिलास सृष्टिलय होई * स्वप्नेहु संकट परै कि सोई ॥
सौंपि गये मोहिंरघुपति थाती * जो तजि जाउँ तोष नहिं छाती
यहजिय जानि सुनहु मम माता * पूँछत कहब कवन मैं बाता ॥
मर्मबचन सीता जब बोली * हरिप्रेरित लक्ष्मणमति डोली ॥

१डुपट्टा. २बनमें. ३चातक नामपक्षी. ४वेद. ५ तरकस. ६ जगत्‌का नाश.

चहुँदिशि रेखा खींच अहीशा * बार बार नावा पद शीशा ॥
बनदिशिदेव सौंपि सबकाहू * चले जहाँ रावणशशिराहू[2] ॥
चितवहिं लषण सियहिं फिरिकैसे * तजत बच्छ निजमातहिं जैसे ॥

दो०एक डरत डर रामके, दूजे सीय अकेलि ॥
लषण तेज तनु हत भये, जिमि डाढी दँव[3] बेलि ४३

शून्य भवन दशकन्धर देखा * आवा निकट यतीके बेखा ॥
जाके डर सुर असुर डेराहीं * निशि न नींद दिन अन्न न खाहीं
सो दशशीश श्वानकी नाई * इत उत चिते चला भँडिहाई॥
जिमि कुपन्थ पग देत खगेशा * रह न तेज बल बुधि लवलेशा ॥
करि अनेकबिधि छल चतुराई * माँगेउ भीख दशानन जाई ॥
अतिथिजानि सियकन्दमूलफल * देन लगी तेहिं कीन्ह बहुरि छल॥
कह दशमुख सुन सुन्दरि बानी * बाँधी भीख न लेऊँ सयानी ॥
बिधिगति बाम कालकठिनाई * रेख नाँघ सिय बाहर आई ॥

दो०बिश्वभरनि अघदलदलनि, करणि सकलसुरकाज
जाना नहिं दशशीश तेहिं, मूढ कपटके साज॥४४॥

नानाविधि कहि कथा सुहाई * राजनीति भय प्रीति दिखाई ॥
कह सीता सुनु यती गुसाँई * बोलसि बचन दुष्टकी नाई ॥
तब रावण निजरूप दिखावा * भइ सभीत जब नाम सुनावा॥
कह सीता धरु धीरज गाढा * आवत प्रभु रे खल रहु ठाढ़ा॥
जिमि हरिबधुहिं क्षुद्र शश चाहा * भयेसि कालबश निशिचरनाहा
वायस कर चह खगपतिसमता * सिंधुसमान होइ किमि सरिता
खरि कि होइ सुरधेनुसमाना * जाहु भवन निज सुनु अज्ञाना

---

१ लक्ष्मण. २ रावणरूप चन्द्रके ग्रसनेमें राहुरूप रामचन्द्रजी. ३ दावाग्नि.

सुनत बचन दशशीश लजाना * मनमहँ चरण बन्दि सुख माना ॥

दो० क्रोधवन्त तब रावण, लीन्हेसि रथ बैठाय ॥
चलेउ गगनपथ आतुर, भयबश हाँकि न जाय ४५

हा जगदीश देव रघुराया * केहि अपराध बिसारेउ दाया ॥
आरतहरण शरण-सुखदायक * हा रघुकुलसरोजदिननायक ॥
हा लक्ष्मण तुम्हार नाहिं दोषा * सो फल पायउँ कीन्हेउँ रोषा ॥
कैकेयिमन जो कछु रहेऊ * सो बिधि आजु मोहिं दुख दयेऊ ॥
पंचवटीके खग-मृग-जाती * दुखी भये बनचर बहुभाँती ॥
बिबिध बिलाप करत बदेही * भूरिकृपा प्रभु पूरि सनेही ॥
बिपतिमोरिकोप्रभुहिंसुनावा * पुरोडाश[1] चह रासभ[2] खावा ॥
सीताकर बिलाप सुनि भारी * भये चराचरजीव दुखारी ॥

दो० बहुबिधि करत बिलाप मन, लिये जात दशशीश
डरत न खल बर पाइ भल, जो दीन्हों अज-ईश[3] ४६

गृध्रराज सुनि आरतबानी * रघुकुलतिलकनारि पहिचानी ॥
अधम निशाचर लीन्हे जाई * जिमि मलेच्छबश[4] कपिलागाई ॥
अहह प्रथम बल ममतनुनाहीं * तदपि जाइ देखौं बल ताहीं ॥
सीता पुत्रि करसि जनित्रासा * करिहौं यातुधानकर नासा ॥
धावा क्रोधवन्त खग कैसे * छूटै पबि पर्वतपहँ जैसे ॥
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही * निर्भय चलसि न जानसि मोही ॥
आवत देखि कृतान्तसमाना * फिरि दशकंध करत अनुमाना ॥
की मैनाक कि खगपति होई * मम बल जानि सहितपति सोई ॥
जाना जरठ जटायू येहा * मम करतीरथ छाँड़हि देहा ॥

१ यज्ञभाग. २ गधा. ३ ब्रह्मा और महादेवने. ४ मुसलमानके आधीनमें.

दो०-मम भुजबल नहिं जानत, आवत तपिन्ह सहाय ।
समर चढ़ै तौ इहि हतौं, जियत न निजथल जाय ४७

सुनत गृध्र क्रोधातुर धावा * कह सुनु रावण मोर सिखावा ॥
तजिजानकिहिंकुशलगृहजाहू * नाहित सत्य सुनहु बहुबाहू ॥
राम-रोष-पावक अतिघोरा * होइहि सकल शलभ[1] कुल तोरा ॥
उतर न देत दशानन योधा * तबहिं गृध्र धावा करि क्रोधा ॥
धरिकच[2]बिरथकीन्हमहिगिरा * सीतहिं राखि गृध्र पुनि फिरा ॥
दशमुख उठि कृतशरसन्धाना * गृध्र आइ काटेउ धनुबाना ॥
चोंचन्ह मारि बिदारेसि देही * दण्ड एक भइ मूर्छा तेही ॥

दो०-जेहिं रावण निजबश किये, मुनिगण सिद्ध सुरेश ।
तेहि रावणसन समर अति, धीर बीर गृध्रेश[3] ॥४८॥

स्वस्थ भये सो पुनि उठि धावा* मोरउ गृध्र न सन्मुख आवा ॥
कीन्हेसि बहुजब युद्ध खगेशा * थकित भयो तब जरठ[4] गिधेशा ॥
तबसक्रोधनिशिचरखिसियाना* काढ़ेसि परमकराल कृपाना[5] ॥
काटेसि पंख परा खग धरणी * सुमिरि रामकी अद्भुत करणी ॥
मनमहँ गृध्र परमसुख माना * रामकाज मम लागेउ प्राना ॥
सीतहिं यान[6] चढ़ाइ बहोरी * चला उताइल त्रास न थोरी ॥
करति बिलाप जातिनभ सीता * ब्याधबिवश जनु मृगी सभीता ॥
गिरिपर बैठे कपिन्ह निहारी * कह हरिनाम दीन्ह पट डारी ॥
यहिबिधिसीतहिंसोलै गयऊ * बन अशोकमहँ राखत भयऊ ॥

दो०-हारिपराखलबहुतबिधि, भयअरुप्रीतिदिखाइ ।
तब अशोकपादपतरे, राखेसि यत्न कराइ ॥४९॥

१ टीड़ी. २ बाल. ३ जटायु. ४ बुड्ढा. ५ तलवार. ६ रथमें.

उहाँ बिधाता मन अनुमाना * सुरपति[२] बोलि मंत्र अस ठाना ॥
तात जनकतनयापहँ जाहू * सुधि न पाव जिहि निशिचरनाहू ॥
अस कहि विधिसुन्दर हवि[३] आनी * सौंपि बहुरि बोले मृदु बानी ॥
यह भक्षणकृत क्षुधा न प्यासा * वर्ष सहस दश संशय नासा ॥
सो प्रसाद लै आयसु पाई * चलेउ हृदय सुमिरत रघुराई ॥
कछु बासव माया निज गोई * रक्षक रहे गये तहँ सोई ॥
तदपि डरत सीतापहँ आयउ * करि प्रणाम निजनाम सुनायउ ॥
निश्चय जानि सुरेश सुजाना * पिताजनक-दशरथसम माना ॥
करि परितोष दूर कर शोका * हव्य[३] खवाय गये निजलोका ॥

दो०-जेहिबिधि कपटकुरंग[४]सँग, धाय चले श्रीराम ॥
सो छबि सीता राखि उर, रटति रहति हरिनाम ॥

रघुपति अनुजहिं आवत देखी * मन बहुचिंता कीन्ह विशेखी ॥
जनकसुता परिहरेउ अकेली * आयहु तात बचन मम पेली ॥
निशिचरनिकर[५] फिरहिं बनमाहीं * मम मन सीता आश्रम नाहीं ॥
अजहुँ तात भल कीन्हेउ नाहीं * सियविहीन मम जीवन काहीं ॥
यहिते कवन बिपति बड़ भाई * खोयहु सीय काननहिं आई ॥
गहि पदकमल अनुज कर जोरी * कहेउ नाथ कछु मोरि न खोरी ॥
अनुजसमेत गयउ प्रभु तहँवाँ * गोदावरितट आश्रम जहँवाँ ॥
आश्रम देखि जानकीहीना * भये बिकल जस प्राकृत दीना ॥

दो०-कानन रहेउ तडाग इव, चक चकई सियराम ।
रावण निशि बिछुरन किये, दुख बीते चहुँयाम ॥

परदुखहरण शोक दुख नाहीं * भा बिषाद तिनके मनमाहीं ॥

१ ब्रह्माने. २ इन्द्रको. ३ खीर. ४ कपटहरिणके साथ. ५ राक्षसोंके समूह.

हा गुणखानि जानकी सीता * रूप–शील–व्रत–नेमपुनीता ॥
लक्ष्मण समुझाये बहुभांती * पूँछत चले लता तरु पांती ॥
हे खग मृग हे मधुकरश्रेनी * तुम देखी सीता मृगनैनी ॥
खंजन शुक कपोत मृग मीना * मधुपनिकर कोकिला प्रबीना ॥
कुन्दकली हे दाडिमदामिनि * हे हे कमलशरद शशिभामिनि॥
बरुणपाश मनोजधनु हंसा * गज केहरि नित सुनत प्रशंसा ॥
श्रीफल कमल कदलि हर्षाहीं * नेकु न शंक सकुच मनमाहीं ॥
सुनु जानकी तोहिं बिनु आजू * हर्ष सकल पाइ जनु राजू ॥
किमिसहिजात अनखतोहिं पाहीं * प्रिया बेगि प्रगटसि कस नाहीं ॥
यहिबिधिविलपत खोजत स्वामी * मनो महाबिरही अतिकामी ॥

दो०फणिमणिहीनदीनजिमि, मीनहीनजिमिबारि
तिमि व्याकुलभयेलषण तहँ, रघुवरदशा निहारि५२

धरि उर धीर बुझावहिं रामहिं *तजहिं न शोकअधिकसुखधामहिं
पूरणकाम राम सुखराशी * मनुजचरित करअज अविनाशी
सरवर अमित नदी गिरि खोहा * बहुबिधि राम लषण तहँ जोहा ॥
शोच हृदय कछु कहिनहिं आवा * टूट धनुष शर आगे पावा ॥
कहुँ कहुँ शोणितँ देखिय कैसे * श्रावणजल भा डाबर जैसे ॥
कहत राम लक्ष्मणहिं बुझाई * काहूँ कीन्ह युद्ध इहिं ठाईं ॥
आगे परा गृध्रपति देखा * सुमिरत रामचरणकी रेखा ॥

दो०करसरोज शिर परसेउ, कृपासिन्धु रघुबीर ॥
निरखि रामछबिधाममुख, बिगत भई सबपीर ॥५३॥

तब कह गृध्र बचन धरि धीरा * सुनहु राम भंजन–भवभीरा ॥

१भ्रमरोंकी पांति. २कामदेवका धनुष. ३सिंह. ४बेल. ५केला. ६सर्प. ७रक्त.

नाथ दशानन यह गतिकीन्ही * तेहिं खलजनकसुता हरि लीन्ही ॥
लै दक्षिणादिशि गयेउ गुसाईं * बिलपति अति कुररीकी नाईं ॥
दर्शलागि प्रभु राखेउँ प्राणा * चलन चहत अब कृपानिधाना ॥
राम कहा तनु राखहु ताता * मुख मुसुकाइ कही तेहिं बाता ॥
जाकर नाम मरत मुख आवा * अधमौ मुक्त होइ श्रुति गावा ॥
सो मम लोचनगोचर आगे * राखौं देह नाथ केहि लागे ॥
जल भरि नयन कहा रघुराई * तात कर्म निजते गति पाई ॥
परहित वश जिनके मनमाहीं * तिन्हकहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
तनु तजि तात जाहुममधामा * देउँ कहा तुम पूरणकामा ॥

दो० सीताहरण तात जनि, कहहु पितासन जाइ ॥
जो मैं राम तौ कुलसहित, कहहि दशानन आइ ५४

गृध्रदेह तजि धरि हरिरूपा * भूषण बहु पट पीत अनूपा ॥
श्याम गात बिशाल भुज चारी * अस्तुति करत नयन भरि बारी ॥

छंद *जयरामरूपअनूपनिर्गुणसगुणगुणप्रेरकसही
दशशीशबाहुप्रचण्डखण्डनचण्डशरमण्डनमही ॥
पाथोदगात सरोजमुख राजीव-आयत-लोचनं ॥
नितनौमि राम कृपालु बाहुबिशालभवभयमोचनं २३

* हे रामचंद्रजी ! आपकी जय हो. हे प्रभु ! आपका स्वरूप उपमारहित, निर्गुण, निराकार सगुण नाम अवतारादिका धारण कर्ता और गुणोंका प्रेरक है. हे नाथ ! रावणादि राक्षसोंके शिर तथा भुजावोंके काटनेवाला और पृथ्वीको भूषण ऐसा तुम्हारा बाण है. हे राम ! आपका शरीर मेघतुल्य श्याम है, कमलतुल्य मुख है और

१ टिटिहरीकी. २ विष्णुरूप.

बलमप्रमेयमनादिमजव्यक्तमेकमगोचरम् ॥
गोविन्द गोपरद्वन्द्व हर विज्ञानघन धरणीधरम् ॥
ये राममंत्र जपन्त सन्त अनन्त जनमनरंजनम् ॥
नित नौमिरामअकामाप्रियकामादिखलदलगंजनं २४
जेहिश्रुतिनिरंतरब्रह्मव्यापकबिरजअजकहि गावहीं
करिज्ञानध्यान बिराग योग अनेक मुनि जेहिं पावहीं
सो प्रगट करुणाकन्द शोभावृन्द अग जग मोहई ॥
मम हृदयपंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई॥२५॥

बड़े बडे कमलतुल्य नेत्र हैं. सो हे कृपालु नाम दीनदयालु ! विशाल-बाहु नाम सबसे श्रेष्ठ भुजावाले ! संसारके भयसे छुटानेवाले ऐसे आपको मैं नित्य नमस्कार करता हूं ॥ २२ ॥ और बे प्रमाण बल, आदिरहित, अजन्मा, अप्रगट, अद्वैत, अखिल इन्द्रियोंसे परे, इंद्रियोंके प्रेरक और इंद्रियोंसे पर, द्वंद्व नाम तव-मम, सुख-दुःख, पाप-पुण्यआदि जोडावोंको हरनेवाले और विज्ञानके समूह, पृथ्वीधर, और अंतरहित है और संतलोग जिनके आनन्दकारक रामनाममंत्रको जपते हैं ऐसे हे अकामप्रिय राम ! हे कामदेवादि खलोंके दलोंके गांजनेवाले प्रभु ! आपको मैं नित्य नमस्कार करता हूं ॥ २३ ॥ जिनको वेद निरंतर प्राणकी क्षुधा, प्यास, मनका शोक, मोह, शरीरकी जरा व मृत्यु इनसे राहित, सर्व-व्यापी, जन्मरहित, परब्रह्म करके गातेहैं. और बडे बडे मुनि जिनको ज्ञान ध्यान बिराग योग करके पाते हैं सो आप करुणाकन्द और सब शोभावोंके समूह, अवतार लेके जड चेतनको मोहते हो. अनेकन कामदेवकी छबि जिनके अंगमें सो आप मेरे हृदयकमलके भ्रमर हो, शोभो ॥ २४ ॥ जो लोग भेददर्शी हैं तिनको

जो अगम सुगम स्वभाव निर्मल असम समशीतल सदा ॥
पश्यन्ति यं योगी यतन करि करत मन गो बश सदा ॥
सो राम रमानिवास संतत दासबश त्रिभुवनधनी ॥
मम उर बसहु सो शमन संसृति जासु कीरति पावनी
दो० अबिरल भक्ति माँगि वर, गृध्र गयउ हरिधाम॥
तेहिकी क्रिया यथोचित, निजकर कीन्ही राम ॥५५॥
कोमल चित अति दीनदयाला * कारणबिनु रघुनाथ कृपाला ॥
गृध्र अधम खग आमिषभोगी * गति दीन्ही जो याचत योगी॥
सुनहु उमा ते लोग अभागी * हरि तजि होहिं बिषयअनुरागी
पुनि सीतहिं खोजत दोउ भाई * चले बिलोकत बन-बहुताई॥
संकुल लता बिटप घन कानन * बहु खग मृग तहँ गज पंचानन ॥
आवत पन्थ कबन्ध निपाता * तेहि सब कही शापकी बाता ॥
दुर्वासा मोहिं दीन्हों शापा * प्रभुपद देखि मिटा सो पापा ॥

अगम्य और जो निर्मलस्वभावके समदर्शी हैं उनको सदा शीतल सुगम हो और जिनको योगीजन सर्वदा सब इन्द्रियें व मनको वश करके, अनेक यत्न करके, देखते हैं. सोई लक्ष्मीपति तीनहूं लोकके स्वामी राम आप हमेस दासके बशीभूत हो और जिनकी कीर्ति संसृति (जन्ममरण) दूर करनेवाली पवित्र है. सो हे राम! आप मेरे हृदयमें बास करो ॥ २९ ॥

* यह कबन्ध पूर्वजन्मका गंधर्व था एकदिन इसका गान सुनकर दुर्वासा ऋषि प्रसन्न न भये. तब यह हँसा, उक्तमुनिने शाप दिया कि-जा तू राक्षस हो. सो यह बडा बलवान् राक्षस हो, जगत्में बडा उपद्रव

१ मांसभक्षी. २ मांगत. ३ सिंह.

सुनु गन्धर्व कहौं मैं तोही * मोहिं न सुहाइ ब्रह्मकुलद्रोही ॥
**दो० मन क्रम बचन कपट तजि,जो कर भूसुरसेव ॥
मोहिं समेत बिरंचि शिव, बश ताके सब देव ॥ ५६ ॥**
शापत[1] ताडत[2] परुष[3] कहंता * बिप्र पूज्य अस गावहिं संता ॥
पूजिय बिप्र शीलगुणहीना * शूद्र न गुणगण–ज्ञान–प्रबीना ॥
कहि निजधर्म ताहि समुझावा * निजपदप्रीति देखि मनभावा ॥
रघुपतिचरणकमल शिर नाई * गयउ गगन आपनि गति पाई॥
ताहि देइ गति राम उदारा * शबरीके आश्रम पगु धारा ॥
शबरी दीख राम गृह आये * मुनिके बचन समुझि जियभाये
सरसिजलोचन[4] बाहु बिशाला * जटा मुकुट शिर उर बनमाला॥

करने लगा; तब इन्द्रने वज्र मारा जिससे इसका शिर पेटमें घुसा तभीसे कबन्ध नाम पडा. इसकी चार चार कोशकी भुजा थीं-सो इतेन बीचमें जो आता उसको खाजाता था. ऐसे जब रामचंद्रको पकडा तब रामचंद्रने मारडाला.

* शबरीके गुरु जब परमधामको जाने लगे; तब शबरीने निवेदन किया कि–मैंभी शरीर छोंड, परमधामको जाऊँगी. मुनिने कहाकि-तू इसकुटीमें रह. तेरे यहां कुछदिनमें राम और लक्ष्मण आवेंगे उनका दर्शन करके, शरीरत्याग करना. इस वचनको सुन, विश्वासपूर्वक ग्रहण करलिया– तबसे प्रतिदिन उस शबरीका यह नियम था कि–सबेरे कुटी लीप, बनमें जाय. दो दोनाभर फल ले आय, कुटीमें रखके, बाहर बेठ, सांझतक प्रभुरामचंद्रकी राह देखा करे. जब रात हो जाय तब शबरी निराश हो, वेही फल खाके, रहे. इसीतरह प्रतिदिन करते करते दशहजार बर्ष बाद राम और लक्ष्मण वहाँ पधारे; तब वह दर्शन, करके शरीर त्याग, परमधामको गई.

१ शाप देता अथवा निंदा करता. २ मारता. ३ कठोर. ४ कमलनयन.

श्याम गौर सुंदर दोउ भाई * शबरी परी चरण लपटाई ॥
प्रेममग्न मुख बचन न आवा * पुनि पुनि पदसरोज शिर नावा ॥
सादर जल लै चरण पखारे * पुनि सुंदर आसन बैठारे ॥

दो० कन्द मूल फल सरस अति, दिये रामकहँ आनि
प्रेमसहित प्रभु खायऊ, बारहिं बार बखानि ॥५७॥

पाणि जोरि आगे भइ ठाढ़ी * प्रभुहिं बिलोकि प्रीति अति बाढ़ी ॥
केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी * अधम जाति मैं जड़मति भारी ॥
अधमते अधम अधम अति नारी * तिनमहँ मैं अतिमन्द गँवारी ॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता * मानौं एक भक्तिकर नाता ॥
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई * धन बल परिजन गुण चतुराई ॥
भक्तिहीन नर सोहैं कैसे * बिनु जल बारिद देखिय जैसे ॥
नवधा भक्ति कहौं तोहिं पाहीं * सावधान सुनु धरु मनमाहीं ॥
प्रथम भक्ति सन्तनकर संगा * दूसरि रति मम कथाप्रसंगा ॥

दो० गुरु-पदपंकज-सेवा, तीसरि भक्ति प्रमाण ॥
चौथि भक्ति मम गुणगण, करै कपट तजि गान ५८॥

मंत्रजाप मम दृढ़ बिश्वासा * पंचम भजन सो बेद प्रकाशा ॥
षट् दम शील बिरत बहुकर्मा * निरत निरन्तर सज्जनधर्मा ॥
सतईं सब मोहिं मय जग देखै * मोते सन्त अधिक करि लेखै ॥
अठईं यथालाभ-सन्तोषा * स्वप्नेहु नाहिं देखै परदोषा ॥
नवम सरल सबसो छलहीना * मम भरोस हिय हर्ष न दीना ॥
नवमहँ एकौ जिन्हके होई * नारि पुरुष सचराचर कोई ॥
सोअतिशय प्रिय भामिनि मोरे * सकल प्रकार भक्ति दृढ़ तोरे ॥

---

१ हाथ. २ मेघ. ३ नवप्रकारकी. ४ लगाहुआ. ५ हमेस.

योगिवृन्ददुर्लभ गति जोई * तोकहँ आजु सुलभ भइ सोई ॥
मम दर्शनफल परमअनूपा * जीव पाव निजसहजस्वरूपा ॥

दो०सब प्रकार तव भक्ति दृढ़, मम चरणन्हअनुराग
तव महिमा जेहि उर बसिहि, तासु परमबड़भाग ५९

सुनि शुभ बचन हर्षकहँ पाई * पुनि बोले प्रभु गिरा सुहाई ॥
जनकसुताकि सुधिहे भामिनि * जानहि तो कहु करिबरगामिनि ॥
पंपासरहिं जाहु रघुराई * मुनिबर बिपुल रहे जहँ छाई ॥
ऋषिमतंग-महिमा- गुणभारी * जीव चराचर रहत सुखारी ॥
बैर न कर काहूसन कोई * जासन बैर प्रीति करु सोई ॥
शिखर सुहावन कानन फूले * खग मृग जीव जंतु अनुकूले ॥
करहु सफल श्रम सबकरजाई * तहाँ होइ सुग्रीवमिताई ॥
सो सब कहिहि देव रघुबीरा * जानतहूँ पूँछत मतिधीरा ॥
बार बार प्रभुपद शिर नाई * प्रेमसहित सब कथा सुनाई ॥

छंद कहि कथा सकल बिलोकि हरिमुखहृदयपदपंकजधरे.
तजि योगपावक देह हरिपदलीन भइ जहँ नहिं फिरे
नर बिबिध कर्म अधर्म बहुमत शोकप्रद सब त्यागहू
बिश्वास करि कह दास तुलसी रामपद अनुरागहू २

दो०जातिहीन अघजन्ममय, मुक्त कीन्ह अस नारि
महामन्द मन सुख चहसि, ऐसे प्रभुहिं बिसारि ६०

चले राम त्यागा बन सोऊ * अतुलित बल नरकेहरि दोऊ ॥
बिरही इव प्रभु करत बिषादा * कहत कथा अनेक सम्बादा ॥
लक्ष्मण देखहु काननशोभा * देखत केहिकर मन नहिं क्षोभा ॥

---

१ हाथीकी समान चलनेवाली. २ बहुत. ३ पापजन्ममय. ४ नरसिंह.

नारिसहित सब खगमृगवृन्दा * मानहुँ मोरि करत हैं निन्दा ॥
हमहिं देखि मृगनिकर पराहीं * मृगी कहहिं तुमकहँ भय नाहीं ॥
तुम आनन्द करहु मृगजाये * कंचनमृग खोजन ये आये ॥
संग लाइ करिणी करि लेहीं * मानहुँ मोहिं सिखावन देहीं ॥
शास्त्रसुचिन्तितपुनिपुनिदेखिय * भूप सुसेवित बश नहिं लेखिय ॥
राखिय नारि यदपि उरमाहीं * युवती शास्त्र नृपति बस नाहीं ॥
देखहु तात बन्सत सुहावा * प्रियाहीन मोहिं भय उपजावा ॥

दो०बिरहबिकलबलहीनमोहिं, जानेसिनिपटअकेल
सहितबिपिनमधुकरखगन्ह, मदनकीन्ह[२]बगमेल ६१
देखि गये भ्रातासहित, तासु दूत निजबात ॥
डेरेदीन्हेउमनहुँतिन्ह, कटकहटकिनहिंजात ॥६२॥

बिटप बिशाल लता अरुझानी * बिबिधबितान दिये जनु तानी ॥
कदलि ताल बर ध्वजा पताका * देखि न मोह धीर मन जाका ॥
बिबिधभांति फूले तरु नाना * जनु बानैत बने बहुबाना ॥
कहुँ कहुँ सुन्दर बिटप सुहाये * जनु भट बिलग बिलग होइ छाये ॥
कूजत पिक मानहुँ गज माते * ढेक[३] महोख ऊँट बिसराते ॥
मोर चकोर कीर बर बाजी[६] * पारावत मराल सब ताजी ॥
तीतर लावा पदचरयूथा * बर्णि न जाइ मनोजबरूथा ॥
रथ गिरि शिला दुन्दुभी झरना * चातक बन्दी गुणगण बरना ॥
मधुकरमुखर भेरि सहनाई * त्रिबिध बयारि बसीठी आई ॥
चतुरंगिणी सेन सब लीन्हे * बिचरत सबहिं चुनौती दीन्हे ॥
लक्ष्मण देखहु कामअनीका * रहहिं धीर तिन्हकै जग लीका ॥

---

१ हरिणोंके समूह. २ कामदेवने. ३ बैल. ४ खचर. ५ सुआ. ६ घोडे

यहिके एक परम बल नारी * तेहितं उबर सुभट सोइ भारी ॥

दो०तातत्तीनिअतिप्रबलखल, कामक्रोधअरुलोभ॥
मुनिबिज्ञानधाममन, करहिंनिमिषमहँक्षोभ ॥ ६३॥
लोभके इच्छा दम्भ बल, कामके केवल नारि ॥
क्रोधकेपरुषबचनबल, मुनिबरकहहिंबिचारि॥६४॥

गुणातीत सचराचर-स्वामी * राम उमा सबअन्तर्यामी ॥
कामिनकी दीनता दिखाई * धीरनके मन बिरति दृढ़ाई ॥
क्रोध मनोज लोभ मद माया* छूटहिं सकल रामकी दाया ॥
सो नर इन्द्रजाल नहिं भूला * जापर होइ सो नट अनुकूला ॥
उमा कहौं मैं अनुभव अपना* हरिको भजन सत्य जग सपना ॥
पुनि प्रभु गये सरोवरतीरा * पंपानाम सुभग गम्भीरा ॥
सन्तहृदयजस निर्मल बारी * बाँधे घाट मनोहर चारी ॥
जहँ तहँ पियहिं बिबिध मृग नीरा* जनु उदारगृह याचकभीरा ॥

दो०पुरइनि सघन ओट जल, बेगि न पाइय मर्म ॥
मायाछन्न न देखिये, जैसे निर्गुण ब्रह्म ॥ ६५ ॥
सुखी मीन सब एकरस, अतिअगाधजलमाहिं * ॥
यथा धर्मशीलन्हके, दिन सुखसंयुत जाहिं ॥६६॥

बिकसे सरसिज नानारंगा * मधुर सुखद गुंजत बहु भृंगा ॥
बोलत जलकुकुट कलहंसा * प्रभु बिलोकि जनु करत प्रशंसा ॥
चक्रवाक बक खगसमुदाई * देखत बनै बर्णि नहिं जाई ॥
सुन्दर खगगणगिरा सुहाई * जात पथिक जनु लेत बुलाई ॥
तालसमीप मुनिन्ह गृह छाये* चहुँदिशि कानन बिटप सुहाये॥

१ कठोर वचन. २ काम. ३ माँगनेवालोंकी भीर. ४ कमल.

चम्पक बकुल कदम्ब तमाला * पाटल[1] पनस पलास रसाला[2] ॥
नव पल्लव कुसुमित तरु नाना * चंचरीकपटली[3] कर गाना ॥
शीतल मन्द सुगन्ध सुभाऊ * सन्तत बहैं मनोहर बाऊ ॥
कुहू कुहू कोकिल ध्वनि करहीं * सुनि रव सरसध्यान मुनि टरहीं ॥

दो० फूले फले बिटप सब, रहे भूमि नियराय ॥
परउपकारी पुरुष जिमि, नवहिं सुसंपति पाय ६७

देखि राम अतिरुचिर तलावा * मज्जन कीन्ह परमसुख पावा ॥
देखी सुन्दर तरुवछाया * बैठे अनुजसहित रघुराया ॥
तहँ पुनि सकलदेव मुनि आये * अस्तुति करि निजधाम सिधाये
बैठे परमप्रसन्न कृपाला * कहत अनुजसन कथा रसाला॥
बिरहवन्त भगवन्ताहिं देखी * नारदमन भा शोच बिशेखी ॥
मोरशाप करि अंगीकारा * सहत राम नाना दुखभारा ॥
ऐसे प्रभुहिं बिलोकौं जाई * पुनि न बनहिं अस अवसर आई॥
यह बिचारि नारद करबीना * गये जहाँ प्रभु सुखआसीना ॥
गावत रामचरित मृदुबानी * प्रेमसहित बहुभांति बखानी ॥
करत दण्डवत लिये उठाई * राखे बडी बार उर लाई ॥
स्वागत पूँछि निकट बैठारे * लक्ष्मण सादर चरण पखारे ॥

दो० नानाबिधि बिनती करि, प्रभु प्रसन्न जिय जानि
नारद बोले बचन तब, जोरि सरोरुहपानि[4] ॥ ६८ ॥

सुनहु उदार परम रघुनायक * सुन्दर अगम सुगमबरदायक ॥
देहु एक बर मागौं स्वामी * यद्यपि जानहु अन्तर्यामी ॥
जानहु मुनि तुम मोर सुभाऊ * जनसन कबहुँ कि करौं दुराऊ

१ गुलाब. २ आम. ३ भ्रमरोंका समुदाय. ४ हस्तकमल.

कवनबस्तु अस प्रिय मोहिं लागी * जो मुनिवर न सकहु तुम माँगी ॥
जनकहँ कछु अदेय नहिं मोरे * अस बिश्वास तजहु जनि भोरे ॥
तब नारद बोले हर्षाई * अस बर मागौं करौं ढिठाई ॥
यद्यपि प्रभुके नाम अनेका * श्रुति कह अधिक एकते एका
राम सकलनामनते अधिका * होहु नाथ अघखगगणबधिका[1]॥

दो०राका[2]रजनी भक्ति तव, रामनाम सोइ सोम ॥
अपर नाम उडुगण बिमल, बसहु भक्त उर व्योम ६९
एवमस्तु मुनिसन कहेउ, कृपासिंधु रघुनाथ ॥
तब नारदमन हर्ष अति, प्रभुपद नायउ माथ ॥ ७० ॥

अतिप्रसन्न रघुनाथहिं जानी * पुनि नारद बोले मृदु बानी ॥
राम जबहिं प्रेरेहु निजमाया * मोहेहु मोहिं सुनहु रघुराया ॥
तब बिबाह चाहौं मैं कीन्हा * प्रभु कहि कारण करै न दीन्हा॥
सुनु मुनि तोहिं कहौं सहरोसा * भजहिं मोहिं तजि सकल भरोसा
करौं सदा तिन्हकी रखवारी * जिमि बालकहिं राख महतारी॥
गहि शिशु बच्छ अनल अहिधाई * तहँ राखै जननी अरगाई ॥
प्रौढ भये तेहि सुतपर माता * प्रीति करै नहिं पाछिल बाता॥
मोरे प्रौढ तनयसम ज्ञानी * बालकसुतसम दास अमानी ॥
जिनहिं मोर बल निजबल ताहीं * दुहुँकहँ काम क्रोध रिपु आहीं ॥
यह बिचारि पंडित मोहिं भजहीं * पायहु ज्ञान भक्ति नहिं तजहीं॥

दो०कामक्रोधलोभादिमद, प्रबल मोहकी धारि॥
तिनमहँ अति दारुण सुखद, मायारूपी नारि ॥ ७१ ॥

सुनि मुनि कह पुराणश्रुतिसन्ता * मोहाबिपिनकहँ नारि बसन्ता ॥

---

१ पापरूप पक्षिसमूहके बहालिआ. २ पूर्णमासीकी राति.

जप तप नेम जलाशयझारी * होइ ग्रीषम[1] शोषै सब नारी ॥
काम क्रोध मद मत्सर भेका * इनहिं हर्षप्रद वर्षा एका ॥
दुर्वासना कुमुद[2]–समुदायी * तिनकहँ शरद सदा सुखदायी ॥
धर्म सकल सरसीरुहवृन्दा[3] * होइ हिम तिन्हहिं देति दुखमन्दा ॥
पुनि ममताजवास–बहुताई * पलुहै नारि शिशिर ऋतु पाई ॥
पापउलूक–निकर सुखकारी * नारि निबिडरजनी[4] अँधियारी ॥
बुधि बल शील सत्य सब मीना * बंशीसम त्रिय कहहिं प्रवीना ॥

दो०अवगुणमूल शूलप्रद, प्रमदा सबदुखखानि ॥
ताते कीन्ह निबारण, मुनि मैं यह जिय जानि ॥७२॥

सुनि रघुपतिके बचन सुहाये * मुनि तनु पुलकि नयन भरि आये ॥
कहहु कवन प्रभुकी अस रीती * सेवकपर ममता अतिप्रीती ॥
ये न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी * ज्ञानरंक मतिमन्द अभागी ॥
पुनि सादर बोले मुनि नारद * सुनहु राम बिज्ञानबिशारद ॥
सन्तन्हके लक्षण रघुबीरा * कहहु राम भंजनभवभीरा ॥
सुनु मुनि सन्तनके गुण कहऊँ * जेहिते मैं उनके बश रहऊँ ॥
षटबिकार तजि अनघ अकामा * सकल आकिंचन शुचिसुखधामा
अमित बोध परमारथ–भोगी * सत्वसार कवि कोबिद योगी ॥
सावधान मद–मान–बिहीना * धीर भक्तगति परमप्रबीना ॥

दो०गुणागार संसारदुख, रहित बिगत सन्देह ॥
तजि मम चरणसरोज प्रिय, तिन्हकहँ देह न गेह ॥७३

निजगुण सुनत श्रवण सकुचाहीं * परगुण सुनत अधिक हर्षाहीं ॥
समशीतल नहिं त्यागहिं नीती * सरल स्वभाव सबहिंसन प्रीती ॥

१ गरमीकी ऋतु. २ अनारसमूह. ३ कमलसमूह. ४ सघन अँधेरी राति.

बरु भल बास नरककर ताता * दुष्टसंग जनि देहि बिधाता ॥
अब पद देखि कुशल रघुराया * जो तुम्ह कीन्ह जानि जनं दाया

दो०तबलगि कुशल न जीवकहँ, स्वप्नेहुँ मनविश्राम ॥
जबलगि भजन न रामके, शोकधाम[2] तजि काम ४७

तबलगि हृदय बसत खल नाना * लोभ मोह मत्सर[3] मद माना ॥
जबलगि उर न बसत रघुनाथा * धरे चाप सायक कटि भाथा॥
ममतातिमिर–तरुणअँधियारी * राग-द्वेष- उलूक–सुखारी ॥
तबलगि बसत जीवउरमाहीं * जबलगि प्रभुप्रतापरवि नाहीं ॥
अब मैं कुशल मिटे भयभारे * देखि राम पदकमल तुम्हारे ॥
तुम कृपालु जापर अनुकूला * ताहि नव्याप त्रिबिधभयशूला
मैं निशिचर अतिअधमसुभाऊ * शुभआचरण कीन्ह नहिं काऊ॥
जो स्वरूप मुनिध्यान न पावा * सो प्रभु हर्षि हृदय मोहिं लावा ॥

दो०अहोभाग्य मम अमित अति, रामकृपा सुखपुंज
देखेउँ नयन बिरंचि शिव, सेव्य युगलपदकंज ॥४८॥

सुनहु सखा निज कहहुँ सुभाऊ * जान भुशुंडि शंभु गिरिजाऊ ॥
जो नर होइ चराचर–द्रोही * आवै सभय शरण तकि मोही॥
तजि मद मोह कपट छल नाना * करौं सखा तेहि साधुसमाना ॥
जननी जनक बन्धु सुत दारा * तनु धन भवन सुहृद परिवारा॥
सबके ममतातागा बटोरी * ममपद मनहिं बाँधि बटि डोरी ॥
समदर्शी इच्छा कछु नाहीं * हर्ष शोक भय नहिं मनमाहीं ॥
अस सज्जन मम उर बस कैसे * लोभीहृदय बसत धन जैसे ॥
तुमसारिखे संत प्रिय मोरे * धरौं देह नहिं आन निहोरे ॥

१ भक्त. २ शोकके घर. ३ दूसरेकी संपत्ति नहीं अच्छी लगे.

दो०सगुणउपासक परमहित, निरत नीति दृढ नेम ।
ते नर प्राणसमान मोहिं, जिनके द्विजपदप्रेम ॥ ४९॥

सुनु लंकेश सकल गुण तोरे * ताते तुम अतिशय प्रिय मोर॥
रामबचन सुनि बानर-यूथा * सकल कहहिं जय कृपाबरूथा॥
सुनत बिभीषण प्रभुकर बानी * नहिं अघात श्रवणामृत जानी॥
पदअम्बुज गहि बारहिं बारा * हृदय समात न प्रेम अपारा ॥
सुनहु देव सचराचरस्वामी * प्रणतपाल उर-अन्तर्यामी ॥
उर कछु प्रथम बासना रहेऊ * प्रभुपदप्रीतिसरित[2] सो बहेऊ ॥
अब कृपालु निजभक्ति पावनी * देहु दया करि शंभुभावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रणधीरा * माँगा तुरत सिन्धुकर नीरा ॥
यदपि सखा तोहिं इच्छा नाहीं * मम दर्शन अमोघ जगमाहीं ॥
अस कहि रामतिलक तेहि सारा* सुमनवृष्टि नभ भयउ अपारा ॥

दो०रावण क्रोधानलसरिस, श्वास समीर[3] प्रचण्ड ।
जरत बिभीषण राखेउ, दीन्हेउ राज अखण्ड ॥ ५०॥
जो सम्पति शिव रावणहिं, दीन्ह दिये दश माथ ॥
सो संपदा बिभीषणहिं, सकुचि दीन्ह रघुनाथ ५१

अस प्रभु छाँड़ि भजहिं जे आना* ते नर पशु बिनु-पूँछ-बिषाना[4]॥
निजजन जानि ताहि अपनावा * प्रभुस्वभाव कपिकुलमन भावा
पुनि सर्बज्ञ सर्ब-उर-वासी * सर्बरूप सबरहित उदासी ॥
प्रात पंचमीदिवस खरारी * सचिवन लियो बुलाय पुकारी ॥
बोले बचन नीतिप्रतिपालक * कारणमनुज दनुजकुलघालक॥
सुनु कपीश लंकापतिबीरा *केहिबिधि उतरिय जलधि गभीरा

१ चरणकमल. २ रामचन्द्रकी प्रीतिरूप नदीमें. ३ पवन. ४ सींग.

संकुल उरग[1] मकर[2] झषजाती * अतिअगाध दुस्तर सबभाँती ॥
कह लंकेश सुनहु रघुनायक * कोटि सिन्धु शोषत तव सायक[3]
यद्यपि तदपि नीति अस गाई * बिनय करिय सागरपहँ जाई ॥

दो॰प्रभुतुम्हारकुलगुरुजलधि, कहहिंउपायाबिचारि
बिनुप्रयास सागर तरहिं, सकल भालुकपिधारि

सखा कह्यो तुम नीक उपाई * करव दैव जो होइ सहाई ॥
मंत्र न यह लक्ष्मणमन भावा * रामबचन सुनि अतिदुख पावा
नाथ दैवकर कवन भरोसा * शोषिय सिन्धु करिय मन रोसा
कादरमनकर एक अधारा * दैव दैव आलसी पुकारा ॥
सुनत बिहँसि बोले रघुबीरा * ऐसेइ करब धरहु मन धीरा ॥
असकहि प्रभु अनुजहिं समुझाई * सिन्धुसमीप गये रघुराई ॥
प्रथम प्रणाम कीन्ह प्रभु जाई * बैठे तट पुनि दर्भ डसाई ॥
जबहिं बिभीषण प्रभुपहँ आये * पाछे रावण दूत पठाये ॥

दो॰सकल चरित उन्ह देखेउ, धरे कपट-कपिदेह
प्रभुगुण हृदय सराहिं अति, शरणागतपर नेह५३

प्रकट बखानत राम-सुभाऊ * अतिसप्रेम गा बिसरि दुराऊ ॥
रिपुका दूत कपिन्ह जब जाना * ताहि बाँधि कपिपतिपहँ[6] आना
कह सुग्रीव सुनहु सब बनचर * अंग भंग करि पठवहु निशिचर
सुनि सुग्रीवबचन कपि धाये * बांधि कटकँचहुँपास फिराये ॥
बहुप्रकार मारन कपि लागे * दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
जो हमार हर नासा काना * तेहि कोशलाधीशकर आना ॥
सुनि लक्ष्मण तेहि निकट बुलाई * दया लागि हँसि दीन छुड़ाई ॥

---

१ सर्प. २ मछरी. ३ बाण. ४ सलाह. ५ कुश. ६ सुग्रीवके पास.

रावणकर दीन्हेउ यह पाती * लक्ष्मणबचन बाँचु कुलघाती ॥

दो०कहेउ मुखागर मूढ़सन, मम सन्देश उदार॥
सीता देहु मिलहु न तो, आवा काल तुम्हार॥५४॥

तुरत नाइ लक्ष्मण पद माथा * चला दूत बर्णत गुणगाथा ॥
कहत रामयश लंका आवा * रावणचरण शीश तिन्ह नावा ॥
बिहँसि दशानन पूँछेसि बाता * कहसि न शुक[1] आपनि कुशलाता
पुनि कहु कुशल बिभीषणकेरी* जासु मृत्यु आई अतिनेरी ॥
करत राज लंका शठ त्यागा * होइहि यवँकरकीट[2] अभागा ॥
पुनि कहु भालुकीशकटकाई * कठिनकालप्रेरित चलिआई ॥
तिन्हके जीवनकर रखवारा * भयउ मृदुलचित सिंधु बिचारा
कहु तपसिन्हकर बात बहोरी * जिन्हके हृदय त्रास बड़ मोरी॥

दो०भई भेंट की फिरगये,श्रवण सुयश सुनि मोर
कहसि न रिपुदलतेजबल,कस चकित चित तोर

नाथ कृपा करि पूँछेहु जैसे * मानहुँ बचन क्रोध तजि तैसे
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा* जातहिं रमा तिलक तेहिं सारा
रावणदूत हमाहिं सुनि काना * कपिन्ह बाँधि दीन्हे दुख नाना
श्रवण नासिका काटन लागे * रामशपथ दीन्ही तब त्यागे ॥
पूछेहु नाथ कीशकटकाई * बदन कोटिशत बर्णि न जाई ॥
नानावर्ण भालु कपि धारी * बिकटाननविशाल भयकारी ॥
जोहिंपुर दहेउ बधेउ सुत तोरा* सकलकपिन्हमहँतोहिंबल थोरा
अमित नाम भट कठिन कराला* बिपुल बर्ण तनुतेज बिशाला ॥

दो०द्विबिद मयन्द नील नल, अंगदादि बिकटासि

१ शुकनामदूत. २ जबके साथ घुनभी पीस जायगा.

दधिमुख केहरि कुमुद गव, जाम्बवन्त बलराशि५६

ये कपि सब सुग्रीव-समाना * इन्हसम कोटि गनै को आना॥
रामकृपा अतुलित बल तिनहीं * तृणसमान त्रयलोकहिं गिनहीं॥
अस मैं श्रवण सुना दशकंदर * पद्म अठारह यूथप[1] बन्दर ॥
नाथ कटकमहँ सो कपि नाहीं * जो न तुम्हें जीतहि रणमाहीं ॥
परमक्रोध मीजहिं सब हाथा * आयसु पै न देहिं रघुनाथा ॥
शोषहिंसिन्धुसरितझष[2] व्याला[3] * फारहिंनखधरि कुधर[4]बिशाला ॥
मर्दि गर्द मिलवहिं दशशीशा * ऐसे बचन कहहिं सब कीशा॥
गर्जहिं तर्जहिं सहजअशंका * मानहुँ ग्रसन चहत अब लंका॥

दो०सहजशूर कपि भालु सब, पुनि शिरपर श्रीराम
रावणकोटिन कालकहँ, जीति सकहिं संग्राम ॥५७॥

रामतेज-बल-बुधि-बिपुलाई * शेषसहसशत सकहिं न गाई ॥
सक शर एक शोषि शतसागर * तव भ्रातहिं पूँछेउ नयनागर ॥
तासु बचन सुनि सागरपाहीं * माँगत पन्थ कृपा मनमाहीं ॥
सुनत बचन बिहँसा दशशीशा * जो अस मति सहाय कृत कीशा॥
सहजभीरुकर बचन दृढाई * सागरसन ठानी मचलाई ॥
मूढ मृषा[5] का करसि बड़ाई * रिपुबलबुद्धिथाह मैं पाई ॥
सचिव सभीत बिभीषण जाके * बिजय बिभूति कहाँलगि ताके॥
सुनि खलबचन दूत रिसि बाढ़ी * समयबिचारि पत्रिका काढ़ी ॥
रामअनुज दीन्ही यह पाती * नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती ॥
बिहँसि बामकर लीन्हेसि रावन * सचिव बोलि शठ लागु बँचावन

दो०बातन मनहिं रिझाव शठ, जनि घालसि कुलखीश

१ फौजके मालिक. २ मछली. ३ सर्प. ४ पर्वत. ५ असत्य.

रामबिरोध न उबरिहहु, शरण बिष्णु अज ईश[१]॥५८॥
होउ मान तजि अनुजइव, प्रभुपदपंकजभृंग ॥
होहु रामशर[२]अनल खल, जनि कुलसहित पतंग ५९

सुनत सभय मनमहँ मुसुकाई * कहत दशानन सबहिं सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकाशा * लघु-तापसकर बाग-बिलासा ॥
कह शुक नाथ सत्य सब बानी * समुझहु छाँड़ि प्रकृति अभिमानी ॥
सुनहु बचन मम परिहरि क्रोधा * नाथ रामसन तजहु बिरोधा ॥
अतिकोमल रघुबीर-सुभाऊ * यद्यपि अखिललोककर राऊ ॥
मिलत कृपा प्रभु तुमपर करिहैं * उर अपराध न एकौ धरिहैं ॥
जनकसुता रघुनाथहिं दीजै * इतना कहा मोर प्रभु कीजै ॥
जब तेहि देन कहेउ बैदेही * चरणप्रहार कीन्ह शठ तेही ॥
चरण नाइ शिर चलो सो ताहाँ * कृपासिन्धु रघुनायक जाहाँ ॥
करि प्रणाम निजकथा सुनाई * रामकृपा आपनि गति पाई ॥
ऋषि अगस्त्यकर शाप भवानी * राक्षस भयेउ रहा मुनि ज्ञानी ॥
बन्दि रामपद बारहिं बारा * पुनि निजआश्रमकहँ पगु धारा ॥

दो०बिनय न मानत जलधि जड, गये तीनिदिनबीति
बोले राम सकोप तब भय बिनु होय न प्रीति ॥ ६०॥

लक्ष्मण बाण शरासन आनू * शोषै बारिधि बिशिख[४]कृशानू ॥
शठसन बिनय कुटिलसन प्रीती * सहजकृपणसन सुन्दर नीती ॥
ममतारतसन ज्ञानकहानी * अतिलोभीसन बिरति बखानी ॥
क्रोधिहिं सम कामिहिं हरिकथा * ऊषर बीज बये फल यथा ॥
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा * यह मत लक्ष्मणके मन भावा ॥

---

१ ब्रह्मा. २ रामबाणकी अग्निमें. ३ पाँखी. ४ बाणकी अग्नि.

सन्धानेउ धनु विशिख[1] कराला * उठी उदधिउरअन्तर ज्वाला ॥
मकर उरग झषगण अकुलाने * जरत जन्तु जलनिधि जब जाने
कनकथार भरि मणिगण नाना * विप्ररूप आयउ तजि माना ॥

दो०काटेपै कदली फरै, कोटि-यत्न करि सींच ॥
विनय न मान खगेश सुन, डाटेहिं पै नव नीच६१

सभय सिन्धु गहि पद प्रभुकेरे * क्षमहु नाथ सब अवगुण मोरे ॥
गगन समीर अनल जल धरणी * इनकी नाथ सहजजड़करणी ॥
तव प्रेरित माया उपजाये * सृष्टि हेतु सब ग्रन्थन गाये ॥
प्रभुआयसु जेहिकहँ जस अहही * सो तेहि भांति रहे सुख लहही ॥
प्रभु भलकीन्हमोहिंसिख दीन्ही * मर्यादा सब तुम्हरी कीन्हीं ॥
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी * ये सब ताड़नके अधिकारी ॥
प्रभुप्रताप मै जाव सुखाई * उतरिहि कटक न मोरि बड़ाई ॥
प्रभुआज्ञा अपेलि[2] श्रुतिगाई * करहु बेगि जो तुमहिं सोहाई ॥

दो०सुनत विनीत वचन अति,कह कृपालु मुसुकाय
जेहि बिधि उतरै कपिकटक,तात सो करहु उपाय

नाथ नीलनल कपि दोउभाई * लरिकाई ऋषि * आशिष पाई ॥
तिनके परस किये गिरि भारे * तरिहहिं जलधि[3] प्रताप तुम्हारे

*बचपनमें जब समुद्रके किनारे मुनिलोग शालग्रामकी पूजा कर, आँख मूंद, ध्यान लगाकर बैठते थे तब नील और नल ये दोनों बंदर शालग्रामको उठाके पानीमें फेंक देते थे. ऐसा देख, मुनिलोगोंने व्याकुल हो शाप दिया, कि-इनका छुवा हुवा पत्थर पानीमें न डूबे, वही शाप इनके विषे आशीर्वादके तुल्य भया.

१ बाण. २ दूर करनेलायक नहीं. ३ समुद्रमें.

मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई* करिहौं बलअनुमान सहाई ॥
यहिविधि नाथ पयोधि बँधाइय* जिहिं असुयशलोकतिहुँगाइय
यहि शर मम उत्तरतटवासी * हतहु नाथ खलगण अघरासी॥
सुनि कृपालु सागरमनपीरा * तुरतहिं हरी राम रणधीरा ॥
देखि रामबल अतुलित भारी * हर्षि पयोनिधि भयो सुखारी ॥
सकल चरित कहि प्रभुहिं सुनावा*चरण वन्दि पाथोधि सिधावा॥

छंद०निजभवन गवनेउ सिन्धु श्रीरघुबीर यह मतभायऊ
यह चरित कलिमलहरण जथमति दास तुलसीगायऊ
सुखभवन संशयदमन शमनविषाद रघुपतिगुण गना ॥
तजिआश सकलभरोसगावहिंसुनहिंसज्जनशुचिमना ६ ॥

दोहा०सकल-सुमंगल-दायक, रघुनायकगुणगान ॥
सादर सुनहिं ते तरहिं भव, सिन्धु बिनाजलयान ६२

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विशुद्धसन्तोषसम्पादनो नाम श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतसुन्दरकाण्डः पंचमः सोपानः समाप्तः ॥ ५ ॥

॥ इति सुन्दरकाण्डं समाप्तम् ॥

१ पापराशि. २ यथाबुद्धि. ३ संदेहनाशक. ४

श्रीयुतगोस्वामी

तुलसीदासकृतरामायणम्.

(लङ्काकाण्डम्)

संवत् १९५६

लङ्काकाण्डम्

श्रीः ।

श्रीयुतगोस्वामी तुलसीदासकृतरामायणे

लंकाकाण्डप्रारंभः ।

दो०–रावणिरावणअनुजबध, रावणके शिरभंग ॥
रावणारिआगम अवध, लंकाकाण्डप्रसंग ॥ १ ॥

श्लो०–रामं कामारिसेव्यं भवभयहरणं कालमत्तेभसिंहं योगीन्द्रं ज्ञानगम्यं गुणनिधिमजितं निर्गुणं निर्विकारं ॥ मायातीतं सुरेशं खलवधनिरतं ब्रह्मवृन्दैकदेवं वन्दे कुन्दावदातं सरसिजनयनं देवमुर्वीशरूपं ॥१॥ शंखेन्द्वाभमतीवसुन्दरतनुं

श्लोकार्थ–शंकरजीकरके सेवित, संसारका भय हरनेवाले, कालरूपी मतवाले हाथीको सिंहरूप, योगियोंमें श्रेष्ठ, केवल एक ज्ञानहीसे प्राप्त होने के योग्य, गुणोंकी खान, जिनको कोई नहीं जीत सकता, गुणोंसे औरबिकारोंसे रहित, मायासे परे, देवताओंके स्वामी, दुष्टोंके मारनेमें तत्पर, ब्राह्मणोंके समूहोंके एक देव, 'कुंदावदात' अर्थात् मेघके तुल्य श्यामवर्ण 'कुंद' यह शब्द 'दैपशोधने' इस धातुसे बनता है "कुं पृथ्वीं दायति शोधयतीति कुंदः" अर्थात् पृथ्वीको जलद्वारा मेघ शोधता है और कमलतुल्य नेत्रवाले ऐसे राजरूप देव रामचन्द्रजीकी मैं बंदना करता हूं ॥ १ ॥

१ मेघनादादि व कुम्भकर्ण इन्होंका हनन.
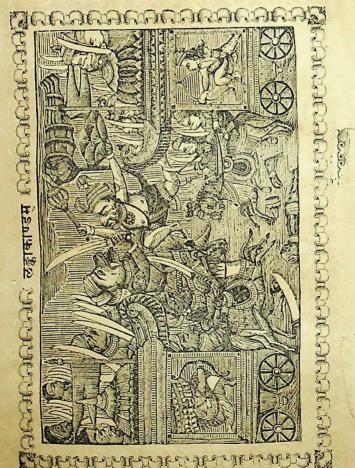
शार्दूलचर्माम्बरं कालव्यालकरालभूषणधरं गङ्गाशशाङ्कप्रियं ॥ काशीशं कलिकल्मषौघशमनं कल्याणकल्पद्रुमं नौमीड्यं गिरिजापतिं गुणनिधिं श्रीशंकरं कामहं ॥ २ ॥ यो ददाति सतां शम्भुः कैवल्यमपि दुर्लभं ॥ खलानां दण्डकृद्योऽसौ शङ्करः शन्तनोतु मे ॥ ३ ॥

दो०—लव[1] निमेष परमाणु युग, बर्ष कल्प[2] शर चण्ड ॥
भजसि न मन तेहि रामकहँ, कालजासु कोदण्ड ॥ १ ॥

सो०—सिंधुबचनसुनि राम, सचिव बोलि प्रभुअस कहेउ ॥
अब बिलम्ब केहि काम, रचहु सेतु उतरै कटक ॥ १ ॥
सुनहु भानुकुलकेतु, जामवन्त कर जोरि कह ॥

जिनकी शंख और चन्द्रके सदृश कांति है; जो अतिसुंदर हैं; व्याघ्रांबर यानी व्याघ्रका चमड़ा वस्त्र है; कालके समान भयंकर सर्पोंके आभूषण धारण किये हैं; जिनको गंगाजी और चन्द्रमा ये प्रिय हैं तथा जो कलियुगके पापोंके प्रवाहोंको शांत करनेवाले हैं, कल्याण करनेमें कल्पवृक्षके समान हैं; ईड्य नाम स्तुत्य (स्तुति करने योग्य) हैं और कामदेवके नाश करनेवाले हैं ऐसे जो गुणोंके समुद्र काशीजीके मालिक पार्वतीके पति महादेवजी हैं उनको मैं प्रणाम करता हूं ॥ २ ॥ और जो शंकरजी सज्जनोंको अतिदुर्लभ मोक्षभी देदेते हैं तथा जो दुष्टोंको दंड देकर सज्जनोंका कल्याण करते हैं वे शिवजी मेरे कल्याणको बिस्तारित करें ॥ ३ ॥

१ क्षण. २ हजार चतुर्युगोंके गत होनेके बाद जो प्रलय होता है.

नाथ नाम तव सेतु, नर चढ़ि भवसागर तरहिं॥२॥

यह लघु जलधि तरत कतबारा * अससुनि पुनि कह पवनकुमारा
प्रभुप्रताप वड़वानल भारी * शोषेउ प्रथम पयोनिधिवारी ॥
तव रिपुनारि-रुदन-जलधारा * भऱ्यो बहोरि भयो तेहि खारा॥
सुनि अस उक्ति पवनसुतकेरी * बिहँसे रघुपति कपितनहेरी ॥
जाम्बवन्त बोले दोउ भाई * नलनीलहिं सब कथा सुनाई ॥
रामप्रताप सुमिरि उरमाहीं * करहु सेतु प्रयास कछु नाहीं ॥
बोलि लिये कपिनिकर बहोरी * सकल सुनहु विनती एक मोरी
राम-चरण-पंकज उर धरहू * कौतुक एक भालु कपि करहू॥
धावहु मर्कट बिकट बरूथा * आनहुँ बिटप गिरिनके यूथा ॥
सुनि कपि भालु चले करि हूहा * जय रघुबीर प्रतापसमूहा ॥
"अस कहि नौमीदिन सो गयऊ * परारंभ दशमीते भयऊ" ॥

दो०अतिउतंग तरुशैलगण, लीलहि लेहिं उठाइ ॥
आनि देहि नलनीलकहँ, बिरचहिं सेतु बनाइ ॥२॥

शैल बिशाल आनि कपि देहीं * कन्दुक इव नलनील सो लेहीं
देखि सेतु अतिसुन्दररचना * बिहँसि कृपानिधि बोले बचना
" कह्यो महातम चिर जगहेतू * तेरसि दिवस सिद्ध भा सेतू "
परम रम्य सुन्दर यह धरणी * महिमा अमित जाइ नहि बरणी
करिहौं इहाँ शम्भु-थापना * मोरे हृदय परमकल्पना ॥
सुनि कपीश बहु दूत पठाये * मुनिबरनिकर बोलिलै आये
लिंग थापि बिधिवत करि पूजा * शिवसमान प्रिय मोहिं न दूजा
शिवद्रोही मम दास कहावै * सो नर स्वप्नेहु मोहिं न पावै ॥

१ छोटा. २ समुद्रका जल. ३ रावणकी स्त्रियोंकी रोनेकी जलधारसे.

शंकरबिमुख भक्ति चह मोरी * सो नर मूढ़ मंद मति थोरी ॥

दो०सेतुबन्ध भइ भीर अति,कपि नभपन्थउड़ाहिं
अपर जलचरनि उपर चढ़ि,बिनुश्रम पारहिं जाहिं

जो रामेश्वरदर्शन करिहैं * सो तनु तजि मम धाम सिधरिहैं
जो गंगाजल आनि चढ़ाइहि * सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहि ॥
होइ अकाम[1] जो छलतजि सेइहि* भक्तिमोरि तिहि शंकर देइहि ॥
मम कृत सेतु जो दर्शन करिहैं* बिनु श्रम भवसागर सो तरि हैं
रामबचन सबके मन भाये * मुनिवर निज निज आश्रम आये
गिरिजा रघुपतिकी यह रीती * सन्तत करहिं प्रणतपर प्रीती ॥
बाँधेउ सेतु नील नल नागर * रामकृपा यश भयउ उजागर ॥
बोरहिं आनहिं बूड़ाहिं जेई * भये प्रबल बोहित[2]सम तेई ॥
महिमा यह न जलधिकी बरणी* पाहन[3]गुण न कपिनकी करणी॥

दो०श्रीरघुबीर-प्रतापते, सिन्धु तरे पाषाण ॥
ते मतिमन्द जो राम तजि, भजहिं जाय प्रभु आन

बाँधि सेतु अतिसुदृढ बनावा * देखि कृपानिधिके मन भावा॥
चली सेन कछु बर्णि न जाई * गर्जहिं मर्कट-भट-समुदाई ॥
सेतुबंधढिग चढ़ि रघुराई * चितव कृपालु सिंधुबहुताई ॥
देखनकहँ प्रभु करुणाकन्दा * प्रगट भये सब जलचरवृन्दा ॥
नाना मकर नक्र झष[4] ब्याला[5] * शतयोजन तनु परमबिशाला ॥
ऐसे एक तिनहिं धरि खाहीं * एकनके डर एक पराहीं ॥
प्रभुहिं बिलोकहिं टरहिं न टारे* मन हर्षित सब भये सुखारे ॥

---

१ कामनारहित. २ नौकाके समान. ३ पत्थरोंके. ४ मत्स्य. ५ सर्प.

तिनकी ओट न देखिय बारी * मग्न भये हरिरूप निहारी ॥
चला कटक कछु बर्णि न जाई * को काहि सक कपिदलविपुलाई

दो०शंकरप्रिय मम द्रोही, शिवद्रोही मम दास ॥
ते नर करहिं कलपभरि, घोरनरकमहँ बास ॥ ५ ॥

यह कौतुक बिलोकि दोउ भाई * बिहँसि चले कृपालु रघुराई ॥
सेनसहित उतरे रघुबीरा * कहि न जात कछु यूथपभीरा॥
"इमि उतरत निशिदिन इकधारा * द्वितिया दिवस भये सब पारा"॥
सिन्धुपार प्रभु डेरा कीन्हा * सकलकपिनकहँ आयसु दीन्हा॥
खाहु जाइ फल मूल सुहाये * सुनत भालु कपि जहँ तहँ धाये ॥
पाय रजाय निकट फल खाये * तृतियादिन सुबेल गिरि आये ॥
सब तरु[2] फले रामहितलागी * ऋतु अनऋतुहि कालगति त्यागी
खाहिंमधुरफल बिटप हिलावहिं * लङ्कासन्मुख शिखर[3] चलावहिं॥
जहँकहुँ फिरत निशाचर पावहिं * घेरिसकलमिलि नाच नचावहिं॥
दशनन[4] काटि नासिका काना * कहि प्रभुसुयश देहिंतब जाना॥
जिनकर नासा कान निपाता * तिन रावणहिं कही सबबाता ॥
सुनत श्रवण बारिधिबन्धाना * दशमुख बोलि उठा अकुलाना॥

दो०बाँधेउ जलनिधि नीरनिधि, जलधि सिन्धु बारीश
सत्य तोयनिधि पंकनिधि, उदधि पयोधि नदीश ॥६

व्याकुलता निज समुझि बहोरी * बिहँसिचलागृहकरिमतिभोरी ॥
मंदोदरी सुना प्रभु आये * कौतुकही सुपयोधि बँधाये ॥
कर गहि पतिहिं भवन निज आनी * बोली परममनोहर बानी ॥

---

१ जल. २ वृक्ष. ३ पत्थर. ४ दाँतोंसे. ५ रावणने दशमुखोंसे नाम कहे. ६ समुद्र.

चरण नाइ शिर अंचल रोपा * सुनहु बचन पिय परिहरि कोपा
नाथ बैर कीजै ताहीसों * बुधि बल जीति सकहिं जाहीसों
तुमहिं रघुपतिहिं अन्तर कैसा * खलु खद्योत दिवाकर जैसा ॥
अतिबल मधु कैटभ जिन मारा * महाबीर दितिसुत संहारा ॥
जेंहिबलि बाँधि सहसभुज मारा * सोइ अवतरेउ हरण महि भारा ॥
तासु बिरोध न कीजिय नाथा * कालकर्मगुण जिनके हाथा ॥

दो०रामहिं सौंपहु जानकी, नाइ कमलपद माथ॥
सुतकहँ राज देइ बन, जाइ भजहु रघुनाथ ॥ ७ ॥

नाथ दीनदयालु रघुराई * बाघौ सन्मुख गये न खाई ॥
चहिय करन सो सब करि बीते * तुम सुर असुर चराचर जीते॥
बेद कहहिं अस नीति दशानन * चौथेपनहिं जाइ नृप कानन ॥
तासु भजन कीजिय तहँ भर्त्ता * जो कर्त्ता पालहि संहर्ता ॥
सोइ रघुबीर प्रणतअनुरागी * भजहु नाथ ममता मद त्यागी॥
मुनिबर यत्न करहिं जेहि लागी * भूप राज तजि होहिं बिरागी ॥
सोइ कोशलाधीश रघुराया * आये करन तोहिपर दाया ॥
जो प्रिय मानहुँ मोर सिखावन * होइहि सुयश तिहूँपुर पावन ॥

दो०अस कहि लोचन बारि[३] भरि, गहि पद कंपितगात
नाथ भजहु रघुनाथपद, मर्म[४] अहिवात न जात ॥ ८॥

तब रावण मयसुता उठाई * कहै लाग खल निजप्रभुताई ॥
सुन तैं प्रिया मृषा भय माना * जग योधा को मोहिंसमाना॥
बरुण कुबेर पवन यम काला * भुजबल जिते सकलदिग्पाला
देव दनुज नर सब बश मोरे * कवनहेतु भय उपजा तोरे ॥

१ राजा. २ नेत्रोंमें. ३ जल. ४ मेरा. ५ सौभाग्य (सुहाग.)

नानाविधि कहि तेहिं समुझाई * सभा बहोरि बैठ सो जाई ॥
मन्दोदरी हृदय अस जाना * कालविबश उपजा अभिमाना ।
सभा जाइ मंत्रिनसों बूझा * करिय कवनबिधिरिपुसन जूझा
कहहिं सचिवसुनिनिशिचरनाहा * बार बार प्रभु पूँछहु काहा ॥
कहहु कवन भय करिय विचारा * नर कपि भालु अहार हमारा॥

दो०बचन सबनके श्रवण सुनि, कह प्रहस्त करजोरि॥
नीतिबिरोध न करिय प्रभु, मंत्रिनमति अति थोरि ॥

कहहिं सचिव सब ठकुरसुहाती * नाथ न भल होइहि यहि भाँती
बारिधि लाँघि एक कपि आवा * तासु चरित मनमहँ सब गावा॥
क्षुधा न रही तुमहिं सबकाहू * जारत नगर न कस धरि खाहू
सुनत नीक आगे दुख पावा * सचिवन्हअसमतप्रभुहिं सुनावा
जो बारिश[1] बँधायउ हेलो[2] * उतरे कपिदल सहित सुबेला ॥
सो जनु मनुज खाब हम भाई * बचन कहहु सब गाल फुलाई॥
सुनि मम बचन तात अतिआदर * निजमनगुणहुमोहिं कहिकादार ॥
प्रिय बाणी जे सुनहिं जे कहहीं * ऐसे जग निकाय नर अहहीं ॥
बचन परमहित सुनत कठोरे * कहहिं सुनहिं ते नर प्रभु थोरे॥
प्रथम बसीठ पठव सुन नीती * सीतहिं देइ करिय पुनिप्रीती ॥

दो०नारि पाइ फिरि जाहिं जो, तौ न बढ़ाइय रार ॥
नाहिं तो सन्मुख समरमहँ, नाथ करिय हठ मार१०

यह मत जो मानहु प्रभु मोरा * उभयप्रकार सुयश जग तोरा ॥
सुतसन कह दशकंध रिसाई * अस मत तोहिं शठ कवन सिखाई
अबहींते उर संशय होई * बेणुवंश[3] सुत भयसि घमोई ॥

१ समुद्र. २ एक हल्लामें अथवा अनादरसे. ३ बासके वंशमें.

सुनि पितुगिरा परुष अतिघोरा * चला भवन कहि वचन कठोरा
हित मत तोहिं न लागत कैसे * कालबिबशकहँ भेषज जैसे ॥
संध्यासमय जानि दशशीशा * भवन चला निरखत भुज बीशा
लंका शिखर रुचिर आगारा * अति बिचित्र तहँ होय अखारा
बैठ जाइ तेहिं मन्दिर रावण * लागे किन्नर गुणगण गावन ॥
बाजे ताल पखावज बीणा * नृत्य करहिं अप्सरा प्रबीणा ॥

दो०सुनासीरशतसरिससो, सन्ततकरैबिलास ॥
परमप्रबलरिपुशीशपर, तदपिनकछुमनत्रास ॥११॥

इहाँ सुबेलशैल रघुबीरा * उतरे सेनसहित अतिभीरा ॥
शैलशृंग इक सुन्दर देखी * अतिउतंग सम सुभग बिशेखी॥
तहँ तरु किसलय सुमन[1] सुहाये * लक्ष्मण रचि निजहाथ डसाये॥
तापर रुचिर मृदुल मृगछाला * तेहि आसन आसीन[2] कृपाला॥
प्रभुकृत-शीश कपीश उछंगा * बामदहिनदिशि चाप निषंगा॥
दुहुँ कर कमल सुधारत बाना * कह लंकेश[3] मंत्र लगि काना ॥
बड़भागी अंगद हनुमाना * चरणकमल चापत बिधि नाना
प्रभुपाछे लक्ष्मण बीरासन * कटि निषंग कर बाण शरासन॥

दो०यहिबिधिकरुणाशीलगुण, धामरामआसीन ॥
धन्यसोनरयहिध्यानरत, रहतसदालवलीन ॥१२॥
पूरबदिशाबिलोकिप्रभु, देखा उदित मयंक[4] ॥
कह्योसबहिंदेखहुशशिहि, मृगपतिसरिसअशंक[5] १३

पूरबदिशि गिरिगुहानिबासी * परम-प्रताप-तेज-बलराशी ॥
मत्त नाग-तम कुम्भ-बिदारी * शशि केसरी गगनबनचारी ॥

---

१ फूल. २ बैठे. ३ बिभीषण. ४ चंद्र. ५ सिंहसमान.

बिथरे नभ मुक्ताहल तारा * निशि सुन्दरीकेर शृङ्गारा ॥
कह प्रभु शशिमहँ मेचकताई * कहहु कहा निज निज मति भाई
कह सुग्रीव सुनहु रघुराया * शशिमहँ प्रकट भूमि की छाया॥
मारेहु राहु शशिहिं कह कोई * उरमहँ परी श्यामता सोई ॥
कोउकहजबबिधिरतिमुखकीन्हा*सारभाग शशिकर हरिलीन्हा ॥
छिद्र सो प्रकट इन्दुउरमाहीं * तेहिमग देखिय नभपरिछाहीं ॥
कह प्रभु गरल बन्धु शशिकेरा * अतिप्रियतम उर दीन्ह बसेरा॥
बिषसंयुत करनिकर पसारी * जारत बिरहवन्त नर नारी ॥

दो०कह मारुतसुत सुनहु प्रभु, शशि तुम्हार प्रियदास
तव मूरति तेहि उर बसति, सोइ श्यामता भास ॥
पवनतनयके बचन सुनि, बिहँसे राम सुजान ॥
दक्षिण दिशा बिलोकि पुनि, बोले कृपानिधान १५

देखु बिभीषण दक्षिणआसा * घनघमण्ड दामिनी-बिलासा॥
मधुर मधुर गर्जत घन घोरा * होइ वृष्टि जनु उपल कठोरा ॥
कहत बिभीषण सुनहु कृपाला * होइ न तडित न बारिदमाला॥
लंकाशिखर रुचिर-आगारा * तहँ दशकन्धरकेर अखारा ॥
छत्र मेघडम्बर-शिरधारी * सो जनु जलदघटा अतिकारी ॥
मंदोदरी- श्रवण ताटंका * सोइ प्रभु जनु दामिनी दमंका ॥
बाजहिं ताल मृदंग अनूपा * सोइ रव सरस सुनहु सुरभूपा ॥
प्रभुमुसुकानि देखि अभिमाना * चाप चढ़ाइ बाण सन्धाना ॥

दो०छत्र मुकुट ताटंक सब, हते एकही बान ॥
सबके देखत महि गिरे, मर्म न काहू जान ॥ १६ ॥

---

१ श्यामता. २ ब्रह्माने. ३ रतिका मुख.

यह कौतुक करि रामशर, प्रविश्यो आइ निषंग ॥
रावणसभा सशंक सब, देखि महारसभंग ॥ १७॥

कम्प न भूमि न मरुत¹ विशेषा * अस्त्र शस्त्र कोउ नयन न देषा ॥
शोचहिं सब निजहृदय बिचारी * अशकुन भयउ भयंकर भारी॥
रावण दीख सभा भय पाई * बिहँसि बचन कह युक्ति बनाई॥
शिरौ गिरे सन्तत² शुभ जाही * मुकुट गिरे कस अशकुन ताही ॥
शयन करहु निज निज गृह जाई * गवने भवन सकल शिर नाई॥
मन्दोदरी शोच उर बसेऊ * जबते श्रवणफूल महि खसेऊ॥
सजलनयन कह युग कर जोरी * सुनहु प्राणपति बिनती मोरी॥
रामबिरोध कन्त परिहरहू * जानि मनुज जनि हठ उर धरहू॥

दो०बिश्वरूप रघुबंशमणि, करहु बचनविश्वास ॥
लोककल्पना वेद कह, अंग अंग प्रति जास ॥ १८ ॥

पद पाताल शीश अजधामा³ * अपर लोक अंगन्ह बिश्रामा ॥
भृकुटिबिलास भयंकर काला * नयन दिवाकर⁴ कच⁵ घनमाला॥
जासु घ्राण⁶ अश्विनीकुमारा * निशि अरु दिवस निमेष⁷ अपारा
श्रवण दिशा दशवेद बखानी * मारुत श्वास निगम निजबानी॥
अधर लोभ यम दशन कराला * माया हास बाहु दिग्पाला ॥
आनन अनल अम्बुपति जीहा * उत्पति पालन प्रलय समीहा ॥
रोमावलि अष्टादश भारा * अस्थि शैल सरिता नसजारा ॥
उदर उदधि अधगोकुजातना * जगमय प्रभुकी बहुत कल्पना॥

दो०अहंकार शिव बुद्धि अज, मन शशिचित्तमहान
मनुजवासचरअचरमय, रूपराशिभगवान ॥१९॥

---

१ वायु. २ निरंतर. ३ ब्रह्मलोक. ४ सूर्य. ५ केश. ६ नासा. ७ पलक.

असविचारिसुनुप्राणपति, प्रभुसनवैरबिहाय ॥
प्रीतिकरहुरघुवीरपद, ममअहिवातनजाय ॥२०॥

बिहँसा नारिबचन सुनि काना * अहो मोहमहिमा बलवाना ॥
नारिस्वभाव सत्य कबि कहई * अवगुण आठ सदा उर रहई ॥
साहस अनृत चपलता माया * भय अविवेक अशौच अदाया॥
रिपुकर रूप सकल तैं गावा * अतिविशाल भय मोहिं सुनावा
सो सब प्रिया सहज बश मोरे * समुझि परा प्रभाव अब तोरे॥
जानेउँ प्रिया तोरि चतुराई * यहि मिसि कहेउ मोरि प्रभुताई
तव बतकही गूढ मृगलोचनि *समुझत सुखद सुनत भयमोचनि
मन्दोदरि मनमहँ यह ठयऊ * पियहिंकालवश मति भ्रम भयऊ

दो॰बहुबिधि जलपेसि सकल निशि, प्रातभये दशकन्ध
सहज अशंक सो लंकपति, सभा गयो मदअन्ध ॥

सो॰फूलै फलै न बेत, यदपि सुधा वर्षहिं जलद ॥
मूरखहृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं बिरंचिसम ॥ ३

अथ क्षेपक ॥

दो॰मंत्रिनसहित दशानन, चढ़ेउ धवरहर जाय ॥
सारण कह तव राजसन, देखहु कपिसमुदाय ॥१॥

यह जो सिंहनाद किलकरहीं * सप्तताल उन्नत संचरहीं ॥
सहस कोटि अतुलित बलवाना* इन्हके सँग बानरपरिमाना ॥
रणअजीत ये सहज अशंका * नाद सुने कांपे गढ़–लंका ॥
नभ निरखहु इनके लंगूरे * जनु ऋतु पावस युग धनु पूरे ॥
बिसकर्माके सुत गुणखानी * इन्हपरसे पयें शिल उतरानी॥

१ दो. २ जलमें.

बसहिं ताम्रगिरि-कंदरमाहीं * गोदावरीबिमल जल पाहीं ॥
अतिबल आगे धावहिं बीरा * इन्हपर कृपा करहिं रघुबीरा ॥
करहिं यमहुकर संगर टीला * कज्जलवर्ण नाम नल नीला ॥

दो०पद्म अठारह कपिकटक, चल इनकी भुजछाँह
निजकर सुरभि सुफूल लै, रघुपति पूजी बाँह ॥ २ ॥

यह जो आवत अचलसमाना * चौदहताड़ ऊँचपरिमाना ॥
वास पुलिन्दाके तट करई * अम्बुदनिकर निरखि कर धरई॥
रक्तकमलदलसम सब देहा * जनु बिकसेउ संध्याकर मेहा ॥
हतै मेदिनी पूँछ भँवाई * लंकासौंह चितव जनु खाई ॥
तारासुवनै बालिको जायो * अतिजुझार रघुपति-मन-भायो
हृदय गगन यहिके प्रभु भानू * पंचपद्म कपिनिकर पयानू ॥
करै बज्र बासवकर भंगा * उदयाचलकहँ लेइ उछंगा ॥
परम चतुर सेनपै इहि लागी * रघुपति-कृपा परम-बड़भागी॥

दो०पाउँ धरा धरि चापै, पन्नग होइ अकाज ॥
सेनअग्रसर देखहु, यह अंगद युवराज ॥ ३ ॥

यह जो श्वेतवर्ण तनु रेखा * मनहुँ रजतागिरिशृंग बिशेखा ॥
दीर्घकेश दारुण भुजदण्डा * चपल चलत बलबुद्धिप्रचण्डा ॥
बास करै जलनिधिके तीरा * पान करै गोमतीसुनीरा ॥
नृप सुग्रीवकेर अधिकारी * सबल व्यूह यह रचै सँवारी ॥
जनमत चन्द्रहिं ग्रसन उड़ाना* इहिकर पुरुषारथ जग जाना ॥
निरखि गगन राकाशशिसोहा * शिशुअजान तेहिलगि मन मोहा
धरणी धसाकि धरन जब उड़ेऊ * सत्तरि योजनते पुनि फिरेऊ ॥

१ पृथ्वी. २ अंगद. ३ सेनापति. ४ चांदीके पर्वतका शिखर है. ५ किला.

दो०कोटि पंचशत मर्कट, रहैं सर्वदा साथ ॥
कालहुते रण लरि सकै, कुमुद नाम कपिनाथ॥ ४ ॥

ये देखहु जे चहुँदिशि घुमड़े * मनहु लंक सावनघन उमड़े ॥
आगू पीछू दश दिशि धावहिं * शिला शृंग तरु तोरत आवहिं॥
सहस नाग बल सबहिं समाना* सप्त पद्म इनकर परिमाना ॥
काशी पुरी वास इन्हकेरी * समर कतहुँ जिन पीठि न फेरी
तीक्ष्ण दन्त नख आयुध धारी * द्वन्द्वयुद्ध ये जानहिं भारी ॥
धूमकेतु यूथप इन्हकेरा * लंकानिकट कीन्ह जेहिं डेरा ॥
इहिकर जेठ बन्धु जमवन्ता * तेहिके बलकर पाव को अन्ता॥
देव दनुज को जूटै ताही * धरा होइ कर कंबुक[1] जाही ॥
बसै अशंक नर्मदातीरा * अशनिसमान अभेद शरीरा ॥

दो०सचिव सुकण्ठराजकर, रघुवरकर प्रिय दास॥
सोजडमन्दजोयाहिरण, करजीतनकीआश ॥ ५ ॥

अब देखहु यह यूथ अपारा * पीत बर्ण होइ गयउ पहारा ॥
बालारुणमरीचि[2] जस फूटी * निशिचरनिकरतमी चह छूटी॥
चौबिस अर्बुद इनकर यूहा * सहसबुन्दसम कोटि समूहा ॥
शिला शैल जे आगे परहीं * पाँयन मर्दि गर्दसम करहीं ॥
कंचनगिरिकन्दरके[3] बासी * इनकर यूथनाथ अविनाशी ॥
अतिबल बासवकर हितकारी * सखा सुकण्ठकेर सुखकारी ॥
पान करै गंगाकार नीरा * पर्वतशृंगसमान शरीरा ॥
क्षण क्षण सिंहनाद जो होई * गर्जत आवत है कपि सोई ॥

दो०यशतिहुँमण्डलगलितगज,बलकरनाहिनअन्त

१ शंख.२ प्रातःकालके सूर्यकी किरण.३ सुमेरुगिरिकी गुफाके रहनेवाले.

यहकपिराजाकेसरी, सुवर्नजासुहनुमन्त ॥ ६ ॥

उत्तरदिशि देखहु रजधानी * जनुदुकाललगि शलभ[२] उड़ानी॥
मर्कटनिकर बिकल बल टूटे * आवत उदधिकूल जनु छूटे ॥
यहि दल यूथनाथ जो अहई * अतिबलवंत राजसँग रहई ॥
कपिके रूप अनल अबिनाशी * ए द्वौ पारिपात्रके बासी ॥
अतिसुन्दर अरु समर बिपक्षा * महाबली द्वौ गवय गवक्षा ॥
ये द्वौ गर्जत अतिरणधीरा * पीवहिं तुंगभद्रकर नीरा ॥
सत्तरिसहस नागबल जाही * इनमहँ एक कहौं मैं ताही ॥
अपर बली गँधमादन नामा * रणअजेय पुनि सबगुणधामा ॥

दो० बासवविबुधवृन्दमहँ, तेजनमहँ जस भानु ॥
पनस नाम यह बानर, अतिबलनीतिनिधानु॥ ७ ॥

यह जो कुमुदपत्रसम-देहा * जस कैलास शरदकर मेहा ॥
लोचन मधु पिंगल अतिलोने * कामरूप चितवत चहुँ कोने ॥
लंकासौंह लँगूर फिराई * गर्जत प्रलयमेघकी नाईं ॥
सुरपति-साथ युद्धकहँ गयऊ * तबते कामरूप यह भयऊ ॥
मघवा इहिसन कीन्ह मिताई * करै सदा यह देवसहाई ॥
सहसकोटि कपि इहिके संगा * राजत पीत श्वेत बहुरंगा ॥
बचन मृषा मम प्रभु यह नाहीं * अपर बालि जानहु मनमाहीं॥
दुर्दुर शैल सदन इहिकेरा * मन बच कर्म रामकर चेरा ॥

दो० गिरिबर लाँघत आवत, चलत उड़ावत रेणु ॥
तरणितेज[३] तनु रूँधेउ, तारातनय सुषेणु ॥ ८ ॥

यह कपि लसँत[४] मनहुँ गिरिगेरू * दिनमुखछबि जस लहतसुमेरू॥

---

१ पुत्र. २ टीड़ी. ३ सूर्यका तेज. ४ शोभित.

सोइ कपि प्रथम लंकजेहिं जारी * प्रभु केहि लगि आवत इहिबारी
अंजनिगर्भ जन्म जब भयऊ * क्षुधित जननिसन अरतस ठयऊ
तोहिं कह सुपक अरुण फल खाहू * सुनत चितव इत उत चित चाहू
बाल अरुण लखि गगन उडाना * ग्रसेसि तरणि बासव तब जाना॥
मारेउ वज्र चिबुक[1] भइ टेढ़ी * कोपेउ पवन पवन सब बेढ़ी॥
देव बिकल होइ अस्तुति कीन्हा * कुलिश होउ तनु अस बर दीन्हा
विद्या पढ़त भानुके पाहीं * उलटी गति रबिआगे जाहीं ॥
बारिधि लाँघेउ गोपद जैसे * यहि कपीशसन जूझब कैसे ॥

दो०अंबक[2] पीत बाल रबि, बदन तेज अतिराज ॥
पवनते वेग अधिक जनु, अनल नितंबसुभ्राज ॥ ९ ॥

अतसीकुसुम-वर्ण[3] तनुरेखा * पुरुष पुराण धरे नर--वेषा ॥
मत्त--गजेंद्र -शुण्ड--भुजदण्डा * धनुष बाण असि धरे प्रचण्डा॥
उर बिशाल अतिउन्नत कंधर * कम्बु कण्ठ रेखा प्रसन्न बर ॥
मुखछबिकी उपमा कबि जोहै * शशिसरोजसम कहै न सोहै ॥
दशनपाँतिकी कांति कहै को * ललकत मन पटतरहिं लहै को
देखत अधरनकी अरुणाई * बिम्बाफल[4] बन्धूक[5] लजाई ॥
शुकतुण्डहिं नासिका लजावै * थके सुकबि नहिं पटतर आवै ॥
शीश जटाके मुकुट बनाये * भाल बिशाल तिलक अति भाये
दक्षिणदिशि लक्ष्मण बलबीरा * रामबाहुसम अतिरणधीरा ॥

दो०बामे भाग बिभीषण, शिर अभिषेका राज ॥
बीजमंत्र सब जानहिं, अकसर करहिं सुकाज॥१०॥

अब देखहु यह सेन सुहाई * भादोंमेघघटा जनु छाई ॥

---

१ डाढ़ी. २ नेत्र. ३ अलसीके फूलके रंगकी. ४ कुंदुरू. ५ बन्धुजीवा.

कन्या एक ब्रह्म उपजाई * नयन भूरि अरु रूप लुनाई ॥
बालभाव दिनकर बल दीन्हा * ऋतु जानी बासव रति कीन्हा॥
जातक यमल बीर द्वौ आये * देवअंश बानरतनु पाये ॥
किष्किन्धापर इनकर थाना * देव--सरिस मधुवन उद्याना ॥
ऋष्यमूक इनकर बिश्रामा * चातुर्मास बसे जहँ रामा ॥
बाली ज्येष्ठ राम रण मारा * यहिकहँ राजतिलक प्रभु सारा ॥
तारा तासु भई पटरानी * जेहिकर सुत अंगद अतिज्ञानी॥
सहस शंकुकर अर्बुद एका * अर्बुद सहस कि बिन्दु बिबेका॥
सहसबिन्दु गणकन गणि माना * महापद्म तेहिकर परिमाना ॥
ऐसे पद्म अठारह साजा * बिग्रह बढ़ेउ रामके काजा ॥
बीरबेष अरु नयन बिशाला * कम्बुकण्ठ मोतिनकी माला॥

दो०[1]हस्तीसाठिसहस्रबल, सदा धर्मकी सींव[2] ॥
श्वेत छत्र शिर शोभित, यह राजा सुग्रीव ॥ ११ ॥
यहि बिधि सकल दिखाये, सारन कपिदलहयू ॥
गनै न रावण कालबश, अतिशयगर्वसमूह॥१२॥

इति क्षेपक ॥

इहाँ प्रात जागे रघुराई * पूँछा मत सब सचिवँ[3] बुलाई ॥
कहहु बेगि का करिय उपाई * जाम्बवन्त कह पद शिर नाई॥
सुनु सर्बज्ञ सकल--उर--बासी * सर्वरूप सबरहित उदासी ॥
मंत्र कहब निजमतिअनुसारा * दूत पठाइय बालिकुमारा ॥
नीक मंत्र सबके मनमाना * अंगदसन कह कृपानिधाना ॥
"आजु माघ परिवादिन प्राता * अंगद सुनहु मोरि यक बाता" ॥

१ दो. २ मर्यादा. ३ मंत्री.

बालितनय बुधिबलगुणधामा * लंका जाहु तात मम कामा ॥
बहुत बुझाइ तुमाहिं का कहहूँ * परमचतुर मैं जानत अहहू ॥
काज हमार तासु हित होई * रिपुसन करेहु बतकही सोई ॥

सो०प्रभुआज्ञा धरि शीश, चरण बन्दि अंगद कहेउ
सोइ गुणसागर ईश, रामकृपा जापर करहु॥४॥
स्वयं सिद्ध सबकाज, नाथ मोहिं आदर दयेउ
अस बिचारि युवराज, तनु पुलकित हर्षित भयेउ

बन्दि चरण उर धरि प्रभुताई * अंगद चलेउ सबहिं शिर नाई ॥
प्रभुप्रताप उर सहजअशंका * रणबाँकुरा बालिसुत बंका ॥
पुर पैठत रावणकर बेटा * खेलत रहा सो होइगइ भेटा ॥
बाताहिं बात कर्ष बढ़ि आई * युगल[2] अतुलबल पुनि तरुणाई[3] ॥
तेहिं अंगदकहँ लात उठाई * गहि पद पटकेउ भूमि भ्रमाई॥
निशिचरनिकर देखि भट भारी * जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी ॥
एकएकसन मर्म न कहहीं * समुझि तासुबलचुप होइरहहीं ॥
भयउ कोलाहल नगरमँझारी * आवा कपि लंका जोहिं जारी ॥
अब धौं कहा करिहि करतारा * अतिसभीत सब करहिं बिचारा
बिनु पूँछे मगु देहिं बताई * जेहिं बिलोकि सोइ जाहि सुखाई

दो०गयो सभादरबार रिपु, सुमिरि रामपदकंज ॥
सिहठवनि इत उत चितै, धीर बीर बलपुंज॥२२॥

तुरत निशाचर एक पठावा * समाचार रावणहिं सुनावा ॥
सुनत बचन बोलेउ दशशीशा * आनहुँ बोलि कहाँकर कीशा॥
आयसु पाइ दूत बहु धाये * कपिकुंजरहिं बोलि लै आये॥

---

१ बुद्धि, बल और गुणोंके घर. २ दोनो. ३ युवावस्था. ४ राक्षसोंके समूह.

अंगद दीख दशानन बैसा * सहित प्राण कज्जलगिरि जैसा॥
भुजा बिटप शिर शृंगसमाना * रोमावली लता तरु नाना ॥
मुख नासिका नयन अरु काना * गिरिकन्दराखोहअनुमाना ॥
गयउ सभा मन नेकु न मुरा * बालितनय अतिबलबांकुरा ॥
उठे सभासद कपिकहँ देखी * रावण उर भा क्रोध बिशेखी ॥

दो०यथा मत्तगजयूथमहँ, पंचानन[1] चलि जाय ॥
रामप्रताप सँभारि उर, बैठ सबहिं शिर नाय॥२३

कह दशकन्ध कवन तैं बन्दर * मैं रघुबीरदूत दशकन्धर ॥
मम जनकहिं तोहिं रही मिताई * तव हितकारण आयउँ भाई॥
उत्तम कुल पुलस्त्यकर नाती * शिव बिरंचि पूजेहु बहु भाँती
बर पायउ कीन्हेउ सब काजा * जीतेहु लोकपाल सुरराजा ॥
नृप अभिमान मोहबश किम्बा * हरि आनिहु सीता जगदम्बा॥
अब शुभ कहा करहु तुम मोरा * सब अपराध क्षमहिं प्रभु तोरा॥
दशन गहहु तृण कण्ठ कुठारी * पुरजनसंग सहित निज नारी॥
सादर जनकसुता करि आगे * इहिबिधि चलहु सकल भयत्यागे

दो०प्रणतपाल रघुवंशमणि, त्राहि[2] त्राहि अबमोहिं
सुनतहिं आरत बचन प्रभु, अभय करहिंगे तोहिं॥२४

रेकपि पोच बोलु संभारी * मूढ़ न जानसि मोहिं सुरारी ॥
कहु निज नाम जनक[3]कर भाई * केहि नाते मानिये मिताई ॥
अंगद नाम बालिकर बेटा * तोसों कबहूं भइ होइ भेंटा ॥
अंगदबचन सुनत संकुचाना * रहा बालि बानर मैं जाना ॥
अंगद तुहीं बालिकर बालक * उपजेउ बंश अनल[4] कुलघालक

१ सिंह. २ रक्षा करो. ३ पिताका. ४ अग्नि.

गर्भ न गयउ वृथा तुम जाये * निजमुख तापसदूत कहाये ॥
अब कहु कुशल बालि कहँ अहई * बिहँसि बचन अंगद अस कहई
दिन दश गये बालिपहँ जाई * पूँछेहु कुशल सखा उर लाई ॥
रामबिरोध कुशल जस होई * सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई॥
सुनु शठ भेद होइ मन ताके * श्रीरघुबीर हृदय नहिं जाके ॥

दो०हम कुलघालक सत्य तुम, कुलपालक दशशीश
अन्धउ बधिर न कहहिं अस, श्रवण नयन तव बीश॥

शिव--बिरंचि--सुर--मुनिसमुदाई* चाहत जासु चरण--सेवकाई॥
तासु दूत होइ हम कुल बोरा * ऐसी मति उर बिदर न तोरा॥
खल तव बचन कठिन मैं सहऊँ * नीति धर्म सब जानत अहऊँ॥
कह कपि धर्मशीलता तोरी * हमहुँ सुनी कृत परतिय चोरी ॥
देखेउँ नयन दूत- रखवारी * बूड़ि न मरहु धर्मव्रतधारी ॥
नाककानबिन भगिनि निहारी * क्षमा कीन्ह तुम धर्मबिचारी॥
धर्मशीलता तव जग जागी * पावा दर्श हमहुँ बड़भागी ॥

दो०जनि जल्पसि जड जन्तुकपि, शठ बिलोकुममबाहु
लोकपालबलबिपुलशशि, ग्रसनहेतुजिमि राहु २६
पुनि नभ सर मम करनिकर, करकमलनपर बास ॥
शोभित भयो मराल इव, शम्भुसहित कैलास ॥२७॥

तुम्हरे कटकमाहिं सुनु अंगद * मोसन भिरहि कौन योधा बद ॥
तव प्रभु नारिबिरह--बलहीना * अनुज तासुदुखदुखित मलीना
तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ * बन्धु हमार भीरु अति सोऊ
जाम्बवन्त मंत्री अतिबूढ़ा * सो किमि होइ समर आरूढा ॥

१ नदीके तटके वृक्ष. २ डरपोक.

शिल्पकर्म जानत नल नीला * है कपि एक महाबलशीला ॥
आवा प्रथम नगर जेहिं जारा * सुनि हँसि बोलेउ बालिकुमारा
सत्य बचन कह निशिचरनाहा * साँचहु कीश कीन्ह पुरदाहा ॥
रावणनगर अल्प कपि दहई * को अस झूँठ कहै को सुनई ॥
जो अतिसुभट सराहेहु रावण * सो सुग्रीवकेर लघु धावन ॥
चलै बहुत सो बीर न होई * पठवा खबरि लेन हम सोई ॥

दो० अबजानापुरदहेउकपि, बिनुप्रभुआयसुपाइ ॥
गयउनफिरिनिजनाथपहँ,तेहिभयरहेउलुकाइ २८
सत्यकहसिदशकण्ठतैं, मोहिंनसुनिकछुकोह ॥
कोउनहमरेकटकअस,तुमसनलरतजोसोह॥२९॥
प्रीतिविरोधसमानसन, करियनीतिअसआहि ॥
जोमृगपतिबधमेडुकहिं, भलोकहैकोताहि ॥३०॥
यद्यपि लघुता रामकहँ, तोहिं बधे बड दोष ॥
तदपिकठिनदशकण्ठसुनु,क्षत्रिजातिकररोष ३१॥
हँसिबोलेउदशमौलितब, कपिकरबडगुणएक ॥
जोप्रतिपालैतासुहित, करैउपायअनेक ॥ ३२ ॥

धन्य कीश जो निजप्रभुकाजा * जहँ तहँ नाचहिं परिहरि लाजा
नाचि कूदि करि लोग रिझाई * पतिहित करत कर्मनिपुणाई ॥
अंगद स्वामिभक्त तव जाती * प्रभुगुण कस न कहसि यहि भाँती
मैं गुणग्राहक परमसुजाना * तव कटु बचन करौं नहिं काना
कह कपि तव गुणग्राहकताई * सत्य पवनसुत मोहिं सुनाई ॥
बन बिध्वंसि सुत बधि पुरजारा * तदपि न तेहिं कृत कछु अपकारा

१ हरकाला. २ यहां अंगदको मिथ्याभाषणका दोष नहीं ३ क्रोध. ४ सिंह.

सोइ बिचारि तव प्रकृति सुहाई * दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई ॥
देखेउँ आइ जो कछु कपि भाषा * तुम्हरे लाज न रोष न माषा ॥

दो०बक्रउक्तिधनुबचनशर, हृदयदह्योरिपुकीश ॥
प्रतिउत्तरगर्जैसिमनो, काटतभटदशशीश ॥३३॥

जो अस मति पितु खायहु कीशा * कहि असबचन हँसा दशशीशा ॥
पितहिं खाइ खातेउँ अब तोहीं * अबहीं समुझि परा कछु मोहीं ॥
बालिबिमलयशभाजन जानी * हतौं न तोहिं अधम अभिमानी
कहु रावण रावण जग केते * मैं निजश्रवण सुने सुनु ते ते ॥
बलि जीतन यक गयउ पताला * राखा बाँधि शिशुन हयशाला ॥
खेलहिं बालक मारहिं जाई * दया लागि बलि दीन्ह छुड़ाई ॥
एक बहोरि सहसभुज देखा * धाइ धरा जनु जन्तु बिशेखा ॥
कौतुक लागि भवन लै आवा * सो पुलस्त्य मुनि जाइ छुड़ावा ॥

दो०एककहतमोहिंसकुचअति, रहाबालिकीकाँख
तिनमहँरावणकवनतैं, सत्यकहहुतजिमाख ॥३४॥

सुनु शठ सोइ रावण बलशीला * हरगिरि जान जासु भुजलीला ॥
जानु उमापति जासु शुराई * पूज्यो जेहिं शिरसुमन चढ़ाई ॥
शिरसरोज निजकरन्ह उतारी * पूजे अमितबार त्रिपुरारी ॥
भुजबिक्रम जानहिं दिग्पाला * शठ अजहूँ जिनके उर शाला ॥
जानहिं दिग्गज उरकठिनाई * जब जब भिरउँ जाइ बरि आई
जिनके दशन कराल न फूटे * उर लागत मूलक इव टूटे ॥
जासु चलत डोलत इमि धरणी * चढ़त मत्तगज जिमि लघुतरणी

१ स्वभाव. २ बालिके निर्मल यशका पात्र. ३ घुड़सालमें. ४ दांत.

सोइ रावण जगबिदित प्रतापी * सुने न श्रवण अलीकप्रलापी ॥[1]

दो०तेहि रावणकहँ लघु कहसि, नरकर करासि बखान॥
रे कपि बर्बर[2] खर्ब[3] खल, अब जाना तव ज्ञान ॥ ३५॥

सुनि अंगद सकोप कह बानी * बोल सँभारि अधम अभिमानी॥
सहसबाहुभुज गहन अपारा * दहन अनलसम जासु कुठारा॥
जासु परशु-सागर-खरधारा * बूड़े नृप अगणित बहु बारा ॥
तासु गर्ब जेहिं देखत भागा * सो नर किमि दशकण्ठ अभागा॥
राम मनुज कस रे शठ बंगा[4] * धन्वी काम नदी पुनि गंगा ॥
पशु सुरधेनु कल्पतरु रूखा * अन्न दान पुनि रस पीयूखा ॥
बैनतेय[5] खग अहि सहसानन * चिन्तामणि की उपल दशानन
सुनु मतिमन्द लोक बैकुण्ठा * लाभ कि रघुपतिभक्ति अकुण्ठा

दो०सेनसहित तव नाम मथि, बन उजारि पुर जारि
कस रे शठ हनुमान कपि, गयउ जो तव सुत मारि३६

सुनु रावण परिहारि चतुराई * भजसि न कृपासिन्धु रघुराई ॥
जो खल भयसि रामकर द्रोही * ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही॥
मूढ़ मृषा जनि मारसि गाला * रामबैर होइहि अस हाला ॥
तव शिरनिकर कपिनके आगे * परिहैं धरणि रामशर लागे ॥
ते तव शिर कन्दुक इव नाना * खेलहिं भालु कीश चौगाना ॥
जबहिं समरकोपहिं रघुनायक * छुटिहहिंअतिकरालबहुसायक॥
तबकि चलिहि अस गाल तुम्हारा* अस बिचारि भजु राम उदारा॥
सुनत बचन रावणउर जरा * बरत अनलमहँ जनु घृत परा॥

दो०कुम्भकर्णसम बन्धुमम, सुत प्रसिद्ध शक्रारि

१ असत्य बोलनेवाले. २ बेमर्याद. ३ तुच्छ. ४ सर्बविरोधी. ५ गरुड़.

मोरपराक्रम सुनेसि नहिं, जितेउँ चराचरझारि॥३७॥

शठ शाखामृग जोरि सहाई * बाँधा सिन्धु इहै प्रभुताई ॥
लाँघहिं खग अनेक बारीशा * शूर न होहिं सुनहु जड कीशा॥
मम भुजसागर बलजलपूरा * जहँ बूड़े सुर नर बर शूरा ॥
बीस पयोधि अगाध अपारा * को अस बीर जो पावहि पारा॥
दिगपालन मैं नीरु भरावा * भूपसुयश खल मोहिं सुनावा ॥
जो पै समरसुभट तव नाथा * पुनि पुनि कहसि जासु गुणगाथा॥
तौ बसीठ पठवा केहि काजा * रिपुसन प्रीति करत नहिं लाजा
हरगिरिमथन निरखि मम बाहू * पुनि शठ कपि निजस्वामि सराहू

दो०शूरकवनरावणसरिस, निजकरकाटेशीश ॥
हुनेउँअनलमहँबारबहु, हर्षितसाखिगिरीश ॥३८॥

जरत बिलोकेउँ जबहिं कपाला * विधिके लिखे अंक निजभाला॥
नरके कर आपन बध बाँची * हँसेउँ जानि विधिगिरा असाँची
सो मन समुझि त्रास नहिं मोरे * लिखा बिरंचि जरठ मतिभोरे ॥
आन बीर को शठ मम आगे * पुनि पुनि कहसि लाज परित्यागे
कह अंगद सलज्ज जगमाहीं * रावण तोहिं समान कोउ नाहीं॥
लाजवन्त तव सहजसुभाऊ * निजगुण निजमुख कहसि न काऊ
शिर अरु शैलकथा चित रही * ताते बार बीस तैं कही ॥
सो भुजबल राखेउ उर घाली * जितेउ न सहसबाहु बलि बाली
सुनु मतिमन्द देह अब पूरा * काटे शीस न होइय शूरा ॥
बाजीगरकहँ कहिय न बीरा * काटि निजकर सकल शरीरा ॥

दो०जरहिं, पतंग बिमोहबश, भार बहहिं खरवृन्द॥

१ वानर. २ समुद्र. ३ जल. ४ हवन किया. ५ पांखी. ६ गधोंके झुंड.

ते नहिं शूर कहावहीं, समुझि देखु मतिमन्द ३९

अब जनि बतबढ़ाव खल करही * सुनु मम बचन मान परिहरही॥
दशमुख मैं न बसीठी आयउँ * अस बिचारि रघुबीर पठायउ ॥
बार बार इमि कहेउ कृपाला * नहिं गजारियेश बधे शृगाला ॥
मनमहँ समुझि बचन प्रभुकेरे * सहेउँ कठोर बचन शठ तेरे ॥
नाहित करि मुखभंजन तोरा * लै जातेउँ सीतहिं बरजोरा ॥
जानेउँ तव बल अधम सुरारी * सूने हरि आनी परनारी ॥
तैं निशिचरपति गर्ब बहूता * मैं रघुपतिसेवककर दूता ॥
जो न रामअपमानहिं डरऊँ * तव देखत अस कौतुक करऊँ ॥

दो०तोहिं पटकि महि सेन हति, चौपट करतेउँ गाउँ
मन्दोदरीसमेत शठ, जनकसुतहिं लै जाउँ ॥ ४० ॥

जो अस करउँ न तदपि बड़ाई * मुये बधे कछु नहिं मनुसाई ॥
कौल[१]कामबश[२] कृपण बिमूढा * अतिदरिद्र अयशी अतिबूढा ॥
सदा रोगबश सन्तत क्रोधी * रामबिमुख श्रुतिसन्तबिरोधी ॥
तनुपोषक निन्दक अघखानी * अनजीवतसम चौदह प्रानी ॥
अस बिचारि खल बधौं न तोहीं * अब जनि रिस उपजावसि मोहीं
पुनि सकोप कह निशिचरनाथा * अधर दशन गहि मींजत हाथा॥
रेकपि पोच मरण अब चहसी * छोटेवदन बात बड़ि कहसी ॥
कटु जल्पसि जड़ कपि बल जाके * बुधिबल तेज प्रताप न ताके॥

दो०अगुण अमान बिचारि तेहिं, दीन्ह पिता बनबास
सो दुख अरु युवतीबिरह, पुनि निशि दिनमम त्रास ॥
जिनके बलकर गर्ब तोहिं, ऐसे मनुज अनेक ॥

. १ सिंहको यश. २ पृथ्वीपर.मयके और कामके वशीभूत.

खाहिं निशाचर दिवस निशि, मूढसमुझ तजि टेक ॥

जब तेहिं कीन्ह रामकी निन्दा * क्रोधवन्त तब भयउ कपिन्दा ॥
हरिहरनिंदा सुनहिं जे काना * होय पाप गोघातसमाना ॥
कटकटाइ कपिकुंजर भारी * दोउ भुजदण्डतमकि महि मारी
डोलत धरणि सभासद खसे * चले भागि भयमारुतग्रसे ॥
गिरत दशानन उठा सँभारी * भूतल परे मुकुट षट्चारी ॥
कछु निजकर लै शिरन सँभारे * कछु अंगद प्रभुपास पँवारे ॥
आवत मुकुटदेखि कपि भागे * दिनहीं लूक परन बिधि लागे ॥
के रावण करि कोप चलाये * कुलिश चारि आवत अतिधाये
कह प्रभु हँसि जनि हृदय डराहू * लूक न अशनि केतु नहिं राहू ॥
ए किरीट दशकन्धरकेरे * आवत बालितनयके प्रेरे ॥

दो०कूदि गहे कर पवनसुत, आनि धरे प्रभुपाश ॥
कौतुक देखहिं भालु कपि, दिनकरसरिस प्रकाश ॥

उहाँ कहत दशकन्ध रिसाई * धरि मारहु कपि भागि न जाई ॥
इहिबिधि बेगि सुभट सब धावहु * खाहु भालुकपि जहँ तहँ पावहु ॥
महि अकीश करि फेरि दोहाई * जिअत धरहु तपसी दोउ भाई ॥
पुनि सकोप बोलेउ युवराजा * गाल बजावत तोहिं न लाजा ॥
मरु गल काटि निलज कुलघाती * बल बिलोकि बिदरत नहिं छाती
रे तियचोर कुमारगगामी * खल मलराशि मन्दमति कामी ॥
संनिपात जल्पसि दुर्बादा * भयसि कालवश शठ मनुजादा ॥
याको फल पावहुगे आगे * बानर--भालुचपेटन लागे ॥
राम मनुज बोलत अस बानी * गिरहिं न तव रसना अभिमानी

१ दश. २ बज. ३ पृथ्वी. ४ हे राजस. ५ जीभ.

गिरिहै रसना संशय नाहीं * शिरनसमेत समरमहिमाहीं ॥

सो०-सोनरक्योंदशकन्ध, वालिवधेउजेहिंएकशर॥
बीसहुलोचनअन्ध, धिकतवजन्मकुजातिजड॥६॥
तवशोणितकीप्यास, तृषितराम-सायक निकर[1]॥
तजेउँतोहिंतेहिआश, कटुजलपसिनिशिचरअधम

मैं.तव दशन[2] तोरिबे लायक * आयसु पै न दीन्ह रघुनायक॥
अस रिसि होत दशौ मुख तोरों * लंका गहि समुद्रमहँ बोरों ॥
गूलरफलसमान तव लङ्का * वसहिं मध्य जनु जन्तु अशंका॥
मैं बानर फल खात न बारा * आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥
कुक्ति सुनत रावण मुसुकाई * मूढ सिखेसि कहँ अधिक झुँठाई॥
वालिकबहुँ अस गाल न मारा * मिलितपसिन तैं भयसि लबारा
साँचेहु मैं लबार भुजबीहा * जो न उपारों तव दश जीहा ॥
रामप्रताप सुमिरि कपि कोपा * सभामाँझ प्रण करि पद रोपा ॥
जो मम चरण सकहि शठ टारी * फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥
सुनहु सुभट सब कह दशशीशा * पद गहि धरणि पछारहु कीशा ॥
इन्द्रजीत-आदिक बलवाना * हर्षि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥
झपटहिं करि बल बिपुल उपाई * पद न टरै बैठहिं शिर नाई ॥
पुनि उठि झपटहिं सुरआराती[3] * टरै न कीशचरण यहि भाँती ॥
पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी * मोहबिटप नहिं सकहिं उपारी ॥

दो०-भूमि न छाँड़ैं कपिचरण, देखत रिपु मद भाग ॥
कोटिबिघ्न जिमि सन्तकहँ, तदपि नीति नहिं त्याग ॥

कपिबल देखि सकल हिय हारे * उठा आप कपिके परचारे ॥

१ रामचन्द्रजीके बाणोंका समूह. २ दांत. ३ देवशत्रु.

गहत चरण कह बालिकुमारा * मम पद गहे न तोर उबारा ॥
गहसि न रामचरण शठ जाई * सुनत फिरा मन अतिसकुचाई
भयउ तेजहत श्री सब गई * मध्य दिवस जिमि शशि सोहई
सिंहासन बैठा शिर नाई * मानहुँ सम्पति सकल गँवाई ॥
जगदाधार प्राणपति रामा * तासु बिमुख किमि लहि बिश्रामा
उमा रामकर भ्रकुटिबिलासा * होइ बिश्व पुनि पावै नाशा ॥
तृणते कुलिश कुलिशतृण करहीं * तासु दूतपद कहु किमि टरहीं॥
पुनि कपि कहीनीतिबिधिनाना * मानत नाहिं काल नियराना॥
रिपुमद मथि प्रभुसुयश सुनाये * अस कहि चले बालिनृपजाये॥
अबहीं मुख का करौं बड़ाई * हति हौं तोहिं खेलाई खेलाई ॥
प्रथमहिं तासु तनय कपि मारा * सो सुनि रावण भयो दुखारा ॥
यातुधान अंगदबल देखी * भय व्याकुल अति हृदय बिशेखी

दो०रिपुबल धर्षि हर्षि हिय, बालितनय बलपुंज ॥
सजल नयन तन पुलकि मन, गहे रामपद[१]कंज ॥४५॥
साँझ जानि दशकण्ठ तब, भवन गयो बिलखाइ ॥
मन्दोदरी अनेक बिधि, बहुरि कहा समुझाइ ॥ ४६ ॥

कान्त समुझि मनतजहुकुमतिही * सोह न समर तुमहिं रघुपतिही ॥
रामअनुज धनुरेख खँचाई * सो नहिं लाँघहु अस मनुसाई ॥
पिय तेहिते जीतब संग्रामा * जाके दूतनके अस कामा ॥
कौतुक सिंधु[२] लाँघि तव लंका * आयउ कपिकेहरी अशंका ॥
रखवारे हति बिपिन उजारा * देखत तुमहिं अक्ष जिन्ह मारा॥
जारि नगर जेहिं कीन्हेसि क्षारा * कहाँ रहा बल गर्व तुम्हारा ॥

---

१ रामचंद्रजीके चरणकमल. २ समुद्रको.

अब पति मृषा गाल जनि मारहु * मोर कहा कछु हृदय बिचारहु ॥
पतिरघुपतिहिं मनुजजनिजानहु * अगजगनाथ अतुलबलमानहु ॥
बाणप्रताप जान मारीचा * तासु कहा नहिं मानेहुँ नीचा ॥
जनकसभा अगणित महिपाला * रहेउ तहाँ तुम गर्व बिशाला ॥
भंजि धनुष जानकी बिबाही * तब संग्राम जितेहु नहिं ताही॥
सुरपतिसुत जाना बल थोरा * राखा जियत आँखि इक फोरा॥
सूर्पणखाकी गति तुम देखी * तदपि हृदय नहिं लाज बिशेखी॥

दो०बधि बिराधखरदूषणहिं, लीला हतेउ कबन्ध ॥
बालि एकशर मारेउ, तेहि नर कह दशकन्ध ॥४७॥

जेहिं जलनाथ[१] बँधायो हेला * उतरेउ कपिदलसहित सुबेला॥
कारुणीक दिनेकरकुल-केतू[२] * दूत पठायउ तव हितहेतू ॥
सभामाँझ जेहिं तव बल मथा * करिबरूथमहँ[३] मृगपति[४] यथा ॥
अंगद हनुमत अनुचर जाके * रणबाँकुरे बीर अतिबाँके ॥
तेहिकहँ पिय पुनि पुनि नर कहहू * मृषा मान ममता मद गहहू ॥
अहह कान्त कृत रामबिरोधा * कालबिबश मन होइ न बोधा॥
कालदण्ड गहि काहु न मारा * हरै धर्म बल बुद्धि बिचारा ॥
निकट काल जेहि आवत साईं * तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहिं नाईं ॥

दो०दुइसुत मारेउ दहेउ पुर, अजहुँ पीय सिय देहु॥
कृपासिंधु रघुबीर भजि, नाथ बिमल यश लेहु ॥४८॥

नारिबचनसुनि बिशिखसमाना * सभा गयउ उठि होत बिहाना॥
बैठा जाइ सिंहासन फूली * अति अभिमान त्रास सब भूली
उहाँ राम अंगदहिं बुलावा * आइ चरणपंकज शिर नावा ॥

---

१ समुद्र. २ सूर्यबंशके ध्वजरूप. ३ हाथियोंके समूहमें. ४ सिंह.

अतिआदर समीप बैठारी * बोले बिहँसि कृपालु खरारी ॥
बालितनय अतिकौतुक मोहीं * तात सत्य कहु पूँछौं तोहीं ॥
रावण यातुधान-कुल-टीका * भुजबल अतुल जासु जगलीका
तासु मुकुट तुम चारि चलाये * कहहु तात कवनी बिधि पाये ॥
कहा बालिसुत सुनहु खरारी * मुकुट न होइँ भूपगुण चारी ॥
साम दाम अरु दण्ड बिभेदा * नृपउर बसहिं नाथ कह बेदा ॥
नीति-धर्मके चरण सुहाये * अस जिय जानि नाथपहँ आये ॥

दो०ः धर्महीन प्रभुपदबिमुख कालबिबश दशशीश
आये गुण तजि रावणहिं, सुनहु कोशलाधीश४९ ॥
परमचतुरता श्रवण सुनि, बिहँसे राम उदार * ॥
समाचार तब सब कहे गढ़के बालिकुमार ॥ ५० ॥

रिपुके समाचार जब पाये * राम सचिव तब निकट बुलाये ॥
लंका बंका चारि दुआरा * केहिबिधि लागिय कहहु बिचारा
तब कपीश ऋक्षेश बिभीषण * सुमिरि हृदय दिनकरकुल भूषण ॥
करि बिचार तिन मन्त्र दृढावा * चारि अनी कपिकटक बनावा ॥
यथायोग्य सेनापति कीन्हे * [illegible] बोलि तिन्ह लीन्हे ॥
प्रभुप्रताप सब कहि समुझाये * [illegible]
हर्षित रामचरण शिर नाये * [illegible]
गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीशा * [illegible]
जारत परमदुर्ग गढ लंका * [illegible]
घटाटोप करि चहुँ दिशि घेरी * [illegible]

दो०ः जयति राम भ्राता सहित [illegible]
गर्जे केहरिनाद कपि, भालु [illegible]

लंका भयउ कोलाहल भारी * सुनेउ दशानन अतिहि हँकारी॥
देखहु बनरन्हकेरि ढिठाई * बिहँसि निशाचरसेन बुलाई॥
आये कीश कालके प्रेरे * क्षुधावन्त रजनीचर मेरे॥
अस कहि अट्टहास शठ कीन्हा * गृह बैठे अहार बिधि दीन्हा॥
सुभट सकल चारिहु दिशि जाहू * धरि धरि भालु कीश सबखाहू॥
उमा रावणहिं अस अभिमाना * जिमि टिटीभगण सूत उताना॥
चले निशाचर आयसु माँगी * गहि कर भिंदिपाल बर साँगी॥
तोमर मुद्गर परिघ प्रचण्डा * शूल कृपाण परशु गिरिखण्डा॥
जिमि अरुणोपलनिकर[1] निहारी * धाये खग शठ मांसअहारी॥
चोंचभंगदुख तिनहिं न सूझा * तिमि धाये मनुजादे[2] अबूझा॥

दो०नानायुध शर चाप धरि, यातुधान बलबीर॥
कोटकँगूरन चढ़िगये, कोटि कोटि रणधीर॥ ५२॥

कोटकँगूरन सोहहिं कैसे * मेरुशृङ्गपर जनु घन जैसे॥
बाजहिं ढोल निशान जुझाऊ * सुनि सुनि सुभटनके मन चाऊ॥
बाजहिं भेरि नफीरि अपारा * सुनि कादरउर होहिं दरारा॥
देखि न जाइँ कपिनके ठट्टा * अतिबिशालतनु भालु सुभट्टा॥
धावहिं गनहिं न औघट घाटा * पर्वत फोरि कराहिं गहि बाटा॥
कटकटाइ कोटिन भट गर्जहिं * दशनन ओंठ काटि अतितर्जहिं॥
उत रावण इत रामदोहाई * जयति जयति कहि परी लराई॥
निशिचर शिखरसमूहढहावहिं * कूदिधरहिं कपि फेरि चलावहिं॥

छं०धरि कुधर खण्ड प्रचण्ड मर्कट भालु गढ़पर डारहीं॥
झपटैं चरण गहि पटमकिहि भजिचलत बहुरि प्रचारहीं॥

१ लाल पत्थरोंका समूह. २ राक्षस.

अति तरल[1] तरुण[2] प्रताप तर्जहिं तमकि गढ़पर चढ़िगये
कपि भालु चढ़ि मंदिरन जहँ तहँ रामयश गावत भये
दो०-एक एक गहि रजनिचर,पुनि कपि चले पराइ
ऊपर आपुन तर असुर, गिरहिं धरणिपर आइ ५३॥

रामप्रताप प्रबल कपियूथा * मर्दहिं निशिचरनिकरबरूथा ॥
चढ़े दुर्ग पुनि जहँ तहँ बानर * जय रघुबीर प्रतापदिवाकर ॥
चले तमीचरनिकर पराई * प्रबल पवन जिमि घनसमुदाई॥
हाहाकार भयो पुर भारी * रोवहिं आरत बालक नारी ॥
सब मिलि देहिं रावणहिं गारी * राज्य करत जेहिं मृत्यु हँकारी॥
निजदल बिचल सुना जब काना* फिरि सुभट लंकेश रिसाना ॥
जो रणविमुख फिरा मैं जाना * तेहि मारिहौं कराल कृपाना[3] ॥
सर्बस खाइ भोग करि नाना * समरभूमि भा दुर्लभ प्राना ॥
उग्र वचन सुनि सकल डराने * फिरे क्रोध करि सुभट लजाने॥
सन्मुखमरण बीरकी शोभा * तब तिन तजा प्रजाकर लोभा॥

दो०बहुआयुधधरिसुभटसब,भिरहिंप्रचारिप्रचारि॥
कीन्हेव्याकुलभालुकपि,परिघप्रचण्डनिमारि॥५४॥

भयआतुर कपि भागनलागे * यद्यपि उमा जीतिहैं आगे ॥
कोउ कह कहँ अंगद हनुमन्ता * कहँ नल नील द्विबिद बलवन्ता
निजदल बिचल सुना हनुमाना* पश्चिमद्वार रहा बलवाना ॥
मेघनाद तहँ करै लराई * टूट न द्वार परमकठिनाई ॥
पवनतनयमन भा अतिक्रोधा * गर्जेउ प्रलयकालसम योधा ॥
कूदि लंकगढ़ऊपर आवा * गहि गिरि मेघनादपर धावा ॥

१ बहुत चंचल. २ नवीन. ३ तलवारसे.

भंजेउ रथ सारथी निपाता * तासु हृदयमहँ मारेउ लाता ॥
दूसर सूत[1] विकल तेहिं जाना * स्यन्दन[2] घालि तुरत घर आना

दो०अंगदसुनेउकिपवनसुत, गढपरगयउअकेल ॥
समरबाँकुराबालिसुत,तकिचलेउकरिखेल ॥५५॥

युद्धविरुद्ध क्रुद्ध दोउ बन्दर * रामप्रताप सुमिरि उरअन्तर ॥
रावणभवन चढ़े दोउ धाई * करहिं कोशलाधीशदुहाई ॥
कलशसहित सब भवन ढहावहिं * देखि निशाचर अतिभय पावहिं ॥
नारिवृन्द[3] अरि पीटहिं छाती * अब दोउ कपि आये उतपाती॥
कपिलीला करि सबहिं डरावहिं * रामचन्द्रकर सुयश सुनावहिं ॥
पुनि कर गहि कँचनके[4] खम्भा * करनलगे उतपातअरम्भा ॥
कूदि परे रिपु-कटकमँझारी[5] * लागे मर्दन भुजबल भारी ॥
काहू लात चपेटन केहू * भजेहू न रामहिं सो फल लेहू

दो०एकएकसनमर्दिकरि, तोरिचलावहिंमुण्ड ॥
रावणआगेपरहिंते, जनुफूटहिंदधिकुण्ड ॥ ५६ ॥

महा महा मुखिया जे पावहिं * ते पद गहि प्रभुपास चलावहिं॥
कहहिं विभीषण तिनके नामा * देहिं राम तिनकहँ निजधामा ॥
खल मनुजाद जे आमिषभोगी * पावहिं गति जो याँचत योगी॥
उमा राम मृदुचित करुणाकर * वैरभाव मोहिं सुमिरत निशिचर
देहिं परमगति अस जिय जानी * को कृपालु अस अहै भवानी ॥
जे अस प्रभु नभजहिं भ्रम त्यागी * ते मतिमन्द सो परमअभागी ॥
अंगद अरु हनुमन्त प्रवेशा * कीन्ह दुर्ग अस कह अवधेशा॥
लंकामहँ कपि सोहहिं कैसे * मथहिं सिन्धु दुइ मन्दर जैसे॥

---

१ सारथी. २ रथमें. ३ स्त्रियोंके समूह. ४ सुवर्णके. ५ शत्रुकी फौजमें.

दो०भुजबलरिपुदलदलिमलेउ, देखिदिवसकरअंत
कूदेयुगलप्रयासबिनु, आयेजहँभगवन्त ॥ ५७ ॥

प्रभुपदकमल शीश तिन नाये * देखि सुभट रघुपतिमन भाये ॥
राम कृपा करि युगल निहारे * भये बिगतश्रम परमसुखारे ॥
गये जानि अंगद हनुमाना * फिरे भालु मर्कट भट नाना ॥
यातुधान प्रदोषबल पाई * धाये करि दशशीशदुहाई ॥
निशिचरअनी देखि कपि फिरे * कटकटाइ जहँ तहँ भट भिरे ॥
दोउ दल भिरहिं प्रचारि प्रचारी * लरहिं सुभट नाहिं मानहिं हारी ॥
बीर तमीचर सब अतिकारे * नानाबरण बलीमुख भारे ॥
सबल युगलदल सम अतियोधा * बिबिधप्रकारलराहिंकरिक्रोधा ॥
प्रावृट शरद पयोदे घनेरे * लरत मनहुँ मारुतकेप्रेरे ॥
अनिप अकंपन अरु अतिकाया * बिचरत सेन करी तिन माया ॥
भयउ निमिषमहँ अति अँधियारा * काहु न सूझै अपन परारा ॥
मारु खाहु सब करहिं पुकारा * वृष्टि होइ रुधिरोपलक्षारा ॥

दो०देखि निबिडतमदशहु दिशि, कपिदलभयउखँभार
एकहिं एक न देखहीं, जहँ तहँ करहिं पुकार ॥ ५८ ॥

सकल मर्म रघुनायक जाना * लिये बोलि अंगद हनुमाना ॥
समाचार सब कहि समुझाये * सुनत कोपि कपिकुंजर धाये ॥
पुनि कृपालु हँसि चाप चढावा * पावकसायक सपदि चलावा ॥
भयउ प्रकाश कतहुँ तम नाहीं * ज्ञानउदय जिमि संशय नाहीं ॥
भालु बलीमुख पाइ प्रकाशा * धाये कोपि बिगतश्रमत्राशा ॥
हनूमान अंगद रण गाजे * हाँक सुनत रजनीचर भाजे ॥

१ वर्षा. २ मेघ. ३ रक्त, पत्थर, व धूलकी. ४ बिकल. ५ अग्नि बाण.

भागत भट पटकहिं गहि धरणी * करहिं भालु कपि अद्भुतकरणी
गहि पद डारहिं सागरमाहीं * मकर उरग झष धरि धरि खाहीं

दो०कछु घायल कछु रण परे, कछु गढ चले पराइ
गर्जे मर्कट भालु भट, रिपुदलबलबिचलाइ ॥ ५९॥

निशा जानि कपि चारिउ अनी * आये सब जहँ कोशलधनी ॥
राम कृपा करि चितवा जबहीं * भये बिगतश्रम बानर तबहीं ॥
उहाँ दशानन सचिव हँकारे * सबसन कहेसि सुभट जे मारे ॥
आधा कटक कपिन्ह संहारा * कहहु बेगि का करिय बिचारा॥
माल्यवन्त यक जरठ[1] निशाचर * रावण-मातपिता मंत्रीबर ॥
बोला बचन नीति अतिपावन * तात सुनहु कछु मोर सिखावन॥
जबते तुम सीता हरि आनी * अशकुन होहिं न जात बखानी ॥
बेद पुराण जासु यश गावा * तासु बिमुख सुख काहु न पावा॥

दो०हिरण्याक्ष भ्रातासहित, मधु कैटभ बलवान ॥
जेहिं मारेउ सोइ अवतरेउ, कृपासिन्धु भगवान ६०॥
कालरूप खलबलदहन, गुणागार[2] घनबोध[3] ॥
जेहिं सेवहिं शिव कमलभव, तिहिंसन कौन बिरोध

परिहरि वैर देहु बैदेही * भजहु कृपानिधि परमसनेही॥
ताके बचन बाणसम लागे * करिया मुख करि जाहु अभागे
बूढ भयेसि नतु मरतेउँ तोहीं * अब जनि बदन दिखावसि मोहीं
तेहिं अपने मन अस अनुमाना * बध्यो चहत यहि कृपानिधाना॥
सो उठि गयउ कहत दुर्बादा * तब सकोप बोलेउ घननादा ॥
कौतुक प्रात देखियहु मोरा * करिहौं बहुत कहत हौं थोरा ॥

---

१ वृद्ध. २ गुणोंका घर. ३ ब्रह्मा.

सुनि सुतबचन भरोसा आवा * प्रीतिसमेत निकट बैठावा ॥
करत बिचार भयउ भिनुसारा * लगे भालु कपि चारिहु द्वारा ॥
कोपि कपिन दुर्गम गढ़ घेरा * नगर कोलाहल भयउ घनेरा ॥
बिबिध अस्त्र गहि निशिचर धाये * गढ़ते पर्वत शिखर ढहाये ॥
छंद०ढायेमहीधर शिखर कोटिन्हबिबिध बिधि गोलाचले
घहरात जिमि पविपात[1] गर्जत प्रलयके जनु बादले ॥
मर्कट बिकट भट जुटत कटत न लरत तनु जर्जर भये ॥
गहि शैलतेगढ़परचलावहिं जहँ सोतहँनिशिचरहये ॥ ३॥
दो०मेघनादसुनिश्रवणअस, गढपुनिछेंकाआइ ॥
उतरिदुर्गतेबीरबर[2], सन्मुखचलावजाइ ॥ ६२ ॥
कहँ कोशलाधीश दोउ भ्राता * धन्वी सकललोकबिख्याता ॥
कहँ नलनीलद्विबिद सुग्रीवा * कहँ हनुमत अंगद बलसींवा ॥
कहाँ बिभीषण भ्राताद्रोही * आजु शठहि हठि मारउँ ओही॥
कस कहि कठिन बाण संधाने* अतिशय कोपि श्रवणलगि[3]ताने॥
शरसमूह सो छाँडन लागा * जनु सपक्ष धावैं बहु नागा[4] ॥
जहँ तहँ परत देखि अहि[5] बानर* सन्मुखहोइनसकततेहिं अवसर॥
भागे भयव्याकुल कपि ऋच्छा* बिसरी सबहिं युद्धकी इच्छा ॥
सो कपि भालु न रणमें देखा * कीन्हेसि जेहिं न प्राण अवशेखा॥
दो०मारेसिदशदशबिशिखउर,परेभूमिसबबीर ॥
सिंहनादकरिगर्जतब, मेघनादरणधीर ॥ ६३ ॥
देखि पवनसुत कटक बिहाला * क्रोधवन्त धावा जनु काला ॥
महामहीधर[6] तमकि उपारा * अतिरिस मेघनादपर डारा ॥

१ वज्रपात. २ श्रेष्ठ. ३ कर्णपर्यंत. ४ सर्प. ५ बाण. ६ पर्वत.

आवत देखि गयउ नभ सोई * रथ सारथी तुरंग सब खोई ॥
बार बार प्रचार हनुमाना * निकट न आव मरम सो जाना
रामसमीप गयो घननादा * नानाभांति कहत दुर्बादा ॥
अस्त्र शस्त्र बहु आयुध डारे * कौतुकही प्रभु काटि निवारे ॥
देखि प्रभाव मूढ़ खिसियाना * करै लाग माया बिधि नाना ॥
जिमि कोउ करै गरुड़ सन खेला * डरपावहिं अहिस्वल्पसपेला ॥

दो०जासुप्रबलमायाबिबश, शिवबिरंचिबडछोट ॥
ताहिदिखावैरजनिचर, निजमायामतिखोट ॥६४॥

नभ चढि बर्षै विपुल अँगारा * मेहिते प्रगट होइ जलधारा ॥
नानाभांति पिशाच पिशाची * मारु काटु धुनि बोलहिं नाची
कीन्हेसि वृष्टि रुधिर कचे हाडा * बर्षै कबहुँ उपलै बहु छाँड़ा ॥
बर्षि धूरि कीन्हेसि अँधियारा * सूझ न आपन हाथ पसारा ॥
अकुलाने कपि माया देखे * सबकर मरण बना इहि लेखे ॥
कौतुक देखि राम मुसुकाने * भये सभीत सकल कपि जाने ॥
एकहि बाण काटि सबमाया * जिमि दिनकर हर तिमिरैनिकाया
कृपादृष्टि कपि भालु बिलोके * भये प्रबल रण रहहिं न रोके ॥

दो०आयसु माँगि रामपहँ, अंगदादि कपि साथ ॥
लक्ष्मण चले सकोप तब, बाण शरासन हाथ ॥६५॥

जलजनयन उरबाहु विशाला * हिमगिरिबरणकछुकइकलाला ॥
उहाँ दशानन सुभट पठाये * नाना अस्त्र शस्त्र गहि धाये ॥
भूधर बिटपायुध धरि भारी * धाये कपि जय राम पुकारी ॥
भिरे सकल जोरीसन जोरी * इत उत जयइच्छा नहिं थोरी ॥

१पृथ्वीसे. २ बाल. ३ पत्थर. ४ अंधकारके समूह.

मुठिकन लातन दांतन काटहिं * कपिगिरिशिलामारिपुनिडाटहिं
मारु मारु धरु धरु धरु मारू * शीश तोरि गहि भुजा उपारू॥
अस धुनि पूरि रही नवखण्डा * धावहिं जहँ तहँ रुण्ड प्रचण्डा
देखहिं कौतुक नभ सुरवृन्दा * कबहुँक बिस्मय कबहुँ अनन्दा

दो०जमेउ गाढ भरि भरि रुधिर, ऊपर धूर उडाइ॥
जिमि अङ्गारन राशिपर, मृतकक्षार रहि छाइ६६॥

घायल बीर बिराजहिं कैसे * कुसुमित किंशुकके तरु जैसे॥
लक्ष्मण मेघनाद दोउ योधा *भिरहिं परस्पर करि अतिक्रोधा
एकहिं एक सकै नहिं जीती * निशिचर छल बल करै अनीती॥
क्रोधवन्त तब भयउ अनन्ता * भंजेउ रथ सारथी तुरन्ता॥
नानाविधि प्रहार करि शेषा * राक्षस भयउ प्राण अवशेषा॥
रावणसुत निजमन अनुमाना * संकट भये हरिहिं मम प्राना॥
बीरघातिनी छाँडेसि साँगी * तेजपुंज लक्ष्मणउर लागी॥
मूर्छा भई शक्तिके लागे *तब चलि गयउ निकट भय त्यागे

दो०मेघनादसम कोटिशत, योधा रहे उठाय॥
जगदाधार अनन्त सो, उठहिं न चला खिसाय॥६७॥

सुनु गिरिजा क्रोधानलै[१] जासु * जारै भुवन चारिदश आसु[२]॥
सक संग्राम जीति को ताही * सेवहिं सुर नर अग जग जाही॥
यह कौतुक जानहिं जन सोई * जेहिपर कृपा रामकी होई॥
सन्ध्या भई फिरीं दोउ अनी[३] * लगे संभारन निज निज सेनी॥
व्यापक ब्रह्म अजित भुवनेश्वर * लक्ष्मणकहँ पूछाँ करुणाकर॥
तौलगि लै आये हनुमाना * अनुज देखि प्रभु अतिदुखमाना॥

---

१ रोषाग्नि. २ जल्दी. ३ फौज.

जाम्बवन्त कह बैद्य सुखेना * लंका रह पठइय कोउ लेना ॥
धरि लघुरूप गये हनुमन्ता * आनेउ भवनसमेत तुरन्ता ॥

दो०रघुपतिचरणसरोज शिर, नायउ आय सुषेन ॥
कहा नाम जिमि औषधी, जाहु पवनसुत लेन ॥ ६८॥

रामचरणसरसिज उर राखी * चलेउ प्रभंजनसुत बल राखी
उहाँ दूत यक मरम जनावा * रावण कालनेमिगृह आवा ॥
दशमुख कहा मरम तेहिं सुना * पुनि पुनि कालनेमि शिर धुना
देखत तुमहिं नगर जेहिं जारा * तासु पन्थ को रोक निहारा ॥
भजि रघुपतिहिं करहु हित अपना * तजो नाथ अब मृषाकल्पना ॥
नीले कंज–तनु–सुंदरश्यामा * हृदय राखु लोचनअभिरामा ॥
अहंकार ममता मद त्यागहु * महामोहनिशि सोवत जागहु ॥
कालब्यालकर भक्षक जोई * स्वप्नेसुँ समर कि जीतै कोई ॥

दो०सुनि दशकंध रिसान तब, तेहिं मन कीन्ह बिचार
रामदूतकरमरण भल, यह खल नतु मोहिं मार ॥६९॥

अस कहि चला रची मग माया * सर मंदिर बर बाग बनाया ॥
मारुतसुत देखा शुभ आश्रम * मुनिहिं बूझि जल पियोंजाइ श्रम
राक्षस कपटवेश तहँ सोहा * मायापतिदूतहिं चह मोहा ॥
तुरत पवनसुत नायउ माथा * लागा कहन रामगुणगाथा ॥
होत महारण रावणरामहिं * जीतहिं राम न संशय यामहिं ॥
इहाँ भये मैं देखौं भाई * ज्ञानदृष्टिबल मोहिं अधिकाई ॥
माँगा जल तहिं दीन्ह कमण्डल * कपि कह नहिं अघाउँ थोरेजल ॥
सरमजनकर आतुर आवहुँ * दीक्षा देउ ज्ञान जेहि पावहुँ ॥

---

१ श्यामकमलवत् सुन्दरश्याम देह २ कालरूप सर्पका खानेवाला.

**दो०-सर पैठत कपिपद गहेउ, मकरी अतिअकुलान
मकरी सो धरिदिव्य तनु, चली गगन चढि यान ७०**

कपि तव दर्श भइहुँ निष्पापा * मिटा तात मुनिबरकर *शापा॥
मुनि न होइ यह निशिचर घोरा * मानहुँ सत्य बचन कपि मोरा ॥
अस कहि गई अप्सरा जबहीं *निशिचरनिकट गयउ कपि तबहीं
कह कपि मुनि गुरुदक्षिण लेहू * पाछे हमहिं मंत्र तुम देहू ॥
शिर लंगूर लपेटि पछारा * निजतनु प्रगटेसि मरती बारा ॥
राम राम कहि छाँडेसि प्राना * सुनि मन हर्षि चले हनुमाना॥
देखा शैल न औषधि चीन्हा * सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा
गहिगिरिनिशिनभधावत भयऊ * अवधपुरीऊपर कपि गयऊ ॥

**दो०-देखा भरत बिशाल अति निशिचर मनअनुमानि॥
बिनुफरसायक मारेऊ, चाप श्रवणलगि[2] तानि॥७१॥**

परेउ मूर्छि महि लागत सायक[3] * सुमिरत राम राम रघुनायक॥
सुनि प्रिय बचन भरत उठि धाये * कपिसमीप अतिआतुर आये ॥
विकल बिलोकि कीश[4] उर लावा * जागत नहिं बहुभांति जगावा॥

* एक समय दुबासा मुनि इन्द्रकी सभामें गये तब वहा एक गधर्व और एक अप्सरा गायन नृत्य करते थे वे मुनिको देखके हसे, तब दुर्बासा मुनिनें महाक्रोध कर उन्हें शाप दिया, कि–जा तुम दोनों राक्षस राक्षसी होगे. इतना सुनतेही वे दोनों बहुत घबड़ाय हाहाखाय, त्राहि त्राहि पुकार, दुर्बासा मुनिके पांव पडे; तब फिर प्रसन्न हो, मुनिने शापकी अवधि कहदी कि–जब अट्ठाईसवें त्रेतायुगमें रामावतार होगा, और हनुमान् लंकाको जायगे, तब हनुमान्से तुम्हारा शाप छूटैगा वेही गन्धर्व

१ आकाशमें. २ कर्णपर्यंत. ३ बाण. ४ हनुमान्जीको.

मुख मलीन मन भयउ दुखारी * कहत बचन भरि लोचन बारी॥
जेहिं बिधि रामबिमुख मोहिं कीन्हा * तेहिं पुनि यह दारुण दुख दीन्हा
जो मोरे मन बच अरु काया * प्रीति रामपदकमल अमाया ॥
तौ कपि होउ बिगतश्रमशूला * जो मोपर रघुपति अनुकूला ॥
बचन सुनत उठि बैठ कपीशा * कहि जय जयति कोशलाधीशा

सो०लीन्ह कपिहिं उर लाइ, पुलक गातलोचन सजल
प्रीति न हृदय समाइ, सुमिरि राम रघुकुलतिलक ॥

तात कुशल कहु सुखनिधानकी * सहितअनुज अरु मातुजानकी
कपि सब चरित संक्षेप बखाने * भये दुखित मनमहँ पछिताने ॥
अहह दैव मैं कत जग जायों * प्रभुके एकौ काज न आयों ॥
जानि कुअवसर मन धरि धीरा * पुनि कपिसन बोलेउ बलबीरा ॥
तात गहरु होइहै तुहिं जाता * काज नशाइहि होत प्रभाता ॥
चढ़ मम सायक शैलसमेता * पठवौं तोहिं जहँ कृपानिकेता॥
सुनि कपिमन उपजा अभिमाना * मोरे भार चलहि किमि बाना॥
रामप्रताप बिचारि बहोरी * बन्दि चरण बोलेउ कर जोरी ॥
तव प्रताप उर राखि गुसाईं * जैहौं नाथ बाणकी नाईं ॥
हर्षि भरत तब आयसु दीन्हा * पद शिर नाइ गमन कपि कीन्हा

दो०तव प्रताप उर राखि प्रभु, जैहौं नाथ तुरन्त॥
अस कहि आयसु पाय पद, बंदि चले हनुमंत॥७२॥

और अप्सरा दोनों राक्षसी भये सो यहाँ उस कालनेमि राक्षसने मुनि-रूप और राक्षसीने मकरीरूप बन हनुमान्‌का मार्ग रोका, तब हनुमान्‌ने उन दोनोंको मार, शापसे छुड़ाय गंधर्व लोकको पठाया.

१ देर.

भरतबाहुबल शील गुण, प्रभुपदप्रीति अपार॥
जात सराहत मनहिं मन,पुनि पुनि पवनकुमार॥७३॥

उहाँ राम लक्ष्मणहिं निहारी * बोले बचन मनुजअनुहारी ॥
अर्धराात्रि गइ कपि नहिं आवा * राम उठाइ अनुज उर लावा॥
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ* बन्धु सदा तव मृदुल सुभाऊ ॥
मम हितलागि तजेउ पितु माता * सहेउ बिपिन हिम आतप बाता
सो अनुराग कहाँ अब भाई * उठहु बिलोकि मोरि बिकलाई
जो जन त्यों बन बंधुबिछोहू * पिताबचन नहिं मनतेउँ बोहू॥
सुत वित नारि भवन परिवारा * होहिं जाहिं जग बारहिं बारा॥
अस बिचारि जिय जागहु ताता* मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता
यथा पंखबिनु खगपति दीना * मणिबिनु फणि[2] करिवर[3] करहीना
अस मम जीवन बंधु बिनु तोहीं* जो जड़ दैव जियावै मोहीं ॥
जैहौं अवध कवन मुहुँ लाई * नारिहेतु प्रियबन्धु गँवाई ॥
बरु अपयश सहतेउँ जगमाहीं * नारिहानि विशेष क्षति नाहीं॥
अब अबलोकि शोक यह तोरा * सहै कठोर निठुर उर मोरा ॥
निजजननीके एक कुमारा * तात तासु तुम प्राणअधारा ॥
सौंपेउ मोहिं तुमहिं गहि पानी * सबबिधि सुखद परमहित जानी
उतर ताहि देहौं का जाई * उठि किन मोहिं समुझावहु भाई
बहुबिधि शोचत शोचबिमोचन* श्रवत सलिल राजिवदललोचन
उमा अखण्ड राम रघुराई * नरगतभाव कृपालु दिखाई ॥

१ मोहबश अथवा खीरभाग मानके. २ सर्प. ३ हाथी.

सो०प्रभुबिलाप सुनि कान, बिकल भये बानरनिकर
आइगये हनुमान, जिमि करुणामहँ वीररस ॥ ९ ॥

हर्षि राम भेंटे हनुमाना * अतिकृतज्ञ प्रभु परमसुजाना॥
तुरत बैद्य तब कीन्ह उपाई * उठि बैठे लक्ष्मण हर्षाई ॥
हृदय लाइ भेंटे प्रभु भ्राता * हर्षे सकल भालुकपिव्राता ॥
पुनि कपि बैद्य तहाँ पहुँचावा * जेहिविधि तबहिं ताहि लै आवा
यह वृत्तान्त दशानन सुनेऊ * अतिविषादपुनिपुनिशिरधुनेऊ
व्याकुल कुम्भकर्णपहँ गयऊ *करि बहु यत्न जगावत भयऊ॥
जागा निजिचर देखिय कैसा * मानहुँ काल देह धरि बैसा ॥
कुम्भकर्ण पूँछा सुनु भाई * काहे तव मुख रहा सुखाई ॥
कथा कही सब तेहिं अभिमानी*जेहि प्रकार सीता हरि आनी
तात कपिन निशिचर संहारे * महा महा योधा सब मारे ॥
दुर्मुख सुररिपु[१] मनुजअहारी * भट अतिकाय अकंपन भारी॥
अपर महोदरआदिक बीरा * तरे समरमहँ सब रणधीरा ॥

दो०दशकन्धरके बचन सुनि, कुम्भकर्ण बिलखान
जगदम्बा[२] हरि आनिकै, शठ चाहसि कल्यान ॥ ७४॥

भल न कीन्ह तैं निशिचरनाहा * अब मोहिं आनि जगायहु काहा
अजहुँ तात त्यागहु अभिमाना * भजहु राम होइहि कल्याना ॥
हैं दशशीश मनुज रघुनायक * जाके हनूमानसे पायक[३] ॥
अहह बन्धु तैं कीन्ह खुटाई * प्रथमहि मोहिं न जगायहु आई॥

---

१ देवशत्रु. २ जगत्माता. ३ दूत. ४ कष्ट.

कीन्हेहु प्रभु बिरोध तेहि देवक * शिव बिरंचि सुर जाके सेवक ॥
नारदमुनि मोंहि ज्ञान जो कहेऊ * कहतेउँ तोहिं समय नहिं रहेऊ ॥
अब भरि अंक भेटु मोंहि भाई * लोचन सफल करौं मैं जाई॥
श्यामगात सरसीरुहलोचन[1] * देखौं जाइ तापत्रयमोचन ॥

दो०—राम रूप गुण सुमिरि मन, मग्न भयो क्षण एक ॥
रावण माँगेउ कोटि घट, मद अरु महिष[2] अनेक॥७५॥

महिष खाइ करि मदिरापाना * गर्जेउ बज्रघात-अनुमाना॥
कुम्भकर्ण दुर्मद रणरंगा * चलेउ दुर्ग[3] तजि सेन न संगा॥
देखि बिभीषण आगे आयउ * पुनि पद गहि निजनाम सुनायउ
अनुज उठाय हृदय तेहिं लावा * रघुपतिभक्त जानि मन भावा॥
तात लात मोंहि रावण मारा * कहत परमहित मंत्र बिचारा ॥
तेहिं गलानि रघुपतिपहँ आयउँ * दीन जानि प्रभुके मन भायउँ॥
सुनु सुत भयउ कालबश रावण * सो किमि मानै परमसिखावन ॥
धन्य धन्य तैं धन्य बिभीषण * भयउ तात निशिचरकुलभूषण॥
बन्धुबंश तैं कीन्ह उजागर * भजहु राम शोभासुखसागर ॥

दो०—मन क्रम बचन कपट तजि, भजहु तात रघुबीर
जाहु न निजपर सूझ मोंहि भजउँ कालबश बीर॥७६

बन्धुबचनसुनि फिरब बिभीषण * आयउ जहँ त्रैलोक्यबिभूषण॥
नाथ भूधराकार-शरीरा * कुम्भकर्ण आवत रणधीरा ॥
इतना कपिन सुना जब काना * किलकिलाइ धाये हनुमाना ॥

---

१ कमलनेत्र. २ भैंसा. ३ किला.

लिये उपारि बिटप[1] अरु भूधर * कटकटाइ डारे तिहिं ऊपर ॥
कोटि कोटि गिरिशिखरप्रहारा * करहिं भालु कपि एकहिं बारा ॥
गिरे न मुरै टरै नहिं टारे * जिमि गज आकफलनके[2] मारे॥
तव मारुतसुत मुष्टिक हनेऊ * परेउ धरणि व्याकुल शिर धुनेऊ
पुनि उठि तेहिं मारे हनुमन्ता * घुर्मित घायल परेऊ तुरंता ॥
पुनि नलनीलहिंआनिपछारेसि * जहँ तहँ पटकि २भट मारेसि ॥
चली बलीमुखसेन[3] पराई * अतिभयत्रसित न कोउ समुहाई

दो०अंगदादि कपि मूर्छित, करि समेत सुग्रीव ॥
कांख दाबि कपिराजकहँ, चला अमितबलसींव७७

उमा करत रघुपति नरलीला * खेल गरुड़ जिमि अहिगणमीला
भ्रुकुटिभङ्ग जिहि कालहिं खाई * ताहि कि ऐसी सोह लराई ॥
जगपावन कीरति बिस्तरहीं * गाइ गाइ नर भवनिधि तरहीं॥
मूर्छा गइ मारुत सुत जागा * सुग्रीवहिं तव खोजन लागा ॥
कपिराजहुकर मूर्छा बीती * निबुकि गयउ तेहिं मृतकप्रतीती
काटेसि दशन नासिका काना * गर्जि अकाश चला तेहिं जाना
गहेसि चरण धरि धरणि पछारा * अतिलाघव पुनि उठि तेहिं मारा
पुनि आयउ प्रभुपहँ बलवाना * जयति जयति जय कृपानिधाना॥
नाक कान काटे तेहिं जानी * फिरा क्रोध करि मानि गलानी॥
सहजभीम पुनि बिनु श्रुतिनासा * देखत कपिदल उपजा त्रासा ॥

दो०जय जय जय रघुवंशमणि, धाये कपि करि हूह

१ वृक्ष. २ मदारके फलोंके. ३ बानरोंकी फौज.

एकहि बार जो तासुपर, डारे गिरितरुजूह[1] ॥ ७८ ॥

कुंभकर्ण रणरंग बिराधा * सनमुख चला काल जनु क्रोधा
कोटि कोटि कपि धरि धरिखाई * जनु टीडी गिरिगुहा समाई ॥
कोटिन गहि शरीरमहँ मर्दा * कोटिन मींजि मिलायसि गर्दा
मुख नासिका श्रवणकी बाटा * निकसि पराहिं भालुकपिठाटा॥
रणमदमत्त निशाचर दर्प्पा[2] * मानहुँ बिश्वग्रसनकहँ अर्प्पा ॥
मुरे सुभट रण फिरहिं न फेरे * सूझ न नयन सुने नहिंटेरे ॥
कुम्भकर्ण कपिफौज बिड़ारी * सुनि धाये रजनीचरझारी ॥
देखी राम बिकट कटकाई * रिपुअनीक[3] नानाबिधि आई ॥

दो०सुनहु बिभीषण लषणसह, सकल सँभारहु सैन
मैं देखौं खलबलदलहिं, बोले राजिवनैन ॥ ७९ ॥

कर सारंग बिशिख कटि भार्था * मृगपतिठवनि चले रघुनाथा ॥
प्रथम कीन्ह प्रभु धनुटंकोरा * रिपुदल बधिर भये सुनि शोरा॥
धनु सन्धानि छाँडि शर लक्षा * कालसर्प जनु चले सपक्षा॥
अतिबल चले निकर नाराचा * लगे कटन भट बिकट पिशाचा
कटहिं चरण शिर उर भुजदण्डा * बहुतक वीर होहिं शतखण्डा॥
घुमि घुमि घायल भट परहीं * उठहिं संभारि सुभट फिर लरहीं
लागत बाण जलदजिमि गाजैं * बहुतक देखि कठिन शर भाजैं॥
रुण्ड प्रचण्ड मुण्डविनु धावहिं * धरु धरु मारु मारु गुहरावहिं॥

दो०क्षणमहँ प्रभुके सायकनि, काटे बिकट पिशाच
पुनि रघुपतिके तूणमहँ, प्रविशे आइ नराच ॥ ८० ॥

कम्भकर्ण मन दीख विचारी * क्षणमहँ हते निशाचरझारी ॥

१ पर्वत और वृक्षोंके समूह. २ अहंकारी. ३ शत्रुकी फौज.

भयउ क्रोध दारुण बलबीरा * करि मृगनायकनाद गँभीरा ॥
कोपि महीधर लिये उपारी * डारेसि जहँ मर्कट भट भारी॥
आवत देखि शैल प्रभु भारे * शरन काटि रजसम करि डारे
पुनि धनु तानि कोपि रघुनायक * छाँडे अतिकराल बहु सायक॥
तनुमहँ प्रबिशि निसरिशर जाहीं * जिमि दामिनि घनमाहँ समाहीं
शोणितश्रवण सोह तनु कारे * जिमि कज्जलगिरि गेरुपनारे ॥
बिकल बिलोकि भालु कपि धाये * बिहँसा जबहिं निकट चलि आये

दो०गर्जत धायउ बेगि अति, कोटि कोटि गहि कीश
महि पटकै गजराज इव, शपथ करै दशशीश ॥८१॥

भागे भालु–कपिनके यूथा * वृक बिलोकि जिमि मेषवरूथा
चले भालु कपि भाजि भवानी * विकल पुकारत आरत बानी॥
यह निशिचर दुकालसम अहई * कपिकुलदेशपरन अब चहई ॥
कृपा बारिधर राम खरारी * पाहि पाहि प्रणतारतहारी ॥
करुणा बचन सुनत भगवाना * चले सुधारि शरासन बाना ॥
राम सेन निजपाछे घाली * चले सकोप महाबलशाली ॥
खैंचि धनुष शत शत शर संधाने * छूटे तीर शरीर समाने ॥
लागत शर सँभारि सो फिरा * कुधर डगमगेउ डोली धरा ॥
लीन्ह एक तेहिं शैल उपाटी * रघुकुलतिलक भुजा सोइ काटी
धावा बाम बाहु गिरिधारी * प्रभु सोउ भुजा काटि महि डारी
काटे भुज सोहै खल कैसा * पक्षहीन मन्दरगिरि जैसा ॥
उग्र बिलोकनि प्रभुहिं बिलोका * मानहुँ ग्रसन चहत त्रैलोका ॥

दो०करि चिकार मुख घोर अति, धावा बदन पसारि

१ सिंहनाद. २ रुधिरप्रवाह. ३ भेड़ियाको. ४ बकरियोंके झुंड.

गगन सकल सुरत्रास अति, हाहाकार पुकारि ॥८२॥

सभय देव करुणाकर जाने * श्रवणप्रयन्त शरासन ताने ॥
बिशिखनिकर निशिचरमुख भरेऊ * तदपि महाबल भूमि न परेऊ ॥
शरनिभरा मुखसन्मुख धावा * कालतूण जनु तनु धरि आवा ॥
तब प्रभु कोपि तीव्र शर लीन्हा * धरते भिन्न तासु शिर कीन्हा ॥
सो शिर परा दशाननआगे * बिकलभयउ जिमि फणिमणित्यागे
धरणि धरे धर धाव प्रचण्डा * तब प्रभु काटि कीन्ह युगखण्डा
परेउ भूमि जिमि नभते भूधर * हेठदाबि कपि भालु निशाचर॥
तासु तेज प्रभुबदन समाना * सुर मुनि सबहिं अचम्भव माना
नभ दुन्दुभी बजावहिं हर्षहिं * जय जय कहि प्रसून[1] सुर बर्षहिं॥
करि बिनती सुर सकल सिधाये * तब तेहि समय देवऋषि आये ॥
गगनोपरि हरिगुणगण गाये * रुचिर बीररस प्रभुमन भाये ॥
बेगि हतहु खल मुनि कहि गये * राम समरमहँ शोभित भये ॥

छन्द॥ संग्रामभूमि विराज रघुपति अतुलबल शोभा गनी
श्रम[2]बिन्दु मुख राजविलोचन रुचिर तनु शोणित कनी[3]
भुजयुगल फेरत कर शरासन भालुकपि चहुँ दिशि बने
कहदासतुलसीकहिनसकछबिशेषजेहिआननघने॥

दो॰ निशिचरअधम मलायतन, ताहि दीन्ह निजधाम
गिरिजा ते नर मन्दमति, जे न भजहिं श्रीराम ॥८३॥

दिनके अन्त फिरीं दोउ अनीं * समर भयी सुभटनसन घनी ॥
रामकृपाबल कपिदल बाढ़ा * जिमि तृण बढ़ै लगे अति डाढ़ा ॥
छीजहिं निशिचर दिन अरु राती * निजमुख कहे सुकृत जेहि भाँती

१ फूल. २ पसीना. ३ रुधिरकी कनी.

बहुबिलाप दशकन्धर करई * पुनि पुनि बन्धुशीश उर धुनई ॥
रोवहिं नारि हृदय हति पानी * तासु तेज बल विपुल बखानी ॥
मेघनाद तेहि अवसर आवा * कहि बहुकथा पितहिं समुझावा
देखहु कालिह मोरि मनुसाई * अबहिं बहुत का करौं बड़ाई ॥
इष्टदेवसन जो बर पायउँ * सो बर तात न तुमहिं सुनायउँ॥
यहिबिधि जल्पत भयो बिहाना * लगे भालु कपि चहुँदिशि नाना॥
इत कपि भालु कालसम बीरा * उत रजनीचर अतिरणधीरा ॥
लरहिं सुभट निजनिजजयहेतू * वर्णि न जाइ समर खगकेतू[1] ॥

दो०मेघनाद माया बिरचि, रथ चढि गयउ अकाश
गर्जेउ प्रलयपयोद[2]जिमि, भा कपिदल अतित्रास ८४

शक्ति शूल शर परिघ कृपाना * अस्त्र शस्त्र कुलिशायुध नाना॥
डारे परशु प्रचण्ड पखाना * लागा वृष्टि करै बहु बाना ॥
रहे दशहुँ दिशि सायक छाई * मानहुँ मघामेघ झरि लाई ॥
धरु धरु मारु सुनहिं कपि काना * जो मारै तेहि कोउ न जाना ॥
गिरिगिरितरुअकाशकपिधावहिं * देखहिं तेहिनदुखितफिरि आवहिं
अवघट घाट बाट गिरिकन्दर * मायाबल कीन्हेसि शरपंजर ॥
मारुतसुत अंगद नलनीला * कीन्हेसिबिकलसकलबलशीला
पुनि लक्ष्मण सुग्रीव बिभीषन * शरन मारि कीन्हेसि जर्जरतन
पुनि रघुपतिसन जूझन लागा * छाँड़त शर[3] होइ लागहिं नागा ॥
ब्यालफाँसबश भये खरारी * स्वबश अनन्त एक अविकारी
नट इव चरित करत बिधि नाना * सदा स्वतंत्र राम भगवाना ॥
रणशोभाहित आपु बँधावा * देखि दशा देवन भय पावा ॥

१ गरुड. २ प्रलयकालके मेघोंके जैसे. ३ बाण.

दो०गिरिजा जाकर नाम जपि, नर काटहिं भवफाँस
सो प्रभु आव कि बन्धतर, व्यापकविश्वनिवास॥८५॥

चारित रामके सगुण भवानी * तरकि न जाइँ बुद्धिबलबानी॥
अस विचारि जो परमबिरागी * रामहिं भजहिं तर्क सबत्यागी॥
व्याकुल कटक कीन्ह घननादा * पुनि भा प्रकट कहत दुर्बादा॥
जाम्बवन्त कह खल रहु ठाढ़ा * सुनिकै ताहि क्रोध अति बाढ़ा
बूढ़ जानि शठ छाँड़ेउँ तोहीं * लागेसि अधम प्रचारन मोहीं॥
अस कहि ताहि त्रिशूल चलावा * जाम्बवन्त सो कर गहि धावा
मारेउ मेघनादकी छाती * परा धरणि घुर्मित सुरघाती॥
पुनि रिसाइ गहि चरण फिरावा * महि पछारि निजबलहिं दिखावा
बरप्रसाद सो मरहि न मारा * तब पद गहि लंकापर डारा॥
इहाँ देवऋषि[1] गरुड़ पठाये * रामसमीप सपदि[2] चलि आये॥

दो०पन्नगारि[3] खाये सकल, क्षणमहँ व्यालबरूथ[4]॥
भई बिगत माया तुरत, हर्षे बानरयूथ ॥ ८६ ॥
गहि गिरि पादप उपल[5] बहु, धाये कीश रिसाइ॥
चले तमीचर बिकल अति गढपर चढे पराइ ८७

मेघनादकी मूर्च्छा जागी * पितहिं बिलोकि लाज अतिलागी
तुरत गयो सो गिरिवरकन्दर * करन अजयमख अस मनहठधर
सो सुधि पाई बिभीषण कहई * सुनु प्रभु समाचार अस अहई
मेघनाद मख करै अपावन * खल मायावी देवसतावन॥
सो प्रभु सिद्धि होइ जो पाइहि * नाथ बेगि रिपु जीति न जाइहि
सुनि रघुपति अतिशय सुखमाना * बोलि लिये अंगद हनुमाना॥

१ नारदजीने. २ जल्दी. ३ गरुड़ने. ४ सर्पसमूह. ५ पत्थर.

लक्ष्मणसंग जाहु सब भाई * यज्ञबिध्वंस करहु तुम जाई ॥
तुम लक्ष्मण रण मारेहु ओही * देखि सभय सुर बड़ दुख मोही
मारेहु तेहिं बल बुद्धि उपाई * जेहि छीजै निशिचर सुनु भाई
जाम्बवन्त कपिराज बिभीषण * सेनसमेत रहहु तीनौं जन ॥
जब रघुबीर दीन्ह अनुशासन * कटि निषंग कर बाण शरासन॥
प्रभुप्रताप उर धरि रणधीरा * बोलेउ घन इव गिरा गँभीरा ॥
जो तेहिं आजु बधे बिनु आवउँ * तौ रघुपतिसेवक न कहावउँ॥
जो शतशंकर करहिं सहाई * तदपि हतौं रघुबीरदुहाई ॥

दो०बन्दि राम-पदकमल--युग, चले तुरन्त अनन्त[1]
अंगद नील मयन्द नल, संग सुभट हनुमन्त॥८८॥

जाइ कपिन देखा सो बैसा * आहुति देत रुधिर अरु भैंसा॥
तब कीशन कृत यज्ञबिध्वंसा * जब न उठै तब करहिं प्रशंसा॥
तदपि न उठै धरहिं कच[2] जाई * लातन हति हति चलहिं पराई॥
लै त्रिशूल धावा कपि भागे * आवा राम-अनुजके आगे ॥
आवत परमक्रोध करि मारा * गर्जि घोररव[3] बारहिं बारा ॥
कोपि मरुतसुत अंगद धाये * हति त्रिशूल उर धरणि गिराये॥
प्रभुपर छाँड़ेसि शूल प्रचण्डा * शर हति कृत अनन्त युग खण्डा
उठि बहोरि मारुति युवराजा * हतेउ कोपि तेहिं घाव न बाजा
फिरे बीर रिपु मरै न मारा * पुनि धावा करि घोर चिकारा॥
धावत देखि क्रोध जनु काला * लक्ष्मण छाँडे बिशिखकराला॥
आवत देखि बज्रसम बाना * तुरत भयो खल अन्तर्द्धाना ॥
बिबिध वेष धरि करै लड़ाई * कबहुँक प्रकट कबहुँ दुरिजाई

१ लक्ष्मणजी. २ बाल. ३ भयावना शब्द.

तब त्रिशूल छाँडेसि लक्ष्मणपर * काटि कीन्ह शतखंड धरणिधर
शिखर एक लै पुनि सो धावा * रामअनुजसो काटि खसावा ॥

दो०—आयुध बिबिध प्रहार किय, रजसम कीन्ह फणीश
हर्षबिवश कपि रीछ सब, बिबुधसहित सुरईश ८९॥

बहुरि बिबिध शर छाँड़न लागा * रणकारण छूटहिं जिमिनागा॥
रामअनुजशर गरुड़-समाना * उमा ग्रसत छूटहिं अभिमाना
देखि अजय रिपु डरपेउ कीशा * परमक्रोध तब भये अहीशा॥
देखिय जिमि रवितेजसमाना * फुकरत मनहुँ व्यालअनुमाना
लक्ष्मण मन अस मंत्र दृढ़ावा * यहिं पापिहिं मैं बहुत खिलावा
सुमिरि कोशलाधीश-प्रतापा * शरसंधान कीन्ह अतिदापा ॥
छाँड़ा बाण तासु उर लागा * शीश भुजा काटे नृपनागा॥
घनसमान सो गर्जि अभागा * मरतीबार कपट सब त्यागा ॥
"राम लषण कहि सह अनुरागा * तेरसि दिवस भयो तनु त्यागा"

दो०—रामअनुज कहि राम कहि, अस कहि छाँड़ेसि प्रान ।
धन्य शक्रजित मातु तव, कहि अंगद हनुमान॥९०॥

॥ अथ क्षेपक ॥

जो जगकहँ दण्डक यमदण्डा * हरिद्रोहीसुत[1] समरप्रचण्डा ॥
महिमा अमित महाबलसींवा * जासु प्रताप अभय दशग्रीवा॥
भुजबल सुरनायक[2] बश कीन्हा * चौदह भुवन जीति यश लीन्हा
रिपुतरु[3] लषण मूल खनि गंजेउ * जिमिगज[4]कमलनालगहिभंजेउ॥
जिमिबासव गहि कुलिशकराला * कीन्ह बिकल गिरि पक्षबिहाला
रणसागरमहँ परेउ शरीरा * तरै दारु[5] जिमि रुधिर सुनीरा॥

१ रावणपुत्र. २ इन्द्रको. ३ शत्रुरूपी वृक्षका. ४ हाथी. ५ काठके जैसे.

दंत विकट मुख परमभयावन * चिकुर सघन चख सुरन दबावन
रसना लालरंग जनु यावक * दवकी शिखासोह जनु पावक
पाइ सुआयसु ऋषभ कपीशा * कर गहि लीन्ह दुष्ट करशीशा

॥ इति क्षेपक ॥

बिन प्रयास हनुमान उठाये * लंकाद्वार राखि पुनि आये ॥
तासु मरण सुनि सुर गन्धर्वा * चढ़ि बिमान आये नभ सर्बा॥
बर्षि सुमन दुन्दुभी बजावहिं * श्रीरघुबीरबिमलयश गावहिं ॥
जय अनन्त जय जगदाधारा * तुम प्रभु सर्व–देव–निस्तारा॥
अस्तुति करि सुरसकलसिधाये * लक्ष्मण कृपासिंधुपहँ आये ॥

॥ अथ क्षेपक ॥

प्रभुहिं बिलोकि शीश पद नाये * उठि प्रभु अनुज हर्षि उर लाये
कृपादृष्टि करि अनुजहिं हेरा * बिगत भयो श्रम जब कर फेरा
बाणबेधि तनु देखियत कैसे * कनकतूण शरपूरित जैसे ॥
मुखप्रसन्नता देखि छके सब * रिपुबध कहा बिभीषणहूँ तब॥
धारेउ शीश आनि प्रभुआगे * बानर भालु बिलोकन लागे ॥
प्रभुकौतुकी निरखि सोइ शीशा * राखन कहेउ कोशलाधीशा ॥

दो०प्रभुआयसु सुनि कीशपति, राखेउ यत्न कराय
कटकसहित रघुबंशमणि, शोभित अतिदोउ भाय

कृपादृष्टि सब कटक निहारे * भये श्रमरहित राम बैठारे ॥
सुनहु उमा इहिविधि रिपु मारे * सुर नर मुनि सब भये सुखारे॥
अब सो सुनहु भुजा तेहिकेरी * खग जिमि गई लंक शरप्रेरी॥
मेघनाद आँगनमें परी * बाणबेधि शोणितसन भरी ॥

१ नेत्र.

देखत तहाँ सुलोचनि कैसी * रतिते रुचिररूप गुण जैसी ॥
नागसुता दशकन्ध-पतोहू * वासवरिपुतिय छविमय जोहू॥
हेमसिंहासन सोहत बाला * सेवत विद्याधर त्रयकाला ॥
पूजत विविध विनय कर ताही * सुख प्रमोद को सकत सराही॥
तहँ पतिभुजा परी इहि भांती * मनहुँ सकलसुखतरुकी कांती॥

दो०तब निजदासिन्ह देखितहँ, शोणितश्रवभुजदन्ड ॥
भयउ समर आश्चर्यमय, मनहुँ अखण्डनखण्ड॥१४॥

सुनकर सकलसखीमुखवैना * तजि सिंहासन उठी सुनैना ॥
प्रेमसुभाय धुकधुकी धरकी * सूचकअशुभ दहिन भुज फरकी
होत महारण रावणरामहिं * बीरधुरीण मोर पिय तामहिं१॥
सकल सुरासुर सकहिं न जूझी * विधिवामता परत नहिं बूझी॥
इतना कहत गई चलि आपू *पतिभुजलखिकरिकोटिकेलापू॥
कंचन -मणिगण भूषण सोई * महाबिटेपसमँ आन न होई ॥
देखत मनहिं न आवत तेही * जासु प्रभाव सुनत किन लेही
नींद नारि भोजन परिहरही * बारह वर्ष तासु कर मरही ॥

दो०करि विचार सम टेक दै, मैं पतिदेवत नारि॥
भुज लिखि भेटहु दुचितही, सुनि कर दीनपसारि

लखि रुख तासु सखी उठि धाई* सो तेहिं खोज खँरी लै आई॥
दीन हाथ मणिमय-अँगनाई *लिखत लषणकीरतिरुचिराई ॥
नींद नारि भोजन शतकोटि *तजत तासु महिमा अति छोटी
अक्षय अखण्डअलखअविनाशी* अतुल अमित घटघटके वासी
प्रकटहिं पालहिं पुनि संहरई * त्रिगुणरूप त्रयमूरति धरई ॥

१ विलाप. २ बडे वृक्षकी समान. ३ सपेद माटी.

जो कालहुकर काल भयंकर * बर्णत शेष शारदा शंकर ॥
लीला-तनु सुर-सेवक-हेतू * जासु नाम भवसागरसेतू ॥
मुनि-मन-पुण्डरीक जाके घर * बचन बिबेक बिचार बुद्धिबर॥

दो० कोटि कल्प बर्णत निगम, अगम जासु गुण गाथ
तमशरीर जड जीव बिनु, किमि बर्णतलिखिहाथ १६

मम शिर गयो दर्श रघुराई * तव प्रतीतिलगि भुजा पठाई ॥
इहिबिधिलिखेउसकलभुजबाता * परी भूमि तव अतिबिकलाता॥
बाँचि सकल भुजलिखितयथारथ* लक्ष्मण राम-नाम-परमारथ ॥
नारिस्वभाव तदपि बहुभांती * बिलखतसकलसखिनकरपांती॥
गुणगण साहस शील नाहको * कहि रोवत बलबिपुलबाँहको॥
जेहि भुजबलसुरनाथ बिगोवा * सो भुज आजु समरमहि सोवा
मणिगण भूषण बसन बिसारत * महिलोटत करतल शिर मारत॥
मग्न बिपति निजतनुसुधि नाहीं * दारुणबिपति कहि न केहिपाहीं
छिनक प्रबोध सखी कोउ करही * बहुरि शोकदावानल जरही ॥
क्षण क्षण उठत परत धरणीतल * पुनि पुनि सबसराह पतिको बल

दो०तिनमें सखी सयान इक, कहि समुझावत बैन
शोक छाँडि पतिदेवता, सुमरि करौमति बैन॥१७॥

सुनकर सहसाऽऽननजलजाता * सत्य कहत तुम सखी सुमाता॥
बिधिनिर्मित दुख मोकहँ लाहू * सुखपारिपूर भवन सबकाहू ॥
बिजय रामलक्ष्मणकहँ आवा * सुयश सकलमर्कटकुल पावा॥
कुलकलंक बड लहेउ बिभीषण * कुलकुठार अस सुनेउँ न दीखन
छूटि बन्दि अस सुरगणकेरी * निज निज पुरन दुहाई फेरी ॥

१ जलदी. २ कमलरूपीमुखवाली.

मुनि पुलस्त्यकर भा कुलनाशा* अबरबिशशिसुखकरहिं प्रकाशा
तेजवन्त पावक परिहारि दुख * बहब समीर आजु अपने सुख
सलिल गंग निर्मलजल आजू * सुवश बसहिं सुरनायक राजू ॥

दो०यम कुबेर दिक्पाल सब,प्रमुदित सुरनर नाग
खाइँ अघाय विहाय दुख, पाय सुयज्ञबिभाग॥१८॥

इतना कह मन्दिरमहँ आई * देखत मणिगण-धन–बहुताई॥
सुरपतिभुवन सुपटुतर नाहीं *जहँ रिधिसिधि तनु धरे कमाहीं
देखत बिनय न मन अनुरागा * पतिपदप्रेम–निपुण गण पागा॥
देत दान मणि भूषण चीरा * धेनु बसन मणि हाटक हीरा॥
मणिमय शिबिका रुचिर सुहाई* भुज चढाइ पहिराइ बनाई ॥
आपन चढ़त भई पुनि आई * सुरदुर्लभ सुखसदेन बिहाई ॥
बीतराग जिमि तजतबिषयगन * तेहिं तसभांतिदियोपतिपदमन
शुक सारिका सुलोचनि ज्याये * कनकपिंजरन राखि पढ़ाये ॥
व्याकुल कह कहँ जात सुनयना* सुनि धीरज परिहरत सुबयना॥
भये बिकल खग मृग यहि भांती * अपर दशा कैसे कहि जाती ॥
प्रजालोग गृह तजि सँग लागे * प्रेम उमँगि लोचनजल पागे ॥

दो०बाजन लगे निशान बहु, ढोल दुंदुभी भेरि ॥
पुरजन परिजन संग सब, चले पालकी घेरि ॥१९॥

देखि भीर दशकन्धरद्वारे * सजग भये सब बीर प्रचारे ॥
जानेउँ कटक[२] रिपुनकर आवा * अस्त्र शस्त्र कर गहिकर धावा॥
धनु चढाइ कटि तरकस बाँधे * कोउ असि[३] चर्म[४] शरासन साँधे
तोमर परशु प्रचण्ड गदा गहि * रोखन चोखे शूल शक्ति गहि॥

१ सुखके घर. २ फौज. ३ तलवार. ४ ढाल.

मारु मारु धरु धरु कहि धाये * प्रगट दशानन बिजय सुनाये॥
गर्जत तर्जत गिरा गँभीरा * समरभयंकर निशिचरबीरा ॥
निपटहिं निकट पालकी आई * चीन्हि सकल भट रहे लजाई॥
देखि जुहारि नागपतिकन्या * सती-शिरोमणित्रिभुवनधन्या॥

दो०द्वारपाल दशकन्ध--बहु, खबर जनाई जाय॥
भयउ रजाय सुबेगि तब, बचन कहत बिलखाय २०

तुम्हहिं अछत अस दशा हमारी *सुख तजि भई शोक-अधिकारी
नभपथ होय भुज मम गृह परा*बाण बेधि शोणित तनु भरा ॥
देखि भुजा मैं अतिडरी * संशय जानि दीन्ह कर खरी ॥
लिखी रामलक्ष्मणमहिमा इन * क्रमक्रमसों सब कथा कहीतिन
ठगिसी रही बाँचि गुणगाथा * जरहुँ संग जो पाऊँ माथा ॥
रण कबन्ध भुज मम गृहआई * शिर तहँ गयउ जहां रघुराई ॥
करहुसोयत्नमिलहिमोहिंशीशा * तुम सामर्थ निशाचरईशा ॥
सुनत कुलिशसम गिरा बधूकी * जीवनआश दशानन मूकी ॥
तदपि धीर धरि करसि प्रबोधा *कहिकोउमोहिसमानजगयोधा॥

दो०राम लषण सुग्रीव नल, नील द्विबिद हनुमन्त॥
माथ बिभीषण ऋषभकर, आनब मारि तुरन्त॥२१॥

अबलगि रहेउ भरोसा भारी * कुम्भकर्ण घननाद सुरारी ॥
सुनहु आजलगि कीन्ह न जूझा * इनसबकर पुरुषारथ बूझा ॥
मरे सो नरबानरके मारे * बात सुनत अतिलाज हमारे॥
गिनती कवन बीरमें तिनकी * अतिदुर्दशा कीन्ह कपि जिनकी
तजहु शोक कुलबधू पतोहू * उनसमान जनि मानसि मोहू॥

१ सुलोचना

पुत्रि विलम्ब करौ घटि चारी * देखहु मोर भयंकर भारी ॥
आनि शीश तव शत्रुनकेरा * बिन प्रयास नहिं लावों बेरा ॥
भोगत जन्तु पराक्रमभोगा * नतु किन निशिचर बनचरयोगा

दो० मेरु उखारनहार जे, धरा धरत करबीच ॥
ते भट खाये मशकशिशु, कालकुटिलता नीच॥२२॥

क्रोधावेश प्रगल्भहि बोली * हृदय शोक तनु अचल न डोली
समाधान नहिं मानत सोई * सुनि प्रलाप परितोष न होई ॥
नर बानर-पुरुषारथ देखत * बड़ो प्रभाव छोट करि लेखत
कूदि सिंधु कपि लंका जारी * लघु करि मानहु ताहि सुरारी॥
कुंभकर्ण अतिकाय महोदर * मम पति गिरेउ समेत सहोदर ॥
ते रिपु चहत दशानन जीती * देखहु महामोहकर रीती ॥
उतर देउँ तौ पातक होई * कह बिवाद कर सर्बस खोई ॥
फिरहि राज कछु मोहिं नकाजू * बिनपिव सकल नरककरसाजू

दो०तुरतहि उठी सुलोचना, गइ मयतनयापास ॥
पद गहि रोवत सकल कह, प्रगट शोकइतिहास

आदिहिते सब कथा बखानी * सुनि सुनि रोवत रावणरानी॥
कहिनिजपतिभुजलिखितबहोरी* रामलषणमहिमा नहिं थोरी ॥
कह्यो बहुरि दशकन्धरक्रोधा * मुयेबिडंबन कीन्हेसि बोधा ॥
सुनि निजपुत्रवधूकी बानी * बोली दुखित मंदोदरि रानी ॥
कहत सो मानहु सत्य सयानी * सुनि जो नारदमुनिकी बानी ॥
पाछिल बात भई सब साँची * अनुभव कीन्ह न एकहु बाँची
देबि न होय मृषा ऋषिभाषत * अपने महामोह मन राखत ॥

१ राक्षस. २ बानरोंके योग्य. ३ हाथमें. ४ रावण. ५ मंदोदरीके निकट.

अगली कथा समाससमेता * सुनु पुत्री ऋषि बर्णेउँ जेता ॥
बैरभाव दशकन्धर जूझब * प्राणहु गये नीति नहिं बूझब ॥
सिया शोकसंकटसे छूटहिं * बानर भालु राजधर लूटहिं ॥
सुरमणि भूषण बसन बिमाना * भोग कराहिं बनचरकुल नाना॥

दो० राज बिभीषण पाइहैं, अमरकल्प निर्बाह ॥
भावीबश दुख सुख जगत, उपदेशिय कहु काह २४

मुनिबरबचन मोहिं परतीती * अनुभव दोउ हार अरु जीती ॥
अब पुत्री परिहरि सब शोका * पतिसँग बेगि साधु परलोका ॥
जाहु रामपहँ पतिशिरलागी * तजि संकोच आनकिन माँगी॥
आज न होइ लाजकर भूषण * समयहीन गुण गणिय न दूषण॥
हैं पुनि ससुर बिभीषण तोरा * बालितनय बालकसम मोरा॥
एक–नारि–व्रत रघुवरकेरा * लषणसुयश मम सुनेउ घनेरा॥
जाम्बवन्त मंत्री सुग्रीवा * द्विबिद मयन्द महाबलसीवा ॥
जानहुँ ब्रह्मचर्य हनुमन्ता * शिवस्वरूप भवेहर भगवन्ता॥
सदा नीतिरत राम नरेशा * तहाँ जात कहु कवन कलेशा

दो०बिदिततोरपतिभुजलिखित, लक्ष्मणरामप्रभाव
हमहूं ऋषिभाषितकहेउँ, अबबिलम्बजनिलाव २५

सुनत सासुमुखकर हितबानी * जाहुँ रामपहँ जस जिय जानी
बार बार बर्णत शिर नाई * चली जहाँ लक्ष्मण–रघुराई ॥
देखत कटकै भालुकपिकेरा * सिंधु सुबेल महीधर घेरा ॥
उमँगेउ मनो महोदधि दूसर * हरित पीत कपि धूमर धूसर ॥
व्योम लाल भाषत अनुहेरी * मनहुँ लेत बडवानल घेरी ॥

१ पंचकन्याके हेतुसे बालक कहा. २ संसारके नाशक. ३ फौज

गिरितरुधर भुज सहस भयंकर * जहँ तहँ प्रगट होइँ जनु जलधर
लक्ष्मणशेष सुअंक शशिधर * कटकजलधि सोवत राघवबर ॥
अक्षयवट तहँ बैठि बिभीषण * अस सुकृती कहँ सुने न दीखण

दो० :देखत डरत सुलोचना, धीरज धरत बहोरि ॥
महाराज रघुबीरकहँ, विनय सुनावों मोरि ॥ २६॥

बानर सकल उठे अस बोली * अरिपुरते आवत इक डोली ॥
जानि परत रावण अब बूझा * भइ मति मेघनाद जब जूझा॥
हठ तजि सीतहिं दीन पठाई * तजहु शोच अब मिटी लराई
जिहिंलगि प्रगट कीन्हपुर आगी * बाँधेउ सेतु हेतु जिहिं लागी ॥
सोइ सीता अब बिनश्रम पाई * जानहुँ बिधि अनुकूल सहाई॥
बिजय राम सुग्रीवहिं आवा * सुयश बीर बानरकुल पावा ॥
बिरह रामलक्ष्मणकर छूटा * बिनकलेश लंकागढ़ टूटा ॥
युग युग कीरति चलब हमारी * कहँ राक्षस कहँ लघु बनचारी

दो०यहिबिधि चारुबिचार करि, निश्चय करि मनमाहीं
भयउ काज रघुराजकर, बात दूसरी नाहिं ॥ २७॥

पैठत कटके अतिहिं सकुचाई * अनबिनारि जनु परघर आई॥
आगेहि जाइ देखि रघुबीरा * छबि श्यामलमय गौर शरीरा ॥
मरकत कनकछबिहिं जनु निदति * धन्य सुजन महिमाते बिंदति॥
मत्त-गयन्द-शुण्ड-भुजदण्डा * धनुष बाण असि धरिय प्रचण्डा
उर बिशाल अतिउन्नत कंधर * कंबुकण्ठ रेखा त्रय सुन्दर ॥
दशनपांतिकी कांति कहै को * लावत मन पटतरहिं लहै को॥
देखत अधरनकी अरुणाई * बिम्बाफल बंधूक लजाई ॥

१ रमणीक. २ फौजमें. ३ शंखसा गला. ४ ओठोंकी. ५ बंधुजीव.

शुकतुण्डक-नासिका लजाई * थाकेउ कबि पटतरहिं न पाई॥

दो०छबिमय गुणमय तेजमय, रामउदधिअवगाह॥
जहाँ न पावत पार सुर, किमि बर्णै कबि थाह ॥ २८ ॥

भ्रुकुटी ललित कपोल सुहाये * शीश जटाकर मुकुट बनाये ॥
भाल बिशाल तिलकयुत सोहै * ध्यानसमय मुनिमानस मोहै ॥
बलकलबसन तूण कटि बाँधे * करशर सुभग शरासन काँधे ॥
बीरासन-आसीन कृपाला * नव-पल्लव-प्रसूनकर माला ॥
चरणसरोज बर्णि नहिं जाई * जहँ मुनिमधुकर रहे लुभाई ॥
प्रगट भई जिहि थलसे गंगा * श्रुति पुराण कह कथाप्रसंगा ॥
नमत महेश बिरंचि जाहिको * लोचनगोचर होत काहिको ॥
जनआरतिभंजन जो कोई * भवसागरतारण कै सोई ॥

दो०प्रणतपाल बिरदावली, जिन चरणनकी बानि
शोकहरण संशयदलन, करण सुमंगलखानि॥२९॥

कर जोरे अंगद हनुमाना * द्विबिद मयन्द कुमुद बलवाना॥
जाम्बवन्तकपिपति बलशीला * ऋषभ सुषेणसहित नल नीला॥
महाबीर बानर सब राजत * लषण बिभीषणदोउदिशिभ्राजत
मितभाषित प्रभुचरणसुसेबक * चितवत रुख रघुनन्दनदेवक॥
सभामध्य सोहत अघमोचन *कीन्हेउँ सफलनिरखिनिजलोचन
करत दण्डवत शिर धरि धरणी *तिहिकर चरित बिभीषण बरणी॥
पुत्र-बधू दशकन्धरकेरी * बड़ि पतिव्रता जानि प्रभु हेरी॥
मेघनादकी नारि सुशीला * असगति तव विरोधकर लीला
करत प्रणाम प्रेम नहिं थोरे * करुणाबचन कहत कर जोरे ॥

---

१ थोरेबचन बोलनेवाले.

दो०मुये जानि पतिभुजहिं तब, लिखि समुझाई मोहि
महाराज रघुवंशमणि, याचन[1] आई तोहिं ॥ ३० ॥

छं०परसे चरण कर प्रेमपूरण प्रणतपाल खरारिके[2]
जिहिं नमत शंकर शेष सुर मुनि धरणिभंजनभारके[3]
प्रभु जानसो बिनती सुलोचनि करत कहि बिनती घनी
जय शोकहरण कृपालु जय जय जयति जयरघुकुलमनी,
प्रभु ब्रह्मरूप स्वभावशीतल अतुलबल त्रिभुवनधनी
जय हरण धरणीभार बाहु बिशाल खंडन खलअनी॥
तव दीनबन्धु दयालु अपरंपार सबगुणआकरे ॥
करुणानिधान सुजान शीलसनेहरूपउजागरे ॥ २॥
षटअष्ट[4] लोक जो रचत पालत प्रलय सो मायासुरी॥
केहि भांति बर्णौं नाथगुणगण नारि जड़मति बावरी॥
जेइ चरण ईश महेश शारद श्रुति निरन्तरध्यावहीं॥
हौं भूरि भाग सरोजपद सोइहर्षिशिरसिलगावहीं ३
छं०निरखतयुगचरणंअशरणशरणंतारणतरणंभयहरणं
जगकारणकरणं पोषणभरणं खलदलदरणं दुखटरणं
घनश्यामस्वरूपं अतिहिअनूपं सुरबरभूपंनररूपं॥
ज्यहि निगमनिरूपंअकलअरूपंकीनकुरूपंनखशूपं ४
पीताम्बरराजतअतिछबिछाजततडितसुलाजतसुखभ्राजत

---

१ मांगनेको. २ रामचन्द्रजीके. ३ नाशकारक. ४ चौदा.

सबकेशिरताजतगरिबनिवाजतसंतनकाजततनुसाजत
कटिसुभगसुहावनिसिंहलजावनिमुनिमनभावनिललचावनि
नाभीसुभगावनिअतिशयपावनिउपमालावनिछबिछावनि
अतिहृदयबिशाला गलबलमाला तलमृगछालाहैकाला
लोचन युगलाला भृकुटिबिशाला दिनदयालाजनपाला
कुण्डलयुगकाना सूर्यसमाना करतहि ध्याना मन माना
कर धरि धनुबानाकृपानिधानाकामलजानालखिबाना
मस्तकदिय चन्दन शिरजटबन्धनदशरथनन्दनसुरबन्दन
द्विजसन्तअनन्दन दुष्टनिकन्दन हरदुखद्वंदन यमकन्दन ॥
सुनि कीर्ति सुहाई शरणहिं आई सुन्दरताई मनभाई
दीजै रघुराई भक्ति सदाई करिय सहाई सुखदाई ७
गहकर बाणी सारंगपाणी सबगुणखानी रामबली ॥
सुरसुरभीरक्षक राक्षसभक्षक भक्तहिंरक्षकमानबली
मैं रिपु सुतनारी जानिअघारी अधिकारीनहिं दुखभारी
हरि बिरहदवारी[1] अतिभयकारी सहबहुबारी दुखकारी८
तब शरणन आई जनसुखदाईरघुराई करुणासागर
पतिमस्तक पाऊँ जरि सँगजाऊँ शिर पाऊँ शोभाआगर[2]
पतिममतनुत्यागीअतिबड़भागीअनुरागीजिनमुक्तिलही
ममता किमितासू बरणूँ आसू[3] जासुअचलजगपंक्तिरही९
यहिबिधिपदपंकजसेव्यरमा[4]अजशिरनमिद्वौकरजोरिरही

१ बियोगदावाग्नि. २ छबिका घर. ३ जल्दी. ४ लक्ष्मी.

सुनिपंकजलोचनबचनसुलोचनलोचनमेंजलधारबही

दो०अस प्रभु दीनबन्धु हरि, कारणरहितदयाल॥
तुलसीदास शठ ताहि भज, छाँडि़कपट जंजाल॥३१

तुम अन्तर्यामी भगवाना * नाहिं तेहि आदिमध्यअवसाना
करुणाबचन सुनत रघुबीरा * पुलक रोम भे शिथिलशरीरा॥
देहुँ जियाय तोर पति आजू * करहू लंक कल्पशत राजू ॥
छाँड़ि शोच अब मन हर्षाहू * तुरत भवन अपने फिर जाहू॥
सुनि अस सत्यसिंधुकर बानी * मनमें बनचर अतिभय मानी॥
कहि न सकत कछु प्रभुरुख देखी * कहा करब करतार बिशेखी ॥
सब देवनकर शोच न जाई * जो करि कृपा राम इहिं ज्याई

दो०राज बिभिषणलंककर, किहि बिधिकरिहहिं जाइ
समुझि वैर घननाद जब, गहहि शरासन धाइ ३२

मुखरुख देखि कपिन भय माना * प्रणतपाल भगवन्त सुजाना ॥
देखि बहुल रघुबरकर छोहू * बिनय करत दशकन्धपतोहू ॥
तुम उदार सब-देवेलायक * करुणामय देखे रघुनायक ॥
हमहुँ बिचारि दीख मनमाहीं * जीवनते अस मरण सराहीं ॥
भुजबल जीति लोक बश कीन्हे * चौदह भुवन भोग करि लीन्हे
रणतीरथ याचक[1] बड़ चीन्हा * प्राणसुधन लक्ष्मणकर दीन्हा॥
अब न उचित पति दै उपहारा * तेहिपर अधिक सो दर्श तुम्हारा
हमहूँ जाइ मरब सत साधी * मिलब तुमहिं जस मिलतसमाधी

दो० निर्मलगतिअवसर भयउ, सुनहु सत्य रघुबीर
तुमहिं मिलत नहिं होय भव[2], यथा सिंधुगत नीर ३३

१. माँगनेवाला. २ संसार.

मनकी जाननहार सुदेवा * भवसागर तारहु यह खेवा ॥
लीन्हेउ राम कपीश बुलाई * मेघनादशिर दीन्ह मँगाई ॥
पाय कृतारथ मानेउँ आपू * पिया बिरह-संभव परितापू ॥
अंचल पोंछत मुखकी धूरी * कहि मम प्राणसजीवनमूरी ॥
देख सँदेह कहत सुग्रीवा * भुज गहि लिखत जीहविन ग्रीवा
हँसिहहि बदन तौहि है साँची * नातर निशिचरमाया याँची ॥
कितअसज्ञान मृतकभुज गावा * जो मुनिवरसाधन नहिं पावा ॥
प्रभु अस कहेउ हँसब यह शीशा * करत कुतर्क न उचित कपीशा

दो०-शिरसों कहत सुलोचना, हँसहु बेगि ममनाथ
नातर सत्य न मानिहैं लिखा जो तुम्हरे हाथ ॥ ३४॥

क्षणक बिलम्ब कीन्ह नाहिं बोला* मृतकबदन मूँदत नहिं खोला॥
पुनि पुनि कहत सोनागकुमारी * श्रमित भयउ रणमें करि मारी
लगे लषणशर क्षोभ बढावा * प्रभुसमीप कस मोहिं लजावा॥
जो मन बचन करम यह देही * पतिदेवता न आन सनेही ॥
तौप्रभुसभाबीच शिर बोलै * रहहि छाय यश सुयश अमोलै
जो जानत तव यह गति साँई * बोल पठावत पितहिं सहाई ॥
सुनि तियबचन हँसेउ तब शीशा * चौंके चकित भालु भट कीशा
हँसेउ ठठाय बदन सब देखा * बिस्मय भयउ सकल जिहिपेखा
कुलिशसमान सुना नाहिं जाई * रहेउ सो बदन बहुरि अरगाई ॥
सकुच कपिशाहिं तोषेउ नारी * बड़ आश्चर्य भयो बनचारी ॥
पूँछत कपिपति पद शिर नाई * कारण कवन हँसा शिर साँई ॥
प्रभु कह सुनु सुग्रीव कपीशा * शीशहँसेकर सुनहुँ अदीसा ॥

१ वज्रसदृश. २ बानरोंको.

मन क्रम बचन पतिहिं सेवकाई * तियहित इहिसम न आन उपाई
अस जिय जानि करहिं पतिसेवा * तिहिपर सानुकूल मुनि-देवा ॥
यह संतवति अहिराजकुमारी * तेहि सतते हँसि शीश सुगरी ॥
सुनि प्रभुबचन कपिन सुखमाना * पुनि पुनि चरण गहे हनुमाना
सुनु गिरिजा अस प्रभुप्रभुताई * केवल भक्तहिं देत बड़ाई ॥
जासु दृष्टि जग उपजत नाशा * अस कौतुककर केतिक आशा॥

दो॰ शीशपाइप्रभुचरणगहि,बहुबिधिविनयसुनाय ॥
आजकोदिनरणपरिहरहु,ममहितकोशलराय॥३५

बहुरि बिभीषणपगन परी सो * रघुपतिचरण दिये मन पुनि.सो॥
तुम पितुसम दशकन्धरभाई * इहि कुलकी तोहिं लाज बड़ाई॥
मुनिपुलस्त्य- परिवारकजीपा * पायउ फल रघुबीर-समिपा॥
महामोहबश अनभल माना * ज्ञान भयो तब गुण पहिंचाना॥
युग युग करहु अकण्टक राजू * सहित सुकीरति सुकृतसमाजू ॥
सुमिरत तुमहिं सुजन गति पावा * रघुपतिचरितसंग कर गावा ॥
सुनत बिभीषण मन करुणाभर * प्रगट न कहत समय बिरहाकर ॥
कालकर्मगति कह समुझाई * जली तुरत गुरु आयसु पाई ॥

दो॰ बाहर करि कपिकटकते,फिरेउबिभीषणआप ॥
बिसरेउदशमुखबैरहीं, हृदयअधिकसन्ताप ॥३६॥

शिर चढ़ाइ पालकी चढ़ी सो * रघुपतिकृपा-प्रभाव-बढ़ीसो ॥
हृदय राखि मूरति घनश्यामा * रसना रटत निरन्तर नामा ॥
सरितसिन्धुसंगम जहं पावन * अस सुधि पाय गयो तहँ रावन ॥
संग मंदोदरि सब रानिबासू * मनो शोकरबि कीन्ह प्रकासू॥

१ सती. २ जीभसे.

पाय रजायसु सेवक धाये * चन्दन अगर सुगँधे बहु लाये॥
रचि दृढ़दारुन चिता बनाई * जनु सुरलोक-निशेनी लाई ॥
करि प्रणाम सबजन परितोषी * धीरज धरेसि तासु मति पोषी
शिर भुज धरि बैठी करि आसन * भइ जनु योगसिद्धिकर भाजन

दो०देखि अनलज्वाला बढी, लपट गगनलगि जाय
लखी न काहु जात तेहिं, सुरपुर पहुँची आय ॥३७॥

॥ इति क्षेपक ॥

सुतबध सुना दशानन जबहीं * संभ्रम मूर्च्छि परा महि तबहीं ॥
दुखित भयउ लोचन भरि आवा * जनु निजमणि अहिराज गँवावा
हा सुत सन्तत आज्ञाकारी * करि बिलाप दशकन्ध पुकारी ॥
शक्रआदि जीतेउ सब देवा * सुरमुनिबन्दि करायहु सेवा ॥
दूसर रहा न भुजबलदापा * स्वर्ग भूमितल तपेउ प्रतापा ॥
इहिबिधि कर बिलाप लंकेशा * भयउ तेजहत सुन उरगेशा ॥
मन्दोदरी रुदन करि भारी * उर ताड़ति बहुभांति पुकारी ॥
नगरलोग सब व्याकुल शोचा * सकल कहहिं दशकंधर पोचा॥

दो०तब दशकन्ध अनेकबिधि, समुझाई सब नारि ॥
नश्वररूप प्रपंच सब, देखहु हृदय बिचारि ॥ ९१ ॥

वचन सुनत तेहिं कछु सुखमाना * कालविवश जिमि तीरथमाना॥
तिनहिं ज्ञान उपदेशेउ रावण * आपन मन्द कथा अतिपावन॥
परउपदेशकुशल बहुतेरे * जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥
तासु क्रिया करि निशिचरनाहा * भयउ शोचवश अति उर दाहा
सचिव आइ सब लगे बुझावन * बादि बिषाद करिय जनि रावन

१ आज्ञा. २ सुगंधित. ३ अग्निकी ज्वाला. ४ शोषने.

सुत बित नारि त्रिबिधसुख कैसे * उपजहिं घटा जाहिं नभ जैसे ॥
तडित बिदित देखिय घनमाहीं * रहै न थिर तहँ तुरत छिपाहीं ॥
यह जिय जानिसुनहुँदशभाला * बचहि न कोउजगआयेकाला ॥
अब प्रभु यत्न बिचारहु सोई * रिपुकर नाशजवनबिधि होई ॥

अथ क्षेपक ॥

**दो०लागेउ करन बिचार पुनि, बहुप्रकारदशशीश ॥
समुझि हृदय अहिरावणहिं, आयउ जहां गिरीश ३८**

दण्ड चारि तब तहँ निशि बीती * सन्ध्यावन्दन कीन्ह सप्रीती ॥
लागेउ करन ध्यान दशशीसा * करि हर्षित सपुट भुजबीसा ॥
शंकरसेवक अतिअनुरागी * सुनु खगेश तेहिते बड़भागी ॥
मंत्राकर्षण जपि दशमाला * अहिरावणचित डोल पताला ॥
लगेउ करन सो मन अनुमाना * केहिकारण दशमुखअकुलाना ॥
निशिचरनाह भुवन बश जाके * जीतनकहँ न बीर कोउताके ॥
मन क्रम बचन आन नहिं सेवी * धरेउ ध्यान उर कामद देवी ॥
चलेउ बहुरि आयउ सो तहँवा * शिवमण्डप रावण रह जहँवा ॥
निशिचरपति कहि तेहिं शिर नायउ * कर गहि निजआसन बैठायउ ॥

**दो०अहिरावण तब रावणहिं, बूझी कुशल सप्रीति ॥
प्रथम कही तेहिं सब कथा, जैसे भगिनिअनीति ॥३९**

बध खर दूषण जिमि सुधि पाई * मृगमारीचकपटकृत भाई ॥
कहेसि बहुरि सीताकर हरणा * लंकदहन हनुमतकर बरणा ॥
सेतु बांधि जिमि प्रभु चलिआयउ * बालिकुमार बिबाद सुनायउ ॥
अनी अकम्पन अरु अतिकाया * परे समरमहि सुनु अहिराया ॥

---

१ मेघ. २ महादेवजी. ३ अहिरावण.

तात कुशल अब सबै सिरानी * कटकनिशाचरसकलनशानी ॥
कुम्भकर्ण घननादहु मोरे * राम लषण दुइमनुजबिचारे ॥
आनिहुँ बोलि तोहिं निजपासा * कहहु सो यत्न होय रिपुनाशा॥
सुनत शोच भा अहिरावणमन * बोला बचन सुहावन पावन ॥
सुन रावण जग नीति पियारी * करे अनीति होय भयभारी ॥
बिना बिचारि रारि तुम ठानी * कीन्ह सेनकुलसर्वसहानी ॥
मनुजप्रतापप्रभाव न जानेउँ * सबते बड़ तेहिं लघु कर मानेउ॥
यदपि न योग मोहिं अस बाता * तदपि हरहुं तवलगि दोउ भ्राता
लै पताल देबिहिं बलि दैहौं * यश पूरणनिशिचरकुल लैहौं ॥
लै जैहौं तुम जानेउँ तबहीं * रबिसम तेज होइ निशिंजबहीं॥

दो०कहि अस बचन प्रबोध करि, शीर्ष नाइबलभाखि
आयउ रघुपतिकटक[2] तब, निजदेबिहिं उर राखि४०

सूझ न निजकर अति अँधियारी * मर्कट[3] भट जागाहिं तहँ भारी ॥
कहहिं जयतिजयजयतिकृपाला *अतिहि अगमजहँनाहिंगतिकाला
तहँ मारुतसुत रचेउ उपाई * करि लंगूर कोट–कठिनाई ॥
सो शोभा इहि भांति सुनाई * भुजगराज कुंडली लगाई ॥
देखिय उन्नत शैलसमाना * द्वार जहां तहँ मुख हनुमाना ॥
देखि हृदय अहिरावण हारा * किमिरबिगृहकरतिमिर[4]पसारा ॥
एकौ युक्ति न मन ठहरानी * कपटबेष तेहिं कीन्ह भवानी ॥
बेष बिभीषण सब अनुहारी * पवनतनयपहँ गा छलकारी ॥

दो०सहजप्रतापी पवनसुत, पुनि सुरपतिपतिदास॥
तिनहिं निदरि चल रामपहँ.मूढ हृदय नहिं त्रास ४१

१ रात्रिमें. २ रामचन्द्रजीकी फौजमें. ३ बानर. ४ अंधकार.

मर्म न जान प्रभंजनजाता * कीन्हेसि गमन बिभीषणगाता
ठाढ़ होहु बोलेउ सुनु भ्राता * चलेउँ जहाँ कृपालु जनत्राता॥
मैं रघुपतिसन आयसु पाई * सन्ध्याकरन गयउँ सुनु भाई ॥
तेहिते तुरत चलेउँ प्रभुपाहीं * भइ बिलम्ब जनि रामरिसाहीं॥
सत्य बचन कपि निजमन माना* सुनु खगेश भावी बलवाना ॥
कपटचतुरगति जानि न जाई * परमन हरै हरिहि धन भाई ॥
आयसु पाइ गयउ सो तहँवाँ * रह फणीश प्रभु दोऊ जहँवाँ ॥
कपिपति जाम्बवंत नलनीला* बालीसुत सुषेण बलशीला ॥

दो०॥ द्विबिद मयन्दऽरु कीशगण, गय गवाक्ष कपिबीर
सहित बिभीषण अपरभट, सोये सब रणधीर ४२

तिनहिं मध्य रावणशशिराहू * एकसंग सोवत फणिनाहू॥
दक्षिणदिशि सोवत रघुनाथा * अनुज[2] बामदिशि तेहिपर हाथा
प्रभुकर करपर राजत कैसे * जातरूप[3] पंकजमणि जैसे ॥
कपिसमूह जनु सागर क्षीरा * तहँ सोये मानहुँ दोउ बीरा ॥
सुभग बाण धनु धेर बनाई * लक्ष्मणसह समीप रघुराई ॥
अहिरावण मन कीन्ह प्रणामा * देखि राम सुन्दर घनश्यामा॥
ब्रह्मादिक जेहिं ध्यान न पावहिं* मुनि महेश पूजा मन लावहिं॥
करहिं बिबिधि जप योगबिरागी*जपहिं निरन्तरनिशिदिनजागी ॥
सो प्रभु तहिं देखा भरि लोचन * कृपासिन्धु सेवक-भयमोचन ॥
बहुरि हृदय तेहिं कीन्ह बिचारा*करहुँ काज रावण अनुसारा॥
कछु निजमायाकृत गुण आई*कवनी भांति जाहि दोउ भाई ॥

दो०॥ मोहनते मोहे सकल, मंत्रनते मुख मूंदि ॥

---

१ हनूमान. २ भाई लक्ष्मण. ३ सुवर्णमें.

भयउ अदृश्य उठाइ करि, प्रभुहिं चलेउ लै कूदि ४३

याहिविधि गयउ दुहुँन लै सोई * नभमारग प्रकाश अति होई ॥
सो प्रकाश जब रावण देखा * किय प्रमाण तेहि बचन विशेखा
मनमहँ हर्ष कराहिं अतिभागी * अहिरावण लै गा असुरारी ॥
लै निजलोक गयउ पलमाहीं * भयउ शोर तब कपिदलमाहीं॥
जागे बानर श्रीहतभागी * देखिय जिमि सरिता बिनुबारी
पुनिदेखियजिमिनिशिबिनुइन्दू * भे बानर जिमि उडुगिन चन्दू ॥
रवि बिनु दिवस जीव बिनु देहा * जिमि देखिय दीपकबिन गेहा ॥
एकहि एक लगे तब बूझन * कहाँ गये त्रैलोक्यबिभूषण ॥

दो० शोधेउ सब मिलि कटकतिन, नहिंपायेदोउबीर
भयव्याकुल सब भालु कपि, जिमि जलचर गतनीर

सकलकहहिं यहविधिकहकीन्हा * रघुपतिबिरह प्राण कत लीन्हा॥
शोकग्रसित धरि सकहिं न धीरा * कहां राम लक्ष्मण दोउ बीरा॥
करुणा करहिं कपीश अपारा * बनी बात बिधि कहा बिगारा
कटक निशाचर सकल सँहारी * रहा एक रिपु रावण भारी ॥
सोउ न रहत रामशर लागे * भाइउ हम सब परमअभागे ॥
कबहुँ जोदशशिरअरिरणजीतहिं * उत्तर कवन देब हम सीतहिं ॥
अस कहि बिकल मूर्छि महिपरे * लागत बज्र शैलजिमि गिरे ॥
दशा बिभीषण कही न जाई * बिगत बत्स जनु धेनु लवाई ॥

दो० सहितपवनसुत ऋक्षपति, दुख मन भा बड़िभाँति
खगपति सूझ न कतहुँ कछु, तम अपार तिहिं राति ४५

पवनतनय पुनि कह सब पाहीं * बिस्मय एक होत मनमाहीं ॥

१ आकाशमार्गमें. २ राम और लक्ष्मणजीको. ३ चन्द्र. ४ गरुडजी.

कोउ इक आव बिभीषणवेषा * प्रभुके निकट जात हम देखा॥
पूँछत बचन कहेसि अतिनीका * कपट न जानिय निशिचरजीका
बचन सुनत बोलेउ लंकेशा * अहिरावण लै गा अवधेशा ॥
पन्नगलोक-निबासी सोई * मम तनुबेष अवर नहिं कोई॥
महाबली जानै सब माया * निश्चय तेहिं दशशीश पठाया ॥
जेहि बल होइ तहाँ सो जाई * ताहि जीति आनै दोउ भाई ॥
कहेउ भालुपति सुनु हनुमाना * तव बल तात सकल जग जाना
बेगि सो यत्न बिचारहु ताता * कृपासिन्धु आनहु दोउ भ्राता॥

दो०बिलखि कहेउ कपिपति बहुरि, सुनु मारुतसुततात
बिनुरघुनायक जन्म धिग, पलयुगसरिस बिहात४६

यथा तृषित बिनुबारिदबारी * रबिबिन जलज मीन बिनुबारी
भट अशस्त्र रण अनी अनाथा * वह्नि अनिन्धन गा तनुमाथा॥
दीप अबर्ति सकलक्षणभंगी * तिमि हम सब देखिय बजरंगी॥
जिमि सीतासुधि भेषज आनी * तेहि प्रकार आनहु सुखदानी॥
सुनत बचन मारुतसुत बोला * राखहु चित थिर कटक अडोला
भुवन चारिदश तीनिहुँ लोका * आनहुँ प्रभुबल प्रभु तजु शोका
अब तुम सजग रहेउ सब भाई * लरेहु कालसन जो चढ़ि आई
असकहि सक्त चलेउ हनुमाना * गर्जत प्रलयपयोधिसमाना ॥
चलत बाट इक तरुतर गयऊ * गीधिनि गीध कहत अस भयऊ

दो०नारि गर्भिणी गृध्रकर, बोली पतिसन बैन ॥
आनहु आमिष मनुज पिय, खाहुँ होइ जिय चैन ॥

तासु बचन सुनि खग अस कहेऊ* अहिरावण रामहिं लै गयऊ ॥

१ जांबवानने. २ मेघके जलविना. ३ कमल. ४ फौज.

देइहि बलि देबिहिं सो जाई * सो आमिष[1] बड भाग न पाई॥
कवनेउ यत्न देब मैं आनी * अस कहि बिहँग बोम सनमानी
जबहिं पवनसुत अस सुधि पाई * चलेउ तहाँ सुमिरत रघुराई ॥
अभय प्लवंग[3] पतालहिं गयऊ * अहिरावणपुर प्रबिशत भयऊ॥
द्वारपाल मकरध्वज कीशा * कपिसन डाटि कहत बहुरीशा
निदरि जातमोहिंतोहिंडरनाहीं * दीपहिं जिमि न पतंग[4] डराहीं ॥
जानेसि मोहिं न मरुतसुतबालक* स्वामिभक्त भंजन मुखकालक

सो०सुनत बचन हनुमान, बोलत भे बिस्मयबिबश
अरे मूढ अज्ञान, मोरे सुत सपनेहुँ नहीं ॥ १ ॥

कहत बचन शठसंयुत खोरी * काम बिबश कब भइ मतिमोरी
मम सुन बनसि मूढ केहि काजा * यतना कहत तोहिं नहिं लाजा
केहि प्रकार तैं मम सुत भयऊ * निजउत्पति मोसन किन कहऊ
सुनत कहहि मकरध्वज बचना* किहेउ दाह रावणपुररचना ॥
जब आयउ चलि उदधिसमीपा* बहेउ स्वेद तब तनु कपिदीपा
सो प्रस्वेद[5] सागरमहँ गयऊ * पियेउ मीन[6] तेहिते मैं भयँऊ ॥
यहिप्रकार मैं तव सुत ताता * गोपहुँ नाहिं निजपिता न माता
अहिरावणसेवा मैं करहूँ * राखहुँ द्वार न कबहूँ टरहूँ ॥

दो०सत्य बचन हनुमान कहि, पुनि पूँछीसब बात॥
लावा लक्ष्मणरामकहँ, काह करत सो तात ॥४८॥

कहहु तात तेहि थलको नाऊँ * जान चहौ मैं तव प्रभु ठाऊँ॥
यह वृत्तांत अस जानहुँ ताता * यह मैं श्रवण सुनेउँ कछु बाता
सीतापति अरु फणिपति साथा* सो लै आयउ निशिचरनाथा॥

१ मांस. २ स्त्री. ३ हनुमान्जी. ४ पांखी. ५ पसीना. ६ मछरीनें.

करत होम तेहिकारण आजू * देबिहिं बालि देई नृपराजू ॥
जोकछुनिजश्रवणनसुनिपायउँ * तात सकल सो तुमहि सुनायउँ
निजप्रभुकाजलागि दुख सहेऊँ * तुमसन सत्य बचन मैं कहेऊँ॥
जान कहहु तुम जान न देऊँ * प्रभु आज्ञा तजि अयश न लेऊँ॥
सुनि असपेलिचलेउहनुमाना * भयउ क्रोध मकरध्वज जाना ॥

दो० तेहिं मुष्टिक कपिकहँ हनेउ, पुनिमारेउकपिताहि
हनहिं परस्पर एक इक, बल समान घट नाहिं ४९

एकहि एक सकहिं नहिं मारी * पिता पुत्र दोऊ भट भारी ॥
सुतहिं पूँछसों बाँधि भवानी * चलेउ वातसुत लंब[1] न आनी
धरि लघुरूप होमगृह देखा * जीव सजीव परे नाहिं लेखा ॥
तहँ देबीकर मण्डप रहई * शोणित[2]घट बहु को कहिसकई
बिबिधभांति मेवा पकवाना * धरे आनि देवीअस्थाना ॥
मालिनि तहँ प्रसून लै आई * सुमनमध्य प्रबिशेउ कपिराई ॥
सुमनहुते करि अतिहलुकाई * लेत पाणि[3] जेंहि जानि न जाई
जब देबिहिं सो पुष्प चढ़ायउ * बिकट रूप तबकपि दिखरायउ

दो० छुवत चरण देबी तुरत, धरणी रही समाइ ॥
मुख बगारि ठाढे भये, कपिछबि लखत डराइ ५०

देवीप्रगट समुझ खलझारी * करहिं बिचार हृदय अतिभारी
कहहिं कि देवि प्रगट भइ आजू * बड़भागी भा निशिचरराजू ॥
करि प्रणाम पुनि पूजा करहीं * जो चढ़ाव सो कपिमुख परहीं॥
जो जहँ रही बस्तुसमुदाई * बचा न एकौ सब कपि खाई ॥
कपि खिलारि कौतुक बिस्तारा * भा चह निशिचरकुलसंहारा ॥

---

१ देर नहीं किया. २ रुधिरके घड़े. ३ हाथमें.

अहिरावणउर भा सुख कैसे * चढ़े कांधपर बलिपशु जैसे ॥
जबहीं होय सिद्ध तेहिं जाना * लक्ष्मण राम तुरत तहँ आना
ठाढ़ कीन्ह प्रभुकहँ तह आनी * निशिचर बहु आयुध धरिपानी
कोउ गदा कोऊ धनु बाणा * शक्तिशूल धरि कोउ कृपाणा ॥

दो०-तोमर मुद्गर परशु असि, पासि परिघ अरु बेत
शूल भुशुण्डी पट्टि परशु देखत बिसरतं चेत ५१ ॥

मयाबलते सकल बिचक्षण * अतिबिकारमय मूढ़ कुलक्षण॥
यहिविधि सकल बीर तहँ रहहीं * अहिरावण आज्ञा दृढ़ गहहीं ॥
आयसु पाइ खड्ग[१] तिन्ह काढे * मारनकहँ प्रभुपर भे ठाढ़े ॥
कोउ कह राजनीति अनुसरहू * भरि त्रयदण्ड[२] बिलँब अब करहू
पुनि अस बचन मूढ़मति कहहीं* सुमिरहु जो तुम्हरे हितु अहहीं
नाहित काल आइ नियराना * निशास्वप्नसम[३] दोउ जनप्राना॥

दो०-फणिपति चितवत रामतन, रामचितवअहिराज ॥
प्रभुकर कौतुक कहिय किमि, सुनै दशा खगराज५२

बोलहिं मूढ़ असम्भव बानी * सकुच लगे सो कहत भवानी॥
बिहँसि कीन्ह प्रभु हृदय बिचारा* जँपै सकलजग नाम हमारा ॥
जाना देबि-रूप हनुमाना * बिहँसि कहा तब राम सुजाना
कालकौर तुम सुमिरहु रक्षक * भई तुम्हारि देबी तुव भक्षक॥
सुनत गिरा तिन मारन ठयऊ * घनसमान कपि गर्जत भयऊ॥
निशिचर सकल त्रसित भे भारी * कहहिं बचन भय हृदय बिचारी
अहिरावण भल कीन्ह न काजू * आनेसि कपटबेष सुरराजू ॥
तेहिते देबि क्रुद्ध भइ आजू * अब भा सबकर मरणसमाजू॥

१ तलवार. २ तीन दण्डभर. ३ रात्रीके स्वप्नके समान

संभ्रमवश तब निशिचरझारी * बहुरि कीशे गर्जेउ अतिभारी॥

दो०प्रगट रूप करि पवनसुत, अट्टहास गम्भीर॥
अतिभयत्रासित रजनिचर, सुनहु उमा मतिधीर॥

डगमगान निशिचर अभिमानी * मारुतवेग यथा नदिपानी॥
तेहि क्षण कपि लीन्हे दोउ भाई * धुनत तूल निशिचरसमुदाई॥
छीनि कृपाण लीन्ह हनुमाना * काटत भुज शिर कृषीसमाना
खण्ड खण्ड तब खलदलकीन्हा * गहि पद डारि अनलमहँ दीन्हा
करि लँगूरकोट कपिराई * तेहिमहँफिरि कोउभागिनजाई
इहिविधि सब निशिचरसंहारे * अहिरावण लखि बचन उचारे॥
रेकपि ढीठ त्रास नहिं तोहीं * अहिरावण तैं जान न मोहीं॥
जम्बुमालिकहँ जिमि तैं मारा * अरु रावणसुत हतेउ विचारा॥

दो०कालनेमिसम नाहिं मैं, करु कपि बचनप्रमान
असकहि खड्गप्रहार किय, कपितन वज्रसमान॥५४॥

लै असि ताहि पवनसुत मारा * काटि शीश पावकमहँ डारा॥
आहुति पूर्ण दीन्ह तब कीशा * लैपुनि जलेउ लषण जगदीशा॥
मकरध्वज प्रणाम तब कीन्हा * बन्धन छोरि राज तेहिं दीन्हा॥
इहाँ राज भोगहु तुम ताता * भजहु सदा मम प्रभु दोउ भ्राता
अस कहि कपि निजदलसोआवा * हर्षेउ कटक सबनि सुख पावा॥
मृतकशरीर प्राण जिमि आवहिं * मणिगण पाय फणी[2] सुख पावहिं
बिछुरि अलभ्य मिले जनु आई * तिमि हर्षे सब लखि दोउ भाई

दो०जाम्बवन्तअंगदसहित, मिले भालु अरु कीश
सन्माने कहि बचन प्रिय, लषण कोशलाधीश ५५॥

१ हनुमान्जी. २ सर्प.

बहुरि सबहिं भेटे हनुमाना * कहहिं तात तुम राखे प्राना ॥
देवन सुमनवृष्टि तब कीन्हीं * प्रमुदितहृदय दुन्दुभी दीन्हीं ॥
अनुजसहित हर्षित रघुबीरा * कहेउ बचन सुनु तनयसमीरा॥
तव समान नाहिं कोउ हितकारी* सुरमुनिसिद्धमनुजतनुधारी ॥
यश तुम्हार त्रिभुवनमहँ भयऊ * सुनिप्रभुबचन चरण कपिनयऊ
नाथ कीन्ह सब मैं केहि लेखे * तरणी चलत अगम जलदेखे॥
तैसे सब प्रताप तव नाथा *सुनि अस मिले कपिहिं रघुनाथा
कीटकसहित हर्षे दोउ भाई * तेहि अवसरसुख किमि कहिजाई
उहाँ दशानन सब सुधि पई * दूत सँदेश दीन्ह सब जाई ॥
अहिरावणकर बध सुनि काना * भयउ तेजहत अतिदुख माना
बचन बज्रसम लागेउ ताही * संभ्रम मूर्छि परेउ महिमाहीं ॥
कटे पंख जिमि बिहँग बिहाला * रंके चीरगत निशि हिमकाला ॥
मुख सुखान लोचन जल बहई * बचन न आव शीश धुनि रहई

दो०मयतनया तब आइ पुनि बहु प्रकार समुझाइ ॥
मान न मूरुख कालबश, परमक्रोधकहँ पाइ ॥ ५६ ॥

इति क्षेपक ॥

इहिविधि जलपत भामिनुसारा * लगे भालु कपि चारिहुं द्वारा॥
सुभट बोलाइ दशानन बोला * रणसन्मुख जाकर मन डोला ॥
सो अबहीं बरु जाहु पराई * रणसन्मुख भागे न भलाई ॥
निजभुजबल मैं बैर बढ़ावा * देहौं उतर जो रिपु चढ़ि आवा
असकहि मरुतबेग रथ साजा * बाजहिं सकल जुझाऊ बाजा ॥
चले बीर सब अतुलित बली * जनु कज्जल गिरि आँधी चली

१ नगारे. २ पवनपुत्र. ३ नौका. ४ पक्षी. ५ दरिद्री. ६ हिमऋतुकी.

अशकुन अमित होहिं तेहि काला * गनै न भुजबल गर्व बिशाला ॥

छंद॥ अतिगर्बगनहिनशकुनअशकुनश्रवहिआयुधहाथते भट गिरहिंरथते बाजि गज चिक्करत भाजत साथते गोमायु गृद्ध शृगाल खररव श्वान बोलहिं अतिघने जनु कालदूत उलूक बोलहिं सकल परम भयावने

दो॰ ताहिकिसम्पतिशकुनशुभ, सपनहुँ मनबिश्राम भूतद्रोहरत मोहबश, रामबिमुख रत काम ॥ ९२॥

चली निशाचर अनी अपारा * चतुरंगिणी चमू बहुधारा ॥
बिबिधिभांति बाहन रथ याना * बिपुल बरण पताकध्वजनाना॥
चले मत्त गज यूथ घनेरे * मनहुँ जलद मारुतके प्रेरे ॥
बरण बरण बर दैत्यनिकाया * समरशूर जानहिं बहु माया ॥
अतिबिचित्र बाहिनी बिराजी * बीर बसन्तसेन जनु साजी ॥
चलत कटकदिगसिन्धुर डगहीं * क्षुभितपयोधिकुधरडगमगहीं ॥
उठी रेणु रबि गयउ छिपाई * पवन थकित बसुधा अकुलाई
पणव निशान घोर रव बाजहिं * महाप्रलयके जनु घन गाजहिं
भेरि नफीरि बाजु सहनाई * मारू-राग शूर सुखदाई ॥
केहरिनाद बीर सब करहीं * निजनिज बल पौरुष अनुसरहीं
कहै दशानन सुनहुँ सुभट्टा * मर्दहु भालु कपिनकर ठट्टा ॥
हौं मारिहौं भूप दोउ भाई * अस कहि सन्मुख फौज चलाई
यहसुधि सकल कपिन जब पाई * धाये करि रघुबीर-दुहाई ॥

छंद॥ धाये बिशाल कराल मर्कट भालु कालसमानते मानहुँ सपक्ष उडाहिं भूधरवृन्द नाना बाणते ॥

१ गिरते हैं. २ सृगाल. ३ फौज. ४ मेघ ५ हाथी.

नख दशन शैलन करन द्रुम गहि सबल शंकनमानहीं
जय राम रावण मत्तगज मृगराज सुयश सुनावहीं ६

दो०दुहुँदिशि जयजयकार करि,निज निज जोरीजानि
भिरेबीर इत रघुपतिहिं, उत रावणहिं बखानि ९३

रावण रथी बिरथ रघुबीरा * देखि बिभीषण भयउ अधीरा
अधिक प्रीति उर भा संदेहा * बन्दि चरण कह सहित सनेहा
नाथ न रथ नाहीं पदत्राना * केहिबिधि जीतब रिपु बलवाना
सुनहु सखा कह कृपानिधाना * जेहि जय होइ सो स्यन्दन आना
शौरज धर्म जाहि रथ चाका * सत्यशील दृढ़ ध्वजा पताका ॥
बल बिबेक दम परहित घोरे * क्षमा दया समता रजु जोरे ॥
ईशभजन सारथी सुजाना * बिरति चर्म[1] सन्तोष कृपाना[2] ॥
दान परशु बुधि शक्ति प्रचण्डा * बर बिज्ञान कठिन कोदण्डा ॥
संयम-नियम-शिलीमुख[3] नाना * अमल अचलमन त्रोण[4] समाना ॥
कवच अभेद बिप्रपद-पूजा * इहिसम बिजय उपाय न दूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके * जीतनकहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥

दो०महाघोर संसार रिपु, जीति सकै को बीर ॥
जाके अस रथ होइ दृढ, सुनहु सखा मति धीर९४
सुनत बिभीषण प्रभुबचन, हर्षि गहे पदकंज ॥
इहिबिधि मोहिं उपदेश किय,रामकृपासुखपुंज९५
उत प्रचार दशकन्धर, इत अंगद हनुमान ॥
लरत निशाचर भानुकपि,करिनिजनिजप्रभुआन९६

---

१ ढाल. २ तरवार. ३ बाण ४ तरकस.

सुर ब्रह्मादि सिद्ध मुनि नाना * देखहिं रण नभ चढ़े बिमाना ॥
मैंहुँ उमा रहेउँ तेहि संगा * देखत रामचरित रण–रंगा ॥
सुभट समर रस दुहुँ दिशि माते * कपि जयशील राम बल ताते
एक एकसन भिरहिं प्रचारहिं * एक एक मर्दहिं महि पारहिं॥
मारहिं काटहिं धरणि पछारहिं * शीश तोरि गहि भुजा उपारहिं
उदर बिदारहिं भुजा उपारहिं * गहि पद अवनिपटकिभटडारहीं
निशिचर भट महि गाडहिं भालू * ऊपर डारि देहिं बहु बालू ॥
बीर बलीमुख युद्धबिरुद्धा * देखिय बिपुल काल जनु क्रुद्धा

छंद–क्रुद्ध कृतांतसमानकपितनुश्रवतशोणितराजहीं
मर्दहिं निशाचरकटकभट बलवन्तजिमिघनगाजहीं
मारहिं चपेटन काटि दाँतन डारि लातन मीजहीं ॥
चिक्करहिंमर्कटभालुछलबलकराहिंजेहिखलछीजहीं
धरिगालफारहिंउरबिदारहिंगलअँतावलिमेलहीं
प्रह्लादपति जनुबिबिधतनु धरिसमरअंगनखेलहीं
धरु मारुकाटि पछारुघोरगिरागगन महिभरिरही ॥
जयरामजोतृणतेकुलिशकरुकुलिशते करुतृणसही

दो०–निजदलबिचल बिलोकि तब, बीस भुजा दशचाप
चला दशानन कोप करि, फिरहु फिरहु करि दाप९७

धावा परमक्रोधि दशकन्धर * सन्मुख चले हूह करि बन्दर ॥
गहि कर पादप उपल पहारा * डारहिं तेहि पर एकहि बारा॥
लागहिं शैल बज्र तनु तासू * खण्ड खण्ड होइ फूटहिं आसू ॥

१ पार्वती २ वानर. ३ रुधिर. ४ नृसिंह. ५ पत्थर. ६ जल्दी.

चला न अचल रहा रथ रोपी * रणदुर्मद रावण अतिकोपी ॥
इत उत झपटिदपटि कपि योधा* मर्दै लाग भयो अतिक्रोधा ॥
चले पराय भालु कपि नाना * त्राहि त्राहि अंगद हनुमाना ॥
पाहि पाहि रघुबीर गुसाईं * यह खल आव कालकी नाईं॥
तेहि देखे कपि सकल पराने * दशहु चाप सायक सन्धाने ॥

छन्द॥ संधानिधनुशरनिकरछाँडेसिउरगजिमिउड़िलागहीं
रह पूरिशरधरणीगगनदिशिबिदिशिकहँकपिभाजहीं
भाअतिकोलाहलबिकलदलकपिभालुबोलहिंआतुरे
रघुबीर करुणासिन्धु आरतबन्धु जन रक्षा करे १

दो॰ बिचलत देखा कपिकटक कटि निषंग धनु हाथ
लक्ष्मण चले सकोप तब, नाइ रामपद माथ ॥९८॥

रे खल का मारसि कपि भालू * मोहिं बिलोकु तोर मैं कालू॥
खोजत रहेउँ तोहिं सुतघाती * आजु निपाति जुड़ावों छाती॥
कहि अस छाँडेसि बाण प्रचण्डा* लक्ष्मण किये तुरत शतखण्डा॥
कोटिन आयुध रावण डारे * तिलप्रमाण प्रभु काटि निवारे॥
पुनि निज बाणन कीन्ह प्रहारा * स्यन्दन[1] भंजि सारथी मारा ॥
शत-शत-शर मारे दशभाला * गिरिशृङ्गन जनुप्रबिशहिं ब्याला[2]
पुनि शतशर मारे उरमाहीं *परेउ अवनि[3] तन सुधि कछु नाहीं
उठा प्रबल पुनि मूर्छा जागी * छाँड़ेसि ब्रह्मदत्त जो साँगी ॥

छन्द॥ जो ब्रह्मदत्तप्रचण्ड शक्तिअनन्तउरलागिसही
परेउबिकलबीरउठावदशमुखअतुलबलमहिमारही

१ रथ. २ सर्प. ३ पृथ्वीपर.

ब्रह्माण्ड भुवन बिराज जाके एक शिर जिमि रजकनी
तेहि चह उठावन मूढ़ रावन जान नहिं त्रिभुवनधनी
दो०देखत धावा पवनसुत, बोलत बचन कठोर ॥
आवत तेहि उरमहँ हनेउ, मुष्टिप्रहार प्रघोर ९९ ॥
जानु टेकि कपि भूमि न परेउ * उठा सँभारि बहुरि रिस भरेऊ॥
मुठिका एक ताहि कपि मारा * परेउ शैल जिमि बज्रप्रहारा ॥
मूर्च्छा गई बहुरि सो जागा * कपिबल बिपुल सराहन लागा
धृक धृक धृक बल पौरुष मोही* जो तैं जियत उठा सुरद्रोही ॥
अस कहि कपिलक्ष्मणकहँल्यावा*देखि दशानन बिस्मय पावा ॥
"चैत्रकृष्ण नवमी दिन धीरा * अनुजै लखि मूर्छित रघुबीरा ॥
कह रघुबीर समुझि जिय भ्राता*तुम कृतान्तभक्षक सुरत्राता ॥
सुनत बचन उठि बैठ कृपाला * गगन[1] गई सो शक्ति कराला॥
पुनि कोदण्ड बाण गहि धाये * रिपुसन्मुख अति आतुर आये॥
छन्द आतुरबहोरिबिभंजिस्यंदन[2]मारितेहिंव्याकुलकियो
गिरेउ धरणि दशकन्धर रबिकुल[3] बाणशत बेधो हियो
सारथी रथ घालि दूसर ताहि लंका लै गयो ॥
रघुबीरबन्धु प्रतापपुंज बहोरि प्रभुचरणन नयो११
दो०उहाँ दशानन बहुरि उठि, करन लाग कछु यज्ञ
जय चाहत रघुपतिबिमुख, शठ हठबश अतिअज्ञ ॥
"चैत्रकृष्ण दशमीदिन चेता * लागकरन मख बिजयके हेता"
इहाँ बिभीषण सब सुधि पाई * सपदि[4] जाय रघुपतिहि सुनाई॥
नाथ करै रावण इक यागा * सिद्ध भये नहिं मरिहि अभागा

१ आकाश. २ रथ. ३ सूर्यबंशी लक्ष्मणने. ४ जल्दी.

पठवहु नाथ बेगि भट बन्दर * करहिं विध्वंस आव दशकन्धर
प्रात होत प्रभु सुभट पठाये * हनुमदादि अंगद सब धाये ॥
कौतुक कूदि चढ़े कपि लंका * पैठे रावण-भवन अशंका॥
जबहीं यज्ञ करत तेहि देखा * सकल कपिन भा क्रोध विशेखा
रणते भागि निलज गृह आवा * इहाँ आइ बकध्यान लगावा ॥
अस कहि अंगद मारेउ लाता * चितव न शठ स्वारथ मन राता

छंद॰ नहिं चितव जब कपि कोपित बगहि दशन लातन मारहीं
धरि केश नारि निकारि बाहर जब सो दीन पुकारहीं
तब उठा कोपि कृतांतसम गहि चरण बानर डारहीं॥
इहि भांति यज्ञ विध्वंस करि कपि नेकु मनहिं न हारहीं

दो॰ मखविध्वंस करि कपि सकल, आये रघुपतिपास
चला दशानन क्रोधकरी, छाँडी जियकी आस ॥

चलत होहिं तेहिं अशुभ भयंकर * बैठेहिं गृध्र उडाहिं शिरनपर ॥
भयउ कालबश कहा न माना * कहेसि बजावहु युद्ध निशाना ॥
चली तमीचरअनी[1] अपारा * बहु गज रथ पदचर अवसारा ॥
प्रभुसन्मुख खल धावहिं कैसे * शलभसमूह[2] अनलकहँ[3] जैसे ॥
इहाँ देव सब बिनती कीन्ही * दारुणबिपतिहमाहिं इन दीन्ही॥
अब जनि नाथ खेलावहु एही * अतिशय दुखित होति बैदेही ॥
देवबचन सुनि प्रभु मुसुकाना * उठि रघुबीर सुधारेउ बाना ॥
जटाजूट बाँधी दृढ माथे * सोहत सुमन बीच बिच गाथे॥
अरुण नयन बारिदतनुश्यामा * अखिललोकलोचनअभिरामा॥
कटितट परिकर कसे निषंगा * कर कोदण्ड कठिन शारंगा ॥

१ राक्षसोंकी फौज. २ टीडियोंके समूह. ३ अग्निको.

छंद-शारंगकरसुंदरनिषंगशिलीमुखाकरकटिकस्यो
भुज दण्ड पीन मनोहरा अति उर धरासुरपद लस्यो
कह दास तुलसी जबहिं प्रभु शर चाप कर फेरन लगे
ब्रह्माण्ड दिग्गज कमठ अहि महि सिंधु भूधर डगमगे
दो०-हर्षे देव विलोकि छबि, वर्षहिं सुमन अपार १३॥
जय जय प्रभु गुणज्ञानबलधाम हरण महि भार१०२
इहिके बीच निशाचरअनी * कसमसाति आई अतिघनी ॥
देखि चले सन्मुख कपिभट्टा * प्रलयकालके जिमि घन घट्टा ॥
शक्ति शूल तरवारि चमकहिं * जनुदशदिशि दामिनी दमकाहिं
गज-रथ-तुरगाचिकार कठोरा * गर्जत मनहुँ बलाहक घोरा ॥
कपिलंगूर बिपुल नभ छाये * मनहुँ इन्द्रधनु उगे सुहाये ॥
उडी रेणु मानहुँ जलधारा * बाणबुन्द भइ वृष्टि अपारा ॥
दुहुँ दिशि पर्वत करत प्रहारा * बज्रपात जनु बारहिं बारा ॥
रघुपति कोपि बाणझरि लाई * घायल भे निशिचरसमुदाई ॥
लागत बाण बीर चिक्करहीं * घुमि घुमि अगणित महि परहीं
श्रवहिं शैल जनु निर्झर बारी * शोणितसर कादर भय भारी ॥
छंद-कादरभयंकररुधिरसरिताबाढिपरमसुहावनी
दोउ कूल दल रथ रेत चक्र अवर्त बहति भयावनी॥
जलजन्तु गज पदचर तुरग रथ बिबिधवाहनको गने
शर शक्ति तोमर परशु चाप तरंग चर्म कमठ घने१४
दो०-बीर परे जनु तीर तरु, मज्जा बह जनु फेन ॥
कादर देखत डरहिं जिय, सुभटनके मन चैन१०३

१ तर्कस. २ भृगुलता. ३ कच्छप. ४ शेषजी. ५ पृथ्वी. ६ समुद्र. ७ पहाड़.

मज्जहिं भूत पिशाच बेताला * केलि करहिं योगिनी कराला॥
काक कन्ध धरि भुजा उड़ाहीं * एकते एक छीनि धरि खाहीं॥
एक कहहिं ऐसी समुदाई * शठ तुम्हार दारिद्र न जाई॥
कहरत भट घायल तट गिरे * जहँ जहँ मनहु अर्धजल परे॥
खैचहिं आँत गृध्र तट भये * जनु बनशी खेलत चित दये॥
बहु भट बहे चढ़े खग जाहीं * जिमि नावरि खेलहिं जलमाहीं
योगिनि भरि भरि खप्पर साजहिं*भूतपिशाचबिबिधबिधि नाचहिं॥
भट कपाल करताल बजावहिं * चामुण्डा नानाबिधि गावहिं॥
जंबुकनिकर[1] तहाँ कटकटहीं * खाहिं अघाहिं हुआहिं दपटाहिं
कोटिन रुण्ड मुण्डबिनु डोलहिं * शीश परेमहि जय जय बोलहिं

छन्द॥ बोलहिं जोजयजयरुण्डमुण्डप्रचण्ड शिरबिनुधावहीं परिणाम युद्ध अगुह्य बोलहिं सुभट सुरपुर पावहीं निशिचरबरूथनि मर्दि गर्जहिं भालु कपि दर्पित[2]भये संग्रामअंगन सुभट सोहहिं रामशरनिकरन[3] हये१५

दो॰ हृदय बिचारेसि दशबदन, भा निशिचरसंहार मैं अकेल कपि भालु बहु, माया करौं अपार १०४

देवन प्रभुहिं पयादेहि देखा * उर उपजा अतिक्षोभ बिशेखा॥
सुरपति निजरथ तुरत पठावा * हर्षसहित मातलि लै आवा॥
तेजपुंज रथ दिव्य अनूपा * बिहँसि चढ़े कोशलपुरभूपा॥
"हरिदिन करि प्रभुभूसुरबन्दन* चढ़े हर्षि हरधनुषबिभंजन॥
चंचल तुरग मनोहर चारी * अजर अमर मनसागतिकारी॥
रथारूढ़ रघुनाथहिं देखी * धाये कपि बल पाइ बिशेखी॥

१ सृगालोंके समूह. २ अहंकारी. ३ रामचन्द्रजीके बाणोंके समूहोंसे

सही न जाइ कपिनकी मारी * तब रावण माया बिस्तारी ॥
सो माया रघुबीरहिं बांची * सबकाहू मानी कर साँची ॥
देखी कपिन निशाचरअनी * बहु अंगद कपि लक्ष्मण धनी ॥

छंद- बहुबालिसुतलक्ष्मणकपीशबिलोकिमर्कटअपडरे
जनुचित्रलिखितसमेतलक्ष्मणजहँसोतहँचितवतखरे ॥
निजसेनचकितबिलोकिहँसिधनुतानिशरकोशलधनी ॥
मायाहरीहरिनिमिषमहँहर्षीसकलमर्कटअनी ॥ १६ ॥

दोहा- बहुरिरामसबतन चितय, बोले बचन गभीर ॥
द्वन्द्वयुद्ध देखहु सकल, श्रमित भये अतिबीर१०५

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा * विप्रचरणपंकज शिर नावा ॥
तब लंकेश क्रोध करि धावा * गर्जि तर्जि प्रभुसन्मुख आवा ॥
जीतेहु जे भट संयुगमाहीं * सुनु तापस मैं तिनसम नाहीं ॥
रावण नाम जगत यश जाना * लोकप[1] जेहिके बंदीखाना ॥
खर दूषण बिराध तुम मारा * हतेउ व्याध इव बालि बिचारा ॥
निशिचरसुभट सकल संहारे * कुम्भकर्ण घननादहिं मारे ॥
आजु बैर सब लेउँ निबाही * जो रणभूमि भागि नहिं जाही ॥
आजु करौं खल कालहवाले * परेहु कठिन रावणके पाले ॥
सुनि दुर्बचन कालबश जाना * कहेउ बिहँसि तब कृपानिधाना
सत्य सत्य तव सब प्रभुताई * जनि जल्पसि देखब मनुसाई ॥

छंद- जनिजल्पनाकरिसुयशनाशहिनीतिसुनिशठकरुक्षमा
संसारमहँ पूरुष त्रिबिधि पाटल रसाल[2] पनस[3] समा
एकसुमनप्रदएकसुमनफलइकफलैकेवललागहीं ॥

१ इंद्रादिदेव. २ आम्र. ३ कटहर.

इककहहिंकरतनकरहिंकहहिंकरहिंयकनाहिंबागहीं १७
दो० रामबचनसुनिबिहँसिकह,मोहिंसिखावहुज्ञान
बैरकरततवनहिंडरेहु,अबलागतप्रियप्रान ॥ १०६ ॥
कहि दुर्बचन क्रोधि दशकंधर * कुलिशसमान लाग छाँड़न शर
नानाकार शिलीमुख धाये * दिशिअरुबिदिशिगगनमहँछाये
अनलबाण छाँड़े रघुबीरा * क्षणमहँ जरे निशाचरतीरा ॥
छाँड़ेसि तीव्र शक्ति खिसियाई * बाणसंग प्रभु फेरि पठाई ॥
कोटिन चक्र त्रिशूल पँवारे * तृणसमान प्रभु काटि निबारे॥
निफल होंइ रावणशर कैसे * खलके सकल मनोरथ जैसे ॥
तब शतबाण सारथिहिं मारेसि * परेउ भूमि जय राम पुकारेसि
राम कृपा करि सूत उठावा * तब प्रभु परमक्रोधकर पावा॥
छंद भयेक्रुद्धयुद्धबिरुद्धरघुपतित्रोणसायककसमसे
कोदण्डधुनिसुनिचण्डअतिमनुजाद[२]भयमारुतग्रसे
मन्दोदरिउरकम्पकम्पतकमठ भूधर अतित्रसे ॥
चिक्करहिंदिग्गजदशनगहिमहिदेखिकौतुकसुरहँसे
दो०तान्योचापजोश्रवणलगि,छाँडे बिशिखकराल
रामबाणनभमगचले, लहलहातजनुब्याल[३] ॥१०७॥
चले बाण सपक्ष जनु उरगा * प्रथमहिं हते सारथी तुरगा ॥
रथ बिभंजि हति केतु[४] पताका * गर्जा अतिअंतरबल थाका ॥
तुरत आनि रथ चढ़िखिसियाना * छाँड़ेसि अस्त्रशस्त्र बिधि नाना
बिफल होइँ सब उद्यम ताके * जिमि परद्रोहनिरत मनसाके॥
तब रावण दशशूल चलाये * बाजि चारि महि मारि गिराये

---

१ बाण. २ राक्षस. ३ सर्प. ४ ध्वज.

तुरग उठाइ कोपि रघुनायक * छाँडे अतिकराल बहु सायक ॥
रावण-शिरसरोज-बनचारी * चले रघुनाथ शिलीमुख धारी ॥
दश दश बाण भाल दश मारे * निसरि गये चल रुधिरपनारे ॥
श्रवंत रुधिर धावा बलवाना * प्रभु पुनि कृत धनुशरसन्धाना॥
तीस तीर रघुबीर पँवारे * भुजनसमेत शीश महि पारे ॥
काटतही पुनि भये नवीने * राम बहोरि भुजा शिर छीने ॥
कटित झटित[2] पुनि नूतन भये * प्रभु बहुबार बाहु शिर हये ॥
पुनिपुनि प्रभु काटहिं भुजशीशा * अतिकौतुकी कोशलाधीशा ॥
रहे छाइ नभ शिर अरु बाहू * मानहुँ अमित केतु अरु राहू॥

छन्द॥ जनु राहु केतु अनेक नभपथ श्रवत शोणित धावहीं
रघुबीरतीर प्रचण्ड लागहिं भूमि गिरन न पावहीं ॥
इक एक शर शिरनिकर[3] छेदे नभ उडत इमि सोहई
जनु कोपि दिनकरनिकर जहँ तहँ बिधुन्तुद[4] पोहई

दो॰॥ जिमिजिमि प्रभु हतता सुशिर, तिमितिमि होहिं अपार
सेवत बिषय बिबर्द्ध जिमि, नित नित नूतनमार[5]॥१०८॥

दशमुख दीख शिरनकी बाढी * बिसरा मरण भई रिस गाढी ॥
गरजेउ मूढ महाअभिमानी * धायउ दशहु शरासन तानी ॥
समरभूमि दशकन्धर कोपा * बर्षि बाण रघुपति रथ तोपा ॥
दण्ड एक रथ देखि न परेऊ * जनु निहारमहँ दिनकर दुरेऊ॥
हाहाकार सुरन्ह सब कीन्हा * तब प्रभु कोपि धनुष कर लीन्हा
शर निवारि रिपुके शिर काटे * तेदिशि बिदिशि गगन महि पाटे
काटे शिर नभमारग धावहिं * जयजयधुनि कहि भय उपजावहिं

१ चूताहै. २ जल्दी. ३ शिरसमूह. ४ राहु. ५ कामदेव.

कहँ लक्ष्मण हनुमन्त कपीशा * कहँ रघुबीर कोशलाधीशा ॥

छंद॥ कहँ राम कहि शिर निकर धावहि देखि मर्कट भजि चले ।
सन्धानि शर रघुवंशमणि तब शरण शिर बेधे भले ॥
शिर मालिका गहि कालिका तहँ वृन्दवृन्दनिसों मिलीं ॥
करि रुधिर[१] सर मज्जन मनहुँ संग्रामबटपूजनचलीं ॥

दो॰ पुनि रावण अतिकोप करी, छाँडी शक्ति प्रचण्ड॥
सन्मुख चली बिभीषणहिं, मनहुँ कालकोदण्ड १०९

आवत देखि शक्ति अतिभारी * प्रणतारत हरि बिरद सँभारी ॥
तुरत बिभीषण पाछे मेला * सन्मुख राम सहेउ सो शेला ॥
लगी शक्ति मूर्छा कछु भई * प्रभुकृत खेल सुरन्ह बिकलई॥
देखि बिभीषण प्रभु श्रम पायउ * गहि कर गदा क्रोध करि धायउ
रेअभाग्य शठ मन्द कुबुद्धे * तैं सुर नर मुनि नाग बिरुद्धे ॥
सादर शिवकहँ शीश चढाये * एक एकके कोटिनपाये ॥
तेहि कारण खल अबलगि बाँचा * अब तव काल शीशपर नाँचा ॥
रामबिमुख शठ चहसि सम्पदा * अस कहि हनेसि माँझ उर गदा

छंद॥ उरमाँझगदाप्रहारघोरकठोरलागतमहिपऱ्यो॥
दशबदनशोणितश्रवतपुनिसंभारिधायोरिसि भऱ्यो
दोउभिरेअतिबलमल्लयुद्धबिलोकिएकहिंइकहनै ॥
रघुबीरबलगर्बितबिभीषणघावनहिंताकहँगनै॥२१॥

दो॰ उमाबिभीषणरावणहिं, सन्मुखचितवकिकाउ
भिरतसोकालसमानअब, श्रीरघुबीरप्रभाउ॥११०॥

देखा श्रमित बिभीषण भारी * धावा हनूमान गिरिधारी ॥

---

१ रुधिर.

रथ तुरंग सारथी निपाता * हृदयमाँझ मारेउ तेहिं लाता ॥
ठाढ़ रहा अतिकम्पित गाता * गयउ बिभीषण जहँ जनेत्राता
पुनि रावण तेहिं हतेउ प्रचारी * चला गगन कपि पूँछ पसारी॥
गहेसि पूंछ कपिसहित उड़ाना * पुनि नभ भिरेउ प्रबलहनुमाना
लरत अकाश युगुल[2] सम योधा * हनत एक एकहिं करि क्रोधा॥
शोभित नभ छल बल बहु करहीं * कज्जल गिरि सुमेरु जनु लरहीं ॥
बुधि बल निशिचर परै न पारा * तव मारुतसुत प्रभुहिं सँभारा ॥

छन्द-सँभारि श्रीरघुबीर धीर प्रचारि कपि रावण हन्यो
महिपरतपुनिउठि लरतदेवन युगुल कहँ जयजयभन्यो
हनुमन्तसंकट देखि मर्कट[3] भालु क्रोधातुर चले ॥
रणमत्त रावण सकल सुभट प्रचंड भुजबल दलिमले॥

दो०-राम[1] प्रचारे बीर सब, धाये कीश प्रचण्ड ॥
कपिदल बिपुल बिलोकि तेहिं, कीन्ह प्रकट पाखण्ड

अन्तर्द्धान भयो क्षण एका * पुनि प्रकटेसि खल रूप अनेका
रघुबरकटक भालु कपि जेते * जहँ तहँ प्रकट दशानन ते ते॥
देखे कपिन अमितदशशीशा * भागे भालु बिकल भट कीशा॥
चले बलीमुख[3] धरहिं न धीरा * त्राहि त्राहि लक्ष्मण रघुबीरा॥
दशदिशि कोटिन धावहिं रावण * गर्जहिं घोर कठोर भयावन ॥
डेर सकल सुर चले पराई * जियकी आश तजहु रे भाई ॥
सब सुर जिते एक दशकंधर * अब बहु भये तकहु गिरिकंदर
रहे बिरंचि शंभु मुनि ज्ञानी * जिन निज प्रभुकी महिमा जानी

छन्द-जानहिंप्रतापतेरहेनिर्भयकपिनरिपुमानेहुँफुरे ॥

१ रामचंद्र. २ दोनों. ३ बानर.

चले बिकल मर्कट भालु सकल कृपाल पाहि भयातुरे
हनुमन्त अंगद नील नल बलवन्त अतिरणबाँकुरे ॥
मर्दहिं दशानन कोटि कोटिन्ह कपटभटके अँकुरे २३
दो०-सुर बानर देखे बिकल, हँसे कोशलाधीश ॥
साजि शरासन निमिषमहँ, हरे सकल दशशीश ॥
प्रभु क्षणमहँ माया सब काटी * जिमि रबि उदय जाहि तम[१] फाटी
रावन एक देखि सुर हर्षे * बिपुल सुमन पुनि प्रभुपर बर्षे ॥
भुज उठाय रघुपति कपि फेरे * फिरे एक एकनिके टेरे ॥
प्रभुबल पाइ भालु कपि धाये * तरले[२] तमकि संयुगमहँ आये ॥
करत प्रशंसा सुर तेहिं देखे * भयउँ एक मैं इनके लेखे ॥
शठहु सदा तुम मोर मरायल * अस कहि गगनपंथकहँ धायल॥
हाहाकार करत सुर भागे * शठउ जाहु कहँ मोरे आगे ॥
देखि बिकल सुर अंगद धावा * कूदि चरण गहि भूमि गिरावा
छं०-गहि भूमि पार्‍यो लात मार्‍यो बालिसुत प्रभुपहँ गयो
संभारि उठि दशकण्ठ घोर कठोर करि गर्जत भयो ॥
करि दाप धनुष चढ़ाइ दश सन्धानि शर बहु बर्षई
किय सकल भट घायल बियाकुल देखि निजबल हर्षई
दो०-तब रघुपति लंकेशके, शीश भुजा शर[३] चाप[४] ॥
काटे भये नवीन पुनि, जिमि तीरथके पाप ॥ ११३॥
शिरभुजबाढ़ि देखि रिपु केरी * भालु कपिन रिसि भई घनेरी ॥
मरत न मूढ़ कटे भुज शीशा * धाय कोपि भालु अरु कीशा ॥
बालितनय मारुत नल नीला * द्विबिद मयन्द महा बलशीला॥

१ अंधकार. २ चंचल. ३ बाण. ४ धन्वा.

बिटप महीधर करहिं प्रहारा * सोइ गिरि तरु गहि कपिन सो मारा
एकन नख गहि बपुष बिदारी * भागि चलहिं इक लातन मारी॥
तब नल नील शिरनि चढ़ि गयऊ * नखनि ललाट बिदारत भयऊ ॥
रुधिर बिलोकि सकोप सुरारी[1] * तिनहिं धरन कहँ भुजा पसारी॥
गहे न जाहिं शिरनि पर फिरहीं * जनु युग[2] मधुप कमलबन चरहीं
कोपि कूदि दोउ धरेसि बहोरी * महि पटकेसि गहि भुजा मरोरी
पुनि सकोपि दश धनु कर लीन्हा * शरनि मारि घायल कपि कीन्हा
हनुमदादि मूर्छित सब बन्दर * पाइ प्रदोष हर्ष दशकन्धर ॥
मूर्छित देखि सकल कपि बीरा * जाम्बवन्त धावा रणधीरा ॥
संग भालु भूधर तरु भारी * मारन लगे प्रचारि प्रचारी ॥
भयो क्रोध रावण बलवाना * गहि पद महि पटके भट नाना॥
देखि भालुपति[3] निजदल घाता * कोपि माँझ उर मारेसि लाता॥

छन्द—उर लात घात प्रचण्ड लागत बिकल रथ ते महि गिरा
गहि भालु बीसहु कर[4] निमानहुँ कमल निशि सब मधुकरा[5]
मूर्छित बहोरि बिलोकि पद हति भालुपति प्रभु पहँ गयो ॥
निशि जानि स्यन्दन[6] घालि तेहिं तब सूत यत्न सु ग्रह नयो

दो०—मूर्छा गइ कपि भालु तब, सब आये प्रभु पास ॥
सकल निशाचर रावणहिं, घेरि रहे अति त्रास ११४

तेहि निशि महँ सीता पहँ जाई * त्रिजटा कहि सब कथा बुझाई
शिरभुज बाढ़ि सुनत रिपु केरी * सीता-उर भै त्रास घनेरी ॥
मुख मलीन उपजी मन चिंता * त्रिजटा सन बोली तब सीता॥
होइहि कहा कहसि किन माता * केहि बिधि मरिहि बिश्वदुखदाता

१ रावण. २ दो भ्रमर. ३ जांबवान. ४ जाम्बवानको. ५ भ्रमर. ६ रथ.

रघुपति शर शिर कटे न मरई * बिधि बिपरीति चरित सब करई
मोर अभाग्य जिआवत ओही * जेहिहौं हरिपद कमल बिछोही
जेहिं कृत कनक कपट मृग झूठा * अजहुं सो दैव मोहिंपर रूठा ॥
जेइँ बिधिमोहिंदुखदुसहसहावा * लक्ष्मण कहँ कटु बचन कहावा
रघुपति बिरह बिषम शर भारी * तकि तकि बार बार मोहिं मारी ॥
ऐसेहु दुख जो राखु मम प्राना * सो बिधि ताहि जिआव न आना
बहु बिधि करतबिलाप जानकी * करि करि सुरति कृपा निधानकी
कह त्रिजटा सुन राजकुमारी * उर शर लागत मरिहि सुरारी॥
ताते प्रभु उर हतहिं न तेही * इहिके हृदय बसत बैदेही ॥

छंद॰ इहिकेहृदयबसजानकीममजानकीउरवासहै ॥
ममउदरभुवनअनेक लागत बाण सबको नाश है ॥
अससुनतहर्षविषादउरअतिदेखिपुनित्रिजटाकहा ॥
अबमरिहिरिपुइहिभांतिसुंदरितजहुतुम संशयमहा
दो॰ काटतशिरहोइहिबिकल, छूटिजाइतबध्यान ॥
तबरावणकेहृदयशर, मारहिंरामसुजान ॥ ११५ ॥

अस कहि बहु प्रकार समुझाई * पुनि त्रिजटा निज भवन सिधाई
राम सुभाव सुमिरि बैदेही * उपजी बिरहव्यथा अति तेही॥
निशिहिंशशिहिंनिंदतबहु भांती * युगसम भई बिहोति न राती ॥
करत बिलाप मनहिं मन भारी * रामबिरह जानकी दुखारी ॥
जब अति भयो बिरह उर दाहू * फरकेउ बाम नयन अरु बाहू॥
शकुन बिचारि धरी उर धीरा * अब मिलिहहिं कृपालु रघुबीरा
इहाँ अर्द्धनिशि रावण जागा * निज सारथिसन खीझन लागा ॥

१ चंद्र. २ बीतती नहीं है.

शठ रण भूमि छुडायहु मोहीं * धृक धृक अधम मन्दमति तोहीं
तोहिं पद गहि बहु बिधिसमुझावा * भोर भये रथ चढ़ि पुनि आवा
सुनिआगमन दशाननकेरा * कपिदल खर भर भयउ घनेरा
जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी * धाये कटकटाइ भट भारी ॥

छन्द-धाये जोमर्कटबिकटभालुकरालकरभूधरधरा
अतिकोपिकरहिंप्रहारमारतभाजिचलेरजनीचरा ॥
बिचलाइदलबलवन्तकीशनिघेरि पुनिरावणलियो
दशदिशिचपेटन्हमारिनखनबिदारितेहिव्याकुलकियो

दो० देखि महामरकट प्रबल रावण कीन्ह बिचार ॥
अन्तरहित होइ निमिषमहँ, कृतमायाविस्तार ११६

छन्द-जब कीन्हतेहिंपाखण्ड, भये प्रकट जन्तु प्रचण्ड
बैताल भूत पिशाच, कर धरे धनुष नराच[2] ॥ *
योगिनि गहे करबाल[3], इक हाथ मनुजकपाल ॥ *
करि सद्य शोणितपान, नाचहिं करहिं गुणगान २८
धरु मारु बोलहिं घोर, रहि पूरि धुनि चहुँओर ॥
मुख बाय धावहिं श्वान[4], तब लगे कीश परान ॥
जहँ जाहिं मर्कट भागि, तहँ बरत देखहिं आगि ॥
भय बिकल बानर भालु, पुनि लाग बर्षण बालु २९
जहँ तहँ थकित करि कीश, गर्जेउ बहुरि दशशीश
लक्ष्मणकपीशसमेत, भये सकल बीर अचेत ॥ *
हा राम हा रघुनाथ, कहि सुभट मींजहिं हाथ ॥ *
इहिबिधिसकलबलतोरि, तेहिं कीन कपटबहोरि३०

---

१ पर्बत. २ बाण. ३ तरवारि. ४ कुत्ता.

प्रगटे बिपुल हनुमान, धाये गहे पाषाण ॥ *
तिन राम घेरे जाई, चहुँदिशि वरूथ बनाइ ॥ *
मारहु धरहु जनि जाइ, कटकटहिं पूँछ उठाइ ॥ *
दशदिशि लँगूर बिराज, तेहिमध्य कोशलराज ३१

छंद० तेहिमध्यकोशलराजसुन्दरश्यामतनशोभासही
जनु इन्द्रधनुष अनेक किय वर बारि तुंग तमालही
प्रभु देखिहर्ष विषाद सुर उर बंदि जय जय जय करी
रघुबीर एकहि तीर कोपित निमिषमहँ माया हरी
मायाबिगतकपि भालु हर्षाविटप गिरिगहिसबफिरे
शरनिकर छाँडे राम रावण बहुरिशिर महिमहँ गिरे
श्रीरामरावणसमरचरित अनेक कल्प जो गावहीं
शत शेष[२] शारद निगम[३] कवि तेउ तदापिपार नपावहीं

दो० कहे तासु गुणगण कछुक, जडमति तुलसीदास
निजपौरुष अनुसार जिमि, मशक[४]उडाहिं अकास
काटि शीश भुज बार बहु, मरैन भट लंकेश ॥ *
प्रभु क्रीड़त मुनि सिद्ध सुर, व्याकुल देखि कलेश ११८

काटत बढ़हिं शीश–समुदाई * जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई
मरै न रिपु[५] श्रम भयउ बिशेखा * राम विभीषणतन तब देखा ॥
उमा काल मरु जाकी इच्छा * सो प्रभु जनकी लेत परिच्छा
सुनु सर्वज्ञ चराचर–नायक * प्रणतपाल सुरमुनिसुखदायक ॥
नाभीकुण्ड सुधा[६] बस वाके * नाथ जियत रावन बल ताके॥
सुनत विभीषण बचन कृपाला* हर्षि गहे प्रभु बाण कराला ॥

---

१ समूह. २ सरस्वती. ३ वेद. ४ मसा. ५ शत्रु. ६ अमृत.

अशकुन होन लगे बिधिनाना * रोवहिं बहु सृगाल खर[1] श्वाना ॥
बोलहिं खग अति आरत[2] हेतू * प्रगट भये जहँ तहँ नभकेतू[3] ॥
दशदिशि दाह होन तब लागा * भये पर्ब[4]–बिनु रबिउपरागा ॥
मन्दोदरिउर कम्पित भारी * प्रतिमा श्रवहिं नयनमग बारी ॥

छन्द–प्रतिमा श्रवहि पबिपात नभ अतिबात बहडोलतमही
बर्षहिं बलाहक रुधिर कच रज अशुभ अति सककोकही
उतपात अमित बिलोकि नभ सुर बिकल बोलहिं जयजये
सुर सभय जानि कृपाल रघुपति चापशर जोरत भये
दो०–आकर्षेउ धनु श्रवणलगि, छाँडे शर इकतीश ॥
रघुनायकसायक चले, मानहुँ कालफणीश ॥ ११९॥

सायक एक नाभिसर शोषा * अपर लगे शिर भुज करि रोषा ॥
लै शिर बाहु चले नाराचा * शिरभुजहीन रुण्ड महिनाचा ॥
धरणि धसै धर धाव प्रचण्डा * तब शर हति प्रभु कृत युग खण्डा
गर्जेउ मरत घोर रव भारी * कहाँ राम रण हतौं प्रचारी ॥
" लड़े बहत्तर दिन संग्रामा * बानर राक्षस बिन बिश्रामा ॥
बसुदिग दिन लड़ि सो महि परा * भूता मधुसित रावण मरा " ॥
डोली भूमि गिरत दशकन्धर * क्षुभित सिन्धुसह दिग्गज भूधर
परेउ भूमि युग खण्ड बड़ाई * चापि भालु मर्कटसमुदाई ॥
मन्दोदरि आगे भुज शीशा * धरि शर चले जहाँ जगदीशा ॥
प्रबिशे सब निषंगमहँ जाई * देखि सुरन दुन्दुभी बजाई ॥
तासु तेज प्रविश्यो प्रभुआनन * हर्षे देव शम्भु चतुरानन ॥
जयधुनि पूरि रही नवखण्डा * जय रघुवीर प्रबल भुजदण्डा ॥

१ गर्दभ. २ दुःख. ३ आकाशमें केतुको उदय. ४ अमावास्या.

बर्षहिं सुमन देव मुनि-वृन्दा * जय कृपाल जय जयति मुकुन्दा
छं०-जय कृपाकन्द मुकुन्द हरि मर्दननिशाचरमद प्रभो
खलदलबिदारण परमकारण कारुणीक सदा बिभो
सुर सिद्ध मुनि गन्धर्ब हर्षे बाज दुन्दुभि गहगही॥
संग्रामअंगन रामअंग अनंग[2] बहु शोभा लही ॥ ३५ ॥
शिर जटा मुकुट प्रसून बिच बिच अतिमनोहर राजहीं
जनु नीलगिरिपर तडित पटल समेत उडुगण[3] भ्राजहीं
भुजदण्ड फेरत शर शरासन रुधिरकण तन अतिबने
जनु रायमुनिय तमालतरुबर बैठि बहुसुख आपने३६
दो०-कृपादृष्टि करि वृष्टि प्रभु, अभय किये सुरवृन्द ॥
हर्षे बानर भालु कपि, जय सुखधाम मुकुन्द ॥१२०॥
पतिशिर दीख जबहिं मन्दोदरि * मूर्च्छितबिकलखसीधरणीभरि॥
युवतिवृन्द[4] रोवति उठि धाईं * तेहि उठाय रावणपहँ ल्याईं ॥
पतिगति देखि सो करति पुकारा * छुटे केश न देहँ सँभारा ॥
उर ताड़ना करै बिधि नाना * रोदन करै प्रताप बखाना ॥
तव बल नाथ डोल नित धरणी * तेजहीन पावक शशि तरणी[5] ॥
शेष कमठ सहि सकहिं न भारा * सो तनु आजु परा महि क्षारा॥
वरुण कुबेर सुरेश[6] समीरा * रण सन्मुख धरु काहु न धीरा॥
भुजबल जीति काल यम साईं * आजु सो परेउ अनाथकिनाईं ॥
जगतबिदित तुम्हारि प्रभुताई * सुत परि जनबल बरणि न जाई॥
राम बिमुख अस हाल तुम्हारा * रहा न कुल कोउ रोवनहारा ॥
तव बश बिधिप्रपंच सब नाथा * सब दिगपति तोहिं नावहिंमाथा

१ दयालु. २ कामदेव. ३ नक्षत्र. ४ स्त्रीगण. ५ सूर्य. ६ इंद्र.

अब तव शिर भुज जम्बुक खाहीं * रामबिमुख यह अनुचित नाहीं॥
कालबिबश पति कहा न माना * अगजगनाथ मनुजकरिजाना॥

छं०-जानेउँ मनुज कर दनुजकाननदहनपावक हरिस्वयं
जिहिं नमत शिव ब्रह्मादिसुर पिय भजेहु नाकरुणामयं
आजन्मते परद्रोहरति पापौघमय तव तनु इयं॥
तुमहुँ दियो निजधाम राम नमामि ब्रह्मनिरामयं ३७॥

दो०-अहह नाथ रघुनाथसम, कृपासिन्धु को आन॥
मुनिदुर्लभ जो परमगति, तुमहिं दीन्ह भगवान १२१

मन्दोदरीबचन सुनि काना * सुर मुनि सिद्धसबहिं सुखमाना
अज महेश नारद सनकादी * जे मुनिवर परमारथबादी॥
भरि लोचन रघुपतिहिं निहारी * प्रेममगन सब भये सुखारी॥
रोदन करत बिलोकेउ नारी * गयो विभीषण मन दुख भारी॥
बन्धुदशा देखत दुख भयऊ * तब प्रभुअनुजहिं आयसु दयऊ॥
लक्ष्मण तेहिं बहुबिधि समुझाये * सहितबिभीषण प्रभुपहँ आये॥
कृपादृष्टि प्रभु ताहि बिलोका * करहु क्रिया परिहरि सबशोका॥
कीन्ह क्रिया प्रभुआयसु मानी * बिधिवत देशकालगति जानी॥

दो०-मयतनयादिक नारि सब, देहिं तिलांजुलि ताहि
भवन गईं रघुबीर गुण, गण बर्णत मनमाँहि॥ १२२॥

आइ बिभीषण पुनि शिर नावा * कृपासिन्धु तब अनुजबुलावा॥
तुम कपीश अंगद नल नीला * जाम्बवन्त मारुतसुत शीला॥
सब मिलि जाहु बिभीषणसाथा * सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा
पिताबचन मैं नगर न जाऊं * आपुसरिस कपि अनुज पठाऊं

१ स्थावरजंगमके मालिक रामचन्द्रजीको.

तुरत चले कपि सुनि प्रभुबचना * कीन्ही जाइ तिलककी रचना॥
सादर सिंहासन बैठारी * तिलक कीन्हअस्तुति अनुसारी
जोरि पानि सबहीं शिर नाये * सहित बिभीषण प्रभुपहँ आये ॥
तब रघुबीर बोलि कपि लीन्हे * कहिप्रियबचन सुखी सब कीन्हे

छंद॥ कीन्हे सुखी सब कहि सुबाणी बलतुम्हारे रिपुहयो ॥
पायो बिभीषण राज तिहुँपुर यश तुम्हारो नित नयो॥
मोहिं सहित शुभ कीरति तुम्हारी परमप्रीति जो गाइहैं
संसारसिंधु अपारपार प्रयास बिनु तरि जाइहैं ३८

दो०सुनत रामके बचन मृदु, नहिं अघात कपिपुंज
बारहिं बार बिलोकि मुख, गहे सकल पद[2]कंज १२३

तब प्रभु बोलि लिये हनुमाना * लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
समाचार जानकिहिं सुनावहु * तासु कुशल लै तुम चलिआवहु
तब हनुमान नगरमहँ आये * सुनि निशिचरीनिशाचर धाये
पूजा बहु प्रकार तिन कीन्ही * जनकसुता दिखाय पुनिदीन्ही
दूरिहिंते प्रणाम कपि कीन्हा * रघुपतिदूत जानकी चीन्हा ॥
कहहु तात प्रभु कृपा[3]निकेता * कुशल अनुजप्रभुसेनसमेता ॥
सबबिधि कुशल कोशलाधीशा * मातु समर जीत्यो दशदीशा ॥
अबि[4]चल राज बिभीषण पावा * सुनि कपिबचन हर्ष उरछावा ॥

छंद॥अतिहर्ष मनतनुपुलकलोचनसजलपुनिपुनिकहरमा
का देउँ तोहिं त्रैलोक्यमहँकपिकिमपिनहिं बाणीसमा
सुनु मातु मैं पायउँ अखिलजगराज आजु न संशयं ॥
रणजीति रिपुदलबन्धुयुतपश्यामिरामनमामियं३९

---

१ मर्‍यो. २ चरणकमलोंको. ३ दयाके स्थान. ४ निश्चल.

दो०सुनु सुत सद्गुणसकल तव, हृदय बसैं हनुमन्त
सानुकूल रघुबंशमणि, रहहिं समेत अनन्त ॥ १२४॥

अब सोइ यत्न करहु तुमताता * देखों नयन श्याममृदुगाता ॥
तब हनुमन्त रामपहँ आये * जनकसुताकर कुशल सुनाये ॥
सुनि बाणी पतंगकुलभूषण * बोलि लिय कपिराज बिभीषण ॥
मारुतसुतके संग सिधावहु * सादर जनकसुता लै आवहु ॥
तुरतहिं सकल गये जहँ सीता * सेवाहिं सबनिशिचरी बिनीता ॥
बेगिबिभीषणतिनाहिं सिखावा * सादर तिन सीतहिं अन्हवावा॥
दिव्य वसन भूषण पहिराये * शिबिका[2]रुचिर साजि पुनिल्याये
तेहिपर हर्षि चढ़ी बैदेही * सुमिरि राम सुखधाम[3] सनेही ॥
बेतपाणिरक्षक चहुँपासा* चले सकल मन परमहुलासा ॥
देखन भालु कीश बहु धाये * रक्षक कोटि निवारण आये ॥
कह रघुबीर कहा मम मानहुँ * सीतहिं सखा पयादेहि आनहुँ ॥
देखहिं कपि जननीकी नाई * बिहँसि कहा रघुबीर गुसाँई ॥
सुनि प्रभुबचन भालु कपि हर्षे* नभते सुरन सुमन बहु बर्षे ॥
सीतहिं प्रथम अग्निमहँ राखी * प्रगट कीन्ह चह अन्तरसाखी॥

दो०तेहि कारण करुणाअयन[4], कहे कछुक दुर्बाद ॥
सुनत यातुधानी सकल, लागीं करन बिषाद ॥१२५॥

प्रभुके बचन शीश धरि सीता * बोली मन क्रम बचन पुनीता ॥
लक्ष्मण होहु धर्मके नेगी * पावक प्रकट करहु तुम बेगी॥
सुनि लक्ष्मण सीताकी बानी * बिरह-बिबेक-धर्म-रतिसानी
लोचन सजल जोरि कर दोऊ * प्रभुसन कछुकहिसकतन ओऊ

१ लक्ष्मणजीकरकेसहित. २ पालकी. ३ सुखके घर. ४ दयाके स्थान.

देखि रामरुख लक्ष्मण धाये * पावक प्रकट काठ बहु लाये॥
प्रबल अनल बिलोकि वैदेही * हृदय हर्ष कछु भय नहिं तेही॥
जो मन क्रम बच मम उरमाहीं * तजि रघुबीर आन गति नाहीं ॥
तौ कृशानु[1] सबकी गति जाना * मोकहँ होहु श्रीखण्डसमाना[2]॥

छंद० श्रीखंडसमपावकप्रगटकियसुमिरिप्रभुतेहिंमहँचली
जयकोशलेशमहेशबन्दितचरणरज अतिनिर्मली ॥
प्रतिबिंबअवलोकितकलंकप्रचण्डपावकमहँजरे ॥
प्रभुचरितकाहुनलखेउसुरमुनिसिद्धसबदेखहिं खरे
तब अनल भूसुररूप[3] कर गहि सत्य श्री श्रुतिबिदित सो
जिमि क्षीरसागर इंदिरा[4] रामहिं समर्पी आनिसो ॥
सोइ रामबामबिभाग राजित[5] रुचिर अतिशोभाभली
नवनीलनीरजनिकट मानहुँ कनकपंकजकीकली ४१

दो० हर्षि सुमन वर्षहिं बिबुध, बाजहिं गगन निशान
गावहिं किन्नर अप्सरा, नाचहिं चढ़ी बिमान ॥१२६॥
श्रीजानकीसमेत प्रभु, शोभा अमित अपार ॥
देखि भालु कपि हर्षेउ, जय रघुपति सुखसार १२७

तब रघुपति-अनुशासन पाई * मातलि चले चरण शिर नाई॥
आये देव सदा स्वारथी * बचन कहहिं जनु परमारथी ॥
दीनबन्धु दयालु रघुराया * देव कीन्ह देवनपर दाया ॥
विश्वद्रोहरत खल अतिकामी * निज अघ गयउ कुमारगगामी
तुम सर्वज्ञ ब्रह्म अविनाशी * सदा एकरस सहजउदासी ॥
अकल अगुण अनवद्य अनामय * अजित अमोघ एक करुणामय

---

१ अग्नि. २ चंदनसदृश. ३ ब्राह्मणरूप हो. ४ लक्ष्मी. ५शोभित.

मीन कमठ शूकर नरहरी * बामन-- परशुराम-- बपुधरी ॥
जब जब नाथ सुरन्ह दुख पावा * नानातनु धरि तुमहिं नसावा॥
रावण पापमूल सुरद्रोही * काम क्रोध मद रति अति काही
सो कृपालु तव धाम सिधावा * यह हमरे मन अचरज आवा॥
हम देवता परमअधिकारी * स्वारथरत तव भक्ति बिसारी
भवप्रभाव सन्तत हम परे * अब प्रभु पाहि शरण अनुसरे॥

दो०करि बिनती सुर सिद्ध सब, रहे जहँ तहँ कर जोरि
अतिशय प्रेम सरोज बिधि, अस्तुतिकरत बहोरि॥

छंद०जयरामसदासुखधामहरे, रघुनायकसायकचापधरे
भबवारणदारणसिंह प्रभो, गुणसागरनागरनाथविभो ४१
तनुकामअनेकअनूपछबी, गुण गावत सिद्धमुनींद्रकबी
यश पावन रावण नाग[2] महा, खगनाथ[3]यथाकरिकोप[1]गहा
जनरंजन भंजन शोकमयं, गतक्रोह सदा प्रभु बोधमयं
अबतार उदार अपार गुनं, महिभारबिभंजनज्ञानघनं
अजव्यापकमेकमनादिसदा, करुणाकररामनमामिमुदा
रघुवंशबिभूषण दूषणहा, कृतभूपबिभीषण दीन रहा ४३
गुणज्ञाननिधानअमानअजं, नितरामनमामिबिभूबिरजं
भुजदण्डप्रचण्डप्रतापबलं, खलवृन्दनिकन्दमहाकुशलं॥
बिनुकारणदीनदयालुहितं, छबिधामनमामिरमा[4]सहितं
भवतारण कारण काजपरं, मनसंभवदारुणदोषहरं ४४
शरचापमनोहरतूणधरं, जलजारुणलोचन भूपवरं
सुखमन्दिर सुन्दर श्रीरमनं, मदमारसुधाममताशमनं

१ क्रोधी. २ सर्प. ३ गरुड. ४ लक्ष्मीरूपी सीतासहित.

अनवद्य अखंड अगोचर सो, सबरूप सदा सब होइनसो
इतिवेदवदन्तिनदन्तकथा, रबिआतपाभिन्ननभिन्नयथा ४५॥
कृतकृत्य बिभो सब बानर ये, निरखन्त तवानन सादरये
धृक जीवन देवशरीरहरे, तव भक्तिबिना भवभूलि परे॥
अब दीनदयालुकृपा करिये, मतिमोरिबिभेदकरी हरिये ॥
जिहिते बिपरीतकृपा करिये, दुखमेंसुखमानसुखीचरिये
खलखण्डन मण्डन रक्षक्षमा, पदपंकजसेवित शम्भुउमा ॥
नृपनायक दे बरदानमिदं, चरणाम्बुजप्रेमसदाशुभदं ४७

दो० बिनय कीन्ह बहुभांति विधि, प्रेमप्रफुल्लितगात
बदन बिलोकत रामकर, लोचन नाहिं अघात ॥ १२९

तिहिं अवसर दशरथ तहँ आये * तनयबिलोकि नयन जल छाये॥
सहित अनुज प्रणाम प्रभु कीन्हा * आशीर्बाद पिता तब दीना ॥
तात सकल तव पुण्य--प्रभाऊ * जीतेउँ अजय निशाचरराऊ ॥
सुनि सुतबचन प्रीति अतिबाढ़ी * नयनसलिल रोमावलि ठाढ़ी ॥
रघुपति प्रथम प्रेम अनुमाना * चितै पितहिं दीन्हेउ दृढ़ज्ञाना
ताते उमा मोक्ष नाहिं पावा * दशरथ भेदभक्ति मन लावा ॥
सगुणउपासक मोक्ष न लेहीं * तिन्हकहँ रामभक्ति निज देहीं॥
बार बार करि प्रभुहिं प्रणामा * दशरथ हर्षि गये निजधामा ॥

दो० अनुजजानकीसहित प्रभु, कुलकोशलाधीश ॥
छबि बिलोकि मन हर्षि अति, अस्तुतिकर सुरईश

छं० जय राम शोभाधाम, दायक प्रणत बिश्राम॥
धृत तूणं बर शाप पाप, भुजदण्डप्रबलप्रताप * ॥

१ तरकस. २ श्रेष्ठ.

जय दूषणारि खरारि, मर्दन निशाचरझारि * ॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ, भे देव सकल सनाथ ॥४८॥
जय हरणधरणी भार, महिमा उदार अपार ॥
जय रावणारि कृपाल, किय, यातुधान बिहाल * ॥
लंकेश अतिबलगर्व, किये बश्य सुर गन्धर्व * ॥
मुनि सिद्ध नर खग नाग, हठि पन्थ सबके लाग४९
परद्रोहरत अतिदुष्ट, पायो सो फल पापिष्ट * ॥
अब सुनहु दीनदयाल, राजीवनयनबिशाल[1] * ॥
मोहिं रहा अतिअभिमान, नाहिं कोउ मोहिं समान
अब देखि प्रभुपदपंकज, गत मानप्रद दुखपुंज ५०
कोउ ब्रह्म निर्गुण ध्याव, अव्यक्त जिहिं श्रुति गाव ॥
मोहिं भाव कौशलभूप, श्रीराम सगुणस्वरूप ॥
बैदेहिअनुजसमेत, मम हृदय करहु निकेत[2] ॥
मोहिं जानिये निजदास, दे भक्ति रमानिबास ॥५१॥
छिन्द दे भक्ति रमानिबास त्रासहरण शरणसुखदायकं
सुखधाम राम नमामि कामअनेकछबि रघुनायकं ॥
सुरवृन्दरंजन द्वन्द्वभंजन[3] मनुजतनु अतुलितबलं ॥
ब्रह्मादिक शंकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलं५२
दो०अब करि कृपा बिलोकि मोहिं, आयसु देहु कृपालु॥
कहा करौं सुनि प्रिय बचन, बोले दीनदयालु ॥ १३१॥
सुनु सुरपति कपि भालु हमारे * परे भूमि निशिचरन्ह जो मारे
मम-हित लागि तजे इन प्राना * सकल जियाउ सुरेश[4] सुजाना॥

१ कमलवत् विशाल नेत्र. २ स्थान. ३ सुखदुःखनाशक. ४ इन्द्र,

सुनु खगेश प्रभुकी यह बानी * अति अगाधजानहिं मुनिज्ञानी
प्रभु चह त्रिभुवन मारि जिवाई * केवल शक्रहिं दीन्हि बड़ाई ॥
सुधा बर्षि कपि भालु जिआये * हर्षि उठे सब प्रभुपहँ आये ॥
सुधावृष्टि भै दुहुँदलऊपर * जिये भालु कपि नहिं रजनीचर
रामाकार भये तिनके मन * गये ब्रह्मपद तजि शरीर तन ॥
सुरअंशक सब कपि अरु रिच्छा * जिये सकल रघुपतिकी इच्छा॥
रामसरिस को दीन–हितकारी * कीन्हे मुक्त निशाचरझारी ॥
खल मलधाम कामरत रावन * गति पाई जो मुनिबर पावन ॥

दो० सुमन बर्षि सब सुर चले, चढि चढि रुचिरविमान
देखि सुअवसर रामपहँ, आये शम्भु सुजान॥ १३२॥
परमप्रीति कर जोरि युग, नयननलिन[1] भरि बारि ॥
पुलकित तनु गद्गद गिरा, बिनय करत त्रिपुरारि १३३

छंद मामभिरक्षयरघुकुलनायक, धृतवरचापरुचिरकरशायक
मोहमहाघनपटलप्रभंजन[2] संशयबिपिनअनलसुररंजन ॥
अगुणसगुणगुणमंदिरसुंदर, भ्रमतमप्रबलप्रतापदिवाकर
कामक्रोधमदगजपंचानन, बसहुनिरन्तर[3]जनमनकानन
बिषयमनोरथपुंजकंजबन, प्रबलतुषारउदारपारमन
भवबारिधिमंदरपरमन्दर, कारयतारय संसृतिदुस्तर
श्यामगातराजीवबिलोचन, दीनबन्धुप्रणतारतिमोचन
अनुजजानकीसहितनिरंतर, बसहुरामनृपममउरअन्तर
मुनिरंजनमहिमंडलमंडन. तुलसिदासप्रभुत्रासबिखंडनं

दो० नाथ जबहिं कोशलपुरि, होइहि तिलक तुम्हार

---

१ नेत्रकमलोंमें. २ पवन. ३ हमेश.

तब आउब हम सुनहु प्रभु, देखन चरित उदार१३४

करि बिनती जब शंभु सिधाये * तब प्रभुनिकट बिभीषण आये॥
नाइ चरण शिर कहमृदु बाणी * बिनय सुनिय मम शारँगपाणी॥
सकुल सदल प्रभु रावण मारा * पावन यश त्रिभुवन बिस्तारा
दीन मलीन हीन मति जाती * मोपर कृपा कीन्ह बहुभाँती॥
अब जनगृह पुनीत प्रभु कीजै * मज्जन करिय सकल श्रम छीजै॥
देश कोश मन्दिर सम्पदा * देहु कृपालु कपिन्हकहँ मुदा॥
सबबिधि नाथ मोहिं अपनाइय * पुनिमोहिं सहितअवधपुरजाइय
सुनत बचन मृदु दीनदयाला * सजल भये हरि नयन विशाला

दो० तोर कोशगृह मोर सब, सत्य बचन सुनु तात
दशा भरतकि सुमिरि मोहिं, पलक कल्पसम जात
तापसबेष शरीर कृश, जपैं निरन्तर मोहिं॥
देखौं बेगि सो यत्न करि, सखा निहारों तोहिं१३६
जो जैहौं बीते अवधि, जियत न पाऊँ बीर॥
प्रीति भरतकी समुझि प्रभु, पुनि पुनि पुलकशरीर

सुनत बिभीषण बचन रामके * हर्षि गहे पद कृपाधामके॥
वानर भालु सकल हर्षाने * प्रभुपद गहि गुणबिमल बखाने
बहुरि बिभीषण भवन सिधाये * मणिगण बसन बिमान भराये॥
लै पुष्पक प्रभु आगे राखा * हँसिकै कृपासिन्धु अस भाखा
चढ़ि विमानसुनसखा बिभीषण * गगन जाइ बर्षहु पट भूषण॥
नभपर जाइ बिभीषण तबहीं * बर्षि दिये पट भूषण सबहीं॥
जो जेहि मन भावै सो लेहीं * मणि मुख मेलि डारि कपि देहीं॥
हँसत राम सियअनुजसमेता * परम–कौतुकी कृपा–निकेता॥

दो०-ध्यान न पावहिं जासु मुनि,नेति नेति कह बेद
कृपासिंधु सोइ कपिनसों,करत अनेक विनोद१३८
उमा योग जप दान तप, नाना व्रत मख नेम ॥
रामकृपा नाहिं कराहिं तस,जस निष्केवल प्रेम१३९
भालु कपिन पट भूषण पाये * पहिरि पहिरि रघुपतिपहँ आये ॥
नाना जिनिसि देखि प्रभु कीशा * पुनि पुनि हँसत कोशलाधीशा॥
चितै सबनिपर कीन्ही दाया * बोले मधुर बचन रघुराया ॥
तुम्हरे बल मैं रावण मारा * तिलक बिभीषणकहँ पुनि सारा
निज २ गृह अब तुम सब जाहू * सुमिरहु मोहिं धरहु जनि काहू॥
बचन सुनत प्रेमाकुल बानर * जोरि पाणि बोले सब सादर ॥
प्रभु जो कहहु तुमहिं सब सोहा * हमरे हिय उपजै सुनि मोहा ॥
दीन जानि कपि किये सनाथा * तुम त्रैलोक्यईश रघुनाथा ॥
सुनि प्रभुबचन लाज हम मरहीं * मशक कबहुँ खगपतिहित[२] करहीं
देखि रामरुख वानर ऋच्छा * प्रेममग्न नहिं गृहकी इच्छा ॥
दो०-प्रभुप्रेरित कपि भालु सब, रामरूप उर राखि
हर्षविषादसमेत सब, चले बिनय बहु भाखि १४०
जाम्बवन्त कपिराज नल, अंगदादि हनुमान ॥
सहित बिभीषण अपर जे,यूथप अतिबलवान१४१
काहि नसकहिं कछु प्रेमबश,भरि भरि लोचन[३]बारि
सन्मुख चितवहिं रामतन,नयननिमेष निवारि१४२
अतिशय प्रीति देखि रघुराई * लीन्हे सकल बिमान चढ़ाई ॥
मनमहँ विप्रचरण शिर नावा * उत्तरदिशिहिं बिमान चलावा॥

---

१ आनंद. २ गरुडजीका हित. ३ नेत्रोंमें. ४ जल.

चलत बिमान कोलाहल होई * जय रघुबीर कहै सबकोई ॥
सिंहासन अतिउच्च मनोहर * सियसमेत बैठे प्रभु तापर ॥
राजत राम सहित-भामिनी * मेरुशृंग जनु घन-दामिनी ॥
रुचिर विमान चला अतिआतुर * कीन्ही सुमन-वृष्टि हर्षे सुर ॥
परमसुखद चलि त्रिविध बयारी * सागर सुरसरि निर्मल बारी ॥
शकुन होहिं सुन्दर चहुँ पासा * मन प्रसन्न निर्मल आकाशा ॥
कह रघुबीर देखु रण सीता * लक्ष्मण हत्यो इहाँ इंद्रजीता ॥
अंगद हनूमानके मारे * रणमहँ परे निशाचर भारे ॥
कुम्भकर्ण रावण दोउ भाई * इहाँ हतेउँ सुरमुनिदुखदाई ॥

दो०सुन्दरि सेतु देखु यह, थापेउँ शिव सुखधाम ॥
सीतासहित कृपायतन, शम्भुहिं कीन प्रणाम॥१४३॥
जहँ तहँ कृपासिन्धु वन, कीन्ह बास विश्राम ॥
सकल दिखायेजानकिहिं, कहि कहि सबके नाम१४४

सपदि[2] बिमान तहाँ चलि आवा * दण्डकबन जहँ परम सुहावा ॥
कुम्भजादि[3] मुनिनायक नाना * गये राम सबके अस्थाना ॥
सकलमुनिनसों पाइ अशीशा * आये चित्रकूट जगदीशा ॥
तहँ करि ऋषिनकेर सन्तोषा * चला बिमान तहाँते चोखा ॥
बहुरि राम जानकी दिखाई * यमुना कलिमलहरणि सुहाई ॥
पुनि देखी सुरसरी पुनीता * राम कहा प्रणाम करु सीता ॥
तीरथपति पुनि दीख प्रयागा * देखत जाहिं पाप सब भागा ॥
देखि राम पावनि पुनि बेनी[4] * हरण शोक सुरलोक-निशेनी ॥
देखि अवधपुरी अतिपावनि * त्रिविधताप-भवदाप-नशावनि॥

१ श्री सीतासहित. २ जल्दी. ३ अगस्ति इत्यादिक. ४ त्रिवेणी.

दो०तब रघुनन्दन सियसहित, अवधहिं कीन्हप्रणाम
सजलबिलोचन पुलक तनु,पुनि पुनि हर्षित राम१४५
बहुरि त्रिबेणी आय प्रभु, हर्षित मज्जन कीन्ह ॥
कपिनसमेत महीसुरन्ह,दान बिबिधबिधिदीन्ह१४६

प्रभु हनुमन्तहिं कहा बुझाई * धरि द्विजरूप अवधपुर जाई॥
भरतहिंकुशलहमारिसुनावहु * समाचार लै पुनि चलि आवहु
तुरत पवन सुत गवनत भयउ * तब प्रभु भरद्वाजपहँ गयऊ ॥
'माधव[2]कृष्ण-शैवदिन माधव *चलि[3]फणिदिनमिलिमुनिपुनिराघव'
नानाविधि पूजा मुनि कीन्ही * अस्तुति करि पुनि आशिषदीन्ही
मुनिपद बन्दियुगलकरजोरी * चढ़ि बिमान प्रभु चले बहोरी॥
इहाँ निषाद सुना प्रभु आये * नाव नाव करि लोग बुलाये ॥
सुरसरि लाँघि यान जब आवा* उतरा तहँ प्रभुआयसु पावा ॥
तब सीता पूजी सूरसरी * बहुप्रकार करि चरणन परी ॥
दीन्ह अशीश मुदितमन गंगा * सुन्दरि तव अहिवात अभंगा ॥
सुनतहिं गुह धावा प्रेमाकुल * आवा निकट परमसुखसंकुल ॥
प्रभुहिं बिलोकि सहित वैदेही * परेउ अवनि तनुसुधि नहिं तेही॥
परमप्रीति बिलोकि रघुराई * हर्षि उठाइ लीन्ह उर लाई ॥

छं०लिय हृदय लाइ कृपानिधान सुजान राम रमापती
बैठारि परमसमीप पूँछी कुशल सो करि बीनती ॥
अब कुशल पदपंकज बिलोकि बिरंचिशंकरसेव्य जे
सुखधाम पूरणकाम राम नमामि राम नमामि ते ५५

१ब्राह्मणोंको.२वैशाखकृष्ण चतुर्थीको.३और पंचमीको भरद्वाजको मिले

सबभांति अधम निषाद सो हरि भरतज्यों उर लाइये
मतिमन्द तुलसीदास सो प्रभु मोहवश बिसराइये ॥
यह रावणारिचरित्र पावन रामपदरतिप्रद सदा ॥
कामादिहर बिज्ञानकर सुरसिद्ध मुनि गावहिं मुदा
दो० समरविजय रघुनाथके, सुनहिं जे सन्त सुजान॥
विजयविवेकविभूतिनित, तिनहिं देहिं भगवान१४७
यह कलिकाल मलायतन, मन करि देखु विचार॥
श्रीरघुनायकनाम तजि, नहिं कछु आनअधार १४८

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमलेविज्ञानबैराग्यसन्तोषसम्पादनोनाम श्रीगोस्वामी तुलसीदासकृतलंकाकाण्डः षष्ठः सोपानः समाप्तः

॥ लंकाकाण्ड समाप्तः ॥
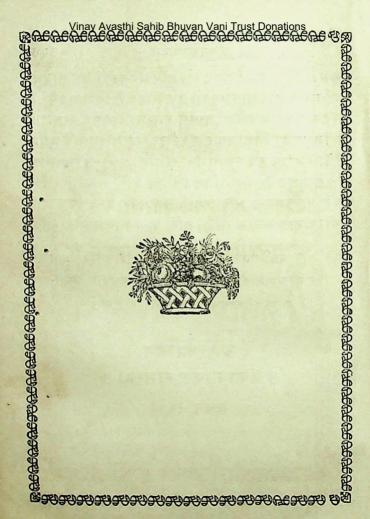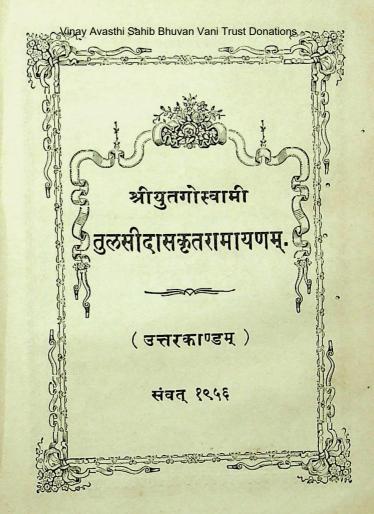
श्रीयुतगोस्वामी
तुलसीदासकृतरामायणम्.

(उत्तरकाण्डम्)

संवत् १९५६

उत्तरकाण्डम्

श्रीः ।

श्रीयुतगोस्वामी तुलसीदासकृतरामायणे

उत्तरकाण्डप्रारंभः ।

दो० भरतमिलाप सुशीलता, रामराज्यशुभभंग ॥
ज्ञानभक्तिकी ऐक्यता, उत्तरकाण्डप्रसंग ॥

केकिग्रीवाभनीलंसुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नंशोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ॥ पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारूढरामम् ॥ १ ॥ कोसलेन्द्रपदकञ्जमंजुलौकोमलौविधिमहेशवन्दितौ ॥ जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्यहृदयालिसंगिनौ२
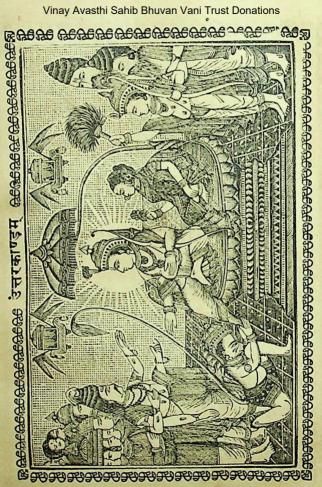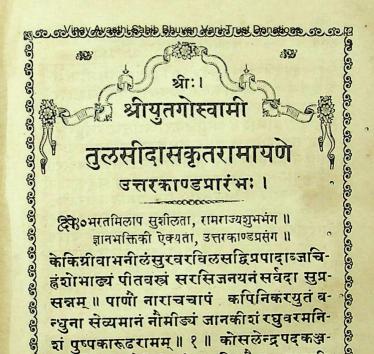
श्लोकार्थ—मोरके कंठकी दीतिके सदृश श्याम, देवोंमें श्रेष्ठ, लसता है भृगुजीके चरणकमलका चिन्ह हृदयमें जिनके, शोभायुक्त, पीताम्बर धारणकिये, कमलतुल्य आँखें, सदा अत्यन्त प्रसन्न, हाथमें धनुष बाण, वानरसमूहोंसे युक्त, लक्ष्मणसे सेवित, जानकीके स्वामी, रघुकुलश्रेष्ठ, पुष्पक बिमानमें शवार और सदास्तुतियोग्य ऐसे रामचंद्रजीको मैं

कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ॥ कारुणीककलकञ्जलोचननंनौमिशंकरमनङ्गमोचनम् ॥ ३ ॥

दो०रहा एकदिन अवधिकर, अतिआरतपुरलोग
जहँ तहँ शोचहिं नारि नर,कृशतनुरामवियोग
शकुन होहिं सुन्दर सकल, मन प्रसन्नसबकेर॥
प्रभुआगमन जनाव जनु, नगर रम्य चहुँफेर॥२॥
कौशल्यादिक मातु सब, मन अनन्द अस होइ
आये प्रभुसियअनुजयुत,कहन चहत अस कोइ३
भरतनयन भुज दक्षिण, फरकहिं बारहिं बार॥
जानि शकुन मन हर्ष अति,लागे करन बिचार४

रहा एकदिन अवधिअधारा * समुझत मन दुख भयउ अपारा
कारण कवन नाथ नहिं आये * जानिकुटिल प्रभुमोहिं बिसराये
अहह धन्य लक्ष्मण बडभागी * राम पदारबिंद अनुरागी ॥
कपटी कुटिल नाथ मोहिं चीन्हा * ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥
जो करणी समुझैं प्रभु मोरी * नहिं निस्तार कल्पशत कोरी॥
जनअवगुण प्रभु मान न काऊ * दीनबंधु अतिमृदुल सुभाऊ ॥
मोरे जिय भरोस दृढ़ सोई * मिलिहहिं राम शकुनशुभ होई॥
बीते अवधि रहे जो प्राना * अधम कवन जग मोहिंसमाना

नमस्कार करताहूं ॥ १ ॥ ब्रह्मा शंकरसे बंदित, जानकीके हस्तकमलोंसे लालित, भक्तके भ्रमरूप मनके संगी, ऐसे अयोध्यापति रामचंद्रके मनोहर कोमल चरणकमलोंको मैं नमस्कार करताहूं ॥ २ ॥ चंद्रमा, कुन्दका पुष्प और शंख इनके समान गौर, सुंदर, पार्बतीपति, बांछित सिद्धिके दाता, दयालु मनोहर कमलसे नेत्र और कामदेवको जलानेवाले, ऐसे शंकरजीको मैं नमस्कार करताहूँ ॥ ३ ॥

दो०राम-बिरहसागरमहँ, भरत मग्नमन होत ॥
बिप्ररूप धरि पवनसुत, आइ गये जिमि पोत[1] ॥५॥
बैठे देखि कुशासन, जटा मुकुट कृशगात ॥
राम राम रघुपति जपत, श्रवण नयनजलजात ६

देखत हनूमान अतिहर्षे * पुलकगात लोचनजल वर्षे ॥
मनमहँ बहुतभांति सुख मानी * बोले श्रवणसुधासम बानी ॥
जासु बिरह शोचहु दिनराती * रटहु निरंतर गुणगणपांती ॥
रघुकुलतिलक सुजनसुखदाता * आये कुशल देवमुनित्राता[2] ॥
रिपु रण जीति सुयश सुर गावत *सीता अनुजसहित प्रभु आवत ॥
सुनत बचन बिसरे सब दूषा * तृषावन्त जनु पाय पियूषा[3] ॥
को तुम तात कहाँते आये * मोहिं परमप्रिय बचन सुनाये ॥
मारुतसुत मैं कपि हनुमाना * नाम मोर सुनु कृपानिधाना ॥
दीनबन्धु रघुपतिकर किंकर * सुनत भरत भेंटे उठि सादर ॥
मिलत प्रेम नाहिं हृदय समाता* नयन श्रवत जल पुलकितगाता॥
कपि तव दर्श सकलदुख बीते * मिले आजु मोहिं राम सप्रीते ॥
बार बार पूँछी कुशलाता * तोकहँ कहाँ देउँ सुनु भ्राता ॥
यहि संदेशसरिस जगमाहीं * करि बिचार देखा कछु नाहीं
नाहिन उऋण तात मैं तोहीं * अब प्रभुचरित सुनावहु मोहीं॥
तब हनुमान नाइ पद माथा * कहेसि सकल रघुपतिगुणगाथा
कहु कपि कबहुँ कृपालु गुसाईं* सुमिरत मोहिं दासकी नाईं ॥

छंद॰ निजदासज्यों रघुबंशभूषण कबहुँ मम सुमिरण कर्‍यो
सुनि भरतबचन बिनीत अति कपि पुलकतनु चरणन पर्‍यो

१ जहाज. २ देवता और मनुष्योंके रक्षक. ३ अमृत.

रघुबीर निजमुख जासु गुणगण[1] कहत अगजगनाथ[2]जो ॥
काहे न होहु बिनीत परमपुनीत सद्‌गुणसिन्धुसो १

दो०राम प्राणप्रिय नाथ तुम, सत्य बचन मम तात
पुनि पुनि मिलत स[3] भरतसन,प्रेम न हृदय समात ७

सो०भरतचरण शिर नाइ,तुरत गये कपि रामपहँ॥
कही कुशल सब जाइ, हर्षि चले प्रभु यान[4] चढ़ि१

हर्षित भरत कोशलपुर आये * समाचार सब गुरुहिं सुनाये ॥
पुनि मन्दिरमहँ बात जनाई * आवत नगर कुशल रघुराई ॥
सुनत सकल जननी उठि धाई* कहिप्रभुकुशलभरत समुझाई ॥
समाचार पुरबासिन पाये * नर अरु नारि हर्षि उठि धाये॥
दधि दूर्बा रोचन फल फूला * नवतुलसीदल मंगलमूला ॥
भरि भरि थार हेम बर भामिनी * गावत चली सिन्धुरागामिनि॥
जो जैसाहिं तैसहिं उठि धावहिं * बाल बृद्ध कोउ संग न लावहिं॥
एक एकसन पूँछहिं धाई * तुम देखें दयालु रघुराई ॥
अवधपुरी प्रभु आवत जानी * भई सकलशोभाकी खानी ॥
भा सरयू अतिनिर्मल नीरा * वहै सुहावन त्रिबिध समीरा ॥

दो०हर्षित गुरु पुरजन अनुज, भूसुरवृन्दसमेत ॥
चले भरत अतिप्रेम मन, सन्मुख कृपानिकेत ॥८॥
बहुतक चढीं अटारिन्ह, निरखहिं गगन बिमान ॥
देखि मधुरस्वर हर्षित, करहिं सुमंगल गान ॥ ९॥
राकाशशि रघुपतिपुरी, सिन्धु देखि हर्षान ॥
बढ़े कोलाहल करत जनु, नारि तरंगसमान॥१०॥

---

१ गुणसमूह. २ स्थावरजंगमके स्वामी. ३ सो हनुमान. ४ पुष्पकविमानमें.

रविकुलकमलदिवाकर आवत * नगर मनोहर कपिन दिखावत
सुन कपीश अंगद लंकेशा * पावनि पुरी रुचिर यह देशा ॥
यद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना * बेदपुराणबिदित जग जाना ॥
अवधसरिस प्रिय मोहिन सोऊ * यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ ॥
जन्मभूमि मम पुरी सोहावनि * उत्तरदिशि सरयू बह पावनि ॥
सो मज्जहिं सोबिनहिं प्रयासा * मम समीप नर पावहिं बासा॥
अतिप्रिय मोहिं इहाँके बासी * मम धामदा पुरी सुखरासी ॥
हर्षे कपि सुनि प्रभुकी बानी * धन्य अवध जेहिं राम बखानी ।

दो०आवत देखे लोग सब, कृपासिन्धु भगवान ॥
नगरनिकट प्रभु आयउ, उतरेउ भूमि बिमान ॥ ११ ॥
बहुरि कहेउ प्रभु पुष्पकहिं, तुम कुबेरपहँ जाहु ॥
प्रेरित राम चलेउ सो, हर्ष बिरह अति ताहु ॥ १२ ॥

आये भरतसंग सबलोगा * कृशतनु श्रीरघुबरिवियोगा ॥
वामदेव वसिष्ठ मुनिनायक * देखा प्रभु महि धरि धनु सायक॥
धाइ धरे गुरुचरणसरोरुह[२] * अनुजसहित अतिपुलकतनूरुह[३]
भेंटे कुशल पूँछि मुनिराया * हमरे कुशल तुम्हारिहि दाया ॥
सकलद्विजनकहँ नायउ माथा * धर्मधुरन्धर रघुकुलनाथा ॥
गहे भरत पुनि प्रभुपदपंकज * नवहिं जिनहिं शंकरसुरमुनिअज[४]
परे भूमि नहिं उठत उठाये * बल करि कृपासिन्धु उर लाये ॥
श्यामलगात रोम भे ठाढ़े * नवराजीवनयन जल बाढ़े ॥

छं०राजीवलोचनश्रवतजलतनुललितपुलकावलिबनी॥
अतिप्रेम हृदय लगाइ अनुजहिं मिले प्रभु त्रिभुवनधनी॥

---

१ बैकुंठ देनेवाली. २ गुरु श्रीवशिष्ठजीके पदकमल. ३ रोम. ४ ब्रह्मा,

प्रभुमिलत अनुजहिं सोह मोपहँ जात नहिं उपमा कही ॥
जनु प्रेम अरु शृंगार तनु धरि मिलत बर सुषमा[१] लही २
पूँछत कृपानिधि कुशल भरतहिं बचन बेगि न आवई
सुनि शिवा[२] सो सुख बचन मनते भिन्न जान न पावई
अब कुशल कोशलनाथ आरत जानि जन दर्शन दियो
बूड़त बिरहबारिधि कृपानिधि काढ़ि मोहिं कर गहि लियो

दो०पुनि प्रभु हर्षित शत्रुहन, भेंटे हृदय लगाइ ॥
लक्ष्मण भेंटे भरत पुनि, प्रेम न हृदय समाइ ॥ १३ ॥

भरत अनुज लक्ष्मण तब भेंटे * दुसह बिरहसम्भव दुख मेटे ॥
सीताचरण भरत शिर नावा * अनुजसमेत परमसुख पावा ॥
प्रभु बिलोकि हर्षे पुरबासी * जनित[३] बियोगबिपति सब नासी
प्रेमातुर सब लोग निहारी * कौतुक कीन्ह कृपालु खरारी ॥
अमितरूप प्रकटे तेहि काला * यथायोग्य मिलि सबहि कृपाला
कृपादृष्टि सबलोग बिलोकी * किये सकल नर नारि बिशोकी ॥
क्षणमहँ सबहिं मिले भगवाना * उमा मर्म यह काहु न जाना ॥
यहि विधि सबहिं सुखी करि रामा * आगे चले शीलगुण[४]धामा ॥
कौशल्यादि मातु सब धाई * निरखी बच्छ जनु धेनु लवाई

छंद जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरण बन परबश गई ॥
दिन अन्त पुररुख श्रवत थन हुंकार करि धावति भई
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेंटे बचन मृदु बहुविधि कहे
गइ बिषमबिपति बियोगभव तिन्ह हर्ष सुख अगणित लहे ४

दो०भेंटेउ तनय सुमित्रा, रामचरणरति जानि ॥

१ शोभा. २ हे पार्वती. ३ बिछोहसे उत्पन्न. ४ शील और गुणोंके घर.

रामहिं मिलत कैकयी, हृदय बहुत सकुचानि १४

लक्ष्मण सब मातन्ह मिले, हर्षे आशिष पाई ॥
कैकयिकहँ पुनि पुनि मिले, मनकर क्षोभ न जाइ॥

सासुन सबहिं मिली बैदेही * चरणनलागि हर्ष अति तेही ॥
देहिं अशीष पूँछि कुशलाता * होउ अचल तुम्हार अहिबाता
सब रघुपतिपदकमल बिलोकी * मंगल जानि नयनजल रोकी ॥
कनकथार आरती उतारहिं * बार बार प्रभुगात निहारहिं ॥
नानाभांति निछावरि करहीं * परमानन्द हर्ष उर भरहीं ॥
कौशल्या पुनि पुनि रघुबीरहिं * चितवहि कृपासिन्धु रणधीरहिं
हृदय बिचारति बारहिं बारा * कवनभांति लंकापति मारा ॥
अतिसुकुमार युगल मम बारे * निशिचरसुभट महाबलभारे ॥

दो०लक्ष्मणअरुसीतासहित,प्रभुहिंबिलोकहिंमात
परमानन्दनिमग्न मन, पुनि पुनि पुलकित गात१६

लंकापति कपीश नल नीला * जाम्बवन्त अंगद शुभशीला ॥
हनुमदादि सब बानरबीरा * धरे मनोहर मनुजशरीरा ॥
भरतसनेह शील व्रत नेमा * सादर सब बर्णहिं अतिप्रेमा ॥
देखि नगरबासिनकै रीती * सकल सराहहिं प्रभुपदप्रीती ॥
पुनि रघुपति निजसखा बुलाये * मुनिपद लागहु सबहिं सिखाये
गुरु बशिष्ठ कुलपूज्य हमारे * इनकी कृपा दनुज रण मारे ॥
ये सब सखा सुनिय मुनि मेरे * भये समरसागरकहँ बेरे ॥
मम हितलागि जन्म इन हारे * भरतहुते मोहिं अधिक पियारे

सुनि प्रभुबचन मग्न सब भये * निमिष[1] निमिष उपजत सुख नये

दो०कौशल्याके चरण पुनि, तिनहुँ नायऊ माथ॥
आशिष दीन्ही हर्षिहिय, तुम प्रिय जिमि रघुनाथ
सुमनवृष्टि नभ संकुल, भवन चले सुखकन्द ॥
चढ़े अटारिन्ह देखहिं, नगरनारिनरवृन्द ॥ १८ ॥

कंचनकलश बिचित्र सँवारे * सबनि धरे साजि निज निज द्वारे
बन्दनबार पताका केतू[2] * सबन्हि बनाये मंगलहेतू ॥
बीथिनँ[3] सकल सुगंधि सिचाये * गजमणिरचि बहु चौक पुराये
नानाभांति सुमंगल साजे * हर्षनिशान नगर बहु बाजे ॥
जहँ तहँ नारि निछावरि करहीं * देहिं अशीष हर्ष उर भरहीं ॥
कंचनथार आरती नाना * युवती साजिकरहिं कलगाना॥
कराहिं आरती आरतहरके * रघुकुलकमलबिपिनदिनकरके
पुरशोभा–सम्पति–कल्याना * निगम शेष शारदा बखाना ॥
तेऊ चरित देखि ठगि रहहीं * उमा तासु गुणनरकिमिकहहीं॥

दो०नारि कुमुँदिनी[4]अवधसर, रघुपतिविरहदिनेश[5]
अस्त भये बिकासित भंई, निरखि राम राकेश[6]१९
होहिं शकुन शुभ बिबिधाबिधि, बाजहिं गगननिशान
पुरनरनारि सनाथ करि, भवन चले भगवान २०

प्रभु जानी केकयी लजानी * प्रथम तासु गृह गये भवानी ॥
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा * तब निजभवनगवन प्रभु कीन्हा

---

१ पलकपलकमें. २ ध्वजा. ३ गलियोंमें. ४ रात्रिविकाशी कमल. ५ सूर्य. ६ चंद्र.

कृपासिंधु जब मन्दिर गयऊ * पुरनरनारि सुखी सब भयऊ ॥
गुरु बशिष्ठ द्विज लिये बुलाई * आजु सुघरी सुदिन सुखदाई ॥
सब द्विज देहु हर्षि अनुशासन * रामचंद्र बैठाहिं सिंहासन ॥
सुनि बसिष्ठके बचन सुहाये * सुनत सकलविप्रनमन भाये ॥
कहहिं बचन मृदु विप्रअनेका * जगअभिराम रामअभिषेका ॥
अब मुनिबर[2] बिलंब नहिं कीजै * महाराजकहँ तिलक करीजै ॥

दो०तब मुनि कहेउ सुमन्तसन, तुरत चले शिर नाइ
रथ अनेक गज बाजि बहु, सकल सँवारे जाइ २१
जहँ तहँ धावन पठै पुनि, मंगलद्रव्य मँगाइ * * ॥
हर्षसमेत बशिष्ठपद, पुनि शिर नायउ आइ ॥२२॥

अवधपुरी अतिरुचिर बनाई * देवन सुमनवृष्टि झरि लाई ॥
राम कहा सेवकन्ह बुलाई * प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई
सुनत बचन जन जहँतहँ धाये * सुग्रीवादि तुरत अन्हवाये ॥
"षण्मुखतिथि[3] भो भरतमिलापा * ऋषितिथि[4]गेअवधाहिं खरतापा"
पुनि करुणानिधि भरत हँकारे * निजकर जटा राम निरवारे ॥
अन्हवाये पुनि तीनहुँ भाई * भक्तवत्सल कृपालु रघुराई ॥
भरत–भाग्य प्रभु–कोमलताई * शेषकोटिशत सकहिं न गाई॥
पुनि निजजटा राम बिबराये * मुनिअनुशासन पाइ अन्हाये ॥
करि मज्जन भूषण प्रभु साजे * अंग अनंगकोटिछबि लाजे ॥

दो०सासुन सादर जानकिहिं, मज्जन तुरत कराइ ॥
दिव्य बसन बर भूषणनि, अँग अँग सजे बनाइ २३॥
रामबामदिशि शोभत, रमा[5]रूप गुणखानि ॥

१ आज्ञा. २ मुनिश्रेष्ठ वसिष्ठजी. ३ छठीको. ४ सतमीको. ५ लक्ष्मी.

देखि सासु सब हर्षित, जन्म सुफल निज जानि २४
सुन खगेश तेहिं अवसर, ब्रह्मा शिव मुनिवृन्द ॥
चढ़ि बिमान आये सकल, सुर देखन सुखकन्द २५
प्रभु बिलोकि मुनिमन अनुरागा * तुरत दिव्य सिंहासन माँगा ॥
रबिसम तेज बर्णि नहिं जाई * बैठे राम द्विजन शिर नाई ॥
जनकसुता-समेत रघुराई * देखि प्रहर्षे मुनिसमुदाई ॥
वेदमंत्र द्विजबर उच्चारे * नभ सुर मुनि जयजयति पुकारे
प्रथम तिलक वशिष्ठमुनि कीन्हा * पुनि सब बिप्रन आयसु दीन्हा
सुत बिलोकि हर्षित महतारी * बार बार आरती उतारी ॥
बिप्रन दान बिबिधबिधि दीन्हे * याचक सकल अयाचक कीन्हे
सिंहासनपर त्रिभुवनसाईं * देखि सुरन्ह दुन्दुभी बजाईं ॥
छंद०नभ दुन्दुभी बाजहिं बिपुल गन्धर्वकिन्नर गावहिं
नाचहिं अप्सरावृन्द परमानन्द सुर मुनि पावहिं॥
भरतादि अनुज बिभीषणांगद हनुमतादिसमेत जे
गहे छत्र चामर व्यजन धनु असि[1] चर्म[2] शक्ति बिराजते
सियसहित दिनकरबंशभूषण कामबहुछबि सोहहीं ॥
नवअम्बुधर[3]बरगात अम्बरपीत मुनिमन मोहहीं ॥
मुकुटांगदादि बिचित्र भूषण अंगअंगनप्रति सजे ॥
अंभोजनयनबिशाल उरभुज धन्य नर निरखंत जे६
दो०यह शोभासमाजसुख, कहत न बनै खगेश ॥
बर्णै शारद[4] शेष श्रुति[5], सो रस जानु महेश ॥ २६ ॥
भिन्न भिन्न अस्तुति करि, गे सुर निजनिज धाम ॥

१ तलवार. २ ढाल. ३ मेघ. ४ सरस्वती. ५ वेद.

बन्दीबेष बेद धरि, आये जहँ श्रीराम ॥ २७ ॥
प्रभु सर्वज्ञ कीन्ह अति, आदर कृपानिधान ॥
लखा न काहू मर्म कछु, लगे करण गुणगान ॥ २८ ॥
छन्द-जय *सगुणनिर्गुणरूप राम, अनूपभूपशिरोमने
दशकन्धरादि प्रचण्डनिशिचर प्रबलखल भुजबलहने
अवतार नरसंसारभार बिभंजि दारुणदुख दहे ॥
जय प्रणतपाल दयालु प्रभु संयुक्तशक्ति नमाम हे ७
तव विषममाया सब सुरासुर नागनर अग जग हरे ॥
भवपन्थभ्रमित श्रमित दिवस निशि कालकर्मनगुणभरे
जेहि नाथ करि करुणा बिलोकहु त्रिबिधदुखते निर्बहे
भवखेदछेदनदक्ष हमकहँ रक्ष राम नमामहे ॥ ८ ॥

* सामवेद बोला कि-हे भूपशिरोमणे अर्थात् हे राजाओंमें श्रेष्ठ ! आपकी जय हो; क्योंकि आपके उपमारहित सगुण निर्गुण रूपोंमें यह राजरूप प्रधानरूप है. हे रामचन्द्रजी ! आपने भुजावोंके बलसे रावणादि प्रचंड दैत्योंको मारे; मनुष्य अवतार धरकर संसार (जगत्) को भार उतारे और भक्तोंके महाकठिन दुख जलादिये. ऐसे हे दीन-पालक, दयासिन्धु, शक्तिसहित, आपकी जय हो. हम आपको नमस्कार करते हैं ॥ ७ ॥

यजुर्वेद बोला कि-हे हरे ! आपकी विषयरूप मायाके बश होकर देव, दैत्य, नाग, मनुष्य, जड़ और चेतन ये सब काल कर्म गुणोंसे भरे हुए रातदिन घूमते थकित हो जाते हैं, पार नहीं पाते; परंतु हे नाथ ! जिनको आप दया कर देखते हो, वे तीनों प्रकारके काल-कर्म-गुणजनित दुखोंसे छूट जाते हैं. हे संसारके दुःख काटनेमें प्रबीण राम-

जे ज्ञानमान बिमत्त तव भवहरणि भक्ति न आदरी ॥
ते पाइ सुरदुर्लभपदादपि परत हम देखत हरी ॥
बिश्वास करि सब आश परिहरि दास तव जे होरहे॥
जपि नाम तव बिनुश्रम तरहिं भव नाथ राम नमामहे
जे चरण शिवअजपूज्य रजशुभ परसिमुनिपत्नीतरी
नखनिर्गता सुरबन्दिता त्रैलोक्यपावनि सुरसरी ॥
ध्वजकुलिशअंकुशकंजयुत पदफिरतकंटक जिनलहे
पदकंजद्वंद्व मुकुन्द राम रमेश नित्य भजामहे ॥१०॥
अव्यक्तमूलमनादितरु त्वच चारि निगमागम भने॥

न्द्रजी ! हमारा रक्षण करो. हम आपको नमस्कार करते हैं ॥ ८ ॥

अथर्ववेद बोला कि-हे राम ! जिन्होंने अपनेको ज्ञानवान् मानके और मतवाले होके, संसारका नाश करनेवाली आपकी भक्तिका आदर न किया, वे लोग देवताओंको दुर्लभ पदको पाकरभी हमारे देखते गिरते हैं. और हे रामचन्द्रजी ! जे लोग सब आशा छोंड, बिश्वास कर, आपके दास हो रहे हैं वे आपका नाम जपकर बेमेहनत संसार-सागरको तर जाते हैं. हे नाथ ! हम ऐसे आपको नमस्कार करते हैं ९

हे राम ! जिन चरणोंकी धूलको ब्रह्मा और शिव पूजन करते हैं; जिनको स्पर्श कर गौतमजी स्त्री अहल्या तरगई; जिनके नखोंसे यह देववंदिता त्रैलोक्यपावनी गंगाजी निकलीं और जिन चरणोंमें ध्वजा बज्र अंकुश और कमल इन्होंके चिन्ह हैं ऐसे जिन चरणोंको बनमें फिरनेसे किरातोंने पाया अथवा जिन्होंमें कांटोंके चिन्ह पड़ गये हैं ऐसे हे लक्ष्मीपति राम ! आपके कमलरूप युगुल चरणोंको हम नित्य भजते हैं ॥ १० ॥

ऋग्वेद बोला कि-हे राम ! इस संसाररूपी वृक्षकी जड़ माया है,

षट्कन्ध शाखा पंचबिंश अनेक पर्ण सुमन घने*॥
फलयुगलबिधिकटुमधुरबेलिअकेलिजेहिंआश्रितरहे
पल्लवित फूलत नवल नित संसारबिटप नमामहे११
जे ब्रह्म अज अद्वैत अनुभवगम्य पर पर ध्यावहीं॥
ते कहहिंजानहिंनाथ हमतव सगुणयशनितगावहीं
करुणायतन प्रभु सद्गुणाकर देव यह बर माँगहीं॥
मन कर्म बचन बिकार तजितवचरणहमअनुरागहीं

वह प्रकट नहीं है. यह अनादि है; और इस वृक्षमें अंडज, स्वेदज उद्भिज्ज और जरायुज ये चार बकले हैं. ऐसे वेद व शास्त्र कहते हैं; इसके ये छः ६ स्कंध हैं कि जो ज्ञान १, अज्ञान २, शीत ३, उष्ण ४, सुख ५ और दुःख ६; और इसकी पचीस २५ शाखायें हैं, कौन सो कहतेहैं–पृथ्वी १ जल २ अग्नि ३ वायु ४ आकाश ५ और पांच इनके गुण–गंध १ रस २ रूप ३ स्पर्श ४ शब्द ५; पांच ज्ञानेन्द्रिय नाक १ कर्ण २ नेत्र ३ जिह्हा ४ त्वचा ५; पांच कर्मेंद्रिय बाणी १ हाथ २ लिंग ३ गुदा ४ पांव ५ और मन १ बुद्धि २ अहंकार ३ चित्त ४ महत्तत्त्व ५ ऐसे जोडके पचीस २५ शाखा. और बहुत तेरकी वासनायें इस वृक्षके पत्तोंको जानों जो कि होते और झरते हैं. बहुत तेरे के मनोरथ पुष्प हैं उनमेंसे किसीमें फल लगा और किसीमें नहीं, वो फल कौन? पाप–पुण्यरूप; एक कडुवा, दूसरा मीठा. इसमें एक अकेली मायाकी बेलि है जो कि–नित नये पत्ते फूलोंसे युक्त रहती है, जिसमें ये आश्रित हैं. हे प्रभु ! ऐसे संसाररूप वृक्ष आपको हम नमस्कार करते हैं ॥ ११ ॥

और हे राम ! जो जन आपको जन्मरहित, अद्वैत, निर्गुण, परब्रह्म,

दो०सबके देखत बेदन, विनती कीन्ह उदार *॥
अन्तर्धान भये तब, गये ब्रह्मआगार ॥ २९ ॥ * ॥
बैनतेय सुन शंभु तब, आये जहँ रघुबीर * * ॥
बिनय करत गद्गदगिरा, पूरितपुलकशरीर ॥३०॥

छन्द०*जयराम रमारमणं शमनं भवतापभयाकुलपाहिजनं
अवधेशसुरेशरमेशबिभो शरणागतमाँगतपाहिप्रभो
दशशीशबिनाशनबीसभुजाकृतदूरिमहामहिभूरिरुजा
रजनीचरवृन्द पतंगरहे,शरपावकतेज प्रचण्डदहे
महिमण्डलमण्डनचारुतरं,धृतसायकचापनिषंगवरं

अनुभवसे जाननेयोग्य मनसे पर ध्यावते हैं सो तो वेही लोग कहैं और जानैं. हे नाथ! हम तो आपके सगुणरूपका यश निरंतर गावते हैं. हे दयाके घर! हे अच्छे गुणोंकी खान! हे प्रभु! हे देव ! हम आपसे यही बरदान माँगते हैं कि-मन बचन कर्मसे विकाररहित हो आपके चरणोंमें प्रीति करैं ॥ १२ ॥

* हे राम ! हे रमारमण ! अर्थात् लक्ष्मीपति ! आपकी जय हो, भवताप अर्थात् प्राणकी क्षुधा पिपासा मनके शोक मोह शरीरके जरामरण इनके शांत करनेवाले आप हो; और इन्होंसे व्याकुल जनोंकी रक्षा करो और तुम्ही अवधेश हो और सुरेश हो. हे बिभो ! शरणागतकी रक्षा करो रावणके दश शिर बीस भुजावोंको और पृथ्वीको अतिरोगरूप राक्षसोंको आपने दूर करदिया और जो राक्षसोंके मोहरूप पांखी थीं वो अपने बाणरूप अग्निके तेजसे जलादिये ॥ और आप सुन्दर पृथ्वीमंडलके भूषण हो, श्रेष्ठ धनुष, बाण, तरक-

मदमोहमहाममतारजनी, तमपुंजदिवाकरतेजअनी
मनजातकिरातनिपातकिये, मगलोगकुभोगशरेणहिये
हितनाथअनाथनिपाहिहरे, बिषयाबशपामरभूलिपरे
बहुरोगबियोगन्हलोगहये, भवदंघ्रिनिरादरकेफलये
भवसिन्धुअगाधपरेनरते, पदपंकजप्रेमनजेकरते ॥
अतिदीनमलीनदुखीनितहीं, जिनकेपदपंकजप्रीतिनहीं
अवलम्बभवन्तकथाजिनके, भवभीतिकदापिनहींतिनके
नहिंरागनरोषनमानमदा, तिनकेसमबैभवबादिपदा
मुनित्यागतयोगभरोससदा, इहितेतवसेवकहोतमुदा

सको धारण किये हो और ममता मद मोह इन्होंकी जो महाअँधेरी-रात उसके नाशकारक हो और अंधकारोंके समूहोंको दूर करनेके लिये आप तेजोंकी फौज लिये सूर्य हो और कामरूप वहलियेने मृग-रूप अज्ञानी लोगोंको कुभोगरूप बाणसे हृदयमें मार गिराया. और हे हरे ! तुम मेरे नाथ हो सो मेरा और अनाथोंका रक्षण करो और जो मारेगये वो अधमलोग मायाबश होके, भूले पड़ेथे ॥ १४ ॥

और जो तुम्हारे चरणोंको आदर नहीं करते उनको यह फल मिलता है कि-अनेक रोग बियोगोंसे नाश होते हैं और जो बचे सो अथाह संसारसागरमें पडे रहते हैं; क्योंकि उन्होंने आपके चरणकमलमें प्रीति न किया और जिनके तुम्हारे चरणकमलोंमें प्रीति नहीं है वो लोग हमेसँह दीन मलीन दुःखीही रहते हैं और जो तुम्हारा वा तुम्हारी कथाका अवलम्ब करते हैं उनको संसारसे डर कभी नहीं होता ॥ १५ ॥

और जिनके राग, रोष, मान व मद नहीं हैं संपत्ति बिपत्ति समान हैं ऐसे मुनि योगको भरोसा छोंड, निरन्तर प्रेम कर, तुम्हारे चरण-

करिप्रेमनिरंतरनेम लिये,पदपंकज सेवतशुद्धहिये॥
सन्माननिरादरआदरही,सोइसन्तसुखीबिचरंतमही
मुनिमानसपंकजभृङ्ग भजे,रघुबीरमहारणधीरअजे
तवनामजपामिनमामिहरी,भवरोगमहामदमानअरी
गुणशीलकृपापरमायतनं,प्रणमामिनिरंतर श्रीरमणं
रघुनन्दनिकन्दनद्वंद्वघनं, महिपालविलोकयदीनजनं
दो०बार बार बर मॉँगौं, हर्षि देहु श्रीरंग ॥
पदसरोजअनपावनी, भक्ति सदा सत्संग ॥ ३१ ॥
बर्णि उमापति रामगुण, हर्षि गये कैलास ॥
तब प्रभु कपिन दिवायउ, सबबिधि सुखप्रद बास३२

सुन खगपतियह कथासुहावनि * त्रिबिधतापभवदोषनशावनि ॥
महाराजकर शुभ अभिषेका * सुनत लहाहिं नर बिरति विवेका
जे सकाम सुनहिं जे गावहिं * सुखसम्पतिनानाविधि पावहिं

कमलोंको शुद्ध हृदयसे सेवते हैं; इसीसे तुम्हारे सेवक आनंदित होते हैं और मान अपमान दोनोंको समान मान, पृथ्वीमें घूमते हैं सोई सुखी रहते हैं ॥ १६ ॥

और हे रघुबीर ! महारणधीर ! अजित आप ऐसे मुनियोंके मनरूप कमलको भ्रमरतुल्य सेवते हैं और भवरोग महामद मान इनको शत्रु आपके नामको जपते हैं प्रणाम करते हैं. और गुणशील कृपाको घर श्रीरमण आपको निरंतर प्रणाम करताहूं और द्वंद्वघन अर्थात् ! सुखदुःखनाशक हे रघुनाथ ! हे महीपाल ! मेरे दीन जनको देखिये ॥ १७ ॥

हे श्रीरंग ! अर्थात् लक्ष्मीपति ! तुमसे बारंबार यही बर मैं माँगता हूं सो आनंद होके, देदो. क्या ? अनपायनी तुम्हारे चरणकमलोंमें भक्ति और सतसंग सदा होवे ॥ ३१ ॥

सुरदुर्लभ सुख करि जगमाहीं * अन्तकाल रघुपतिपुर जाहीं ॥
सुनहिं बिमुक्तबिरतअरुबिषयी * लहहिं भक्तिसुखसम्पति नितयी
खगपति रामकथा मैं बरणी * सुमतिबिलास त्रासदुखहरणी ॥
बिरतिबिबेकभक्ति दृढ़ करणी * मोहनदीकहँ सुन्दर तरणी[1] ॥
नितनव मंगल कोशलपुरी * हर्षित रहहिं लोग सबकुरी[2] ॥
नित नव प्रीति रामपदपंकज * सेवत जेहिं शंकर सुरमुनि अज
मंगन बहु प्रकार पहिराये * द्विजन दान नानाबिधि पाये ॥

दो०परमानन्दबिमग्न कपि, सब कहँ प्रभुपद प्रीति
जात न जानेउ दिवसनिशि, गये मास षट्बीति३३

बिसरे गृह सपनेउ सुधि नाहीं * जिमि परद्रोह सन्त मनमाहीं॥
तब रघुपति सब सखा बुलाये * आइ सबहिं सादर शिर नाये ॥
प्रेम-समेत निकट बैठारे * भक्तसुखद मृदु बचन उचारे॥
तुम अति कीन्ह मोरि सेवकाई* मुखपर केहि बिधि करौं बड़ाई
ताते मोहिं तुम अतिप्रिय लागे*ममहितलागि भवनसुख त्यागे ॥
अनुज राजसम्पति[3] बैदेही * देह गेह परिबार सनेही ॥
सबमोहिं नहिं प्रियतुमहिं समाना* मृषा न कहौं मोर यह बाना ॥
सबकहँ प्रिय सेवक यहनीती * मोरे अधिक दासपर प्रीती ॥

दो०अब गृह जाहु सखा सब, भजहु मोहिं दृढनेम ॥
सदा सर्बगत सर्बहित, जानि करेहु अतिप्रेम ॥३४॥

सुनि प्रभुबचन मग्न सब भये * को हम कहाँ बिसरि तनु गये
इकटक रहे जोरि कर आगे * कहिनसकतकछुअतिअनुरागे ॥
परमप्रीति तिनकरि प्रभु देखी * कहाबिबिधबिधिज्ञानबिशेखी ॥

१ नौका. २ जाति जाति; ३ राज्यलक्ष्मी.

प्रभुसन्मुख कछु कहै न पावहिं * पुनिपुनिचरणसरोजनिहारहिं ॥
तब प्रभु भूषण बसन मँगाये * नानारंग अनूप सुहाये ॥
सुग्रीवहिं प्रथमहिं पहिराये * भरत बसन निजहाथ बनाये ॥
प्रभुप्रेरित लक्ष्मण पहिराये * लंकापति रघुपति मन भाये ॥
अंगद बैठि रहे नाहिं डोले * प्रीति जानि प्रभु ताहि न बोले

दो०जाम्बवंत नीलादि सब, पहिराये रघुनाथ ॥
हिय धरि रामस्वरूप सब, चले नाय पद माथ ३५
तब अंगद उठि नाइ शिर, सजल नयन कर जोरि॥
अतिबिनीत बोले बचन, मनहुँ प्रेमरसबोरि ॥ ३६ ॥

सुन सर्बज्ञ कृपासुखसिन्धो * दीनदयाकर आरतबन्धो ॥
मरतीबार नाथ मोहिं बाली * गयो तुम्हारे पगतर घाली ॥
अशरणशरण बिरद सम्भारी * मोहिं जनि तजहु भक्तभयहारी
मोरे प्रभु तुम गुरु पितु माता * जाउँ कहाँ तजि पदजलजाता
तुमहिं बिचारि कहहु नरनाहा * प्रभु तजि भवन काज मम काहा
बालक अबुध ज्ञान–बल–हीना * राखहु शरण जानि जन दीना ॥
नीचटहल गृहकी सब करिहौं * पद बिलोकि भवसागर तरिहौं॥
अस कहि चरण परे प्रभुपाहीं * अब जनि नाथ कहहु गृह जाहीं

दो०अंगदबचन बिनीत सुनि, रघुपति करुणासींव॥
प्रभु उठाय उर लायऊ, सजलनयनराजीव ॥ ३७॥
निजउर माला बसन मणि, बालितनय पहिराय ॥
बिदा किये भगवान तब, बहुप्रकार समुझाय ॥३८॥

भरत–अनुज–सौमित्रि-समेता* पठवन चले भक्तकृतचेता ॥

---

१ पदकमल. २ वस्त्र. ३ संसारसमुद्र. ४ नम्र.

अंगदहृदय प्रेम नहिं थोरा * फिरि फिरिचितवतप्रभुकीओरा
बार बार करि दण्ड-प्रणामा *मन अस रह नकहाहिं मोहिं रामा
रामबिलोकनि बोलनी चलनी *सुमिरिसुमिरिसोचतहँसिमिलनी
प्रभुरुख देखि बिनय बहु भाषी * चले हृदय पदपंकज राखी ॥
अतिआदर सब कपि पहुँचाये * भाइनसहित राम फिर आये ॥
तब सुग्रीव चरण गहि नाना *भाँति बिनय कीन्ही हनुमाना ॥
दिन दश करि रघुपतिपदसेवा * तब फिर चरण देखिहौं देवा ॥
पुण्यपुंज तुम पवन-कुमारा * सेवहु जाइ कृपा[1]अगारा ॥
अस कहि कपिपति चले तुरंता* अंगद कहेउ सुनहु हनुमन्ता॥

दो०करेहु दण्डवत प्रभुसन,तुमहिं कहौं करजोरि
बार बार रघुनायकहिं, सुरति करायेहु मोरि३९
अस कहि चलेउ बालिसुत, फिरि आये हनुमन्त
तासु प्रीती प्रभुसन कही, मग्न भये भगवन्त॥४०॥
कु[2]लिशहुँ चाह कठोर अति,कोमल कुसुमहुँ चाहि
चित खगेश रघुनाथ अस, समुझि परै कहु काहि

पुनि कृपालु लियेबोलिनिषादा * दीन्हेउ भूषण बसन प्रसादा ॥
जाहु भवन मम सुमिरण करहू* मन क्रम बचन धर्म अनुसरहू
तुम मम सखा भरतसम भ्राता * सदा रहहु पुर आवत जाता॥
बचन सुनत उपजा सुख भारी* परेउ चरण लोचन भरि बारी॥
चरणकमल उर धरि गृह आवा* प्रभुप्रभाव परिजनहिं सुनावा॥
रघुपतिचरित देखि पुरबासी * पुनिपुनिकहहिं धन्यसुखराशी॥
राम राज बैठे त्रयलोका * हर्षित भयउ गयउ सब शोका॥

---

१ दयाके घर रामचंद्रजीको. २ बज्रसेभी कठिन.

बैर न कर काहूसन कोई * रामप्रताप विषमता खोई ॥

दो०बर्णाश्रम निजनिजधरम, निरत बेदपथ लोग
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं,नहिं भय शोकन रोग

दैहिक दैविक भौतिक तापा * रामराज नहिं काहुहिं व्यापा॥
सब नर कराहिं परस्पर प्रीती * चलहिं सुधर्मनिरतश्रुतिनीती॥
चारिउँ चरण धर्म जगमाहीं * पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं ॥
रामभक्तिरत नर अरु नारी * सकल परमगतिके अधिकारी
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा * सब सुंदर सब निरुजशरीरा ॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना * नहिं कोउ अबुध न लक्षणहीना
सब ० निर्दम्भ धर्मरतिधरणी * नर अरु नारि चतुरशुभकरणी
सब गुणज्ञ सब पाण्डित ज्ञानी * सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी

दो० रामराज्य बिहँगेश सुनु, सचराचरजगमाहिं
कालकर्मस्वभावगुण, कृत दुख काहुहिं नाहिं ४३

भूमि सप्त सागर मेखला * एक भूप रघुपति कोशला ॥
भुवन अनेक रोमप्रति जासू * यह प्रभुता कछु बहुत न तासू
सो महिमा समुझत प्रभुकेरी * यह बर्णत हीनता घनेरी ॥
यह महिमा खगेश जिन जानी * फिरियहचरिततिनहुँरतिमानी
सोउ जानेकर फल यह लीला * कहहिं महामुनिसुमतिसुशीला
रामराज्यकर सुख–सम्पदा * बर्णि न सकहिं फणीश शारदा
सब उदार सब परउपकारी * द्विजसेवक सब नर अरु नारी
एकनारिव्रत–रत नरझारी * ते मन बच क्रम पतिहितकारी

दो० दण्ड यतिनकर भेद जहँ, नर्तक नृत्यसमाज

१ पाप. २ रोगरहित देहवाले. ३ मूर्ख. ४ क्षुद्रघंटिका.

जीतहिं मनहिं सुनिय अस, रामचन्द्रके राज ॥ ४४ ॥

फूलहिं फलहिं सदा तरु[1] कानन * रहहिं एकसंग गज-पंचानन[2] ॥
खग मृग बैर सहज बिसराई * सबनि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥
कूजहिं खग मृग नानावृन्दा * अभयचरहिं बनकरहिं अनन्दा
शीतल सुरभि पवन बह मन्दा * गुंजत अलि ले चलु मकरन्दा॥
लता बिटप मांग फल द्रवहीं * मनभावते धेनु पय श्रवहीं ॥
सरिसम्पन्न सदा रह धरणी * त्रेता भासत युगकी करणी ॥
प्रगटे गिरि नाना मणिखानी * जगदात्मा भूपति पहिंचानी ॥
सरिता सकल बहैं बर बारी * शीतल अमल स्वादु सुखकारी
सागर निज-मर्यादा रहहीं * डारहिं रत्न तटनि नर लहहीं
सरसिज[3]संकुल सकलतड़ागा * अतिप्रसन्न दशदिशा बिभागा ॥

दो०-बिधु महिपूर पियूष[4]न, रबि तपते जनकाज ॥
माँगे बारिद[5] देहिं जल, रामचंद्रके राज ॥ ४५ ॥

कोटिन्ह बाजिमेघ[6] प्रभु कीन्हें * अमित दान बिप्रनकहँ दीन्हें ॥
श्रुतिपथ-पालक धर्मधुरंधर * गुणातीत अरु भोग-पुरन्दर॥
पतिअनुकूल सदा रहै सीता * शोभाखानि सुशील बिनीता॥
जानति कृपासिन्धु-प्रभुताई * सेवत चरणकमल मन लाई ॥
यद्यपि गृह सेवक-सेवकीनी * सबप्रकार सेवाबिधि लीनी ॥
निजकर गृहपारिचर्या करहीं * रामचन्द्र-आयसु अनुसरहीं॥
जेहिबिधि कृपासिन्धु सुख मानहिं*सोइ सिय सेवाबिधि उरआनहिं
कौशल्यादि सासु गृहमाहीं * सेवहिं सबै मान मद नाहीं ॥
उमा-रमा-ब्रह्माणि-बन्दिता * जगदम्बा सन्तत अनिन्दिता॥

१ वृक्ष. २ सिंह. ३ कमलोंसे व्याप्त. ४ अमृतसे. ५ मेघ. ६ अश्वमेध.

दो०जाकी कृपाकटाक्षसुर, चाहत चितवनि सोइ॥
रामपदारविन्दरत, रहति स्वभावहिं जोइ ॥४६॥

सेवहिं सानुकूल सब भाई * रामचरणरतिप्रीति सुहाई ॥
प्रभुपदकमल बिलोकत रहहीं * कबहुँ कृपालुहमहिं कछु कहहीं
राम करहिं भ्रातनपर प्रीती * नानाभांति सिखावहिं नीती ॥
हर्षित रहहिं नगरके लोगा * करहिं सकल सुरदुर्लभ भोगा ॥
अहनिशि[१] विधिहिं मनावत रहहीं * श्रीरघुबीरचरणरति चहहीं ॥
दुइ सुत सुन्दर सीता जाये * लव कुश बेद-पुराणनि गाये ॥
दोउ बिनयी बिजयी अतिसुन्दर * हरिप्रतिबिंब मनहुँ गुणमन्दिर॥
दुइ, दुइ सुत सब भ्रातनकेरे * भये रूप गुण शील घनेरे ॥

दो०ज्ञान-गिरा--गोतीत अज, माया-गुण-गोपार
सोइ सच्चिदानन्दघन, करत चरित्र अपार॥ ४७ ॥

प्रातकाल सरयू करि मज्जन * बैठहिं सभा संग द्विज सज्जन ॥
बेद पुराण वसिष्ठ बखानहिं * सुनहिं राम यद्यपिसब जानहिं॥
अनुजन्हसंयुत भोजन करहीं * देखि सकलजननी सुख भरहीं ॥
भरत शत्रुहन दोनौं भाई * सहित पवनसुत उपबन जाई ॥
पूँछहिं बैठि रामगुणगाहा * कह हनुमान स्वमतिअवगाहा॥
सुनतबिमलगुण अतिसुखपावहिं * बहुरि बहुरिकै बिनयसुनावहिं॥
सबके गृह गृह होइ पुराना * रामचरित सुन्दर बिधि नाना ॥
नर अरु नारि रामगुण गावहिं * करहिंदिवसनिशिजातनजानहिं

दो०अवधपुरीबासिन्हकर,सुख-सम्पदा-समाज॥
सहस शेष नहिं कहि सकहिं, जहँ नृपराम बिराज॥

---

१ रात्रि-दिन.

नारदादि सनकादि मुनीशा * दर्शनलागि कोशलाधीशा ॥
दिनप्रति सकलअयोध्याआवहीं* देखि नगर बिराग बिसराबाहिं॥
रत्नजटित मणि–कनक-अटारी* नानारंग रुचिर गच ढारी ॥
पुरचहुँपास कोट अतिसुन्दर * रचे कँगूरा रंग रंग वर ॥
नव गृह सुन्दर निकर बनाई * मनहुँ घेरि अमरावति आई ॥
महि बहुरूप रुचिर गच काँचा* जो बिलोकि मुनिबरमन नाचा
धवल[2]धाम ऊपर नभ चुंबत * कलशमनहुँशशिरबिद्युतिनिंदत
बहुमाणिरचित झरोखन भ्राजैं * गृह गृहप्रति मणिदीप बिराजैं

छंद०मणिदीपराजहिंभवनभ्राजहिंदेहरीबिद्रु[3]मरची
सुन्दरमनोहरमन्दिरायतअजिरअतिफटिकनखची
मणिखंभभीतिविरंचिविरचितकनकमणिमरकतरचे
प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाय बहु वज्रन खचे
दो०चारु चित्रशाला अमित, गृह गृह रचे बनाइ
रामधाम जो निरखत, मुनिमन लेत चुराइ ॥४९॥

सुमनबाटिका सबहिं लगाई * बिबिध भांतिकरियत्न बनाई॥
लता ललित बहुभांति सुहाई * फूलहिं सदा बसन्तकि नाई ॥
गुंजत मधुकर मुखर मनोहर * मारुत त्रिबिध सदा बह सुंदर
नानाखग बालकन्ह जिआये * बोलत मधुर उड़ात सुहाये ॥
मोर हंस सारस पारावत * भवनन्हपर शोभा अतिपावत॥
जहँतहँ देखहिं निजपरिछाहीं * बहुबिधि कूजहिं नृत्य कराहीं ॥
शुभ सारिका पढ़ावहिं बालक* कहहु राम रघुपति जनपालक॥
राजद्वार सबहीबिधि चारू * बीथी चौहट रुचिर बजारू ॥

१ समूह. २ सपेद मकान. ३ मूंगाकी बनी. ४ अंगन. ५ सुवर्णके.

छंद०बाजार रुचिरनबनैबर्णतबस्तुबिनुगथंपाइये
जहँ भूप रमानिबास तहँकी सम्पदा किमि गाइये
बैठे बजाज सराफ बणिकअनेक मनहुँ कुबेर ते॥
सबसुखीसबसुचरित्रसुन्दरनरयुवाशिशुजरठते १९

दो०उत्तरदिशि सरयू बहै, निर्मलजल गम्भीर॥
बाँधे घाट मनोहर, स्वल्प पंक[2] नहिं तीर ॥ ५० ॥

दूर फराक रुचिर सो घाटा * जहँ जल पिवहिं बाजिगजठाटा
पनिघट परममनोहर नाना * तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना
राजघाट सबहीबिधि सुंदर * मज्जहिं तहाँ बर्ण चारिउ नर ॥
तीर तीर देबनकर मन्दिर * चहुँदिशितिहिंकेउपबन[3] सुन्दर ॥
कहुँ कहुँ सरितातीरनिबासी* बसहिं ज्ञानरत मुनि संन्यासी॥
जहँ तहँ तुलसीवृन्द सुहाये * बहुप्रकार सबमुनिन लगाये ॥
पुरशोभा कछु बर्णि न जाई * बाहर नगर परम—रुचिराई ॥
देखत पुरी अखिलअघ भागा* बन उपबन बापिका तड़ागा ॥

छंद०बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहईं
सोपान[4] सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहईं॥
बहुरंग कंज[5] अनेक खग कूजहिं[6] मधुप गुंजारहीं ॥
आराम रम्यपिकादिखगरव मनहुँमथिकहँकारहीं॥

दो०रमानाथ जहँ राज्यपति, सो पुर बर्णिन जाइ॥
अणिमादिक सुख सम्पदा,रहीं अवधपुर छाइ ५१

जहँतहँ नर रघुपति गुण गावहिं* बैठि परस्पर इहै सिखावहिं ॥
भजहु प्रणतप्रतिपालक रामहिं* शोभा-शील—रूप—गुणधामहिं

१ अनमोल. २ कीच. ३ समीपवन. ४ सीढी. ५ कमल. ६ बोलते हैं.

जलजबिलोचन श्यामलगातहिं * पलकनयनइव सेवकत्रातहिं ॥
धृत-शैर-रुचिर-चापतूणीरहिं * सन्तकंजबनरबि रणधीरहिं ॥
काल-करालब्याल-खगराजहिं * नमत रामअकाम ममता जहिं॥
लोभ-मोह-मृग यूथ-किरातहिं * मनसिजकरिहरिजनसुखदातहिं
संशयशोक-निबिड़तम-भानुहिं * दनुजगहनबनदहनकृशानुहिं ॥
जनकसुता-समेत रघुबीरहिं * कस न भजहुभंजन भवभीरहिं
बहु-बासनामशक--हिमराशिहिं * सदाएकरसअजअबिनाशिहिं॥
मुनिरंजन भंजन महिभारहिं * तुलसिदासके प्रभुहिं उदारहिं ॥

दो०इहिबिधि नगरनारिनर, करहिं रामगुणगान॥
सानुकूल सन्तत रहत, सबपर कृपानिधान॥५२॥

जबते रामप्रताप खगेशा * उदित भयउ अतिप्रबल दिनेशा
पूरि प्रकाश रहेउ तिहुँलोका * बहुतन सुख बहुतनमन शोका ॥
जिनहिं शोक तेहि कहौं बखानी * प्रथम अबिद्यानिशा सिरानी ॥
अघउलूक जहँ तहाँ लुकाने * काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥
बिबिध कर्म गुण काल स्वभाऊ * ये चकोर सुख लहहिं नकाऊ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा * इनकहँसुख नाहिं कवनिहुँ ओरा
धर्म तड़ाग ज्ञान बिज्ञाना * ये पंकज बिकसे बिधि नाना॥
सुख सन्तोष बिराग बिवेका * बिगत शोक ये लोक अनेका॥

दो०यहप्रतापरबि जासु उर,जब प्रभु करहिंप्रकाश
पाछिल बाढहिं प्रथम जे,कहेते पावहिं नाश॥५३॥

भ्रातनसहित राम इकबारा * संग परमप्रिय पवनकुमारा ॥
सुन्दर उपबन देखन गयऊ * सब तरु कुसुमित पल्लव नयऊ॥

१ भक्तपालकको. २ बाण.

जानि समय सनकादिक आये * तेजपुंज गुणशील--सुहाये ॥
ब्रह्मानन्द सदा लवलीना * देखत बालक बहुकालीना ॥
धरे देह[1] जनु चारिउ बेदा * समदर्शी मुनि बिगतबिभेदा ॥
आसाबसन[2] व्यसन[3] नहिं तिनही * रघुपतिचरित होइ तहँ सुनहीं ॥
तहाँ रहे सनकादि भवानी * जहँ घटसंभव मुनिबर ज्ञानी ॥
रामकथा मुनि[4] बहुबिधि बरणी * ज्ञानयोगपावकजिमि अरणी ॥

दो०देखि राम मुनि आवत, हर्षि दण्डवत कीन्ह ॥
स्वागत पूँछी पीतपट, प्रभु बैठनकहँ दीन्ह ॥ ५४ ॥

कीन्ह दण्डवत तीनिउ भाई * सहित पवनसुत सुखअधिकाई
मुनि रघुपतिछबि अतुल बिलोकी * भये मग्न मन सकत न रोंकी ॥
श्यामलगात सरोरुहलोचन * सुन्दरतामंदिर भवमोचन ॥
इकटक रहे निमेष न लावाहिं * प्रभु कर जोरे शीश नवावहिं॥
तिन्हकी दशा देखि रघुबीरा * श्रवत नयन जल पुलकशरीरा
कर गहि प्रभु मुनिबर बैठारे * परममनोहर बचन उचारे ॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीशा * तुम्हरे दर्श जाहिं अघ[5] खीशा ॥
बड़े भाग्य पाइय सत्संगा * बिनहिं प्रयास होहि भवभंगा ॥

दो०सन्तसंग अपबर्गकर, कामी भवकर पन्थ ॥
कहहिं सन्त कबि कोबिद, श्रुतिपुराण सद्ग्रन्थ ५५

सुनि प्रभुबचन हर्षि मुनि चारी * पुलकगात अस्तुति अनुसारी॥
जय भगवंत अनंत अनामय * अनघ अनेक एक करुणामय॥
अज निर्गुण जयजय गुणसागर * सुखनिधान तिहुँलोकउजागर॥
जय इन्दिरारमण जय भूधर * अनुपमयश अनादि शोभाकर ॥

---

१ बड़े प्राचीन. २ दिगंबर परमहंस. ३ इस्क. ४ अगस्ति. ५ पाप.

ज्ञाननिधान अमान मानप्रद * पावन सुयश पुराण बेद बदं[1] ॥
तज्ज्ञ कृतज्ञ अज्ञता-भंजन * नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
सर्व सर्वगत सर्व-उरालय[2] * बसहु सदा हमकहँ प्रतिपालय
द्वन्द्वबिपति--भवफंद--बिभंजन * हृद[3] बसु राम काममदगंजन ॥
देहु भक्ति रघुपति अनपावनि * त्रिबिधतापभवतापनशावनि ॥

दो०परमानन्द कृपायतन, तुम परिपूरण काम ॥
प्रेमभक्ति अनपावनी, देहु हमहिं श्रीराम ॥ ५६ ॥

प्रणत–काम–सुरधेनु कल्पतरु * होइ प्रसन्न प्रभु दीजै यह बरु॥
भवबारिधिकुंभज रघुनायक * सेवकसुलभ सकलसुखदायक
मनसम्भव-दारुण–दुख दारय * दीनबन्धु समता बिस्तारय ॥
आश–त्रास -ईर्षादि–निवारक * बिनयबिबेकबिरतिबिस्तारक ॥
भूपमौलिमणि मण्डन धरणी * देहु भक्ति संसृतिसरितरणी ॥
मुनिमन--मानसहंस निरंतर * चरणकमलबंदित अज शंकर ॥
रघुकुलकेतु सेतु श्रुतिरक्षक * कालकर्मस्वभावगुण--भक्षक ॥
तारणतरण हरण सब दूषण * तुलसिदासप्रभु त्रिभुवनभूषण ॥

दो०बार बार अस्तुति करि, प्रेमसहित शिर नाइ॥
ब्रह्मभवन सनकादि गे, अतिअभीष्ट बर पाइ ॥५७॥

सनकादिक बिधिलोक सिधाये * भ्रातन रामचरण शिर नाये ॥
पूँछत प्रभुहिं सकल सकुचाहीं * चितवहिं सब मारुतसुतपाहीं ॥
सुना चहहिं प्रभुमुखकी बानी * जो सुनिहोयँ सकल भ्रमहानी
अन्तर्यामी प्रभु सब जाना * पूँछत कहहु कहा हनुमाना ॥
जोरि पाणि तब कह हनुमंता * सुनिय दीनबन्धू भगवन्ता ॥

१ कहते हैं. २ सबके हृदयमें रहनेवाले. ३ हृदयमें.

नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं * प्रश्न करत मन सकुचत अहहीं॥
तुम जानहुँ कपि मोर सुभाऊ * भरतहि मोहिं न कछू दुराऊ ॥
सुनिप्रभुबचन भरत गहि चरणा* सुनिय नाथ प्रणताराितिहरणा ॥

दो०नाथ न मोहिं संदेह कछु, सपनेहुँ शोक न मोह॥
केवल कृपा तुम्हारि प्रभु, चिदानन्दसन्दोह॥५८॥

करौं कृपानिधि एक ढिठाई * मैं सेवक तुम जनसुखदाई ॥
सन्तनकी महिमा रघुराई * बहुबिधि बेदपुराणन्ह गाई ॥
श्रीमुख पुनि तुम कीन्ह बड़ाई * तिन्हपरप्रभुहिं प्रीति अधिकाई॥
सुन्ना चहौं प्रभु तिन्हकर लक्षण* कृपासिंधु गुणज्ञानबिचक्षण ॥
सन्त–असन्त-भेद बिलगाई * प्रणतपाल मोहिं कहिय बुझाई॥
सन्तनके लक्षण सुनु भ्राता * अगणितश्रुतिपुराणबिख्याता ॥
सन्तअसन्तनकी अस करणी * जिमि कुठारचन्दनआचरणी ॥
काटेपर सुमलय[1] सुनि भाई * निजगुण देइ सुगन्ध बसाई ॥

दो०ताते सुरशीशन चढत, जगबल्लभ श्रीखण्ड ॥
अनल दाहि पीटत घनहिं, परशुबदन[2] यह दंड ५९॥

बिषय अलंपट शील गुणाकर * परदुखदुख सुख सुख देखेपर ॥
सम अभूतरिपु बिमद बिरागी * लोभामर्ष–हर्ष–भय–त्यागी ॥
कोमलचित दीननपर दाया * मनबचक्रम मम भक्त अमाया॥
सबहिं मानप्रद आपु अमानी * भरत प्राणसम मम ते प्रानी ॥
बिगतकाम मम नामपरायन * शान्तबिरक्त नित मुदितायन ॥

---

१ चंदन. २ कुठारमुखको.

शीतलता सरलता मैत्री * द्विजपदप्रेम धर्म जनु यंत्री ॥
यह सब लक्षण बसहिं जासु उर * जानेहु तात सन्त सन्तन फुर॥
शमदमनियमनीतिनहिं डोलहिं * परुष बचन कबहुंनाहिं बोलहिं॥

दो०निन्दा अस्तुति उभयसम, ममता ममपदकंज॥
ते सज्जन मम प्राणप्रिय, गुणमन्दिर सुखपुंज॥६०॥

सुनहु असन्तनकेर सुभाऊ * भूलेहि संगति करिय न काऊ॥
तिनकर संग सदा दुखदाई * जिमि कपिलहिं घालैं हर हाई॥
खलनहृदय अतिताप-विशेखी * जरहिं सदा परसम्पति देखी ॥
जहँ कहँ निन्दा सुनहिं पराई * हर्षहिं मनहुँ परी निधि पाई ॥
काम-क्रोध-मद--लोभपरायन * निर्दय कपटी कुटिल मलायन
वैर अकारण सबकाहूसों * जो करु हित अनहित ताहूसों॥
झूँठे[2] लेना झूँठै देना * झूँठै भोजन झूँठ चबेना ॥
बोलहिं मधुर बचन जिमिमोरा * खाहिं महाअहि हृदय कठोरा॥

दो०परद्रोही परदार-रत, पर-धन पर-अपवाद॥
ते नर पामर पापमय, देह धरे मनुजाद ॥ ६१ ॥

लोभै ओढ़न लोभै डासन * शिश्नोदरपर यमपुरत्रासन ॥
काहूकी जो सुनहिं बड़ाई * श्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥
जब काहूकी देखहिं बिपती * सुखी होहिं मानहुँ जग नृपती
स्वारथरत परिवारबिरोधी * लम्पट कामलोभ अतिक्रोधी॥
मात पिता गुरु बिप्र न मानहिं* आपुगये अरु घालहिं आनहिं॥
करहिं मोहवश द्रोह परावा * सत्संगति हरिभक्ति न भावा॥
अवगुणसिन्धु मन्दमति कामी * बेदबिदूषक परधनस्वामी ॥

---

१ कठोर. २ कृष्णार्पण नहीं इससे लेना देना सब झूँठ है.

बिप्रद्रोह परद्रोह बिशेषी * दम्भ कपट जिय धरे सुवेषी ॥

दो०ऐसे अधम मनुजखल, कृतयुग त्रेता नाहिं ॥
द्वापर कछुक वृन्द बहु, होइहैं कलियुगमाहिं ६२

परहितसरिस धर्म नहिं भाई * परपीडासम नहिं अधमाई ॥
निर्णय सकल--पुराण--बेदकर * कहेहुँ तात जानहिं कोबिदनर
नरशरीर धारि जो परपीरा * करहिं ते सहहिं महाभवभीरा॥
करहिं मोहबश नर अघनाना * स्वारथरत परलोक नशाना ॥
कालरूप मैं तिनकर ताता * शुभ अरु अशुभ कर्मफलदाता
अस बिचारि जो परम सयाने * भजहिं मोहिं संसृतिदुखजाने ॥
त्यागहिं कर्म शुभाशुभदायक * भजैं मोहिं सुरनरमुनिनायक ॥
सन्तअसन्तनके गुण भाषे * ते न परहिं भव जिन लखिराखे

दो०सुनहु तात मायाकृत, गुण अरु दोष अनेक ॥
गुण यह उभय न देखिये, देखिय सो अबिबेक६३

श्रीमुखबचन सुनत सब भाई * हर्ष प्रेम नहिं हृदय समाई ॥
करहिं बिनय अति बारहिं बारा * हनूमानहिय हर्ष अपारा ॥
पुनि रघुपतिनिजमन्दिर गये * इहिबिधि चरित करत नितनये
बार बार नादर मुनि आवहिं * चरित पुनीत रामकर गावहिं ॥
नित नव चरित देखि मुनि जाहीं * ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ॥
सुनि बिरंचि अतिशयसुखमानहिं* पुनि पुनि तात करहुगुणगानहिं
सनकादिक नारदहिं सराहहिं * यद्यपि ब्रह्मनिरत मुनि आहहिं॥
सुनि गुणगान समाधि बिसारी * सादर सुनहिं परमअधिकारी ॥

दो०जीवन्मुक्त ब्रह्मपर, चरित सुनहिं तजि ध्यान
जे हरिकथा न करहिं रति, तिनके हृदय पषान६४

एकबार रघुनाथ बुलाये * गुरु द्विज पुरबासी सब आये ॥
बैठे गुरु द्विजवर मुनिसज्जन * बोले वचन भक्तभयभंजन ॥
सुनहु सकल पुरजन मम बानी * कहौं न कछु ममता उरआनी
नहिं अनीति नहिं कछुप्रभुताई * सुनौ करहु जो तुमहिं सुहाई ॥
सोइ सेवक प्रीतम मम सोई * मम अनुशासन मानै जोई ॥
जो अनीति कछु भाषौं भाई * तौ मोहिं वर्जेहु भय बिसराई॥
बड़े भाग्य मानुषतनु पावा * सुरदुर्लभ सद्ग्रन्थन गावा ॥
साधनधाम मोक्षकर द्वारा * पाइ न जेहिं परलोक सँवारा॥

दो०सो परन्तु दुख पावई, शिर धुनि धुनि पछिताइ
कालहिं कर्महिं ईश्वरहिं, मिथ्यादोष लगाइ ॥६५॥

नरतनु कर फल बिषय न भाई * स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुखदाई ॥
इहि तनु पाइ विषय मन देहीं * पलटि सुधा ते शठ बिष लेहीं॥
ताहि कबहुँ भल कहै न कोई * गुंजा गहै परसमणि खोई ॥
आकर चारिलाख चौरासी * योनि भ्रमत यह जिय अबिनासी
फिरत सदा मायाके प्रेरे * काल--कर्म--स्वभाव--गुणघेरे॥
कबहुँक करि करुणा नरदेही * देत ईश बिनुहेतु सनेही ॥
नरतनु भवबारिधिकहँ बेरे * सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरे ॥
कर्णधार सद्गुरु दृढ़ नावा * दुर्लभ साज सुलभ करि पावा॥

दो०जो न तरै भवसागरहिं, नरसमाज अस पाइ ॥
सो कृतनिन्दक मन्दमति, आतमहनगति जाइ॥६६॥

जो परलोक इहाँ सुख चहहू * सुनि मम बचन हृदय दृढ़ गहहू
सुलभ सुखद यह मारग भाई * भक्ति मोरि पुराण श्रुति गाई

---

१ ब्राह्मण. २ हुकूम. ३ नाशरहित. ४ पवन. ५ आत्मघातीकी गतिको.

ज्ञान अगम प्रत्यूह अनेका * साधन कठिन न मनमहँ टेका
करत कष्ट बहु पावत कोई * भक्तिहीन प्रिय मोहिं न सोई॥
भक्ति स्वतंत्र सकलसुखखानी * बिनु सत्संग न पावहिं प्रानी॥
पुण्यपुंजबिनु मिलहिं न संता * सत्संगति संसृतिकर अंता॥
पुण्य एक जगमें नहिं दूजा * मन क्रम बचन बिप्रपदपूजा॥
सानुकूल तिहिं पर सब देवा * जो तजि कपट करै द्विजसेवा॥

दो०औरौ एक गुप्त मत, सबहिं कहौं कर जोरि॥
शंकरभजनबिना नर, भक्ति न पावै मोरि॥ ६७॥

कहहु भक्तिपथ कवन प्रयासा * योग न मख जपतप उपवासा॥
सरलस्वभाव न मन कुटिलाई*यथालाभ--सन्तोष सदाई॥
मोर दास कहाइ नर आसा * करै तौ कहहु कहा विश्वासा॥
बहुत कहौं का कथा बढ़ाई * इहिआचरणवश्य मैं भाई॥
बैर न बिग्रह आश न त्रासा * सुखमय ताहि सदा सब आशा॥
अनारम्भ अनिकेत अमानी * अनघ अरोष दक्ष बिज्ञानी॥
प्रीति दास सज्जनसंसर्गा * तृणसम विषय स्वर्ग अपवर्गा॥
भक्तिपक्षता नहिं शठताई * दुष्टकर्म सब दूरि बिहाई॥

दो०मम गुणग्रामनामरत, गत ममता मद मोह॥
ताकर सुख सोइ जानै, परमानँदसन्दोह॥ ६८॥

सुनत सुधासम बचन रामके * सबन्हि गहे पद कृपाधामके॥
जननि जनक गुरु बन्धु हमारे * कृपानिधान प्राणते प्यारे॥
तनु धन धाम रामहितकारी * सबबिधि तुम प्रणतारतिहारी॥
अस सिख तुम बिनु देइ न कोउ* मातपितास्वारथ रत ओऊ॥

---

१ बिघ्न. २ संसारका. ३ यज्ञ. ४ बिनाघरका. ५ मोक्ष. ६ कुकर्म.

हेतुरहित सबबिधिउपकारी * हम तुम्हार सेवक असुरारी ॥
स्वारथ मीत सकलजगमाहीं * सपनेहुँ कोउ परमारथ नाहीं ॥
सबके बचन प्रेमरससाने * सुनि रघुनाथ हृदय हर्षाने ॥
निज निज गृह गे आयसु पाई * वर्णत प्रभुकी गिरा सुहाई ॥

दो०उमा अवधबासी नर, नारि कृतारथरूप ॥
ब्रह्म सच्चिदानंन्दघन, रघुनायक जहँ भूप ॥६९॥

एकबार वसिष्ठ मुनि आये * जहां राम सुखधाम सुहाये ॥
अतिआदर रघुनायक कीन्हा * पद पखारि चरणोदक लीन्हा॥
राम सुनहु मुनि कह करजोरी * कृपासिन्धु बिनती इक मोरी ॥
देखि देखि आचरण तुम्हारा * होत मोह मम हृदय अपारा ॥
महिमा अमित बेद नहिं जाना * मैं केहि भांति कहौं भगवाना ॥
उपरोहिती--कर्म अतिमन्दा * बेदपुराणस्मृति कर निन्दा ॥
जब न लेउँ तबहीं बि[2]धि मोहीं * कहा लाभ आगे सुत तोहीं ॥
परमात्मा ब्रह्म नररूपा * होइहैं रघुकुलभूषण भूपा ॥

दो०तब मैं हृदय बिचार किय, योग यज्ञ जप दान ॥
जे नित करिय सो पाइये, धर्म न इहसम आन॥७०॥

जप तप नियम योग ब्रतधर्मा * श्रुतिसम्भव नानाविध कर्मा ॥
ज्ञान दया दम[3] तीरथमज्जन * जहँलगि धर्म कहैं श्रुतिसज्जन॥
आगम[4] निगम[5] पुराण अनेका * पढ़े सुने कर फल प्रभु एका ॥
तव पदपंकजप्रीति निरंतर * सबसाधनकर फल यह सुंदर ॥
छूटै मल कि मलहिके धोये * घृत कि पावकोउबारिबिलोये॥
प्रेमभक्तिजलबिनु रघुराई * अभ्यन्तरमल कबहुँ न जाई ॥

१ ज्ञानरूप. २ ब्रह्माने. ३ इन्द्रियदमन. ४ शास्त्र. ५ वेद.

सोइ सर्वज्ञ तज्ञ[1] सोइ पंडित * सोइ गुणज्ञ विज्ञान अखंडित ॥
दक्ष सकल-लक्षणयुत सोई * जाके पदसरोजरति होई ॥

दो०नाथ एक बर माँगौं, मोहिं कृपा करि देहु ॥
जन्म जन्म प्रभुपदकमल, कबहुँ घटै जनि नेहु ॥७१॥

अस कहि मुनि बशिष्ठगृह आये * कृपासिन्धुके मन अतिभाये ॥
हनूमान भरतादिक भ्राता * संग लिये सेवकसुखदाता ॥
पुनि कृपालु पुरबाहर गयऊ * गज रथ तुरग मँगावतभयऊ ॥
देखि कृपा करि सकल सराहे * दियेउचितजिन्हजिन्ह जोचाहे ॥
हरण सकलश्रम प्रभु श्रम पाई * गये जहाँ शीतल अमराई[2] ॥
भरत दीन्ह निजबसन डसाई * बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥
मारुतसुत मारुत[3] तब करई * पुलकिगात लोचन जल भरई ॥
हनूमानसम को बड़भागी * नहिं कोउ रामचरणअनुरागी ॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई * बार बार प्रभु निजमुख गाई ॥

दो०तेहि अवसर मुनि नारद, आये करतल बीन ॥
गावनलागे रामगुण, कीरति सदा नबीन ॥ ७२ ॥

मामवलोकय[4] पंकजलोचन[5] * कृपाबिलोकनि शोचबिमोचन ॥
नीलतामरस-श्याम कामअरि * हृदयकंजमकरंदमधुप हरि ॥
यातुधान-बरूथ-बलगंजन * मुनिसज्जनरंजन अघभंजन ॥
भूसुरशशि-नववृन्द-बलाहक * अशरणशरण दीनजनगाहक ॥
भुजबल बिपुलभार महि खंडित * खरदूषणबिराध-बधपण्डित ॥
रावणारि सुखरूप भूपबर * जय दशरथकुलकुमुदसुधाकर ॥
सुयशपुराण बिदित निगमागम * गावत सुर मुनिसंतसमागम ॥

---

१ ब्रह्मवेत्ता. २ बगीचा. ३ पवन. ४ हमको देखो. ५ हे कमलनयन!

कारुणीक बालीमद-खंडन * सबबिधि कुशल कोशलामंडन
कलिमलमथन नाम ममताहन * तुलसिदासप्रभुपाहिप्रणतजन ॥

दो०प्रेमसहित मुनि नारद, बर्णि राम-गुण-ग्राम[1] ॥
शोभासिंधु हृदय धरि, गये जहाँ बिधिधाम ॥७३॥

गिरिजा सुनहुँ बिशद यह कथा * मैं सब कही मोरि मति यथा॥
रामचरित शतकोटि अपारा * श्रुति शारदा न वर्णैं पारा ॥
राम अनन्त अनन्तगुणानी * जन्मकर्म अगणित नामानी[2] ॥
जलशीकर[3] महिरज गणि जाहीं * रघुपतिचरित न बर्णि सिराहीं
बिमल कथा यह हरिपददायिनि * भक्ति होइसुनिअतिअनपाइनि॥
उमा कहेउँ सो कथा सुहाई * जो भुशुण्ड खगपतिहिं सुनाई ॥
कछुक रामगुण कहेउँ बखानी * अब का कहौं सो कहहु भवानी
सुनि शुभ कथा उमा हर्षानी * बोली अतिबिनीत मृदु बानी ॥
धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी * सुनेउँ रामगुण भवभयहारी ॥

दो०तुम्हरी कृपा कृपायतन, अब कृतकृत्य न मोह
जानेउँ रामप्रभाव प्रभु, चिदानंदसन्दोहं ॥ ७४ ॥
नाथ तबाननशशि श्रवत, कथासुधा रघुबीर ॥
श्रवणपुटनि मन पान किय, नाहिं अघात मतिधीर ७५

रामचरित जे सुनत अघाहीं * रसबिशेष जाना तिन्ह नाहीं ॥
जीवनमुक्त महामुनि जेऊ * हरिगुण सुनत अघात न तेऊ॥
भवसागर चह पार जो पावा * रामकथा ताकहँ दृढ़ नावा ॥
बिषयिनकहँ पुनि हरिगुणग्रामा * श्रवणसुखद अरु मनबिश्रामा॥

१ रामचन्द्रजीके गुणोंका समूह. २ नाम ३ जलकिणुका.

श्रवणवन्त अस को जगमाहीं * जाहि न रघुपतिकथा सुहाहीं ॥
ते जड जीव निजातमघाती * जिनहिं न रघुपतिकथा सुहाती॥
हरिचरित्रमानस तुम गावा * सुनि मैं नाथ परमसुख पावा ॥
तुम जो कही यह कथा सुहाई * काकभुशुण्डि गरुडप्रति गाई ॥

दो०बिरत ज्ञानबिज्ञान दृढ, रामचरण अतिनेह ॥
वायसतनु रघुपतिभगति, मोहिं परमसंदेह॥७६॥

नरसहस्रमहँ सुनहु पुरारी * कोउ इक होइ धर्मव्रतधारी ॥
धर्मशील कोटिन्हमहँ कोई * बिषयबिमुख बिरागरत होई ॥
कोटिबिरक्तमध्य श्रुति कहई * सम्यक्ज्ञान सुकृत कोउ लहई
ज्ञानवन्त--कोटिन्हमहँ कोई * जीवनमुक्त सुकृत कोइ होई ॥
तिनसहस्रमहँ सबसुखखानी * दुर्लभब्रह्मनिरत बिज्ञानी ॥
धर्मशील बिरक्त अरु ज्ञानी * जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्रानी ॥
सबते सो दुर्लभ सुरराया * रामभक्तिरत गतमदमाया ॥
सो हरिभक्ति काक किमि पाई * विश्वनाथ मोहिं कहहु बुझाई ॥

दो०रामपरायण ज्ञानरत, गुणागार[३] मति--धीर ॥
नाथ कहहु केहि कारण, पायउ काकशरीर॥७७॥

यह प्रभुचरित पवित्र सुहावा * कहहु कृपालु काक किमि पावा
तुम केहिभांति सुना मदनारी * कहहु मोहिं यह कौतुक भारी॥
गरुड़ महाज्ञानी गुणराशी * हरिसेवक अतिनिकटनिबासी॥
सो केहिहेतु काकसन जाई * सुनी कथा मुनिनिकर बिहाई॥
कहहु कवनि बिधि भा संबादा * दोउ हरिभक्त काक उरगादा॥
गौरिगिरा सुनि सरल सुहाई * बोले शिव सादर सुख पाई ॥

१अपने आत्मघाती. २कागदेहमें. ३गुणोंका घर. ४महादेव ५.ऋषिसमूह.

धन्य सती पावनि मति तोरी * रघुपतिचरणप्रीति नहिं थोरी ॥
सुनहु परमपुनीत इतिहासा * जो सुनि होइ सकल भ्रमनासा
उपजहि रामचरण–विश्वासा * भवनिधितरुनरबिनहिं प्रयासा

दो०ऐसिय प्रश्न बिहंगपति, कीन्ह काकसन जाइ ॥
सो सब सादर कहत हौं, सुनहु उमा चित लाइ ७८

मैं जिमि कथा सुनी भयमोचनि * सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि
प्रथम दक्षगृह तव अवतारा * सतीनाम तब रहा तुम्हारा ॥
दक्षयज्ञ तव भा अपमाना * तुम अतिक्रोध तजा तहँ प्राना॥
मम अनुचरन्ह कीन्ह मखभंगा * जानहु तुम सो सकलप्रसंगा ॥
तब अतिशोच भयउ मन मोरे * दुखित भयउँ वियोग प्रियतोरे॥
सुन्दर गिरि बन सरित तड़ागा * कौतुक देखत फिरौं बिभागा ॥
गिरि सुमेरु उत्तर दिशि दूरी * नील शैल इक सुन्दर भूरी ॥
तासु कनकमय शिखर सुहाये * चारि चारु मोरे मन भाये ॥
तेहिपर इक इक बिटप बिशाला * बट पीपर पाकरी रसाला ॥
शैलोपरि सुन्दर सर सोहा * मणिसोपान देखि मन मोहा ॥

दो०शीतल अमल मधुर जल, जलज विपुल बहुरंग
कूजत कलरव हंसगण, गुंजत नाना भृंग ॥ ७९ ॥

तेहि गिरि रुचिर बसै खग सोई * तासु नाश कल्पान्त न होई ॥
मायाकृत गुण दोष अनेका * मोह मनोज आदि अविवेका ॥
रहेउ व्यापि समस्तजगमाहीं *तेहिगिरिनिकट कबहुँ नहिं जाहीं
तहँ बसि हरिहिं भजैजिमि कागा* सो सुनु उमा सहित अनुरागा ॥
पीपरतरुतर ध्यान सो धरई * जाप योग पाकरतर करई ॥

---

१ गरुड़. २ अच्छे. ३ आम्र. ४ तालाव. ५ मणियोंकी सीढ़ी

आँब-छाहँ करि मानसपूजा * तजि हरिभजन काज नहिं दूजा
बटतर कह हरिकथा-प्रसंगा * आवहिं सुनन अनेक बिहंगा ॥
रामचरित बिचित्र बिधिनाना * प्रेमसहित करु सादर गाना ॥
सुनहिं सकल मति बिमलमराला[1]* बसहिं निरंतर जो जेहि काला॥
जब मैं जाइ सो कौतुक देखा * उर उपजा आनन्द विशेषा ॥

दो०तब कछु काल मरालतनु, धरि तहँ कीन्ह निवास
सादर सुनि रघुपतिचरित, पुनिआयउँ कैलास ८०

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा * मैं जेहि समय गयउँ खगपासा ॥
अब सो कथा सुनहु जेहि हेतू * गयउ काकपहँ खगकुलकेतू[2] ॥
जब रघुनाथ कीन्ह रणक्रीड़ा * समुझत चरित होत मोहिं व्रीड़ा
इन्द्रजीतकर आपु बँधावा * तव नारद मुनि गरुड़ पठावा ॥
बन्धन काटि गयउ उरगादा[2] * उपजा हृदय प्रचण्ड विषादा ॥
प्रभुबन्धन समुझत बहुभाँती * करत बिचार उरगआराती[3] ॥
व्यापक ब्रह्म विरज वागीशा * माया-मोह-पार परमीशा ॥
सो अवतार सुनेउ जगमाहीं * देखा सो प्रभाव कछु नाहीं ॥

दो०भवबन्धनसे छूटहीं, नरजप जाकर नाम ॥
खर्ब निशाचर बाँधेउ, नागफाँस सोउ राम ॥ ८१ ॥

नानाभांति मनहिं समुझावा * प्रगट न ज्ञान हृदय भ्रमछावा ॥
खेदखिन्न मन तर्क बढ़ाई * भयउ मोहवश तुम्हरी नाँई ॥
व्याकुल गयउ देवऋषिपाहीं * कहेसि जो संशय निजमनमाहीं
सुनि नारदहिं लागि अतिदाया * सुनु खग प्रबल रामकी माया ॥
जो ज्ञानिन्हकर जित अपहरई * बरिआई बिमोह बश करई ॥

---

१ हंस. २ गरुड़. ३ सर्पनके शत्रु गरुड़ ४ तुच्छ.

जेहिं बहुबार नचावा मोहीं * सो व्यापेउ बिहँगेपति तोहीं ॥
महामोह उपजा मन तोरे * मिटहि न बेगि कहे खंग मोरे ॥
चतुराननपहँ जाहु खगेशा * सोइ करहु जो देहिं उपदेशा ॥

दो०अस कहि चले देवऋषि, करत रामगुणगान॥
हरिमायाबल वर्णत, पुनि पुनि परमसुजान ॥८२॥

तब खगपति बिरंचिपहँ गयऊ* निजसन्देह सुनावत भयऊ ॥
सुनि बिरंचि रामहिं शिर नावा * समुझि प्रताप प्रेम उर छावा ॥
मनमहँ करहिं बिचार बिधाता * मायाबश कवि कोबिद ज्ञाता ॥
हरिमायाकर अमित प्रभावा * बिपुलबार जो मोहिं नचावा॥
अगजगमय जग मम उपजाया* नहिं आश्चर्य मोह खगराया ॥
पुनि बोले विधि गिरा सुहाई * जानु महेश राम–प्रभुताई ॥
बैनतेय शंकरपहँ जाहू * तात अनत पूँछहु जनि काहू ॥
तहाँ होइ तव संशयहानी *चला बिहँगपति सुनिबिधिबानी

दो०परमातुर बिहंगपति, तब आयउ मम पास ॥
जात रहेउँ कुबेरगृह, उमा रहिहु कैलास ॥ ८३ ॥

तेहिं मम पद सादर शिर नावा * पुनि आपुन संदेह सुनावा ॥
सुनि ताकरि पुनीत मृदु बानी * प्रेमसहित मैं कहेउँ भवानी ॥
मिलेउ गरुड़ मारगमहँ मोहीं * कवनि भांति समुझावों तोहीं॥
जब कछु काल करिय सत्संगा* तब यह होइ मोहभ्रमभंगा ॥
सुनिय तहाँ हरिकथा सुहाई * नानाभांति मुनिन्ह जो गाई ॥
जेहिमहँ आदि–मध्य–अवसाना* प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥
नित हरिकथा होइ जहँ भाई * पठवौं तोहि सुनहु तहँ जाई ॥

---

१ हे गरुड़ ! २ ब्रह्माजीके पास. ३ पण्डित.

जाइहि सुनत सकलसंदेहा * होइहि रामचरण दृढ़ नेहा ॥

दो०बिनु सत्संग न हरिकथा, तेहि बिन मोह न भाग
मोह गये बिनु रामपद, होइ न दृढ अनुराग ॥ ८४ ॥

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा * किये योग जप ज्ञान बिरागा ॥
उत्तरदिशि सुन्दर गिरि नीला * तहँ रह काकभुशुण्ड सुशीला
राम–भक्तिपथ परम–प्रबीना * ज्ञानी गुणगृह बहुकालीना ॥
रामकथा सोइ कहै निरन्तर * सादर सुनहिं बिविधबिहंगबर ॥
जाइ सुनहु तहँ हरिगुण भूरी * होइहि मोहँजनित दुख दूरी ॥
मैं जब सब तेहिं कहा बुझाई * चलेउ हर्षि मम पद शिर नाई ॥
ताते उमा न मैं समुझावा * रघुपतिकृपा मर्म सब पावा ॥
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना * सो खोवै चहँ कृपानिधाना ॥
कछु तेहिते पुनि मैं नहि राखा * खग जानै खगहीकी भाखा ॥
प्रभुमाया बलवन्त भवानी * जाहि न मोह कवन असज्ञानी ॥

दो०ज्ञानी भक्तशिरोमणि, त्रिभुवनपतिकर यान ॥
ताहि मोह माया प्रबल, पामर करहि गुमान ॥८५॥

* एक समय काकभुशुंडी दशरथके घरमें रामचन्द्रजीकी बाल-लीला देख रहेथे इतनेमें मोह हुवा सो रामचन्द्रजीके हाथसे पूरी छीनके ले भगे; तब उन्होंने गरुडजीकी सुध की तो गरुडजी आ पहुँचे. फिर गरुड और काकभुशुंडीका बडा युद्ध हुवा. युद्ध होते २ काकभुशुंडीजी तो भगे और गरुडजी उनके पीछे लगे. तीनों लोकोंमें गये परंतु किसीने रक्षण न किया जब काकभुशुंडी रामजीकी शरणमें आये, तब रामचंद्रजीने उनका रक्षण किया और ज्ञान बताया गरुडजीके वही अहंकार रहा, सो भगवान् (रामचंद्रजी) ने काकभुशुंडीका श्रोता (शिष्य) बनाकर दूर किया.

१ रामचन्द्रजीके भक्तिमार्गमें. २ हमेस. ३ पक्षी. ४ मोहते उत्पन्न.

दो०-शिव*-बिरंचि†--कहँ मोहई, को है बपुरा आन॥
अस जिय जानि भजहिं मुनि, मायापति भगवान ८६

गयउ गरुड़ जहँ बसैं भुशुण्डी * मति अकुण्ठ हरिभक्त अखण्डी
देखि शैल प्रसन्न मन भयऊ * माया मोह शोक भ्रम गयऊ॥
करि तड़ाग मज्जन जल पाना * बटतर गयउ हृदय हर्षाना॥
वृन्द वृन्द विहंग[1] तहँ आये * सुनैं रामके चरित सुहाये॥
कथाअरम्भ करै सो चाहा * ताहीसमय गयेउ खगनाहा[2]॥
आवत देखि सकल खगराजा[2] * हर्षेउ बायस[3] सकलसमाजा॥
अतिआदर खगपतिकर कीन्हा * स्वागत पूँछि सुआसन दीन्हा॥
करि पूजा समेत अनुरागा * मधुर बचन बोलेउ तब कागा॥

दो०-नाथ कृतारथ भयउँ मैं, तब दर्शन खगराज[2]॥
आयसु होइ सो करौं अब, प्रभु आयहु केहि काज ८७

* शिवजीको मोह हुवा सो कहते हैं. एकसमय देवता और दैत्य मिलकर, समुद्र मथन करनेलगे; मथते २ अमृत पैदा हुवा तब देव बोले कि यह अमृत हम लेंगे और दैत्य बोलेकि हम लेंगे; तब भगवान्ने परम सुंदरी मनमोहिनी नवलवधू होके, दैत्योंको मोहकर, देवताओंको अमृत पिला दिया; यह सुन शंकरजीभी मोहिनीरूप देखनेको पार्वतीजीको साथ ले नारायणके पास पहुंचे. और कहा कि हे प्रभु ! मुझे अपना मोहिनीरूप दिखावो यह सुन, नारायणने वही मोहिनीरूप दिखाया कि जिसके देखतेही शंकरजी मोहित हो पीछे दौड़े; निदान दौड़ते २ उनका बीर्य स्खलित होगया जिससे चांदी हुई. तब शंकरजीको ज्ञान पैदा हुवा कि, यह माया है.

† और ब्रह्माजीको अपनी कन्या सरस्वतीकी सुन्दरता देख मोह उत्पन्न हुआ यह कथा भागवतमें सविस्तर वर्णित है.

१ पक्षी. २ गरुड़. ३ काग.

दो०सदा कृतारथरूप तुम, कह मृदु बचन खगेश ॥
जाकी अस्तुति सादर, निजमुख किन्ह महेश ८८॥

सुनहु तात जेहि कारण आयउँ * सो सब भयउ दर्श तव पायउँ॥
देखि परमपावन तव आश्रम * गयउ मोह संशय नाना भ्रम॥
अब श्रीरामकथा अतिपावनि * सदा सुखद दुखपुंजनशावनि ॥
सादर तात सुनावहु मोहीं * बार बार बिनवौं प्रभु तोहीं ॥
सुनत गरुड़की गिरा बिनीता * सरल सप्रेम सुखद सुपुनीता॥
भयउ तातमन परमउछाहा * कहै लाग रघुपतिगुणगाहा ॥
प्रथमहिं अतिअनुराग भवानी * रामचरित सब कहेसि बखानी
पुनि नारदकर मोह अपारा * कहेसि बहुरि रावणअवतारा ॥
प्रभुअवतारकथा पुनि गाई * पुनिशिशुचरितकहेसि मनलाई

दो०बालचरितकहिबिबिधबिधि,मनमहँपरमउछाह
ऋषिआगमन कहेसि पुनि, श्रीरघुबीरबिबाह ॥८९॥

बहुरि राम-अभिषेक-प्रसंगा * पुनि नृपमरण राजरसभंगा ॥
पुरबासिनकर बिरहबिषादा * कहेसि रामलक्ष्मणसम्बादा ॥
बिपिनगमन[2] केवटअनुरागा * सुरसरि[3] उतरि निबास प्रयागा
बालमीकिप्रभुमिलन बखाना * चित्रकूट जिमि बस भगवाना
सचिवागमन नगर नृपमरणा * भरतागमन प्रेम अति बरणा ॥
करि नृपक्रिया संग पुरबासी * भरत गये जहँ प्रभु सुखरासी ॥
पुनि रघुपति बहुबिधि समुझाये * लै पादुका अवध फिरि आये॥
भरतरहनि सुरपतिसुत[4]-करणी * प्रभु अरु अत्रिभेंट पुनि बरणी॥

दो०कहि बिराधबध जाहिबिधि, देह तजी शरभंग

१ दुखोंके समूहोंका नाश करनेवाली. २ वनका जाना. ३ गंगा. ४ इंद्रके पुत्रको

बर्णि सुतीक्षणप्रेम पुनि, प्रभुअगस्त्यसत्संग ॥९०॥

कहि दण्डकबन-पावनताई * गृध्रसुमैत्री पुनि तेहिं गाई ॥
पुनि प्रभुपंचबटीकृत बासा * भंजेउ सकलमुनिन्हकर त्रासा॥
पुनि लक्ष्मणउपदेश अनूपा * शूर्पणखा जिमि कीन्ह कुरूपा॥
खरदूषणबध बहुरि बखाना * जिमि सब मर्म दशानन जाना
दशकन्धर-मारीच--बत कही * जेहिबिधि भई सकल तेहिं कही
पुनि माया-सीताकरहरणा * श्रीरघुबीरबिरह कछु बरणा ॥
पुनि प्रभुगृध्रक्रियाजिमि कीन्ही * बधि कबंध शबारिहिं गति दीन्ही
बहुरि बिरहबर्णन रघुबीरा * जेहि बिधिगयउ सरोवरतीरा ॥

दो०प्रभुनारदसंवाद कहि, मारुतिमिलनप्रसंग ॥
पुनि सुग्रीवमिताई, बालिप्राणकर भंग ॥ ९१ ॥
कपिहिं तिलक करि प्रभु कृत, शैलप्रवर्षण बास॥
बर्षत बर्षा शरद ऋतु, राजरोष कपित्रास ९२ ॥

जेहि बिधि कपिपति कीश पठाये * सीताखोज सकलदिशि धाये ॥
बिबरप्रबेश कीन्ह जेहिभाँती * कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥
सुनि सब कथा समीरकुमारा * लाँघत भयउ पयोधि अपारा ॥
लंका कपि प्रबेश जिमि कीन्हा * पुनि सीतहिं धीरज जिमि दीन्हा
बन उजारिं रावणहिं प्रबोधी * पुर दहि लाँघेउ बहुरि पयोधी॥
आये कपि सब जहँ रघुराई * बैदेहीकी कुशल सुनाई ॥
सेन-समेत यथा रघुबीरा * उतरे जाइ बारिनिधितीरा ॥
मिला बिभीषण जेहि बिधिआई * सागर-बिग्रह-कथा सुनाई ॥

दो०सेतु बाँधि कपिसेन जिमि, उतरे सागरपार ॥

१ पंपासरके किनारे. २ सुग्रीवको. ३ हनुमान.

गयो बशीठि बीरबर, जेहि बिधि बालिकुमार ९३॥
निशिचर--कीश--लडाई, बर्णेसि बिबिध--प्रकार ॥
कुम्भकर्णघननादकर, बल--पौरुष--संहार ॥ ९४ ॥

निशिचरनिकर[2]मरणबिधि नाना * रघुपतिरावण समर बखाना ॥
रावण -बध मन्दोदरिशोका * राज्यबिभीषण देव अशोका ॥
सीता--रघुपतिमिलन बहोरी * सुरन्ह कीन्ह अस्तुति कर जोरी
पुनि पुष्पकचढ़ि सीयसमेता * अबध चले प्रभु कृपानिकेता॥
जेहिबिधि राम नगर नियराये * बायस बिशद चरित सब गाये ॥
कहेसि बहोरि रामअभिषेका * पुरबर्णन नृपनीति अनेका ॥
कथा समस्त भुशुंड बखानी * जो मैं तुमसन कहा भवानी ॥
सुनि शुभ रामकथा खगनाहा * बिगतमोह मन परमउछाहा ॥

सो॰ गयउ मोर सन्देह, सुनेउँ सकल रघुपतिचरित
भयउ रामपदनेह, तव प्रसाद बायसतिलक ॥ २॥
मोहिं भयउ अतिमोह, प्रभुबंधन रणमहँ निरखि॥
चिदानंदसन्दोह, राम बिकल कारण कवन ॥ ३ ॥

देखि चरित अति नरअनुहारी * भयउ हृदय मम संशय भारी ॥
सो भ्रम अब मैं हित करिमाना * कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥
जो अति[3]आतप--ब्याकुल होई * तरुछायासुख जानै सोई ॥
जो नहिं होत मोह अति मोहीं * मिलितेउ तात कवनि बिधितोहीं
सुनतेउँ किमि हरिकथा सुहाई * अतिबिचित्र सबबिधि तुम गाई
निगमागम--पुराण--मत एहा * कहहिं सिद्धमुनि नहिं सन्देहा ॥
सन्त बिशुद्ध मिलहि पुनि तेही * चितवहिं राम कृपा करि जेही ॥

१ नाश. २ राक्षसोंके समूहोंका मरण. ३ बडे घामसे दुःखी हो.

रामकृपा तव दर्शन भयऊ * तव प्रसाद ममसंशय गयऊ ॥

दो०सुनि बिहंगपतिबाणी, सहित विनय अनुराग॥
पुलकगात लोचन सजल, मन हर्षे अतिकाग ॥ ९५॥
श्रोता सुमति सुशील अति, कथारसिक हरिदास॥
पाइ उमा[1] यह गोप्य मत, सज्जन कराहि प्रकाश॥९६॥

बोलेउ काकभुशुण्ड बहोरी * नभगनाथपर[2] प्रीति न थोरी ॥
सबबिधि नाथ पूज्य तुम मेरे * कृपापात्र रघुनायककेरे ॥
तुमहिं न संशय मोह न माया * मोपर नाथ कीन्ह तुम दाया॥
पठै मोहमिसु खगपति तोहीं * रघुपति दीन्ह बड़ाई मोहीं ॥
तुम निजमोह कहा खगसाईं * सो नहिं कछु आश्चर्य गुसाईं ॥
नारद शिव बिरंचि सनकादी * जो मुनिनायक आतमबादी ॥
मोह न अंध कीन्ह केहिकेही * को जग काम नचाव न जेही ॥
तृष्णा केहि न कीन्ह बौराहा * केहिके हृदय क्रोध नहिं दाहा॥

दो०ज्ञानी तापस शूर कबि, कोबिद गुणआगार[3] ॥
केहिके लोभ विडंबना, कीन्ह न यह संसार ॥९७॥
श्रीमद[4] बक्र न कीन्ह केहि, प्रभुता बधिर न काहि ॥
मृगनयनीके नयनशर, को अस लागु न जाहि॥९८॥

गुणकृत सन्निपात नहिं केही * को न मान मद व्यापेउ जेही॥
यौवनज्वर केहि नहिं बलकावा * ममता केहिकर यश न नशावा॥
मत्सर काहि कलंक न लावा * काहि न शोकसमीर डोलावा ॥
चिन्तासाँपिनि काहि न खाया * को जग जाहि न व्यापी माया
कीट मनोरथ दारुशरीरा * जेहि न लागु घुन को अस धीरा

१ हे पार्वती! २ गरुडजीके ऊपर ३ गुणोंके घर. ४ लक्ष्मीकेमदने.

सुत बित नारि ईषणा[1] तीनी * केहिकी मति इन्हकृतन मलीनी
यह सब मायाकृत परिवारा * प्रबल अमित को बर्णै पारा ॥
शिव चतुरानन देखि डराहीं * अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

दो०-ब्यापि रह्यो संसारमहँ, मायाकटक[2] प्रचण्ड ॥
सेनापति कामादि भट, दम्भ कपट पाखंड ॥ ९९ ॥
सो दासी रघुबीरकी, समुझैं मिथ्या सोपि ॥
छुटै न रामकृपाबिनु, नाथ कहौं प्रण रोपि ॥ १०० ॥

सो माया सब जगहिं नचावा * जासु चरित लखि काहु नपावा
सो प्रभुभ्रूबिलास[3] खगराजा * नाच नटी इव सहित समाजा ॥
व्यापक ब्रह्म अखंड अनन्ता * अखिल अमोघ एक भगवन्ता ॥
सोइ सच्चिदानंद घनश्यामा * अज बिज्ञानरूप गुणधामा ॥
अगुण अदम्भ गिरागोतीता * समदर्शी अनवद्य अजीता ॥
निर्गुण निराकार निर्मोहा * नित्य निरंजन सुखसंदोहा ॥
प्रकृतिपार प्रभु सबउरबासी * ब्रह्म निरीह बिरज अबिनासी ॥
इहाँ मोहकर कारण नाहीं * रबिसन्मुख तुम कबहुँ न जाहीं ॥

दो०-भक्तहेतु भगवान प्रभु, राम धरेउ तनु-भूप ॥
किये चरित पावन परम, प्राकृतनरअनुरूप ॥ १०१ ॥
यथा अनेकन वेष धरि, नृत्य करै नट कोइ ॥
जोइ जोइ भाव दिखावई, आपुन होइ न सोइ ॥ १०२ ॥

अस रघुपतिलीला उरगारी * दनुजबिमोहन जनसुखकारी ॥
जे गतिमलिन बिषयबश कामी * प्रभुपर मोह धरहिं इमि स्वामी ॥
नयनदोष जाकहँ जब होई * पीतबर्ण शशि कहँ कह सोई ॥

---

१ तृष्णा. २ मायाकी फौज. ३ भगवान्‌के भौंहविलासमें.

जब जेहि दिग्भ्रम होइ खगेशा * सो कह पश्चिम उगेउ दिनेशा ॥
नौकारूढ चलत जग देखा * अचल मोहबश आपुहि लेखा
बालक भ्रमहि न भ्रमहिं गृहादी * कहहिं परस्पर मिथ्याबादी ॥
हरिविषयक अस मोह बिहंगा * स्वप्नहुँ नाहिं अज्ञान--प्रसंगा ॥
मायाबश मतिमंद अभागी * हृदयजवनिका[1] बहुबिधि लागी
ते शठ हठबश संशय करहीं * निज–अज्ञान रामपर धरहीं ॥

दो०काम–क्रोध–मद–लोभरत, गृहासक्त दुखरूप
ते किमि जानहिं रघुपतिहि, मूढ़ परे तमकूप १०३
निर्गुणरूप सुलभ अति,सगुण न जानै कोइ ॥
सुगम अगम नाना चरित,सुनिमुनिमन भ्रमहोई १०४

सुनु खगपति रघुपतिप्रभुताई * कहौं यथामति कथा सुहाई ॥
जेहिबिधि मोह भयउ प्रभु मोहीं * सो सब चरित सुनावौं तोहीं॥
राम–कृपाभाजन[2] तुम ताता * हरिगुण प्रीति मोहिं सुखदाता
ताते नहिं कछु तुमहिं दुरावौं * परमरहस्य मनोहर गावौं ॥
सुनहुँ रामकर सहजसुभाऊ * जनअभिमान न राखैं काऊ ॥
संसृति[3]मूल शूलप्रद नाना * सकलशोकदायक अभिमाना॥
ताते करहिं कृपानिधि दूरी * सेवकपर ममता अतिभूरी ॥
जिमि शिशुतन व्रण होइ गुसाईं * मातु चिराव कठिनकी नाईं ॥

दो०यदपि प्रथम दुख पावै, रोवै बाल अधीर ॥
व्याधिनाशहित जननी, गनै न सो शिशुपीर १०५
तिमि रघुपति निजदासकर, हरहिं मान हितलागि
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिं,कस न भजहु भ्रम त्यागि

१ मायाकी कनात, २ रामचन्द्रजीकी कृपाके पात्र. ३ संसारकी जड.

रामकृपा आपनि जड़ताई * कहौं खगेश सुनहुँ मन लाई ॥
जब जब राम मनुजतनु धरहीं * भक्तहेतु लीला बहु करहीं ॥
तब तब अवधपुरी मैं जाऊँ * शिशुलीला बिलोकि हर्षाऊँ ॥
जन्ममहोत्सव देखौं जाई * वर्ष पाँच तहँ रहौं लुभाई ॥
इष्टदेव मम बालक रामा * शोभावपुष कोटिशत कामा ॥
निजप्रभुवदन निहारि निहारी * लोचन सुफल करौं उरगारी ॥
लघुबायसबपु धरि हरिसंगा * देखौं बालचरित बहुरंगा ॥

दो०लरिकाई जहँ जहँ फिराहिं, तहँ तहँ संग उडाउँ॥
जूँठन परै अजिरमहँ, सो उठाय पुनि खाऊँ १०७
एकबार अतिशयप्रबल, चरित कीन्ह रघुबीर ॥
सुमिरत प्रभुलीला सोइ,पुलकित भयउ शरीर१०८

कहै भुशुण्ड सुनहु खगनायक * रामचरित सेवकसुखदायक ॥
नृपमन्दिर सुंदर सबभाँती *खचित कनकमणि नानाजाती
वर्णि न जाय रुचिर अँगनाई[1] * जहँ खेलहिं नित चारो भाई ॥
बालविनोद करत रघुराई * बिचरत अजिर जननिसुखदाई
मरकत मृदुल कलेबर श्यामा * अंगअंगप्रति छबि बहुकामा ॥
नवराजीवअरुण मृदुचरणा * पदपंकजनख शशिद्युतिहरणा ॥
ललित अंग कुलिशादिक[3] चारी * नूपुर चारु मधुररवकारी ॥
चारु पुरटमणिरचित बनाई * कटि किंकिणि कल मुखर सुहाई

दो०रेखा त्रय सुंदर उदर, नाभि रुचिर गंभीर ॥
उर आयत भ्राजत विविध,बाल विभूषण चीर१०९

अरुण पाणि नख करज मनोहर * बाहुबिशाल बिभूषण सोहर ॥

१ आंगनमें. २ सुवर्ण और मणियोंसे. ३ बज्र, अंकुश, ध्वजा,कमल.

कन्ध बालकेहरि[1] दरग्रीवाँ * चारु चिबुक आनन छबिसीवाँ
कलबल बचन अधर अरुणारे * दुइ दुइ दशन बिशद बर वारे ॥
ललित कपोल मनोहर नासा * सकलसुखद शशिकरसम हासा
नीलकंज[2]--लोचन भयमोचन * भ्राजत भाल तिलक गोरोचन
बिकट[3] भ्रुकुटि सम श्रवण सुहाये * कुंचित[3] कच[4] मेचक[5] छबिछाये ॥
पीत झीन झँगुली तनु सोही * किलकनि चितवनि भावतमोही
रूपराशि नृप--अजिर--बिहारी * नाचहिं निजप्रतिबिंब निहारी॥
मोसनकरहिं बिबिधबिधिक्रीडा * बर्णत चरित होत मन ब्रीडा ॥
किलकत मोहिं धरन जब धावहिं * चलौं भाजि तब ऽपूप देखावहिं

दो०आवत निकट हँसहिं प्रभु, भाजत रुदन कराहिं
जाउँ समीप गहन पद, फिरि फिरि चितै पराहिं ११०
प्राकृतशिशुइव लीला, देखि भयउ मोहिं मोह ॥
कवन चरित्र करत प्रभु, चिदानन्दसन्दोह ॥१११॥

इतना मन आनत खगराया * रघुपतिप्रेरित व्यापी माया ॥
सो माया न दुखद मोहिं काहीं * आन जीव इव संसृति नाहीं ॥
नाथ इहाँ कछु कारण आना * सुनहु सो सावधान हरियाना ॥
ज्ञान अखण्ड एक सीतावर * मायावश्य जीव सचराचर ॥
जो सबके रह ज्ञान एकरस * ईश्वरजीवहिं भेद कहहु कस॥
मायावश्य जीव अभिमानी * ईशवश्य माया गुणखानी ॥
परबश जीव स्वबश भगवन्ता * जीव अनेक एक श्रीकन्ता ॥
द्विविधा भेद यदपि कृत माया * बिनुहरि जाइ न कोटि उपाया॥

दो०रामचन्द्रके भजनबिनु, जो चह पद निर्बाण ॥

---

१ बालसिंहसमान. २ कमलनेत्र. ३ टेढे बाँके. ४ बाल. ५ काले.

ज्ञानवन्त अपि सोपि नर, पशु बिनु पूँछ बिषाण ११२
राकापति षोडश उगहिं, तारागण--समुदाय ॥
सकलगिरिन दव लाइये, रबिबिनु राति न जाय ११३
ऐसे बिनु हरिभजन खगेशा * मिटै न जीवनकेर कलेशा ॥
हरिसेवकहिं न व्याप अविद्या * प्रभुप्रेरित तेहिं व्यापै विद्या ॥
ताते नाश न होइ दासकर * भेदभक्ति बाढ़ै बिहंगबर ॥
भ्रमकरि चकित राममोहिं देखा * बिहँसे सो सुन चरित बिषेखा ॥
तेहि कौतुककर मर्म न काहू * जाना अनुज न मात पिताहू ॥
जानु पाणि धाये मोहिं धरणा * श्यामलगात अरुण मृदुचरणा॥
तब मैं भागि चलेउँ उरगारी * राम गहनकहँ भुजा पसारी ॥
जिमि जिमि दूरिउड़ाउँ आकाशा* तिमितिमिभुजदेखौंनिजपासा॥
दो०ब्रह्मलोकलौं गयों मैं, चितवत पाछ उडात ॥
युग[2] अंगुलकरबीच रह, रामभुजहिं मोहिं तात ११४
सप्तावरण[3] भेद करि, जहँलगि रहि गति मोरि ॥
गयों तहाँ प्रभुभुज निरखि, व्याकुल भयों बहोरि ११५
मूँदेउँ नयन त्रसित जब भयऊँ * पुनि चितवत कोशलपुर गयऊँ
मोहिं बिलोकि राम मुसकाहीं * बिहँसत तुरत गयउँ मुखमाहीं॥
उदरमाँझ सुन अंडजराया * देखेउँ बहु ब्रह्मांडनिकाया ॥
अतिबिचित्र तहँ लोक अनेका * रचना अमित एकते एका ॥
कोटिन चतुरानन गौरीशा * अगणित उडुगणरविरजनीशा॥
अगणित लोकपाल यम काला * अगणित भूधर भूमि बिशाला॥
सागर सरिता बिपिन अपारा * नानाभांति सृष्टि–बिस्तारा ॥

१ शींग. २ दो. ३ पृथ्वी,जल,अग्नि,बायु,आकाश,प्रकृति और महत्तत्त्व.

सुर मुनि सिद्ध नागर किन्नर * चारिप्रकार जीव सचराचर ॥

दो०-जो नहिं देखा नहिं सुना, जो मनमहँ न समाइ ॥
अस अद्भुत तहँ देखेउँ, बर्णि कवनिबिधि जाइ ११६
एक एक ब्रह्माण्डमहँ, रहेउँ वर्षशत एक ॥
यहि बिधि मैं देखत फिरेउँ, अण्डकटाह अनेक ११७

लोकलोकप्रति भिन्न बिधाता * भिन्न विष्णु शिवमनु दिशत्राता॥
नर गन्धर्व भूत बैताला * किन्नर निशिचर पशुखग व्याला
देव दनुजगण नाना जाती * सकल जीव तहँ आनहिं भाँती॥
महि[1] सर[2] सागर[3] सरि[4]गिरि[5]नाना * सब प्रपंच तहँ आनहिं आना ॥
अंडकोश प्रति प्रति निजरूपा * देखेउँ जिनिस अनेक अनूपा ॥
अवधपुरीप्रति भुवन निहारी * सरयू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
दशरथ कौशल्यादिक माता * बिबिधरूप भरतादिक भ्राता ॥
प्रति ब्रह्मांड रामअवतारा * देखेउँ बालबिनोद अपारा ॥

दो०-भिन्न भिन्न सब देखेउँ, अतिबिचित्र हरियान ॥
अगणित देखत फिरेउँ मैं, राम न देखा आन ११८
सोइ शिशुपन सोइ शोभा, सोइ कृपालु रघुबीर ॥
भुवन भुवन देखत फिरेउँ, प्रेरित मोहसमीर ११९

भ्रमत मोहिं ब्रह्माण्ड अनेका * बीते मनहुँ कल्प शत एका ॥
फिरतफिरतनिजआश्रमआयउँ * तहँ पुनि रहि कछुकाल गँवायउँ
निजप्रभुजन्म अवध सुनि पायउँ * निर्भर प्रेम हर्षि उठि धायउँ ॥
देखेउँ जन्ममहोत्सव जाई * जेहिविधि प्रथम कहा मैं गाई॥
रामउदर पेखेउँ जग नाना * देखत बनै न जात बखाना ॥

१ पृथ्वी. २ तालाव. ३ समुद्र. ४ नदी. ५ पर्वत.

तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना * मायापति कृपालु भगवाना ॥
करौं बिचार बहोरि बहोरी * मोहकलितव्यापित मति भोरी
उभयघरीमहँ मैं सब देखा * भयउँ भ्रमितमन मोह बिशेखा

दो०देखि कृपालु बिकल मोहिं, बिहँसे तब रघुबीर
बिहँसतहीं मुखबाहर, आयउँ सुनु मतिधीर १२०
सोउ लरिकाई मोहिं सन, लगे करन पुनि राम ॥
कोटिभाँति समुझायो, मन न लहै बिश्राम ॥ १२१ ॥

देखि चरित हरि सो प्रभुताई * समुझत देहदशा बिसराई ॥
धरणि परेउँ मुख आव न बाता* त्राहि-त्राहि आरतजनत्राता॥
परमाःकुल प्रभु मोहिं बिलोकी * निजमायाप्रभुता तब रोकी ॥
करसरोज प्रभु मम शिर धरेऊ* दीनदयालु दुसह दुख हरेऊ ॥
कीन्ह राम मोहिं बिगतबिमोहा* सेवकसुखद कृपासन्दोहा ॥
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी * मनमहँ होइ हर्ष अतिभारी ॥
भक्तवछलता प्रभुकै देखी * उपजा मम उर हर्ष बिशेखी ॥
सजल नयन पुलकितकर जोरी * कीन्ही बहुबिधि बिनय बहोरी

दो०सुनि सप्रेम मम वाणी, देखि दीन निजदास ॥
बचन सुखद गम्भीर मृदु, बोले रमानिवास १२२
कागभुशुण्डी माँगु बर, अतिप्रसन्न मोहिं जानि ॥
अणिमादिकसिधिअपरनिधि, मोक्षसकलसुखखानि

ज्ञान बिबेक बिरति बिज्ञाना * मुनिदुर्लभगति जो जगजाना॥
आजु देउँ सब संशय नाहीं * माँगु जो तोहिं भाव मनमाहीं ॥
सुनि प्रभुबचन बहुत अनुरागेउँ* मन अनुमान करन तब लागेउँ
प्रभु कह देन सकल सुख सही * भक्ति आपनी देन न कही ॥

---

१ रक्षा करो, रक्षा करो. २ रामचन्द्रजी.

भक्तिहीन गुणसुख सब ऐसे * लवणबिना[1] बहु व्यंजन[2] जैसे ॥
भक्तिहीन सुख कवनेकाजा * अस बिचारि बोलेउँ खगराजा
जो प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू * मोपर करहु कृपा अरु नेहू ॥
मनभावत बर माँगौं स्वामी * तुम उदार उर--अन्तर्यामी ॥

दो०अबिरल भक्ति बिशुद्ध तव, श्रुति पुराण जो गाव
जेहि खोजत योगीश मुनि, प्रभुप्रताप कोउ पाव १२४
भक्तकलपतरु प्रणतहित, कृपासिन्धु सुखधाम ॥
सोइ निजभक्तिमोहिं प्रभु, देहु दया करि राम १२५

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक * बोले बचन परमसुखदायक ॥
सुनु बायस तैं परमसयाना * काहे न माँगसि अस बरदाना॥
सबसुखखानि भक्ति तैं माँगी *नाहिं कोउ तोहिं समानबड़भागी
जो मुनि कोटियत्न नहिं लहहीं * कै जप--योग[3] अनल तनु दहहीं
रीझेउँ तोहिं देखि चतुराई * माँगेउँ भक्ति मोहिं अतिभाई
सुन विहंग प्रसाद अब मोरे * सब शुभगुण बसिहैं उर तोरे ॥
भक्ति ज्ञान बिज्ञान बिरागा * जो सब चरित रहस्यबिभागा॥
जानब तैं सबहीकर भेदा * मम प्रसाद नहिं साधन खेदा ॥

दो०मायासंभव[4] सकल भ्रम, अब नहिं व्यापिहितोहिं
जानेसिब्रह्म अनादि अज, अगुण गुणाकर मोहिं १२६
मोहिं भक्त प्रिय सन्तत, अस बिचारि सुन काग ॥
काय बचन मन मम चरण, करहु अचल अनुराग ॥

अब सुन परमबिमल मम बानी * सत्य सुगम निगमादि बखानी॥
निजसिद्धान्त सुनावौं तोहीं *सुनु मन धरि सब तजि भजु मोहीं

१ निमकबिगर, २ शाक. ३ योगाग्निमें. ४ मायासे उत्पन्न. ५ प्रीति.

मम मायासंभव संसारा * जीव चराचर बिबिधप्रकारा॥
सब मम प्रिय सब मम उपजाये * सबते अधिक मनुज मोहीं भाये
तेहिमहँ द्विज[1] द्विजमहँ श्रुतिधारी[2]* तिन्हमहँ निगमधर्मअनुसारी ॥
तिन्हमहँ प्रिय बिरक्त मुनिज्ञानी * ज्ञानिहुते अतिप्रिय बिज्ञानी ॥
तेहिते पुनि मोहिं प्रियनिजदासा* जेहि गति मोरि न दूसरि आसा
पुनि पुनि सत्य कहौं तोहिंपाहीं *मोहिं सेवकसम प्रिय कोउ नाहीं
भक्तिहीन बिरंचि किन होई * सबजीवनमहँ अप्रिय सोई ॥
भक्तिवन्त अतिनीचौ प्राणी * मोहिं परमप्रिय सुनु मम बाणी॥

दो०शुचिसुशीलसेवक सुमति, कहुप्रियकाहिनलाग
श्रुति पुराणकह नीति अस, सावधान सुनु काग१२८

एक पिताके बिपुल कुमारा * होइ पृथक गुण शील अचारा॥
कोउ पण्डित कोउ तापसज्ञाता * कोउ धनवन्त शूर कोउ दाता॥
कोइ सर्बज्ञ धर्मरत कोई * सबपर पितहिं प्रीति सम होई ॥
कोउ पितुभक्त बचन मन कर्मा * सपनेहुँ जान न दूसर धर्मा ॥
सो प्रिय सुत मम प्राणसमाना * यद्यपि सो सबभांति अयाना॥
इहि बिधि जीव चराचर जेते * त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
अखिल[3] बिश्व यह मम उपजाया * सबपर मोरि बराबरि दाया ॥
तिनमहँ जो परिहरि सब माया * भजहि मोहिं मन बच अरुकाया

दो०पुरुष नपुंसक नारि वा, जीव चराचर कोइ ॥
सर्वभाव भज कपट तजि, मोहिं परमप्रिय सोइ१२९
सो०सत्यकहौं खग तोहिं, शुचि सेवकममप्राणप्रिय
अस बिचारि भजुमोहिं, परिहरि आश भरोस सब ४

१ ब्राह्मण. २ बेदोंका कहा धर्म करनेवाले. ३ सब.

कबहुँ काल नहिं व्यापै तोहीं * सुमिरेसु भजेसु निरन्तर मोहीं॥
प्रभुबचनामृत सुनि न अघाऊँ * तनु पुलकित मन अति हर्षाऊँ
सो सुख जानै मन अरु काना * नहिं रसनाप्रति जाइ बखाना॥
प्रभु–शोभा–सुख जानत नयना * कहिकिमिसकैं तिन्हैं नहिं बयना
बहुबिधि राम मोहिं सिख देई * लगे करन शिशुकौतुक तेई॥
सजल नयन कछुमुख करिरूखा * चितै मातुतन लागे भूँखा॥
देखि मातु आतुर उठि धाई * कहि मृदुवचन लिये उर लाई॥
गोद राखि कराव पयपाना * रघुपतिचारित ललित करि गाना

सो० जोहिसुखलागिपुरारि, अशिवबेषकृतशिवसुखद
अरधपुरिनरनारी, तेहि सुखमहँ संतत मगन॥५॥
सोई सुखलवलेश, जिन बारकै स्वप्नेहुँ लहेउ॥ *
ते नहिं गणहिं खगेश, ब्रह्ममुखहिं सज्जन सुमति६॥

मैं पुनि रह्यों अवध कछु काला * देख्यों बालबिनोद रसाला॥
रामप्रसाद भक्तिबर पायउँ * प्रभुपद बन्दि निजाश्रम आयउँ
तबते मोहिं न व्यापी माया * जबते रघुनायक अपनाया॥
यह सब गुप्त चरित मैं गावा * हरिमाया जिमि मोहिं नचावा
निजअनुभव अब कहौं खगेशा * बिनु हरिभजन न जाहिं कलेशा
रामकृपाबिनु सुनु खगराई * जानि न जाइ रामप्रभुताई॥
जाने बिनु न होइ परतीती * बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती
प्रीतिबिना नाहिं भक्ति दृढ़ाई * जिमि खगेश जलकी चिकनाई

सो० बिनुगुरुहोइकिज्ञान, ज्ञानकिहोइबिरागबिनु॥
गावहिं बेद पुरानसुख, किलहहिबिनुहरिभगति ७

१ जिव्हासे. २ दूध पिलाने लगी. ३ महादेवजी. ४ एक दो बखत.

कोउ बिश्राम कि पाव, तात सहजसन्तोषबिनु ॥
चलै कि जलबिनु नाव, कोटियत्नपचि पचि मरै८॥

बिनु सन्तोष न काम नशाहीं * कामअछत सुख स्वप्नेहुँ नाहीं॥
रामभजनाबिनु मिटहिं न कामा * थलबिहीन तरु कबहुँ कि जामा
बिना ज्ञान की समता आवै * कोउ अवकाश किनभबिनु पावै
श्रद्धाबिना धर्म नहिं होई * बिनु महि गन्ध कि पावै कोई॥
बिनु तप तेज कि करु बिस्तारा *जलबिनु रस कि होइ संसारा॥
शील कि मिलु बिनु बुधसेवकाई * जिमि बिनु तेज न रूप गुसाँई॥
निजसुखाबिनु मन होइ किथीरा*परस कि होइ बिहीन समीरा ॥
कवनिउँ सिद्धि किबिनुबिश्वासा*बिनु हरिभजन न भवभयनाशा॥

दो०बिनुविश्वासभक्तिनहिं,तेहिबिनुद्रवहिं न राम
रामकृपाबिनु स्वप्नेहुँ, मन कि लहै बिश्राम॥१३०॥

सो०असबिचारिमतिधीर,तजिकुतर्कसंशयसकल
भजहु राम रणधीर, करुणाकर सुंदर सुखद॥९॥

निजमतिसारिस नाथ मैं गाई * प्रभु-प्रताप महिमा खगराई ॥
कह्यों न कछु करि युक्ति बिशेखी*यह सब मैं निजनयनन देखी॥
महिमा नाम-रूप-गुण--गाथा* सकल अमित अनन्त रघुनाथा॥
निज२मति मुनि हरिगुण गावहिं *निगम शेष शिव पार न पावहिं॥
तुम्हें आदि खग मशकप्रयन्ता * नभ उड़ाहिं नाहिं पावहिं अन्ता
तिमि रघुपतिमाहिमा अवगाहा * तात कबहुँ कोउ पावकि थाहा
राम कामशतकोटिसुभग तन * दुर्गा--कोटि--अमितअरिमर्दन॥
शक्र--कोटिशतसारिस बिलासा *नभ शतकोटिअमित अवकाशा

---

१ पंडितकी सेवाबिना. २ पवन.३ अप्रमाण. ४ वेद ५ इन्द्र.

दो०मरुतकोटिशत बिपुल बल, रबिशतकोटिप्रकाश ॥
शशिशतकोटिसुशीतल, शमनसकलभवत्रास ॥
कालकोटिशतसरिस अति, दुस्तर दुर्ग दुरन्त * ॥
धूम्रकेतुशतकोटिसम, दुराधर्ष भगवन्त ॥ १३२ ॥

प्रभु अगाध शतकोटि पताला * शमनकोटिशतसरिस कराला॥
तीरथ अमितकोटि शत पावन * नाम अखिलअघपुंजनशावन[2]॥
हिमगिरिकोटि अचल रघुबीरा* सिन्धुकोटिशतसरिस गँभीरा॥
कामधेनु-शतकोटि-समाना * सकलकामदायक भगवाना ॥
शारदकोटि अमित-चतुराई * बिधिशतकोटि अमितनिपुणाई
विष्णु-कोटिशत पालनकर्ता * रुद्र-कोटिशत-सम संहर्ता ॥
धनद-कोटिशतसम धनवाना * मायाकोटि प्रपंचनिधाना ॥
धराधरण शतकोटि अहीशा *निरवधि निरुपम प्रभु जगदीशा

छं०निरवधि निरुपमरामसम नहिंआननिगमागमलहै
जिमिकोटिशत खद्योत रविकहँ कहत अतिलघुताकहै
इहि भांति निजरमतिबिलास मुनीशहरिहिंबखानहीं
प्रभु भावगाहक अतिकृपालु सप्रेम सुनिसुखपावहीं
दो०राम अमितगुणसागर, थाह कि पावै कोइ ॥
सन्तनसन जस कछु सुनेउँ, तुमहिं सुनायउँ सोइ ॥
सो०भाववश्य भगवान, सुखनिधान करुणाभवन॥
तजि ममता मद मान, भजिय राम सीतारमन ॥१०॥

सुनि भुशुण्डके बचन सुहाये * हर्षित खगपतिपंखफुलाये ॥
नयननीर मन अतिहर्षाना * श्रीरघुपतिप्रताप उर आना ॥

---

१ अग्नि. २ संपूर्ण पापसमूहोंका नाशक है.

पाछिल मोह समुझि पछिताना * ब्रह्म अनादि मनुज करि जाना
पुनि पुनि कागचरण शिर नावा * जानि रामसम प्रेम बढावा ॥
गुरुबिनु भवनिधि तरै न कोई * जो बिरंचि-शंकर-सम होई ॥
संशयसर्प ग्रसेउ मोहिं ताता * दुखद लहरि कुतर्क बहुव्राता ॥
तव स्वरूप गारुड़ि रघुनायक * मोहिं जियायहु जनसुखदायक॥
तव प्रसाद मम मोह नशाना * रामरहस्य अनूपम जाना ॥

दो०ताहि प्रशंसेउ बिबिधबिधि, शीश नाइकरजोरि
बचन सप्रेम बिनीत मृदु, बोलेउ गरुड बहोरि॥१३४॥
प्रभु अपने अबिबेकते, पूँछौं स्वामी तोहिं ॥
कृपासिन्धु सादर कहहु, जानि दास निजमोहिं १३५

तुम सर्बज्ञ तज्ञ तमपारा * सुमति सुशील सरल आचारा॥
ज्ञान-बिरति-बिज्ञान निवासा * रघुनायकके प्रिय तुम दासा ॥
कारण कौन देहँ यह पाई * तातसकल मोहिं कहहु बुझाई॥
रामचरितसर सुंदर स्वामी * पायहु कहाँ कहहु नभगामी[१] ॥
नाथ सुना मैं अस शिवपाहीं * महाप्रलयमहँ क्षय तव नाहीं॥
मृषा[२] बचन नहिं शंकर कहहीं * सो मोरे मन संशय अहहीं ॥
अगजग[३] जीव नाग नर देवा * नाथ सकल जग कालकलेवा॥
अंडकटाह[४] अमित लयकारी * काल महादुरातिक्रम भारी ॥

सो०तुमहिं न व्यापै काल, अतिकराल कारण कवन
सो मोहिं कहहु कृपाल, ज्ञानप्रभाव कि योगबल ११॥
दो०प्रभु तव आश्रम आयउँ, मोर मोहभ्रम भाग ॥
कारण कवन सो नाथ अब, कहहुसहितअनुराग १३६

---

१ आकाशचारी. २ झूँठा. ३ स्थावरजंगम. ४ ब्रह्मांड.

गरुड़गिरा सुनि हर्षेउ कागा * बोलेउ बचन सहित अनुरागा
धन्य धन्य तव मति उरगारी[1] * प्रश्न तुम्हारि मोहिं अतिप्यारी
सुनि तव प्रश्न सप्रेम सुहाई * बहुत जन्मकी सुधि मोहिं आई
सब निजकथा कहौं मैं गाई * तात सुनहु सादर मन लाई ॥
जप तप मख शम दम व्रत दाना * बिरति बिबेक योग बिज्ञाना ॥
सबकर फल रघुपतिपदप्रेमा * तेहि बिनु कोइ न पावै क्षेमा॥
इहि तनु रामभक्ति मैं पाई * ताते मोहिं ममता अधिकाई ॥

दो॰ पन्नगारि असि नीति, श्रुतिसम्मत सज्जन कहहिं
अतिनीचहुसन प्रीति, करिय जानिनिजपरमहित १२
पाट[2] कीट[3]ते होइ, ताते पाटम्बर रुचिर * * ॥
कृमि पालै सबकोइ, परमअपावन प्राणसम ॥१३॥

स्वारथ सर्वजीवकहँ एहा * मन क्रम बचन रामपद नेहा ॥
सोइ पावन सोइ सुभग शरीरा * जो तनु पाइ भजिय रघुबीरा ॥
रामभक्तिबिनु बिधिसम देही * कवि कोविदै[4] न प्रशंसहिं तेही ॥
रामभक्ति यहि तनुमहँ जामी * ताते मोहिं परमप्रिय स्वामी ॥
तजौं न तनु निजइच्छामरणा * तनु बिनु बेद भजन नहि बरणा॥
प्रथम मोह मोहिं बहुतबिगोवा * रामबिमुख मुख कबहुँ न सोवा
नाना जन्म कर्म पुनि नाना * किये योग जप तप मख दाना॥
कवन योनि जन्मेहुँ जहँ नाहीं * मैं खगेश भ्रमि भ्रमि जगमाहीं
देखेहुँ सब करि कर्म गुसाँई * सुखी न भयउँ अबहिंकी नाँई
सुधि मोहिं नाथ जन्म बहुकेरी * शिवप्रसाद मति मोह न घेरी ॥

दो॰ प्रथमजन्मके चरित सब, कहौं सुनहु बिहँगेश

---

१ हे गरुड़! २ रेसम. ३ किरवा. ४ पण्डित.

सुनि प्रभुपदरति ऊपजै, जाते मिटै कलेश १३७
पूर्वकल्पते एक प्रभु, कलियुग मलकर मूल ॥
नर अरु नारि अधर्मरत, सकल निगमप्रतिकूल १३८
तेहि कलियुग कोशलपुर जाई * जन्मत भयउँ शूद्रतनु पाई ॥
शिवसेवक मन क्रम अरु बानी * आनदेवनिन्दक अभिमानी ॥
धन–मद--मत्त परम बाचाला * उग्रबुद्धि उर दम्भ विशाला ॥
यदपि रहेउँ रघुपतिरजधानी * तदपि नहीं महिमा कछु जानी ॥
अब जाना मैं अवधप्रभावा * निगमागम पुराण असगावा ॥
कबनिहु जन्म अवध सब जोई * रामपरायण सो फुर होई ॥
अवधप्रभाव जान तब पाणी * जब उर बसाहिं राम धनुपाणी ॥
सो कलिकाल कठिन उरगारी * पापपरायण सब नरनारी ॥
दो०कलिमल ग्रसेउ धर्म सब, गुप्त भये सद्ग्रन्थ ॥
दंभिन्ह निजमत कल्पिकर, प्रगट कीन्ह बहुपंथ १३९
भये लोग सब मोहबश, लोभग्रसे शुभकर्म ॥
सुनु हरियान ज्ञाननिधि, कहौं कछुक कलिधर्म १४०
वर्णधर्म नहिं आश्रमचारी * श्रुतिविरोधरत सब नरनारी ॥
द्विजश्रुतिबंचक भूप प्रजाशन * कोउ नहिं मानुनिगमअनुशासन
मारग सोइ जाकहँ जो भावा * पण्डित सोइ जो गाल बजावा ॥
मिथ्यारम्भ--दम्भरत जोई * ताकहँ सन्त कहैं सबकोई ॥
सोइ सयान जो परधनहारी * जो करु दम्भ सो बड़ आचारी
जो कछु झूँठ मसखरी जाना * कलियुग सोइ गुणवन्त बखाना
निराचार जो श्रुतिपथत्यागी * कलियुग सोइ ज्ञानि वैरागी ॥

१ वेदसे उलटा. २ पाखंडियोंने. ३ हे गरुड ! ४ वेदसे छली.

जाके नख अरु जटा बिशाला * सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला

दो०अशुभबेष भूषण धरैं, भक्ष्याभक्ष्य जे खाहिं॥
ते योगी ते सिद्ध नर, पूज्य ते कलियुगमाहिं१४१

सो० जे अपकारी चार, तिनकर गौरव मान्यता ॥
मन क्रम बचन लबार, ते बक्ता कलिकालमहँ१२

नारिबिबश नर सकल गुसाईं * नाचहिं नट मर्कट२की नाईं ॥
शूद्र द्विजहिं उपदेशहिं ज्ञाना * मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥
सब नर कामलोभरत क्रोधी * देव--बिप्र--गुरु--सन्त--बिरोधी
गुणमन्दिर सुंदर पति त्यागी * भजहिं नारि परपुरुष अभागी॥
सौभागिनी बिभूषण--हीना * बिधवनकहँ शृंगार नवीना ॥
गुरुशिष अंधबधिरकर लेखा * एक न सुनी एक नहिं देखा ॥
हरै शिष्यधन शोक न हरई * सो गुरु घोर नरकमहँ परई ॥
मातपिता बालकन्ह बुलावहिं * उहर भरै सोइ कर्म सिखावहिं

दो०ब्रह्मज्ञानबिनु नारिनर, कहहिं न दूसरि बात॥
कौड़ीकारण मोहबश, करहिं बिप्रगुरुघात ॥१४२॥
बाद शूद्रकहँ द्विजनसन, हम तुमते कछु घाटि *॥
जाने ब्रह्म सो बिप्रवर, आँखि देखावहिं डाटि१४३

परात्रिय--लम्पट कपट--सयाने * मोह--द्रोह--ममता--लपटाने ॥
तेइ अभेदवादी ज्ञानी नर * देखा मैं चरित्रकालियुगकर ॥
आपु गये अरु आनहिं घालहिं *जो कोउ श्रुतिमारग प्रतिपालहिं
कल्प कल्प भरि इक इक नर्का *पराहिं जे दूषहिं श्रुति करि तर्का
जे बर्णा३धम तेलि कुम्हारा * श्वपँच४ किरात कोल्ह कलवारा

१ खराब, २ बानरकी, ३ खराब, ४ चांडाल,

नारि मुई गृहसंपति नाशी * मूंड़ मूंड़ाइ भये संन्याशी ॥
ते बिप्रनसन पाँव पुजावहिं * उभयलोक निजहाथ नशावहिं॥
बिप्र निरक्षेर लोलुप कामी * निराचार शठ बृषलीगामी ॥
शूद्र करहिं जप तप व्रत दाना * बैठि बरासन कहहिं पुराना ॥
सब नर कल्पित करहिं अचारा*जाइ न बर्णि अनीति अपारा ॥

दो०भये बर्णसंकर कलिहिं, भिन्नसेतु सब लोग॥
करहिं पाप दुख पावहीं,भय रुज शोक बियोग १४४
श्रुतिसंमत हरिभक्तिपथ, संयुत--ज्ञान--बिबेक ॥
ते न चलहिं नर मोहबश, कल्पहिं पंथ अनेक१४५

छंद॰बहुधामसँवारहिंयोगयती,बिषयाहरिलीनगईबिरती
तपस्वीधनवन्तदरिद्रग्रही, कलिकौतुकतातनजातकही॥
कुलवंतिनिकारहिंनारिसती,गृहआनहिंचेरिहिंचोरगती
सुतमानहिंमातपितातबलौं, अबलाननदीखनहींजबलौं
ससुरारिपियारिलगीजबते, रिपुरूपकुटुम्बभयेतबते
नृपपापपरायणधर्मनहीं, करुदण्डबिदण्डप्रजानितहीं
धनवन्तकुलीनमलीनअपी, द्विजचिन्हजनेउउघारतपी
नहिं मानपुराणहिं बेदहिं जो, हरिसेवकसत्यसहीकलिसो
कबिबृन्द उदारधुनीनसुनी, गुणदूषकबातनकोपिगुनी
कलिबारहिं बारदुकालपरैं,बिनअन्नदुखीबहुलोगमरैं

दो०सुन खगेश कलिकपट हठ, दम्भ दोष पाषण्ड
कामक्रोधलोभादि मद, व्यापि रहे ब्रह्माण्ड ॥१४६॥
तामस धर्म करहिं नर, जप तप मख व्रत दान ॥ *

१ मूर्ख. २ शूद्रारत. ३ नये. ४ रागे. ५ घर. ६ शत्रुरूप.

देव न बर्षैं धरणिपर, बये न जामहिं धान ॥१४७॥

छंद॥ अबलाकचभूषणभूरिक्षुधा, धनहीनदुखीममताबहुधा
सुखचाहहिं मूढनधर्मरता, मतिथोरिकठोरिनकोमलता
नरपीडित रोगन भोगकही, अभिमानबिरोधअकारणही
लघुजीवनसंबतपंचदशा, कलपांतननाशगुमानअशा
कलिकालबेहालकियेमनुजा, नहिंमानतकोउअनुजातनुजा
नहिं तोषबिचारनशीतलता, सबजातिकुजातिभयेमँगता
इरषापरुषाछललोलुपता, भरिपूरिरहीसमताबिगता
सबलोगबियोगबिशोकहिये, बर्णाश्रमधर्मअचारगये
दमदानदयानहिं जानपनी, जड़तापरिपंचकतातघनी

दो०सुनब्यालारि करालकलि, मलअवगुणआगार॥
गुणबहुतकलिकालकर, बिनुप्रयासनिस्तार॥१४८॥

कृतयुग त्रेताद्वापरहु, पूजा मख अरु योग ॥ * **
जो गति होइ सो कलि हरिहि, नामते पावहिं लोग

कृतयुग सब योगी बिज्ञानी * करि हरिध्यान तरहिं भवप्रानी
त्रेता बिबिध यज्ञ नर करहीं * प्रभुहिं समर्पि कर्म भव तरहीं॥
द्वापर करि रघुपति-पद-पूजा * नर भव तरहिं उपाय न दूजा॥
कलि केवल हरिगुणगणगाहा * गावत नर पावहिं भवथाहा ॥
कलियुग योग यज्ञ नहिं ज्ञाना * एक अधार राम--गुण--गाना॥
सब भरोस तजि जो भजरामहिं * प्रेम- समेत गाव गुण- ग्रामहिं॥
सो भवतरु कछु संशय नाहीं * नामप्रताप प्रकट कलिपाहीं ॥
कलिकर एक पुनीत प्रतापा * मानसपुण्य होइ नहि पापा ॥

---

१ बालही गहिने हैं. २ पंद्रा. ३ ऐसा. ४ बहिन और कन्या.

दो॰ कलियुगसम युग आन नाहिं, जो नर करु बिश्वास
गाइ राम गुणगण बिमल, भव तरु बिनाहिं प्रयास १५०
प्रगट चारिपद धर्मके, कलिमहँ एक प्रधान ॥
येन केन बिधि दीन्हे, दान करै कल्यान ॥ १५१ ॥

कृतयुग धर्म होहिं सबकेरे * हृदय राम मायाके प्रेरे ॥
शुद्ध-सत्त्व समता बिज्ञाना * कृतप्रभाव प्रसन्नमन जाना ॥
सत्त्व बहुत कछु रज रति कर्मा * सबबिधि शुभ त्रेताकर धर्मा ॥
बहु रज सत्त्व स्वल्प कछु तामस * द्वापर धर्म हर्ष भय मानस ॥
तामस बहुत रजोगुण[1] थोरा * कलिप्रभावबिरोध चहुँओरा ॥
बुध युगधर्म जानि मनमाहीं * तजि अधर्मकहँ धर्म कराहीं ॥
काल कर्म नहिं ब्यापहिं ताही * रघुपतिचरणप्रीति अति जाही ॥
नटकृत कपट बिकट खगराया * नटसेवकहिं न ब्यापै माया ॥

दो॰ हरिमायाकृत दोष गुण, बिनु हरिभजन न जाहिं
भजिय राम सब काम तजि, अस बिचारि मन माहिं
तेहि कलिकाल बर्ष बहु, बसेउँ अवध बिहंगेश[2] ॥
परेउ दुकाल बिपत्तिबश, तब मैं गयउँ बिदेश १५३

गयउँ उजैन सुनो उरगारी * दीन मलीन दरिद्र-दुखारी ॥
गये काल कछु सम्पति पाई * तहँ पुनि करौं सम्भुसेवकाई ॥
बिप्र एक बैदिक शिवपूजा * करै सदा तिहि काज न दूजा
परमसाधु परमारथ-बिन्दक * शम्भुउपासक नहिं हरिनिन्दक
सेवों मैं तेहिं कपटसमेता * द्विज दयालुअतिनीति[3]निकेता
बाहिर नम्र देखि मोहिं साँई * बिप्र पढ़ाव पुत्रकी नाँई ॥

---

१ रजोगुण. २ हे गरुड ! ३ नीतिका स्थान.

शम्भुमंत्र मोहिं द्विजबर दीन्हा * शुभउपदेशबिबिधबिधिकीन्हा
जपौं मंत्र शिवमन्दिर जाई * हृदय दम्भ अहमितिअधिकाई॥

दो०मैं खल मलसंकुलमति, नीचजाति बश मोह ॥
द्विज हरिजन देखत जरौं, करौं विष्णुकर द्रोह १५४

सो०गुरु नित मोहिं प्रबोध, दुखित देखि आचरणमम
मोहिं उपजै अतिक्रोध, दम्भिहि नीति किभावई१५॥

एकबार गुरु लीन्ह बुलाई * मोहिं नीति बहुभांति सिखाई॥
शिवसेवाकर फल सुत सोई * अबिरल भक्ति रामपद होई ॥
रामहिं भजहिं तात शिव धाता * नरपामरकर केतिक बाता ॥
जासु चरण शिवअजअनुरागी *तासु द्रोह सुख चहसि अभागी ॥
हरकहँ हरिसेवक गुरु कहेऊ * सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ॥
अधमजाति मैं बिद्या पाये * भयउँ यथा अहि दूध पियाये ॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती * गुरुसन द्रोह करौं दिनराती॥
अतिदयालु गुरुस्वल्प न क्रोधा * पुनिपुनि मोहिंसिखावसुबोधा
जेहित नीच बड़ाई पावा * सो प्रथमहिं हठि ताहि नशावा
धूम अनलसम्भव सुन भाई * तेहि बुझाव घनपदवी पाई ॥
रजैं मगुं परी निरादर रहई * सबकर पद प्रहार नित सहई॥
मरुत उड़ाइ प्रथम त्याहिं भरई * पुनि नृपनयनाकिरीटन्ह परई ॥
सुन खगपति अस समुझि प्रसंगा* बुध न करहिं अबुधनकर संगा
कबि कोबिद गावहिं अस नीती* खलसन कलहन भलसनप्रीती
उदासीन बरु रहिय गुसाँई * खल परिहरिय श्वानकी नाईं
मैं खल हृदय कपट कुटिलाई * गुरुहित कहैं न मोहिं सुहाई॥

१ अहंताकी आधिक्यता थी. २ ब्रह्मा. ३ सर्प. ४ धूलि. ५ रास्तेमें.

दो॰-एकबार हरमन्दिर, जपत रह्यउँ शिवनाम ॥
गुरु आये अभिमानते, उठि नाहिं कीन्ह प्रणाम१५५
सो दयालु नाहिं कहेउ कछु, उर न रोष लवलेश ॥
अति अघ गुरुअपमानता, सहि नहिं सकेउ महेश१५६
मन्दिर-माँझ भई नभबानी * रे हतभाग्य अधम अभिमानी
यद्यपि तव गुरु स्वल्प न क्रोधा * अतिकृपालुचित सम्यकबोधा
तदपि शाप देहौं शठ तोहीं * नीति बिरोध सुहात न मोहीं॥
जो नाहिं करौं दण्ड शठ तोरा * भ्रष्ट होइ श्रुतिमारग मोरा ॥
जो शठ गुरुसन इर्षा करहीं * रौरवनरक कल्पशत परहीं ॥
त्रिजगयोनि पुनि धरहिं शरीरा * अयुतजन्मभरि पावहिं पीरा ॥
बैठि रहेसि अजगर इव पापी * होसि सर्प खलमलमतिव्यापी॥
महाबिटप-कोटर-महँ जाई * रहुरे अधम अंधगति पाई ॥
दो॰-हाहाकार कीन्ह गुरु, सुनि दारुण शिवशाप ॥
कंपित मोहिं बिलोकि अति, उर उपजा परिताप॥
करि दण्डवत सप्रेम गुरु, शिवसन्मुख कर जोरि ॥
बिनय करत गद्गद गिरा, समुझि घोर गति मोरि१५८

॥ छन्द भुजंगप्रयात ॥

*नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं, विभुव्यापकंब्रह्मवेदस्वरूपं॥
अजंनिर्गुणंनिर्विकल्पंनिरीहं, चिदाकाशमाकाशवासंभजेहं

* हे ईश ! हे ईशान ! (हे ईश्वर) जो मोक्षरूप, सबमें व्याप्त और समर्थ है, ब्रह्म और वेद जिनकी वाङ्मयी मूर्ती है जो अजन्मा,

१ बडापाप. २ पशुयोनिमें. ३ दश हजार जन्मभर.

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं, गिराज्ञानगोतीतमीशंगिरीशं ॥
करालंमहाकालकालंकृपालुं, गुणागारसंसारपारंनतोहं
तुषाराद्रिसंकाशगौरं गंभीरं, मनोभूतकोटिप्रभासीशरीरं
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगंगं,लसद्भालबालेंदुकंठेभुजंगं
चलत्कुंडलंशुभ्रनेत्रंविशालंप्रसन्नाननंनीलकंठंदयालुं
मृगाधीशचर्म्माम्बरंमुंडमालंप्रियंशंकरंसर्वनाथंभजामि
प्रचण्डंप्रकृष्टंप्रगल्भंपरेशं, अखंडंअजंभानुकोटिप्रकाशं
त्रयीशूलनिर्मूलनंशूलपाणिंभजेहंभवानीपतिंभावगम्यं

गुणोंसे रहित, एकरस और व्यापाररहित हैं तथा जिनमें सूक्ष्म और स्थूल दोनों आकाश बसते हैं; हे प्रभु! ऐसे आपको मैं नमस्कार और भजन करताहूं ॥ १ ॥ और आकारसे रहित,ओंकारका मूल, शुद्धस्वरूप, बचन और इन्द्रियज्ञानसे परे. कैलासके मालिक, भयंकर, कालके काल, कृपालु, गुणोंका घर और संसारसे पार उतारनेवाले जो आप तिनको मैं नमस्कार करताहूं ॥ २७ ॥ हे भगवन्! जो हिमवान् पहाडकी तुल्य गौर वर्ण है, जिनका शरीर करोडों कामदेवसमान शोभ रहाहै; जो गंभीर है जिसके देदीप्यमान मस्तकपर कलोलें उठरहीं हैं ऐसी सुंदरी गंगा शोभ रही है, जिनके भालमें द्वितीयाका चंद्र और गलेमें सर्प शोभि रहे हैं ॥ ३ ॥ जिनके कानोंमें चंचल कुण्डल हैं, सुंदर विशाल नेत्र हैं, प्रसन्न मुख है श्याम कंठ है दयाके पात्र वाघका चमडा वस्त्र है और गलेमें मुंडोंकी माला है ऐसे कल्याणकारक सबके नाथ प्रिय यानी देखने योग्य स्परूपवाले भजताहूं ॥ २८ ॥

परा तथा जो दुर्धर्ष, सबसे श्रेष्ठ, अतिधृष्ट, ईश्वर, नित्य, और अजन्मा है जिनका करोडोंसूर्यके तुल्य प्रकाश हैं; त्रयीशूलनिर्मूलनं अर्थात् जो दैहिक दैविक व भौतिक इन तीन प्रकारके शूलोंको उखाडने हारे हैं जिन्होने हाथमें शूल धारण किया है और जो भक्तिसे मिलने

कलातीतकल्याणकल्पांतकारिन्, सदासज्जनानन्ददातापुरारे ॥
चिदानन्दसंदोहमोहापहारिन् प्रसीदप्रसीदप्रभोमन्मथारे २८॥
नयावत्उमानाथपादारविन्दंभुजंतीहलोकेपरेवानराणाम्
नतावत्सुखंशांतिसंतापनाशंप्रसीदप्रभोसर्वभूताधिवास॥
नजानामियोगंजपंनैवपूजांनतोहंसदासर्वदाशंभुतुभ्यं॥
जराजन्मदुःखौघतातप्यमानं,प्रभोपाहिआपन्नमामीशशंभो
श्लोकः—रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ॥
यें पठंति नरा भक्त्या तेषां शम्भुःप्रसीदति ॥१॥
दो०सुनि बिनती सर्वज्ञ शिव, देखि बिप्रअनुराग
पुनि मन्दिर बाणी भई, हे द्विजबर वर माग १५९
जो प्रसन्न प्रभु मोहिं पर, नाथ दीनपरनेहु॥

योग्य हैं ऐसे पार्वतिपति महादेवजीको मैं भजताहूं ॥ ५ ॥ और जो कलाओंसे पर, प्रलयकारी, सज्जनोंको आनंद दाता, त्रिपुरासुरके शत्रु, चैतन्यरूप आनंदके पात्र, मोहके नाशक और कामदेवके शत्रु हैं ऐसे हे विभो ! आप मुझपर प्रसन्न होवो ॥ ६ ॥ २८ ॥ हे उमानाथ ! जबतक मनुष्य आपके चरणारविंदोंको नहीं सेवते तबतक उनको इस लोकमें वा परलोकमें शांति सुख नहीं प्राप्त होते और उनका संताप नहीं दूर होता. आपतो सब प्राणियोंके अंतःकरणवासी हो इसलिये उनपर आप प्रसन्न होवो ॥ ७ ॥ हे शंकरजी ! मैं जप योग वा पूजा कुछ नहीं जानता सब कालमें आपको केवल नमस्कारही करता हूं; क्यों कि मैं, वृद्धावस्था, जन्म इत्यादिके दुःखोंके प्रवाहसे जलरहाहूं सो आपकी शरणमें प्राप्त हूए मेरेको आप दोषोंसे रक्षण करो ॥ ८ ॥ २९ ॥ इसप्रकार यह रुद्राष्टक ब्राह्मणने शंकरजीकी प्रसन्नताके लिये कहा है, सो इसको जो कोई पढ़ते हैं उनके ऊपर शिवजी प्रसन्न होते हैं ॥ ९ ॥

निजपदभक्ति देहु प्रभु, पुनि दूसर बर देहु ॥१६०॥
तव मायाबश जीव जड, सन्तत फिरै भुलान ॥
तेहिपर क्रोध न करिय प्रभु,कृपासिंधु भगवान १६१
शंकर दीनदयालु अब, यहिपर होहु कृपाल ॥ * *
शापानुग्रह होइ जेहि, नाद थोरही काल ॥ १६२ ॥
इहिकर होइ परमकल्याना * सोइ करहु अब कृपानिधाना॥
विप्रगिरा सुनि परहितसानी * एवमस्तु कहि भइ नभवानी॥
यदपि कीन यह दारुण पापा * मैं पुनि दीन क्रोध करि शापा॥
तदपि तुम्हारि साधुता देखी * करि हौं इहिपर कृपा विशेषी ॥
क्षमाशील जे परउपकारी *ते द्विज प्रिय मोहिं यथा खरारी॥
मोर शाप द्विज मृषा न होई * जन्म सहस्र पाव यह सोई ॥
जन्मत मरत दुसह दुख होई * इहिकहँस्वल्प न व्यापिहि सोई॥
कौनिहुँ जन्ममिटिहि नहिं ज्ञाना *सुनहु शूद्र मम बचन प्रमाना ॥
रघुपतिपुरी जन्म तब भयऊ * पुनि तैं ममसेवा मन दयऊ ॥
पुरी प्रसाद अनुग्रह मोरे * रामभक्ति उपजहि उर तोरे ॥
सुन मम बचन सत्य अब भाई * हरितोषकव्रत द्विजसेवकाई ॥
अब जनि करसि विप्र अपमाना * जानसि ब्रह्म अनन्तसमाना
इन्द्रकुलिश मम शूल विशाला * कालदण्ड हरिचक्र[१] कराला
जो इनकर मारा नहिं मरई * विप्ररोष[२]पावक सो जरई ॥
अस बिबेक राखेहु मनमाहीं * तुमकहँ जगदुर्लभ कछु नाहीं
औरौ एक आशिषा मोरी * अव्याहत[३] गति होइहि तोरी
दो॰ सुनि शिवबचन सप्रेम गुरु,एवमस्तु इतिभाषि

---

१ रामचंद्रजी. २ ब्राह्मणकी क्रोधाग्निमें. ३ कहीं रुके नहीं.

मोहिं प्रबोधि गयउ गृह, शंभुचरण उर राखि १६३
प्रेरित काल बिंध्यागिरि, जाइ भयउँ मैं ब्याल ॥*
बिनु प्रयास सो तनु तजेउँ, नाथ थोरही काल १६४
जो तनु धरौं सो तजौं पुनि, अनायास हरियान ॥
जिमि नूतन पट पहिरिकै, नर परिहरै पुरान १६५
शिव राखेउ श्रुतिनीतिबिधि, मैं नहिं पाव कलेश ॥
इहिबिधिधरेउँ बिबिधतनु, ज्ञान न गयउखगेश १६६
त्रिजगयोनि जो जो तनु धरेऊँ*तहँ तहँ रामभक्ति अनुसरेऊँ ॥
एकशूल मोहिं बिसरु न काऊ *गुरुकर कोमल शील सुभाऊ ॥
चरमदेह द्विजकर मैं पाई *सुरदुर्लभ पुराण श्रुति गाई ॥
खेलौं तहाँ बालकन मीला *करौं सकल रघुनायकलीला ॥
प्रौढ भये मोहिं पिता पढ़ावा *समुझौं सुनौं गुणौं नहिं भावा ॥
मनते सकल बासना भागी *केवल रामचरण लय लागी ॥
कहु खगेश अस कवन अभागी *खैरी सेव सुरधेनुहिं त्यागी ॥
प्रेममग्न मोहिं कछु न सुहाई *हारे पिता पढ़ाय पढ़ाई ॥
भयउ कालबश जब पितु माता*मैं बन गयउँ भजन जनत्राता ॥
जहँ जहँ बिपिन मुनीश्वर पावौं *आश्रम जाइ जाइ शिर नावौं
पूंछौं तिनहिं रामगुणगाहा *कहौं सुनौं हर्षित खगनाहा ॥
सुनत फिरौं हरिगुण अनुवादा *अव्याहतगति शंभुप्रसादा ॥
छूटी त्रिविध ईषणा गाढ़ी *एक लालसा उर अतिबाढ़ी ॥
रामचरणपंकज जब देखौं *तब निजजन्मसुफलकरि लेखौं
जेहिं पूँछौं सो मुनि अस कहई *ईश्वर सर्वभूतमय अहई ॥

१ सर्प. २ हे गरुड ! ३ सबसे पीछे. ४ गधी. ५ भगवानका गुणानुवाद.

निर्गुण मत नहिं मोहिं सुहाई * सगुणब्रह्मरति उर अधिकाई॥

दो०गुरुके बचन सुरति करि, रामचरण मन लाग ॥
रघुपतियश गावत फिरौं, क्षण क्षण नवअनुराग १६७

मेरुशिखर वटछाया, मुनि लोमश आसीन ॥
देखी चरण शिर नायउँ, बचन कहेउँ अतिदीन१६८॥

सुनि मम बचन बिनीत मृदु, मुनि कृपालु खगराज ॥
मोहिं सादर बूझत भयउ, द्विज आयउ केहि काज ॥

तब मैं कहेउ कृपानिधि, तुम सर्वज्ञ सुजान ॥
सगुणब्रह्मआराधना, मोहिं कहहु भगवान॥१७०॥

तब मुनीश रघुपति–गुणगाथा * कहेउ कछुक सादर खगनाथा ॥
ब्रह्मज्ञानरत मुनि बिज्ञानी * मोहिं परमअधिकारी जानी ॥
लागे करन ब्रह्म–उपदेशा * अज अद्वैत अगुण हृदयेशा ॥
अकल अनीह अनाम अरूपा * अनुभवगम्य अखंड अनूपा॥
मनगोतीत अमल अविनाशी * निर्विकार निरवधिसुखराशी॥
सो तैं ताहि तोहिं नहिं भेदा * बारिबीचिइव गावहिं बेदा ॥
बिबिधभांति मोहिं मुनिसमुझावा * निर्गुणमत मम हृदय न आवा ॥
पुनि मैं कहेउँ नाइ पद शीशा * सगुणउपासन कहहु मुनीशा ॥
रामभक्ति जल मम मन मीना * किमि बिलगाइ मुनीश प्रबीना
सो उपदेश कहहु करि दाया * निजनयनन देखौं रघुराया ॥
भरि लोचन विलोकि अवधेशा * तब सुनिहौं निर्गुणउपदेशा ॥
सुनि मुनि कह हरिकथा अनूपा * खंडि सगुणमत निर्गुणरूपा ॥
तब मैं निर्गुणमत करि दूरी * सगुण निरूपौं करि हठ भूरी ॥

---

१ नम्र. २ सगुण ब्रह्मका पूजन. ३ कलंरहित.

उत्तर प्रत्युत्तर मैं दीन्हा * मुनिउर भयउ क्रोधकर चीन्हा
सुन प्रभु बहुत अवज्ञा किये * उपज क्रोध ज्ञानिहुके हिये ॥
अतिसंघर्षण करै जो कोई * अनल प्रगट चन्दनते होई ॥

दो०बारहिं बार सकोप मुनि, करहिं निरूपण ज्ञान ॥
मैं अपने मन बैठि तब, करौं बिबिध अनुमान ॥१७१॥
क्रोध कि द्वैतकि बुद्धिबिनु, द्वैत कि बिनु अज्ञान ॥
मायाबश परिछिन्न जड़, जीव कि ईशसमान॥१७२॥

कबहुँक दुख सबकर हित ताके *तेहि कि दरिद्र परसमणि जाके ॥
कामी पुनि कि रहै निकलंका * परद्रोही कि होइ निःशंका ॥
वंशकि रह द्विजअनहित कीन्हे * कर्म कि होहिं स्वरूपहिं चीन्हे
काहू सुमति कि खलसँग जामी * शुभगति पाव कि परतियगामी
राज कि रहै नीति बिनु जाने * अघ छि रहै हरिचरित बखाने ॥
भर्व कि परहिं परमारथबिंदक * सुखीकि होहिं कबहु परनिंदक
पावन यश कि पुण्यबिनु होई * बिनु अघ अयश कि पावै कोई
लाभ कि कछु हरिभक्तिसमाना * जेहि गावहि श्रुति संत पुराना ॥
हानि कि जग इहिसम कछु भाई * भजिय न रामहिं नरतनु पाई ॥
अघ कि बिना तामस कछु आना* धर्म कि दयासरिस हरियाना ॥
इहिविधि अमितयुक्ति मन गुणेऊँ* मुनिउपदेश न सादर सुनेऊँ ॥
पुनि पुनि सगुणपक्ष मैं रोपा * तब मुनि बोले बचन सकोपा॥
मूढ़ परमसिख देउँ न मानसि * उत्तर प्रत्युत्तर बहु आनसि ॥
सत्य बचन विश्वास न करहीं * वायस इव सबहीसन डरहीं ॥
शठ सपक्ष तव हृदय बिशाला * सपदि होहु पक्षीचाण्डाला ॥

१ अनादर. २ बहुत घसे. ३ अग्नि. ४ अच्छी बुद्धी. ५ पाप. ६ हेगरुड.

लीन्ह शाप मैं शीश चढ़ाई * नहिं कछु भय न दीनता आई॥

दो०तुरत भयउँ मैंकाकतब,पुनि मुनिपदशिरनाइ
सुमिरि राम रघुबंशमणि, हर्षित चलेउ उडाइ ॥
ऊमा जो रामचरणरत, बिगत--काम--मद--क्रोध ॥
निजप्रभुमय देखहिं जगत, कासन नकरहिं बिरोध

सुनु खगेश नहिं कछु ऋषिदूषण*उर-प्रेरक रघुबंश-बिभूषण ॥
कृपासिन्धु मुनिमति कारि भोरी *लीन्ही प्रेम-परीक्षा मोरी ॥
मन क्रम बचन मोहिं जन जाना * मुनिमति पुनि फेरी भगवाना॥
ऋषि मम सहजशीलता देखी * रामचरणबिश्वास बिशेषी ॥
अतिविस्मय पुनिपुनि पछताई * सादर मुनि म्वहिं लीन्ह बुलाई ॥
मम परितोषबिबिधाबिधिकीन्हा* हर्षित राममंत्र मोहिं दीन्हा ॥
बालकरूप रामकर ध्याना * कहेउ मोहिं मुनि कृपानिधाना॥
सुन्दर सुखद मोहिं अतिभावा * जो प्रथमहिं मै तुमहिं सुनावा ॥
मुनि मोहिं कछुककालतहँ राखा* रामचरितमानस सब भाषा ॥
सादर मोहिं यह कथा सुनाई * पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥
रामचरितसर[1] गुप्त सुहावा * शम्भुप्रसाद तात मैं पावा ॥
तोहिं निजभक्त रामका जानी * ताते मैं सब कहेउँ बखानी॥
रामभक्ति जिनके उर नाहीं * कबहुँ न तात कहिय तेहिं पाहीं॥
मुनिमोहिं बिबिधभांतिसमुझावा * मैं सप्रेम मुनिपद शिर नावा ॥
निजकरकमल परसि मम शीशा * हर्षित आशिष दीन्ह मुनीशा॥
रामभक्ति अबिरल उर तोरे * बसिहि सदा प्रसाद अब मोरे ॥

दो०सदा रामप्रिय होय तुम, शुभगुणभवन अमान[2]

---

१ रामचरित मानस (रामचन्द्रजीके चरित्रोंका तडाग.) २ मानरहित.

कामरूप इच्छामरण, ज्ञानबिरागनिधान ॥ १७५ ॥
जेहि आश्रम तुम बसब पुनि, सुमिरत श्रीभगवन्त
व्यापिहि तहँ न अविद्या, योजन यकपर्यन्त १७६
काल--कर्म--गुण--दोषस्वभाऊ *कछु दुख तुमहिं नव्यापिहि काऊ
रामरहस्य ललित बिधि नाना * गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
बिनु श्रम तुम सब जानब सोऊ * नित नव प्रेम रामपद होऊ ॥
जो इच्छा करिहौ मनमाहीं * हरिप्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
सुनि मुनिआशिषसुनु मतिधीरा*ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥
एवमस्तु तव बच मुनि ज्ञानी * यह मम भक्त कर्म मन बानी॥
सुनि नभगिरा हर्ष मन भयऊ * प्रेम-मग्न मनसंशय गयऊ ॥
करि बिनती मुनिआयसु पाई * पदसरोज पुनि पुनि शिर नाई॥
हर्षसहित इहि आश्रम आयउँ * प्रभुप्रसाद दुर्लभ बर पायउँ ॥
इहाँ बसत मोहिं सुन खगईशा * बीते कल्प सात अरु बीसा ॥
करौं सदा रघुपतिगुणगाना * सादर सुनहिं बिहँग सुजाना ॥
जब जब अवधपुरी रघुबीरा * धरहिं भक्तहित मनुजशरीरा॥
तब तब जाय अवधपुर रहऊँ *शिशुलीला बिलोकि सुख लहऊँ
पुनि उर राखि रामशिशुरूपा * इहि आश्रम आवों खगभूपा ॥
कथा सकल मैं तुमहिं सुनाई * कागदेह जेहि कारण पाई ॥
कहेउँ तात सब प्रश्न तुम्हारी * रामभक्तिमहिमा अतिभारी ॥

दो०-ताते यह तनु मोहिं प्रिय, भयउँ रामपद नेह ॥
निजप्रभुदर्शन पायऊँ, गयउ सकल संदेह ॥१७७॥
भक्तिपक्ष हठ करि रहेउ, दीन्ह महाऋषि शाप ॥

१ ज्ञान और बैराग्यके पात्र. २ माया. ३ चरणकमलको. ४ पक्षी. ५ हे गरुड.

मुनिदुर्लभ बर पायउँ, देखहु भजनप्रताप ॥१७८॥

जे अस भक्ति जानि परिहरहीं * केवल ज्ञानहेतु श्रम करहीं ॥
ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी * खोजत आक[1] फिरहिं पयलागी
सुनु खगेश हरिभक्ति बिहाई * जो सुख चाहहिं आन उपाई॥
ते शठ महासिन्धु बिनु तरणी[2] * पैरि पार चाहत जड़करणी ॥
सुनि भुशुण्डके बचन भवानी * बोलेउ गरुड़ हर्षि मृदुबानी ॥
तव प्रसाद प्रभु मम उरमाहीं * संशय शोक मोह भ्रम नाहीं ॥
सुनेउँ पुनीत रामगुणग्रामा[3] * तुम्हरी कृपा लहेउँ बिश्रामा ॥
एकबात प्रभु पूँछौं तोहीं * कहहु बुझाइ कृपानिधि मोहीं॥
कहहिं सन्त मुनि बेदपुराना * नाहिं कछु दुर्लभ ज्ञानसमाना ॥
सो सुनि तुमसन कहेउँ गुसाईं * नाहिं आदरेउ भक्तिकी नाईं ॥
ज्ञानहिं भक्तिहिं अन्तर केता * सकल कहहु प्रभु कृपानिकेता॥
सुनि उरगारि बचन सुख माना * सादर बोलेउ काग सुजाना ॥
ज्ञानहिं भक्तिहिं नाहिं कछु भेदा * उभय[4] हरहिं भवसम्भवखेदा ॥
नाथ मुनीश कहहिं कछु अन्तर * सावधान होइ सुनहु बिहंगबर॥
ज्ञान बिराग योग बिज्ञाना * ये सब पुरुष सुनहु हरियाना ॥
पुरुषप्रताप प्रबल सबभाती * अबला अबल सहज जड़जाती

दो॰ पुरुष त्यागिसक नारिकहँ, जो बिरक्त मतिधीर
नाहिं तो कामी बिषयबश, बिमुखजोपदरघुबीर१७९
सो॰ सो मुनिज्ञाननिधान, मृगनयनीबिधुमुख निरखि
बिकल होहिं हरियान, नारि बिरचि माया प्रगट१८
यहाँ न पक्षपात कछु राखौं * बेद-पुराण-सन्त मत भाखौं ॥

१ मदार. २ नौका. ३ रामचन्द्रजीके गुणोंके समूह. ४ दोनो.

मोह न नारि नारिके रूपा * पन्नगारि यह नीति अनूपा ॥
माया भक्ति सुनहु प्रभु दोऊ * नारिबर्ग जानैं सबकोऊ ॥
पुनि रघुबीरहिं भक्ति पियारी * माया खल नर्तकी बिचारी ॥
भक्तिहिं सानुकूल रघुराया * ताते तेहि डरपति अतिमाया ॥
रामभक्ति निरुपम निरुपाधी * बसै जासु उर सदा अबाधी ॥
तेहि बिलोकि माया सकुचाई * करि न सकै कछु निजप्रभुताई ॥
अस बिचारि जो मुनि बिज्ञानी * याँचहिं भक्ति सकलगुणखानी ॥

दो॰ यह रहस्य रघुनाथकर, बेगि न जानै कोइ ॥
जानेते रघुपतिकृपा, स्वप्नेहु मोह न होइ ॥ १८०॥
अवरौ ज्ञान भक्ति कर, भेद सुनहु परबीण ॥
जो सुनि होइ रामपद, प्रीति सदा अवक्षीण १८१

सुनहु तात यह अकथ कहानी * समुझत बनै न जात बखानी ॥
ईश्वरअंश जीव अबिनाशी * चेतन अमल सहज सुखराशी ॥
सो मायाबश भयउ गुसाईं * बँध्यो कीर-मरकटकी नाईं ॥
जड़चेतनहिं ग्रंथि परिगई * यदपि मृषा न छूटत कठिनई ॥
तबते जीव भयो संसारी * ग्रन्थि न छूट न होइ सुखारी ॥
श्रुति पुराण बहु कहेउ उपाई * छूट न आधिक आधिक अरुझाई ॥
जीवहृदय तम[२] मोह विशेषी * ग्रन्थि छूटै किमि परै न देखी ॥
अस संयोग ईश जब करई * तबहुँ कदाचित सो निरुअरई[३] ॥
सात्विक[४] श्रद्धा धेनु सुहाई * जो हरिकृपा हृदय बस आई ॥
जप तप संयम नियम अपारा * जो श्रुति[५] कहैं सुधर्म अचारा ॥
ये तृणहरित चरै जब गाई * भावबत्स शिशु पाइ पन्हाई ॥

१ हे गरुड. २ अज्ञानसे अंधकार. ३ निवृत्त होती है ४ सतोगुणी. ५ वेद.

सोइ निर्वृत्ति पात्र बिश्वासा * निर्मल मन अहीर निजदासा॥
परमधर्ममय पय दुहि भाई * अवटै अनल अकाम बनाई॥
तोष मरुत तब क्षमा जुड़ावै * धृतिसम जावन देइ जमावै॥
मुदिता मथै बिचार मथानी * दमअधार रजु सत्यसुबानी॥
तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता * बिमल बिराग सुभग सुपुनीता॥

दो०-योगअग्नि कर प्रगट तब, कर्म शुभाशुभ लाइ॥
बुद्धि सिरावै ज्ञानघृत, ममतामलजरिजाइ॥ १८२॥
तब बिज्ञान-निरूपणी, बुद्धि बिशद घृत पाइ॥
चित्तदिया भरि धरै दृढ, समतादिअटि बनाइ॥ १८३
तीनि अवस्था तीनि गुण, तेहि कपासते काढि॥
तूल तुरीय सँवारि पुनि, बाती करै सुगाढि॥ १८४॥
सो०-यहि बिधि लेसै दीप, तेजराशि बिज्ञानमय॥
जातहिं तासुसमीप, जरहिं मदादिक शलभ सब१६

सोहमस्मि इतिवृत्ति अखंडा * दीपशिखा सोइ परमप्रचंडा॥
आतमअनुभव सुखसुप्रकाशा * तब भवमूल भेद-भ्रम नाशा॥
प्रबल-अविद्याकर परिवारा * मोहआदि तम मिटै अपारा॥
तब सोइ बुद्धि पाय उजियारा * उरगृह बैठि ग्रन्थि निरुआरा॥
छोरन ग्रन्थि पाव जो सोई * तब यह जीव कृतारथ होई॥
छोरत ग्रन्थि जानि खगराया * बिघ्न अनेक करै तब माया॥
ऋद्धि सिद्धि प्रेरै बहुभाई * बुद्धिहिं लोभ दिखावै जाई॥
करबलं छल करि जाइ समीपा * अंचलबात बुझावै दीपा॥
होइ बुद्धि जो परमसयानी *तिन्हतनु चितवन अनहितजानी

१ शांति. २ दूध. ३ अग्नि. ४ पवन. ५ आनंदरूपा पात्रमें.

जो तेहि विघ्नबुद्धि नहिं बाधी * तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी॥
इन्द्रियद्वार झरोखा नाना * तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना॥
आवत देखहिं बिषयबयारी * ते हठि देहिं कपाट उघारी ॥
जब सो प्रभंजन उरगृह जाई * तबहिं दीप विज्ञान बुझाई ॥
ग्रन्थि न छूटि मिटा सो प्रकाशा * बुद्धि बिकल भइ बिषयबताशा
इन्द्रियसुरन्ह न ज्ञान सुहाई * बिषयभोगपर प्रीति सदाई ॥
विषयसमीर[1] बुद्धिकृत भोरी * तेहि विधि दीपको बार बहोरी॥

दो०तब फिरि जीव बिबिधबिधि, पावै संसृति[2] क्लेश॥
हरिमाया अतिदुस्तर, तरि नजाइ बिहँगेश ॥ १८५॥
कहत कठिन समुझत कठिन, साधन कठिन बिबेक ॥
होइ घुणाक्षरन्याय जो, पुनि प्रत्यूह अनेक॥ १८६ ॥

ज्ञानकि पन्थ कृपाणकै धारा * परत खगेश न लागै बारा ॥
जो निर्बिघ्नपंथ निर्बहई * सो कैवल्य परमपद लहई ॥
अतिदुर्लभ कैबल्य परमपद * सन्त पुराण निगम[3] आगम[4] बंदे[5]
रामभक्तिसों मुक्ति गुसाँई * अनइच्छित आवै बरिआई॥
जिमिथलबिनुजलरहिनसकाई * कोटिभांति कोउ करै उपाई ॥
तथा मोक्षसुख सुन खगराई * रहि न सकै हरिभक्तिबिहाई ॥
अस बिचारि हरिभक्त सयाने * मुक्ति निरादरि भक्ति लोभाने॥
भक्ति करत बिनु यत्नप्रयासा * संसृतिमूल–अविद्या–नाशा ॥
भोजन करिय तृप्तिहित लागी * जिमि सो अन्न पचेउ जठरागी
अस हरिभक्ति सुगम सुखदाई * को अस मूढ न जाहि सुहाई ॥

दो०सेवकसेव्यप्रभाव बिनु, भव न तरिय उरगारि

१ पवन. २ जन्ममरणका कष्ट. ३ वेद. ४ शास्त्र. ५ कहते हैं.

भजहु रामपदपंकज, अस सिद्धान्त बिचारि॥१८७॥
जो चेतनकहँ जड करै, जडहि करै चैतन्य* ॥
अस समर्थ रघुनाथकहँ, भजहिं जीव ते धन्य१८८

कहेउँ ज्ञानसिद्धांत बुझाई * सुनहु भक्तिमणिकी प्रभुताई ॥
रामभक्ति चिंतामणि सुन्दर * बसै गरुड़ जाके उरअन्तर ॥
परमप्रकाशरूप दिन राती * नहिं कछुचहियादियाघृतबाती॥
मोह दरिद्र निकट नहिंआवहिं * लोभवात[1] नहिं ताहि बुझावहिं॥
प्रबल अविद्यातम मिटि जाई * हारत सकल शलभसमुदाई[2] ॥
खल कामादि निकट नहिं जाहीं * बसै भक्तिमणि जेहि उरमाहीं॥
गरल[3] सुधासम[4] अरि[5] हित होई * तेहि मणिबिनु सुख पाव न कोई॥
व्यापहि मानसरोग न भारी * जेहिके बश सब जीव दुखारी ॥
रामभक्तिमणि उर बस जाके * दुखलवलेश न स्वप्नेहु ताके ॥
चतुरशिरोमणि ते जगमाहीं * जे मणिलागि सुयत्न कराहीं ॥
सो मणि यदपि प्रगट जग अहई * रामकृपाबिनु कोउ न लहई ॥
सुगम उपाय पाइबेकेरे * नर हतभाग्य देत भटभेरे ॥
पावन पर्वत बेद पुराना * रामकथा रुचिराकर नाना ॥
मर्मी सज्जन सुमति कुदारी * ज्ञान बिराग नयन उरगारी ॥
भावसहित जो खोदै प्रानी * पाव भक्तिमणि सबसुखखानी ॥
मोर मन प्रभु अस बिश्वासा * रामते अधिक रामकर दासा ॥
रामसिन्धु घन सज्जन धीरा * चन्दनतरु हरि सन्त समीरा ॥
सबकर फल हरिभक्ति सुहाई * सो बिनु सन्त न काहू पाई ॥
अस बिचारि जो करु सत्संगा * रामभक्ति तेहि सुलभ बिहंगा॥

---

१ लोभरूप पवन. २ टीडियोंका झूंड. ३ जहर. ४ अमृतसमान. ५ शत्रु.

दो०ब्रह्मपयोनिधि[1] मन्दर[2], ज्ञान सन्त सुर आहि॥
कथासुधा[3] मथि काढ़हीं, भक्तिमधुरता जाहि१८९॥
बिरतिचर्म असि ज्ञान मद, लोभ मोह रिपु मारि॥
जय पाई सोइ हरिभगति, देख खगेश बिचारि १९०

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ * जो कृपालु मोहिं ऊपर भाऊ॥
नाथ मोहिं निज सेवक जानी * अष्ट प्रश्न मम कहहु बखानी॥
प्रथमाहिं कहहु नाथ मतिधीरा * सबते दुर्लभ कौन शरीरा॥
बड़दुख कौन कौन सुख भारी * सो संक्षेपाहिं कहहु बिचारी॥
सन्तअसन्तमर्म तुम जानहु * तिन्हकर सहजस्वभाव बखानहु
कौन पुण्य श्रुतिविदित बिशाला * कहहु कौनअघ परमकराला॥
मानसरोग कहहु सब गाई * तुम सर्वज्ञ कृपा अधिकाई॥
तात सुनहु सादर अतिप्रीती * मैं संक्षेप कहौं यहनीती॥
नरसमान नहिं कौनिहुँ देही * जीव चराचर याचत जेही॥
नरक–स्वर्ग–अपवर्ग–निसेनी * ज्ञान--बिराग--भक्तिसुख देनी॥
सोतनुधरिहरिभजहिं न जे नर * होय बिषयरत मन्द मन्दतर॥
कांचन काँच बदलि शठ लेहीं * करते डारि परसमणि देहीं॥
नहिं दारिद्रसम दुख जगमाहीं * सन्तमिलनसम सुख कछुनाहीं
पर--उपकार वचन--मन--काया * सन्तस्वभाव सहज खगराया॥
सन्त सहहिं दुख परहितलागी * परदुखहेतु असन्त अभागी॥
भूरजतरुसम सन्त कृपाला * परहित सहनितविपतिबिशाला
सन इव खल परबंधन करहीं * खाल कढ़ाइ बिपति सहिभरहीं॥
खल बिनु स्वारथपरअपकारी * अहि मूषक इव सुनु उरगारी॥

---

१ बेदरूप क्षीरसागर. २ ज्ञानरूप मन्दराचल. ३ रामकथारूप अमृत.

परसम्पदा बिनाशि नशाहीं * जिमिकृषिहतिहिमउपलबिलाहीं
दुष्ट–उदय जग–आरति–हेतू * यथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥
सन्तउदय सन्तत सुखकारी * बिश्वसुखद जिमि इंदु तमारी ॥
परमधर्म श्रुतिबिदित अहिंसा * परनिंदासम अघ न गरिसा ॥
हरिगुरुनिन्दक दादुर होई * जन्मसहस्र पाव तनु सोई ॥
द्विजनिंदक बहुनरक भोग करि * जग जन्मैं बायसशरीर धरि ॥
सुरश्रुतिनिंदक जे अभिमानी * रौरवनरक पराहिं ते प्रानी ॥
होहिं उलूक सन्तनिन्दारत * मोहनिशाप्रिय ज्ञानभानुगत ॥
सबकी निन्दा जे जड़ करहीं * ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
सुनहु तात अब मानसरोगा * जेहिते दुख पावहिं सबलोगा ॥
मोह सकल व्याधिनकर मूला * तेहिते पुनि उपजाहिं बहु शूला॥
काम बात कफ लोभ अपारा * क्रोध पित्त नित छाती जारा॥
प्रीति करहिं जो तीनौ भाई * उप्रजै सन्निपात दुखदाई ॥
बिषय मनोरथ दुर्गम नाना * ते सब शूल नाम को जाना ॥
ममता दद्रु कण्डु ईर्षाई * कुष्ट दुष्ट तामस कुटिलाई ॥
अहंकार जो दुखद डहरुआ * दम्भ कपट मद मान नहरुआ॥
तृष्णा उदरवृद्धि अतिभारी * त्रिबिध ईषणा तरुण तिजारी *
युग बिज्वर मत्सर अबिबेका * कहँलगि कहौं कुरोग अनेका॥

दो०एक व्याधिते नर मरहिं, ये असाध्य बहु व्याधि
सन्ततपीडहिंजीवकहँ, सोकिमिलहहिंसमाधि १९१
नियम धर्म आचार तप, ज्ञान यज्ञ जप दान ॥
भेषजपुनि कोटिन्हकरहिं, रुज न जाहि हरियान १९२

१ पालाके पत्थर. २ जगंतूके दुःखके कारण. ३ सूर्य. ४ कागदेह.

यहिविधि सकल जीब जग रोगी* शोक हर्ष भय प्रीतिबियोगी ॥
मानसरोग कछुक मैं गाये * हैं सबके लखि बिरलन्हि पाये ॥
जानेते छींजहिं कछु पापी * नाश न पावहिं जन परितापी ॥
बिषय कुपथ्य पाइ अंकुरे * मुनिन्ह हृदय का नर बापुरे ॥
रामकृपा नाशहिं सब रोगा * जो इहि भांति बनै संयोगा ॥
सद्गुरु बैद्य वचन विश्वासा * संयम जहँ न बिषयकी आशा
रघुपति-भक्ति सजीबनमूरी * अनोपान श्रद्धा मति रूरी ॥
यहिबिधि भले कुरोग नशाहीं * नाहिं तो यत्न कोटि नहिं जाहीं
जानिय तब यह बिरुजे गुसाँई * जब उर बलबिरागअधिकाई ॥
सुगति क्षुधा बाढ़ै नित नई * बिषय-आश दुर्बलता गई ॥
बिमल ज्ञानजल पाइ अन्हाई * तब रह रामभक्ति उर छाई ॥
शिव अजे शुक सनकादिकनारद* जे मुनि ब्रह्मविचारविशारद ॥
सबकर मत खगनायक एहा * करिय राम-पदपंकज-नेहा ॥
श्रुति पुराण सद्ग्रंथ कहाहीं * रघुपतिभक्तिबिना सुख नाहीं॥
कमठै पीठ जामहिं बरु वारा * बंध्यासुत बरु काहुहिं मारा ॥
फूलहि नभै बरु बहुबिध फूला * जीब न लह सुख प्रभुप्रतिकूला
तृषा जाइ बह मृगजैल पाना * बरु जामहिं शशशीश वृषाना॥
अन्धकार बरु रबिहिं नशावै * रामबिमुख सुख जीव न पावै॥
हिमते प्रगट अनल बरु होई * बिमुख राम सुख पाव न कोई ॥

दो०बारिमथे बरु होइ घृत, सिकताते बरु तेल* ॥
बिनु हरिभजनन भवतरिय, यहसिद्धान्तअपेल ।१९३
मशकहिं करहिं बिरंचि प्रभु, अजहिं मशकते हीन॥

---

१ रोगरहित. २ब्रह्माजी. ३ कच्छप. ४ आकाश. ५ मृगतृष्णा. ६ सींग

अस बिचारि तजिसंशय, रामहिं भजहिंप्रबीन॥१९४

श्लोकः-विनिश्चितं वदामिते, न अन्यथा वचांसि मे॥
हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते ॥ १ ॥

कहेउँ नाथ हरिचरित अनूपा * व्यास-मासस्वमतिअनुरूपा ॥
श्रुतिसिद्धान्त इहै उरगारी * राम भजिय सबकाम बिसारी
प्रभु रघुपति तजि सेइय काही * मोसे शठपर ममता जाही ॥
तुम बिज्ञानरूप नहिं मोहा * कीन्ह नाथ मोपर अति छोहा॥
पूँछउ रामकथा अतिपावनि * शुकसनकादिशम्भुमनभावनि
सत्संगति दुर्लभ संसारा * निमिषदंडभरि एको बारा ॥
देखु गरुड निजहृदय बिचारी * मैं रघुबीरचरणअधिकारी ॥
शकुनाधम[1] सबभांति अपावन*प्रभु मोहिं कीन्ह बिदितजगपावन

दो०आजु धन्य मैं धन्य अति, यद्यपि सबबिधि हीन
निजजन जानि राम मोहिं, संतसमागम दीन॥१९५॥
नाथ यथामति भाषेउँ, राखउँ कछु नहिं गोय[2] ॥
चरितसिन्धु रघुनाथकर, थाह कि पावै कोय॥१९६

सुमिर रामके गुणगण नाना * पुनि पुनि हर्ष भुसुण्ड सुजाना
महिमा निगम नेति कहि गाई * अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥
शिवअजपूज्य-चरण[3] रघुराई * मोपर कृपा परममृदुलाई ॥
अस सुभाव कहुँ सुनो न देखौं* केहि खगेश रघुपतिसम लेखौं

श्लोकार्थः-हे गरुड ! यह मैं तुमसे बिशेष निश्चय करके कहताहूं ये मेरे बचन अन्यथा (झूंठ) नहीं है. हे तात ! जो रामचन्द्रजीको भजते हैं वे अतिदुस्तर संसारसागरको तरते हैं.

१ पक्षीयोंमें नीच. २ गुप्त. ३ शंकरजी और ब्रह्माजीकरके पूज्यपाद

साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी * कबि कोविद बिरक्त संन्यासी॥
योगी सुर अरु तापस ज्ञानी * धर्मनिरत पण्डित बिज्ञानी ॥
तरहिं न बिनु सेय मम स्वामी * राम नमामि नमामि नमामी ॥
शरण गये मोसे अघराशी * होहिं शुद्ध नमामि अबिनाशी॥

दो०जासु नाम भवभेषज[1], हरण घोर त्रयशूल ॥
सो कृपालु मोहिं तोहिं पर, सदा रहहिं अनुकूल ॥
सुनि भुशुण्डके बचन बर, देखी रामपदनेह ॥
बोले गरुड सप्रेम अति, बिगत-मोह-सन्देह ॥१९८॥

मैं कृतकृत्य भयउँ तव बानी * सुनि रघुबीरभक्ति रससानी ॥
राम-चरण नूतन रति भई * मायाजनित बिपति सब गई ॥
मोहजलधि-बोहित तुम भयउ * मो कहँ नाथ बिबिध सुखदयऊ ॥
मोसन होइ न प्रत्युपकारा * बन्दौं तव पद बारहिं बारा ॥
पूरणकाम राम-अनुरागी * तुमसम तात न कोउ बड़भागी
संत बिटप[2] सरिता गिरि धरणी[3] * परहितहेतु इन्हनकी करणी ॥
सन्तहृदय नवनीत[4]-समाना * कहा कबिन पै कहै न जाना ॥
निजपरिताप द्रवै नवनीता * परदुख द्रवहिं सुसन्त पुनीता॥
जीवन जन्म सुफल मम भयऊ * तव प्रसाद सब संशय गयऊ ॥
जानेहु मोहिं सदा निजकिंकर * पुनि पुनि उमा कहै सुबिहँगवर

दो०तासु चरण शिर नाइ करि,प्रेमसहित मतिधीर
गरुड गयो बैकुंठ तब, हृदय राखि रघुबीर ॥ १९९ ॥
गिरिजा सन्तसमागम, सम न लाभ कछु आन ॥
बिनु हरिकृपा होइ नहिं, गावहिं बेद पुरान ॥ २०० ॥

१ संसारकी दवा है. २ वृक्ष. ३ पृथ्वी. ४ माखनके सदृश.

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा * सुनत श्रवण छूटहि भवपासा॥
प्रणत--कल्पतरु करुणा--पुंजा * उपजैं प्रीति राम–पदकंजा॥
मन--बचे-काय-जनितअघजाई * सुनै जो कथा श्रवण-मनलाई॥
तीर्थ -अटन साधन-समुदाई * योग बिराग ज्ञाननिपुणाई॥
नाना कर्म धर्म व्रत दाना * संयम नियम यज्ञ जप नाना॥
भूतदया द्विज--गुरु-सेवकाई * बिद्या--बिनय बिबेक--बड़ाई॥
जहँलगि साधन बेद बखानी * सबकर फल हरिभक्ति भवानी
सोई रघुनाथभक्ति श्रुति गाई * रामकृपा काहू यक पाई॥

दो०-मुनिदुर्लभ हरिभक्ति नर, पावहिं बिनहि प्रयास
जो यह कथा निरन्तर, सुनहि, मानि बिश्वास २०१

सोइ सर्वज्ञ गुणी सबज्ञाता * सोइ महिमंडन पण्डित दाता॥
धर्म--परायण सोइ कुलत्राता * रामचरण जाकर मन राता॥
नीतिनिपुण सोइ परमसयाना * श्रुतिसिद्धान्त नीक तेहिं जाना
सोइ कबि कोविद सोइ रणधीरा * जो छल छाँड़ि भजै रघुबीरा॥
धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी * धन्य सो देश जहाँ सुरसरी॥
धन्य सो भूप नीति जो करई * धन्य सो द्विज निजधर्म न टरई
सो धन धन्य प्रथम गति जाकी * धन्य पुण्यरत मति सोइ जाकी
धन्य घरी सोइ जब सत्संगा * धन्य जन्म द्विजभक्ति अभंगा॥

दो०-सो कुल धन्य उमा सुन, जगतपूज्य सुपुनीत॥
श्रीरघुबीरपरायण, जेहि नर उपज बिनीत॥२०२॥

मतिअनुरूप कथा मैं भाषी * यद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी॥
तब मन प्रीति देखि अधिकाई * तब मैं रघुपातिकथा सुनाई॥

१ मन वाणी व देहसे उत्पन्न. २ तीर्थयात्रा. ३ जीवोंपर दयाभाव. ४ गंगा.

यह न कहिय शठही हठशीलहिं * जो मन लाइ न सुन हरिलीलहिं
कहियन लोभिहिं क्रोधिहिंकामिहिं*जो न भजै सचराचरस्वामिहिं
द्विजद्रोहिहिं न सुनाइय कबहूं *सुरपतिसरिसरिस होय नृप जबहूँ
रामकथाके ते अधिकारी * जिनके सत्संगति अतिप्यारी॥
गुरुपद-प्रीति नीतिरत जोई * द्विजसेवक अधिकारी सोई ॥
ताकहँ यह बिशेष सुखदाई * जाहि परमप्रिय श्रीरघुराई ॥

दो०रामचरणरति जो चहै, अथवा पद निर्बान[2]॥
भवसहित सो यह कथा, करै श्रवणपुटपान॥२०३॥

रामकथा गिरिजा मैं बरणी * कलिमलशमन मनोमलहरणी
संसृतिरोग- सजीवन- मूरी * रामकथा गावहिं श्रुति भूरी ॥
इहिमहँ रुचिर सप्त सोपाना[3] * रघुपतिभक्तिकेर पथ नाना ॥
अति हरिकृपा जाहिपर होई * पाँव देइ यहि मारग सोई ॥
सर्मकामना सिद्धि नर पावै * जो यह कथा कपट तजि गावै
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं * ते गोपद इव भवनिधि[4] तरहीं
सुनि सब कथा हृदय अतिभाई * गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
नाथकृपा मम गत सन्देहा * रामचरण उपजा नव नेहा ॥

दो०मैं कृतकृत्य भयउँ अब, तव प्रसाद बिहँगेश॥
उपजी रामभक्ति दृढ़, बीते सकल कलेश ॥२०४॥

यह शुभ शम्भु-उमा-सम्वादा * सुखद सदा अरु शमन बिषादा
भवभंजन गंजन सन्देहा * जनरंजन सज्जनप्रिय येहा ॥
राम-उपासक जे जगमाहीं * इहिसम प्रिय तिनकहँ कछु नाहीं
रघुपतिकृपा यथामति गावा * मैं यह पावन चरित सुनावा ॥

---

१ इंद्रसमान. २ मोक्ष. ३ सीढी. ४ संसारसमुद्र.

इहि कलिकाल न साधन दूजा * योग यज्ञ जप तप व्रत पूजा ॥
रामहिं सुमिरिय गाइय रामहिं * सन्तत सुनिय रामगुणग्रामहिं ॥
जासु पतितपावन बड़ बाना * गावहिं कबि श्रुति सन्त पुराना
ताहि भजिय ताजि मनकुटिलाई * राम भजे केहि गति नहिं पाई ॥

छं० पाई न गतिकेहिं पतितपावन राम भज सुनुशठमना
गणिका अजामिल गृध्र ब्याध गजादि खल तारेघना
आभीरयवनकिरातखलश्वपचादि अतिअघरूप[1] जे
कहि नाम बारक तेपि[2] पावन होत राम नमामि ते ३०
रघुबंशभूषणचरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं
कलिमलमनोमल धोइबिनुश्रमरामधाम सिधावहीं
शतपंच चौपाई मनोहर जानि जे नर उर धरैं ॥ *
दारुणअबिद्यापंचजनित बिकार श्रीरघुपति हरैं ३१
सुंदर सुजानकृपानिधान अनाथपर कर प्रीति जो
सो एक राम अकामहित निर्बाणप्रद[3] सम आन को
जाकी कृपालवलेशते मतिमन्द तुलसीदासहूँ ॥ *
पायो परमबिश्राम रामसमान प्रभु नाहीं कहूँ ३२
दो० मोसम दीन न दीनहित, तुमसमान रघुबीर ॥
अस बिचारि रघुबंशमणि हरहु बिषम भवपीर २०५

---

१ बड़े पापी. २ वेभी. ३ मोक्ष देनेवाले.

दो० कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम
ऐसे होय कब लागिहौ तुलसिके मन राम ॥२०६॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विशुद्धवि-
ज्ञातसन्तोषसम्पादनो नाम श्रीगोस्वामितुलसीदासकृत
उत्तरकाण्डः सप्तमः सोपानः

इत्युत्तरकाण्डः समाप्तः

श्रीयुतगोस्वामी

तुलसीदासकृतरामायणम्.

(लवकुशकाण्डम्)

संवत् १९५६
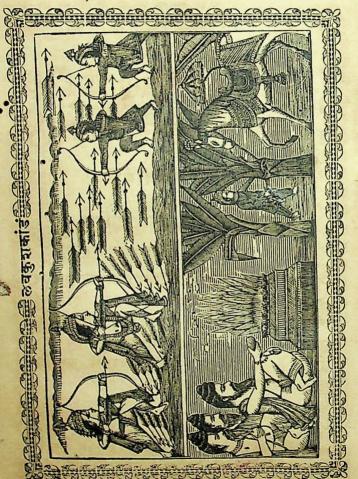
तुलसीदासकृतरामायणे

लवकुशकाण्डप्रारंभः ।

दोहा–अश्वमेध ऋतु लवणवध, अङ्गदादिमदभङ्ग ॥
स्वपदगमन प्रभु सह अवध, लवकुशकाण्डप्रसंग ॥

श्लोक–शौर्यप्रसिद्धं कमनीयगात्रं महानुभावं रघुवंशकेतुम् ॥ स्वयं प्रभुः सन् विनयादिसिन्धुं सीतासुवामं प्रणमामि रामम् ॥ १ ॥ प्रफुल्लनीलोत्पललोललोचनं विधुप्रतिद्वेषिमुखाम्बुजद्युतिम् ॥ शिरीषपुष्पप्रभकोमलच्छविं नमामि रामं हयमेधकृत्परम् ॥ २ ॥

श्लोकार्थ–शूरता बीरतामें प्रसिद्ध और मनोहर हैं अंग जिनके और महानुभव और रघुवंशमें पताकारूप और आप सर्वथा समर्थ हैं तथापि नम्रता आदि गुणोंके समुद्र हैं और श्रीसीताजी है सुन्दरी बामा कही स्त्री जिनकी ऐसे श्रीरामजीको मै प्रणाम करताहूं ॥ १ ॥ और फूले जे

मार्तण्डकोटिप्रभमीश्वरं हरं गंगाधरं कोटिशशाङ्कशीतलम् ॥ युगान्तकालानलज्वालधारणं शिवासमेतं प्रणमामि शंकरं ॥ ३ ॥

दो०रामकथा पावन परम, सुनि पुलके हरियान ॥
पुनि बोले कर जोरि करि, अस्तुति मधुर विधान[१]
सुरसरिसम पावन भयो, नाथ हृदय अब मोर ॥
जन्म जन्म छूटै नहीं, ध्यान पदाम्बुज तोर ॥ २ ॥

सुने सकल गुणगण प्रभुकेरे * पूजे नाथ मनोरथ मेरे ॥
तव प्रसाद बायसकुलनाथा[२] * हृदय बसो अब प्रभुगुणगाथा॥
मन संतोष न हृदय अघाई * यथा उदधि[३] सरिता[४] सर[५] जाई
पशु पक्षी जड जंगम जाती * सचराचर बर्णत केहि भांती ॥
सुभग अवध बस प्रभु सुखधामा * लिये संग सादर श्रीरामा ॥
तजि निजअवधि गये प्रभु देहा * यह सुनि नाथ परमसंदेहा ॥

नीलकमल तद्वत् लोल कही चंचल है नेत्र जिनके और चंद्रमाके तिरस्कार करनेवाली है मुखारविन्दकी दीप्ति जिनकी और आसिकपेंचाके फूलके सदृश कोमल है छबि जिनकी और अश्वमेध यज्ञ करनेवाले सब से श्रेष्ठ ऐसे श्रीरामजीको मैं प्रणाम करताहूं ॥ २ ॥

कोटिसूर्यके सदृश है प्रभा जिनकी और ईश्वर, हर. गंगाधर और कोटिचन्द्रमाके समान सीतल और महाप्रलयके कालाग्निकी ज्वालाको धारण किये पार्वतीसहित ऐसे शंकरको मैं प्रणाम करताहूं ॥ ३ ॥

---

१ गरुड़. २ हे कागकुलके स्वामी. ३ समुद्रमें. ४ नदी. ५ तडाग.

अबम्वाहिं प्रभु सब कहौ बुझाई * जानि पितासम कीन ढिठाई ॥
यह इतिहास पुनीत कृपाला * जिमि मेख कीन राम महिपाला

दो०अस कहि गद्गद वचन मृदु, पुलकावली शरीर
सुनि सप्रेम हर्षेउ विशद, बायस अति मतिधीर ॥३॥

धन्य धन्य तुम धनि खगराया * कीन्हेउ अमित मोहिंपर दाया ॥
रामकृपा तुम्हरे मनमाहीं * संशय शोक मोह भ्रम नाहीं॥
अतिप्रिय बचन रसज्ञ तुम्हारे * लागे नाथ मोहिं अतिप्यारे ॥
अब प्रभु विशद कथा विस्तारी * कहहुँ सुनहु जगहित उरगारी॥
तव तनु प्रीति देखि खगराया * मिटहिं अमंगल कोटिक माया
सुनु अब रामरहस्य अनूपा * चरित पुनीत अवधपुरभूपा ॥
अज अद्वैत अमल अविनासी *रहित सकल कलिमलभवफाँसी

दो०विधिवरवचन सँभार उर, राजत करुणाऐन ॥
युग जोरी शोभा निरखि, लजित कोटिशतमैन॥४॥

अनुज सचिव प्रभु प्रजा बुलाये * गुरु गृह सादर सुनि सब आये॥
मकरमास रविपर्व सुहावा * बिदा माँगि प्रभुपद शिरनावा ॥
काशी धर्म–क्षेत्र जगजाना * चले सकल सजिसजि सब याना
चतुरंगिनी अनी[२] सब साथा * इहिविधि चले राम रघुनाथा ॥
तीन बास करि शिवपुर आये * सादर पुरी शीस तिन नाये ॥
आय सुरसरिहिं कीन्ह प्रणामा * अमित अनन्त पाय विश्रामा॥
महिसुर[३] दंढि कृती संन्यासी * पूजेउ कृपासिंधु सुखरासी ॥
दीन दान कछु बर्णि न जाई *धनद[४] कुबेर सुरेश[५] लजाई ॥

१ यज्ञ. २ फौज. ३ ब्राह्मण. ४ धन देनेवाले. ५ इन्द्र.

दो०इहिबिधि प्रभु रहि बिपुलदिन, सुखी कियेमुनिवृंद
आये पुनि निजनगरमें, हर्षित करुणाकन्द ॥ ५ ॥

प्रतिदिन अवध अनंदउछाहू * दान देहिं प्रतिदिन नरनाहू ॥
झूँठ प्रपंच दुःख नहिं काहू * ब्याप न कबहुँ सुनहु खगनाहू ॥
सुनियत जहँ तहँ बेद पुराना * दूसर धर्म न काहू जाना ॥
दिन दिन प्रति देखहिं भगवाना * अतिआनंद सकल पुर जाना॥
रुद्रसहस परमान हमारी * भये शोचबश राम खरारी ॥
अश्वमेध मख करहुँ सुहाई * गाय तरहिं नर भवसमुदाई ॥
पुनि निजधामहिं तुरतसिधावौं * बिधिकरबचन चूक नहिं लावौं
प्रात जाय गुरुभवन सप्रीती * कहैं करौं सब सुंदर रीती ॥

दो०अस बिचार उर राखि कर, कृपासिंधुमतिधीर
करत चरित नाना अमित, हरण शोक-भवभीर ॥ ६ ॥

कहहु सुनौं रघुपतिप्रभुताई * जो पुराणऋषि नारद गाई ॥
रामराज जस निर्मल भयेऊ * तस कछु आदिकबीने कहेऊ॥
मम मति लघु बर्णौं केहि भाँती * सोह हंस किमि बगुलापाँती ॥
सुनिय न पुहमि कतहुँ अघकाना * पढ़हिं चतुर नर बेदपुराना ॥
गावहिं प्रभुगुणगण भयहारी * निंदहिं अमरलोक नरनारी ॥
आज्ञा मात पिता गुरु करहीं * तप मख दान अर्पि हरि भजहीं॥
प्रजा अनंद राज प्रभुकेरे * मानहुँ शक्र कुबेर घनेरे ॥
राजत सब रनिवास अनंदा * सुखी चकोर शरद लखि चंदा ॥

दो०रघुवरराज विराज अति, सकल अवनिअघ भाग
विचरहिं मुनि कानन बिपुल, सहित प्रीति अनुराग ७

१ गेरा ११००० हजारवर्ष.

पुहुमि सुहावन कानन चारू * खग मृग सब मिलि कराहिं विहारू
बैर न सुनिय रामके राजा * मिलि बिचराहिं बनसकलसमाजा
नानाग्रंथ स्मृति-समुदाई * गायन कराहिं रामप्रभुताई ॥
सारद कोटि सुरेश अहीशा * अगणित चतुरानन गौरीशा ॥
कबि कोबिद जहँलगि जगमाहीं * रामराजगुण बर्णि न जाहीं ॥
अमित शैल कज्जल मसि भूरी * जलनिधि पात्र सारता रूरी ॥
कौर लेखनी सुरतरुडारी[1] * सप्तदीप महिपत्र विचारी ॥
बाणी[2] हरि हर विधि[3] सुखदाई * सहस कलप सम लिखैं बनाई ॥

सो०-तदपि न पावहिं पार, रामराजकौतुक अमित
सुनु अब चरित अपार, खगपति जस आगे भयउ १

ताहि समय एक श्वान[4] पुकारी * पाहि पाहि प्रणतारातिहारी ॥
बिन अपराध कृपाल खरारी * हनेउँ मोहिं द्विज अति अब भारी
सुनि प्रभु दीन बचन दुखजाना * द्विजपर दूत पठय भगवाना ॥
आयउ विप्र तुरत तेहि काला * कहेउ बचन तब दीनदयाला ॥
हनेउ श्वान सो केहि अपराधा * सुनु सर्वज्ञ न कछु कृत बाधा ॥
क्रोधबिबश प्रभु बिनहिं बिचारी * नाथ प्रबल मैं याकहँ मारी ॥
कहहु दंड मुनि सकलसमाजा * विप्रअदंड देव रघुराजा ॥
उचित दंड जस देहुँ बनाई * कहहु श्वान तस मोहिं बुझाई ॥

दो०-मठपति याकहँ करहु प्रभु, मन भावन सुख ऐन ॥
तुरत मँगायउ पीत पट, गज कुंडल सुख दैन ॥८॥

पूजि चरण गज बिप्र चढ़ायो * दुंदुभि बाजत मठ सोइ आयो ॥
कहैं परस्पर सब नर नारी * देखहु श्वानदंड अति भारी ॥

१ कल्पवृक्षकी कलम. २ सरस्वती. ३ ब्रह्मा. ४ कुत्ता.

कीन्ह रंकते राव कृपाला * कवन चरित यह कहहु दयाला॥
बिनती अमित श्वान तब कीनी * उचित जासु फल सो प्रभु दीनी॥
तासु अनंद देखि नर नारी * कहहु दंडफल कृपा खरारी ॥
पूँछेहु श्वान कहै सोइ बाता * पूरुब सब प्रसंग सुखदाता ॥
काशी बिप्रबंश मम भयऊ * शिवसेवा सादर मन दयऊ ॥
हित ऋतुहोमकीन्हअतिप्रीती * घृत नख रहेउ नाथ सुन नीती ॥

दो॰ तप्तोदन भोजन करत, पाय गयेउँ सो भाग ॥
बिबिध योनि भरमत फिरेउँ, मिटत न सो अघदाग

राजसभा शिर नाय बहोरी * चला श्वान मन त्रास न थोरी
उठि मध्यान्ह कीन्ह रघुनंदन * पूजि पुरारि भक्तउरचंदन ॥
भोजन शयन जगतपति कीन्हा * निज निज धाम सबन पग दीना
रहेउ दिवस जब घटिका चारी * जुरी सभा सब आय खरारी॥
सुनि पुराण सब अनुजसमेता * संध्या भई दान शुभ देता ॥
सबहीं संध्याबंदन कीन्हा * भवन चले प्रभु आयसु दीन्हा
नित्यकोटिचरअवनिसिधावहिं * दिवस अंत सबखबरिसुनावहिं
पृथक २ सुनि चरबरबानी * बोल न एक सो सुनौ भवानी

छंद॰ कछु कहेउ नहिंतेहि पूछिसादरबचनबेगिनआवहीं
इक रजक पतिहिं कहत डारत व्यंगबाद सुनावहीं॥
सुनि बचन कृपानिधान चरके मध्य उर राखत भये
निशि स्वप्न देखतजगतपतिपुनिजागदारुणदुखभये

दो॰ बीती अवध प्रमान युग, कीन्ह बिचार कृपाल ॥
एक सहस पितुराज शुचि, करौं सत्य इहि काल १०

---

१ गरम भात. २ महादेव. ३ दूत. ४ धोबी.

त्यागहुँ जनकसुता वनमाहीं * राखहुँ श्रुतिपथ धर्म न जाहीं ॥
करि मन टेंक सियापहँ आये * सादर बोले बचन सुहाये ॥
निजछाया महि राखिबिनीता * रहहु जाय निजधाम पुनीता ॥
प्रभुपद बंदि गई नभ सोई * जीव चराचर लखा न कोई ॥
तासन प्रभु अस कहा बुझाई * मनभावत माँगहुँ सुखदाई ॥
नाथसाथ मुनिधाम बिहाई * आयउँ निजगृह मनसकुचाई ॥
सुनि त्रिय भूषण बसन सुहाये * पहिराये प्रभु जो मन भाये ॥
हँसि कह कृपानिकेत सकारे * पूजाहिं मन अभिलाष तुम्हारे ॥

दो०होत प्रात जब जगतपति, जागे रमानिवास ॥
याचकजन गावहिं मुदित, शोभा जगत प्रकास ॥११

भरत शेष रिपुदमन समेता * आये जहँ प्रभु कृपानिकेता ॥
कीन्ह प्रणाम माथ महि लाई * बोले नाहिं कछु श्रीरघुराई ॥
वदन बिलोकि सशंकित अंगा * श्रीहत देखि वपूँकर रंगा ॥
थर थर कंपत तीनहुँ भाई * जानि न जाय चरित रघुराई ॥
खैंचि श्वास ताकि कुसमय जानी * बोले गूढ़ मनोहर बानी ॥
बचन मोर हियधारि लघु भ्राता * लै बन जाब जानकी ताता ॥
सूखि सहमि सुनि बचनकराला * जरे गात उपजी उर ज्वाला ॥
हास कि सत्य कहाहिं रघुराई * असमंजस मन सुनु खगराई ॥

दो०भरत आदि व्याकुल अनुज, नहिं आवत कहि बैन
जोरि युगुल कर शत्रुहन, कहेउ नीर भरि नैन ॥१२॥

जगत जननि सिय सब जगजाना * जगत पिता प्रभु वेद बखाना ॥
कारण कवन जानकी त्यागी * मनक्रमवचन चरण अनुरागी ॥

१ लक्ष्मीनिवास. २ सुख. ३ देहका.

कहि तब वचन अनुजसमुझाये* नीरज नयन नीरभरि आये ॥
आयसु मम टारै जो ताता * रहै न प्राण तात मम गाता ॥
हरि इच्छा भावी बलवाना * तुम कहँ तात सर्व कल्याना ॥
मम यह वचन पालु लघुभाई * प्रात जानकिहि जाहुलिवाई ॥

सो०-सुनि प्रभुबचन कठोर, भरत जोरि कर कहेउतब
नाथ मोरिमति भोरि, सुन बिनीत सर्वज्ञ प्रभु॥ २ ॥

हंसवंश[1] जगमहँ विख्याता * दशरथ पिता कौशिला माता ॥
त्रिभुवनपति प्रभु सब जग जाना*गावहिं जासु सुयश श्रुति नाना॥
सत्य शक्ति तव प्रगट सुहाई * बर्णि न शकैं बेद अहिराई[2] ॥
शोभाखानि जनककीजाता[3] * रहित अमंगल मंगलदाता ॥
छाया जासु यती नित धरहीं *तुमहिं बिहायाछिनक नहिं जियहीं
जलबिन मीनकिजियहिकृपाला*होय कृषी बिन बारिदमाला[4] ॥
असतुमबिनाजियहिकिमिसीता * ज्ञानवंत अतिनिपुण बिनीता ॥
सुनि करुणामय वचन सप्रीती * कही भरत तुम सुंदर नीती ॥

दो०-तदपि नृपति चहिये सदा, राजनीति धन धर्म॥
प्रजापालहित शोच नहिं, बचन प्रीति सत्कर्म॥१३॥

दूतचरित जस सुनेउ सो कहेऊ*कुलकलंक यह दारुण भयेऊ ॥
तरणिवंश नृप अमित अपारा * एकते एक जान संसारा ॥
रघु दिलीप सूरज मनु जानू * सुयश भगीरथ बेद बखानू ॥
दशरथ बिदित दीख तुम नीके * बचन न दीन न लालच जीके
तेहिकुल रंचकें सुनत कलंकू * रहै जीव तब धर्म सशंकू ॥
सुनु सर्वज्ञ सकल अघहारी * रहित कलंक बिदेहकुमारी ॥

---

१ सूर्यवंश २ शेष. ३ जानकी. ४ मेघोंकी पांति. ५ जरासाभी.

बिधि हरि हर बैदेहि सुहाई * पावक अवटि कनकसम भाई॥
सो सुर नर मुनि स्वप्नेहुँ नाहीं * यह चरित्र जग कहि हर्षाहीं॥

दो०ते शठ रौरवनरकमहँ, कोटि कलपभर बास॥
रहहिं भोग तजि रोगबश, भोगहि निरयनिवास १४

रिसरुष देखि नैन बर तीछे * आयेउ भरत लषनके पीछे॥
सुनु सौमित्रि छाँडु हिय सोचू * जग भल कहै कहै किन पोचू॥
तजि आज्ञा प्रतिउत्तर करिहै * सो मम लघुभ्राता नहिं सुरिहै
अतिगह्वर बन जहाँ न कोई * छाँड़हु तात जानकिहिं सोई॥
प्रेरी मति कहि बचन उदासा * मरण ठानि करि चले निरासा॥
सुभग विमान सिया बैठाई * पट भोजन बहु धरे बनाई॥
अतिअनंद मग चली जानकी * अतिशय प्रियकरुणानिधानकी

दो०लषण सशोक निहार कर, सियचकित भइबाल
हृदय शोच नहिं कहिसकत, मणिबिनुव्याकुलव्याल

उतरि देवसरि[1] यान सुहावा * अतिउद्यान[2] देखि भय पावा॥
कारण अपर जान भयभीता * बोली बचन मनोहर सीता॥
देखियत नाहिं मुनिके कहुँ धामा * जात कहाँ पिय अनुज सकामा
खगमृगजीव विबिध हरि व्याला * करि[3] केहरि[4] वृक[5] बाघ मराला[6]॥
कोउ मुनि मिलै न आवतजाता * निकसत प्राण तात मम गाता॥
सियाबिकललखिमनहिं अहीशा * कीन्ह कहा बिधि हरि गौरीशा
मूर्छित रथते भइ विकरारा * भूमि गिरत तब आपु सँभारा॥
सिय विलोकि मनधरिज आना * तात बिना जल जात हैं प्राना॥

दो०धरणिसुता[7] व्याकुल बिकल, प्राण कंठगत जान

---

१ गंगा. २ बन. ३ हाथी. ४ सिंह. ५ भेडिया. ६ हंस. ७ सीता.

तजन चहँ तनु शेष तब, धृग धृग जीवन मान ॥ १६॥

अतिव्याकुल लक्ष्मणकहँ देखा * गगनगिरा तब भई विशेषा ॥
सुनु सौमित्रि जाहु सियत्यागी * जनकपुत्रिका जियहि सभागी
गगनगिरा सुनि धीरज कीना * हाथ जोरि परदक्षिण दीना ॥
लै रथ चरण वंदि सिय केरे * चले अवध उर त्रास घनेरे ॥
जागी सिया सकल दिशि देषा * नहिं रथ अश्व नहीं तहँ शेषा॥
रहे प्रथम दुख सहि ये प्राना * पुनि सोइ चाहत करन पयाना॥
करुणा करत बिपिन असि प्यारी * बाल्मीकि आये मुनि भारी ॥
पुत्री बालमीकि मुनि जाना * बन आवननिजचरित बखाना॥

**दो० मैं पुत्री मुनि जनककी, रामप्रिया जगजान॥
त्याग न जानौ हेतु कछु, विधि अतिहीबलवान॥१७॥**

देवर लखण इहां लै आये * हेतु न जानों सुनि मुनिराये ॥
सुनु सीता मिथिलापति मोरा * परमशिष्य सबविधि पितु तोरा॥
चिंता अब जनि जनककुमारी * भल हुइ तोहिं शेषहितकारी ॥
सादर परमकुटी सिय आनी * पुत्री करि सज्जन मुनि जानी॥
बिबिधभांति मुनि धीरज दीना * सिय सुरसरि[1] तब मज्जन कीना॥
सुमिरि राममूरति उर राषी * दीने फल सुंदर मुनि भाषी ॥
सुनि बर कथा अनेक प्रसंगा * कहहिं सुनाहिं सियसहितविहंगा
ज्ञान अनेक प्रकारहिं छाया * लक्ष्मण अवध सुनहु जस आया

**छंद० आये जु लछिमन त्यागि सीतहिं बिकलनिजआश्रमगये
बहुभांतिरोवतमातुमनकाहिसियहिं दारुण दुख भये
सुनिसहमिमूर्छितमातुबानीबिकसाजिमि** फणि[2]मणिगये

१ गंगाजीमें. २ सर्प.

तिमिमातुबिलपतजातब्याकुलकौशिलासबदुखभये
निजज्ञान देव बुलाय मातहिं खोलि पटअंतर दये॥
हमजानितोहिंसुतमानि प्रभु जग भूल भ्रमफंदनभये
अब कृपा करि जगदीश स्वामि देहु भक्ति सुसामनी
जेहिं खोज मुनियोगीशतापस देहुअबिचल पावनी॥
बर कहे सोइ सोइ लहे मातन कारुणिक दिनकरतबै
मन शोध करि शुभयोग अगणित ज्ञानभे सादर सबै
दोहा-योग अग्नि तनु भस्म करि, सकल गई पतिधाम
भरत शत्रुसूदन लषण, शोकभवन श्रीराम ॥१८॥

विधिवत् कर्म सकलश्रुतिगाये * प्रभुसन गुरु सादर करवाये ॥
दीन दान तहँ कोटि प्रकारा * को अस जग कबि बर्णै पारा ॥
धेनु वसन मणि हाटक हीरा * गज गजमोतिन कोटिन चीरा
रथ सुख बाजि भूमि चक्रेकरी * रंकहुँ धनदबड़ाई घेरी ॥
बेद पढहिं द्विज देहिं अशीसा * चिरंजीव दशरथसुत ईशा ॥
राम दान दै सबविधि पोखे * भये निवृत्त काज करि चोखे॥
गृह द्विज याचक सकल सिधाये * अमितप्रकार राम सुख पाये ॥
बिप्रदंड ता*पसवध कीन्हा * सुरपुरवास मातुकहँ दीन्हा ॥

* एक समय एक ब्राह्मणका पुत्र मरगया[१] तब उसने वह पुत्र ला, द्वारपर रखदिया. ओर कहने लगा कि-राजावोंके अधर्मसे प्रजाको दुःख होता है. सो रामके पापसे मेरा पुत्र मरा. तब प्रभु पुष्पकविमानमें बैठ उसका कारण ढूंढने लगे सो दक्षिणदिशामें एक शम्बूकनामक शूद्र तप

१ परदा. २ सुवर्ण.

दो॰ अजय करी हरि यज्ञ पुनि, अश्वमेध जग जान॥
कलुषदलन संताप दहि, अंगदादि अभिमान॥१९॥

एक-बार गुरुगृह रघुराई * गे सँग सचिव अनुज खगराई॥
कीन्ह दंडवत महि शिर लाई * सादर हर्षि मिले मुनिराई॥
पूँछी कुशल देखि मृदु गाता * कुशल देखि पदपंकज ताता॥
गुरुपद बंदि द्विजन शिर नाई * बैठे गुरुअनुशासन पाई॥
कहत पुराण नवल इतिहासा * सुनत कृपानिधि परमहुलासा॥
भाइन अमित २ सुख दीन्हा * मुनितन चितै प्रेम अतिकीन्हा
दोउ कर जोरि सच्चिदानंदा * बोले बचन भानुकुलचंदा॥
नाथ सकल तव चरणप्रसादा * भइ जग विपुल मोरि मर्यादा

दो॰ समय समुझि करुणायतन, सादर बचन बहोर
प्रभु अंतर्यामी करहु, सकल मनोरथ मोर॥२०॥

तव प्रसाद जग यज्ञ अनेका * कीन्ही अमित एकते एका॥
नाथ सकल परिजन मन कहहीं * देखन अश्वमेध मख चहहीं॥
प्रगट भरत नहिं तुमहिं सुनावहिं * नित रावरमहिमोहिं जतावहिं॥

करता दीख पडा. उसे प्रभुने पूँछा कि तू कौन है ? और उलटेशिर क्यों तप करता है ? तब उसने कहा कि-मैं इसी देहसे स्वर्ग जाना चाहता हूं. तब प्रभुने उसे मार स्वर्गको पहुंचाया और पीछा आ, ब्राह्मणके पुत्रको जिलाया. वह ब्राह्मणका पुत्र केवल शूद्र तपस्या करता था उसी पापसे मरा था सो उस शूद्रके मरनेसे पीछा जीता होगया.

१ पापनाशक. २ घरमें.

जस कछु आयसु दीजिय नाथा * सो सब करौं नाय महि माथा
सुनि पुलके मुनिबचन सप्रीती * कस न कहहु तुम सुंदरनीती ॥
पुरवहिं निधि अभिलाष तुम्हारी * उठहु भरत अब करहु तयारी॥
सुनि मुनिबचन भरतरिपुदमनू * हर्षे सचिव लक्ष्मण गृह गमनू॥
बिबिधप्रकार चरण करि सेवा * चले भरतसँग सब मेहिदेवा॥

दो०सेवक पुरजन सचिव सब, सादर तुरत बुलाय
हाट बाट पुरद्वार गृह, रचहु बितान बनाय ॥ २१ ॥

चले सकल सेबक मुनिबानी * सुनि राउर हर्षी सब रानी ॥
रचहिं बितान अनेकप्रकारा * देखि अवध जे मतिविधिहारा
लागि सँवारन रथ गज बानी * सुनि मख गगंन दुंदुभी बाजी ॥
तुरत सचिब चर बहुरि बुलाये * कहि जय जीव माथ तिन नाये॥
जाहु मुनिनके थल बनमाहीं * सादर निवत देहु सबपाहीं ॥
उहाँ राम पूँछी मुनिदेवा * आज्ञा होय करौं सोइ सेवा ॥
प्रभुमनकी गति मुनिवर जानी * बोले अतिसनेह मृदु बानी ॥
पठवहु दूत जनकपुर आजू * आवहिं जनक समेतसमाजू ॥

दो०सुनहु राम रघुवंशमणि, निवतहुसकलरजाति
वरुण कुबेर इन्द्र यम, पुनि मुनिवर सबज्ञाति ॥२२॥

गुरुसमेत प्रभु जब गृह आये * रामसखा सब बोलि पठाये ॥
जाम्बवंत सुग्रीव बिभीषण * नलअरुनीलद्विविदकुलभूषण॥
आये जहाँ सब राम कृपाला * वरुण कुबेर इन्द्र यम काला॥
चढ़ि बिमान सुरत्रिया सुहाई * करत गान कलपिकाहिं लजाई
आवहिं मुनिजनयूथ घनेरे * देहिं कृपानिधि सुंदर डेरे ॥

१ ब्राह्मण.

शशि रबिहरिहरबिधिसनकादी * आये सुर जे परमअनादी ॥
विश्वामित्र–संग मुनि–झारी * सहससात ऋषि इच्छाचारी ॥

दो०भृगु अंगिरा पराशर, नारद व्यास अगस्त्य ॥
आये यूथप मुनि सकल, देव समस्त पुलस्त्य॥२३

मखअस्थल अतिदीख सुहावा * नानाभांति नयन सुख पावा ॥
मिथिलापुर जे दूत सिधाये * देखि नगरवासिन सुख पाये ॥
द्वारपाल तब खबर जनाई * अवधनगर नृप पाती आई ॥
सुनि बिदेह सहसा उठि धाये * तब मन पुलकि नयन जलछाये
भयेउ भूपमन आनँद जेता * कहि न सकै शारद[१] अहि[२] तेता॥
शिथिल अंग नृप द्वारहिं आये * देखि दूत अतिशय सुख पाये॥
कहहु कुशल रघुपति सब भाई * पाती दे सब कथा सुनाई ॥
हृदय राखि पुनि नयन न लाई * गदगद कंठ न कछु कहि जाई ॥

दो०भूपमोद तेहि अवसर, को बर्णै मतिधीर ॥
तुलसी भवन उछाह बड, जयजयशब्द गँभीर ॥२४॥

बाँचत हर्ष न हृदय समाता * चरबर[३] बोलि कही सब बाता॥
नगर गाँव पुर मंगल साजे * अमित अपार बाजने बाजे ॥
सचिव बोलि नृप पाती दीनी * उठि करजोरिबिनयसह लीनी
पढ़ी सचिव अतिप्रेम अनंदा * सुमिरि राम कोशलपुरचंदा ॥
घर घर खबर व्यापि छिनमांहीं * मंगलकलश रचे सबकाहीं ॥
भयो अनंद न जाय बखानी * कीन्हे बिबुधवश्य नृप दानी॥
धरि नरदेह अमित नभवासी[४] * आये भूपनगर सुखरासी ॥

१ सरस्वती. २ शेष. ३ श्रेष्ठदूत. ४ देवता.

कहे बचन नृपके हितकारी * चलहि अवध सबकाज बिसा॰ ७३७

दो॰ कहि कहि सब सादर चले, बाहन भले बनाय ॥ जू ॥
जोरि युगल कर मुकुटमणि, अस्तुति करत सुनाय ॥ [illegible] ॥
छंद पद सुमिरि करुणाकंद रघुकुलचंद दशरथ नायकं॥ [illegible]ता॥
श्रीसहित अनुज वशिष्ठपदरज वसहुमम उरलायकं [illegible]लाई
अंभोज[1]नयन विशाल लाल कृपाल दशरथनंदनं ॥
शतकोटिमार[2]उदार शोभा अतुल बल महिमंडनं ॥
सज तूण कर शुभ शर शरासन कपटमृगमदगंजनं॥
मम हृदय बास निबास करु करुणायतन करुणामयं
महिमा न कोऊ जान सुन हरि[3]यान ज्ञान विशालयं ॥
सोइ हेतु करि वृषकेतु प्रभु खरदूषणादिनिकंदनं ॥
नर अंध पामर कामबश मति भजहिं तजि रघुनंदनं॥
तव ललित लीला वसहिं जेहि उरतासु गुणधरणीधरं
कहि सकैं न शारद वेद नारद जान किमि नर बापुरं॥
सोइ आनि तुलसीदासनिजउरशरण अबकाकीगहौं
सुख पाय मन बच काय नाहिं अब दूसरी स्वप्ने लहौं ॥
सब कुशलपूँछि महीप सादर बिहँसि उरआनंद छयो
मनभाय पाय मनाय बिधिपद दान बहुबिप्रन दयो ॥
गज बाजि भूषण भूमि भूसुर वस्तु नाना को गनै ॥
यककार लै नृपद्वार दीनी कहहु कबि कैसे भनै ॥ ७ ॥

१ कमलनयन. २ सौकरोड़ कामदेवकीसी उत्तम. ३ गरुड़

दो०पूजेउ बिबिधप्रकार नृप, सादर दूत हँकारि*॥
गुरुगृह गवने मुदितमन, पाय पदारथ चारि ॥२६॥

सकल कथा महिपाल सुनाई * शतानन्द आनन्द–अघाई ॥
बहहु नृपति मख देखिय जाई * साजहु जाय सकल कटकाई॥
करि बिनती नृप मंदिर आये * सादर सेवक सकल बुलाये ॥
सजहु सेन चतुरंग सुहाई * भवन गये सबहिन शिर नाई ॥
पातीसहित राजगृह आये * बाँचि नृपतिपुनिसकल सुनाये॥
अनँद सब रनिवास बुलाई * देहिं दान महि यान अघाई ॥
बहुत अशीस याचकन दीने * आदर बोलि युगल चर लीने॥
विलग बिलग सब पूँछहिं बामा * सुनहिं रामके पूरण कामा ॥

छं०शुभकामपूरण रामकेसुनिबिपुल बाजनबाजहीं
पुर द्वार घर घर बार राखे सेन भट सब साजहीं ॥
दस सहस सिंधुर षष्टशत रथ बाजि पदचर को गनै
जगमगत जीन जराव पाषर देखि कवि कैसे भनै ८
चढ़ि सूर प्रबल प्रबीण जे अस चलत सब सादर भये
सुखपालपरमबिशाल युग चढ़ि गुरुहिं लै आदरनये
महि डोलधसकत कमठअहिदल देखि अमित बिदेहको
नटयूथ चर बर अमित कहि, जग मूढ लेखा करतको

दो०नृपआगमन बिचारि प्रभु, सादर आये लेन ॥
मिले परस्पर प्रीति अति, चले सुथल थल देन२७

पुरवाहर सरयू शुचि तीरा * बस दीन हरि पितु रघुवीरा॥

१ पृथ्वी. २ दूत. ३ हाथी. ४ कच्छप.

सौंपि अनुजकहँ राम समाजू * आये प्रभु जहँ नृपमणि राजू ॥
मिलि पुनि नृपति निकट बैठारे * गद्गद हो नृप बचन उचारे ॥
वदन चूंबि निरखेउ सब गाता * आनँद उमँग न हृदय समाता॥
प्रभुविनती करि सबसेवकाई * सचिव भरत पुनि लीन बुलाई
नृप सेवक सब भरत सँभारी *सुनु खगपति जस कीन खरारी॥
आय गुरुहिं सादर शिर नाई * मनभावत बर आशिष पाई ॥
पुनि प्रभु सकल देवगण बंदे * अभिमत आशिष पाय अनंदे॥

दो० दशसहस्र मुनिगणसहित, आये प्रभु सुखधाम
बोले बचन बिनीत गुरु, मंत्र सुनहु मम राम॥२८॥

धर्म सकल जे वेद बखाने * संत पुराण लोक सब जाने ॥
विन तिय असफल होय खरारी * अब चहिये मिथिलेशकुमारी॥
सुनि मुनिबचन मौन प्रभु गहेऊ * सत्य असत्य न एकौ कहेऊ॥
मम प्रण बिरद जानि मुनिराया * रहै सुकृत उहि करु जो दाया
दोउ गुरु मिलि नारद सनकादी * बचन कहे सुनु परमअनादी ॥
कनकजटित मणि सुंदर बाला * तैसिय रूप सुशील बिशाला॥
अंग अंग सब भूषण साजें * तासु रूप लखि रतिपति[1] लाजें
सहेसा[2] लखि न सकहिं नरनारी * सीय देखि सब अचरज भारी॥

दो० तेहि अवसर शोभा अधिक, को कवि वर्णै पार ॥
जगदातार कृपालु प्रभु, कीने चरित अपार॥ २९ ॥

मणिनखचित सुंदर मृगछाला * सीयसहित आसीन[3] कृपाला ॥
सुर नर मुनि सबके मनमाहीं * करि प्रणाम मन अतिहर्षाहीं॥

---

१ कामदेव. २ इकाकी. ३ बैठे.

भीर अपार लखी गुरु ज्ञानी * शिल्पि बुलाय सकल सनमानी॥
कहा जाय आलय सब करहू * जस कछु चाहिय सो अनुसरहू॥
सुनि रजाय रघुपतिरुख पाई * रचे कोटिगृह बिधिहिं लजाई॥
सुरसुरभी[1] सुरतरु[2] सुखखानी * शारद शेष न कहहिं बखानी॥
पुर गृह बाहर गली अटारी * भरि सुगंध सब सकल सँवारी॥
रहे तहाँ दिशिपाल अनेका * जे परमारथनिपुण बिबेका॥

छं० जे निपुण परमबिबेक तिनकहँ भरत लखि राखेतहीं
निजभाग्यप्रबल सराहि निंदहिं धनद[3]की पदवी कहीं
आये त्रिलोकी नाग खग सुर असुर[4] जो बिधिने रचे॥
सनमानि सकल सनेह सादर रामसन कोउ ना बचे

दो० बाण[5]सहस वरवीर युग, सुन्दर परमप्रवीन॥
जानहिं श्रुतिकर मत सकल, रहे मख संग अधीन३०

मकरमास[6] द्युति धवल सुहाई * मखमंडल बैठे रघुराई॥
तब बोले गुरु बचन सुहाया * आनहु बाजि जो बेद बताया
लक्ष्मण सुनि गुरुबचन अनंदे * बार बार पदपंकज बन्दे॥
हयशाला सादर चलि आये * बिबिध बिभूषण तेहि पहिराये
श्वेतबरण सुंदर श्रुति कारे * हरि हय चितव मनोज सँवारे॥
जीन जराव न जाय बखाना * चढ़ि रथ रबि आवत जगजाना
माथे मोरपक्ष मणि लागे * सोइ नभ नखत देखि अनुरागे॥
सेवक चारु पाटमय डोरी * दामिन दमक निकट अतिथोरी

दो० षट्सहस दश बीरबर, रामानुज रणधीर॥

---

१ कामधेनु. २ कल्पवृक्ष. ३ कुबेरकी. ४ दैत्य. ५ पांचहजार ६ माघ.

हरिप्रसादसुत शोभते, ब्रजवल्लभ शिरताज ॥
रामभद्र-आशीसते, दिन दिन सुंदरसाज ॥ ४ ॥
गौड़ सलेमाबादके, हरिप्रसादके बैन ॥
शोध्यो श्रीरघुवंशने, श्रीसुमेरुपुरपैन ॥ ५ ॥

गूढार्थचिंतामणि.

१ विद्या-ब्रह्मज्ञान १, रसायन २, श्रुतिकथा ३, वैद्यक ४, ज्योतिष ५, व्याकरण ६, धनुर्धरत्व ७, जलतरङ्ग अर्थात् पानीमें तैरना ८, संगीत ९, नाटक १०, अश्वारोहण अर्थात् घोडेपर चढ़ना ११ कोकशास्त्र १२, चोरी १३ और चतुरता १४,

२ वेद-१ ऋग्वेद (शाखा ८२२), २, यजुर्वेद (शाखा ८६), ३ सामदेव (शाखा १०००), और ४ अथर्ववेद (शाखा९).

३ उपवेद-ऋग्वेदका आयुर्वेद (वैद्यक) १, यजुर्वेदका धनुर्वेद (शस्त्रविद्या) सामवेदका गांधर्व (गानविद्या) ३, और अथर्वका स्थापत्य (शिलपविद्या)४.

४ वेदांग-शिक्षा १, कल्प २, व्याकरण ३ निरुक्त ४, छंद ५, और ज्योतिष ६. शिक्षामें वेदोच्चारबर्णन १ कल्पमें कर्मकरनेकी रीतिवर्णन, २ व्याकरणमें शव्दासिद्धि और शुद्धताका वर्णन ३, निरुक्तमें वेदके कठिन शब्दोंका अर्थ लिखा है ४, छंदमें अक्षर और मात्राके वृत्तोंका वर्णन ५, और ज्योतिषमें गणितादिवर्णन है ६.

५ पुराण-१ ब्रह्मपुराण १००००, १ पद्मपुराण ५५००० ३ विष्णुपुराण २३०००, ४ शिवपुराण २४०००, ५ श्रीमद्भागवत १८०००, ६, नारदपुराण २५०००, ७ मार्कंडेयपुराण ९०००, ८ अग्निपुराण १५४००, ९ भविष्यपुराण १४५००, १० ब्रह्मवैवर्तपुराण,

१८०००, ११ लिङ्गपुराण ११०००, १२ वाराहपुराण २४०००, १३ स्कंदपुराण ८१०००, १४ वामनपुराण १००००, १७ गरुडपुराण १९००० और १८ ब्रह्माण्डपुराण १२४००.

६ **शास्त्र**-छः ६ हैं. सांख्य १, योग २, वेदांत ३, मीमांसा ४, न्याय ५ और वैशेषिक ६.

७ **विद्या**—१ परमेश्वरकी ज्ञानशक्ति.

८ **अविद्या**—१ परमेश्वरकी मोहशक्ति.

९ **पंचमहायज्ञ**—वेदपाठ १ देवऋषिपितरोंका तर्पण २, होम. ३, बलिवैश्वदेव ४ और आ..थिपूजन ५.

१० **सप्तर्षि**-वसिष्ठ १, अत्रि २, कश्यप, ३ विश्वामित्र ४, भरद्वाज ५, जमदग्नि ६ और गौतम ७.

११ **चतुर्वर्ग**—धर्म १, अर्थ २, काम ३ और मोक्ष ४.

१२ **षट्रिपु**-काम १, क्रोध २, लोभ ३ मोह, ४ मद, ५ और मत्सर. ६

१३ **षट्रस**--कटु १, तीक्ष्ण २, कषाय ३, अम्ल ४, लवण ५, मधुर ६.

१४ **तीन इषणा**—लोकषणा १, वित्तेषणा, २, अत्येषणा ३.

१५ **त्रिविधश्रोता**—मुक्त १, मुमुक्ष २, विषयी ३,

१६ **सप्तावरण**—जल १, पवन २, अग्नि ३, आकाश ४, ..र ५, महत्तत्व, ६, प्रकृति ७.

१७ **गुरुतीन**-माता १, पिता २ और आचार्य ३.

१८ **अग्नित्रय**—दक्षिणाग्नि १, गार्हपत्य २ और आहवनीय ३.

१९ **चारवर्ण**—ब्राह्मण १, क्षत्रिय २, वैश्य ३ और शूद्र ४.

२० चारआश्रम—ब्रह्मचर्य्य १, गार्हस्थ २, वानप्रस्थ ३, व संन्यास ४.

२१ नवधा भक्ति—श्रवण १, कीर्तन २, स्मरण ३, चरणसेवा ४, अर्चन ५, वंदन ६, आत्मनिवेदन ७, दासंपन ८, और सख्य ९,

२२ अष्टसिद्धि-अणिमा १, महिमा २, लघिमा ३, गरिमा ४, प्राप्ति ५, प्राकाम्य ६, ईशित्व ७ और वशित्व ८.

२३ तत्त्व—पृथ्वी १, जल २ अग्नि ३, वायु ४ व आकाश ५.

२४ त्रिगुण—सतोगुण १ रजोगुण २ और तमोगुण ३.

२५ चतुर्गुण—राजाके गुण चार हैं. साम १, दान २, दण्ड ३, व भेद ४.

२६ योनि—चौरासीलाख ८४ हैं. जलचर नवलाख ९, मनुष्य चारलाख ४, स्थावर सत्ताइस लाख २७, कृमि गेरा लाख ११, पक्षी दशलाख १०, और चौपाय तेइस लाख २३.

२७ अवस्था—४ चार हैं. जाग्रत् १, स्वप्न, २ सुषुप्ति ३ और तुरीया ४, जाग्रत्का विभु विश्व, स्वप्नका तैजस, सुषुप्तिका प्राज्ञ, तुरीयाका ब्रह्म.

२८ आकर—जरायुज--१, अंडज—२, स्वेदज ३, उद्भिज्ज ४.

२९ युग—सत्ययुग १, त्रेतायुग २, द्वापरयुग ३, और कलियुग ४

३० कल्प—चारयुगोंकी १ चौकडी होती है और हजार चौकडीका एक कल्प.

३१ तीन अवस्था—बालक १, युवा २ और वृद्ध ३.

३२ लोक—तल १, अतल २, वितल ३, सुतल ४, तलातल ५, रसातल ६ व पाताल ७, भूर्लोक ८ भुवर्लोक ९, स्वर्गलोक

१०, महर्लोक ११, जनलोक १२, तपोलोक, १३ औरसत्यलोक.

३३ दिक्पाल–पूर्वके इन्द्र, दक्षिणके यम, पश्चिमके बरुण, उत्तरके कुबेर, आग्नेयके, अग्नि, नैर्ऋत्य-बायव्यके बायु, और ईशान्यके महादेव पालक है.

३४ त्रिताप–अध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक.

३५ त्रिविधकर्म–संचित, प्रारब्ध व क्रियमाण.

३६ त्रिदेव–ब्रह्मा, विष्णु और महेश.

३७ ऋतु–चैत्र बैशाख बसंत, ज्येष्ठ आषाढ ग्रीष्म, श्रावण भांद्रपद बर्षा, क्वार कार्तिक शरद, मार्गशीर्ष पौष हेमंत, और माघ फाल्गुन शिशिर.

३८ राम–परशुराम, रामचंद्र और बलराम.

३९ त्रिबिधसमीर–शीतल, मन्द व सुगन्ध.

४० चतुरंगिणीसेना–जिस सेनाके चार अंग हैं. वह; हाथी, रथ, प्यादल और घोडा.

४१ आभरण–नुपुर, किंकिणी, हार, चूडी, मुँदरी, कंकण बाजूबंद, कंठश्री, बेसर, बिरिया, टीका, व सिरफूल.

४२ शृंगार–अंगशुचि, मंजन निर्मल वस्त्र पहरना, पावोंमें यावक लगाना, मांगमें सिंदूर लगाना, भालमें तिलक, चिबुकमें तिल बनाना, मेंहदी लगाना, भूषण पुष्प व सुगंध लगाना, मुखराग, अधरराग, अरगजा अंगमें लगाना, दांत [illegible]ना, और काजल लगाना.

४३ कला–गीत २, वाद्य २, नृत्य ३, नाट्य४, आलेख्य५, विशेषकच्छेद्य ६, तंडुलकुसुमबलिबिकार ७ पुष्पोंकी शय्या ८,

दांत कपड़े और शरीरका रँगना ९, मणिभूमिका कर्म १०, शयनरचना ११, जलका घात (जलका बजाना) १२, चित्रयोग १३, पुष्पगूंथन, १४ मुकुट बनाना १५, नेपथ्य-योग १६, कर्णपत्रभंग १७, सुगंधयुक्ति १८ भूषणयोजना १९, ऐन्द्रजाल २०, कौचुमारयोग २१, हाथकी फुर्ती २२, चित्र-शाक २३, ठंडाई रस राग (आसवआदिका बनाना) २४ दरजीका काम २५, सूत्रक्रीड़ा २६, बीणा डमरूआदि वाद्य २७, पहेली २८, प्रतिमाला २९, दुर्वाचकयोग ३०, पुस्तक-बाचन ३१, नाटककी आख्यायिकाका दर्शन ३२, काव्यसम-स्यापूरण ३३, पत्रिकाबेत्रबाणविकल्प ३४, तर्ककर्म ३५, बढ़-ईका काम ३६, वास्तुविद्या (घर बनाना) ३७, रूपारत्नप-रीक्षा ३८, धातुबाद ३९, मणिरागज्ञान ४०, खानकाज्ञान ४१, वृक्षके आयुर्वेदका योग ४२, मेढा कुक्कट लावक आदि पक्षीके लड़ानेकी रीति ४३, तोता मैनाको बोलना ४४, उत्सादन ४५, केशमार्जन ४६, अक्षरमुष्टिका कथन ४७, म्लेच्छितकुतर्कका विकल्प ४८, देशभाषाज्ञान ४९, पुष्पोंकी गाडी बनानेका ज्ञान ५०, यंत्रमातृका धारणमातृका ५१. संवाच्य ५२, मानसी काव्यक्रिया ५३, अभिधानकोश ५४, छंदज्ञान ५५, क्रिया-विकल्प ५६, छलितयोग ५७, बस्त्रगोपन ५८, जुआंविशेष ५९ आकर्ष (खींचना) ६०, बालक्रीडन ६१, वैनायकोंकी विद्या-ज्ञान ६२, वैजयिकोंकी विद्याका ज्ञान ६३ और वैतालिकोंव विद्याका ज्ञान ६४. ॥

४४ भक्त–आर्त १, जिज्ञासु २, अर्थार्थी ३ व विज्ञाननिवास ४.
४५ नवगुणब्राह्मणके–शम व समदर्शी १, दम २, तप ३, तितिक्षा ४, क्षांति ५, आर्जव ६, विज्ञान ७, आस्तिक्य ८ और ईश्वरमें विश्वास ९.

अक्षौहिणी संख्या ॥

नाम	रथ	गज	घोडे	प्यादे	जोड
पत्ति	१	१	३	५	१०
सेनामुख	३	३	९	१५	३०
गुल्म	९	९	२७	४५	९०
[illegible]	२७	२७	८१	१३५	२७०
वाहिनी	८१	८१	२४३	४०५	८१०
पृतना	२४३	२४३	७२९	१२१५	२४३०
चमू	७२९	७२९	२१८७	३६४५	७२९०
[illegible]निकि	२१८७	२१८७	६५६१	१०९३५	२१८७०
[illegible]क्षौहि.	२१८७०	२१८७०	६५६१०	१०९३५०	२१८७००

जो जन जहाँते आयहू, तहँ तहँ करहु पयान॥ १ ॥
दो०मानयुक्त मानस सुखद, शंकारहित उदार ॥
बोधरहित निजमोहबश, शंका करत सुधार ॥ १ ॥
मानस मानअनेकयुत, मानीमनगम नाहिं ॥
मम साहस टिप्पण बिषम, क्षमब साधु महिमाहिं ॥
निपट अबुध जानै कहा, बुधजनबचनबिलास ॥
कबहुँ भेक नाहिं जानहीं, अमल कमलकी बास ॥३॥
दोषहिको उमहैं गहैं, गुण न गहैं खललोक ॥
पियै रुधिर पय ना पियै, लगी पयोधर जोंक ॥ ४ ॥

इन्द्रवजा.

निध्यब्धिगोभूमितविक्रमाब्दे ॥
भाद्रेसिते सौम्यदिने दशम्याम् ॥
विनिर्मिता टिप्पणिका विशाला ॥
श्रीरामभद्रेण विदांवरेण ॥ १ ॥

सम्वत् १९४९

दो०परमरम्य मरुदेशमहँ, ग्राम सलेमाबाद ॥
जन्मभूमि जाकी लसै, चहुँदिशि सदा अवाद ॥ १॥
सो०द्विजकुलजाती गौड, बिबिधकर्ममर्मज्ञ भल ॥
[illegible]ायणकहँ छापि, जाहिर कियो प्रशस्तदल ॥
दो[illegible]प्रभुपदपकजरजनिरत, धर्मधुरंधर धीर ॥
जो[illegible]प्रसाद भगिरत्थपै, करौ कृपा रघुबीर ॥ २ ॥
[illegible]रप्रसाद भागीरथी, ब्राह्मण गौड प्रसिद्ध ॥
[illegible]मायण यहि ग्रंथको, छाप्यो टाइपाबद्धं ॥ ३ ॥

अथ आरती श्रीरामायणजीकी ॥

आरति श्रीरामायणजीकी * कीरति कलित ललित सियपीकी
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद * बाल्मीकि विज्ञानविशारद ॥
शुक सनकादि शेष अरु शारद * बर्णिपवनसुतकीरातिनीकी १ आ.
सन्तत गावत शंभु भवानी * औ घटसंभव मुनिवर ज्ञानी ॥
व्यासआदि कविपुंग बखानि * काग भुशुंडि गरुडके हियकी २
चारिउ बेद पुराण अष्टदश * छइउ शास्त्र सब ग्रंथनिकोरस
तनु मन धन सन्तनको सर्बस * सारअंशसंमतसबहीकी ३ आ.
कलिमलहरणि विषयरसफीकी * सुभग शिंगर मुक्तियुवतीकी ॥
हरणि रोम भवभूरि अमीकी * तातमातसबबिधितुलसीकी ४ आ.

श्लो० यः पृथ्वीभरवारणाय दिविजैः संप्रार्थितश्चिन्मयः
संजातः पृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽव्ययः ॥
निश्चक्रं हतराक्षसः पुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यंस्थिराम् ॥
कीर्तिं पापहरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे १
यत्पूर्वं प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमम् ॥
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्तोतु रामायणम् ॥
मत्वा तद्रघुनाथनामनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये ॥
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् २
पुण्यं पापहरं सदासुखकरं विज्ञानभक्तिप्रदम्
मायामोहभवापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम्
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहंति ये
ते संसारपतंगघोरकिरणैर्दह्यन्ति नो मानवाः ॥३
दो०कथाबिसर्जन होतिहै, सुनहु बीर हनुमान

श्यामकर्ण आयो सुघर, जहाँ राम रघुवीर ॥३१॥
पूजेउ हय प्रभु जग जयहेतू * जस कछु कहा गाधिकुलकेतू
दीन विविधविधि दान अनेका * लिखा पत्र सोइ करि अभिषेका
एक-वीर कोशलपुर--माहीं * अरि[2]दलदलन सुरेश[3] सकाहीं ॥
जेहि बल होय गहै सोइ बाजी * देहु दंड बन जाहु कि भाजी॥
लिखि बाँधेउ हयशीश सँवारी * तेहि सुनि पुनि आये मुनिचारी
भार्गवआदि सकलमुनिसंगा * आये जहँ कुलकमलपतंगा ॥
कथा सकल लवणासुरकेरी * मुनिन त्रास दीने जिनघेरी ॥
सुनिऋषिबचननयनजलछाये * बिहँसि राम निजत्रोंण[4] मँगाये॥
दो०-दीनो रिपुसूदनहिं सोइ, बाणअमोघ कराल ॥
मंत्र मोर पढि ताहि हति, जीतहु सकल भुवाल॥
बहुरि विभीषण राम बुलाये * सादर आय माथ तिन नाये ॥
लवणासुरके चरित अपारा * पूँछे दिनमणि--वंश--उदारा ॥
करयुग जोरि निशाचरनाहा * सत्य कहूँ प्रभुसन अवगाहा॥
भगिनि विमात्र नाथ मम सोई * कुंभीनशी नाम तेहि होई ॥
मधु दानवकहँ रावण दीनी * बहुविनती करि तेहिं तब लीनी
तनय तासु लवणासुर भयेऊ * शिवसेवा सादर तिन कियेऊ॥
अगम तासु तप शंकर जाना * दीन शूल सुनु कृपानिधाना ॥
जेहि कर रहे अस्त्र मन भारी * चौदह भुवन जीत कर डारी॥
दो०-तेहिबल प्रभु सो नहिं गनै, अमर दनुज नरनाग
जीत सकल बस कीन्हेसि, हठ करि पाछे लाग ॥३३॥

---

१ घोडा २ शत्रुसमूहके नाशक. ३ इन्द्र. ४ अपना तरकस.

तासु चरित सुनि मनमुसकाने * रिपुहँता बल दै सन्माने ॥
सेन संग चतुरंग बनाई * रहे साथ दोउ तनय सुहाई ॥
सुनि प्रभुवचन निसान अपारा * तीन सहस्र हने इकबारा ॥
धसि गइ बसुधा[२] कुंजर गाजे * दश सहस्र रथ उपमा लाजे ॥
पूरेउ शंख चला दल साजी * अमित अपार दुंदुभी बाजी ॥
पुरबाहर सब आनि सवारी * तनय युगल लखि परमसुखारी ॥
द्वादश[३] दिन बीते मगमाहीं * पहुँचे जाय यमुनतटपाहीं ॥
दिनप्रति दान देहिं बहुभाँती * प्रभुपद पूजहिं दिन अरु राती

दो० रवितनयापद बंदि[४] कर, सादर पूजि पुरारि ॥
चले शत्रुसूदन सुमिरि, सीताराम खरारि ॥ ३४ ॥

चमू चपल अतिसुभट जुझारा * लवणासुरसँग सेन अपारा ॥
बिपुलनिशान हने तेहिकाला * सुनिनिशिचरपतिगर्वबिशाला
षट्सहस्र दश शूर जुझारा * लवणासुरसँग अनी अपारा ॥
सुभट प्रचारत गर्जत आवा * देखि कटक निजअतिसुखपावा
मारहु खाहु धरहु नृप बाँधहु * जेहि जय होय यत्न सो साधहु
असकहि सन्मुख फौज चलाई * कज्जल गिरि जनु आँधी आई ॥
मारू शब्द सुनत भट गाजहिं * बिपुल बाजने दुंदुभि बाजहिं ॥
निजप्रभुकहिजय जोरी जानी * हर्षि भिरे भट मन हठ ठानी ॥

छंद हठ ठानि प्रबल प्रबीन जेअसभिरेअतिरिपुप्रबलसे
इक मल्लयुद्ध कराहिं एकहिं हनत इक इक कर फँसे
शरशक्तितोमरशूल परशु कृपाण शूर चलावहीं ॥

१ बाजा. २ पृथ्वी. ३ बारा. ४ यमुनाजीके चरणोंकी वन्दना करके.

करचरणशिरहतितीक्ष्णधारणभूमिजानन पावहीं ॥
पटगिरतपुनिउठिभिरतधरुधरुकरहिंमायाअतिघनी
प्रभुतनयसुन्दरबीरबाँकेहनहिंरिपुनिशिचर अनी ॥
देखहिंपरस्परयुद्धकौतुकसुभटजयकहिकहिहने ॥
सजिकोटिरथसुरआय नभपथ[1]सुमनझर[2]जयजयभने
दो०विचलतअनी[3]बिलोकिनिज,लवणासुरबरिबंड
संग तनय मातंगभट, दूसर केतु प्रचण्ड ॥ ३५ ॥
प्रभु सुत जेठ सुबाहु बिशाला * भिरा मतंग होय जनु काला॥
यूथकेतु अरु केतु प्रचारी * लरहिं सुखेन न मानहिं हारी॥
लवणासुर रिपुहन बलभारी * कौतुक लरहिं प्रचारि प्रचारी
अनी समूह जानि निजजोरी * अस्त्र शस्त्र गहि भिरे बहोरी॥
बिषम युद्ध लखि देव सकाने * पूँछेउ सुरगुरु[4] कहि मुसकाने॥
जनिजिय हानिअमरपति करहू * रामप्रताप सुमिरि हिय धरहू॥
यूथकेतु करि कोप अपारा * हनि रिपुकेतु खंड महि डारा
इहाँ सुबाहु मतंगहिं मारी * कर पद काटि अवनिमहँ डारी
छंदमहिडारिकरपदशीसआतुरत्रोणशरप्रविशतभये
रविवंशके अवतंस दोनों समरमहँ राजत भये ॥
सुनि मरण युगसुत बिकल निशिचरभूमिबिनमारेगिरो
पुनि जागि शूल सँभारि प्रभुके समर सन्मुखसोभिरो
दोउ धीरबीर प्रताप निशिचरशैलदुहुँदिशि सरिचली
शिर बाहु चरण उडात नभपथ योगिनी आनंदभली

१ आकाशमार्गमें. २ फूलोंकी वृष्टि. ३ फौज. ४ बृहस्पतिसे.

कहुँ रुधिर मज्जन करहिं सादर गुहहिं नरशिरमालिका
आनंद भामिनि मुदितगावहिं गीत खेचरनायिका ॥
धुनि बढहिं शंख मृदंगकी सुनि शूर हर्ष बढावहीं ॥
गति लेत निरतत प्रेतत्रिय शिरमाल हरहिंचढावहीं
कहुँ करत पान प्रमान नर कहुँ भरतशोणित शाकिनी
सब मेद मांस अहार करमन मुदित डोलहिं डाकिनी
दो०मारे रथ बरबीर बहु, गिरे समर रणधीर ॥
छिनमहँ निशिचरबध निरखि, अंतरहे बलबीर ॥
करि छल प्रगटेसि बिबिधबरूथा * अस्त्र शस्त्र गहि सब सुरयूथा ॥
धरा धाय भुव शिव सनकादी * जे मुनि अपर कहे श्रुतिबादी
शक्ति शूल असि चर्म सुहाई * गदा परशु धनु बाण चलाई ॥
धरु धरु मारु मारु सुर करहीं * लरत न भट बिस्मित ह्वै रहहीं
निशिचर प्रबल भये रघुनाथा * केतिक बीर मले निजहाथा ॥
सेन बिकल लखि नारद आये * समाचार सब कहि समुझाये ॥
रिपुसूदन प्रभु बिशिख सँभारी * डारेउ समर सुमिरि त्रिपुरारी ॥
जिमि तम उदय तरणि गा सोई * समर अमर नहिं दीखै कोई ॥
दो०मंत्र प्रेरि चले कोटि शर, जहँ तहँ रहे नभछाय ॥
मनहुँ बलाहक प्रबल बहु, मारुत देखि बिलाय ॥ ३७ ॥
सुरसमाज कतहूँ नहिं देखा * चलेउ सुबाहु काल जनु बेषा ॥
बल सँभार महि शैल बिचारी * अस कहि गदा क्रोध उर मारी
सहि न सका सो तेज अपारा * मूर्छित धरणि परा बिकरारा ॥
निजपतिबिकल देखि भट भारी * धाये भट कर शस्त्रसँभारी ॥

१ स्त्री. २ खेचरोंकी स्त्री. ३ पिशाची. ४ रक्त. ५ तलवार. ६ ढाल.

कैटभ नाम बीर बलवाना * मूर्छित लवणासुर मन जाना॥
तीन सहस्र लिये रण गाढ़े * आनि सुबाहु सामुहे ठाढ़े ॥
कटुक बचन कहि छाँड़ेसि बाना * शूल सँभारि बहुरि संधाना ॥

सो० मारेसि हृदय सँभारि, गिरिजापति करुणा अयन
मूर्छित गिरा पुकारि, रामचन्द्र दिनकर तिलक ॥ ३ ॥

मूर्छित बंधु सुबाहु बिलोकी * भै रिस अमित रहै नाहिं रोकी
कठिण बाण करि क्रोध अपारा * छाँड़े बाण सहस यकबारा ॥
तासु बिकल करि अनुजसमीपा * आतुर आयो निजकुलदीपा॥
लागेउ शूल तासु उरमाहीं * परेउ अवनि मानहुँ पशुसाहीं॥
खैंचि शूल तनुबाहर कीना * रामनाम बर औषधि दीन्हा॥
उठि शुचि अंग अनुजके संगा * लीन्ह धनुष असि विहँसि निषंगा
आय समरमहँ सुभट प्रचारे * बाणन अमित देवअरि मारे ॥
मूर्छा गत कैटभ बलवाना * मधुसुत देखि बहुत पछिताना॥
लेकर गदा अनी बिचलाई * घेरि रहे निशिचर-समुदाई ॥
माँगेसि रथ तिहिं आनेउँ बाना * ताहि चढ़ाय उपाय विधाना॥

दो० करि उपाय रथ राखि तेहिं, भवन बैठि रघुबीर ॥
आय समर गर्जत भयउ, संग महाबल बीर ॥ ३८ ॥

जागेउ निशिचर देखि डगाई * पठै सुकेतुसंग निजभाई ॥
सुरबैरी जेहि काल सकाई * हारे बिबुध समर खगराई ॥
जानो कैटभ जाम्यकँ आवा * तात समर रुचि पूजन पावा॥
रावणरिपु-लघुभ्राता जानू * तनय तासु बलशीलनिधानू ॥
कटक अमर शूर हम मारे * बालक नृपति निरखि हिय हारे

१ महादेव. २ पृथ्वीपर. ३ तलवार. ४ दैत्य. ५ फौज. ६ हे गरुड! ७ यमराज.

रिपु लखि सुनिकर हृदयकलापू * पठवा मोहिं जान जिय आपू॥
रबितनयामहँ[2] सेनहिं डारो * तनयसमेत अनुज रिपु मारो॥

छंद॥ रिपुअनुजमारोसैनयमुनहिंडारिनरशिरकाटहू
तजिशोचसेनसँभारिचलिभटबेगिजोअरिपावहू ॥
दोमत्त गर्भबिशाल निश्चय आय रण गर्जत भये ॥
इत भूपकेतु सुबाहु शर धनु हाथ लै आतुर गये ॥
भटभिरनिजनिजजयतिकहिनिजजानिजोरीसमरकी
शिरकटतअरुकटचरणयोगिनिखातबालकबालकी
हठिगीधजंबुक[3]काकशोणित[4]पियहिंअतिसुखपावहीं
बहुदानदेवमनायमनमहँबिहँसिमंगलगावहीं ॥ ९॥

दो०भिरे समर साने सगर, फिरे साँकरे कूर ॥
लागे लोहे हठि रहे, समर धीर बर शूर ॥ ३९ ॥

शूर कहाय होत किन ठाढ़े * फिरे लजाय क्रोध करि गाढ़े ॥
भिरे प्रचारि सुभटसमुदाई * भयेउ युद्ध तहँ बर्णि न जाई ॥
वर्षहिं समर शूर शर कैसे * प्राविट[5]समय जलधिजल[6] जैसे ॥
हय खुर रेणु रही नभ छाई * भयो प्रदोष सुनहु खगराई ॥
समरहेतु रिपु प्रबल चलाये * प्रभुसमीप सुत सादर आये ॥
देखि तनयबल विपुलबिशाला * रिपुहन हर्ष मनहुँ सुरपाला॥
यातुधान बल बुद्धि गमाई * निजपुर गये पराजय पाई ॥
निशिचर सबमिलि मंत्र विचारी* होत प्रात पुनि लहै गुहारी ॥

दो०साजि बाजि गजबाहन, गह गह हने निशान ॥
आये समर सकोप तब, लवणासुर बलवान॥४०॥

१ शत्रु. २ यमुनामें. ३ सियार. ४ रक्त. ५ बर्षाकालमें ६ समुद्रका जल.

शिवहिं सुमिरि त्रैशूल विशाला * रिपुदल परेउ मनहुँ जयकाला॥
छिनकमाँझ मारे बहु योधा * चलेउसकोपि अनुजकरिक्रोधा
आय त्रिशूल हनेहुँ प्रभुछाती * घुर्मित गिरे धरणि रिपुघाती॥
मूर्छित देखि खड्ग लै धावा * निरखि सुबाहु क्रोध उर छावा
प्रबल गदा रथ सारथि भंजेउ * बिहँसि महाबल रिपुदल गंजेउ
रथबिहीन व्याकुल महिमाहीं * मूर्छित परेउ अवनि सुधि नाहीं
पुनि उठि बैठ सकोपि सुरारी * अस्त्र सँभार क्रोध कर धारी॥
बिस्मित बिकल देब सब जाने * रामबाण तब सादर सानि॥

दो०-सुमिर अवधपतिचरणयुग, छाँडे तीव्र नराच।
परेउ अवनि तनु भिन्न होय, व्याकुल बिकट पिशाच॥

तासु मरण सुनि सब सरयूथा * चढ़ि विमान नरदेववरूथा॥
बाजहिं दुंदुभि वर्षहिं फूला * आज नाथ बीते सब शूला[१]॥
देहि अशीस देव ध्वनि[२] करहीं * जपत मंत्रबर आशिष बरहीं[३]॥
यातुधानपति हतन बिलोकी * कैटभ जाम्यक नहिं रिस रोकी
कर किलकार गर्जी अतिघोरा * शिला एक मेली बहु जोरा॥
शर[४] हति शैल सुबाहु प्रचारी * काटी दुष्ट भुजा महि डारी॥
बदन पसारि ताकि तकि धावा * देखि सुबाहु[५] प्रबल यह आवा॥
आकर्षेउ धनु श्रवणप्रयंता[६] * अतिकराल शर छाँड़ि अनंता॥
काटेसि शिर तेहि भूप गिरावा * सुनासीर[७] आतुर चलि आवा॥
जोरि युगुल[८] कर अतिअनुरागे * बोलेउ बचन प्रेमरसपागे॥
हमहिं सहित सुर कीन्ह सनाथा * अस्तुतियोग जीब नहिं माथा॥
सुर सुरपति लखि प्रभुलघुभाई * कीन्ह प्रणाम माथ महि नाई॥

---

१ पीडा. २ शब्द. ३ देतेहैं. ४ बाण. ५ सुख. ६ कर्णपर्यंत. ७ इंद्र. ८ दोनों.

अस्तुतिबिनय सुकृत बहु कीनी * बार बार बहुआशिष दीनी ॥

दो० देवनसहित देवगुरु[1], आये जहँ मखधाम[2] ॥
समाचार सादर सकल, कहे सबनके नाम ॥४२॥

तहाँ जो नगर रचे अति रूरे * राखे तनय युगल बलपूरे ॥
मथुरा नाम जगत जस जाना * दूसर बिदित जो बेद बखाना ॥
जेठ तनय बलबुद्धि-बिशाला * नाम सुबाहु विदित महिपाला ॥
राखेउ यमुनातट बलपूरी * बिदित नगर पश्चिमदिशि दूरी॥
यूपकेतु पुनि सो थल पावा * राजनीति दोउ सुत समुझाबा ॥
सौंपि नगर बहु आशिष दीन्हा*नृपमणि गवन बिजयकहँकीन्हा ॥
चिरंजीव कहि हने निशाना[3] * दक्षिण अवर बली जब जाना ॥
सचिव तनय राखेउ निजसंगा* उतरे सब जलयमुनतरंगा ॥

दो० रबितनयापद[4] बंदि कर, चली अनी बहुरंग ॥
हर्षहिं सुरसमूह अति, देखि सेन चतुरंग ॥ ४३ ॥

वाल्मीकि-थल सेन-समेता * कानन सघन मुनीशनिकेता ॥
सियसुत युगल बीर बरिबंड़ा * भुजबल अमित दिनेशप्रचंडा
वीर बली हय देखेउ आई * पत्र बँधो शिर बाँच बनाई ॥
कटि कसि तूण हाथ धनुतीरा * समरहेतु बैठे बलबीरा ॥ *
शूर सहस्र साठ हयसाथा * आय गये जहँ रघुकुलनाथा ॥
तहँ तरुबाँधा बाजि विलोकी * बालक जानि सकल रिस रोकी
देहु तुरग घर जाहु सुहाये * धन्यमातु पितु जिनतुम जाये ॥
मागहु भीर समर चढ़ि भाई * क्षत्रियकुलहिं कलंक लगाई ॥

छं० जनि क्षत्रिकुलहिं कलंक लावहु समरशूर सुहावने

१ बृहस्पति. २ यज्ञशाला, ३ बाजा. ४ यमुनाके चरणोंका.

बलहीन तुरग प्रबीण छाँडे धराभट विन जानने ॥
सुनि बचन कठिन कठोर बालक जानि भटधावतभये
शर[1] तानि एकहि बाण लव हँसि हने तनु जर्जर किये
महि परे पुनि कछु भिरे योधा जाय रिपुहनसे कह्यो॥
मुनिबाल हति संग्राम सेनहिं बाजि लै रणमें रह्यो ॥
सुनि कोप कर अति शत्रुहंता[2] सैन लै धावत भयो ॥
रणमाँझ गाजन वीर बांकेबाल लखि लज्जित भयो१०
सो०:सुनि मुनिबालमराल, देहु अश्व[3] तजि कोपनिज
पूजि तुम्हें तिहु काल, करिय सुफल निज जन्मभर॥
कौन नाम नृप केहि पुर बासू * फिरहु बिपिनसँग सेन प्रकासू ॥
छाँड़ेउ बाँजि[3] हेतु केहि लागी * लिखेउ पत्र बाँधेउ हैय त्यागी ॥
नहिं तव तनु बल पौरुष भाई * छाँड़ि सपत्र बाँजि[3] गृह जाई ॥
सुनि रिपुहँन[2] कटुगिरा[4] लजाने * गहहु शस्त्र अस कहिमुसक्याने
हमहिं प्रचारत नृप बल भारी * परमहिं सिंह बजाये तारी ॥
असकहि धनुष बाण करलीना * मुनिबर विनयचरण चितदीना
मारेउ रथ सारथी तुरंगा[3] * कठिन बाण मारे सब अंगा ॥
करि मूर्छित सब कटक सँहारा * खाहिं मांस सब गीध करारा ॥
दो०एकहिं एक प्रचारि कर, हने सकल रणधीर ॥
आये तव रघुबीरपर[5], कायर करणी क्रूर ॥ ४४ ॥
पूँछेउ सकल भानुकुलनाथा * रिपुके सकल कहे गुणगाथा ॥
मुनिबालक सब समर सँहारा * रिपुहनआदि सकल महिड़ारा॥
ऋषिबालक सुनि बिकल खरारी *.सुचित होय पुनि कहा बिचारी

१ बाण. २ शत्रुघ्न. ३ घोडा. ४ बचन. ५ श्रीरामचंद्रजी.

लक्ष्मणसंग जाहु सब भाई * मुनिबालक बाँधहु बरिआई ॥
मारेउ जनि आनहु पुरमाहीं * ऋषिसुतबधव उचित बर नाहीं
चलेउ शेषसँग[2] सेन अपारा * आये तुरत समर जेहिं मारा ॥
समरभूमि देखेउ भट भाई * परेउ अवनि[3] जनु मिरगी आई॥
लै घर जीव जाहु मुनिबालक * दिनकरवंश देवद्विजपालक ॥
आँखिन ओट होहु अब ताता * आवत क्रोध चढत मम गाता

दो०सुनि लक्ष्मणके बैन बर, बिहँसे बालक बीर ॥
अनुज बिलोकत जात अब, जाहु महारणधीर ॥४५॥

अनुजबिलोकि बचन सुनि काना * धनुष चढाइ गये कर बाना ॥
वेष बिलोकि बालमुनिज्ञानी * निजकुल समुझि करै मनकानी[4]
निजसहाय शठ आन बुलाई * केवल तोहिं न हते भलाई ॥
सुनि कुश कठिन बाण संधाना * कंपी पुहुमि[5] शेष अकुलाना ॥
छूटे विशिख रहे नभ छाई * बाण भानुप्रतिबिंब छिपाई ॥
रिपुहिंप्रबललखि चलासकोपा * तीव्र बाण छाँडेउ रथ रोपा ॥
काटहिबिशिखबिशिखसनधाई * कौतुक करहिं बिबिध खगराई
झपटि गदा लक्ष्मणतोहिं मारी * गिरोभूमि कुश मूर्छित भारी ॥

दो०मूर्छित कुशहिं निहारि कर, धायो लवकरिशोर
आवतही शर उर हनेउ, गिरो न महि बल जोर ॥४६॥

मल्लयुद्ध दोउ भिरे प्रचारी * लरहिं सक्रोध न मानहिं हारी ॥
लरहिं उपाव बिपुल बल करहीं * मारहिं भिरहिंबिपुलसोइलरहीं॥
मुष्टिक एक बज्रसम मारी * बिकल शेष मन मानेउ हारी ॥
सुमिरि कोशलाधीश खरारी * मारेउ बाण बिकल लव डारी

१ जबरदास्ति. २ लक्ष्मणजीकेसाथ. ३ पृथ्वीपर. ४ लज्जा. ५ जमीन.

सुमिरि सीयमुनिचरण सुहाये * गत मूर्छा कुश आतुर आये॥
बिकल बिलोकिबंधु लघुजानी * चला बीर मन बहुत गलानी
लक्ष्मण देखि बीर बर आयो * धनुष बाण धर आगे धायो॥
शक्रजीतअरि[2] जेहि शर मारे * ते सब बालक काट निवारे॥

दो०रामानुज बिस्मितबिकल, देखिसकलआराति
सियात्याग उर शोच बहु, प्राण देउँ इहि भांति४७॥

कुशकारि क्रोध विशिख[3] सो लीने * मंत्र प्रेरि मुनिबर[4] जो दीने॥
नाक[5] रसातल[6] भूतलमाहीं * सो शर छूट बचै जग नाहीं॥
मोहनबाण जगत तेहि जानै * विष्णु महेश ब्रह्म जेहिं मानै॥
मारेउ ताकि शेषउरमाहीं * परेउ धरणितल सुधि कछुनाहीं
चली भागि सब अनी[7] अपारा * कोशलपुरमहँ परी पुकारा॥
करणी सकल युद्धकी बरणी *लक्ष्मण बिरथ परेउ जिमि धरणी
जेहि बिधि सकल कटक संहारा * निजलोचन हम नाथ निहारा॥
बय किशोर दोउ बाल अनूपा * तव प्रतिबिंब सुनहु सुरभूपा॥
काकपक्ष शिर धरे बनाई * बालक बीर बर्णि नाहिं जाई॥

दो०भरतजोरकरकहेउतव,बचनअमीबिलखाय॥
सीयशोकफलदीनबिधि, बोलेउ श्रीरघुराय ४८॥

अनुज समरमहँ तुम हिय हारे * साजहु हय रथ गज मतवारे॥
रहो यज्ञ रिपु देखा जाई * बालक रावलके दुखदाई॥
तीव्र बचन सुनि भरत लजाने * बहुतभांति रघुपति सन्माने॥
प्रथम सखा सब लेहु बुलाई * हनूमान अंगद समुदाई॥
जाम्बवंत कपिराज बिभीषण * द्विबिद मयद नील कुलभूषण॥

---

१ इन्द्रजितादि. २ शत्रु. ३ बाण. ४ वाल्मीकीने. ५ स्वर्ग. ६ पाताल. ७ फौज.

रिपुहिं मारके समर भगाई * तात अनुज दोउ आनहु जाई॥
माथ नाय सँग कटक विशाला * चलेउ भरत उपजी उर ज्वाला॥
शोणितसरिता समर बिलोकी * डरपे बीर आय रिस रोकी॥

दो॰ समर सीयसुत बीर दोउ, आय गये बलवान॥
देखि डरे कपि भालु सब, तब पूँछेउ हनुमान ४९

धन्य मातु पितु जेहि तुम जाये * पुरुषयुगल घर जाहु सुहाये॥
समरविमुख सुनि भट बिलखाना * कीन्ह क्रोध कह सुनु हनुमाना॥
नाहिं बल होय जाहु घर भाई * हतौं न देखु जानि कदराई॥
भाषेउ भरतबचन सुन काना * लेहु सँभारि बाल लघु बाना॥
कटकीटाइ कपि-भालु-समूहा * लीन्ह उपारि सकल तरुजूहा॥
एकहिं बार सकल मिलि मारा * सकल काटिलव तिलसम डारा
रिपुशर काटि निमिष इकमाहीं * यथा मनोरथ खल मिट जाहीं॥
करि बल क्रोध बाण फटकारे * मारेउ वीर भूमि गज डारे॥

छंद॰ गजबाजिघनेतेहिंभूपपरेतहँशोणितबीरबरूथभरे
लवतानिशरासनबाणभले रिपुसंगरबीरप्रचारदले
शरलागतभेरणघायलतेभवकैटभ हायल बायल ते
कहिझूमहिकुंजरपुंजपरेमहिलोटतश्रोणितभीरभरे
शरलागतघायलबीरगिरेझझके उठिकेतहँ धीरधरे
रणबीरबरूथ कपीश कटे गिरिसे रणभेदनखंडपटे॥
रणशोणितकीसरिताउमडीअतितीक्षणधारअपारखड़ी
तहँयोगिनिभूतपिशाचबनेभखपालहिंकंककरालघने
छंद॰ भखपालहिंकंककरालजहँतहँगीधमनप्रमुदितभये

१ रक्तकी नदी. २ उखारि. ३ वृक्षसमूह. ४ वीरोंके झूंड. ५ धन्वा. ६ संग्राममें.

तहँ प्रेतभूतसमाज सोहत ब्याहप्रति मंगल ठये ॥
जहँ डाकिनी मनमुदितडोलहिंशाकिनीशोणितभरी
दोउकरनिखैंचहिंकालिकाशिवप्रेतपतिकीरतिकरी
अंत्रावली[1] गहि खगलपेटहिं पियहिं शोणित आतुरे॥
गज बाजि[3] खैंचहिं भूत संगर प्रीतिशंकर चातुरे ॥
बैताल बीर कराल करवर करीकर कंकर धरे ॥
दै ताल रुधिर प्रबाह पूरण पान कर कहि हर हरे॥
रघुवंशसमर सराह दुहुँ दिशि करिहिंनिजमनभावने
तुलसी चरित्र पुनीत पावन करत जनु भय दावने ॥

दो०। बिषय युद्ध दोउ बंधु जे, जीतेउ कपि संग्राम ॥
आये पुनि तहँ नृप भरत, सुमिरि बिधाता वाम॥५०॥

कपि मारे घायल सब पावहिं * बाणत्रास मन अतिदुखछावहिं
जाम्बवंत कपिराज बुलाई * अंगद हनूमान सुखदाई ॥
सब मिलिसहित निशाचरराजा * धरि आनहु दोउ बालकभ्राजा
आय जुरे कपि भालु भवानी * जिनकछुप्रभुमहिमानहिं जानी
बोलेउ कुश मुनिबालकुमारा * तव बल विदित जान संसारा
पितुहिं मराय मातु पहेली * सकल लाज आयेउ तुम पेली
सो फल लेहु समरमहँ आजू * त्यागहु सकल कलंकसमाजू ॥
सुनत क्रोध अंगदउर छावा * गहि गिरि एक ताहि पर धावा

दो०। आवत शैल बिशाल लखि, तिलसम शरहतिकीन
अंगदगर्ब अपार अति, जस प्रभु उत्तर दीन ॥ ५१॥

तमकि ताकि कुश बाण चलावां * अंगद नील अकाश उड़ावा ॥

---

१ अंतोंकी माला. २ पक्षी. ३ घोड़े. ४ देव. ५ प्रतिकूल. ६ सुग्रीव.

आवत जानि पुहुमि कपिभारी * मारे बाण प्रचारि प्रचारी ॥
इत उत जान कतहुँ नहिं पावहिं * पवनपातजिमिमहिनहिंआवहिं
खन अकाश खन भूतलमाहीं * बोलेउ शरण शरण प्रभुपाहीं ॥
रहेउ गर्व मोहिं कृपानिधाना * अगजगनाथ न मैं पहिचाना॥
पाँच बाण बाँधेउ कपि दोऊ * दीन जानि त्यागेउ हँसि सोऊ॥
फिरे भरतके सन्मुख आई * दशा देखि कपि दिशा भुलाई॥
जाम्बवंत हनुमान कपीशा * धाये तरु गिरि ले बहु कीशा॥

दो०हँसे कुँवर बर देखिकपि, अनुजहिं कहाबुझाय
अजहुँ भरत जीतहु समर, भालुहिं कपिहिं लगाय५२

प्रभुसुत समर कीन्ह जश करणी * निगम शेष शारदा न बरणी ॥
चरित तासु सुनु शैलकुमारी * मारे समर शूर कपि भारी ॥
समरधीर दोउ बाल बिराजे * निरखिभालुकपिमनअतिलाजे
खैंचि धनुषगुणछाँडेउ सायक * कपिपतिआदिहने सबलायक॥
मूर्छित सेन परी महिमाहीं * बचो न कोउ कपि घायलजाहीं
परेउ मूर्छित तल भूतलमाहीं * अतिहिं बिकलतनुपातिमुहँमाहीं
दुखिहिदेखिकुशअतिहिरिसाना * चाप चढ़ाय बाण संधाना ॥
श्रवणप्रयंत खैंचि धनु बीरा * भरतहृदय मारे शत तीरा ॥

दो०समरभूमि सोवत भरत, लवहिं लीन्हउरलाय
सुमिरि मातुगुरुचरणयुग, रहे समर जय पाय॥५३॥

आये खबर लेन चर चारी * भरतसेन तिन सकल निहारी॥
शोणितसरिता देखि डराने * हय गज बहेजात रथ जाने ॥
देखेउ सरित भयंकर भारी * कठिन करालसुनहु उरगारी॥

१ पृथ्वीपर. २ स्थावरजंगमके पति. ३ सुग्रीव. ४ वेद. ५ सरस्वती.

बहुतक उछरि बूड़ि पुनि जाहीं * चरण मनहुँ कच्छपकी नाहीं ॥
अहि[1]नायक झष जंतु घनेरे * देखि दूरते तिर मन फेरे ॥
लहरितरंग वीर सब जाहीं * घायल परे तीन लपटाहीं ॥
फिरे दूत कोशलपुर आये * समाचार सब बर्णि सुनाये ॥
चरबरवचन सुनत दुख पावा * त्यागेउ मख[3] निजकटक बनावा
चले[2] सकोप कृपालु उदारा * आये प्रभु जहँ कटक सँहारा ॥
पुनि बर बालक देखि सुहाये * शर निवार प्रभु निकट बुलाये ॥

दो० पूँछेउ बाल बुलाय दोउ, कहहु मातपितुनाम ॥
देश नाम निज कहहु सब, जीते अतिसंग्राम ॥५४॥

गहहु शस्त्र जिन कहहु कहानी * पूँछेउ स्वर्गलगि अस जानी ॥
समर बात बहु अतिकदराई * छोड़ि शोच अब करहु लराई ॥
बंशनाम विन बूझे ताता * हनौं न बाण मनोहर-गाता ॥
माता सीय जनककी जाता * वाल्मीकि पालेउ मुनि त्राता ॥
पितावंश नाहिं जानिय आजू * कुश लव नाम सुनहू रघुराजू॥
सुनी कथा राखेउ उरमाहीं * बाल बिलोकि बधब भल नाहीं॥
आवत सुभटसमूह हमारे * लरि हैं तुमसन समर सुखारे ॥
अस कहि अंगद नील उठावा * जाम्बवंत कपिपतिहिं बुलावा ॥

छंद कपिराज अंगद जाम्बवंतहि बोलि निशिचरनायकं
हनुमान द्विबिद मयंद नीलहिं सुभट जे अतिलायकं
रणशूर हरि तनु पीर दारुण कहेउ हँसि रघुनंदनं॥
भरतादि रिपुहनसहित लक्ष्मण परे खलदलगंजनं॥
लंकेशआदिक सुभट मारे बीर जे महिमंडनं ॥

१ सर्प. २ हरकालाका बचन. ३ यज्ञ.

ते आजु बालक बिप्रसौं रणमाहिं डारे खंडनं ॥
कुलकानि अब निज मानि वानर शैल तरु बहु लै चले
पुनि एकसाथ प्रहार कीनो अतुल कपि योद्धा भले

दो०-सावधान धनुबाण लै, धायेउ लव बलवान ॥
सन्मुख चलेउ बिभीषणहिं, बोलेउ बहुत रिसान ५५

पितासमान बंधु बड़ तोरा * त्रिया तासु लै घर बरजोरा ॥
पुनि संबंधिहिं समर जुहाई * शत्रुहिं मिलेउ निपट कदराई ॥
पापी मातु कहेउ केउ बारा * सो पत्नी यह धर्म तुम्हारा ॥
बूड़ि मरहु सागरमहँ जाई * मरु गरु काटि अधम अन्याई ॥
समर भूमि सन्मुख मम आवा * लाज होत नाहिं गाल बजावा ॥
आँखिन आगेते टरि जाई * नाहिं तौ मौत निकट खल आई ॥
सुनि खिसियानगदा तेहिं लीनी * शर हति खंड खंड लव कीनी ॥
सप्त बाण मारे करि क्रोधा * डगमगान लागत शर योधा ॥

दो०-जानु टेक पुनि थिर रह्यो, मनमें करत कलाप ॥
तुरत कापि कपिराजकर, अंगद डरहिं बिलाप ५६

जो गिरि तरु कपि डारहिं आई * रजसम करि तेहि देहिं गिराई ॥
निजबाणन कपि घायल कीने * जो जेहि उचित तासु फल दीने ॥
रघुकुलकमल प्रचारत पाछे * बीर[1]धुरीण बने सब आछे ॥
अंगद हनूमान भट भारी * ते धाये तरु शैल उपारी ॥
डारि शैल दोउ भिरे रिसाई * खञ्जन भिरे बीर बरि आई ॥
कपिन कोप कर उर हति तेहीं * जिमि [2]खगमशक[3] चोट गजदेहीं
हति दोनो कपि भूमि गिराये * जाम्बवंत कपि पति पहँ आये ॥

१ श्रेष्ठवीरोंमें. २ पक्षी. ३ मासा.

इहि तब कोटिक समर लराई * जीते लरे बहुत हम भाई ॥

दो० ये बालक त्रिभुवनबली, जीतिसकै नहिं कोय॥
चलहु प्राण दीजे समर, अजय जगत नहिं होय ५७॥

आवत भालु बली भट नाना * तानि शरासन[1] शर[2] संधाना ॥
हृदय ताकि लव मारा सायक * योजन सात गयो कपिनायक[3] ॥
धाये भालुपति कोप बढ़ाई * मल्लयुद्ध कुश कीन्ह बनाई ॥
निजबल रीछाहिं अवनि[4] पछारा * दोउ करमंगनि बाँधिविकरारा
हनुमंतहिं बाँधा पुनि धाई * राखा निकट अश्वथल जाई ॥
रखवारी लव छाँड़ो बीरा * आप चला रघुनायकतीरा ॥
देखे रथपर श्रीपति[6] सोये * फिरे बीर निजलाज बिगोये ॥
सुभग अस्त्र पट भूषण नाना * ले घर अश्व चले हनुमाना ॥

छंद०शुभ अस्त्रभूषण भालुकपिसँग अश्व लै सादर चले ॥
सियनिकट नायो माथ दोउ सुत भेंट भूषण जे भले ॥
पहिचानि कपिसबनिरखि भूषणसहमिसियधरणीपरी॥
यहि बीच मुनिवर सहमि आयेसियाअतिबिनतीकरी
हनुमान भालुहिं छोरि बंधन त्यागि बहु समुझायऊ॥
रिपुंदमन लक्ष्मण सहित भरतहिं राम रण पौढ़ायऊ
सुत कीन्ह कर्म कलंक कुलमहँ मोहिं विधि बिधवा करी
तजि सोच चंदन अगर आनहु जाहु पियसँग अब बरी
मुनि धीर दीने तनय लीने संग ले सादर चले ॥
रण देखि बालक चितै चकित बिहँसि मन संशय भले॥
रथ देखि हय पहिचानि प्रभुके जाय मुनि चरणन परे

---

१ धन्वा. २ बाण. ३ सुग्रीव. ४ पृथ्वीपर. ५ मरकट. ६ श्रीराम.

उठि बैठि कोशलनाथ आतुर तनय निज आगे खरे १३

सो०सुनि पुनि मुनिवरबैन, जागे रघुपति भयहरण
बिहँसि उघारे नैन, लीन्हेउ हृदय लगाय मुनि ॥५॥

प्रभुहिं देखि मुनि अतिहरखाने * बार बार निजभाग्य बखाने ॥
जेहि बिधि शेष[२] सीयबनआनी * मुनिबर सो सब कही बखानी॥
लवकुशकथा सकल मुनि भाषी * शिव बिरंचि सूरज करि साषी॥
मिले तनय दोउ हृदय लगाई * सुधा[३] बर्षि सुरसैन जिवाई ॥
भरतआदि जागे सब भ्राता * लक्ष्मण चले जहाँ सिय माता॥
बहुरि राम लक्ष्मणहिं बुलाई * सुनहु तात अस बचन सुहाई॥
अब अस बचन मानि मन भाई * सियसन दिव्य[४] लेहु तुम जाई॥
लक्ष्मण जाय सीस तब नावा * कुश लवहू बहुबिधिसमुझावा॥
हरिइच्छा सियमन अस आवा * शेष सहसफन आनि दिखावा॥

दो०जड़ित मणिन सिंहासन, सादर सीय चढाय॥
भयो अलोप पतालमहँ, महिमा किमिकहिजाय५८

लक्ष्मणचरित देखि सब ठाढ़े * नयनप्रबाह चले अतिगाढ़े ॥
सकल चरित सुनि कृपानिधाना * चलन हमार सीय मन आना ॥
तनयसहित प्रभु निजपुर आये * दीन्ह दान शुभ यज्ञ कराये ॥
जेहि २ बिधि गुरु आयसु दीना * कोटि कोटिबिधिसोप्रभुलीना॥
कोटिन धेनु धाम-धन-धरणी * दीन्ह कृपानिधिकोशकबरणी॥
भोजन बिबिधभांति करवाई * बिदा किये मुनिबृंद बुलाई ॥
जनकहिं राज बिदा प्रभु कीन्हा * दोउ गुरु पूजि पदोदक लीन्हा॥
आये जनक गुरुहिं पहुँचाई * बैठे प्रभु महिसुरन बुलाई ॥

१ बाल्मीकीजीके बचन. २ लक्ष्मणने. ३ अमृत. ४ सौगंध. ५ घर.

दो०लक्ष लक्ष बर धेनु धन, पूजि पूजि द्विज पाय ॥
एक एक विप्रन दई, हर्ष कोशलाराय[1] ॥ ५९ ॥*

गये मुनि सज्जन सब निजधामा * पायेउ अमित अमित सुखरामा
पुरबासी आवहिं सब झारी * सुनहिं पुराण अनंद सुखारी ॥
जे जड़ चेतन जीव घनेरे * सचर अचर कोशलपुरकेरे ॥
तिनपटतर[2] सुख नहिं खगराया * करहिं बिनोद बिहाय अमाया॥
इहिबिधिबिपुलकाल चलिगयऊ* निजपुरगवन सो अवसर भयऊ
बीती अवधि ब्रह्म तब जानी * नारदमुनिसन कहा बखानी ॥
निजपुर आवन कहहिं खरारी * धर्मराजकहँ[3] करहु हँकारी ॥
बिनती बहु बिरंचि[4] तब भाखी * चले धर्म रघुपति उर राखी ॥

दो०आयेउ यम रघुबीरपुर, मुनिवर बेष बनाय ॥
तेजपुँज सुंदर तरुण, कटि मृगत्वचा सुहाय ॥६०॥

द्वारपाल लक्ष्मण ऋषि जानी * बोलेउ तापस अतिमृदु बानी॥
तुरत शेष तब खबर जनाई * सुनत बचन आये रघुराई ॥
मुनिहिं निरखिप्रभुकीन्हप्रणामा* सादर उचित कहेउ श्रीरामा ॥
अर्घ दीन्ह आगे बैठारी * मुनिबर सुंदर गिरा उचारी ॥
सुनु सर्बज्ञ कृपालु दिनेशा * आयेउ मुनिबर तापसबेषा ॥
हम तुम रहैं अवर ना कोई * तिसरे सुनत नाश तेहि होई ॥
सुनै शब्द तेहि देहुँ सरापू * बिधि हरि हर आवें जो आपू ॥
सुनहु लषण चलि बैठहु द्वारे * ना कोउ आव न गिरा उचारे ॥
मम कर बध आवै पुनि कोई * मरहि सत्य यह वृथा न होई ॥

दो०बोलेउ तापस बचन मृदु, पाहि पाहि रघुनाथ॥

१ अयोध्यांधिराज. २ तिनकी समान. ३ यमराजको. ४ ब्रह्माने.

कहा सकल इतिहासमुनि, कहि पुनि नायो माथ६१

प्रभु इच्छा भावी बलबाना * दुर्बासा मुनि आय तुलाना ॥
मुनिहिं देखि लक्ष्मणचलिआगे * गये निकट बिनती अनुरागे॥
पूँछेउ मुनि कहँ रघुकुलईशा * जाउँ तहाँ मैं सुनहु अहीशा॥
जो उत्तर प्रति करिहौं आजू * भस्म करौं तब धर पुर राजू ॥
कंपेउ लषण सुनत मुनिबानी * निजबध जान सो चलेउभवानी
दोउ कर जोर कहे प्रभुसनहीं * दुर्बासा मुनि आवन चहहीं ॥
तात कीन्ह अतिअवगुण भारी * कालकर्मगति टरै न टारी ॥
कीन्ह बचन दिनकरकुलकेतू * सुनहु खगेश कथाकर हेतू॥

दो०तुरत कहेउ मुनि आनहुँ, सादर कृपानिधान ॥
चलहु बेगि मुनि तुरत अब, कहा राम भगवान॥६२॥

छंद अतितेजपुंजबिलोकिआरतिउचितउठिआसनदियो
जल आनि सादर चरण धोये सुभग पादोदक[1] लियो
जन जानि मुनिवर देहु आयसु बेगि सो सादर करौं
बहुकाल क्षुधित कृपायतन बिनअशन दिनमन[2] मैं परौं
मनभावभोजनदीनरघुपतिबहुतबिधिबिनतीकरी ॥
संतोष पाय मुनीश अस्तुति करि बिनय आशिष भरी
करि बिदा मुनिवर देखि लक्ष्मण हृदय दारुण दुख भये
भरतादि अनुजसमेत पुर जन ताहि छिन देखत भये
पद बंदि ठाढे जोरि दोउ कर बदन लखि अतिकंपहीं
भरि नयनपंकज[3] नीर आनत भरत सन प्रभु सब कहीं
अब गुरुहिं आनहु बेगि सादर दुखित अति आतुर चले

१ चरणोदक. २ दुखितचित्त. ३ नेत्रकमलोंमें.

सब कथा गुरुहिं सुनाय आतुर यान चढ़ि आंवत भये॥
आये बसिष्ठ बिलोकि रघुपति बिकल उठि चरणन परे
संबाद सुनि मुनि समय जानो त्यागनाहिं हमको हरे॥
मुनिबचन शेष बिचार निजउर रामबिनधिक जीवना
गहि चरण सरयूतीर आये देखि जल शुभ पावना १४
दो०कटिप्रमाणजलमध्यमें, कीनो ध्यान अखण्ड॥
योगयत्न करि राम कहि, फोरो निजब्रह्माण्ड॥६३॥
रामधाम पहुँचे तुरत, लषण चतुर्थम भाग॥
सुनि व्याकुल रघुपति भरत, मिटेउ सकल अनुराग॥
मैं नाहिं तज्यों तज्यो मोहिं ताता* अब करु यत्न सो देखहु भ्राता॥
करहु भरत पुर जन्म सुखारी *सुनत गिरेउ महि व्याकुलभारी
चहत चलन अब प्राण गुसाँई * पुनि लक्ष्मण बिन रह न सकाई
तात चलहु कहि तनय बुलाई *कीन्ह तिलक बहुनीति सिखाई॥
भरततनय तक्ष जेहि नामा * दक्षिण नगर दियेउ तेहि रामा॥
दूसर पुष्कर जो जग जाना * पुष्कलवती नगरि मनमाना॥
प्रथम दैत्य हैं तहाँ बसाये * दीन्ह कृपानिधि तेहिं मन भाये
चित्रकेतु अंगद रणधीरा * लक्ष्मणतनय सुभट गंभीरा॥
दो०पश्चिमदेश पिशाच बहु, जीतिहते संग्राम॥
तहँ राखेउ सुत सरिस दोउ, बिलगर कहि नाम॥६५॥
[२]अवधनृपति कुश कीन्ह बहोरी* सिखै नीति पुनि कहेउ निहोरी
भ्रातनपर सुत दाया करेहू * राजनीति उर सादर धरेहू॥
उत्तर नगर सु उत्तर दूरी * सुख संपदा जहाँ अतिरूरी॥

१ लक्ष्मण. २ अयोध्याके राजा.

लवकहँ दीन्ह कृपानिधि सोई * पटतर अमरनगर नहिं होई ॥
आठसहस रथ तुरग पचासा * दस सहस्र गजसधते आसा ॥
भजै ऐन्द्रगज[2] तिन्है बिलोकी * दिकपालन[1] निजप्रभुता रोकी ॥
इक इक सुत दीन्हेउ रघुराया * रहो सो कुशहि दीनकरिदाया ॥
धनदकोटिसम भरा भँडारा * यथायोग करि भाग उदारा ॥

दो०सकल तनय परितोषि कर, बिदा कीन रघुबीर
विप्रवृंद याचक सकल, लिये बोलि मतिधीर॥६६॥

धेनु बसन धरणी धन धामा[3] * दीन्ह द्विजन परिपूरणकामा ॥
याचक बिप्र अबधके बासी * बोले प्रभु सुन अज अविनाशी ॥
हम भरि जन्म चरण अनुरागी * अंतकाल अब होत अभागी ॥
जो हित मान लेहु हमसाथा * करहुकृपानिधिसकलसनाथा ॥
सुनि सनेहमय बचन सुहाये * चलहु कहेउ प्रभु अतिसुखपाये॥
समय जानि कपिपतितबआवा* अंगद राज दीन सुख पावा ॥
जाम्बवंत लंकापति बीरा * नल अरु नील द्विबिद गंभीरा
कोटिन कीश जे सुर अवतारी * आये जहाँ कृपालु खरारी ॥

सो०कह प्रभु सुनु लंकेश, राज कलपभरि करहु तुम
अचल बचनमम सेव, अंतअमरपुर[4] तात तोहिं॥६॥

जाम्बवंत सुनु मम मृदु बानी * रहु द्वापर भर अस जिय जानी॥
कृष्णरूप धरि मिलि हौं तोहीं * समर भूमि तब जानेहु मोहीं ॥
अस कहि सबबिधि धीरज दीना* आपु गमन सरयूतट कीना ॥
दक्षिण भरत बाम रिपुंदमनू[5] * पुरबासी सब निज कत बरनू॥
अग्नि वेद गायत्री छन्दा * धरि निजरूप चले सुरवृंदा ॥

---

१ दिशा. २ ऐरावत हाथी. ३ घर. ४ देवलाके. ५ शत्रुहन.

पीतांबर पट सुंदर धारी * चेतन जड़ चर अचर सुखारी
प्रथमरूप धर सुंदर आई * जस कछु कीन सो सुन खगराई
समय जानि तब पवनकुमारा * बोले बचन कृपालु उदारा ॥
दो० चिरंजीव सुत रहहु तुम, जबलागि रबि शशि शेश
तुमहिं सुमिरि मेटाहिं सकल, दुस्तरकठिनकलेश ६७
चतुराननपहँ[1] धर्म सिधाये * सरयूतीर जगतपति आये ॥
चले देखि अज[2] भव[3] सनकादि * जे मुनि परमअलौकिकवीदी॥
कोटिन रथ बाहन बिधिनाना * अरुण[4] अकाश न जाय बखाना॥
नभ[5] सुरजयजयजयध्वनि होई * पावहिं बर याचहिंसुर जोई ॥
देखि नाक[6]पर रथपरछाहीं * जिमि गिरिकूर्मि नभपंथ उड़ाहीं
करहीं परस जल जे तनुधारी * पाव चतुर्भुजरूप सुखारी ॥
चढ़ि बिमान प्रभुधाम सिधाये * सकल अमरपतिसम सुख पाये॥
सुमनवृष्टि नभ होय अपारा * होहिं नगर बिधि वेदउचारा॥
छंद उच्चरत वेदमय चकित भरत कृपालुहँसि सादर लयो
जल परसिकर रिपुबदन सादर पद्मकर राजत भयो
कपि आदियूथप सखा प्रभुके सकल निजनिजघरगये
सुग्रीव प्रभुपद बंदि बारहि बाररविमंडल भये ॥*
सुरसहित दिनकरवंशभूषण आनि जल आश्रम रहे
तेहि समयबोलिअजादि सुरशिवबचनप्रभुपावनकहे
एक मास रहि यहि तीरतुम मम पुरि जीव जे आवहीं
यह परमपावन भूमि सरजू एक पल जे पावहीं ॥
अतिसुदृढ़रुचिरसनेहमज्जनमम चरणरतिदा सदा

---

१ यमराज. २ ब्रह्मा. ३ महादेव. ४ लाल. ५ आकाशमें. ६ स्वर्गमें.

तारि जात सुरपुर सकल सादर सुनहुँ मम बाणिमुदा
कहि बचन अंतर्धान प्रभु जिमि दामिनीघरमांझमें ॥
नभ जयति जय२करतजय२ जयतिजयति नमामिमें
इहिभांतिरघुपतिचरचराचरसकललै निजधामको
सो कहेउ उमहिं कृपायतन उरराखिसादर रामको

दो॰ इहि बिधिशिवसंवादसुनि,प्रफुलितगरुडशरीर
करि प्रणामपुनि गमनकिय,विष्णुलोक मति धीर६८

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकालिकलुषविध्वंसने विमल-
विज्ञानवैराग्यसन्तोषसम्पादनो नाम श्रीगोस्वामितुलसी
दासकृतलवकुशकाण्डोऽष्टमः सोपानः समाप्तः॥ ८ ॥

इति लवकुशकाण्डं समाप्तम् ॥

जाहिरात.

आल्हखण्ड बडा २३ लड़ाई असली ५२ गढ़की मारका छपकर तैयार है.

सम्पूर्ण आल्हारसरसिक जनोंको विदित हो कि हमने असली **आल्हखण्ड** बड़ा २३ लड़ाइ ५२ गढ़की मारका सुन्दर व सुवाच्य अक्षरोंसे अत्यन्त पुष्ट व सचिक्कण कागजपर छापकर प्रकाशित किया है. यह अनेक प्राचीन पुस्तकोंसे असली २ बातोंका सारांश लेकर और बडे २ आल्हा गानेवालोंसे सत्य २ बातोंको चुनकर बनाया गया है. अतएव सर्वोपरि होगया है; इससे चढ़बढ़कर दूसरा **आल्हखण्ड** नहीं है; कारण यह कि इसमें सत्य २ आशय वर्णन किया गया है; कोई असत्य बात इसमें नहीं पाई जाती. इस लिखनेका तात्पर्य यह है कि प्रायः मनुष्य **आल्हखण्डको** असत्य समझते हैं, परन्तु असलमें **आल्हखण्ड** असत्य नहीं है, किन्तु गानेवालोंने असत्यरूप नमक मिर्च मिला दिया है. और हमारे इस २३ लडाईवाले आल्हखण्डमें कोई ऐसा वचन नहीं है जो असत्य जान पडै इसीसे हमारा आल्हखण्ड असली है. क्यों कि इसमें सब लडाइयां प्रमाणसहित लिखी गई हैं. और इन्ही २३ लड़ाइयांके अन्तर्गत ५२ गढके महाराजाओंको आल्हाआदि वीरोंने अपने पराक्रमसे जीतकर जिसप्रकार स्वाधीन किया था, वह सविस्तर वर्णित है. तथा मल्हनाके साथ विवाह करनेमें राजा परिमालकी

जाहिरात.

वीरता, सिरसाकी पहिली लडाईमें नर मलिखानकी वीरता, धाँधूके विवाहमें महाराजा पृथ्वीराजको सहायता देनेमें महोबेवाले सब शूरोंकी वीरता, कीर्तिसागरपर भुजरियोंकी लड़ाईमें राजकुमार ब्रह्मानन्दकी वीरता, नदिया बितवैकी लडाईमें लाखनि रानाकी वीरता, गांजरकी लडाईमें ऊदनकी वीरता, बेलाके सती होनेपर समरके अन्तमें आल्हाकी वीरता भलीभांति वर्णित है. और बडे भारी आनन्दका हेतु हमारे **आह्लकाण्डमें** यह है कि प्रत्येक लडाई प्रारंभ करनेके समय देवतायोंकी स्तुतिमें दोहा, सोरठा, कवित्त, सवैया, कुण्डलिया और आल्हा छन्दमें अच्छे प्रकार मंगलाचरण करके लडाईका प्रारंभ किया गया है और भूमिका इस प्रकार लिखी गई है कि राजा परिमाल महाराजा पृथ्वीराज, दस्सराज, बच्छराज, चौंडा, धांधू, आल्हा, ऊदन, ढेबा, मलिखान, ब्रह्मानन्द, लाखनि, इत्यादि शूरवीरोंका जन्मसमय तथा जीवनचरित्र संस्कृतश्लोकबद्ध प्रमाणसहित भाषामें वर्णन किया गया है. और समस्त लड़ाइयोंका तथा लडाइयोंके पृथक् विषयोंका सूचीपत्रभी लगा दिया है. किंमत २॥ रुपया नियत किया है. पोष्टव्यय ८ आना लगेगा.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

हरिप्रसाद भगीरथजी.

कालकादेवीरोड रामवाडी मुंबई.